

17. 10. 98

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

(संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका-प्रकाशक-संस्थान)

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

संस्कृत-विद्या-प्रयोग-पत्रिका

10/10/10



सामवेदीयब्राह्मणानि

(ताण्ड्यदेवताध्यायछान्दोग्यब्राह्मणोपनिषदात्मकः)

प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद
उत्तराम्नाय ज्योतिषीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय
द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

मार्गदर्शक
दण्डी स्वामी सदानन्द सरस्वती जी
दण्डी 'स्वामिश्रीः' अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती

सम्पादक
डॉ. विजय कुमार शर्मा
सामवेदाध्यापक
श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र
हनुमानघाट, वाराणसी

प्रकाशक
विद्याश्री धर्मार्थ न्यास, काशी

सामवेदीयब्राह्मणानि
(ताण्ड्यदेवताध्यायछान्दोग्यब्राह्मणोपनिषदात्मकः)

प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद
उत्तराम्नाय ज्योतिषीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय
द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज

मार्गदर्शन

दण्डी स्वामी सदानन्द सरस्वती जी
दण्डी 'स्वामिश्रीः' अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती

सम्पादक

डॉ. विजय कुमार शर्मा
श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र
हनुमानघाट, वाराणसी

आई.एस.बी.एन. - 978-93-83786-01-5

प्रथम संस्करण १००० प्रतियाँ

शारदीय नवरात्रि संवत् २०७१ विक्रमी

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक

विद्याश्री धर्मार्थ न्यास
विद्याश्री निलयम्, केदारघाट, वाराणसी-२२१००१ (उत्तर प्रदेश)

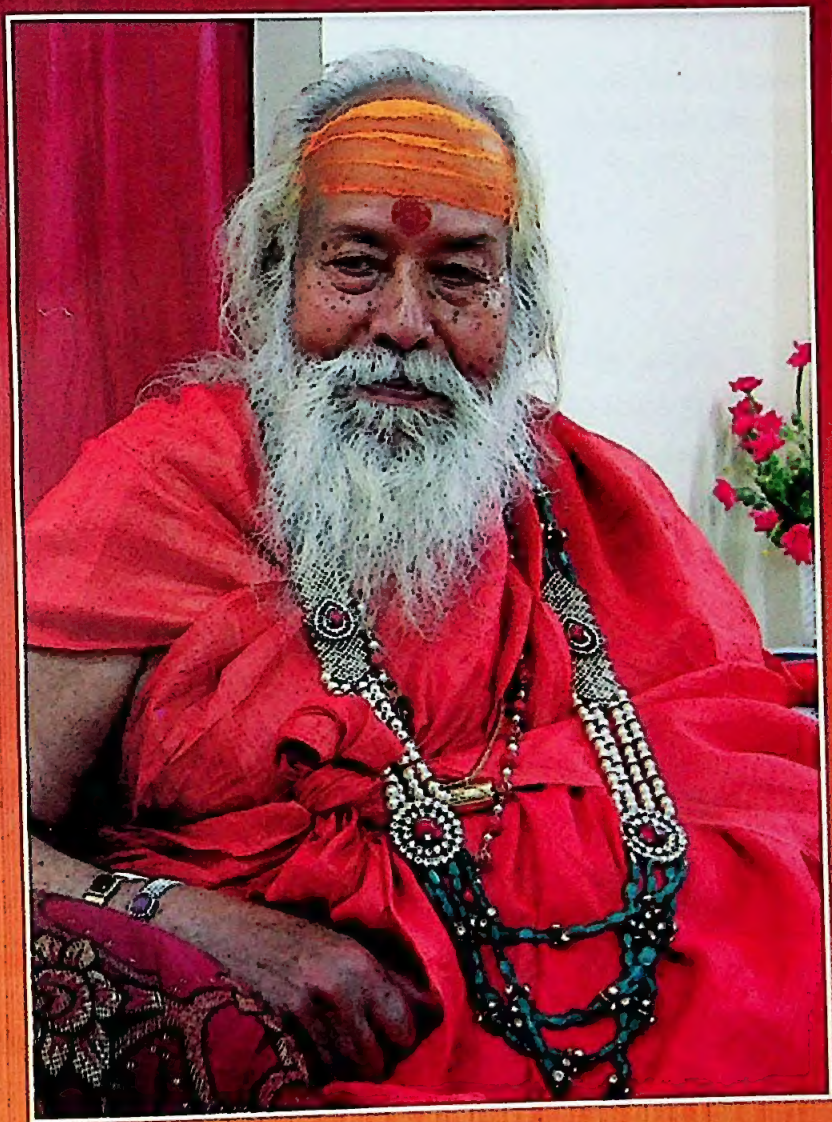
मूल्य शतत्रयम् ३००/- रुपये मात्र

मुद्रक

श्रीजी प्रिण्टर्स, नाटी इमली, वाराणसी-०१

फोन नं : ०५४२-२२०११०४, ई-मेल : shrijeepriint@gmail.com

समर्पण



पूज्यपाद ज्योतिषीठाधीश्वर एवं द्वारका शारदापीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य
स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज



प्रो. हृदयरंजन शर्मा

Prof. Hridaya Ranjan Sharma

आचार्य एवं पूर्व अध्यक्ष

Professor & Ex-Head

वेद-विभाग

Dept. of Veda

संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान सङ्घाय

Faculty of Sanskrit Learning &
Theology

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

Banaras Hindu University

वाराणसी-२२१००५, भारत

Varanasi-221005, India



शुभाशंसन

ऋच्यद्ध्युढं सामगीयते उपनिषद् की इस उक्ति के अनुसार ऋचाओं पर आधारित सामवेद का वैदिक वाङ्मय में सर्वाधिक महत्त्व सर्वमान्य रहा है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण ने भी 'वेदानां सामवेदोऽस्मि' अपने इस वचन से सामवेद के महत्त्व को प्रदर्शित किया है। छान्दोग्य उपनिषद् के 'सामान्येव मधुकृतः सामवेद एव पुष्पम्' इस कथन में सामश्रुतियों को मधुररूपता तथा सामवेदविहित कर्मों की पुष्परूपता बताया गया है।

सहस्रवर्त्मा सामवेदः महर्षि पतञ्जलि के इस वाक्य के अनुसार सामवेद एक हजार शाखाओं से संवलित था, परन्तु आज के पाश्चात्यवादी भौतिक युग में हमारी प्राचीन संस्कृति का संरक्षण अत्यन्त ही दुष्कर हो गया है। कतिपय स्थानों को छोड़ दिया जाय तो शेष में मात्र पाश्चात्य संस्कृति ही दृष्टिगत होती है। इस कठिन परिस्थिति में प्राच्य-विद्या के ग्रन्थों का सम्पादन एवं प्रकाशन सुखद अनुभव कराता है। इसी उपक्रम में डॉ. विजय कुमार शर्मा (सामवेदाध्यापक, श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र, वाराणसी) के द्वारा किये जा रहे सामवेद के ग्रन्थों का सम्पादन कार्य अति प्रशंसनीय है। 'राणायनीयशाखीयं सामगानम्' के सम्पादन के पश्चात् इस संस्करण में ताण्ड्य, देवताध्याय, छान्दोग्यब्राह्मण तथा उपनिषद् के साथ ताण्ड्यमहाब्राह्मण तथा

देवताध्यायब्राह्मण की 'श्रुत्यनुक्रमणिका' का लेखन भी किया गया है जो कि अति दुरुह है। इस ग्रन्थ से अध्योताओं एवं अनुसन्धाताओं को अवश्य लाभ होगा। इस पुनीत कार्य के लिये मैं डॉ. शर्मा को साधुवाद देता हूँ। साथ ही प्राच्य विद्या के प्रति अगाध श्रद्धा तथा उदारतापूर्वक इन ग्रन्थों का प्रकाशन कराने वाले अनन्तश्री विभूषित ज्योतिष एवं द्वारका शारदा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के पावन चरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ तथा उनके इस धर्मध्वजरूपी पीठों के स्तम्भद्वय दण्डी स्वामी श्री सदानन्द सरस्वती जी महाराज एवं स्वामीश्री: अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती जी महाराज के प्रति भी मैं आभारी हूँ, जो इस भौतिकवादी युग में इन प्राच्य विद्याओं के संरक्षण हेतु प्रतिबद्ध हैं।

र. १. १५

(हृदयरंजन शर्मा)

शुभाशंसा

हिन्दुओं की धार्मिक व्यवस्था और आचारादि के सम्बन्ध में जो नीति-नियम और विविध व्यवस्थाएँ हैं उनका विस्तार निरूपण करने वाले आदि ग्रन्थों में ब्राह्मण-ग्रन्थों का नाम प्रमुख है। इस दृष्टि से ब्राह्मण-ग्रन्थ न केवल हिन्दू धर्म के आदि श्रोत हैं अपितु मानव जाति के प्रथम धर्म ग्रन्थ भी हैं। प्राचीनता की दृष्टि से उनका स्थान वैदिक संहिताओं के बाद है परन्तु मान्यता एवं महत्त्व की दृष्टि से उनका स्थान वेदों के समकक्ष ही है। वेदभाष्यकार ऋषियों ने मन्त्र संहिताओं और ब्राह्मण-ग्रन्थ दोनों को वेद कहकर अभिहित किया है; क्योंकि दोनों ही यज्ञ के प्रमाण रूप हैं— 'मन्त्रब्राह्मणो यज्ञस्य प्रमाणम्' अथवा 'मन्त्रब्राह्मणात्मको वेदः' (आपस्तम्ब)।

वर्तमान कलिकाल में उपेक्षा का दंश झेल रही इन वैदिक परम्पराओं को अपने प्राच्य स्वरूप में अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान के पाठ्यक्रम में ब्राह्मण-ग्रन्थों का समावेश किया गया है। इसी क्रम में हमारे आचार्य श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र के सामवेद राणायनीय शाखा के प्राध्यापक डॉ. विजय कुमार शर्मा के द्वारा भविष्यु वैदिक छात्रों को सहजता से अष्ट ब्राह्मण-ग्रन्थ उपलब्ध हों, इस हेतु अथक परिश्रम से 'सावेदीयब्राह्मणानि' नामक इस ग्रन्थ के प्रथम भाग पर कार्य सम्पादन किया है। इसके लिये मैं श्री विजय जी का वर्धापन करता हूँ। इनके द्वारा किया गया यह प्रशंसनीय

प्रयास विफल नहीं होगा ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है। पुनः एक बार 'सर्व वेदमयं जगत्' का प्रादुर्भाव होगा।

अनन्त श्री विभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी महाराज के द्वारा इस ग्रन्थ का प्रकाशन स्वागत योग्य है, ऐसे अनुपलब्ध ग्रन्थों के प्रकाशन की परम्परा बनी रहे। एतदर्थ मैं इन महान् विभूतियों की दीर्घायुष्याभिवृद्धि के लिए बाबा विश्वनाथ व माँ अन्नपूर्णा से कामना करता हूँ।

गगन कुमार चट्टोपाध्याय.

गगन कुमार चट्टोपाध्याय
(सामवेदाचार्य)

प्रधानाध्यापक

श्री प.शा. वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र
हनुमान घाट, काशी

आत्म-निवेदन

सस्तस्वरैः समस्तंयो जगदेतच्चराचरम् ।
संजीवयति विश्वात्मा स मे विष्णुः प्रसीदतु ॥

वैदिक वाङ्मय में ऋग्वेदादि चारो संहिताओं के पश्चात् जिस साहित्य की रचना हुई, उसे ब्राह्मण-ग्रन्थों के नाम से जाना जाता है—

मन्त्रश्च ब्राह्मणश्चेति द्वौ भागौ तेन मन्त्रतः ।
अन्यद् ब्राह्मणमित्येतद् भवेद् ब्राह्मण लक्षणम् ॥

(जैमिनीयन्यायमालासविस्तरा २.१.८)

अवशिष्टो वेदभागो ब्राह्मणम् । (ऋग्वेदभाष्यभूमिका, पृ. ३७)

शेषे ब्राह्मणशब्दः । (मीमांसासूत्र २.१.३३)

अर्थात् मन्त्र-भाग से अतिरिक्त शेष वेद-भाग ब्राह्मण कहलाता है। वैदिक मन्त्रों के व्याख्यान स्वरूप निर्मित ये ब्राह्मण-ग्रन्थ मन्त्रों, कर्मों और विनियोगों की विशद् व्याख्या प्रस्तुत करते हैं—

‘ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मन्त्राणां च व्याख्यानग्रन्थः’ ।

(भट्टभास्कर, तै.सं. १.५.१ पर भाष्य)

ब्राह्मण-ग्रन्थ सर्वथा गद्यात्मक हैं जिनकी विषय-वस्तु को ‘विधि’ एवं ‘अर्थवाद’ इन दो रूपों में बाँटा जा सकता है। इनमें से विधि ही ब्राह्मण-ग्रन्थों का प्रधान विषय है। प्रत्येक संहिता के वेदशाखानुसार भिन्न-भिन्न ब्राह्मण-ग्रन्थ होते हैं। इन संहिताओं के मन्त्रों व मन्त्रांशों की यज्ञपरक व्याख्या एवं उद्देश्य पर विचार हेतु निर्मित ब्राह्मण-ग्रन्थों में से वर्तमान में इन ग्रन्थों की संख्या निम्न है—

ऋग्वेद—१. ऐतरेय ब्राह्मण, २. शांखायन ब्राह्मण (कौषीतकि)।

शुक्लयजुर्वेद—शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिन एवं काण्व)।

कृष्णयजुर्वेद—१. तैत्तिरीय ब्राह्मण, २. मैत्रायणी ब्राह्मण, ३. कठ ब्राह्मण, ४. कपिष्ठल ब्राह्मण।

अथर्ववेद—गोपथ ब्राह्मण। सामवेद—आठ ब्राह्मण—

अष्टौ हि ब्राह्मणग्रन्थाः प्रौढं ब्राह्मणमादिदम् ।

षड्विंशाख्यं द्वितीयं स्यात् ततः सामविधिर्भवेत् ॥

आर्षेयं देवताध्यायो भवेदुपनिषत् ततः ।

संहितोपनिषद् वंशो ग्रन्था अष्टावितीरताः ॥

सायणाचार्य के इस कथन के अनुसार सामवेद के आठ ब्राह्मण-ग्रन्थों की मान्यता सुदीर्घ काल से है। इन अष्टब्राह्मण-ग्रन्थों का प्रमुख विषय सोमयागों, अभिचारयागों, अन्य अनुष्ठानों और उनके विधि-विधानों के साथ ही विभिन्न उपासना पद्धतियों का विस्तार तथा सामवेद और उसकी गान प्रक्रिया से सम्बद्ध सूक्ष्मातिसूक्ष्म सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से सांस्कृतिक तथा दार्शनिक वैशिष्ट्यता का प्रतिपादन है।

यद्यपि सामवेदीयब्राह्मण-ग्रन्थों का क्रम निम्न प्रकार से है—

१. ताण्ड्यमहाब्राह्मण, २. षड्विंशब्राह्मण, ३. सामविधानब्राह्मण,
४. आर्षेयब्राह्मण, ५. देवताध्यायब्राह्मण, ६. छान्दोग्योपनिषद् ब्राह्मण,
७. संहितोपनिषद् ब्राह्मण, ८. वंशब्राह्मण। जिनमें ताण्ड्यमहाब्राह्मण को प्रौढब्राह्मण, पञ्चविंशब्राह्मण तथा छान्दोग्योपनिषद् ब्राह्मण को मन्त्रब्राह्मण भी कहा जाता है। परन्तु ग्रन्थ की अत्यधिक आवश्यकता को दृष्टिगत करते हुए इस ग्रन्थ के प्रथम भाग में ताण्ड्यमहाब्राह्मण, देवताध्यायब्राह्मण, छान्दोग्यब्राह्मण तथा उपनिषद् इन तीन का संग्रह किया गया है। विशेषरूप से अन्य ब्राह्मणों के साथ ताण्ड्यमहाब्राह्मण एवं देवताध्याय ब्राह्मण के मन्त्रों की 'अकारादि श्रुत्यनुक्रमणिका' का संकलन भी प्रथमतः इस ग्रन्थ में किया गया है जो कि अद्यतन अप्रकाशित थी।

इस पुण्य कार्य की प्रारम्भिकता, पूर्णता तथा सफलता के लिए मैं श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य वैदिकधर्मप्रचारपरायण अखण्डभूमण्डला-

चार्य सत्यसनातनधर्म के संवाहक प्रातः स्मरणीय अनन्तश्री विभूषित उत्तराम्नाय ज्योतिष्पीठाधीश्वर एवं पश्चिमाम्नाय द्वारका-शारदा-पीठाधीश्वर जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीस्वरूपानन्द सरस्वतीजी महाराज के श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम अर्पित करता हूँ, जिनके स्मरण मात्र से दिव्यशक्तिस्वरूपा प्रेरणा के द्वारा कोई भी कार्य स्वतः पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है। ग्रन्थ की साफल्यता हेतु शुभाशंसा के द्वारा मङ्गलकामना एवं मन्त्रों की शुद्धता हेतु मार्गदर्शन करने वाले वैदिक वाङ्मय के विश्रुत मनीषी पूज्य गुरुवर प्रो. युगलकिशोर मिश्र (पूर्व कुलपति, जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर), प्रो. हृदयरंजन शर्मा (पूर्व अध्यक्ष, वेद-विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी), प्रो. रूपकिशोर शास्त्री (सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन), पं. गगन कुमार चट्टोपाध्याय (प्रधानाध्यापक, श्री पट्टाभिरामशास्त्री वेद मीमांसा अनुसन्धान केन्द्र, वाराणसी) एवं पं. परमेश्वर गणपति भट्ट (सलक्षण रहस्यान्त विद्वान्, कर्नाटक) के चरणकमलों में प्रणतिपूर्वक कृतज्ञताञ्जलि निवेदित करता हूँ।

इनके अतिरिक्त गुरुसेवाधुरीण भक्तवत्सल द्वारकापीठ के तपोनिष्ठ मन्त्री स्वामी श्री सदानन्द सरस्वती जी महाराज एवं त्रिपथगामिनि भगवती माँ गंगा के अविरल निर्मल प्रवाह हेतु तत्पर 'गङ्गासेवा अभियानम्' के सार्वभौम संयोजक 'स्वामिश्रीः' अविमुक्तेश्वरानन्दः सरस्वती जी महाराज जिन्होंने चातुर्मास्य की पुण्यवेला में मुझे इस पुण्य कार्य के सम्पदान हेतु प्रेरित किया। उन्हीं के अविस्मरणीय उस क्षण के प्रेरणास्पद आशीर्वचनों से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। मैं इन दोनों विभूतियों के चरणारविन्दों में कोटिशः नमन करता हूँ। जगदम्बास्वरूपा देवी पूर्णाम्बा एवं देवी शारदाम्बा दीदी जिनसे मुझे संगणक की तकनीकी तथा ग्रन्थ की अन्य

विशेषताओं की जानकारी प्राप्त होती रही है, उनके प्रति भी सादर आभार है एवं श्रीजी प्रिण्टर्स के संचालक श्री अनूप कुमार नागर जी का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होंने स्वामीजी के एक बार दूरभाष पर कहने मात्र से इस ग्रन्थ के प्रकाशन को प्राथमिकता देकर पूर्ण करवाया।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में ताण्ड्यमहाब्राह्मणम् सायणाचार्यकृतभाष्य, कुम्भकोणम् से प्रकाशित छान्दोग्यब्राह्मणम् के प्रथम एवं द्वितीय भाग तथा विशिष्ट आचार्यों के सहयोग से शुद्धता का पूरा प्रयत्न किया गया है, परन्तु पाठभेदादि के कारण कुछ अशुद्धियाँ रह गई हो तो विद्वज्जन क्षमा करते हुए उन्हें अवगत कराने की कृपा करेंगे।

विजय ४११२२१५

विजय कुमार शर्मा

विषयानुक्रमणिका

ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्	१-२५५
प्रथमोऽध्यायः	१
द्वितीयोऽध्यायः	९
तृतीयोऽध्यायः	१७
चतुर्थोऽध्यायः	२३
पञ्चमोऽध्यायः	३४
षष्ठोऽध्यायः	४३
सप्तमोऽध्यायः	५६
अष्टमोऽध्यायः	६७
नवमोऽध्यायः	७८
दशमोऽध्यायः	८९
एकादशोऽध्यायः	९७
द्वादशोऽध्यायः	१०५
त्रयोदशोऽध्यायः	११९
चतुर्दशोऽध्यायः	१३२
पञ्चदशोऽध्यायः	१४५
षोडशोऽध्यायः	१५७
सप्तदशोऽध्यायः	१६९
अष्टादशोऽध्यायः	१७७
एकोनविंशोऽध्यायः	१८८
विंशोऽध्यायः	१९७
एकविंशोऽध्यायः	२०७
द्वाविंशोऽध्यायः	२१९

त्रयोविंशोऽध्यायः	२२६
चतुर्विंशोऽध्यायः	२३६
पञ्चविंशोऽध्यायः	२४५
देवताध्यायब्राह्मणम्	२५६-२५९
छान्दोग्यमन्त्रब्राह्मणम्	२६०-२७६
प्रथमः प्रपाठकः	२६०
द्वितीयः प्रपाठकः	२६९
छान्दोग्योपनिषद्	२७७-३५०
तृतीयः प्रपाठकः	२७७
चतुर्थः प्रपाठकः	२८७
पञ्चमः प्रपाठकः	२९६
षष्ठः प्रपाठकः	३०५
सप्तमः प्रपाठकः	३१४
अष्टमः प्रपाठकः	३२४
नवमः प्रपाठकः	३३२
दशमः प्रपाठकः	३४३
परिशिष्ट-भागः	३५१-४१६
प्रथमं परिशिष्टम्	३५१
द्वितीयं परिशिष्टम्	४०३
तृतीयं परिशिष्टम्	४०४
चतुर्थं परिशिष्टम्	४०८

॥ श्रीः ॥

ॐ नमः सामवेदाय

अष्टब्राह्मणेषु प्रथमम्

ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्

प्रथमोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

महन्मे वोचो भर्गो मे वोचो यशो मे वोचः स्तोमं मे वोचो
भुक्तिं मे वोचः सर्वं मे वोचस्तन्मावतु तन्माविशतु तेन भुक्षिषीय ॥ १ ॥
देवो देवमेतु सोमः सोममेत्वृतस्य पथा ॥ २ ॥ विहाय
दौष्कृत्यम् ॥ ३ ॥ बद्धानामासि सृतिः सोमसरणी सोमं गमेयम् ॥ ४ ॥
पितरो भूः पितरो भूः पितरो भूः ॥ ५ ॥ नृमण ऊर्ध्वभरसं
त्वोर्ध्वभरा दृशेयम् ॥ ६ ॥ मृदा शिथिरा देवानां तीर्थं वेदिरसि
मा मा हिंसीः ॥ ७ ॥ विष्णोः शिरोसि यशोधा यशो मयि
धेहि ॥ ८ ॥ इषऊर्ज्ज आयुषे वर्चसे च ॥ ९ ॥

द्वितीयः खण्डः

युनज्मि ते पृथिवीमग्निना सह युनज्मि वाचः सह सूर्य्येण
युक्तो वातोन्तरिक्षेण ते सह युक्तास्तिस्रो विभृजः सूर्य्यस्य ॥ १ ॥
ऋतस्य सद्ने सीदामि ॥ २ ॥ ऋतपात्रमसि ॥ ३ ॥ वानस्पत्योसि
बार्हस्पत्योसि प्राजापत्योसि प्रजापतेर्मूर्द्धास्यत्यायु पात्रमसीदमहं
मां प्राञ्चं प्रोहामि तेजसे ब्रह्मवर्चसाय ॥ ४ ॥ मरुतो नपातोऽ-
पाङ्क्षयाः पर्वतानाङ्गकुभः श्येना अजिरा एन्द्रं वग्नुना वहत
घोषेणामीवां चातयध्वं युक्तास्थ वहत ॥ ५ ॥

इदमहममुं यजमानं पशुष्वध्यूहामि पशुषु च मां ब्रह्मवर्चसे
 च ॥ ६ ॥ वसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा संमृजन्तु रुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन
 छन्दसा सम्मृजन्त्वादित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा संमृजन्तु ॥ ७ ॥
 पवित्रन्ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्य्येषि विश्वतः अतप्ततनूर्न
 तदामो अश्नुते शृतास इद्रहन्तः सन्तदाशतः ॥ ८ ॥ प्र शुक्रैतु देवी
 मनीषास्मद्रथः सुतष्टो न वाज्यायुषे मे पवस्व वर्चसे मे पवस्व
 विदुः पृथिव्या दिवो जनित्राच्छृण्वन्त्वापोधः क्षरन्तीः सोमेहोद्गाय
 ममायुषे मम ब्रह्मवर्चसाय यजमानस्यद्धर्चा अमुष्य राज्याय ॥ ९ ॥

तृतीयः खण्डः

बेकुरा नामासि जुष्टा देवेभ्यो नमो वाचे नमो वाचस्पतये
 देवि वाग्यत्ते वाचो मधुमत्तस्मिन्माधाः सरस्वत्यै स्वाहा ॥ १ ॥
 सूर्य्यो मा दिव्याभ्यो नाष्ट्राभ्यः पातु वायुरन्तरिक्षाभ्योऽग्निः पार्थिवाभ्यः
 स्वाहा ॥ २ ॥ योऽद्य सौम्यो वधोघायूनामुदीरते विषूकुहस्य
 धन्वनाप तान् वरुणोऽधमत् ॥ ३ ॥ यो म आत्मा या मे प्रजा ये
 मे पशवस्तैरहं मनो वाचं प्रसीदामि ॥ ४ ॥ अग्नेस्तेजसेन्द्रस्येन्द्रियेण
 सूर्य्यस्य वर्चसा बृहस्पतिस्त्वा युनक्तु देवेभ्यः प्राणायग्निर्युनक्तु
 तपसास्तोमं यज्ञाय वोढवे दधात्विन्द्र इन्द्रियः सत्याः कामा यजमानस्य
 सन्तु ॥ ५ ॥ अन्नं करिष्याम्यन्नं प्रविष्याम्यन्नञ्जनयिष्यामि ॥ ६ ॥
 अन्नमकरमन्नमभूदन्नमजीजनम् ॥ ७ ॥ श्येनोऽसि गायत्रछन्दा अनुत्वारभे
 स्वस्ति मा सम्पारयामास्तोत्रस्य स्तोत्रं गम्यादिन्द्रवन्तो वनेमहि
 भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥ ८ ॥ संवर्चसा पयसा सन्तपोभिरगन्महि
 मनसा सःशिवेन संविज्ञानेन मनसश्च सत्यैर्यथावोऽहं चारुतमं
 वदानीन्द्रो वो दृशे भूयासं सूर्यश्चक्षुषे वातः प्राणाय सोमो
 गन्धाय ब्रह्म क्षत्राय ॥ ९ ॥ नमो गन्धर्वाय विष्वग्वादिने वर्चोधा
 असि वर्चो मयि धेहि ॥ १० ॥

चतुर्थः खण्डः

अध्वनामध्वपते स्वस्ति मेऽद्यास्मिन् देवयाने पथि भूयात् ॥१॥
 सम्प्राडसि कृशानुः ॥२॥ तुथोसि जनघायो प्रतक्वाऽसंमृष्टोसि
 हव्यसूदनः ॥३॥ विभुरसि प्रवाहणः ॥४॥ वह्निरसि हव्य—
 वाहनः ॥५॥ शत्रोसि प्रचेताः ॥६॥ तुथोसि विश्ववेदा उशिगसि
 कविरङ्घारिरसि बम्भारिवस्युरसि दुवस्वान् ॥७॥ शुन्ध्युरसि
 मार्जालीयः ॥८॥ ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः ॥९॥ समुद्रोसि
 विश्वव्यचाः ॥१०॥ अहिरसि बुध्यः ॥११॥ अजोस्येकपात् ॥१२॥
 सगरा असि बुध्यः ॥१३॥ कव्योसि कव्यवाहनः ॥१४॥
 पातमाग्नयो रौद्रेणानीकेन पिपृत मा नमो वोस्तु मा मा
 हिंसिष्ठ ॥१५॥

पञ्चमः खण्डः

ऋतस्य द्वारौस्थो मा मा सन्ताप्तम् ॥१॥ नमः सखिभ्यः
 पूर्वसद्भ्यो नमोऽपरसद्भ्यः ॥२॥ श्येनो नृचक्षा अग्नेष्ट्वा
 चक्षुषावपश्यामि ॥३॥ इन्द्रविन्द्रपीतस्य त इन्द्रियावतो गायत्रछन्दसः
 सर्वगणस्य सर्वगण उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥४॥
 ऊर्ध्वस्सप्तऋषीनुपतिष्ठस्वेन्द्रपीतो वाचस्पते सप्तर्त्विजोभ्युच्छ्रयस्व
 जुषस्व लोकम्मा वाडवगाः ॥५॥ सोम रारन्धिनो हृदि पिता
 नोसि मम तन्मा माहिंसीः ॥६॥ सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्द्धयामो
 वचोविदः सुमृडीको न आविश ॥७॥ आप्यायस्व समेतु ते
 विश्वतः सोम वृण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे ॥८॥ अवमैस्त
 ऊर्वैस्ते काव्यैस्ते पितृभिर्भक्षितस्य मधुमतो नाराशंसस्य सर्वगणस्य
 सर्वगण उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥९॥

दीक्षायै वर्णेन तपसो रूपेण मनसो महिम्ना वाचो विभूत्या
 प्रजापतिस्त्वा युनक्तु प्रजाभ्योऽपानाय ॥१०॥ वायुर्युनक्तु मनसा
 स्तोमं यज्ञाय वोढवे दधात्विन्द्र इन्द्रियः सत्याः कामा यजमानस्य
 सन्तु ॥११॥ वृषकोऽसि त्रिष्टुच्छन्दा अनुत्वारभे स्वस्ति
 मासंपारयामास्तोत्रस्य स्तोत्रं गम्यादिन्द्रवन्तो वनेमहि भक्षीमहि
 प्रजामिषम् ॥१२॥ इन्द्रविन्द्रपीतस्य त इन्द्रियावतस्त्रिष्टुप् छन्दसः
 सर्वगणस्य सर्वगण उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥१३॥ सूर्यो
 युनक्तु वाचा स्तोमं यज्ञाय वोढवे दधात्विन्द्र इन्द्रियः सत्याः
 कामा यजमानस्य सन्तु ॥१४॥ स्वरोसि गयोसि जगच्छन्दा
 अनुत्वारभे स्वस्ति मासंपारयामास्तोत्रस्य स्तोत्रं गम्यादिन्द्रवन्तो
 वनेमहि भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥१५॥ इन्द्रविन्द्रपीतस्य त इन्द्रियावतो
 जगच्छन्दसः सर्वगणस्य सर्वगण उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥१६॥
 आयुर्मे प्राणो मनसि मे प्राण आयु पत्यामृचि यन्मे मनोयमं गतं
 यद्वा मे अपरागतः राज्ञा सोमेन तद्वयं पुनरस्मासु दध्मसि ॥१७॥
 यन्मे यमं वैवस्वतं मनो जगाम दूरगास्तन्मआवर्त्तया पुनर्जीवातवेन
 मर्त्तवेऽथो अरिष्टतातये ॥१८॥ येनाह्याजिमजयद्विचक्ष्य येन
 श्येनः शकुनः सुपर्णं यदाहुश्चक्षुरदितावनन्तः सोमो नृचक्षा मयि
 तदधातु ॥१९॥

षष्ठः खण्डः

ऐन्द्रः सहोऽसज्जि तस्य त इन्द्रविन्द्रपीतस्येन्द्रियावतोनुष्टुप्
 छन्दसो हरिवतः सर्वगणस्य सर्वगण उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥१॥
 इन्द्रविन्द्रपीतस्य त इन्द्रियावतोऽनुष्टुप् छन्दसः सर्वगणस्य सर्वगण
 उपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥२॥ स्तुतस्य स्तुतमस्यूर्ज—
 स्वत्पयस्वदामास्तोत्रस्य स्तोत्रं गम्यादिन्द्रवन्तो वनेमहि भक्षीमहि
 प्रजामिषम् ॥३॥

इष्टयजुषस्ते देव सोम स्तुतस्तोमस्य शस्तोकथस्य तिरोह्वयस्य
योश्चसनिर्गोसनिर्भक्षस्तस्योपहूत उपहूतस्य भक्षयामि ॥ ४ ॥ ऋतस्य
त्वा देव स्तोम पदे विष्णोर्द्वामि विमुञ्चाम्येतत्त्वं देव
स्तोमानवकरमगन्नशीमहि वयं प्रतिष्ठाम् ॥ ५ ॥ सोमेह्वनुमेहि सोम
सहसदस इन्द्रियेण ॥ ६ ॥ सुभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्देवानांससद्देवानां
यातुर्यया तन्वा ब्रह्म जिन्वसि तया मा जिन्व तया मा जनय
प्रकाशं मा कुरु ॥ ७ ॥ अपां पुष्पमस्योषधीनांरस इन्द्रस्य
प्रियतमंरहविः स्वाहा ॥ ८ ॥ हरियोजनस्य ते देव सोमेष्टयजुषः
स्तुतस्तोमस्य शस्तोकथस्य योश्चसनिर्गोसनिर्भक्षस्तस्योपहूत उपहूतस्य
भक्षयामि ॥ ९ ॥ देवकृतस्यैनसोऽवयजनमसि पितृकृतस्यै—
नसोऽवयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोऽवयजनमस्यस्मत्कृत—
स्यैनसोऽवयजनमसि यद्दिवा च नक्तं चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि
यत् स्वपन्तश्च जागृतश्चैनश्चकृम तस्यावयजनमसि यद्विद्वांसश्चाविद्वांस—
सश्चैनश्चकृम तस्यावयजनमस्येनसएनसोऽवयजनमसि ॥ १० ॥ अप्सु
धौतस्य ते देव सोम नृभिः सुतस्य ॥ ११ ॥ मधुमन्तं भक्षं
करोमि ॥ १२ ॥ शमद्भ्य ओषधीभ्यः ॥ १३ ॥ काम कामं म
आवर्त्तय ॥ १४ ॥ ऊर्गस्यूर्जम्मयि धेहि ॥ १५ ॥ प्राण सोमपीथे मे
जागृहि ॥ १६ ॥ दधिक्राव्णो अकारिषञ्जिष्णोस्त्वस्य वाजिनः। सुरभि
नो मुखा करत्प्रन आयूषि तारिषत् ॥ १७ ॥

सप्तमः खण्डः

अश्वोस्यत्योसि मयोसि हयोसि वाज्यसि सप्तिरर्वागसि
वृषासि ॥ १ ॥ आदित्यानां पत्मान्विहि नमस्तेऽस्तु मा मा
हिंसीः ॥ २ ॥ वायोष्ट्वा तेजसा प्रतिगृह्णामि नक्षत्राणां त्वां
रूपेण प्रतिगृह्णामि सूर्यस्य त्वा वर्चसा प्रतिगृह्णामि ॥ ३ ॥

रथन्तरमसि वामदेव्यमसि बृहदसि ॥ ४ ॥ अङ्गान्यङ्कूअभितो
 रथ यौ ध्वान्तं वाताग्रमभिसञ्चरन्तौ दूरे हेतिरिन्द्रियवान् पतत्री ते
 नोग्नयः पप्रयः पारयन्तु ॥ ५ ॥ वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुह दिवः
 पृष्ठे मन्दमानः सुमन्मभिः सपूर्ववज्जनयञ्जन्तवे घनः समानमयम्
 पर्य्येति जागृविः ॥ ६ ॥ गिदैष ते रथ एष वामश्विना रथोरिष्टो
 विश्वभेषजः ॥ ७ ॥ कृशानो सव्यानायच्छ ॥ ८ ॥ दासनो
 दक्षिणानवगृहाण ॥ ९ ॥

अष्टमः खण्डः

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां
 प्रतिगृह्णामि ॥ १ ॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे वरुणायाश्वं
 तेनामृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥ २ ॥
 वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे रुद्राय गां तयामृतत्वमशीय वयो
 दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥ ३ ॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि
 दक्षिणेऽग्नयेऽजम् ॥ ४ ॥ अग्नये हिरण्यम् ॥ ५ ॥ अग्नीषोमाभ्या—
 मजान्तयामृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥ ६ ॥
 अन्नस्यान्नपतिः प्रादादनमीवस्य शुष्मिणो नमो विश्वजनस्य क्षामाय
 भुञ्जति मा मा हिंसीः ॥ ७ ॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे
 त्वष्ट्रेऽविं तयाऽमृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं
 प्रतिगृहीत्रे ॥ ८ ॥ ग्नास्त्वाकृन्तन्नपसोऽतन्वत वयित्र्योऽवयन् ॥ ९ ॥
 वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे बृहस्पतये वासस्तेनामृतत्वमशीय
 वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥ १० ॥ वरुणस्त्वा नयतु
 देवि दक्षिणे उत्तानायाङ्गिरसायाप्राणत् तेनामृतत्वमशीय वयो दात्रे
 भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥ ११ ॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे
 पूष्ण उष्ट्रम् ॥ १२ ॥

वायवे मृगं तेनामृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥१३॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे प्रजापतये पुरुषं, प्रजापतये हस्तिनं, प्रजापतये वराहं, प्रजापतये व्रीहियवाः—
स्तैरमृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥१४॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे क्षेत्रपतये तिलमाषाःस्तैरमृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥१५॥ वरुणस्त्वा नयतु देवि दक्षिणे सवित्रेऽथतरं वाऽथतरीं वा तयाऽमृतत्वमशीय वयो दात्रे भूयान्मयो मह्यं प्रतिगृहीत्रे ॥१६॥ क इदं कस्मा अदात्कामः कामायादात्कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामः समुद्रमाविशत्कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि कामैतत्ते ॥१७॥

नवमः खण्डः

रश्मिरसि क्षयाय त्वा क्षयं जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥१॥ प्रेतिरसि धर्म्मणे त्वा धर्म्मं जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥२॥ अन्वितिरसि दिवे त्वा दिवं जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥३॥ सन्धिरस्यन्तरिक्षाय त्वान्तरिक्षं जिन्व सवितृ—
प्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥४॥ प्रतिधिरसि पृथिव्यै त्वा पृथिवीज्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥५॥ विष्टम्भोसि वृष्ट्यै त्वा वृष्टिं जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥६॥ प्राचोस्यहे त्वाहर्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥७॥ अन्वासि रात्र्यै त्वा रात्रिज्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥८॥ उशिगसि वसुभ्यस्त्वा वसून् जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥९॥ प्रकेतोसि रुदेभ्यस्त्वा रुद्राज्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥१०॥ सुदीतिरस्यादि—
त्येस्त्वादित्याज्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥११॥ ओजोसि पितृभ्यस्त्वा पितृज्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥१२॥

दशमः खण्डः

तन्तुरसि प्रजाभ्यस्त्वा प्रजा जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये
 स्तुत ॥ १ ॥ रेवदस्योषधीभ्यस्त्वौषधीर्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये
 स्तुत ॥ २ ॥ पृतनाषाडसि पशुभ्यस्त्वा पशूञ्जिन्व सवितृप्रसूता
 बृहस्पतये स्तुत ॥ ३ ॥ अभिजिदसि युक्तग्रावेन्द्राय त्वेन्द्रञ्जिन्व
 सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ ४ ॥ अधिपतिरसि प्राणाय त्वा
 प्राणाञ्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ ५ ॥ धरुणोस्यपानाय
 त्वाऽपानञ्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ ६ ॥ सःसर्पोसि
 चक्षुषे त्वा चक्षुर्जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ ७ ॥ वयोधा
 असि श्रोत्राय त्वा श्रोत्रं जिन्व सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ ८ ॥
 त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा सवृदसि सवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते
 त्वाऽनुवृदस्यनुवृते त्वा सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ ९ ॥ निरोहोस
 निरोहाय त्वा सःरोहोसि सःरोहाय त्वा प्ररोहोसि प्ररोहाय
 त्वाऽनुरोहोऽस्यनुरोहाय त्वा सवितृप्रसूता बृहस्पतये स्तुत ॥ १० ॥
 वसुकोऽसि वस्यष्टिरसि वेषश्रीरसि सवितृप्रसूता बृहस्पतये
 स्तुत ॥ ११ ॥ आक्रमोस्याक्रमाय त्वा संक्रमोसि संक्रमाय
 त्वोत्क्रमोस्युत्क्रमाय त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वा सवितृप्रसूता बृहस्पतये
 स्तुत ॥ १२ ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥



द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

तिसृभ्यो हिङ्करोति स प्रथमया तिसृभ्यो हिङ्करोति सम—
ध्यमया तिसृभ्यो हिङ्करोति स उत्तमयोद्यती त्रिवृतो विष्टुतिः ॥१॥
ज्येष्ठो ज्यैष्ठिनेयस्तुवीत ॥२॥ अग्रादग्रश्रोहत्यभिक्रामन्ती
विष्टुतिरभिक्रान्त्या एवाभिक्रान्तेन हि यज्ञस्यर्धोति तस्मादेतया
स्तोतव्य मृध्या एव ॥३॥ पापवसीयसो विष्टुतिर्विपाप्मना वर्तते
य एतया स्तुते नावगतोऽपरुध्यते नापरुद्धोऽवगच्छति न श्रेयांसं
पापीयानभ्यारोहति न जनता जनतामभ्येति नान्योन्यस्य प्रजा आददते
यथा क्षेत्रं कल्पन्तेऽवर्षुकस्तु पर्जन्यो भवतीमे हि लोकास्तृचस्तान्
हिङ्कारेण व्येति ॥४॥ एषा वै प्रतिष्ठिता त्रिवृतो विष्टुतिः
प्रतितिष्ठति य एतया स्तुते ॥५॥

द्वितीयः खण्डः

तिसृभ्यो हिङ्करोति सपराचीभिस्तिसृभ्यो हिङ्करोति सपराचीभि—
स्तिसृभ्यो हिङ्करोति सपराचीभिः परिवर्तिनी त्रिविष्टुतिः ॥१॥
प्रपरीवर्तमानोति य एतया स्तुते सन्तता विष्टुतिः प्राणोऽपानो
व्यानस्त ऋचस्तान् हिङ्कारेण सन्तनोति सर्व्वमायुरेति न पुरायुषः
प्रमीयते य एतया स्तुते वर्षुकः पर्जन्यो भवतीमे हि
लोकास्तृचस्तान् हिङ्कारेण सन्दधाति ॥२॥ शलक्षणेव तु वा ईश्वरा
पशून्निर्मजः सैषा च पराचोत श्रेयान् भवत्युत याच्छेव ताच्छनेत्तु
पापीयान् ॥३॥ तामेताम्भाल्लवय उपासते तस्मात्ते प्रतिगृह्णन्तः
परीवर्तन्ति च्यवन्ते ॥४॥

तृतीयः खण्डः

तिसृभ्यो हिङ्करोति सपराचीभिस्तिसृभ्यो हिङ्करोति यामध्यमा
 सा प्रथमा योत्तमा सा मध्यमा या प्रथमा सोत्तमा तिसृभ्यो
 हिङ्करोति योत्तमा सा प्रथमा या प्रथमा सा मध्यमा या मध्यमा
 सोत्तमा कुलायिनी त्रिवृतो विष्टुतिः ॥ १ ॥ प्रजाकामो वा पशुकामो
 वा स्तुवीत प्रजा वै कुलायम्पशवः कुलायङ्कुलायमेव भवति ॥ २ ॥
 एतामेवानुजावराय कुय्यादितासामेवाग्रं परियतीनां प्रजानाम—
 ग्रम्पर्य्येति ॥ ३ ॥ एतामेव बहुभ्यो यजमानेभ्यः कुय्यात् यत्सर्वा
 अग्रिया भवन्ति सर्वा मध्ये सर्वा उत्तमाः सर्वनिवैनान् समावद्भाजः
 करोति नान्योन्यमपघ्नते सर्वे समावदिन्द्रिया भवन्ति ॥ ४ ॥ वर्षुकः
 पर्जन्यो भवतीमे हि लोकास्तृचस्तान् हिङ्कारेण व्यतिषजति ॥ ५ ॥
 पापवसीयसन्तु भवति ॥ ६ ॥ अधरोत्तरमपावगतो रुध्यतेऽव—
 गच्छत्यपरुद्धः पापीयान् श्रेयाः समभ्यारोहति जंनता जनतामभ्ये—
 त्यन्योन्यस्य प्रजा आददते न यथा क्षेत्रं कल्पन्ते ॥ ७ ॥

चतुर्थः खण्डः

पञ्चभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स एकया स एकया, पञ्चभ्यो
 हिङ्करोति स एकया स तिसृभिस्स एकया, पञ्चभ्यो हिङ्करोति स
 एकया स एकया स तिसृभिः, पञ्चपञ्चिनी पञ्चपञ्चदशस्य
 विष्टुतिः ॥ १ ॥ पाङ्क्तः पुरुषः पाङ्क्ताः पशवस्तया पुरुषञ्च
 पशूँश्चाप्नोति वज्रो वै पञ्चदशो यत्पञ्चपञ्च व्यूहति वज्रमेव तद्व्यूहति
 शान्त्या एषा वै प्रतिष्ठिता पञ्चदशस्य विष्टुतिः प्रतितिष्ठति य
 एतया स्तुते ॥ २ ॥

पञ्चमः खण्डः

पञ्चभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स एकया स एकया, तिसृभ्यो हिङ्करोति स पराचीभिस्सप्तभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स तिसृभिः ॥ १ ॥ त्रीन् स्तोमान् प्रति विहिता ब्रह्मवर्चसकामः स्तुवीत ॥ २ ॥ पञ्चभिः पञ्चदशं तिसृभिस्त्रिवृतं सप्तभिः सप्तदशम् ॥ ३ ॥ वीर्यं वै स्तोमा वीर्यमेव तदेकधा समूहते ब्रह्मवर्चसस्यावरुध्यै तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी भवति य ए एतया स्तुते ॥ ४ ॥

षष्ठः खण्डः

तिसृभ्यो हिङ्करोति सपराचीभिः, पञ्चभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिस्स एकया, सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स एकया स तिसृभिरुद्यती पञ्चदशस्य विष्टुतिः ॥ १ ॥ एतया वै देवाः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गकामः स्तुवीत स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः ॥ २ ॥ अभिक्रामन्ती विष्टुतिरभिक्रान्त्या एवाभिक्रान्तेन हि यज्ञस्यर्धोति तस्मादेतया स्तोतव्यमृध्या एव ॥ ३ ॥

सप्तमः खण्डः

पञ्चभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स एकया स एकया, पञ्चभ्यो हिङ्करोति स एकया तिसृभिः स एकया, सप्तभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स तिसृभिर्दशसप्ता सप्तदशस्य विष्टुतिः ॥ १ ॥ एतया वै देवा असुरानत्यक्रामन्नति पाप्मानं भ्रातृव्यं क्रामति य एतया स्तुते ॥ २ ॥ अभिक्रामन्ती विष्टुतिरभिक्रान्त्या एवाभिक्रान्तेन यज्ञस्यर्धोति तस्मादेतया स्तोतव्यमृध्या एव ॥ ३ ॥

गर्भिणी विष्टुतिः प्रप्रजया प्रपशुभिर्ज्जायते य एतया
 स्तुते ॥ ४ ॥ विड्वै सप्तदशस्तस्या राजा गर्भो विश एव
 तद्राजानङ्गर्भङ्करोति ॥ ५ ॥ नावगतोपरुध्यते नापरुद्धोऽवगच्छति ॥ ६ ॥
 अन्नं वै सप्तदशो यत्सप्तमध्ये भवन्ति पञ्चपञ्चाभितोऽन्नमेव
 तन्मध्यतो धीयतेऽनशनायुको यजमानो भवत्यनशनयुकाः
 प्रजाः ॥ ७ ॥ वैराजो वै पुरुषः सप्त ग्राम्याः पशवो यद्दशपुर्व्वा
 भवन्ति सप्तोत्तमा यजमानमेव तत् पशुषु प्रतिष्ठापयति ॥ ८ ॥
 एषा वै प्रतिष्ठिता सप्तदशस्य विष्टुतिः प्रतितिष्ठति य एतया
 स्तुते ॥ ९ ॥

अष्टमः खण्डः

एष एव व्यूहः सप्तैकमध्या ॥ १ ॥ ब्रह्मणो वा आयतनं
 प्रथमा क्षत्रस्य मध्यमा विंश उत्तमा, यत्प्रथमा भूयिष्ठा भाजयति
 ब्रह्मण्येव तदोजोवीर्य्यन्दधाति ब्रह्मण एव तत् क्षत्रञ्च विशञ्चानुगे
 करोति क्षत्रस्येवास्य प्रकाशो भवति य एतया स्तुते ॥ २ ॥
 तामेतान्निखर्व्वा उपासते तस्मात्ते स्पर्द्धमाना न व्लीयन्ते ॥ ३ ॥

नवमः खण्डः

सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स तिसृभिस्स एकया, तिसृभ्यो
 हिङ्करोति स पराचीभिस्सप्तभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिस्स
 तिसृभिस्सप्तास्थिता ॥ १ ॥ भ्रातृव्ययाँस्तुवीत यथा सप्तास्थितेन
 मत्येन समीकरोत्येवं पाप्मानं भ्रातृव्यं प्ररुजति ॥ २ ॥ एतामेव
 बहुभ्यो यजमानेभ्यः कुर्याद्यः प्रथमो हिङ्कारः स प्रथमाया यत्ताँ
 सप्तभ्यो हिङ्करोति तेन सा सप्त भजते यत्सप्तैव मध्ये सम्पद्यन्ते

तेन सा सप्त भजते य उत्तमो हिङ्गारः स उत्तमाया यत्ताँ सप्तभ्यो
हिङ्गरोति तेन सा सप्त भजते सर्वनिर्वैनान् समावद्भाजः करोति
नान्योन्यमपघ्नते सर्वे समावदिन्द्रिया भवन्ति ॥ ३ ॥ तामेतामाभि-
प्रतारिण उपासते तस्मात्त ओजिष्ठास्वानाम् ॥ ४ ॥

दशमः खण्डः

एष एव व्यूह उभयस्सप्तैकमध्या निर्मध्या ॥ १ ॥
आनुजावरस्तुवीतालोको वा एष यदानुजावरो यत् सप्त-
प्रथमास्सप्तोत्तमास्तिस्रो मध्ये त्र्यक्षरः पुरुषो लोकमेवास्मै
तन्मध्यतः करोति तस्मिँल्लोके प्रतितिष्ठति ॥ २ ॥ एतामेव
प्रजाकामाय कुर्यान्मध्यतो वा एष सँरूढो यः प्रजान्न विन्दते
लोकमैवास्मै तं मध्यतः करोति तं लोकं प्रजया च पशुभिश्चानु-
प्रजायते ॥ ३ ॥ एतामेवापरुद्धराजन्याय कुर्याद्विड्वै सप्तदशस्तस्या
राजा गर्भो विश एव तद्राजानन्निर्हन्त्यपावगतो रुध्यतेव
गच्छत्यपरुद्धः ॥ ४ ॥ एतामेवाभिचर्य्यमाणाय कुर्यात्प्रजापतिर्वै
सप्तदशः प्रजापतिमेव मध्यतः प्रविशस्तृत्यै ॥ ५ ॥

एकादशः खण्डः

पञ्चभ्यो हिङ्गरोति स तिसृभिः स एकया स एकया, तिसृभ्यो
हिङ्गरोति स पराचीभिर्नवभ्यो हिङ्गरोति स तिसृभिः स तिसृभिः
स तिसृभिः ॥ १ ॥ चतुरस्तोमान् प्रतिविहिता ब्रह्मवर्चसकामः
स्तुवीत पञ्चभिः पञ्चदशं तिसृभिस्त्रिवृतत्रवभिस्त्रिणवस्स्वयः सप्तदशः
सम्पन्नो वीर्य्य वै स्तोमावीर्य्यमेव तदेकधा समूहते ब्रह्मवर्चसस्या-
वरुध्यै तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी भवति य एतया स्तुते ॥ २ ॥

द्वादशः खण्डः

तिसृभ्यो हिङ्करोति स पराचीभिः पञ्चभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स एकया नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स तिसृभस्स तिसृभिर्द्यती सप्तदशस्य विष्टुतिः ॥१॥ एतया वै देवाः स्वर्गं लोकमायस्स्वर्गकामः स्तुवीत स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानोऽभिक्रामन्ती विष्टुतिरभिक्रान्त्या एवाभिक्रान्तेन हि यज्ञस्यध्नोति तस्मादेतया स्तोतव्यमृध्या एव ॥ २॥

त्रयोदशः खण्डः

सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स तिसृभिस्स एकया पञ्चभ्यो हिङ्करोति स एकया तिसृभिस्स एकया पञ्चभ्यो हिङ्करोति स एकया स एकया स तिसृभिर्भस्त्रावाचीनविला ॥१॥ यं द्विष्यात्तस्य कुर्व्याद्यथावाचीनविलया भस्त्रया प्रधूनुयादेवं यजमानस्य पशून् प्रधूनोत्यपक्रामन्ती विष्टुतिस्तया यजमानस्य पशवोऽपक्रामन्ति पापीयान् भवति य एतया स्तुते ॥ २॥

चतुर्दशः खण्डः

सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स तिसृभिस्स एकया सप्तभ्यो हिङ्करोति स एकया तिसृभिस्स तिसृभिस्सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स एकया स तिसृभिः सप्तसप्तिन्येकविंशस्य विष्टुतिः ॥१॥ सप्त ग्राम्याः पशवस्तानेतया स्पृणोति सप्त शिरसि प्राणाः प्राणा इन्द्रियाणीन्द्रियाण्येवैतयाप्नोति ॥ २॥ एषा वै प्रतिष्ठितैकविंशस्य विष्टुतिः प्रतिष्ठिति य एतया स्तुते ॥ ३॥

पञ्चदशः खण्डः

पञ्चभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स एकया स एकया सप्तभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिस्स तिसृभिर्नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स तिसृभिरुद्यत्येकविंशस्य विष्टुतिः ॥ १ ॥
एतया वै देवाः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गकामः स्तुवीत स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानोऽभिक्रामन्ती विष्टुतिरभिक्रामन्त्या एवाभिक्रान्तेन हि यज्ञस्यर्घ्नोति तस्मादेतया स्तोतव्यमृद्ध्याएव ॥ २ ॥ सैषा त्रिवृत्प्रायणा त्रिवृदुदयना यत्त्रिवृद्बहिष्पवमानं भवति नवैता एकविंशस्योत्तमा भवन्ति प्राणा वै त्रिवृत्प्राणानेव तदुभयतो दधाति तस्मादयमर्द्धभागवाक्प्राण उत्तरेषां प्राणानां सर्वमायुरेति न पुरायुषः प्रमीयते य एतया स्तुते ॥ ३ ॥
तामेताङ्कुरद्विष उपासते तस्मात्ते सर्वमायुर्यन्ति ॥ ४ ॥

षोडशः खण्डः

नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स तिसृभिः, पञ्चभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स एकया, सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स एकया स तिसृभिः प्रतिष्टुतिः ॥ १ ॥
नवभिस्त्रिवृतं प्रतिष्टौति पञ्चभिः पञ्चदशं सप्तभिः सप्तदशं स्वयमेकविंशः सम्पन्नः ॥ २ ॥ य एव स्तोमा यज्ञं वहन्ति तानुत्तमे स्तोत्रे सन्तर्पयति यथाऽनडुहो वाश्चान्वाश्चतरान्वोहुषः सन्तर्पयेदेव—
मेतदुत्तमे स्तोत्रे स्तोमान् सन्तर्पयति तृप्यति प्रजया पशुभिर्य एतया स्तुते ॥ ३ ॥ एतामेव पुरोधाकामाय कुर्याद् ब्रह्म वै त्रिवृत् क्षत्रमेकविंशो यत्त्रिवृतैकविंशं प्रतिपद्यते ब्रह्म तत् क्षत्रस्य पुरस्तान्निदधाति गच्छति पुरोधान्न पुरोधायाश्च्यवते य एतया स्तुते ॥ ४ ॥

तामेतां प्रावाहण्य उपासते तस्मात्ते पुरोधाया न च्यवन्ते ॥ ५ ॥

सप्तदशः खण्डः

नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स तिसृभिस्तिसृभ्यो
हिङ्करोति सपराचीभिर्नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स
तिसृभिः सूर्युभयत आदीप्ता ॥ १ ॥ ब्रह्मवर्चसकामः स्तुवीत
तेजो वै त्रिवृत् त्र्यक्षरः पुरुषो यत् त्रिवृतावभितो भवतस्तिष्ठो
मध्ये यथा हिरण्यं निष्टपेदेवमेनं त्रिवृतौ निष्टपतस्तेजसे
ब्रह्मवर्चसाय ॥ २ ॥ अपशव्येव तु वा ईश्वरा पशून्निर्दहः
किलासत्त्वान्नुभयमति हि निष्टपतः ॥ ३ ॥ एतामेवाभिशास्यमानाय
कुर्याच्छमलं वा एतमृच्छति यमश्लीला वागृच्छति यैवैनमसावश्लीलं
वाग्वदति तामस्य त्रिवृतौ निष्टपतस्तेजस्वी भवति य एतया
स्तुते ॥ ४ ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥



तृतीयोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स पञ्चभिः स एकया, नवभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स पञ्चभिर्नवभ्यो हिङ्करोति स पञ्चभिः स एकया स तिसृभिः ॥ १ ॥ वज्रो वै त्रिणवो वज्रमेव तद्व्यूहति शान्त्यै ॥ २ ॥ पञ्चभिर्विहितैका परिचरा पाङ्क्ताः पशवो यजमानः परिचरा यत्पञ्चभिर्विदधात्येका परिचरा भवति यजमानमेव तत्पशुषु प्रतिष्ठापयत्येषा वै प्रतिष्ठिता त्रिणवस्य विष्टुतिः प्रतितिष्ठति य एतया स्तुते ॥ ३ ॥

द्वितीयः खण्डः

सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स तिसृभिस्स एकया नवभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिस्स पञ्चभिरेकादशभ्यो हिङ्करोति स पञ्चभिः स तिसृभिः स तिसृभिरुद्यती त्रिणवस्य विष्टुतिः ॥ १ ॥ एतया वै देवाः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गकामः स्तुवीत स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानोऽभिक्रामन्ती विष्टुतिरभिक्रान्त्या एवाभिक्रान्तेन हि यज्ञस्यर्ध्नीति तस्मादेतया स्तोतव्यमृध्या एव ॥ २ ॥

तृतीयः खण्डः

एकादशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिस्स सप्तभिः स एकयैका— दशभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स सप्तभिरेकादशभ्यो हिङ्करोति स सप्तभिस्स एकया स तिसृभिः ॥ १ ॥

अन्तो वै त्रयस्त्रिंशः परमो वै त्रयस्त्रिंशस्तोमानाः—
सप्तभिर्विहितैका परिचरा सप्त ग्राम्याः पशवो यजमानः परिचरा
यत्सप्तभिर्विदधात्येका परिचरा भवति यजमानमेव तदन्ततः पशुषु
प्रतिष्ठापयत्येषा वै प्रतिष्ठिता त्रयस्त्रिंशस्य विष्टुतिः प्रतितिष्ठति
य एतया स्तुते ॥ २ ॥

चतुर्थः खण्डः

एकादशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स पञ्चभिः स
तिसृभिरेकादशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स
पञ्चभिरेकादशभ्यो हिङ्करोति स पञ्चभिः स तिसृभिः स तिसृभिर्नेदीयः
संक्रमा ॥ १ ॥ अन्तो वै त्रयस्त्रिंशो यथा महावृक्षस्याग्रसृप्त्वा
नेदीयः संक्रमात् संक्रामत्येवमेतन्नेदीयः संक्रमया नेदीयः संक्रमात्
संक्रमति ॥ २ ॥ पञ्चभिर्विहितास्तिस्रः परिचराः पाङ्क्ताः पशव
एतावान् पुरुषो यदात्मा प्रजा जाया यत्पञ्चभिर्विदधाति तिस्रः
परिचरा भवन्ति यजमानमेव तत्पशुषु प्रतिष्ठापयति पशुमान् भवति
य एतया स्तुते ॥ ३ ॥

पञ्चमः खण्डः

नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स पञ्चभिः स एकयैकादशभ्यो
हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स सप्तभिस्त्रयोदशभ्यो हिङ्करोति
स सप्तभिः स तिसृभिस्स तिसृभिरुद्यती त्रयस्त्रिंशस्य
विष्टुतिः ॥ १ ॥ एतया वै देवाः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गकामः
स्तुवीत स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते
तुष्टुवानोऽग्रादग्ररोहत्यभिक्रामन्ती विष्टुतिरभिक्रान्त्या एवाभिक्रान्तेन
हि यज्ञस्यर्धोति तस्मादेतया स्तोतव्यमृद्ध्या एव ॥ २ ॥

षष्ठः खण्डः

त्रयोदशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स पञ्चभिः स पञ्चभिरेकादशभ्यो हिङ्करोति स पञ्चभिः स तिसृभिः स तिसृभिर्नवभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स तिसृभिः प्रत्यवरोहिणी त्रयस्त्रिंशस्य विष्टुतिः ॥ १ ॥ यथा महावृक्षस्याग्रःसृप्त्वा शाखायाः शाखामालम्भमुपावरोहेदेवमेतयेमं लोकमुपावरोहति प्रतिष्ठायै ॥ २ ॥ त्रिवृता प्रैति त्रिवृतोदेति प्राणो वै त्रिवृत् प्राणोनैव प्रैति प्राणमभ्युदेति सर्वमायुरेति न पुरायुषः प्रमीयते य एतया स्तुते ॥ ३ ॥ तामेताङ्कुरद्विष उपासते तस्मात्ते सर्वमायुर्यन्ति ॥ ४ ॥

सप्तमः खण्डः

पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स सप्तभिः स पञ्चभिरेकादशभ्यो हिङ्करोति स पञ्चभिः स तिसृभिः स तिसृभिस्सप्तभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स एकया स तिसृभिः ॥ १ ॥ यो वै त्रयस्त्रिंशमेकविंशो प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति प्रतिष्ठा वा एकविंशः स्तोमानां यदेताः सप्त त्रयस्त्रिंशस्योत्तमा भवन्ति सप्तविधैकविंशस्य विष्टुतिरेकविंश एव तत् त्रयस्त्रिंशं प्रतिष्ठापयति प्रतितिष्ठति य एतया स्तुते ॥ २ ॥

अष्टमः खण्डः

अष्टाभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स चतसृभिः स एकयाऽष्टाभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स चतसृभिरष्टाभ्यो हिङ्करोति स चतसृभिस्स एकया स तिसृभिः ॥ १ ॥ पशवो वै छन्दोमा यदष्टाभ्योऽष्टाभ्यो हिङ्करोति अष्टाशफाः पशवः शफशस्तत्—पशूनाप्नोति ॥ २ ॥

चतसृभिर्विहितैका परिचरा चतुष्पादाः पशवो यजमानः परिचरा
यच्चतसृभिर्विदधात्येका परिचरा भवति यजमानमेव तत्पशुषु
प्रतिष्ठापयत्येषा वै प्रतिष्ठिता चतुर्विंशस्य विष्टुतिः प्रतितिष्ठति
य एतया स्तुते ॥ ३ ॥

नवमः खण्डः

पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स एकादशभिः स एकया,
चतुर्दशभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स दशभिः, पञ्चदशभ्यो
हिङ्करोति स एकादशभिः स एकया स तिसृभिः ॥ १ ॥ ब्रह्मणो
वा आयतनं प्रथमा क्षत्रस्य मध्यमा विंश उत्तमा यत् पञ्चदशिन्यौ
पूर्वे भवतश्चतुर्दशोत्तमा ब्रह्मणि चैव तत् क्षत्रे चौजो वीर्यं दधाति
ब्रह्मणे चैव तत्क्षत्राय च विशमनुगां करोति क्षत्रस्येवास्य प्रकाशो
भवति य एतया स्तुते ॥ २ ॥ अस्तोमा वा एते यच्छन्दोमा अयुजो
हि स्तोमा युग्मन्ति छन्दांसि यदेषा युजिनी चतुश्चत्वारिंशस्य
विष्टुतिस्तेन स्तोमाः ॥ ३ ॥ एषा वै प्रतिष्ठिता चतुश्चत्वारिंशस्य
विष्टुतिः प्रतितिष्ठति य एतया स्तुते ॥ ४ ॥

दशमः खण्डः

चतुर्दशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स दशभिः स एकया,
पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स एकादशभिः,
पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति स एकादशभिस्स एकया स तिसृभि-
र्निर्मध्या ॥ १ ॥ अस्तीव वा अयं लोकोस्तीवासौ छिद्रमिवेदमन्तरिक्षं
यदेषा निर्मध्या भवती मानेव लोकाननु प्रजायते प्रप्रजया
प्रपशुभिर्जायते य एतया स्तुते ॥ २ ॥

एकादशः खण्डः

पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स एकादशभिस्स एकया,
 पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिस्स एकादशभिश्चतुर्दशभ्यो
 हिङ्करोति स दशभिः स एकया स तिसृभिः ॥१॥ आज्यानां
 प्रथमा पृष्ठानां द्वितीयोक्थानां तृतीया ॥ २॥ याज्यानांसा होतुर्या
 पृष्ठानांसा मैत्रावरुणस्य योक्थानांसा ब्राह्मणाच्छंसिनो यैव
 होतुः साच्छावाकस्य या पृष्ठानांसा होतुर्योक्थानांसा मैत्रावरुणस्य
 याज्यानांसा ब्राह्मणाच्छंसिनो यैव होतुः साच्छावाकस्य
 योक्थानांसा होतुर्याज्यानांसा मैत्रावरुणस्य या पृष्ठानांसा
 ब्राह्मणाच्छंसिनो यैव होतुः साच्छावाकस्य, सर्वा आज्येषु सर्वाः
 पृष्ठेषु सर्वा उक्थेषु ॥ ३॥ पशवो वै समीषन्ती यदेषा सर्वाणि
 सवनान्यनुसञ्चरत्यनुसवनमेवैनं पशुभिः समर्द्धयति पशुमान् भवति
 य एतया स्तुते ॥ ४॥

द्वादशः खण्डः

षोडशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स द्वादशभिः स एकया,
 षोडशभ्यो हिङ्करोति स एकया स तिसृभिः स द्वादशभिः,
 षोडशभ्यो हिङ्करोति स द्वादशभिः स एकया स तिसृभिः ॥१॥
 अन्तो वा अष्टाचत्वारिंशः पशवश्छन्दोमा यत् षोडशभ्यः
 षोडशभ्यो हिङ्करोति षोडशकलाः पशवः कलाशस्तत्
 पशूनाप्नोति ॥ २॥ द्वादशभिर्विहितैका परिचरा द्वादशमासास्सम्बत्सरो
 यजमानः परिचरा यद्वादशभिर्विदधात्येका परिचरा भवति यजमानमेव
 तदन्ततस्सम्बत्सरे पशुषु प्रतिष्ठापयत्येषा वै प्रतिष्ठिताष्टा-
 चत्वारिंशस्य विष्टुतिः प्रतितिष्ठति य एतया स्तुते ॥ ३॥

त्रयोदशः खण्डः

षोडशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स दशभिः स तिसृभिः,
 षोडशभ्यो हिङ्करोति स तिसृभिः स तिसृभिः स दशभिः, षोडशभ्यो
 हिङ्करोति स दशभिः स तिसृभिः स तिसृभिर्नेदीयः संक्रमाः ॥ १ ॥
 अन्तो वा अष्टाचत्वारिंशो यथा महावृक्षस्याग्रं सृप्त्वा नेदीयः
 संक्रमात् संक्रामत्येवमेतन्नेदीयः संक्रमया नेदीयः संक्रमात्
 संक्रामति ॥ २ ॥ दशभिर्विहिता तिस्रः परिचरा दशाक्षरा विराडेतावान्
 पुरुषो यदात्मा प्रजा जाया यद्दशभिर्विदधाति तिस्रः परिचरा
 भवन्ति यजमानमेव तत् विराज्यन्नाद्येऽन्ततः प्रतिष्ठापयत्यन्नादो
 भवति य एतया स्तुते ॥ ३ ॥

॥ इति तृतीयोऽध्यायः ॥



चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

गावो वा एतत् सत्रमासत ताषां दशसु मास्सु शृङ्गाण्यजायन्त
ता अब्रुवन्नरास्मोत्तिष्ठामोपशा नोऽज्ञतेति ता उदतिष्ठन् ॥ १ ॥
तासान्वेवाबुन्नासामहा एवेमौ द्वादशौ मासौ सँ सम्वत्सरमापयामेति
तासान्द्वादशसु माःसु शृङ्गाणि प्रावर्तन्त ताः सर्वमन्नाद्यमाप्नुवन्स्ता
एतास्तूपरा स्तस्मात्ताः सर्वान्द्वादशमासः प्रेरते सर्वं हि ता
अन्नाद्यमाप्नुवन् ॥ २ ॥ सर्वमन्नाद्यमाप्नोति य एवं वेद ॥ ३ ॥
प्रजापतिर्वा इदमेक आसीत् सोकामयत् बहुस्यां प्रजायेयेति स
एतमतिरात्रमपश्यत्तमाहरत्तेनाहोरात्रे प्राजनयत् ॥ ४ ॥ यदेषोऽतिरात्रो—
भवत्यहोरात्रे एव प्रजनयन्त्यहोरात्रयोः प्रतितिष्ठन्त्येतावान् वाव
सम्वत्सरो यदहश्च रात्रिश्चाहोरात्राभ्यामेव तत्सम्वत्सरमाप्नुवन्ति ॥ ५ ॥
यज्ज्योतिष्ठोमो भवति यज्ञ मुखन्तदध्नुवन्ति यदुक्त्यो यज्ञ—
क्रतोरनन्तरयाय यद्रात्रिः सर्वस्याप्त्यै ॥ ६ ॥ स एतान् स्तोमानपश्यत्
ज्योतिर्गौरायुरितीमे वै लोका एते स्तोमा अयमेव ज्योति—
रयम्मध्यमो गौरसावुत्तम आयुः ॥ ७ ॥ यदेते स्तोमा भवन्तीमानेव
लोकान् प्रजनयन्त्येषु लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ८ ॥ स एतन्वहं
पुनः प्रायुङ्क्त तेन षडहेन षडृतून् प्राजनयत् ॥ ९ ॥ यदेष षडहो
भवति ऋतूनेव प्रजनयन्ति ऋतुषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ १० ॥ स एतः षडहं
पुनः प्रायुङ्क्तताभ्यां द्वाभ्यां षडहाभ्यां द्वादशमासः प्राजनयत् ॥ ११ ॥
यदेतौ द्वौ षडहौ भवतो मासानेव प्रजनयन्ति मासेषु
प्रतितिष्ठन्ति ॥ १२ ॥ स एतौ द्वौ षडहौ पुनः प्रायुङ्क्त तैश्चतुर्भिः
षडहैश्चतुर्विंशतिरर्द्धमासान् प्राजनयत् ॥ १३ ॥

यदेते चत्वारः षडहा भवन्त्यर्द्धमासानेव प्राजनयन्त्यर्द्धमासेषु
प्रतितिष्ठन्ति ॥१४॥ स इदं भुवनं प्रजनयित्वा पृष्ठयेन षडहेन
वीर्य्यमात्मन्यधत्त ॥१५॥ यदेष पृष्ठ्यः षडहो भवति वीर्य्य एवान्ततः
प्रतितिष्ठन्ति ॥१६॥ तेन मासान् संवत्सरं प्राजनयद्यदेष मासो
भवति सम्वत्सरमेव प्रजनयन्ति सम्वत्सरे प्रतितिष्ठन्ति ॥१७॥

द्वितीयः खण्डः

प्रायणीयमेतदहर्भवति ॥१॥ प्रायणीयेन वा अह्ना देवाः स्वर्गं
लोकं प्रायन्यत् प्रायस्स्तत्प्रायणीयस्य प्रायणीयत्वम् ॥२॥
तस्मात्प्रायणीयस्याह्ना ऋत्विजा भवतिव्यमेतद्धि स्वर्गस्य लोकस्य
नेदिष्ठं य एतस्यत्विङ् न भवति हीयते स्वर्गाल्लोकात् ॥३॥
चतुर्विंशं भवति ॥४॥ चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री तेजो
ब्रह्मवर्चसङ्गायत्री तेजएव ब्रह्मवर्चसमारभ्य प्रयन्ति ॥५॥ चतुर्विंशं
भवति चतुर्विंशो वै सम्वत्सरः साक्षादेव सम्वत्सरमारभन्ते ॥६॥
यावत्यश्चतुर्विंशस्योक्थस्य स्तोत्रीयास्तावत्यः सम्वत्सरस्य रात्रयः
स्तोत्रीयाभिरेव तत् सम्वत्सरमाप्नुवन्ति ॥७॥ पञ्चदश स्तोत्राणि
भवन्ति पञ्चदशार्द्धमासस्य रात्रयोऽर्द्धमासश एव तत्
सम्वत्सरमाप्नुवन्ति ॥८॥ पञ्चदश स्तोत्राणि भवन्ति पञ्चदश शस्त्राणि
स मासो मासश एव तत् सम्वत्सरमसप्नुवन्ति ॥९॥ तदाहुरीर्म्म
इव वा एषा होत्रा यदच्छावाक्या यदच्छावाकमनुसन्तिष्ठत ईश्वरेर्म्मा
भवितोरिति यद्युक्थस्मात्रैककुम्भश्चोद्वंशीयञ्चान्ततः प्रतिष्ठाप्ये वीर्य्य
वा एते सामनी वीर्य्य एवान्ततः प्रतितिष्ठन्ति ॥१०॥ अथो
खल्वाहुरग्निष्टोममेव कार्यमेष वै यज्ञः स्वर्ग्यो यदग्निष्टोम ऊर्द्ध्वोहि
होतारमनु सन्तिष्ठते ॥११॥

द्वादश स्तोत्राण्यग्निष्टोमो द्वादश मासाः सम्बत्सरस्तेन
सम्बत्सरसम्मितो द्वादश स्तोत्राणि द्वादश शस्त्राणि तच्चतुर्विंश-
शतिश्चतुर्विंशतिरर्द्धमासाः संवत्सरस्तेन सम्बत्सरसम्मितः ॥१२॥
अथो खल्वाहुर्बुधमेव कार्य्यमह्नः समृद्धयै ॥१३॥ सर्वाणि रूपाणि
क्रियन्ते सर्व्वश्चेतेनाह्वय्यते ॥१४॥ पवन्ते वाजसातये सोमाः
सहस्रपाजस इति सहस्रवती प्रतिपत्कार्य्या ॥१५॥ सम्बत्सरस्य
रूपश्चसर्व्वानेवैनानेतया पुनाति सर्व्वानभि वदति ॥१६॥ अथो
खल्वाहुः पवस्व वाचो अग्रिय इत्येव कार्य्या मुखं वा एतत्
संवत्सरस्य यद्वाचोग्रम्मुखतएव तत् संवत्सरमारभन्ते ॥१७॥
मिथुनमिव वा एषा व्याहृतिः पवस्वेति पुंसो रूपं वाच इति
स्त्रियाः सोमेति पुंसो रूपश्चित्राभिरिति स्त्रिया मिथुनमेवैभ्यो
यज्ञमुखे दधाति प्रजननाय ॥१८॥ अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवेति
जराबोधीयमग्निष्टोम साम कार्य्यं युक्तेनैव संवत्सरेण प्रयन्ति
चतुर्विंशत्यक्षरासु भवति चतुर्विंशस्य रूपम् ॥१९॥ अथो
खल्वाहुर्यज्ञायज्ञीयमेव कार्य्यम् ॥२०॥ पन्था वै यज्ञायज्ञीयं पथ
एव तन्नयन्ति ॥२१॥

तृतीयः खण्डः

अभीवर्त्तो ब्रह्मसाम भवति ॥१॥ अभीवर्त्तेन वै देवाः स्वर्गं
लोकमभ्यवर्त्तन्त यदभीवर्त्तो ब्रह्मसाम भवति स्वर्गस्य
लोकस्याभिवृत्त्यै ॥२॥ एकाक्षरणिधनो भवत्येकाक्षरा वै वाग्वाचैव
तदारभ्य स्वर्गं लोकं यन्ति ॥३॥ साम्नेतो यन्त्यृचा
पुनरायन्ति ॥४॥ साम वा असौ लोको ऋगयं यदितः साम्ना
यन्ति स्वर्गं लोकमारभ्य यन्ति यद्वा पुनरायन्त्यस्मिन् लोके
प्रतितिष्ठन्ति ॥५॥

यत्सामावसृजेयुरव स्वर्गाल्लोकात्पद्मेरन्यध्वमनुसृजेयुर्नश्येयुर—
 स्माल्लोकात् ॥ ६ ॥ समानःसाम भवत्यन्योन्यः प्रागाथोऽन्यदन्यद्धि
 चित्रमध्वानमवगच्छन्नेति ॥ ७ ॥ वृषा वा एष रेतोधा यदभीवर्तः
 प्रगाथेषु रेतो दधदेति यदितः समानःसाम भवत्यन्योऽन्यः प्रगाथो
 रेत एव तदधति यत्परस्तात् समानः प्रगाथो भवत्यन्यदन्यत्साम
 रेत एव तद्धितं प्रजनयन्ति ॥ ८ ॥ साम्नेतः प्रगाथां दुग्धे प्रगाथेन
 परस्तात्सामानि दुग्धे सलोमत्वाय ॥ ९ ॥ ये वा अध्वानं
 पुनर्निवर्तयन्ति नैनं ते गच्छन्ति येऽपुनर्निवर्तं यन्ति ते
 गच्छन्ति ॥ १० ॥ य आस्तुतं कुर्वते यथा दुग्धामुपसीदे
 देवन्तत् ॥ ११ ॥ ये नास्तुतं यं कामं कामयन्ते तमभ्यश्नुवते ॥ १२ ॥
 ब्रह्मवादिनो वदन्ति यातयामाः संवत्सरा ३ अयातयाम ३ इति ते
 नायातयामेति वक्तव्यं पुनरन्यानि स्तोत्राणि निवर्तन्त ऊर्ध्वमेव
 ब्रह्मसामैति ॥ १३ ॥

चतुर्थः खण्डः

पञ्चसु माःसु बार्हताः प्रगाथा आप्यन्ते ॥ १ ॥ तेष्वप्यप्तेषु
 छन्दसी संयुज्यैतव्यम् ॥ २ ॥ तिस्र उष्णिहः स्युरेका गायत्री
 तास्तिस्त्रोबृहत्यो भवन्ति ॥ ३ ॥ तदाहुः सःशर इव वा एषच्छन्दसां
 यत् द्वे छन्दसी संयुज्यन्तीति ॥ ४ ॥ चतुरुत्तरैरेव छन्दोभि—
 रेतव्यम् ॥ ५ ॥ पशवो वै चतुरुत्तराणि छन्दांसि पशुभिरेव तत्
 स्वर्गं लोकमाक्रममानयन्ति ॥ ६ ॥ एकाङ्गायत्रीमेकाहमुपेयुरेका—
 मुष्णिहमेकाहमेकामनुष्टुभमेकाहं बृहत्या पञ्चमास इयुः
 पङ्क्तिमेकाहमुपेयुस्त्रिष्टुभा षष्ठं मासमियुः श्वो विषुवान् भवितेति
 जगतीमुपेयुः ॥ ७ ॥

तदाहुरनवक्लृप्तानि वा एतानि छन्दांसि मध्यन्दिने बृहत्या
चैव त्रिष्टुभा चैतव्यम् ॥ ८ ॥ एते वै छन्दसी वीर्यवती एते
प्रत्यक्षं मध्यन्दिनस्य रूपम् ॥ ९ ॥ राथन्तरेऽहनि बृहती
कार्यैतद्वैरथन्तरस्य स्वमायतनं यद्बृहती स्व एव तदायतने रथन्तरं
प्रतितिष्ठति बार्हतेऽहनि त्रिष्टुप् कार्यैतद्वै बृहतः स्वमायतनं यत्
त्रिष्टुप् स्व एव तदायतने बृहद्रथन्तरे प्रतितिष्ठन्ती इतः ॥ १० ॥
त्रयस्त्रिंशता प्रगाथैरेतव्यं त्रयस्त्रिंशद्देवता देवतास्वेव
प्रतितिष्ठन्तोयन्ति, चतुर्विंशत्यैतव्यं चतुर्विंशतिरर्द्धमासाः संवत्सरः
संवत्सर एव प्रतितिष्ठन्तोयन्ति, द्वादशभिरेतव्यं द्वादशमासाः संवत्सरः
संवत्सर एव प्रतितिष्ठन्तोयन्ति, षड्भिरेवतव्यं षडृतव ऋतुष्वेव
प्रतितिष्ठन्तोयन्ति, चतुर्भिरितव्यञ्चतुष्पादाः पशवः पशुष्वेव
प्रतितिष्ठन्तोयन्ति, त्रिभिरेतव्यन्त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेषु
प्रतितिष्ठन्तोयन्ति द्वाभ्यामेतव्यन्द्वापाद्यजमानः स्वर्गस्य लोकस्या—
क्रान्त्या अन्येनान्येन हि पदा पुरुषः प्रतितिष्ठन्नेति ॥ ११ ॥

पञ्चमः खण्डः

स्वरसामान एते भवन्ति ॥ १ ॥ स्वर्भानुर्वा आसुर
आदित्यन्तमसाऽविध्यत्तं देवाः स्वरैरस्पृण्वन्यत् स्वर सामानो
भवन्त्यादित्यस्य स्पृत्यै ॥ २ ॥ परवै देवा आदित्यः स्वर्गं
लोकमपारयन्यदपारयस्तत्पराणां परत्वम् ॥ ३ ॥ पारयन्त्येनं पराणि
य एवं वेद ॥ ४ ॥ सप्तदशा भवन्ति ॥ ५ ॥ प्रजापतिर्वै सप्तदशः
प्रजापतिमेवोपयन्ति ॥ ६ ॥ अनुष्टुप् छन्दसो भवन्त्यानुष्टुभो वै
प्रजापतिः साक्षादेव प्रजापतिमारभन्ते ॥ ७ ॥ त्रयः पुरस्तात् त्रयः
परस्तान्भवन्ति ॥ ८ ॥

देवा वा आदित्यस्य स्वर्गाल्लोकादवपादादविभयुस्तमेतैः स्तोमैः
 सप्तदशैरह्न्यदेते स्तोमाभवन्त्यादित्यस्य धृत्यै ॥ ९ ॥ चतुस्त्रिंशा
 भवन्ति वर्षं वै चतुस्त्रिंशो वर्षणैवैनं सम्मिमते ॥ १० ॥ तस्य
 पराचीनातिपादादविभयुस्तं सर्वैः स्तोमैः पर्यारिषन्विश्वजिदभिजिद्भ्यां
 वीर्यं वा एतौ स्तोमौ वीर्येणैव तदादित्यं पर्युषन्ति धृत्यै ॥ ११ ॥
 अनवपादायानतिपादाय ॥ १२ ॥ तदाहुः कर्त्तृप्रस्कन्द इव वा एष
 यत् त्रयस्त्रिंशत् सप्तदशमुपयन्तीति पृष्ठ्योन्तरः कार्य्यः ॥ १३ ॥
 तस्य यत्सप्तदशमहस्तदुत्तमं कार्य्यं सलोमत्वाय ॥ १४ ॥ तदाहुरुदरं
 वा एषः स्तोमानां यत् सप्तदशो यत् सप्तदशमध्यतो निहरीयु-
 रशनायवः प्रजाः स्युरशनायवः सत्रिण इति ॥ १५ ॥ त्रयस्त्रिंशादेव
 सप्तदश उपेत्यो वर्षं वै त्रयस्त्रिंशो वर्षं सप्तदशो वर्षण एव
 तद्वर्ष्माभिसंक्रामन्ति ॥ १६ ॥ तानाहुरुक्थाः कार्य्या ३ अग्निष्टोमा
 ३ इति यद्युक्थाः स्युः ॥ १७ ॥ पशवो वा उक्थानि शान्तिः
 पशवः शान्तेनैव तद्विषुवन्तमुपयन्ति ॥ १८ ॥ तदाहुर्विवीवधमिव
 वा एतद्यग्निष्टोमोविषुवानग्निष्टोमौ विश्वजिदभिजितावथेतर उक्थाः
 स्युरिति ॥ १९ ॥ अग्निष्टोमा एव सर्वे कार्य्याः ॥ २० ॥ वीर्यं
 वा अग्निष्टोमो वीर्यं एव मध्यतः प्रतितिष्ठन्ति नव संस्तुता
 भवन्ति नव प्राणाः प्राणेष्वेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ २१ ॥

षष्ठः खण्डः

विषुवानेष भवति ॥ १ ॥ देवलोका वा एष यद्विषुवान्देवलोकमेव
 तदभ्यारोहन्ति ॥ २ ॥ एकविंशो भवत्येकविंशो वा अस्य
 भुवनस्यादित्य आदित्यलोकमेव तदभ्यारोहन्ति ॥ ३ ॥ द्वादशमासाः
 पञ्चवर्त्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंशः ॥ ४ ॥

मध्यत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठन्ति ॥ ५ ॥ वायो शुक्रो अयामित
इति शुक्रवती प्रतिपद्भवत्यादित्यस्य रूपम् ॥ ६ ॥ वायुर्वा
एतन्देवतानामानशोऽनुष्टुप् छन्दसां यदतोऽन्या प्रतिपत्स्यात्प्रदहेत् ॥ ७ ॥
यन्ति वा एते प्राणादित्याहुर्ध्वं गायत्र्याः प्रतिपदो यन्तीति यद्वायव्या
भवन्ति तेन प्राणान्नयन्ति प्राणोहि वायुः ॥ ८ ॥ अथो
शमयन्त्येवैनमेतया शान्तिर्हि वायुः ॥ ९ ॥ आयाहि सोमपीतय
इति सौमी पावमानी ॥ १० ॥ नियुत्वती भवति पशवो वै नियुतः
शान्तिः पशवः शान्तेनैव तदादित्यमुपयन्ति ॥ ११ ॥ दिवाकीर्त्यसामा
भवति ॥ १२ ॥ स्वर्भानुर्वा आसुर आदित्यन्तमसाविध्यत्तस्य देवा
दिवाकीर्त्यैस्तमोऽपाघ्नन्त्यदिवाकीर्त्यानि भवन्ति तम एवास्मादपघ्नन्ति
रश्मयो वा एत आदित्यस्य यद्दिवाकीर्त्यानि रश्मिभिरेव तदादित्यं
साक्षादारभन्ते ॥ १३ ॥ भ्राजाम्राजे पवमानमुखे भवतो मुखत एवास्य
ताभ्यां तमोऽपघ्नन्ति ॥ १४ ॥ महादिवाकीर्त्यञ्च विकर्णञ्च मध्यतो
भवतो मध्यत एवास्य ताभ्यां तमोऽपघ्नन्ति ॥ १५ ॥ दशस्तोभं
भवति दशाक्षरा विराड् विराज्येव प्रतितिष्ठन्ति ॥ १६ ॥ यत्विद्याहुः
षड्भिरितो मासरध्वानं यन्ति षड्भिः पुनरायन्ति क्व तर्हि
स्वर्गोलोको यस्य कामाय सत्रमासत इति ॥ १७ ॥ मूर्ध्नि नन्दिव
इति स्वर्गं लोकमारभन्ते ॥ १८ ॥ अरतिं पृथिव्या इत्यस्मिन् लोके
प्रतितिष्ठन्ति ॥ १९ ॥ वैश्वानर मृत आज्ञातमग्निमिति विषुवत एव
तद्रूपं क्रियते ॥ २० ॥ कविः सप्राजमतिथिञ्जनानामित्यत्रा—
द्यमेवोऽपयन्ति ॥ २१ ॥ आसन्नः पात्रञ्जनयन्त देवा इति जायन्त
एव ॥ २२ ॥ तत्त्रिष्टुब् जगतीषु भवति त्रैष्टुब्जागतो वा आदित्यो
यदतोऽन्यासु स्यादव स्वर्गाल्लोकात्पद्मेरन् ॥ २३ ॥ सम्प्राड्वतीषु
भवति साम्राज्यं वै स्वर्गो लोकः स्वर्गएव लोके प्रतितिष्ठन्ति ॥ २४ ॥

सप्तमः खण्डः

आत्मा वा एष संवत्सरस्य यद्विषुवान् पक्षावेतावभितो भवतो
येन चेतोऽभीवर्त्तेन यन्ति यश्च परस्तात् प्रगाथो भवति तावुभौ
विषुवति कार्य्यौ पक्षावेव तद्यज्ञस्यात्मन् प्रतिदधति स्वर्गस्य लोकस्य
समष्ट्यै ॥ १ ॥ 'इन्द्रक्रतुन्न आभरे'ति प्रगाथो भवति ॥ २ ॥ वसिष्ठो
वा एतं पुत्रहतोऽपश्यत् सप्रजया पशुभिः प्राजायत यदेष प्रगाथो
भवति प्रजात्यै ॥ ३ ॥ जीवा ज्योतिरशीमहीति ये वै स्वस्ति
संवत्सरः सन्तरन्ति ते जीवा ज्योतिरश्नुवते ॥ ४ ॥ मानो अज्ञाता
वृजना दुराध्यो मा शिवासोऽवक्रमुरिति ये वै स्तेना रिपवस्ते
दुराध्यस्तानेव तदतिक्रामन्ति ॥ ५ ॥ त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽस्ति
शूरतरामसीति संवत्सरो वै प्रवतः शश्वतीरपस्तमेव तत्तरन्ति ॥ ६ ॥
अद्याद्याश्वः श्वस्त्वामिदा ह्यो नरो वयमेनमिदाह्य इति सन्तनयः
प्रगाथा भवन्ति तेषामेकः कार्य्यः समलोमत्वाय श्वस्तनमेवाभि-
सन्तवन्ति ॥ ७ ॥ अथो खल्वाहुरिन्द्र क्रतुन्न आभरेत्येव
कार्य्यः समृद्ध्यै ॥ ८ ॥ प्रत्यवरोहिणो मासा भवन्ति ॥ ९ ॥ यथा
वा इतो वृक्षः रोहन्त्येवमेनं प्रत्यवरोहन्ति स्वर्गमेव तल्लोकः—
रूढ्वास्मिल्लोके प्रतितिष्ठन्ति ॥ १० ॥

अष्टमः खण्डः

गौश्चायुश्च स्तोमौ भवतः ॥ १ ॥ द्विपाद्यजमानः प्रतिष्ठित्यै ॥ २ ॥
ऊनातिरिक्तौ भवत ऊनातिरिक्तं वा अनु प्रजाः प्रजायन्ते
प्रजात्यै ॥ ३ ॥ वैराजौ भवतोऽन्नं विराडन्नाद्य एव प्रतितिष्ठन्ति ॥ ४ ॥
द्वादशाहस्य दशाहानि भवन्ति ॥ ५ ॥ विराड्वा एषा समृद्धा
यद्दशाहानि विराज्येव समृद्धायां प्रतितिष्ठन्ति ॥ ६ ॥

पृष्ठानि भवन्ति वीर्यं वै पृष्ठानि वीर्येण प्रतितिष्ठन्ति छन्दोमा भवन्ति पशवो वै छन्दोमाः पशुष्वेव प्रतितिष्ठन्त्यथैतद्दशम—
महराप्तस्तोममाप्तछन्दआप्तविभक्तिकमनिरुक्तं प्राजापत्यम् ॥ ७ ॥
यदध्याहुरति तद्रेचयन्ति तस्मान्न व्युच्यम् ॥ ८ ॥ परोक्षमनुष्टुभ—
मुपयन्ति प्रजापतिर्वा अनुष्टुप् यत् प्रत्यक्षमुपेयुः प्रजापति—
मृच्छेयुः ॥ ९ ॥ यो वै सत्रस्य सद्देद सद्भवति वामदेव्यं वै
साम्नाऽसदग्निर्देवतानां विराट् छन्दसान्त्रयस्त्रिंशः स्तोमानां तान्येव
तदेकधा संभृत्योत्तिष्ठन्ति ॥ १० ॥ ब्रह्मवादिनो वदन्ति यतः
सत्रादुदस्थाता ३ स्थिता ३ दिति ॥ ११ ॥ ये रथन्तरेण
स्तुत्वोत्तिष्ठन्ति ते यत उत्तिष्ठन्ति तान् ब्रूयादप्रतिष्ठाना भविष्यन्तीति
ये बृहता स्तुत्योत्तिष्ठन्ति ते स्थितादुत्तिष्ठन्ति तान् ब्रूयात्
स्थायुकैषां श्रीर्भविष्यति न वसीयांसो भविष्यन्तीति ॥ १२ ॥ ये
वामदेव्येन स्तुत्वोत्तिष्ठन्ति ते सतः सदभ्युत्तिष्ठन्ति पूर्णात्पूर्णमा—
यतनादायतनमन्तरिक्षायतना हि प्रजा ॥ १३ ॥ त्रयस्त्रिंशदक्षरासु
भवति त्रयस्त्रिंशद्देवतास्वेव प्रतिष्ठायोत्तिष्ठन्ति ॥ १४ ॥ प्राजापत्यं
वै वामदेव्यं प्रजापतावेव प्रतिष्ठायोत्तिष्ठन्ति पशवो वै वामदेव्यं
पशुष्वेव प्रतिष्ठायोत्तिष्ठन्ति ॥ १५ ॥

नवमः खण्डः

पत्नीः संयाज्य प्राञ्च उदेत्यायऽसहस्रमानव इत्यतिछन्द—
साऽऽहवनीयमुपतिष्ठन्ते ॥ १ ॥ इमे वै लोका अतिछन्दा एष्वेव
लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ २ ॥ गोरिति निधनं भवति विराजो वा
एतद्रूपं यद्गौरविराज्येव प्रतितिष्ठन्ति ॥ ३ ॥ प्रत्यञ्चः प्रपद्य सार्पराज्ञ्या
ऋग्भिः स्तुवन्ति ॥ ४ ॥ अर्बुदः सर्प एताभिर्मृतान्त्वचमपाहत
मृतामेवैताभिस्त्वचमपघ्नते ॥ ५ ॥

इयं वै सारपराज्ञ्यस्यामेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ ६ ॥ तिसृभिः स्तुवन्ति
 त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ७ ॥
 मनसोपावर्तयति ॥ ८ ॥ मनसा हिङ्करोति मनसा प्रस्तौति मनसोद्गायति
 मनसा प्रतिहरति मनसा निधनमुपयन्त्यसमाप्तस्य समाप्त्यै ॥ ९ ॥
 यद्वै वाचा न समाप्नुवन्ति मनसा तत्समापयन्ति ॥ १० ॥ परिश्रिते
 स्तुवन्ति ब्रह्मणः प्ररिगृहीत्यै ॥ ११ ॥ ब्रह्मोद्यं वदन्ति ब्रह्मवर्च्यसं
 एव प्रतितिष्ठन्ति ॥ १२ ॥ चतुर्होतारः होता व्याचष्टे स्तुतमेव
 तदनुशंसति नहि तत् स्तुतं यदननुशस्तम् ॥ १३ ॥ प्रजापतिं
 परिवदन्त्याप्तवैनं तद्व्याचक्षते तावदापामैनमिति ॥ १४ ॥ गृहपति—
 रौदुम्बरीं धारयति गृहपतिर्वा ऊर्जो यन्तोर्जमेवैभ्यो यच्छति ॥ १५ ॥
 वाचं यच्छन्ति ॥ १६ ॥ दुग्धानीव वै तर्हि छन्दांसि यातया—
 मान्यन्तगतानि तान्येव तद्रसेनाप्याययन्ति ॥ १७ ॥ अथो
 श्वस्तनमेवाभिसन्तन्वन्ति ॥ १८ ॥ आत्मदक्षिणं वा एतद्यत्सत्रम् ॥ १९ ॥
 यदा वै पुरुष आत्मनोऽवद्यति यं कामं कामयते तमभ्यश्नुते ॥ २० ॥
 द्वाभ्यां लोमावद्यति द्वाभ्यां त्वचं द्वाभ्यां मांसं द्वाभ्यामस्थि द्वाभ्यां
 मज्जानं द्वाभ्यां पीवश्च लोहितञ्च ॥ २१ ॥ शिखा अनु प्रवपन्ते
 पाप्मानमेव तदपघ्नते लघीयांसः स्वर्गलोकमयामेति ॥ २२ ॥
 अथो गवामेवानुरूपा भवन्ति सर्वस्यान्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ २३ ॥

दशमः खण्डः

प्रजापतिः प्रजा असृजत सोऽरिच्यत सोऽपद्यत तं देवा
 अभिसमगच्छन्त तेऽब्रुवन्महदस्मै व्रतः संभराम यदिमन्धिनवदिति
 तस्मै यत्संवत्सरमन्नं पच्यते तत्समभरस्तदस्मै प्रायच्छस्तदब्रजयत्तदेन
 मधिनोन्महन्मर्या व्रतं यदिममधिन्वीदिति तन्महाव्रतस्य महाव्रत—
 त्वम् ॥ १ ॥

प्रजापतिर्वाव महाऽस्तस्यैतद्ब्रतमन्नमेव ॥ २ ॥ तदाहुर्मध्यतः
 संवत्सरस्योपेत्यं मध्यतो वा अन्नं जग्धं धिनोति ॥ ३ ॥ तदाहुर्यन्-
 मध्यत उपयन्त्यर्द्धमन्नाद्यस्याप्नुवन्त्यर्द्धं संवत्कुर्वन्तीत्युपरिष्टादेव
 संवत्सरस्योपेत्यं संवत्सरे वा अन्नः सर्वं पच्यते ॥ ४ ॥ चतुर्विंशं
 भवति चतुर्विंशो वै संवत्सरोऽन्नं पञ्चविंशम् ॥ ५ ॥ यद्वा अदश्च-
 तुर्विंशं प्रायणीयन्तदेतदुदयनीयम् ॥ ६ ॥ यत् संवत्सरमन्नः संभरन्ति
 सैषा पञ्चविंश्युपजायते ॥ ७ ॥

॥ इति चतुर्थोऽध्यायः ॥



पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

वामदेव्यं महाव्रतं कार्यम् ॥१॥ त्रिवृच्छिरो भवति ॥२॥
त्रिवृद्धयेव शिरोलोमत्वगस्थि ॥३॥ पाङ्क्त इतर आत्मा लोम
त्वङ्मांसमस्थि मज्जा ॥४॥ सकृद्धिङ्कृतेन शिरसा पराचा
स्तुवते ॥५॥ तस्माच्छिरोऽङ्गानि मेघन्ति नानुमेघति न कृश्यन्त्यनु—
कृश्यति ॥६॥ पुनरभ्यावर्त्तमितरेणात्मना स्तुवते तस्मादितर आत्मा
मेघति च कृश्यति च ॥७॥ अर्कवतीषु गायत्रीषु शिरो
भवति ॥८॥ अन्नं वा अर्को ब्रह्मवर्चसं गायत्र्यन्नाद्यं चैवैभ्यो
ब्रह्मवर्चसञ्च मुखतो दधाति ॥९॥ पञ्चदशसप्तदशौ पक्षौ भवतः
पक्षाभ्यां वै यजमानो वयो भूत्वा स्वर्गं लोकमेति ॥१०॥ तावाहुः
समौ कार्यौ पञ्चदशौ वा सप्तदशौ वा सवीवधत्वाय ॥११॥
तद्वाहुर्यत्समौ भवत एकवीर्यौ तर्हि भवत इति पञ्चदशसप्तदशावेव
कार्यौ साचीव वै वयः पक्षौ कृत्वा पतीयः पतति ॥१२॥
दक्षिणतो बृहत्कार्यं दक्षिणोवा अर्द्ध आत्मनो वीर्यवत्तरः ॥१३॥
अथो खल्वाहुरुत्तरत एव कार्यं ब्राह्मणाच्छःसिनोऽर्द्धात् त्रैष्टुभं वै
बृहत्त्रैष्टुभो ब्राह्मणाच्छःसी त्रैष्टुभः पञ्चदशस्तोमः ॥१४॥ दक्षिणतो
रथन्तरं कार्यंमैत्रावरुणस्यार्द्धाद्गायत्रं वै रथन्तरं गायत्री मैत्रावरुणो
गायत्रः सप्तदशस्तोमः ॥१५॥ एकविंशं पुच्छं भवति ॥१६॥
एकविंशो वै स्तोमानां प्रतिष्ठा तस्माद्वयः पुच्छेन प्रतिष्ठायोत्पतति
पुच्छेन प्रतिष्ठाय निषीदति ॥१७॥ यज्ञायज्ञीयं पुच्छं कार्यं
यज्ञायज्ञीयं ह्येव महाव्रतस्य पुच्छम् ॥१८॥ अथो खल्वाहुरतिशयं
वै द्विपदां यज्ञायज्ञीयं भद्रमेव कार्यं समृद्धयै ॥१९॥

द्वितीयः खण्डः

वामदेव्यम्महाव्रतं कार्यन्तस्य गायत्रश्शिरोबृहद्रथन्तरे पक्षौ यज्ञायज्ञीयं पुच्छम् ॥१॥ यो वै महाव्रते सहस्रं प्रोतं वेद प्र सहस्रं पशूनाप्नोति ॥२॥ तस्य प्राची दिक् शिरस्तच्छन्दोभिः साहस्रमसावन्यतरः पक्षः सनक्षत्रैः साहस्रोऽयमन्यतरः पक्षः स ओषधिभिश्च वनस्पतिभिश्च साहस्रोऽन्तरिक्षमात्मा तद्वयोभिः साहस्रं प्रतीची दिक् पुच्छन्तदग्निभिश्च रश्मिभिश्च साहस्रं प्र सहस्रं पशूनाप्नोति य एवं वेद ॥३॥ तदाहुरपृष्ठं वै वामदेव्यमनिधनं हीति ॥४॥ अनायतनं वा एतत् साम यदनिधनम् ॥५॥ राजनम्महाव्रतं कार्यम् ॥६॥ एतद्वै साक्षादन्नं यद्राजनं पञ्चविधं भवति पाङ्क्तः ह्यन्नम् ॥७॥ हिङ्गारवद्भवति तेन वामदेव्यस्य रूपम् ॥८॥ निधनवद्भवति तेन पृष्ठस्य रूपम् ॥९॥ अतिछन्दःसु पञ्चनिधनं वामदेव्यं ब्रह्मसाम कार्यम् ॥१०॥ अति वा एषाऽन्यानि छन्दांसि यदतिछन्दा अत्येतदन्यान्यहान्यहर्ह्यन्महाव्रतम् ॥११॥ ब्रह्मसाम्नैव तदन्यान्यहान्यतिमेदयति ॥१२॥ पञ्चनिधनं भवति पाङ्क्तः— ह्यन्नम् ॥१३॥

तृतीयः खण्डः

इलान्दमग्निष्टोम साम कार्यम् ॥१॥ एतद्वै साक्षादन्नं यदिलान्दमिरान्नं वा एतदिशयामेवान्नाद्येऽन्ततः प्रतितिष्ठन्ति ॥२॥ समुद्रो वा एतच्छन्दः सलिलं लोमशः समुद्र इव खलु वै स भवति सलिल इव लोमश इव यो भवति ॥३॥ तस्मादेतासु कार्य्यं समृद्धयै ॥४॥ व्रतमिति निधनं भवति महाव्रतस्यैव तद्रूपं क्रियते स्वरिति भवति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै शकुन इति भवति शकुन इव वै यजमानो वयो भूत्वा स्वर्गल्लोकमेति ॥५॥

यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोमसाम कार्यम् ॥ ६ ॥ यद्वा अन्या वाङ्नाति
वदेत्तदग्निष्टोम साम कार्यन्न वै वाग्वाचमिति वदति वाग्यज्ञायज्ञीयं
वाच्येवान्ततः प्रतितिष्ठन्ति ॥ ७ ॥ वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम
कार्यम् ॥ ८ ॥ अग्निर्वा इदं वैश्वानरो दहनैतस्माद्देवा अविभयुस्तं
वरणशाखयाऽवारयन्त यदवारयन्त तस्माद्धारवन्तीयम् ॥ ९ ॥
तस्माद्धारणोभिषज्य एतेन हि देवा आत्मानमत्रायन्त ॥ १० ॥
तस्माद्ब्राह्मणो वारणेन न पिबेद् वैश्वानरन्नेच्छमया इति ॥ ११ ॥
पशवो वै वारवन्तीयऽशान्तिः पशवः शान्तादेव तत्संवत्सरा-
दुत्तिष्ठन्ति ॥ १२ ॥

चतुर्थः खण्डः

प्राणेन पुरस्तादाहवनीयमुपतिष्ठन्ते प्राणमेव तज्जयन्ति ॥ १ ॥
अपानेन पश्चात्पुच्छमुपतिष्ठन्ते अपानमेव तज्जयन्ति ॥ २ ॥ व्रत-
पक्षाभ्यां पक्षावुपतिष्ठन्ते दिश एव तज्जयन्ति ॥ ३ ॥ प्रजापते-
र्हृदयेनापिकक्षमुपतिष्ठन्ते ज्यैष्ठ्यमेव तज्जयन्ति ॥ ४ ॥ वसिष्ठस्य
निहवेन चात्वालमुपतिष्ठन्ते स्वर्गमेव तल्लोकमाप्त्वा श्रियं
वदन्ते ॥ ५ ॥ वैश्वदेव्यामृचि भवति विश्वरूपं वै पशूनाऽरूपं पशूनेव
तज्जयन्ति ॥ ६ ॥ सत्रस्यद्धर्गाग्नीध्रमुपतिष्ठन्त ऋद्धावेव
प्रतितिष्ठन्ति ॥ ७ ॥ चतुरक्षरणिधनं भवति चतुष्पादाः पशवः
पशुष्वेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ ८ ॥ आतमितोर्निधनमुपयन्त्यायुरेव
सर्वमाप्नुवन्ति ॥ ९ ॥ श्लोकानुश्लोकाभ्यां हविर्द्वानि उपतिष्ठन्ते
कीर्त्तिमेव तज्जयन्ति ॥ १० ॥ यामेन माज्जालीयमुपतिष्ठन्ते
पितृलोकमेव तज्जयन्ति ॥ ११ ॥ आयुर्वस्तोभाभ्याऽसद उपतिष्ठन्ते
ब्रह्म चैव तत् क्षत्रञ्च जयन्ति ॥ १२ ॥ ऋश्यस्य साम्ना
गार्हपत्यमुपतिष्ठन्ते ॥ १३ ॥

इद्रः सर्वाणि भूतान्यस्तुवःस्तस्य शर्य एकमङ्गमस्तुतमचायत्तद-
स्यैतेनास्तौत्तेनास्य प्रियं धामोपागच्छत्प्रियमेवास्यैतेन धामोप-
गच्छन्ति ॥१४॥ यत् परोक्षं निधनमुपेयुर्हीतमुखं प्रतिमुञ्चेरन्
प्रत्यक्षमुपयन्ति हीतमुखमेवापजयन्ति ॥१५॥

पञ्चमः खण्डः

आसन्दीमारुह्योद्गायति देवसाक्ष्य एव तदुपरिषदं जयति ॥१॥
औदुम्बरी भवत्यूर्गुदुम्बर ऊर्जमेवावरुन्धे ॥२॥ प्रादेशमात्री
भवत्यस्य लोकस्यानुद्धानाय ॥३॥ छन्दोभिरारोहति स्वर्गमेव
तल्लोकमारोहति ॥४॥ छन्दोभिरुपावरोहत्यस्मिँल्लोके प्रति-
तिष्ठति ॥५॥ सर्वेणात्मना समुद्धृत्योद्वेयमेषु लोकेषु
नेह्याहितोऽसानीति ॥६॥ एकस्याःस्तोत्रीयायामस्तुतायां
पादावुपावहरति ॥७॥ सह निधनेन प्रतिष्ठामुपयन्त्येष्वेव लोकेषु
प्रतितिष्ठन्ति ॥८॥ प्रेङ्खमारुह्य होता शःसति महस एव तद्रूपं
क्रियते ॥९॥ यदा वै प्रजा मह आविशति प्रेङ्खास्तर्ह्यारोहन्ति ॥१०॥
फलकमारुह्याध्वर्युः प्रतिगृणाति ॥११॥ कूर्चानितरेऽध्यासत
ऊर्ध्वा एव तदुत्क्रामन्तो यन्ति ॥१२॥ अभिगरापगरौ भवतो
निन्दत्येनानन्यः प्रान्यः शःसति य एनान्निन्दति पाप्मानमेषाः सोऽपहन्ति
यः प्रशःसति यदेवैषां सुष्टुतः सुशस्तं तत् सोऽभिगृणाति ॥१३॥
शूद्रार्यौ चर्मणि व्यायच्छेते तयोराय्यं वर्णमुपज्जायन्ति ॥१४॥
देवाश्च वा असुराश्चादित्ये व्यायच्छन्तस्तन्देवा अभ्यजयःस्ततो देवा
अभवन्। परासुरा अभवन्नात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवति य एवं
वेद ॥१५॥ यदार्यं वर्णमुज्जापयन्त्यात्मानमेव तदुज्जा-
पयन्ति ॥१६॥ परिमण्डलश्चर्म भवत्यादित्यस्यैव तद्रूपं
क्रियते ॥१७॥

सर्वासु स्रक्तिषु दुन्दुभयो वदन्ति या वनस्पतिषु वाक्तामेव
तज्जयन्ति ॥१८॥ भूमिदुन्दुभिर्भवति या पृथिव्यां वाक्तामेव
तज्जयन्ति ॥१९॥ सर्वा वाचो वदन्ति येषु लोकेषु वाक्तामेव
तज्जयन्ति ॥२०॥ सन्नद्धाः कवचिनः परियन्तीन्द्रियस्यैव तद्रूपं
क्रियतेऽथो महाव्रतमेव महयन्ति ॥२१॥

षष्ठः खण्डः

सर्वे सहर्त्विजो महाव्रतेन स्तुवीरन् ॥१॥ अध्वर्युः
शिरसोद्गायेन्मैत्रावरुणो दक्षिणेन पक्षेण ब्राह्मणाच्छस्युत्तरेण गृहपतिः
पुच्छेनोद्गातात्मना ॥२॥ तद्यद्येवं कुय्युरिकैकया स्तोत्रीययाऽस्तुत—
योद्गातारमभिसमेयुः ॥३॥ तिसृभिरुद्गाताऽऽत्मन उद्गीयाथ या शिरसः
स्तोत्रीया तां दध्यादपराभिस्तिसृभिरुद्गीयाथ या दक्षिणस्य पक्षस्य
स्तोत्रीया तान्दध्यादपराभिस्तिसृभिरुद्गीयाथ योत्तरस्य पक्षस्य स्तोत्रीया
तान्दध्यातिसृभिर्वैकया वा स्तुतःस्यादथ या पुच्छस्य स्तोत्रीया
तान्दध्यात् ॥४॥ आत्मन्येव तदङ्गानि प्रतिदधति स्वर्गस्य लोकस्य
समष्ट्यै ॥५॥ अथो खल्वाहुः कथमध्वर्युर्बह्वचः साम
गायेदित्युद्गातैव सर्वेणोद्गायेत्तदेव समृद्धः समृद्धावेव प्रति—
तिष्ठन्ति ॥६॥ हविर्द्वानि शिरसा स्तुत्वां सश्रब्धाः प्रत्यञ्च एयुस्ते
दक्षिणेन धिष्यन् परीत्य पश्चान्मैत्रावरुणस्य धिष्यस्योपविश्य
रथन्तरेण पञ्चदशेन स्तुवीरःस्त उदञ्चः संसर्पेयुर्जघनेन होतुर्धिष्यं
पश्चाद्ब्राह्मणाच्छसिनो धिष्यस्योपविश्य बृहता सप्तदशेन
स्तुवीरःस्ते येनैव प्रसर्पेयुस्तेन पुनर्निः सृप्योत्तरेणाग्नीध्रं परीत्य
पश्चाद्गार्हपत्यस्योपविश्य पुच्छेनैकविंशेन स्तुवीरःस्ते येनैव
निःसर्पेयुस्ते पुनः प्रसृप्य यथायतनमुपविश्यासन्दीमारुह्योद्गा—
तात्मनोद्गायति ॥७॥

तं पत्न्योऽपघाटिलाभिरुपगायन्त्यात्विज्यमेव तत्पत्न्यः कुर्वन्ति
 सह स्वर्गल्लोक मयामेति ॥ ८ ॥ कुले कुलेऽन्नं क्रियते तद्यत्पृच्छेयुः
 किमिदं कुर्वन्तीतीमे यजमाना अन्नमत्स्यन्तीति ब्रूयुः ॥ ९ ॥ यो
 वै दीक्षितानां पापं कीर्तयति तृतीयमेषां पाप्मनोहरत्यन्नादस्तृतीयं
 पिपीलिकास्तृतीयम् ॥ १० ॥ परिमाद्भिश्चरन्ति त्वक्च वा एतल्लोम
 च महाव्रतस्य यत् परिमादस्त्वचञ्चैव तल्लोम च महाव्रतस्याप्त्वा—
 वरुन्धते ॥ ११ ॥ वाणं वितन्वन्त्यन्तो वै वाणोऽन्तो महाव्रतमन्तेनैव
 तदन्तमभिवादयन्ति ॥ १२ ॥ शततन्त्रीको भवति शतायुर्वै पुरुषः
 शतवीर्यः ॥ १३ ॥ तमुल्लिखेत्प्राणाय त्वाऽपानाय त्वा व्यानाय
 त्वेति प्राणापानव्यानानेव तदाप्त्वाऽवरुन्धते ॥ १४ ॥ परिकुम्भिन्यो
 माज्जालीयं 'यन्तीदं मध्विदम्मध्वि'ति सघोषा एव तद्वयो भूत्वा
 सह स्वर्गल्लोकं यन्ति ॥ १५ ॥

सप्तमः खण्डः

देवा वै वाचं व्यभजन्त तस्या यो रसोऽत्यरिच्यत
 तद्गौरीवितमभवदनुष्टुभमनु परिप्लवते वागनुष्टुब्बाचो रसो—
 गौरीवितम् ॥ १ ॥ यद्गौरीवितेनान्वहस्त्ववते वाच्येव तद्वाचा
 रसन्दधति ॥ २ ॥ रसवद्वाचा वदति य एवं वेदेति ॥ ३ ॥
 द्व्युदासम्भवति स्वर्गस्य वा एतौ लोकस्यावसानदेशौ पूर्वैर्णैव
 पूर्वमहः संस्थापयन्त्युत्तरेणोत्तरमहरभ्यति वदन्ति ॥ ४ ॥ एतद्वै यज्ञस्य
 श्वस्तनं यद्गौरीवितं यद्गौरीवितमनुसृजेयुस्त्वस्तना अप्रजसः स्युः ॥ ५ ॥
 सं वा अन्यो यज्ञस्तिष्ठत इत्याहुर्व्वर्गिव न सन्तिष्ठत इति
 यद्गौरीवितमन्वहं भवति वाचमेव तत्पुनः प्रयुञ्जते ॥ ६ ॥ स्वर्णिर्—
 धनसन्वहं भवति ॥ ७ ॥

देवक्षेत्रं वा एतेऽभ्यारोहन्ति ये स्वर्णिधनमुपयन्ति स उ वै सत्रिणः सत्रमुपनयेदित्याहुर्व्य एनान्देवक्षेत्रमभ्यारोहयेदिति न वै देवक्षेत्र आसीन आर्त्तिमार्च्छति यत् स्वर्णिधनमन्वहं भवति नैव काञ्चनार्त्तिमार्च्छन्ति ॥८॥ च्यवन्ते वा एतेऽस्माल्लोकादित्याहुर्व्य स्वर्णिधनमुपयन्तीति यद्वा स्वरूपं यन्त्यस्मिँल्लोके प्रतितिष्ठन्ति यदेकारोऽन्तरिक्षे यत्साम्ना मुष्मिन्त्सर्वेषु लोकेषु प्रति तिष्ठन्ति स्वर्णिधनेन तुष्टुवानाः ॥९॥ सुज्ञानं भवति ॥१०॥ देवा वै स्वर्गल्लोकं यन्तोऽज्ञानादविभयुस्त एतत् सुज्ञानमपश्यस्ते ज्ञात्रमगच्छन्त्यत् सुज्ञानमन्वहं भवति ज्ञात्रमेव गच्छन्ति ॥११॥

अष्टमः खण्डः

ये वै वाचमन्नमादयन्त्यन्नादा भवन्ति ये वितर्षयन्ति रूक्षा भवन्ति ॥१॥ गौरीवितश्श्यावाश्चन्निहव एतानि वै सामानि वाचोऽन्नमेतेषां वागन्नं यदेतानि न च्यवन्ते वाचमेव तदन्नमादयन्ति तेन सर्व्वेऽन्नादा भवन्ति ॥२॥ अभिक्रान्तापक्रान्तानि भवन्त्यभि—
क्रान्तापक्रान्तं वै वाचो रूपम् ॥३॥ प्लवोऽन्वहं भवति ॥४॥ समुद्रं वा एते प्रस्नान्ति ये संवत्सरमुपयन्ति यो वा अप्लवः समुद्रं प्रस्नाति न स तत उदेति यत्प्लवो भवति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥५॥ अति विश्वानि दुरिता तरेमेति यदेवैषां दुष्टुतं दुःशस्तं तदेतेन तरन्ति ॥६॥ ओकोनिधनश्षडहमुखे भवति ॥७॥ परां वा एते परावतं गच्छन्ति ये षडहस्यान्तं गच्छन्ति यदोकोनिधनश्षडहमुखे भवति प्रज्ञात्यै ॥८॥ यदा वै पुरुषः स्वमोक आगच्छति सर्व्वं तर्हि प्रजानाति सर्व्वमस्मै दिवा भवति ॥९॥

नवमः खण्डः

एकाष्टकायां दीक्षेरन् ॥१॥ एषा वै संवत्सरस्य पत्नी
यदेकाष्टकैतस्यां वा गतां रात्रिं वसति साक्षादेव तत् संवत्सरमारभ्य
दीक्षन्ते ॥ २॥ तस्य सानिर्या यदपोऽनभिनन्दन्तोऽभ्यवयन्ति ॥ ३॥
विच्छिन्नं वा एते संवत्सरस्याभिदीक्षन्ते य एकाष्टकायां
दीक्षन्तेऽन्तनामानावृतू भवतः ॥ ४॥ आर्तं वा एते संवत्सर—
स्याभिदीक्षन्ते येऽन्तनामानावृतू अभिदीक्षन्ते ॥ ५॥ तस्मादे—
काष्टकायान्नं दीक्ष्यम् ॥ ६॥ फाल्गुने दीक्षेरन् ॥ ७॥ मुखं वा
एतत्संवत्सरस्य यत् फाल्गुनो मुखत एव तत्संवत्सरमारभ्य
दीक्षन्ते ॥ ८॥ तस्य सानिर्या यत्सम्मेषे विषुवान् सम्पद्यते ॥ ९॥
चित्रापूर्णमासे दीक्षेरन् ॥ १०॥ चक्षुर्वा एतत्संवत्सरस्य
यच्चित्रापूर्णमासो मुखतो वै चक्षुर्मुखत एव तत्संवत्सरमारभ्य
दीक्षन्ते तस्य न निर्यास्ति ॥ ११॥ चतुरहे पुरस्तात् पौर्णमास्या
दीक्षेरन् ॥ १२॥ तेषामेकाष्टकायां क्रयः सम्पद्यते तेनैकाष्टकान्न
संवत् कुर्वन्ति ॥ १३॥ तेषां पूर्वपक्षे सुत्या सम्पद्यते पूर्वपक्षे
मासाः सन्तिष्ठमाना यन्ति पूर्वपक्ष उत्तिष्ठन्ति तानुत्तिष्ठतः पशव
ओषधयोऽनूत्तिष्ठन्ति तान्कल्याणी वागभिवदत्यरात्सुरिमे सत्रिण
इति ते राध्नुवन्ति ॥ १४॥

दशमः खण्डः

आ वा एते संवत्सरं प्याययन्ति य उत्सृजन्ति ॥ १॥ यथा
वै दूतिराध्मात एवःसंवत्सरोऽनुत्सृष्टोयन्नोत्सृजेयुरमेहेन प्रमायुकाः
स्युः ॥ २॥ प्राणो वै संवत्सर उदाना मासा यदुत्सृजन्ति प्राण
एवोदानान्दधति यो दीक्षितः प्रमीयते या संवत्सरस्यानुत्सृष्टस्य
शुक्ला तमृच्छति ॥ ३॥

तदाहरत्सृज्या ३ त्रोट्सृज्या ३ मिति ॥४॥ यद्युत्सृजेयु-
 रुक्थान्युत्सृजेयुस्तदेवोत्सृष्टं तदनुत्सृष्टम् ॥५॥ अथो
 खल्वाहुरेकत्रिकं कार्यन्तदेव साक्षादुत्सृष्टमभ्युत्षुण्वन्ति ॥६॥ छिद्रो
 वा एतेषां संवत्सर इत्याहुर्ये स्तोममुत्सृजन्तीति ॥७॥ पशुमालभन्ते
 स्तोममेव तदालभन्ते स्तोमो हि पशुः ॥८॥ श्व उत्सृष्टाः स्म
 इति वत्सानपा कुर्वन्ति प्रातः पशुमालभन्ते तस्य वपया प्रचरन्ति
 ततस्सवनीयेनाष्टाकपालेन तत आग्नेयेनाष्टाकपालेन ततोदधैन्द्रेण
 ततश्चरुणा वैश्वदेवेन तत्प्रातः सवनं सन्तिष्ठते ॥९॥ ततः
 पशुपुरोडाशेनैकादशकपालेन ततः सवनीयेनैकादशकपालेन ततो
 मरुत्वतीयेनैकादशकपालेन ततश्चरुणैन्द्रेण तन्माध्यन्दिनः सवनं
 सन्तिष्ठते ॥१०॥ पशुना प्रचरन्ति ततः सवनीयेन द्वादशकपालेन
 ततो वैश्वदेवेन द्वादशकपालेन ततश्चरुणाऽऽग्निमारुतेन तत्तृतीयसवनः—
 सन्तिष्ठते ॥११॥ पृषदाज्येन प्रचर्य पत्नीस्संयाजयन्ति ॥१२॥

॥ इति पञ्चमोऽध्यायः॥



षष्ठोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

प्रजापतिरकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति स एतमग्निष्टो—
ममपश्यत्तमाहरस्तेनेमाः प्रजा असृजत् ॥ १ ॥ एकादशेन च वै सता
स्तोत्रेणाग्निष्टोमस्यासृजतैकादशेन च मासा संवत्सरस्य ता द्वादशेन
च स्तोत्रेणाग्निष्टोमस्य पर्यगृहणात् द्वादशेन च मासा
संवत्सरस्य ॥ २ ॥ तस्मात्प्रजा दशमासो गर्भं भृत्यैकादशमनु
प्रजायन्ते तस्माद्द्वादशज्ञाभ्यतिहरन्ति द्वादशेन हि परिगृहीतास्तद्य
एवं वेद परिजाताः प्रजा गृह्णाति प्रजाता जनयन्ति ॥ ३ ॥ तासां
परिगृहीतानामश्वतर्य्यत्पक्रामत्तस्या अनुहाय रेत आदत्त तद्वडवा—
यान्यमाड्यस्माद्वडवाद्विरेतास्तस्मादश्वतर्य्य प्रजा आत्तरेता हि ॥ ४ ॥
तस्माद्वदक्षिणीयाति हि सा यज्ञमरिच्यतातिरिक्तस्य दक्षिणा
स्यात्सलोमत्वाय षोडशिनः स्तोत्रे देयाऽतिरिक्तो वै षोडश्यतिरिक्त
एवातिरिक्तां ददाति ॥ ५ ॥ सोऽकामयत यज्ञसृजेयेति स मुखत
एव त्रिवृतमसृजत तं गायत्रीच्छन्दोऽन्वसृज्यताग्निर्देवता ब्राह्मणो
मनुष्यो वसन्त ऋतुस्तस्मात्त्रिवृत् स्तोमानां मुखं गायत्री
छन्दसामग्निर्देवतानां ब्राह्मणो मनुष्याणां वसन्त ऋतूनां तस्माद्ब्राह्मणो
मुखेन वीर्य्यङ्करोति मुखतो हि सृष्टः ॥ ६ ॥ करोति मुखेन वीर्य्यं
य एवं वेद ॥ ७ ॥ स उरस्त एव बाहुभ्यां पञ्चदशमसृजत तं
त्रिष्टुप्छन्दोऽन्वसृज्यतेन्द्रो देवता राजन्यो मनुष्यो ग्रीष्म
ऋतुस्तस्माद्राजन्यस्य पञ्चदश स्तोमस्त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रोदेवता ग्रीष्म
ऋतुस्तस्मादु बाहुवीर्य्यो बाहुभ्यां हि सृष्टः ॥ ८ ॥

करोति बाहुभ्यां वीर्यं य एवं वेद ॥ ९ ॥ स मध्यत एव
 प्रजननात्सप्तदशमसृजत तज्जगतीच्छन्दोऽन्वसृज्यत विश्वे देवा देवता
 वैश्योमनुष्यो वर्षा ऋतुस्तस्माद्वैश्योऽद्यमानो न क्षीयते प्रजननाद्धि
 सृष्टस्तस्मादु बहु पशुर्वैश्वदेवो हि जागतो वर्षा ह्यस्यर्तुस्तस्माद्—
 ब्राह्मणस्य च राजन्यस्य चाद्योऽधरो हि सृष्टः ॥ १० ॥ स पत्त एव
 प्रतिष्ठाया एकविंशमसृजत तमनुष्टुप्छन्दोऽन्वसृज्यत न काचन
 देवता शूद्रो मनुष्यस्तस्माच्छूद्र उत बहुपशुरयज्ञियो विदेवो हि न
 हि तं काचन देवताऽन्वसृज्यत तस्मात्पादावनेज्यन्नाति वर्द्धते पत्तो
 हि सृष्टस्तस्मादेकविंशस्तोमानां प्रतिष्ठा प्रतिष्ठाया हि
 सृष्टस्तस्मादनुष्टुभं छन्दांसि नानु व्यूहन्ति ॥ ११ ॥ पापवसीयसो
 विधृत्यै ॥ १२ ॥ विधृतिः पापवसीयसो भवति य एवं वेद ॥ १३ ॥

द्वितीयः खण्डः

यो वै स्तोमानुपदेशनवतो वेदोपदेशनवान् भवति ॥ १ ॥ प्राणो
 वै त्रिवृदर्द्धमासः पञ्चदशः संवत्सरः सप्तदश आदित्य
 एकविंश एते वै स्तोमा उपदेशनवन्त उपदेशनवान् भवति य एवं
 वेद ॥ २ ॥ इमे वै लोकास्त्रिणवस्त्रिणवस्य वै ब्राह्मणेनेमे
 लोकास्त्रिणुनर्न्वा भवन्ति ॥ ३ ॥ एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति य
 एवं वेद ॥ ४ ॥ देवता वाव त्रयस्त्रिंशोऽष्टौ वसव एकादश रुद्रा
 द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च वषट्कारश्च त्रयस्त्रिंशौ ॥ ५ ॥ स देवेन
 यज्ञेन यजते य एवं वेद ॥ ६ ॥ यो वा अधिपतिं वेदाधिपतिर्भवति
 त्रयस्त्रिंशो वै स्तोमानामधिपतिः पुरुषः पशूनाम् ॥ ७ ॥
 तस्मात्त्यञ्जोऽन्ये पशवोऽदन्त्यूर्ध्वः पुरुषोऽधिपतिर्हि सः ॥ ८ ॥
 अधिपतिः समानानां भवति य एवं वेद ॥ ९ ॥

तृतीयः खण्डः

एष वाव यज्ञो यदग्निष्टोमः ॥१॥ एकस्मा अन्यो यज्ञः
 कामायाह्नियते सर्व्वेभ्योऽग्निष्टोमः ॥२॥ द्वादशस्तोत्राण्यग्निष्टोमो
 द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरं पशवोऽनु प्रजायन्ते तेन पशव्यः
 समृद्धः ॥३॥ द्वादश स्तोत्राणि द्वादश शस्त्राणि
 तच्चतुर्विंशतिश्चतुर्विंशतिरर्द्धमासाः संवत्सरः संवत्सरं पशवोऽनु
 प्रजायन्ते तेन पशव्यः समृद्धः ॥४॥ अग्नौ स्तोत्रमग्नौ शस्त्रं
 प्रतितिष्ठति तेन ब्रह्मवर्चस्यः ॥५॥ किं ज्योतिष्टोमस्य
 ज्योतिष्टोमत्वमित्याहुर्विराजस्संस्तुतः सम्पद्यते विराड्वै छन्दसां
 ज्योतिः ॥६॥ ज्योतिः समानानां भवति य एवं वेद ॥७॥
 ज्येष्ठयज्ञो वा एष यदग्निष्टोमः ॥८॥ प्रजापतिः प्रजा असृजत
 ता अस्मै श्रेष्ठ्याय नातिष्ठन्त स एतमग्निष्टोममपश्यत्तमाहरत्ततोऽस्मै
 प्रजाः श्रेष्ठ्यायातिष्ठन्त ॥९॥ तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः श्रेष्ठ्याय य
 एवं वेद ॥१०॥ यत्त्वित्याहुर्गायत्रं प्रातःसवनं त्रैष्टुभं माध्यन्दिनः—
 सवनञ्जागतं तृतीयसवनं क्व तर्हि तुरीयं छन्दोऽनुष्टुबिति ॥११॥
 छन्दसां वा अन्ववर्लुप्तिं यजमानोऽन्ववर्लुप्यते ॥१२॥ अष्टाक्षरा
 गायत्री हिङ्गारो नवम एकादशाक्षरा त्रिष्टुब्धादशाक्षरा जगती
 छन्दोभिरेवानुष्टुभमाप्नोति यजमानस्यानवलोपाय ॥१३॥ यो वा
 अनुष्टुभः सर्वत्रापि सवनान्यन्वायत्तां वेद सर्वत्रास्यापि भवत्येषा
 वा अनुष्टुप् सर्वत्रापि सवनान्यन्वायत्ता तद्य एवं वेद सर्वत्रास्यापि
 भवति ॥१४॥ यद्वै राजानोऽध्वानं धावयन्ति येऽध्वानां
 वीर्यवत्तमास्तान्युञ्जते त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एते वै
 स्तोमानां वीर्यवत्तमास्तानेवयुङ्क्ते स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥१५॥
 चतुष्टोमो भवति प्रतिष्ठा वै चतुष्टोमः प्रतिष्ठित्यै ॥१६॥

चतुर्थः खण्डः

प्रजापतिर्देवेभ्य ऊर्जं व्यभजत्तत उदुम्बरः समभवत्प्राजापत्यो
वा उदुम्बरः प्राजापत्य उद्गाता यदुद्गातौदुम्बरीं प्रथमेन कर्मणान्वारभते
स्वयैव तद्देवतयात्मानमार्त्विज्याय वृणीते ॥१॥ तामुच्छ्रयति
‘द्युतानस्त्वा मारुत उच्छ्रयतूद्विद्वस्तभानान्तरिक्षं पृण दूश्ह
पृथिवीम्’ ॥२॥ तामन्वारभत ‘आयोष्ट्वा सद्ने सादयाम्यव—
तश्छायायाश्समुद्रस्य हृदय’ इति ॥३॥ यज्ञो वा आयुस्तस्य
तत्सदनं क्रियते ॥४॥ यज्ञो वा अवति तस्य सा च्छावा
क्रियते ॥५॥ मध्यतो वा आत्मनो हृदयन्तस्मान्मध्ये सदस औदुम्बरी
मीयते ॥६॥ ‘नमः समुद्राय नमः समुद्रस्य चक्षुस’ इत्याह वाग्वै
समुद्रो मनः समुद्रस्य चक्षुस्ताभ्यामेव तन्नमस्करोति ॥७॥ ‘मामा
यूनर्वाहासीदि’त्याह साम वै यूनर्वा साम्न एव तन्नमस्करोत्यार्त्विज्यं
करिष्यन् ॥८॥ यो वा एवं साम्ने नमस्कृत्य साम्नार्त्विज्यं करोति
न साम्नो हीयते नैनं सामापहते ॥९॥ य एनमनुव्याहरति स
आर्तिमार्च्छति ॥१०॥ ‘ऊर्गस्यूर्जोदा ऊर्जं मे देहूर्जं मे धेहूर्जं
मे देहूर्जं मे धेहि’ प्रजापतेर्वा एतदुदरं यत्सद ऊर्गुदुम्बरो यदौदुम्बरी
मध्ये सदसोमीयते मध्यत एव तत्प्रजाभ्योऽन्नमूर्जन्दधाति ॥११॥
तस्माद्यत्रैषा यातयामा क्रियते तत् प्रजा अशनायवो भवन्ति ॥१२॥
साम देवानामन्नश्सामन्येव तद्देवेभ्योऽन्न ऊर्जन्दधाति स एव तदूर्जि
श्रितः प्रजाभ्य ऊर्जं विभजति ॥१३॥ उदङ्ङासीन उद्गायत्युदी—
चीन्तद्दिशमूर्जा भाजयति प्रत्यङ्ङासीनः प्रस्तौति प्रतीचीन्तद्दिशमूर्जा
भाजयति दक्षिणासीनः प्रतिहरति दक्षिणान्तद्दिशमूर्जा भाजयति
प्राञ्चोऽन्य ऋत्विज आर्त्विज्यं कुर्वन्ति तस्मादेषा दिशां
वीर्यवत्तमैताश्हि भूयिष्ठाः प्रीणन्ति ॥१४॥

ब्रह्मवादिनो वदन्ति कस्मात्सत्यात्प्राञ्चोऽन्य ऋत्विज आर्त्विज्यं कुर्वन्तीति विपरिक्रभ्योद्गातार इति दिशामभीष्ट्यै दिशामभिप्रीत्या इति ब्रूयात्तस्मात्सर्व्वसु दिक्ष्वन्नं विद्यते सर्वा ह्यभीष्टाः प्रीताः ॥ १५ ॥

पञ्चमः खण्डः

प्रजापतिरकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति सोऽशोचत्तस्य शोचत आदित्यो मूर्ध्नोऽसृज्यत सोऽस्य मूर्ध्निमुदहन् स द्रोण कलशोऽभवत्तस्मिन् देवाः शूक्रमगृह्णत तां वै स आयुषार्त्ति-मत्यजीवत् ॥ १ ॥ आयुषार्त्तिमतिजीवति य एवं वेद ॥ २ ॥ तं प्रोहे 'द्वानस्पत्योऽसि बार्हस्पत्योऽसि प्राजापत्योसि प्रजापतेर्मूर्द्धा-स्पत्यायुपात्रमसीदमहम्मां प्राञ्चं प्रोहामि तेजसे ब्रह्मवर्चसाये'ति ॥ ३ ॥ यदाह वानस्पत्य इति सत्येनैवैनं तत्प्रोहति ॥ ४ ॥ यदाह बार्हस्पत्य इति बृहस्पतिर्वै देवानामुद्गाता तमेव तद्युनक्ति ॥ ५ ॥ यदाह प्राजापत्य इति प्राजापत्यो ह्येष देवतया यद्द्रोणकलशो यदाह प्रजापतेर्मूर्द्धेति प्रजापतेर्ह्येष मूर्ध्नि उदहन्यत ॥ ६ ॥ यदाहा 'त्यायुपात्रमि'त्यति ह्येतदन्यानि पात्राणि यत् द्रोणकलशो देवपात्रं द्रोणकलशः ॥ ७ ॥ देवपात्री भवति य एवं वेद ॥ ८ ॥ ब्राह्मणं पात्रे न मीमांसेत यं ब्राह्मणमिव मन्येत प्र देवपात्रमाप्नोति न मनुष्यपात्राच्छिद्यते ॥ ९ ॥ वाग्वै देवेभ्योऽपक्रामत्सापः प्राविशत्तां देवाः पुनरयाचश्स्ता अब्रुवन्यत्पुनर्दद्याम किन्नस्ततः स्यादिति यत्कामयध्व इत्यब्रुवश्स्ता अब्रुवन्यदेवास्मासु मनुष्या अपूतं प्रवेशयाश्स्तेनासश्सृष्टा असामेति ॥ १० ॥ शुद्धा अस्मा आपः पूता भवन्ति य एवं वेद ॥ ११ ॥ सा पुनर्त्तात्यक्रामत् सा वनस्पतीन् प्राविशत्तान्देवाः पुनरयाचँस्तात्र पुनरददुस्तानशपन् स्वेन वः किष्कुणा वज्रेण वृश्चानिति तस्माद्वनस्पतीन् स्वेन किष्कुणा वज्रेण वृश्चन्ति देवशप्ता हि ॥ १२ ॥

तां वनस्पतयश्चतुर्द्धा वाचं विन्यदधुर्दुन्दुभौ वीणायामक्षे तूणवे
 तस्मादेष वदिष्ठैषा वल्गुतमा वाग्या वनस्पतीनां देवानाश्चेषा
 वागासीत् ॥१३॥ अधोऽधोऽक्षं द्रोणकलशं प्रोहन्ति तस्या
 वाचोऽवरुध्या उपर्युपर्यक्षं पवित्रं प्रयच्छन्त्युभयत एव वाचं
 परिगृह्णन्ति ॥१४॥ यस्य कामयेतासुर्यमस्य यज्ञं कुर्यां वाचं
 वृञ्जीयति द्रोणकलशं प्रोहन्बाहुभ्यामक्षमुपस्पृशेदसुर्यमस्य यज्ञङ्करोति
 वाचं वृङ्क्ते योऽस्य प्रियः स्यादनुपस्पृशन्नक्षं प्रोहेत्प्राणा वै
 द्रोणकलशः प्राणानेवास्य कल्पयति ॥१५॥ यन्निवत्याहुर्व्वा—
 चान्यानृत्विजो वृणते कस्मादुद्गातारोऽवृता आर्त्विज्यं
 कुर्वन्तीति ॥१६॥ यद्द्रोणकलशमुपसीदन्ति तेनोद्गातारो
 वृताः ॥१७॥ प्राजापत्या वा उद्गातारः प्राजापत्यो द्रोणकलशो
 द्रोणकलश एवैनानार्त्विज्याय वृणीते ॥१८॥ प्राञ्च उपसीदन्ति
 प्राञ्चो यज्ञस्याग्रे करवामेति ॥१९॥ अनभिजिता वा एषोद्गातृणां
 दिग्यत्प्राची यद्द्रोणकलशं प्राञ्चं प्रोहन्ति दिशोऽभिजित्यै ॥ २० ॥
 यन्निवत्याहुरन्तराश्वः प्रासेवौ युज्यतेऽन्तरा शम्य अनङ्वान्क उद्गातृणां
 योगइति यद्द्रोणकलशमुपसीदन्ति स एषां योगस्तस्मा—
 द्युक्तैरवोपसद्यन्न ह्ययुक्तो वहति ॥ २१ ॥

षष्ठः खण्डः

ग्राव्यः सःसाद्य द्रोणकलशमध्यहन्ति विङ्ग्वै ग्रावाणोऽन्नःसोमो
 राष्ट्रं द्रोणकलशो यद्ग्रावसु द्रोणकलशमध्यहन्ति विश्वेव तद्राष्ट्र—
 मध्यहन्ति ॥१॥ यं द्विष्याद्विमुखान् ग्राव्यः कृत्वेदमहम—
 मुष्यायणममुष्याः पुत्रममुष्याविशोऽमुष्मादन्नाद्यान्निरूहामीति निरूहेद्विश
 एवैनमन्नाद्यन्निरूहति ॥ २ ॥

योऽस्य प्रियः स्यात्सम्मुखान् ग्राव्णः कृत्वेदमहममुष्या—
यणममुष्याः पुत्रममुष्यां विश्वमुष्मिन्नन्नाद्येऽध्यूहामीत्यध्यूहेद्विश्वे
वैनमन्नाद्येऽध्यूहति ॥ ३ ॥ अथो तदुभयमनाद्येदमहं मां तेजसि
ब्रह्मवर्चसेऽध्यूहामीत्यध्यूहेतेजस्येव ब्रह्मवर्चस आत्मान—
मध्यूहति ॥ ४ ॥ यः कामयेत विशा राष्ट्रं हन्यामिति व्यूह्य
ग्राव्णोऽधो द्रोणकलशं सादयित्वोपांशुसवनमुपरिष्ठादभि—
निदध्यादिदमहममुया विशाऽदो राष्ट्रं हन्मीति विशैव
तद्राष्ट्रं हन्ति ॥ ५ ॥ यो वै दैवानि पवित्राणि वेद पूतो यज्ञियो
भवति छन्दांसि वै दैवानि पवित्राणि तैर्द्रोणकलशं पावयन्ति ॥ ६ ॥
वसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा पुनन्तु रुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा
पुनन्त्वादित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा पुनन्त्वेतानि वै दैवानि पवित्राणि
पूतो यज्ञियो भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥ स्वर्भानुर्वा आसुर
आदित्यन्तमसाविध्यत्तं देवा न व्यजानस्तेऽत्रिमुपाधावस्त्—
स्यात्रिर्भासेन तमोपाहन्यत् प्रथममपाहन् सा कृष्णाविरभवद्य—
द्वितीयं सा रजता यत्तृतीयं सा लोहिनी यया वर्णमभ्यतृणत् सा
शुक्लासीत् ॥ ८ ॥ तस्माच्छुक्लं पवित्रं शुक्रः सोमः स
शुक्रत्वाय ॥ ९ ॥ यं द्विष्यात्तस्यै तेषां वर्णानामपि पवित्रे
कुर्यात्पाप्मनैवैनं तमसा विध्यति कृष्णमिव हि तमोयोऽस्य प्रियः
स्यादासक्तिशुक्लं कुर्याज्ज्योतिर्वै हिरण्यं ज्योतिरेवा—
स्मिन्दधाति ॥ १० ॥ तस्मादात्रेयं चन्द्रेणेच्छन्त्यत्रिर्हि तस्य
ज्योतिः ॥ ११ ॥ अभ्यतृणत्पवित्रं विगृह्णन्ति हस्तकार्यमेव तद्यज्ञस्य
क्रियत एतद्वा उद्गातृणां हस्तकार्यं यत्पवित्रस्य विग्रहणम् ॥ १२ ॥
न हस्तवेष्ट्यान्निर्ऋच्छति य एवं वेद ॥ १३ ॥ योऽपि न विगृह्णाति
प्राणादेनमन्तर्यन्ति ॥ १४ ॥

तं ब्रूयाद्वेपमानः प्रमेष्यस इति वेपमान एव प्रमीयते ॥१५॥
 प्र शुक्रैतु देवी मनीषास्मद्रथः सुतष्टेन वाजीत्युद्राता
 धारामनुमन्त्रयते ॥१६॥ आयुषे मे पवस्व वर्चसे मे पवस्व विदुः
 पृथिव्यादिवो जनित्राच्छृण्वन्त्वापोऽधः क्षरन्तीः सोमेहोद्गायेत्याह
 मह्यं तेजसे ब्रह्मवर्चसायेति ॥१७॥ एष वै सोमस्योद्गीथो यत्पवते
 सोमोद्गीतमेव साम गायति ॥१८॥ अच्छिन्नं पावयन्ति यज्ञञ्चैव
 प्राणाँश्च सन्तन्वन्ति सन्ततं पावयन्ति यज्ञस्य सन्तत्यै ॥१९॥

सप्तमः खण्डः

बृहस्पतिर्वै देवानामुदगायत्तश्चक्षौंस्यजिघांसन् स य एषां
 लोकानामधिपतयस्तान् भागधेयेनोपाधावत् ॥१॥ सूर्य्योमा
 दिव्याभ्योनाष्ट्राभ्यः पातु, वायुरन्तरिक्षाभ्योऽग्निः पार्थिवाभ्यः स्वाहेति
 जुहोति ॥२॥ एते वा एषां लोकानामधिपतयस्तान् भागधेयेनो—
 पासरत् ॥३॥ करोति वाचा वीर्यन्न सदस्यामार्त्तिमार्छति य एवं
 वेद ॥४॥ वाग्वै देवेभ्योऽपाक्रामतां देवा अन्वमन्त्रयन्त
 साऽब्रवीदभागास्मि भागधेयम्मेऽस्त्विति कस्ते भागधेयं
 कुर्व्यादित्युद्रातार इत्यब्रवीदुद्रातारो वै वाचे भागधेयं कुर्वन्ति ॥५॥
 तस्यै जुहुयाद् बेकुरानामासि जुष्टा देवेभ्यो नमो वाचे नमो
 वाचस्पतये देवि वाग्यते वाचो मधुमत्तस्मिन् माधाः सरस्वत्यै
 स्वाहेति ॥६॥ वाग्वै सरस्वती तामेव तद्भागधेयेनारभते ॥७॥
 यं द्विष्यात्तस्यैतामाहुतिञ्जुहुयाद्वाचं मनसा ध्यायेद्वाचमेवास्य
 वृङ्क्ते ॥८॥ बहिष्पवमानश्सर्पन्ति स्वर्गमेव तल्लोकश्सर्पन्ति ॥९॥
 प्रक्वाणा इव सर्पन्ति प्रतिकूलमिव हीतः स्वर्गो लोकः त्सरन्त इव
 सर्पन्ति मृगधर्म्मा वै यज्ञो यज्ञस्य शान्त्या अप्रत्रासाय ॥१०॥

वाचं यच्छन्ति यज्ञमेव तद्यच्छन्ति यद्वचवदेयुर्यज्ञं निर्ब्रूयुस्तस्मान्न
व्यववद्यम् ॥११॥ पञ्चत्विजः सँरब्धाः सर्पन्ति पाङ्क्तो यज्ञो
यावान् यज्ञस्तमेव सन्तन्वन्ति ॥१२॥ यदि प्रस्तोताऽवच्छिद्यते
यज्ञस्य शिरश्छिद्यते ब्रह्मणे वरन्दत्वा स एव पुनर्वर्त्तव्यश्छिन्नमेव
तत्प्रतिदधाति ॥१३॥ यद्युद्गातावच्छिद्यते यज्ञेन यजमानो
वृध्यतेऽदक्षिणः स यज्ञक्रतुः संस्थाप्योऽथान्य आहृत्यस्तस्मिन्देयं
यावद्दास्यन् स्यात् ॥१४॥ यदि प्रतिहर्त्ताऽवच्छिद्यते पशुभिर्यजमानो
वृध्यते पशवो वै प्रतिहर्त्ता सर्ववेदसन्देयं यदि सर्ववेदसन्न ददाति
सर्वज्यानिञ्जीयते ॥१५॥ अध्वर्युः प्रस्तरश्हरति ॥१६॥ यजमानो
वै प्रस्तरो यजमानमेव तत् स्वर्गल्लोकश्हरति ॥१७॥ यज्ञो वै
देवेभ्योऽश्वोभूत्वापाक्रामत्तं देवाः प्रस्तरेणारमयँस्तस्मादश्वः प्रस्तरेण
सम्मृज्यमान उपावरमते यदध्वर्युः प्रस्तरश्हरति यज्ञस्य शान्त्या
अप्रत्रासाय ॥१८॥ प्रजापतिः पशूनसृजत तेऽस्मात् सृष्ट्वा
अशनायन्तोऽपाक्रमश्स्तेभ्यः प्रस्तरमन्नं प्रायच्छत्त एनमुपावर्त्तन्त
तस्मादध्वर्युणा प्रस्तर ईषदिव विधूयो विधूतमिव हि तृणं पशव
उपावर्त्तन्ते ॥१९॥ उपैनं पशव आवर्त्तन्ते य एवं वेद ॥ २०॥
प्रस्तरमासद्योद्गायेद्धविषोऽस्कन्दाय ॥ २१॥ यजमानन्तु
स्वर्गल्लोकादवगृह्णाति ॥ २२॥ अष्ठीवतोपस्पृशतोद्रेयन्तेनास्य
हविरस्कन्नं भवति न यजमानश्स्वर्गल्लोकादवगृह्णाति ॥ २३॥
चात्वाल्मवेक्ष्य बहिष्पवमानश्स्तवन्त्यत्र वा असावादित्य आसीत्तं
देवा बहिष्पवमानेन स्वर्गल्लोकंमहरन्यच्चात्वाल्मवेक्ष्य बहिष्पव-
मानश्स्तुवन्ति यजमानेव तत् स्वर्गल्लोकश्हरन्ति ॥ २४॥

अष्टमः खण्डः

स तु वै यज्ञेन यजेतेत्याहुर्त्यस्य विराजं यज्ञमुखे
दध्युरिति ॥१॥

नवभिः स्तुवन्ति हिङ्गारो दशमो दशाक्षराविराड्विराजमेवास्य
यज्ञमुखे दधति ॥ २ ॥ नवभिः स्तुवन्ति नव प्राणाः
प्राणैरेवैनश्समर्द्धयन्ति हिङ्गारो दशमस्तन्नाभिरनवतृण्णा दशमा
प्राणानाम् ॥ ३ ॥ नवभिः स्तुवन्ति नवाध्वर्युः प्रातःसवने ग्रहान्
गृह्णाति तानेव तत्पावयन्ति तेषां प्राणानुत्सृजन्ति ॥ ४ ॥ प्रजापतिर्वै
हिङ्गारस्त्रियो बहिष्पवमान्यो यद्विङ्कृत्य प्रस्तौति मिथुनमेवास्य
यज्ञमुखे दधाति प्रजननाय ॥ ५ ॥ एष वै स्तोमस्य योगो यद्विङ्गारो
यद्विङ्कृत्य प्रस्तौति युक्तेनैव स्तोमेन प्रस्तौति ॥ ६ ॥ एष वै
साम्नाश्रसो यद्विङ्गारो यद्विङ्कृत्य प्रस्तौति रसेनैवैता अभ्युद्य
प्रस्तौति ॥ ७ ॥ आरण्येभ्यो वा एतत् पशुभ्यः स्तुवन्ति
यद्बहिष्पवमानमेकरूपाभिः स्तुवन्ति तस्मादेकरूपा आरण्याः
पशवः ॥ ८ ॥ पराचीभिः स्तुवन्ति तस्मात् पराञ्चः प्रजायन्ते पराञ्चो
वितिष्ठन्ते ॥ ९ ॥ अपरिश्रिते स्तुवन्ति तस्मादपरिगृहीता आरण्याः
पशवः ॥ १० ॥ बहिः स्तुवन्त्यन्तरनुशस्सन्ति तस्माद्—
ग्राममाहूतैर्भुञ्जते ॥ ११ ॥ ग्राम्येभ्यो वा एतत् पशुभ्यः स्तुवन्ति
यदाज्यैर्नानारूपैः स्तुवन्ति तस्मान्नानारूपा ग्राम्याः पशवः ॥ १२ ॥
पुनरभ्यावर्तश्स्तुवन्ति तस्मात्प्रेत्वर्थ्यः प्रेत्य पुनरायन्ति ॥ १३ ॥ परिश्रिते
स्तुवन्ति तस्मात् परिगृहीता ग्राम्याः पशवः ॥ १४ ॥ अमुष्मै वा
एतल्लोकाय स्तुवन्ति यद्बहिष्पवमानश्सकृद्विङ्कृताभिः पराचीभिः
स्तुवन्ति सकृद्धीतोऽसौ पराल्लोकः ॥ १५ ॥ अस्मै वा एतल्लोकाय
स्तुवन्ति यदाज्यैः पुनरभ्यावर्तश्स्तुवन्ति तस्मादयल्लोकः पुनः पुनः
प्रजायते ॥ १६ ॥ पराञ्चो वा एतेषां प्राणा भवन्तीत्याहुर्व्ये
पराचीभिर्बहिष्पवमानीभिः स्तुवत इत्यावतीमुत्तमां गायेत्प्राणा—
नान्धृत्यै ॥ १७ ॥

च्यवन्ते वा एतेऽस्माल्लोकादित्याहुर्व्ये पराचीभिर्बहिष्पवमानीभिः
स्तुवत इति रथन्तरवर्णामुत्तमाङ्गायेदियं रथन्तरमस्यामेव
प्रतितिष्ठति ॥१८॥

नवमः खण्डः

‘उपास्मै गायता नर’ इति ग्रामकामाय प्रतिपदं कुर्यात् ॥१॥
नरो वै देवानां ग्रामो ग्राममेवास्मा उपाकः ॥२॥ उप वा
अन्नमन्नमेवास्मा उपाकः ॥३॥ ‘उपोषु जातमप्पुर’मिति प्रजाकामाय
प्रतिपदं कुर्यात् ॥४॥ उप वै प्रजा तां जातमित्येवाजीजनत् ॥५॥
‘सनः पवस्व शङ्गव’ इति प्रतिपदं कुर्यात् ॥६॥ याऽसमां महादेवः
पशून् हन्यात् ‘सनः पवस्व शङ्गव’ इति चतुष्पदे भेषजं करोति ॥७॥
‘शङ्गना’येति द्विपदे शमर्व्वत इत्येकशफाय ॥८॥ विषेण व
ताऽसमामोषधयोऽक्ता भवन्ति याऽसमाम्महादेवः पशून् हन्ति
यच्छःराजन्नोषधीभ्य इत्याहौषधीरेवास्मै स्वदयत्युभयोऽस्मै स्वदिताः
पच्यन्तेऽकृष्टपच्याश्च कृष्टपच्याश्च ॥९॥ ‘पवस्व वाचो अग्रिय’
इति प्रतिपदं कुर्याद्यं कामयेत समानानाऽश्रेष्ठः स्यादिति ॥१०॥
‘पवस्व वाचो अग्रिय’ इत्यग्रमेवैनं परिणयति ॥११॥ श्रीर्व्वै
वाचोऽग्रऽश्रियमेवास्मिन् दद्याति ॥१२॥ ‘एत असृग्रमिन्दव’ इति
बहुभ्यः प्रतिपदं कुर्यात् ॥३॥ एत इति सर्वानेवैनानृद्धयै भूत्या
अभिवदति ॥१४॥ एत इति वै प्रजापतिर्देवानसृजतासृग्रमिति
मनुष्यानिन्दव इति पितृस्तिरः पवित्र इति ग्रहानाशव इति स्तोत्रं
विश्वानीति शस्त्रमभिः सौभगेत्यन्याः प्रजाः ॥१५॥ यदेत इति
तस्माद्यावन्त एवाग्रे देवा स्तावन्त इदानीम् ॥१६॥ सर्व्वान्वृद्धि-
मार्धुवःस्थितेव ह्येषा व्याहृतिः ॥१७॥

यदसृग्रमिति तस्मान्मनुष्याः श्वः श्वः सृज्यन्ते ॥१८॥ यदिन्दव
 इतीन्दव इव हि पितरः ॥१९॥ मनइव ॥२०॥ यान्ताः प्रजाः
 सृष्टा ऋद्धिमाध्रुवश्स्तामृध्रुवन्ति येषामेवं विद्वानेतां प्रतिपदं
 करोति ॥२१॥ छन्दांसि वै सोममाहरश्स्तं गन्धर्व्वो विश्वावसुः
 पर्य्यमुष्णात्तेनापः प्राविशत्तं देवता अन्वैछश्स्तं विष्णुरप्सु पर्य्यपश्यत्
 स व्यकाङ्क्षदयन् ३ ना ३ इति तं पदा प्रास्फुरत्तस्मात्
 पृथगिन्दवोऽसृज्यन्त स देवताभ्योऽभितस्तिष्ठन्तीभ्य एते असृग्रमिन्दव
 इति प्राब्रवीद्बहिष्पवमानेन वै यज्ञः सृज्यते यदेते असृग्रमिन्दव
 इति प्रस्तौति यज्ञमेव तत् सृष्टन्देवताभ्यः प्राह ॥२२॥ व्यृद्धं वा
 एतदपशव्यं यत्प्रातःसवनमनिडश्हि यदिडामस्मभ्यश्संयतमित्याह
 प्रातःसवनमेव तदिडावत्पशुमत्करोति ॥२३॥ दविद्युतत्यारुचेति
 व्राताय प्रतिपदं कुर्यात् ॥२४॥ दविद्युतत्यारुचेति वै गायत्र्या
 रूपं परिष्ठोभन्त्येति त्रिष्टुभः कृपेत्यनुष्टुभः सोमाः शुक्रा गवाशिर
 इति जगत्याः सर्वेषां वा एषा छन्दसाश्रूपं छन्दांसीव खलु वै
 व्रातोयदेषा प्रतिपद्भवति स्वेनैवैनाश्स्तद्रूपेण समर्द्धयति ॥२५॥
 वृद्धा वा एत इन्द्रियेण वीर्य्येण यद्व्रात इन्द्रियं वीर्य्यं
 छन्दांसीन्द्रियेणैवैनान्वीर्य्येण समर्द्धयति ॥२६॥

दशमः खण्डः

अग्न आयूँषि पवस इति प्रतिपदं कुर्याद्येषां दीक्षितानां
 प्रमीयते ॥१॥ अपूता इव वा येषां दीक्षितानां प्रमीयते
 यद्येषाऽग्निपावमानी प्रतिपद्भवत्यग्निरेवैनाग्निष्टपति पवमानः
 पुनाति ॥२॥ यदायूँषीत्याह य एव जीवन्ति तेष्वायुर्दधाति ॥३॥
 आनो मित्रावरुणेति ज्योगामयाविने प्रतिपदं कुर्यात् ॥४॥

अपक्रान्तौ वा एतस्य प्राणापानौ यस्य ज्योगामयति प्राणापानौ
मित्रावरुणौ प्राणापानावेवास्मिन्दधाति ॥ ५ ॥ अपघ्नन्पवते मृधोपसोमो
अराव्ण इत्यनृतमभिशस्यमानाय प्रतिपदं कुर्यात् ॥ ६ ॥ अरावाणो
वा एते येऽनृतमभि शँसन्ति तानेवास्मादपहन्ति ॥ ७ ॥ गच्छन्निन्द्रस्य
निष्कृतमिति पूतमेवैनं यज्ञियमिन्द्रस्य निष्कृतङ्गमयति ॥ ८ ॥ वृषा
पवस्व धारयेति राजन्याय प्रतिपदं कुर्याद्वृषा वै राजन्यो वृषाणमेवैनं
करोति ॥ ९ ॥ मरुत्वते च मत्सर इति मरुतो वै देवानां विशो
विशमेवास्मा अनु नियुनक्त्यनपक्रामुकाऽस्माद्विद्भवति ॥ १० ॥ विश्वा
दधान ओजसेत्योजसैवास्मै वीर्येण विशं पुरस्तात्परि—
गृह्णात्यनपक्रामुकास्माद्विद्भवति ॥ ११ ॥ पवस्वेन्दो वृषासुत इति
प्रतिपदं कुर्याद्यः कामयेत जनेम ऋध्येतेति ॥ १२ ॥ कृधी नो
यशसो जनइति जनतायामेवास्मा ऋध्यते ॥ १३ ॥ युवश्हि स्थः
स्वः पती इति द्वाभ्यां प्रतिपदं कुर्यात्समावद्वाजावेवैनौ यज्ञस्य
करोत्युभौ यज्ञयशसेनार्पयति ॥ १४ ॥ प्रास्य धारा अक्षरन्ति
वृष्टिकामाय प्रतिपदं कुर्यात् ॥ १५ ॥ प्रास्य धारा अक्षरन्ति
दिवो वृष्टिञ्ज्यावयति वृष्णः सुतस्यौजस इत्यन्तरिक्षात् ॥ १६ ॥
देवाऽऽनु प्रभषत इत्यस्मिन् लोके प्रतिष्ठापयति ॥ १७ ॥ ओजसा
वा एतद्वीर्येण प्रदीयते यदप्रत्तं भवति यद्वृष्णः सुतस्यौजस
इत्याहौजसैवास्मै वीर्येण दिवो वृष्टिं प्रयच्छति ॥ १८ ॥ अया
पवस्व धारया यया गांव इहागमञ्जन्यास उप नो गृहमिति प्रतिपदं
कुर्याद्यः कामयेतोप मा जन्या गावो नमेयुर्विन्देत मे जन्यागा
राष्ट्रमिति यदेषा प्रतिपद्भवत्युपैनञ्जन्यागावो नमन्ति विन्दतेऽस्य
जन्यागा राष्ट्रम् ॥ १९ ॥

॥ इति षष्ठोऽध्यायः ॥



सप्तमोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

इमे वै लोका गायत्रं त्र्यावृद्धेयन्त्रयोहीमे लोका
यत्त्र्यावृद्धायत्येभिरेवैनं लोकैः सम्मिमीते ॥१॥ द्विरवनर्दे—
द्धिङ्कुर्व्यात्तृतीयम् ॥२॥ यत्त्रिरवनर्दत्यति तद्गायत्रश्चेचयति ॥३॥
यो वै गायत्रेणा प्रतिहृतेनोद्गायत्यप्रतिष्ठानो भवति हिङ्गारो वै
गायत्रस्य प्रतिहारः ॥४॥ स मनसा ध्येयः प्रतिहृतेन गायत्रेणोद्गायति
प्रतितिष्ठति ॥५॥ यो वा एभ्यो लोकेभ्यो गायत्रं गायति नैभ्यो
लोकेभ्य आवृश्च्यत इमे एनं लोका ऊर्ज्जाऽभिसंवसते ॥६॥
मन्द्रमिवाग्र आददीताथ तारतरमथ तारतमन्तदेभ्यो लोकेभ्योऽ—
गासीत् ॥७॥ अनिरुक्तङ्गेयमेतद्वै गायत्रस्य क्रूरं यन्निरुक्तं यदनिरुक्तं
गायति क्रूरमेवास्य परिवृणक्ति ॥८॥ प्राणो गायत्रन्न
व्यवान्यात्प्राणस्याविच्छेदाय यदि व्यवानिति प्रमायुको भवति यदि
न व्यवानिति सर्वमायुरेति ॥९॥ यदि व्यवान्यान्मध्यऋचो
व्यवान्यात्प्राणो वै गायत्रं प्राणः स्वरः प्राणमेव तन्मध्यत
आत्मन्दधाति स सर्वमायुरेति ॥१०॥ इडां पशुकामाय निधनं
कर्ष्यात्स्वः स्वर्गकामाय यशोब्रह्मवर्चसकामायायुरामयाविने
हृत्सीत्यभिचरते ॥११॥ एते वै गायत्रस्य दोहाः ॥१२॥ ब्रह्मवर्चसी
पशुमान् भवति य एवं वेद ॥१३॥

द्वितीयः खण्डः

प्रजापतिर्देवेभ्य आत्मानं यज्ञं कृत्वा प्रायच्छत्तेऽन्योन्यस्मा
अग्राय नातिष्ठन्त तानब्रवीदाजिमस्मिन्नितेति त आजिमायन्यदा—
जिमायश्स्तदाज्यानामाज्यत्वम् ॥१॥

स इन्द्रोऽवेदग्निर्वा इदमग्र उज्जेष्यतीति सोऽब्रवीद्यतरोनाविदमग्र
उज्जयात्तनौसहेति सोऽग्निरग्र उदजयदथ मित्रावरुणावथेन्द्रोऽयैषै—
काहोत्रानुज्जितासीत्स इन्द्रोऽग्निमब्रवीद्यत्सहावोचावहीयनौ तदिति
सैषैन्द्राग्न्यध्यर्द्धमग्ने स्तोत्रमध्यर्द्धमिन्द्रस्य ॥ २ ॥ चत्वारि सन्ति
षड्देवत्यानि ॥ ३ ॥ षड्धा विहितो यज्ञो यावान्यज्ञस्त—
मेवारभते ॥ ४ ॥ सर्वाणि स्वाराण्याज्यानि तज्जामि नानादेवत्यैः
स्तुवन्त्यजामितायै ॥ ५ ॥ ग्राम्येभ्यो वा एतत्पशुभ्यः स्तुवन्ति यदाज्यैः
पुनरभ्यावर्त्तंस्तुवन्ति तस्मात्पराञ्चः प्राज्यन्ते प्रत्यञ्चः प्रजायन्ते
तस्मादुप्रेत्य पुनरायन्ति ॥ ६ ॥

तृतीयः खण्डः

एतावता वाव माध्यन्दिनश्चवनं पुपुवे ॥ १ ॥ त्रिभिश्च छन्दोभिः
पञ्चभिश्च सामभिः ॥ २ ॥ यन्माध्यन्दिनेन पवमानेन स्तुवन्ति
माध्यन्दिनमेव तत्सवनं पावयन्ति ॥ ३ ॥ एतावन्ति वाव सर्वाणि
सामानि यावन्ति माध्यन्दिने पवमाने ॥ ४ ॥ गायत्रिनिधनवद—
निधनमैडम् ॥ ५ ॥ यन्माध्यन्दिनेन पवमानेन स्तुवन्ति सर्वैरेव
तत्सामभिः स्तुवन्ति ॥ ६ ॥ आत्मा वै यज्ञस्य पवमानो मुखं
गायत्री प्राणो गायत्रं यद्गायत्र्यां गायत्रेण स्तुवन्ति मुखत एव
तत्प्राणान्दधति ॥ ७ ॥ प्राणापाना वा एतानि छन्दांसि प्राणो गायत्री
व्यानो बृहत्यपानस्त्रिष्टुब्यदेतैश्छन्दोभिः स्तुवन्ति प्राणापाना—
नामविच्छेदाय ॥ ८ ॥ इमे वै लोका एतानि छन्दाश्चस्यमेव गायत्ययं
मध्यमो बृहत्यसावुत्तमस्त्रिष्टुब्यदेतैश्छन्दोभिः संहितैः स्तुवन्त्येषां
लोकानामविच्छेदाय ॥ ९ ॥ यदन्यछन्दोऽन्तरा व्यवेषादिमां
लोकान्विच्छिन्द्यात् ॥ १० ॥ गायत्रेण स्तुत्वा निधनवता स्तुवन्तीयं
वै गायत्र्यस्यामेव तदायतनं क्रियते ॥ ११ ॥

यदनिधनेनाग्रे स्तुयुरनायतनो यजमानः स्यात् ॥१२॥
 निधनवता स्तुवन्ति वीर्यं वै गायत्री वीर्यनिधनं वीर्येणैव
 तद्वीर्यं समर्द्धयति ॥१३॥ ऐडेन बृहतीमारभन्ते ॥१४॥ पशवो
 वा इडा पशवो बृहती पशुष्वेव तत्पशून् दधाति ॥१५॥ बृहत्यां
 भूयिष्ठानि सामानि भवन्ति ॥१६॥ तत्रापि त्रिणिधनम् ॥१७॥
 अबलिष्ठ इव वा अयम्मध्यमो लोकस्तस्यैव तदायतनं
 क्रियते ॥१८॥ त्रिणिधनं भवति त्रीणि सवनानां छिद्राणि तानि
 तेनापि धीयन्ते ॥१९॥ त्रिणिधनं भवति त्रय इमे लोका एष्वेव
 लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥२०॥ त्रिणिधनं भवत्येतेन वै माध्यन्दिनः सवनं
 प्रतिष्ठितं यत्त्रिणिधनं यत्त्रिणिधनन्न स्यादप्रतिष्ठितमाध्यन्दिनः सवनं
 स्यात् ॥२१॥ द्व्यक्षराणि निधनानि भवन्ति द्विपाद्यजमानो यजमानमेव
 यज्ञे पशुषु प्रतिष्ठापयति ॥२२॥ अनिधनमन्ततो भवति स्वर्गस्य
 लोकस्यानतिपादाय ॥२३॥ यन्निधनवत्स्याद्यजमानः स्वर्गाल्लोका-
 निर्हन्त्यात् ॥२४॥ स्वारं भवति ॥२५॥ स्वरेण वै
 देवेभ्योऽन्ततोऽन्नाद्यं प्रदीयते स्वरेणैव तद्देवेभ्योऽन्ततोऽन्नाद्यं
 प्रयच्छति ॥२६॥ गायत्रं पुरस्ताद्भवति स्वारमन्ततः ॥२७॥ प्राणो
 वै गायत्रं प्राणः स्वरः प्राणानेव तदुभयतो दधाति तस्मादुभयतः
 प्राणाः पशवः ॥२८॥ यद्गायत्रं पुरस्ताद्भवति स्वारमन्ततः प्राणैरेव
 प्रैत्यपाने प्रतितिष्ठति ॥२९॥

चतुर्थः खण्डः

एतद् वै यज्ञस्य स्वर्गं यन्माध्यन्दिनः सवनमाध्यन्दिनस्य
 पवमानः पवमानस्य बृहती यद्बृहत्याः स्तोत्रे दक्षिणा दीयन्ते
 स्वर्गस्यैव तल्लोकस्यायतने दीयन्ते ॥१॥

देवा वै छन्दाश्स्यब्रुवन्युष्माभिः स्वर्गल्लोकमयामेति ते गायत्रीं प्रायुञ्जत तथा न व्याप्नुवँस्त्रिष्टुभं प्रायुञ्जत तथा न व्याप्नुवञ्जगतीं प्रायुञ्जत तथा न व्याप्नुवन्नुष्टुभं प्रायुञ्जत तथाऽल्पकादि न व्याप्नुवँस्त आसान्दिशाश्सरान् प्रवृह्य चत्वार्य्यक्षराण्युपादधुः सा बृहत्यभवत्तयेमाँल्लोकान् व्याप्नुवन् ॥ २ ॥ बृहती मर्या ययेमाँल्लोकान् व्यापामेति तद्बृहत्याबृहत्वम् ॥ ३ ॥ पशून्वा अस्यान्तानुपादधुः पशवो वै बृहती यद्बृहत्याः स्तोत्रे दक्षिणा दीयन्ते स्व एव तदायतने दीयन्ते ॥ ४ ॥ यन्वित्याहुरन्यानि छन्दाँसि वर्षीयाँसि कस्माद्बृहत्युच्यत इत्येषा हीमाँल्लोकान् व्याप्नोन्नान्यछन्दः किञ्चन यानि सप्तचतुरत्तराणि छन्दाँसि तानि बृहतीमभिसम्पद्यन्ते तस्माद्बृहत्युच्यते ॥ ५ ॥ यन्वित्याहुरर्गायत्रं प्रातःसवनं त्रैष्टुभम्माध्यन्दिनश्सवनञ्जागतं तृतीयसवनञ्कस्माद् बृहत्या मध्यन्दिने स्तुवन्तीति ॥ ६ ॥ बहिष्पवमानेन वै देवा आदित्यश्स्वर्गल्लोकमहरन् स नाध्रियत तं बृहत्या मध्यन्दिने स्तभ्नुवँस्तस्माद् बृहत्या मध्यन्दिने स्तुवन्त्यादित्यश्होषा मध्यन्दिने दाधार ॥ ७ ॥ यैरु कैश्च छन्दोभिर्मध्यन्दिने स्तुवन्ति तानि त्रिष्टुभमभि सम्पद्यन्ते तस्मात्त्रिष्टुभो नयन्ति माध्यन्दिनात्सवनात् ॥ ८ ॥

पञ्चमः खण्डः

प्रजापतिरकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति स शोचन्—महीयमानोऽतिष्ठत्स एतदामहीयवमपश्यत्तेनेमाः प्रजा असृजत ताः सृष्टा अमहीयन्त यदमहीयन्त तस्मादामहीयवम् ॥ १ ॥ ता अस्मात्सृष्टा अपाक्रामश्स्तासान्दिवि सद्भूम्यादद इति प्राणानादत्त ता एनं प्राणेष्वत्तेषु पुनरुपावर्तन्त ताभ्य उग्रश्शर्म महिश्रव इति पुनः प्राणान् प्रायच्छत्ता अस्मादुदेवायोधश्स्तासाँ स्तौष इति मन्यूनवाश्रृणोत्ततो वै तस्मै ताः श्रेष्ठ्यायातिष्ठन्त ॥ २ ॥

तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः श्रैष्ठ्याय य एवं वेद ॥ ३ ॥ प्रजानाञ्च
 वा एषा सृष्टिः पापवसीयसश्च विधृतिर्यदामहीयवम् ॥ ४ ॥
 विधृतिः पापवसीयसो भवति य एवं वेद ॥ ५ ॥ देवा वै यशस्कामाः
 सत्रमासताग्निरिन्द्रो वायुर्मखस्तेऽबुवन्यन्नो यशऽऋच्छात्तन्नः
 सहासदिति तेषाम्मखं यश आर्च्छत्तदादायापाक्रामत्तदस्य
 प्रासहादित्सन्त तं पर्य्ययतन्त स्वधनुः प्रतिष्ठभ्यातिष्ठत्तस्य धनु-
 रार्त्तिरूर्ध्वापतित्वा शिरोऽछिनत्स प्रवर्ग्योऽभवद्यज्ञो वै मखो यत्
 प्रवर्ग्यं प्रवृञ्जन्ति यज्ञस्यैव तच्छिरः प्रतिदधति ॥ ६ ॥ तद्देवा यशो
 व्यभजन्त तस्याग्नीरौरवं प्राबृहत ॥ ७ ॥ तद्वै स पशुवीर्य्यं प्राबृहता
 पशवो वै रौरवम् ॥ ८ ॥ पशुमान् भवति य एवं वेद ॥ ९ ॥
 अग्निर्वै रूरस्तस्यैतद्रौरवम् ॥ १० ॥ असुरा वै देवान् पर्य्ययतन्त
 तत एतावग्निरूरौ विष्वञ्चौ स्तोभावपश्यत्ताभ्यामेनान् प्रत्यौषत्ते
 प्रत्युष्यमाणा अरवन्त यदरवन्त तस्माद्रौरवम् ॥ ११ ॥ अथेन्द्रो
 यौधाजयं प्राबृहत तद्वै स वज्रं प्राबृहत वज्रो वै
 यौधाजयम् ॥ १२ ॥ वज्रं भ्रातृव्याय प्रहरति य एवं वेद ॥ १३ ॥
 इन्द्रो वै युधाजित्तस्यैतद्यौधाजयम् ॥ १४ ॥ युधा मर्या अजैष्मेति
 तस्माद्यौधालयम् ॥ १५ ॥ अथ वायुरौशनं प्राबृहत ॥ १६ ॥ तद्वै
 स प्राणवीर्य्यं प्राबृहत प्राणा वा औशनम् ॥ १७ ॥ सर्व्वमायुरेति
 य एवं वेद ॥ १८ ॥ वायुर्वा उशनस्तस्यैतदौशनम् ॥ १९ ॥ उशना
 वै काव्योऽसुराणां पुरोहित आसीत्तं देवाः कामदुघाभिरुपामन्त्रयन्त
 तस्मा एतान्यौशनानि प्रायच्छन् कामदुघा वा औशनानि ॥ २० ॥
 कामदुघा एनमुपतिष्ठन्ते य एवं वेद ॥ २१ ॥

षष्ठः खण्डः

प्रजापतिरकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति स तूष्णीं मनसा
 ध्यायत्तस्य यन्मनस्यासीत्तद्बृहत्साम समभवत् ॥ १ ॥

स आदधीत गर्भो वै मेऽयमन्तर्हितस्तं वाचा प्रजनया इति ॥ २ ॥
 स वाचं व्यसृजत सा वाग्रथन्तरमन्वपद्यत ॥ ३ ॥ रथम्मर्याः
 श्लेष्मतारीदिति तद्रथन्तरस्य रथन्तरत्वम् ॥ ४ ॥ ततो बृहदनु प्राजायत
 बृहन्मर्या इदं स ज्योगन्तरभूदिति तद्बृहतो बृहत्त्वम् ॥ ५ ॥ यथा
 वै पुत्रो ज्येष्ठ एवं बृहत्प्रजापतेः ॥ ६ ॥ ज्येष्ठब्राह्मणं वा
 एतत् ॥ ७ ॥ प्रज्यैष्ठ्यमाप्नोति य एवं वेद ॥ ८ ॥ यन्निवत्याहुर्बृहत्पूर्वं
 प्रजापतौ समभवत्कस्माद्रथन्तरं पूर्वं योगमानश इति ॥ ९ ॥ बृहदेव
 पूर्वसमभवद्रथन्तरन्तु पूर्वसृष्ट्यासृजत तस्मात्पूर्वं
 योगमानशो ॥ १० ॥ तयोः समाननिधनमासीत्तस्मिन्नातिष्ठेतान्ते
 आजिमैतां तयोर्हसिति बृहत्प्राणमुदजयदसिति रथन्तरमपानमभि—
 समवेष्टत ॥ ११ ॥ प्राणापानौ वै बृहद्रथन्तरे ज्योगामयाविन उभे
 कुर्व्यादपक्रान्तौ वा एतस्य प्राणापानौ यस्य ज्योगामयति
 प्राणापानावेवास्मिन्दधाति ॥ १२ ॥ यन्निवत्याहुरुभे बृहद्रथन्तरे बहि—
 निधने कस्माद् बृहद्बहिर्निधनानि भजतेऽन्तर्निधनानि
 रथन्तरमिति ॥ १३ ॥ प्राणो बृहत्तस्माद्बहिर्निधनानि भजते बहिर्हि
 प्राणोऽपानो रथन्तरं तस्मादन्तर्निधनानि भजतेऽन्तर्ह्यपानः ॥ १४ ॥
 महावृक्षौ वै बृहद्रन्तरे निधनेन समर्प्ये ॥ १५ ॥ यद्वै महावृक्षौ
 समृच्छेते बहु तत्र विभग्नं प्रभग्नश्शेते ॥ १६ ॥ ऐरं वै
 बृहदैडं रथन्तरम्मनो वै बृहद्वाग्रथन्तरं साम वै बृहदग्रथन्तरं प्राणो
 वै बृहदपानो रथन्तरमसौ वै लोको बृहद्वयं रथन्तरमेतानि
 मनसान्वीक्ष्योद्गायेत् क्लृप्ताभ्यामेवाभ्यामुद्गायति ॥ १७ ॥

सप्तमः खण्डः

पशवो वै बृहद्रथन्तरे अष्टाक्षरेण प्रथमाया ऋचः
 प्रस्तौत्यष्टाशफास्तत्पशूनवरुन्धे ॥ १ ॥

द्वयक्षरेणोत्तरयोर्ऋचः प्रस्तौति द्विपाद्यजमानो यजमानमेव यज्ञे
 पशुषु प्रतिष्ठापयति ॥ २ ॥ पञ्चाक्षरेण रथन्तरस्य प्रतिहरति
 पाङ्क्ताश्स्तत्पशूनवरुन्धे ॥ ३ ॥ चतुरक्षरेण बृहतः प्रतिहरति
 चतुष्पदस्तत्पशूनवरुन्धे ॥ ४ ॥ न वै बृहन्न रथन्तरमेकञ्छन्दो
 यच्छततः ककुभावुत्तरे उपादधुस्तस्माद्बृहती प्रथमा ककुभावुत्तरे
 तस्माद्बृहद्रथन्तरे एकर्च्वेन कुर्वन्ति न हि ते
 एकञ्छन्दोऽयच्छत् ॥ ५ ॥ नव बृहती रोहान् रोहति नव प्राणाः
 प्राणानेवावरुन्धे ॥ ६ ॥ त्रीन् प्रथमायाश्रोहति भूतं भवद्भविष्यत्तानेवा-
 वरुन्धे त्रीन् मध्यमायाश्रोहत्यात्मानं प्रजां पशून् स्थानेवावरुन्धे
 त्रीनुत्तमायाश्रोहति त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥
 सर्वान् कामानवरुन्धे य एवं विद्वान् बृहतो रोहान् रोहति ॥ ८ ॥
 वज्रेण वा एतत्प्रस्तोतोद्गातारमभिप्रवर्त्तयति यद्रथन्तरं प्रस्तौति
 समुद्रमन्तर्द्वायोद्गायेद्वागित्यादेयं वाग्वै समुद्रः समुद्रमेवान्तर्द्धात्य-
 हिंसायै ॥ ९ ॥ बलवद्वेयं वज्रमेव प्रवृत्तं प्रत्युद्गृह्णाति ॥ १० ॥
 बल्वला कुर्वता गेयमभिलोभयतेव वज्रमेवाभिलोभयति ॥ ११ ॥
 क्षिप्रद्वेयश्स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ १२ ॥ देवरथो वै
 रथन्तरमक्षरेणाक्षरेण प्रतिष्ठापयतोद्वेयमरेणारेण हि रथः
 प्रतितिष्ठति ॥ १३ ॥ यो वै देवरथमनन्वाल्भ्यातिष्ठत्यवास्मात्पद्यत
 इयं वै देवरथ इमामालभ्योद्गायेन्नास्मादवपद्यते ॥ १४ ॥ ईश्वरं वै
 रथन्तरमुद्गातुश्चक्षुः प्रमथितोः प्रस्तूयमाने सम्मीलेत्स्वर्दृशं प्रतिवीक्षेत
 नैनश्चक्षुर्जहाति ॥ १५ ॥ प्रजननं वै रथन्तरं यत्तस्थुष इत्याह
 स्थायुकोद्गातुर्वाग्भवत्यपि प्रजननश्हन्त्यस्थुष इति वक्तव्यश्सुस्थुष
 इति वा स्थायुकोद्गातुर्वाग्भवति न प्रजननमपि हन्ति ॥ १६ ॥ पृष्ठानि
 वा असृज्यन्त तैर्देवाः स्वर्गल्लोकमायश्तेषां रथन्तरम्महिम्ना
 नाशकनोदुत्पतत् ॥ १७ ॥

तस्य वशिष्ठो महिम्नो विनिधाय तेन स्तुत्वा स्वर्गश्ल्लोकमैतान्
संभृत्योद्गायेत् ॥१८॥ यस्ते गोषु महिमा यस्ते अप्सु रथे वा ते
स्तनयित्वा य उ ते यस्ते अग्नौ महिमा तेन सम्भव रथन्तरं
द्रविणवन्न एधि ॥१९॥

अष्टमः खण्डः

अपो वा ऋत्विमार्च्छतासां वायुः पृष्ठे व्यवर्तत ततो वसु
वामः समभत्तस्मिन् मित्रावरुणौ पर्य्यपश्यतां तावब्रूतां वामं मर्या
इदं देवेष्वजनीति तस्माद्वामदेव्यम् ॥१॥ तत्परिगृह्णन्ताव—
ब्रूतामिदमविदावेदनौमाभ्यर्त्तिद्वमिति तत्प्रजापतिरब्रवीन्मद्वा
एतदद्भ्यजनि मम वा एतदिति तदग्निरब्रवीन्मां वा एतदनजनि
मम वा एतदिति तदिन्द्रोऽब्रवीच्छ्रेष्ठस्था वा एतदहं वः श्रेष्ठोऽस्मि
मम वा एतदिति तद्विश्वे देवा अब्रुवन्स्मद्देवत्यं वा एतद्य—
दद्भ्योऽधि समभूदस्माकं वा एतदिति तत्प्रजापतिरब्रवीत्सर्वेषान्
इदमस्तु सर्व इदमुपजीवामेति तत्पृष्ठेषु न्यदधुः सर्वदेवत्यं वै
वामदेव्यम् ॥२॥ यत्कवतीषु तेन प्राजापत्यं को हि
प्रजापतिर्यदनिरुक्तासु तेन प्राजापत्यमनिरुक्तो हि प्रजापतिः ॥३॥
यद्गायत्रीषु तेनाग्नेयं गायत्रच्छन्दा ह्यग्निः ॥४॥ यत् पृष्ठेषु
न्यदधुस्तेनैन्द्रः सर्वाणि हि पृष्ठानीन्द्रस्य निष्केवल्यानि ॥५॥
यन्मैत्रावरुणोऽनुशः सति तेन मैत्रावरुणम् ॥६॥ यद्बहुदेवत्यमुत्तमं
पदं तेन वैश्वदेवं सर्वेष्वेव रूपेषु प्रतितिष्ठति ॥७॥ प्रजापतिर्वा
एतां गायत्रीं योनिमपश्यत् स आदीधीतास्माद्योनेः पृष्ठानि सृजा
इति ॥८॥ स रथन्तरमसृजत तद्वथस्य घोषोऽन्वसृज्यत ॥९॥
स बृहदसृजत तत्स्तनयित्वाघोषोऽन्वसृज्यत स वैरूपमसृजत तद्वा
तस्य घोषोऽन्वसृज्यत ॥१०॥

स वैराजमसृजत तदग्नेर्घोषोऽन्वसृज्यत ॥११॥ स
शक्वरीरसृजत तदपाङ्गोषोऽन्वसृज्यत ॥१२॥ स रेवतीरसृजत तद्गवां
घोषोऽन्वसृज्यत ॥१३॥ एतैर्वा एतानि सह घोषैरसृज्यन्त ॥१४॥
सर्वेऽस्मिन् घोषाः सर्वाः पुण्यावाचो वदन्ति य एवं वेदः ॥१५॥

नवमः खण्डः

पिता वै वामदेव्यं पुत्राः पृष्ठानि ॥१॥ एतस्माद्वा एतानि
योनेरसृज्यन्त ॥२॥ तस्मात् पृष्ठानांस्तोत्रं वामदेव्येनानुष्टुवन्ति
शान्त्यै ॥३॥ यद्धि पुत्रोऽशान्तं चरति पिता तच्छमयति ॥४॥
अयं वै लोको मध्यमो वामदेव्यमेतस्माद्वा इमौ लोकौ
विष्वञ्चावसृज्येतां बृहच्च रथन्तरञ्च ॥५॥ यद्रथन्तरेण स्तुवन्ति
ये रथन्तराः पशवोऽन्तरीक्षन्त उपश्रयन्ति यद्बृहता स्तुवन्ति ये
बार्हताः पशवोऽन्तरीक्षन्त उपश्रयन्ति ते वामदेव्यस्य
स्तोत्रेणावरुद्धाः ॥६॥ ध्रुव आसीनो वामदेव्येनोद्गायेत्पशूनामुप
वृत्यै ॥७॥ उपैनं पशव आवर्तन्ते य एवं वेद ॥८॥ अन्तरिक्षं
वै वामदेव्यमधून्वतेवोद्गेयमधूतमिव ह्यन्तरिक्षं पशवो वै
वामदेव्यमहिंसतेवोद्गेयं पशूनामहिंसायै ॥९॥ कथमिव वामदेव्यं
गेयमित्याहुः ॥१०॥ यथांकुली पुत्रान् सन्दश्यासम्भिन्दती हरति
यथा वातोऽप्सु शनैर्वाति ॥११॥ स्वधूर्वामदेव्यङ्गेयम् ॥१२॥
यो वै स्वधूर्वामदेव्यङ्गायति स्वधूर्भवति ॥१३॥ यात्यस्यान्यो
नियानेन नान्यस्य नियानेन याति ॥१४॥ न बृहतो न
रथन्तरस्यानुरूपङ्गेयस्त्वेनैवायतनेन गेयमायतनवान् भवति ॥१५॥
देवा वै पशून् व्यभजन्त ते रुद्रमन्तरायस्तान्वामदेव्यस्य स्तोत्र
उपेक्षते ॥१६॥ अनिरुक्तङ्गेयम् ॥१७॥

यन्निराह रुद्राय पशूनपि दधाति रुद्रस्ताऽसमां पशून् घातुको भवति ॥ १८ ॥ रेवतीषु वामदेव्येन पशूकामः स्तुवीत ॥ १९ ॥ आपो वै रेवत्यः पशवो वामदेव्यमद्भ्य एवास्मै पशून् प्रजनयति ॥ २० ॥ अनवर्तिः पशुतो भवति प्रजा त्वस्य मीलितेव भवति ॥ २१ ॥ कवतीभ्यो ह्येति प्रजापतेः ॥ २२ ॥

दशमः खण्डः

इमौ वै लोकौ सहास्तान्तौ वियन्तावब्रूतां विवाहं विवहावहै सह नावस्त्विति ॥ १ ॥ तयोरयममुष्मै श्यैतं प्रायच्छनौध—समसावस्मै ॥ २ ॥ तत एनयोर्निधने विपर्य्यक्रामतां देव विवाहो वै श्यैतनौधसे ॥ ३ ॥ प्रवसीयाऽसं विवाहमाप्नोति य एवं वेद ॥ ४ ॥ इतो वा इमे लोका ऊर्द्ध्वाः कल्पमानायन्त्यमुतोऽर्वाञ्चः कल्पमाना आयन्ति ॥ ५ ॥ यद्रथन्तरेण स्तुवन्तीमल्लोकं तेन युनक्त्यन्तरिक्षं वामदेव्येन नौधसेनामुं यद् बृहता स्तुवन्त्यमुल्लोकं तेन युनक्त्यन्तरिक्षं वामदेव्येन श्यैतेनेमम् ॥ ६ ॥ क्लृप्तानिमां—ल्लोकानुपास्ते य एवं वेद ॥ ७ ॥ बृहद्रथन्तरे वै श्यैतनौधसे यद्रथन्तराय नौधसं प्रति प्रयुञ्जन्ति बृहदेवास्मै तत्प्रति प्रयुञ्जन्ति बृहद्ध्येतत्परोक्षं यन्नौधसं यद् बृहते श्यैतं प्रति प्रयुञ्जन्ति रथन्तरमेवास्मै तत्प्रति प्रयुञ्जन्ति रथन्तरश्चैतत्परोक्षं यच्छैतम् ॥ ८ ॥ उभाभ्यां बृहद्रथन्तराभ्यां स्तुते य एवं वेद ॥ ९ ॥ देवा वै ब्रह्म व्यभजन्त तान्नोधाः काक्षीवत आगच्छतोऽब्रुवन् नृषिर्न आगऽस्तस्मै ब्रह्म ददामेति तस्मा एतत् साम प्रायच्छन्यन्नौधसे प्रायच्छऽस्त—स्मान्नौधसं ब्रह्म वै नौधसम् ॥ १० ॥ ब्रह्मवर्चसकाम एतेन स्तुवीत ब्रह्मवर्चसी भवति ॥ ११ ॥ अथैतच्छैतम् ॥ १२ ॥

प्रजापतिः पशूनसृजत तेऽस्मान् सृष्टा अपाक्रामश्स्तानेतेन
 साम्नाभिव्याहरत्तेऽस्मा अतिष्ठन्त ते शेत्या अभवन् यच्छेत्या
 अभवश्स्तस्माच्छयैतं पशवो वै श्यैतम् ॥१३॥ पशुकाम एतेन
 स्तुवीत पशुमान् भवति ॥१४॥ प्रजापतिः प्रजा असृजत ताः
 सृष्टा अशोचश्स्ताः श्यैतेन हुं मा इत्यभ्यजिघ्रत्ततो वै ताः
 समैधन्त समेधन्ते ताःसमां प्रजा यत्रैवं विद्वाञ्छयैतेनोद्गायति ॥१५॥
 एष वै यजमानस्य प्रजापतिर्यदुद्गाता यच्छयैतेन हिङ्करोति प्रजापतिरेव
 भूत्वा प्रजा अभिजिघ्रति ॥१६॥ वसुनिधनं भवति पशवो वै
 वसु पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥१७॥

॥ इति सप्तमोऽध्यायः॥



अष्टमोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

आष्कारणिधनं काण्वं वषट्कारणिधनमभिचरणीयस्य ब्रह्मसाम
कुर्यादभिनिधनम्माध्यन्दिने पवमाने ॥ १ ॥ देवेषुर्वा एषा
यद्वषट्कारोऽभीति वा इन्द्रो वृत्राय वज्रं प्राहरदभीत्येवास्मै वज्रं
प्रहृत्य देवेष्वावषट्कारेण विध्यति ॥ २ ॥ त्रैककुभं पशुकामाय
ब्रह्मसाम कुर्यात् त्वमङ्गप्रशंसिष इत्येतासु ॥ ३ ॥ इन्द्रोयतीन्
सालावृकेभ्यः प्रायच्छतेषां त्रय उदशिष्यन्त रायो वाजो बृहद्गिरिः
पृथुरश्मिस्तेऽब्रुवन् कोनः पुत्रान् भरिष्यतीत्यहमितीन्द्रोऽब्रवीत्तां—
स्त्रिककुबधिनिधायाचरत्स एतत्सामापश्यद्यत्त्रिककुबपश्यत्तस्मा
त्त्रैककुभम् ॥ ४ ॥ स आत्मानमेव पुनरुपाधावत्त्वमङ्ग प्रशंसिषो
देवः शविष्ठमर्त्यन्नत्वदन्योमघवन्नस्ति च मर्दितेन्द्र ब्रवीमि ते वच
इति स एतेन च प्रगाथेनैतेन साम्ना सहस्रं पशूनसृजत तानेभ्यः
प्रायच्छते प्रत्यतिष्ठन् ॥ ५ ॥ यः पशुकामः स्याद्यः प्रतिष्ठाकाम
एतस्मिन्प्रगाथ एतेन साम्ना स्तुवीत प्रसहस्रं पशूनाप्नोति
प्रतितिष्ठति ॥ ६ ॥ त्रिवीर्यं वा एतत्साम त्रीन्द्रियमैन्द्र्य ऋच
ऐन्द्रश्सामैन्द्रेति निधनमिन्द्रिय एव वीर्यं प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ त्रैशोकं
ज्योगामयाविने ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥ ८ ॥ इमे वै लोकाः सहासं—
स्तेऽशोचंस्तेषामिन्द्र एतेन साम्ना शुचमपाहन्यत्रयाणां
शोचतामपाहंस्तस्मात्त्रैशोकम् ॥ ९ ॥ यामस्मादपाहन् सा पुंश्चर्ली
प्राविशद्यामन्तरिक्षात्सा क्लीवं याममुष्मात्सैनस्विनम् ॥ १० ॥
तस्मात्तेषान्नाशैतव्या य एषामाशामेति तस्मा एव
शुचोऽपभजते ॥ ११ ॥

शुचा वा एष विद्धो यस्य ज्योगामयति यत्रैशोकं ब्रह्मसाम
भवति शुचमेवास्मादपहन्ति ॥१२॥ दिवेति निधनमुपयन्ति व्युष्टिर्वै
दिवा व्येवास्मै वासयति ॥१३॥

द्वितीयः खण्डः

आष्कारणिधनं काण्वं प्रतिष्ठाकामाय ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥१॥
कण्वो वा एतत्सामर्ते निधनमपश्यत् स न प्रत्यतिष्ठत्स
वृषदंशस्याषिति क्षुवत उपाशृणोत्स तदेव निधनमपश्यत्ततो वै स
प्रत्यतिष्ठद्यदेतत्साम भवति प्रतिष्ठित्यै ॥२॥ वसिष्ठस्य जनित्रं
प्रजाकामाय ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥३॥ वसिष्ठो वा एतत्पुत्रहतः
सामापश्यत्स प्रजया पशुभिः प्राजायत यदेतत्साम भवति
प्रजात्यै ॥४॥ आथर्वणं लोककामाय ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥५॥
अथर्वाणो वा एतल्लोकंकामाः सामापश्यन्स्तेनामर्त्यल्लोकमपश्यन्
यदेतत्साम भवति स्वर्गस्य लोकस्य प्रजात्यै ॥६॥ अभीवर्तं
भ्रातृव्यवते ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥७॥ अभीवर्त्तेन वै देवा
असुरानभ्यवर्तन्त यदभीवर्त्तो ब्रह्मसाम भवति भ्रातृव्य-
स्याभिवृत्यै ॥८॥ श्रायन्तीयं यज्ञविभ्रष्टाय ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥९॥
प्रजापतिरुषसमध्यैत्स्वां दुहितरं तस्य रेतः परापतत्तदस्यां न्यषिच्यत
तदश्रीणादिदं मे माऽदुषदिति तत्सदकरोत्पशूनेव ॥१०॥ यच्छ्रायन्तीयं
ब्रह्मसाम भवति श्रीणाति चैवैनं सच्च करोति ॥११॥

तृतीयः खण्डः

देवाश्च वा असुराश्चैषु लोकेष्वस्पृद्धन्त ते देवाः प्रजापति-
मुपाधावन्स्तेभ्य एतत्साम प्रायच्छदेतेनैनान् कालयिष्यद्भवमिति
तेनैनानेभ्यो लोकेभ्योऽकालयन्त यदकालयन्त तस्मात्कालेयम् ॥१॥

एभ्यो वै लोकेभ्यो भ्रातृव्यं कालयते य एवं वेद ॥ २ ॥
 स्तोमो वै देवेषु तरो नामासीद्यज्ञोऽसुरेषु विदद्वसुस्ते देवास्तरोभिर्वो
 विदद्वसुमिति स्तोमेन यज्ञमसुराणामवृञ्जत ॥ ३ ॥ स्तोमेन यज्ञं
 भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते य एवं वेद ॥ ४ ॥ साध्या वै नाम
 आसश्स्तेऽवच्छिद्य तृतीयसवनम्माध्यन्दिनेन सवनेन सह
 स्वर्गल्लोकमायश्स्ते देवाः कालेयेन समतन्वन्यत्कालेयं भवति
 तृतीयसवनस्य सन्तत्यै ॥ ५ ॥ विदद्वसु वै तृतीय सवनं यत्तरोभिर्वो
 विदद्वसुमिति प्रस्तौति तृतीय सवनमेव तदभ्यति वदति ॥ ६ ॥
 सर्वाणि वै रूपाणि कालेयं यत्पदप्रस्तावन्तेन राथन्तरं यद्बृहतो
 रोहान् रोहति तेन बार्हतं यत् स्तोभवान् प्रतिहारस्तेन बार्हतं
 यद्रवदिङन्तेन राथन्तरश्सर्वेष्वेव रूपेषु प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥

चतुर्थः खण्डः

साध्या वै नाम देवा आसश्स्ते सर्वेण यज्ञेन सह
 स्वर्गल्लोकमायश्स्ते देवाश्छन्दास्यबुवन्सोममाहरतेति ते जगतीं
 प्राहिण्वन्सा त्रीण्यक्षराणि हित्वैकाक्षरा भूत्वागच्छत्त्रिष्टुभं प्राहिण्वन्
 सैकमक्षरश्चित्वाः त्र्यक्षरा भूत्वा गच्छद्गायत्रीं प्राहिण्वश्चतुरक्षराणि
 वै तर्हि छन्दास्यासन् सा तानि चाक्षराणि हरन्त्यागच्छदष्टाक्षरा
 भूत्वा त्रीणि च सवनानि हस्ताभ्यां द्वे सवने दन्तैर्दृष्ट्वा तृतीयसवनं
 तस्माद्वे अश्शुमती सवने धीतं तृतीयसवनं दन्तैर्हि तदृष्ट्वा
 धयन्त्यहरत्तस्य ये ह्रियमाणस्याश्शवः परापतश्स्ते पूतीका अभवन्
 यानि पुष्पाण्यवाशीयन्त तान्यर्जुनानि यत्प्राप्रोथत्ते प्रप्रोथास्त—
 स्मात्तृतीयसवन आशिरमवनयन्ति यमेव तं गावः सोममदन्ति तस्य
 तं रसमवनयन्ति ससोमत्वाय ॥ १ ॥

ते त्रिष्टुब्जगत्यौ गायत्रीमब्रूतामुप त्वायावेति साब्रवीत् किं मे ततः स्यादिति यत्कामय स इत्यब्रूताऽसाब्रवीन्मम सर्व्वं प्रातः सवनमहमुत्तरे सवने प्रणयानीति तस्माद्गायत्रं प्रातःसवनं गायत्र्युत्तरे सवने प्रणयति ॥ २ ॥ तां त्रिष्टुप् त्रिभिरक्षरैरुपैत्सैकादशाक्षरा भूत्वा प्राजायत ताञ्जगत्येकेनाक्षरेणोपैत्सा द्वादशाक्षरा भूत्वा प्राजायत ॥ ३ ॥ तस्मादाहुर्गायत्री वाव सर्वाणि छन्दांसि गायत्री ह्येतान् पोषान् पुष्यन्त्यैदिति ॥ ४ ॥ इन्द्रस्तृतीयसवनाद्वीभत्समान उदक्रामत्तद्देवाः स्वादिष्टयेत्यस्वदयन्मदिष्टयेति मद्बदकुर्वन् पवस्व सोम धारयेत्यपावयन्निन्द्राय पातवे सुत इति ततो वै तदिन्द्र उपावर्त्तत यत् स्वादिष्टया मदिष्टयेति प्रस्तौति तृतीयसवनस्य सेन्द्रत्वाय ॥ ५ ॥ स्वादिष्टा वै देवेषु पशव आसन् मदिष्टा असुरेषु ते देवाः स्वादिष्टया मदिष्टयेति पशून्सुराणामवृञ्जत ॥ ६ ॥ पशून् भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते य एवं वेद ॥ ७ ॥ तासु संहितम् ॥ ८ ॥ साध्या वै नाम देवा आसऽस्तेऽवच्छिद्य तृतीयसवनम्माध्यन्दिनेन सवनेन सह स्वर्गल्लोकमायऽस्तद्देवाः संहितेन समदधुर्य्यत्समदधुस्तस्मात्सऽ— हितम् ॥ ९ ॥ कालेयं पुरस्ताद्भवति संहितमुपरिष्टादेताभ्याऽहि तृतीयसवनऽसन्तायते ॥ १० ॥ सर्वाणि वै रूपाणि संहितं यत्पदप्रस्तावन्तेन राथन्तरं यद्बृहतो रोहान्नोहति तेन बार्हतं यत्पद— निधन्तेन राथन्तरऽसर्वेष्वेव रूपेषु प्रतितिष्ठति ॥ ११ ॥

पञ्चमः खण्डः

उष्णिक्कुकुभावेते भवतः ॥ १ ॥ उष्णिक्कुकुब्भ्यां वा इन्द्रो वृत्राय वज्रं प्राहरत्कुकुभि पराक्रमतोष्णिहा प्राहरत्तस्मात् ककुभो मध्यमं पदं भूयिष्ठाक्षरं पराक्रमणऽहि तदभि समौहत्तस्मादुष्णिह उत्तमं पदं भूयिष्ठाक्षरं पुरो गुरुरिव हि वज्रः ॥ २ ॥

वज्रं भ्रातृव्याय प्रहरति य एवं वेद ॥ ३ ॥ नासिके वा एते
यज्ञस्य यदुष्णिक्कुभौ तस्मात् समानं छन्दः सती नानायज्ञं
वहतस्तस्मात् समानाया नासिकायाः सत्या नाना प्राणावुच्चरतः ॥ ४ ॥
प्राणा वा उष्णिक्कुभौ तस्मात्ताभ्यान् वषट्कुर्वन्ति यद्वषट्कुर्व्युः
प्राणानग्नौ प्रदध्युः ॥ ५ ॥ तासु सफं विफमिव तृतीयसवनं
तृतीयसवनस्य सफत्वायाथैतत्पौष्कलमेतेन वै प्रजापतिः पुष्कलान्
पशूनसृजत तेषु रूपमदधाद्यदेतत्साम भवति पशुष्वेव रूपं—
दधाति ॥ ६ ॥ पुरोजिती वो अन्धस इति पद्या चाक्षर्या च
विराजौ भवतः पद्या वै देवाः स्वर्गल्लोकमायन्नक्षर्या ऋषयो
नु प्राजानन्यदेते पद्या चाक्षर्या च विराजौ भवतः स्वर्गस्य लोकस्य
प्रजात्यै ॥ ७ ॥ तासु श्यावाश्चम् ॥ ८ ॥ श्यावाश्चमार्वनानसः—
सत्रमासीनं धन्वोदवहन् स एतत्सामापश्यत्तेन वृष्टिमसृजत ततो वै
स प्रत्यतिष्ठत्ततो गातुमविन्दत गातुविद्वा एतत्साम ॥ ९ ॥ विन्दते
गातुं प्रतितिष्ठत्येतेन तुष्टुवानः ॥ १० ॥ इन्द्रस्तृतीयसवनाद्
वीभत्समान उदक्रामत्तं देवाः श्यावाश्चैनैहायि एहियेत्यन्वाह्वयन् स
उपावर्त्तत यदेतत्साम भवति तृतीयसवनस्य सेन्द्रत्वाय ॥ ११ ॥
अथैतदान्धीगवमन्धीगुर्वा एतत्पशुकामः सामापश्यत्तेन सहस्रं
पशूनसृजत यदेतत्साम भवति पशूनां पुष्ट्यै मध्ये
निधनमैडम्भवत्येतेन वै तृतीय सवनं प्रतितिष्ठतं यन्मध्ये निधनमैडन्
स्यादप्रतिष्ठितं तृतीयसवनस्यात् ॥ १२ ॥ दशाक्षरं मध्यतो
निधनमुपयन्ति दशाक्षरा विराड्विराज्येव प्रतितिष्ठति ॥ १३ ॥
अभिप्रियाणि पवत इति कावं प्राजापत्यसाम ॥ १४ ॥ प्रजा वै
प्रियाणि पशवः प्रियाणि प्रजायामेव पशुषु प्रतितिष्ठति ॥ १५ ॥
रश्मी वा एतौ यज्ञस्य यदौशनकावे देवकोशो वा एष
यज्ञमभिसमुब्जितो यदेते अन्ततो भवतो यज्ञस्यारिष्ट्यै ॥ १६ ॥

षष्ठः खण्डः

देवा वै ब्रह्म व्यभजन्त तस्य योरसोऽत्यरिच्यत
तद्यज्ञायज्ञीयमभवत् ॥१॥ ब्रह्मणो वा एष रसो यद्यज्ञायज्ञीयं
यद्यज्ञायज्ञीयेन स्तुवन्ति ब्रह्मण एव रसे यज्ञं प्रतिष्ठापयन्ति ॥ २॥
योनिर्वै यज्ञायज्ञीयमेतस्माद्वै योनेः प्रजापतिर्यज्ञमसृजत यद्यज्ञं
यज्ञमसृजत तस्माद्यज्ञायज्ञीयम् ॥ ३॥ तस्माद्वा एतेन पुरा ब्राह्मणा
बहिष्पवमानमस्तोषत योनेर्यज्ञं प्रतनवा महा इति यज्ञन्ततः स्तुवन्ति
योनौ यज्ञं प्रतिष्ठापयन्ति ॥ ४॥ असुरेषु वै सर्वो यज्ञं आसीत्ते
देवा यज्ञायज्ञीयमपश्यस्तेषां यज्ञायज्ञा वो अग्नय इत्यग्निहोत्रमवृञ्जत
गिरा गिरा च दक्षस इति दर्शपूर्णमासौ प्रप्रवयममृतञ्जातवेदसमिति
चातुर्मास्यानि प्रियम्मित्रन्नशःसिषमिति सौम्यमध्वरम् ॥ ५॥ यज्ञा
वो अग्नये गिरा च दक्षसे प्र वयममृतञ्जातवेदसम्प्रियम्मित्रं
नशःसिषमिति वै तर्हि छन्दाःस्यासःस्ते देवा अभ्यारम्भमभि
निवर्त्य छन्दोभिर्यज्ञमसुराणामवृञ्जत ॥ ६॥ छन्दोभिर्यज्ञं भ्रातृव्यस्य
वृङ्क्ते य एवं वेद ॥ ७॥ एतद्धस्म वा आह कूशाम्बः स्वायवो
ब्रह्मा लातव्यः कःस्विदद्य शिशुमारी यज्ञपथेऽप्यस्ता गरिष्यति ॥ ८॥
एषा वै शिशुमारी यज्ञपथेऽप्यस्ता यज्ञायज्ञीयं यद्विरागिरेत्याहात्मानं
तदुद्गातागिरति ॥ ९॥ ऐरङ्कृत्वोद्देयमिरायां यज्ञं प्रतिष्ठापयत्य-
प्रभायुकं उद्गाता भवति ॥ १०॥ वैश्वानरे वा एतदुद्गातात्मानं
प्रदधाति यत्प्रवयमित्याह प्रप्तीं वयमिति वक्तव्यं वैश्वानरमेव
परिक्रामति ॥ ११॥ यो वै निहुवानं छन्द उपैति पापीयानुज्जगिवान्
भवत्ये तद्वै निहुवानं छन्दोयन्न शःसिषमिति नुशःसिषमिति
वक्तव्यःसुशःसिषमिति वा न निहुवानं छन्द उपैति
वसीयानुज्जगिवान् भवति ॥ १२॥

यस्य वै यज्ञा वागन्ता भवन्ति वाचश्छिद्रेण स्रवन्त्येते वै यज्ञा वागन्ता ये यज्ञायज्ञीयान्ता एतद्वाचश्छिद्रं यदनृतं यदग्निष्ठोमयाज्यनृतमाह तदन्वस्य यज्ञः स्रवत्यक्षरेणान्ततः प्रतिष्ठाप्यमक्षरेणैव यज्ञस्य छिद्रमपि दधाति ॥१३॥ विराजो वा एतद्रूपं यदक्षरं विराज्येवान्ततः प्रतितिष्ठति ॥१४॥

सप्तमः खण्डः

इतो वै प्रातरूद्ध्वानि छन्दाश्सि युज्यन्तेऽमुतोऽर्वाञ्चि यज्ञायज्ञीयस्य स्तोत्रे युज्यन्ते यज्ञा वो अग्नये गिरा च दक्षस इति द्वादशाक्षरं प्रवयममृतञ्जातवेदसमित्येकादशाक्षरं प्रियम्मित्रन्न शःसिषमित्यष्टाक्षरम् ॥१॥ अनुष्टुभमुत्तमाःसम्पादयतीयं वा अनुष्टुबस्यामेव प्रतितिष्ठति ॥२॥ वाग्वा अनुष्टुब्वाच्येव प्रतितिष्ठति ज्यैष्ठ्यं वा अनुष्टुब्जैष्ठ्य एव प्रतितिष्ठति ॥३॥ कथमिव यज्ञायज्ञीयङ्गेयमित्याहुर्थाऽनङ्वान् प्रसावयमाण इत्थमिव चेत्यमिव चेति ॥४॥ वैश्वानरं वा एतदुद्गाताऽनु प्रसीदन्तेतीत्या—हुर्यघज्ञायज्ञीयस्यर्च्यःसंप्रत्याहेति परिक्रामतेवोद्गेयं वैश्वानरमेव परिक्रामति ॥५॥ वैश्वानरे वा एतदध्वर्युः सदस्यानभिसृजति यघज्ञायज्ञीयस्य स्तोत्रमुपावर्त्तयति प्रावृतेनोद्गेयं वैश्वानरेणा—नभिदाहाय ॥६॥ न ह तु वै पितरः प्रावृतञ्जानन्ति यज्ञायज्ञीयस्य वै स्तोत्रे पितरो यथायथं जिज्ञासन्त आकर्णाभ्यां प्रावृत्यन्तदेव प्रावृतन्तदप्रावृतञ्जानन्ति पितरो न वैश्वानरो हिनस्ति ॥७॥ अपः पश्चात् पत्न्य उपसृजन्ति वैश्वानरमेव तच्छमयन्त्यापोहि शान्तिः ॥८॥ अथो रेत एव तत्सिञ्चन्त्यापोहि रेतः ॥९॥ दक्षिणानूरूनभिषिञ्चन्ति दक्षिणतो हि रेतः सिच्यते ॥१०॥ महदिव प्रत्यूह्यम्मन एवास्य तज्जनयन्ति ॥११॥

उद्गात्रा पत्नीः संख्यापयन्ति रेतोधेयाय ॥१२॥ हिङ्कारं प्रति
संख्यापयन्ति हिङ्कृताद्धि रेतोऽधीयत ॥१३॥ आतृतीयायाः
संख्यापयन्ति त्रिवृद्धि रेतः ॥१४॥

अष्टमः खण्डः

देवा वा अग्निष्टोममभिजित्योक्त्यानि नाशक्नुवन्नभिजेतुं
तेऽग्निमबुवश्स्त्वया मुखेनेदज्जयामेति सोऽब्रवीत् किम्मे ततः स्यादिति
यत्कामयस इत्यबुवन् सोऽब्रवीन्मदेवत्यासूक्त्यानि प्रणयानिति ॥१॥
तस्मादाग्नेयोषूक्त्यानि प्रणयन्ति ॥२॥ तस्मादु गायत्रीषु गायत्रछन्दा
ह्यग्निः ॥३॥ तेऽग्निम्मुखं कृत्वा साकमश्चेनाभ्यक्रामन्
यत्साकमश्चेनाभ्यक्रामश्स्तस्मात् साकमश्वम् ॥४॥ तस्मात्साक—
मश्चेनोक्त्यानि प्रणयन्त्येतेन हि तान्यग्रेऽभ्यजयन् ॥५॥ स
इन्द्रोऽब्रवीत्कश्चाहश्चेदमन्ववैष्याव इत्यहश्चेति वरुणस्तं वरुणोऽन्व—
तिष्ठदिन्द्र आहरत्तस्मादैन्द्रावारुणमनुशस्यते ॥६॥ स एवाब्रवीत्कश्चाहं
चेदमन्ववैष्याव इत्यहश्चेति बृहस्पतिस्तं बृहस्पतिरन्वतिष्ठदिन्द्र
आहरत्तस्मादैन्द्राबार्हस्पत्यमनुशस्यते । स एवाब्रवीत्कश्चाहं
चेदमन्ववैष्याव इत्यहश्चेति विष्णुस्तं विष्णुरन्वतिष्ठदिन्द्र
आहरत्तस्मादैन्द्रावैष्णवमनुशस्यते ॥७॥ पशून् वा एभ्यस्ता—
नाहरत्यशवो वा उक्त्यानि पशुकाम उक्थेन स्तुवीत पशुमान्
भवति ॥८॥ बृहता वा इन्द्रो वृत्राय वज्रं प्राहरत्तस्य तेजः
परापतत्तत्सौभरमभवत् ॥९॥ जामि वा एतद्यज्ञे क्रियत
इत्याहुर्व्यद्रथन्तरं पृष्ठश्चरथन्तरश्चसन्धिर्त्रान्तरा बृहता स्तुवन्तीति यत्
सौभरेण स्तुवन्ति बृहतैव तदन्तरा स्तुवन्ति बृहतो ह्येतत्तेजो
यत्सौभरम् ॥१०॥

यदि बृहत्सामातिरात्रः स्यात्सौभरमुक्थानां ब्रह्मसाम कार्य्यं
 बृहदेव तत्तेजसा समर्द्धयति ॥११॥ यदि रथन्तरसाम्ना सौभरं
 कुर्यादजामितायै ॥१२॥ देवानां वै स्वर्गल्लोकं यन्तां
 दिशोऽल्लीयन्त ताः सौभरेणो इत्युदस्तभुवश्स्ततो वै ता
 अहन्त ततः प्रत्यतिष्ठश्स्ततः स्वर्गल्लोकं प्राजानन्यः स्वर्गकामः
 स्याद्यः प्रतिष्ठाकामः सौभरेण स्तुवीत प्रस्वर्गल्लोकं जानाति
 प्रतितिष्ठति ॥१३॥ प्रजापतिः प्रजा असृजत ताः सृष्ट्या
 आशनायश्स्ताभ्यः सौभरेणोर्गित्यन्नं प्रायच्छत्ततो वै ताः
 समैधन्त ॥१४॥ समैधन्ते ताश्समां प्रजा यत्रैवं विद्वान्
 सौभरेणोद्गायति ॥१५॥ ता अबुवन् सुभृतन्नोऽभार्षीरिति
 तस्मात्सौभरम् ॥१६॥ वृष्टिं वा आभ्यस्तां प्रायच्छदन्नमेव ॥१७॥
 यो वृष्टिकामः स्याद्योऽन्नाद्यकामोयः स्वर्गकामः सौभरेण
 स्तुवीत ॥१८॥ ह्रीषिति वृष्टिकामाय निधनं कुर्यादूर्गित्यन्नाद्यकामायो
 इति स्वर्गकामाय ॥१९॥ सर्व्वे वै कामाः सौभरश्सर्व्वेष्वेव कामेषु
 प्रतितिष्ठति ॥२०॥ अथैतन्नाम्मैधम् ॥२१॥ नृमेधसमाङ्गि—
 रसश्सत्रमासीनश्श्वभिरभ्याह्वयन् सोऽग्निमुपाधावत्पाहि नो अग्न
 एकयेति तं वैश्वानरः पर्य्युदतिष्ठत्ततो वै सप्रत्यतिष्ठत्ततो गातु—
 मविन्दत् ॥२२॥ गातुविद्वा एतत्साम विन्दते गातुं प्रतितिष्ठत्येतेन
 तुष्टुवानः ॥२३॥ विच्छन्दसऋचो भवन्त्यहोरात्रयो रूपम् ॥२४॥
 नैव ह्येतदह्नोरूपं न रात्रेर्य्यदुक्थानाम् ॥२५॥ ककुभ्—
 प्रथमाथोऽष्णिगथ पुरउष्णिगनुष्टुप्तेनानुष्टुभो नयन्त्यच्छावाक—
 साम्नः ॥२६॥

नवमः खण्डः

हारिवर्णं भवति ॥१॥

असुरा वा एषु लोकेष्वासस्तान्देवा हरिश्रियमित्य-
 स्माल्लोकात्प्राणुदन्त विराजसीत्यन्तरिक्षादिवेदेव इत्यमुष्मात् ॥ २ ॥
 तद्य एवं वेदैभ्यो लोकेभ्यो भ्रातृव्यं प्रणुद्येमाँ-
 ल्लोकानभ्यारोहति ॥ ३ ॥ हरिवर्णो वा एतत्पशुकामः सामापश्यतेन
 सहस्रं पशून्सृजत यदेतत्साम भवति पशूनां पुष्ट्यै ॥ ४ ॥ अङ्गिरसः
 स्वर्गल्लोकं यतो रक्षाश्स्यन्वसचन्त तान्येतेन हरिवर्णोऽपाहन्त
 यदेतत्साम भवति रक्षसामपहत्यै ॥ ५ ॥ पृष्ठानि वा असृज्यन्त
 तेषां यत्तेजो रसोऽत्यरिच्यत तद्देवाः समभरस्तदुद्धृ-
 शीयमभवत् ॥ ६ ॥ सर्वेषां वा एतत् पृष्ठानां तेजो यदुद्धृशीयं-
 तस्माद्वा एतत्पुरा सजाताय नाक्रन् पापवसीयसो विधृत्यै ॥ ७ ॥
 एषह्येव पृष्ठैस्तुष्टुवानो य उदुद्धृशीयेन स्तुते ॥ ८ ॥ सर्वाणि वै
 रूपाण्युद्धृशीयम् ॥ ९ ॥ गायन्ति त्वा गायत्रिण एति रथन्तरस्य
 रूपमेति हि रथन्तरम् ॥ १० ॥ आदिर्बृहत् ऊर्ध्वमिव हि बृहत् ॥ ११ ॥
 परिष्टोभो वैरूपस्य परिष्टुभं हि वैरूपम् ॥ १२ ॥ अनुतोदो
 वैराजस्यानुतुन्नं हि वैराजम् ॥ १३ ॥ अर्द्धेडा शक्वरीणामतिस्वारो
 रेवतीनाम् ॥ १४ ॥ अर्द्धेडया वै देवा असुरानवहत्याऽतिस्वारेण
 स्वर्गं लोकमारोहन् ॥ १५ ॥ तद्य एवं वेदार्द्धेडयैव
 भ्रातृव्यमवहत्यातिस्वारेण स्वर्गं लोकमारोहति ॥ १६ ॥ अर्द्धेडया
 वै पूर्वं यज्ञश्सस्थापयन्त्यतिस्वारेणोत्तरमारभन्ते ॥ १७ ॥ उपैनमुत्तरो
 यज्ञो नमति य एवं वेद ॥ १८ ॥ पाङ्क्तं वा एतत्साम पाङ्क्तो
 यज्ञः पाङ्क्ताः पशवो यज्ञ एव पशुषु प्रतितिष्ठति ॥ १९ ॥
 आष्टादशष्ट्रे ऋद्धिकामाय कुर्यात् ॥ २० ॥ अष्टादशष्ट्रो
 वैरूपोऽपुत्रोऽप्रजा अजीर्यत्स इमाँल्लोकान्विचिच्छिदिवाँ अमन्यत
 स एते जरसि सामनी अपश्यत्तयोरप्रयोगादविभेत् सोऽब्रवीद्-
 ध्रुवद्योमे सामभ्यास्तवाता इति ॥ २१ ॥

ऋषेर्व्व एतत्प्राशोद्धूतं यदाष्टादशष्ट्रे भवत ऋध्या एव ॥ २२ ॥

दशमः खण्डः

गायत्रीषु ब्रह्मवर्चसकामायोक्त्यानि प्रणयेयुर्गायत्र्यां
ब्रह्मसामाऽनुष्टुभ्यच्छावाकसाम सैषा गायत्री सम्पद्यते ॥ १ ॥ तेजो
ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेज एव ब्रह्मवर्चसमवरुन्धे ॥ २ ॥ गायत्रीषु
पशुकामायोक्त्यानि प्रणयेयुरुष्णिहि ब्रह्मसामाऽनुष्टुभ्यच्छावाकसाम
सैषोष्णिकसम्पद्यते ॥ ३ ॥ पशवो वा उष्णिक् पशूनेवावरुन्धे ॥ ४ ॥
गायत्रीषु पुरुषकामायोक्त्यानि प्रणयेयुः ककुभि
ब्रह्मसामाऽनुष्टुभ्यच्छावाकसाम सैषा ककुप् सम्पद्यते ॥ ५ ॥ पुरुषो
वै ककुप् पुरुषानेवावरुन्धे ॥ ६ ॥ विराट्स्वन्नाद्यकामायोक्त्यानि
प्रणयेयुरुष्णिहि ब्रह्मसामाऽनुष्टुभ्यच्छावाकसाम सैषा विराट्
सम्पद्यते ॥ ७ ॥ अन्नं विराडन्नाद्यमेवाऽवरुन्धे ॥ ८ ॥ अक्षरपङ्क्तिषु
ज्यैष्ठ्यकामायोक्त्यानि प्रणयेयुरुष्णिहि ब्रह्मसामाऽनुष्टुभ्यच्छावाकसाम
सैषानुष्टुप् सम्पद्यते ॥ ९ ॥ ज्यैष्ठ्यं वा अनुष्टुब् ज्यैष्ठ्यमेवाऽ-
वरुन्धे ॥ १० ॥

॥ इति अष्टमोऽध्यायः ॥



नवमोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

देवा वा उक्थान्यभिजित्य रात्रिन्नाशक्नुवन्नभिजेतुन्तेऽ—
सुरात्रात्रिन्तमःप्रविष्टान्नानुव्यपश्यन्स्तएतमनुष्टुप्शिरसं प्रगाथमपश्यन्
विराजं ज्योतिस्तान् विराजा ज्योतिषाऽनुपश्यन्तोऽनुष्टुभावज्जेण
रात्रेर्निराघ्नन् ॥ १ ॥ यदेषोऽनुष्टुप्शिराः प्रगाथो भवति विराजैव
ज्योतिषाऽनुपश्यन्ननुष्टुभा वज्जेण रात्रेर्भ्रातृव्यं निर्हन्ति ॥ २ ॥ तान्
समन्तं पर्यायं प्राणुदन्त यत् पर्यायं प्राणुदन्त तत्पर्यायाणां
पर्यायत्वम् ॥ ३ ॥ प्रथमानि पदानि पुनरादीनि भवन्ति प्रथमस्य
पर्यायस्य ॥ ४ ॥ प्रथमैर्हि पदैः पुनरादाय प्रथमरात्रात्प्राणुदन्त ॥ ५ ॥
पान्तमावो अन्धस इति प्रस्तौति ॥ ६ ॥ अहर्वै पान्तमन्धोरात्रिरह्वैव
तद्रात्रिमारभन्ते ॥ ७ ॥ तासु वैतहव्यम् ॥ ८ ॥ वीतहव्यः श्रायसो
ज्योग्निरुद्ध एव तत्सामापश्यत्सोऽवगच्छत्प्रत्यतिष्ठदवगच्छति
प्रतितिष्ठत्येतेन तुष्टुवानः ॥ ९ ॥ तमइव वा एते प्रविशन्ति ये
रात्रिमुपयन्ति यदोको निधनश्चरात्रेर्मुखे भवति प्रज्ञात्यै ॥ १० ॥ यदा
वै पुरुषः स्वमोक आगच्छति सर्वं तर्हि प्रजानाति सर्वमस्मै दिवा
भवति ॥ ११ ॥ ते मध्यमं पर्यायमश्रयन्त तेषामौर्ध्वसङ्घनेन
वाचमवृञ्जत ॥ १२ ॥ वाचं भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते य एवं वेद ॥ १३ ॥
त्रिणिधनं भवति ॥ १४ ॥ यथा वा अह्नो माध्यन्दिनश्चवनं
त्रिणिधनायतनमेवमेष रात्रेर्मध्यमः पर्यायस्त्रिणिधनायतनः
सलोमत्वाय ॥ १५ ॥ मध्यमानि पदानि पुनरादीनि भवन्ति
मध्यमस्य पर्यायस्य मध्यमैर्हि पदैः पुनरादायममध्यम—
रात्रात्प्राणुरुदन्त ॥ १६ ॥

त उत्तमं पर्यायमश्रयन्त तेषां घृतश्चुन्निघनेन पशूनवृञ्जत
 पशवो वै घृतश्च्युतः ॥ १७ ॥ पशून् भ्रातृव्यस्य वृङ्क्ते य एवं
 वेद ॥ १८ ॥ उत्तमानि पदानि पुनरादीनि भवन्त्युत्तमस्य पर्याय—
 स्योत्तमैर्हि पदैः पुनरादायमुत्तमरात्रात्प्राणुदन्त ॥ १९ ॥ तान्
 सन्धिनाऽभिपलायन्त ॥ २० ॥ तानाश्विनेनाऽसश्हाय्यमगमयन् ॥ २१ ॥
 असश्हाय्यं भ्रातृव्यं गमयति य एवं वेद ॥ २२ ॥ एषा वा
 अग्निष्टोमस्य सम्मायद्रात्रिः ॥ २३ ॥ द्वादशस्तोत्राण्यग्निष्टोमो
 द्वादशस्तोत्राणि रात्रिः ॥ २४ ॥ एषा वा उक्थस्य सम्मा—
 यद्रात्रिः ॥ २५ ॥ त्रीण्युक्थानि त्रिदेवत्यः सन्धिः ॥ २६ ॥ यथा
 वा अह उक्थान्येवमेषरात्रेः सन्धिर्नानारूपाण्यह उक्थानि नानारूपा
 एते तृचा भवन्ति ॥ २७ ॥ रथन्तरं प्रतिष्ठाकामाय सन्धिं
 कुर्यात् ॥ २८ ॥ इयं वै रथन्तरमस्यामेव प्रतितिष्ठति ॥ २९ ॥
 बृहत् स्वर्गकामाय सन्धिं कुर्यात् ॥ ३० ॥ स्वर्गोलोको बृहत्स्वर्ग
 एव लोके प्रतितिष्ठति ॥ ३१ ॥ वारवन्तीयं वा वामदेव्यं वा
 श्रुद्धयं वै तेषामेकं पशुकामाय सन्धिं कुर्यात् ॥ ३२ ॥ पशवो
 वा एतानि सामानि पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥ ३३ ॥ आश्विनश्—
 होतानुशंसति ॥ ३४ ॥ प्रजापतिर्वा एतत्सहस्रमसृजत तद्देवेभ्यः
 प्रायच्छत्तस्मिन् समराधयस्ते सूर्यकाष्ठाङ्कृत्वाऽऽ—
 जिमधावन् ॥ ३५ ॥ तेषामश्विनौ प्रथमावधावतां तावन्ववदन् सह—
 नोऽस्त्विति तावब्रूतां किं ततः स्यादिति यत्कामयेथे इत्य—
 ब्रुवश्स्तावब्रूतामस्मद्देवत्यमिदमुक्थमुच्याता इति तस्मादाश्विन—
 मुच्यते ॥ ३६ ॥ सर्वाः खलु देवताः शस्यन्ते ॥ ३७ ॥
 क्षिप्रश्शस्यमाजिमिवह्येते धावन्त्यासूर्यस्योदेतोः शस्सेत्सूर्यश्हि
 काष्ठामकुर्वत ॥ ३८ ॥

द्वितीयः खण्डः

पान्तमा वो अन्धस इति वैतहव्यमन्यक्षेत्रं वा एते प्रयन्ति ये
रात्रिमुपयन्ति यदोकोनिधनः रात्रेर्मुखं भवत्योकसोऽप्रच्यावाय ॥ १ ॥
प्र व इन्द्राय मादनमिति गौरीवितम् ॥ २ ॥ ब्रह्म यदेवा व्यकुर्वत
ततो यदत्यरिच्यत तद्गौरीवितमभवत् ॥ ३ ॥ अतिरिक्तं
गौरीवितमतिरिक्तमेतत् स्तोत्रं यद्वात्रिरतिरिक्त एवातिरिक्तं
दधाति ॥ ४ ॥ वयमु त्वा तदिदर्या इति काण्वम् ॥ ५ ॥ एतेन वै
कण्व इन्द्रस्य साविद्यमगच्छदिन्द्रस्यैवैतेन साविद्यं गच्छति ॥ ६ ॥
इन्द्राय मद्घने सुतमिति श्रौतकक्षं क्षत्रसाम प्रक्षत्रमेवैतेन भवति ॥ ७ ॥
अयं त इन्द्र सोम इति दैवोदासम् ॥ ८ ॥ अग्निष्टोमेन वै देवा
इमं लोकमभ्यजयन्नन्तरिक्षमुक्थेनाऽतिरात्रेणामुं त इमं लोकं
पुनरभ्यकामयन्त त इहेत्यस्मिँल्लोके प्रत्यतिष्ठन् यदेतत्साम भवति
प्रतिष्ठित्यै ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वसन्ननमपि सर्व्वरीषु प्रोहन्ति ॥ १० ॥ असुरा
वा एषु लोकेष्वासःस्तान्देवा ऊर्ध्वसन्नेनैभ्यो लोकेभ्यः
प्राणुदन्त ॥ ११ ॥ तद्य एवं वेदैभ्यो लोकेभ्यो भ्रातृव्यं प्रणुद्य स्व
आयतने सत्रमास्ते ॥ १२ ॥ आ तू न इन्द्र क्षुमन्त—
मित्याकूपारम् ॥ १३ ॥ अकूपाराऽऽङ्गिरस्यासीत्तस्या यथा
गोधायास्त्वगेवं त्वगासीत्तामेतेन त्रिःसाम्नेन्द्रः पूत्वा सूर्य्यत्वच—
समकरोत्तद्वाव सा तर्ह्यकामयत यत्कामा एतेन साम्ना स्तुवते स
एभ्यः कामः समृध्यते ॥ १४ ॥ अभि त्वा वृषभा सुतं इत्यार्षभं
क्षत्रसाम क्षत्रमेवैतेन भवति ॥ १५ ॥ इदं वसो सुतमन्ध इति गारमेतेन
वै गर इन्द्रमप्रीणात्प्रीत एवाऽस्यैतेनेन्द्रो भवति ॥ १६ ॥
इदः ह्यन्वोजसेति माधुच्छन्दसं प्रजापतेर्वा एषा तनूरयातयाम्नी
प्रयुज्यते ॥ १७ ॥

आ त्वेता निषीदतेति दैवातिथम् ॥१८॥ देवातिथिः
सपुत्रोऽशनायश्चरन्नरण्य उर्वारूण्यविन्दतान्येतेन साम्नोपासीदत्ता
अस्मै गावः पृश्नयो भूत्वोदतिष्ठन् यदेतत्साम भवति पशूनां
पुष्ट्यै ॥१९॥ योगे योगे तवस्तरमिति सौमेधश्चात्रिषाम रात्रेरेव
समृद्ध्यै ॥२०॥ इन्द्र सुतेषु सोमेष्विति कौत्सम् ॥२१॥ कुत्सश्च
लुशश्चेन्द्रं व्यह्वयेताश्च इन्द्रः कुत्समुपावर्तत तश्शतेन
वादर्घीभिराण्डयोरबध्नात्तं लुशोऽभ्यवदत् प्रमुच्यस्व परि
कुत्सादिहागहि किमु त्वावानाण्डयोर्बद्ध आसाता इति ताः संच्छिद्य
प्राद्रवत्स एतत् कुत्सः सामाऽपश्यत्तेनैनमन्ववदत्स उपावर्तत ॥२२॥
यदेतत्साम भवति सेन्द्रत्वाय ॥२३॥

तृतीयः खण्डः

यदि सत्राय दीक्षेरन्नथ साम्युत्तिष्ठेत्सोममपभज्य
विश्वजिताऽतिरात्रेण यजेत सर्ववेदसेन सर्वस्मा एव दीक्षते
सर्वमाप्नोति ॥१॥ या इदक्षिणा ददाति ताभिरिति प्रयुङ्क्ते ॥२॥
यदि पर्यायैरस्तुतमभिव्युच्छेत्पञ्चदशभिर्होत्रे स्तुयुः पञ्चभिः
पञ्चभिरितरेभ्यः ॥३॥ अग्ने विवस्वदुषस इति सन्धिना स्तुयुः
प्राणा वै त्रिवृत् स्तोमानां प्रतिष्ठा रथन्तरश्साम्नां
प्राणाश्चैवोपयन्ति ॥४॥ षष्ठिञ्च त्रीणि च शतानि होता
शश्सति ॥५॥ तावत्यः संवत्सरस्य रात्रयः संवत्सरसम्मिताभिरेव
तद्गभिराश्विनमाप्नोति ॥६॥ यदर्वाक् स्तुवन्ति तदस्तुतं यत्सम्प्रति
स्तुवन्ति तत् स्तुतं यदतिष्ठुवन्ति तत्सुष्टुतम् ॥७॥ यद्यर्वाक्
स्तुयुर्यावतीभिर्न स्तुयुस्तावतीभिर्वाऽतिष्ठुयुर्भूयोऽक्षराभिर्वा ॥८॥
यद्यतिष्ठुयुर्यावतीभिरतिष्ठुयुस्तावतीभिर्वा न स्तुयुः
कनीयोऽक्षराभिर्वा ॥९॥

यद्यर्वाक् स्तुयुस्त्रीडमग्निष्टोमसाम कार्यं निधनमेकेडा ये द्वे
ताभ्यामेव तत्समं क्रियते ॥१०॥ यद्यतिष्ठुयुः स्वारमग्निष्टोमसाम
कार्यमूनमिव वा एतत्साम्नोयत् स्वरस्तेनैव तत्समं क्रियते ॥११॥

चतुर्थः खण्डः

यदि सोमौ सःसतौ स्यातां महति रात्रेः
प्रातरनुवाकमुपाकुर्यात् ॥१॥ पूर्वोवाचं पूर्वश्छन्दाश्सि पूर्वोदेवता
वृङ्क्ते ॥२॥ वृषण्वतीं प्रतिपदं कुर्यादिन्द्रो वै वृषा प्रातः
सवनादेवैषामिन्द्रं वृङ्क्ते ॥३॥ अथो खल्वाहुः सवनमुखे सवनमुखे
कार्या सवनमुखात् सवनमुखादेवैषामिन्द्रं वृङ्क्ते ॥४॥ सुसमिद्धे
होतव्यमग्निर्वै सर्वा देवताः सर्वाएव देवताः पश्यञ्जुहोति ॥५॥
संवेशायोपवेशाय गायत्र्यै छन्दसेऽभिभूतये स्वाहा संवेशायोपवेशाय
त्रिष्टुभे छन्दसेऽभिभूतये स्वाहा संवेशायोपवेशाय जगत्यै
छन्दसेऽभिभूतये स्वाहेति जुहोति ॥६॥ छन्दाश्सि वा अभिभूतय—
स्तैरेवैनानभिभवत्युभे बृहद्रथन्तरे ॥७॥ यत्र वा इन्द्रस्य हरी
तदिन्द्र इन्द्रस्य वै हरी बृहद्रथन्तरे यदुभे बृहद्रथन्तरे भवतः पूर्व—
एवेन्द्रस्य हरी आरभन्ते ॥८॥ तौरश्रवसे कार्ये ॥९॥ तुरश्रवसश्च
वै पारावतानाञ्च सोमौ सःसुतावास्तां तत एते तुरश्रवाः सामनी
अपश्यत्ताभ्यामस्मा इन्द्रः शल्ललिनां यमुनाया हव्यं निरावह—
द्यत्तौरश्रवसे भवतोहव्यमेवैषां वृङ्क्ते ॥१०॥ पूर्वोऽभिषुणुयुः ॥११॥
या वै पूर्वाः प्रस्नान्ति ताः पूर्वास्तीर्थं जयन्ति पूर्व
एवेन्द्रमारभन्ते ॥१२॥ विहव्यं शस्यम् ॥१३॥ जमदग्नेश्च वा
ऋषीणाञ्च सोमौ सःसुतावास्तां तत एतज्जमदग्निर्विहव्यमपश्यत्तमिन्द्र
उपावर्तत यद्विहव्यं होता शःसतीन्द्रमेवैषां वृङ्क्ते ॥१४॥

यदीतरोऽग्निष्टोमः स्यादुक्थः कार्य्योयद्युक्थोऽतिरात्रो यो वै
भूयान्यज्ञक्रतुः स इन्द्रस्य प्रियोभूयसैवैषां यज्ञक्रतुनेन्द्रं
वृङ्क्ते ॥१५॥ अथो खल्वाहुर्दुष्प्राप इव वै परः पन्था यमेवाऽग्रे
यज्ञक्रतुमारभेत तस्मान्नेयादिति ॥१६॥ सजनीयश्शस्यमगस्त्यस्य
कयाशुभीयश्शस्यम् ॥१७॥ अस्या अमुष्याः अद्यश्चान्मिथुना—
दहोरात्राभ्यामेवैनान्निर्भजति ॥१८॥

पञ्चमः खण्डः

यदि सोममक्रीतमपहरेयुरन्यः क्रेतव्यः ॥१॥ यदि क्रीतं
योऽन्योऽभ्याशं स्यात् स आहत्यः सोमविक्रयिणे तु
किञ्चिद्दद्यात् ॥२॥ यदि सोमं न विन्देयुः पूतीकानभिषुणुयुर्यदि
न पूतीकानर्जुनानि ॥३॥ गायत्री सोममाहरत्तस्या अनु विसृज्य
सोमरक्षिः पर्णमच्छिनत्तस्य योऽशुः परापतत्स पूतीकोऽभवत्तस्मिन्
देवा ऊतिमवीन्दन्पूतीको वा एष यत्पूतीकानभिषुण्वन्त्यतिमेवास्मै
विन्दन्ति ॥४॥ प्रतिधुक् च प्रातःपूतीकाश्च शृतञ्च मध्यन्दिने पूतीकाश्च
दधि चाऽपराह्णे पूतीकाश्च ॥५॥ सोमपीथो वा एतस्मादप—
क्रामतीत्याहुर्यस्य सोममपहरन्तीति स ओषधीश्च पशूँश्च प्रविशति
तमोषधिभ्यश्च पशुभ्यश्चाऽवरुन्धे ॥६॥ इन्द्रो वृत्रमहश्स्तस्य योनस्तः
सोमः समधावत्तानि बभ्रुतूलान्यर्जुनानि योवपाया उत्खिन्नायास्तानि
लोहिततूलानि यानि बभ्रुतूलान्यर्जुनानि तान्यभिषुणुयादेतद्वै ब्रह्मणो
रूपं साक्षादेव सोममभिषुणोति ॥७॥ श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम कार्य्यं
सदेवैनं करोति ॥८॥ यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि प्रोहेद्वाचैवैनं समर्द्धयति
वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम कार्य्यमिन्द्रियस्य वीर्य्यस्य परिगृहीत्यै ॥९॥
पञ्च दक्षिणादेयाः ॥१०॥ पाङ्क्तो यज्ञोयावान्यज्ञस्त—
मेवाऽऽरभते ॥११॥ अवभृथादुदेत्य पुनर्दीक्षेत ॥१२॥ तत्र
तद्दद्याद्यद्वास्यं स्यात् ॥१३॥

षष्ठः खण्डः

यदि कलशो दीर्येत वषट्कारणिधनं ब्रह्मसाम कुर्यात् ॥ १ ॥
 अवषट्कृतो वा एतस्य सोमः परा सिच्यते यस्य कलशो दीर्यते
 यद्वषट्कारणिधनं ब्रह्मसाम भवति वषट्कृत एवाऽस्य सोमो
 भवति ॥ २ ॥ विधुं दद्राणश्समने बहूनामित्येतासु कार्यम् ॥ ३ ॥
 एष हि बहूनाश्समने दीर्यते यत्कलशः ॥ ४ ॥ तदाहुर्न वा
 आर्त्याऽऽर्त्तिरनुद्याऽऽर्त्या वा एष आर्त्तिमनुवदति यः कलशो दीर्णे
 दद्राणवतीषु करोतीति ॥ ५ ॥ श्रायन्तीयमेव कार्यम् ॥ ६ ॥ प्रजापतिः
 प्रजा असृजत स दुग्धोरिरिचानोऽमन्यत स एतच्छ्रायन्तीयम—
 पश्यत्तेनात्मानं समश्रीणात्प्रजया पशुभिरिन्द्रियेण ॥ ७ ॥ दुग्ध इव
 वा एष रिरिचानो यस्य कलशो दीर्यते यच्छ्रायन्तीयं ब्रह्मसाम
 भवति पुनरेवाऽऽत्मानश्सश्रीणाति प्रजया पशुभिरिन्द्रियेण ॥ ८ ॥
 यदि श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम स्याद्वैष्णवीष्वनुष्टुप्सुवषट्कारणिधनं
 कुर्यात् ॥ ९ ॥ यद्वै यज्ञस्य स्रवति वाचं प्रतिस्रवति वागनुष्टुप्
 यज्ञो विष्णुर्वाचैव यज्ञस्य छिद्रमपि दधाति ॥ १० ॥ यद्वै यज्ञस्य
 स्रवत्यन्ततः स्रवति वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम कार्यं यज्ञस्यैव छिद्रं
 वारयते ॥ ११ ॥

सप्तमः खण्डः

यदि प्रातःसवनात्सोमोऽतिरिच्येतास्ति सोमो अयं सुत इति
 मरुत्वतीषु गायत्रेण स्तुयुः ॥ १ ॥ माध्यन्दिनं वा एष सवनं
 निकामयमानोऽभ्यतिरिच्यते यः प्रातःसवनादतिरिच्यते तस्मान्मरुत्वतीषु
 स्तुवन्ति मरुत्वद्धि माध्यन्दिनश्सवनं तस्मादु गायत्रीषु गायत्रं हि
 प्रातःसवनम् ॥ २ ॥

यस्मात् स्तोमादतिरिच्येत स एव स्तोमः कार्यः
 सलोमत्वाय ॥ ३ ॥ ऐन्द्रावैष्णवं होताऽनुशंसति ॥ ४ ॥ वीर्यं वा
 इन्द्रो यज्ञो विष्णुर्वीर्यं एव यज्ञे प्रतितिष्ठति ॥ ५ ॥ यदि
 माध्यन्दिनात्सवनादतिरिच्येत बण्महाँ असि सूर्येत्यादित्यवतीषु
 गौरीवितेन स्तुयुः ॥ ६ ॥ तृतीयसवनं वा एष निकामयमानोऽभ्यति—
 रिच्यते यो माध्यन्दिनात्सवनादतिरिच्यते तस्मादादित्यवतीषु
 स्तुवन्त्यादित्यं हि तृतीयसवनं तस्मादु बृहतीषु बार्हतं हि
 माध्यन्दिनं सवनम् ॥ ७ ॥ यस्मात् स्तोमादतिरिच्येत स एव स्तोमः
 कार्यः सलोमत्वायैन्द्रावैष्णवं होताऽनुशंसति वीर्यं वा इन्द्रो यज्ञो
 विष्णुर्वीर्यं एव यज्ञे प्रतितिष्ठति ॥ ८ ॥ यदि तृतीय सवनादतिरिच्येत
 विष्णोः शिपिविष्टवतीषु गौरीवितेन स्तुयुः ॥ ९ ॥ यज्ञो वै विष्णुः
 शिपिविष्टो यज्ञएव विष्णौ प्रतितिष्ठत्यतिरिक्तं गौरीवितं अतिरिक्तं
 एवाऽतिरिक्तं दधाति ॥ १० ॥ एतदन्यत् कुर्युरुक्थान्यत्प्रणयेयुरुक्थानि
 वा एष निकामयमानोऽभ्यतीरिच्यते योऽग्निष्टोमादतिरिच्यते
 यद्युक्थ्येभ्योऽतिरिच्येताऽतिरात्रः कार्यो रात्रिं वा एष
 निकामयमानोऽभ्यतिरिच्यते य उक्थ्येभ्योऽतिरिच्यते यदि
 रात्रेरतिरिच्येत विष्णोः शिपिविष्टवतीषु बृहता स्तुयुरेष तु वा
 अतिरिच्यत इत्याहुयो रात्रेरतिरिच्यत इति ॥ ११ ॥ अमुं वा एष
 लोकं निकामयमानोऽभ्यतिरिच्यते यो रात्रेरतिरिच्यते बृहता स्तुवन्ति
 बृहदमुं लोकमाप्नुमर्हीति तमेवाऽऽप्नोति ॥ १२ ॥

अष्टमः खण्डः

यदि दीक्षितानां प्रमीयेत दग्ध्वाऽस्थीन्युपनह्य यो नेदिष्ठी
 स्यात्तं दीक्षयित्वा सह यजेरन् ॥ १ ॥ एतदन्यत् कुर्युरभिषुत्याऽ—
 न्यत्सोममगृहीत्वा ग्रहान्यासौ दक्षिणा सक्तिस्तद्वा स्तुयुर्माजालीये
 वा ॥ २ ॥

अपि वा एतस्य यज्ञे यो दीक्षितः प्रमीयते तमेतेन
 निरवदयन्ते ॥ ३ ॥ यामेन स्तुवन्ति यमलोकमेवैनं गमयन्ति ॥ ४ ॥
 तिसृभिः स्तुवन्ति तृतीये हि लोके पितरः ॥ ५ ॥ पराचीभिः
 स्तुवन्ति पराङ्हीतोऽसौ लोकः ॥ ६ ॥ सर्पराज्ञ्या ऋग्भिः
 स्तुवन्ति ॥ ७ ॥ अर्बुदः सर्प एताभिर्मृतां त्वचमपाहतमृतामेवैताभि-
 स्त्वचमपघ्नते ॥ ८ ॥ ता ऋचोऽनुब्रुवन्तस्त्रिर्माजालीयं परियन्ति
 सव्यानरूनाघ्नाः ॥ ९ ॥ स्तुतमनुशंसत्यमुष्मिन्नेवैनं लोके
 निध्नुवन्ति ॥ १० ॥ यन्ति वा एते पथ इत्याहुर्ये मृताय
 कुर्वन्तीत्यैन्द्रवायवाग्रान् ग्रहान् ग्रहणते पुनः पन्थानमपियन्ति ॥ ११ ॥
 अग्न आयूषि पवसइति प्रतिपत्कार्या य एव जीवन्ति तेष्वायु-
 र्दधाति ॥ १२ ॥ संवत्सरेऽस्थीनि याजयेयुः संवत्सरो वै सर्वस्य
 शान्तिर्यत्पुरा संवत्सराद्याजयेयुर्वाचमरुष्कृतां क्रूरामृच्छेयुः ॥ १३ ॥
 असमितं स्तोत्रं स्यादसमितो ह्यसौ लोकस्त्रिवृतः पवमानाः स्युः
 सप्तदशमितरत्सर्वम् ॥ १४ ॥ यत्त्रिवृतः पवमाना भवन्ति प्राणा वै
 त्रिवृत्प्राणानेवोपयन्ति यत्सप्तदशमितरत् सर्वं प्रजापतिर्वै सप्तदशः
 प्रजापतिमेवोपयन्ति ॥ १५ ॥ प्राणापानैर्वा एते व्यृध्यन्त इत्याहुर्ये
 मृताय कुर्वन्तीति मैत्रावरुणाग्रान् ग्रहान् गृह्णते प्राणापानौ मित्रावरुणौ
 प्राणापानैरेव समृध्यन्ते ॥ १६ ॥

नवमः खण्डः

यस्य कलश उपदस्यति कलशमेवाऽस्योपदस्यन्तं
 प्राणोऽनूपदस्यति प्राणो हि सोमः ॥ १ ॥ तदाहुः पयोऽव-
 नयेदिति ॥ २ ॥ अथो खल्वाहुरन्तर्हितमिव वा एतद्यत्पयो
 हिरण्यमेवाऽपोऽभ्यवनयेद्धिरण्यमभ्युन्नयेदिति ॥ ३ ॥ प्राणा वा
 आपोऽमृतं हिरण्यममृत एवाऽस्य प्राणान् दधाति स
 सर्वमायुरेति ॥ ४ ॥

यस्य नाराशंस उपवायति नाराशंसमेवास्योपवीयन्तं प्राणोऽनु-
पदस्यति प्राणो हि सोमः ॥ ५ ॥ यमध्वर्युरन्ततो गृहं
गृहणीयात्तस्याऽऽप्तुमवनयेत् ॥ ६ ॥ प्रायश्चित्त्यै वै ग्रहो गृह्यते
प्रायश्चित्येवाऽस्मै प्रायश्चित्तिं करोति ॥ ७ ॥

यदि पीतापीतौ सोमौ सङ्गच्छेयातामन्तःपरिध्यङ्गारान्निर्वर्त्य
जुहुयाद्भुतस्य चाऽहुतस्य चाऽहुतस्य हुतस्य च पीतापीतस्य
सोमस्येन्द्राग्नी पिबतं सुतं स्वाहेति सैव तस्य प्रायश्चित्तिः ॥ ८ ॥
प्रजापतये स्वाहेत्यभक्षणीयस्य जुहुयादुत्तरार्द्धपूर्वार्द्धं उपरवः ॥ ९ ॥
इन्दुरिन्द्रमवागादित्यववृष्टस्य भक्षयेत् ॥ १० ॥ तस्य त इन्द्र-
विन्द्रपीतस्येन्द्रियावतः सर्वगणस्य सर्वगण उपहूत उपहूतस्य
भक्षयामि ॥ ११ ॥ 'हिरण्यगर्भः समवर्तताग्र' इत्याज्येनाऽभ्युपाकृतस्य
जुहुयादाग्नीध्रं परेत्य 'भूतानां जातः पतिरेक आसीत् स दाधार
पृथिवीं द्यामुतेमां तस्मै' त 'इन्दो हविषा विधेम स्वाहे'ति सैव
तस्य प्रायश्चित्तिः ॥ १२ ॥ यदि ग्रावाऽपि शीर्यते पशुभिर्यजमानो
व्यूध्यते पशवो वै ग्रावाणो द्युतानस्य मारुतस्य साम्ना स्तुयुः ॥ १३ ॥
मारुता वै ग्रावाणः स्वेनैवैनाऽस्तद्रूपेण समर्द्धयति ॥ १४ ॥ यदि
सोममभिदहेद्ग्रहानध्वर्युः स्पाशयेत स्तोत्राण्युद्गाता शस्त्राणि होताऽथ
यथापूर्वं यज्ञेन चरेयुः पञ्च दक्षिणा देयाः पाङ्क्तो यज्ञो-
यावान्यज्ञस्तमेवारभतेऽवभृथादुदेत्य पुनर्दीक्षेत तत्र तद्दद्याद्यद्दास्यं
स्यात् पुरा द्वादश्या दीक्षेत यद्द्वादशीमतिनयेदन्तर्द्ध्येत ॥ १५ ॥

दशमः खण्डः

यदि महावीरो भिद्येत तं भिन्नमभिमृशेत् 'य ऋते चिदभिष्रिषः
पुरा जत्रुभ्य आतृदः। सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता
विहृतं पुनः। मा भेम निष्ठ्या इवेन्द्र त्वदरणा इव वनानि न

प्रजहितान्यद्रिवो दुरोषासो अमन्मह्यमन्महीदनाशवोनु ग्राभश्च वृत्रहन्
 सकृत्सु ते महता शूर राघसानुस्तोमं मदेमहीति महावीरं
 भिन्नमभिमृशेत् सैव तस्य प्रायश्चित्तिः ॥ १ ॥ असुर्य्य वा एतस्माद्वर्णं
 कृत्वा तेज इन्द्रियं वीर्य्यमन्नाद्यं प्रजाः पशवोऽपक्रामन्ति यस्य
 यूपो विरोहति स ईश्वरः पापीयान् भवितोः ॥ २ ॥ त्वाष्ट्रं पशुं
 बहुरूपमालभेत त्वष्टा वै पशूनां रूपाणां विकर्त्ता तमेव तदुप-
 धावति स एनं तेजसेन्द्रियेण वीर्य्येणाऽन्नाद्येन प्रजया पशुभिः
 पुनः समर्द्धयति सैव तस्य प्रायश्चित्तिः ॥ ३ ॥

॥ इति नवमोऽध्यायः ॥



दशमोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

अग्निना पृथिव्यौषधिभिस्तेनाऽयं लोकस्त्रिवृद्वायुनाऽन्तरिक्षेण
वयोभिस्तेनैष लोकस्त्रिवृद्धोऽयमन्तरादित्येन दिवा नक्षत्रैस्तेनाऽसौ
लोकस्त्रिवृदेतदेव त्रिवृत आयतनमेषाऽस्य बन्धुता ॥ १ ॥ आयतनवान्
बन्धुवान् भवति य एवं वेद ॥ २ ॥ तमु प्रतिष्ठेत्याहुस्त्रिवृद्धयेवैषु
लोकेषु प्रतिष्ठितः ॥ ३ ॥ अर्द्धमास एव पञ्चदशस्याऽयतनमेषाऽस्य
बन्धुता ॥ ४ ॥ आयतनवान् बन्धुमान् भवति य एवं वेद ॥ ५ ॥
तं वोजोबलमित्याहुर्द्धमासशो हि प्रजाः पशव ओजोबलं
पुष्यन्ति ॥ ६ ॥ संवत्सर एव सप्तदशस्याऽयतनं द्वादशमासाः
पञ्चर्तव एतदेव सप्तदशस्याऽयतनमेषाऽस्य बन्धुता ॥ ७ ॥
आयतनवान् बन्धुवान् भवति य एवं वेद ॥ ८ ॥ तमु प्रजापतिरित्याहुः
संवत्सरं हि प्रजाः पशवोऽनु प्रजायन्ते ॥ ९ ॥ आदित्य
एवैकविंशस्याऽयतनं द्वादशमासाः पञ्चर्तवस्त्रय इमे लोका
असावादित्य एकविंश एतदेवैकविंशस्याऽयतनमेषाऽस्य
बन्धुता ॥ १० ॥ आयतनवान् बन्धुवान् भवति य एवं वेद ॥ ११ ॥
तमु देवतल्प इत्याहुः प्रदेवतल्पमाप्नोति य एवं वेद ॥ १२ ॥
त्रिवृदेव त्रिणवस्याऽयतनमेषाऽस्य बन्धुता ॥ १३ ॥ आयतनवान्
बन्धुमान् भवति य एवं वेद ॥ १४ ॥ तमु पुष्टिरित्याहुस्त्रिवृद्धयेवैष
पुष्टः ॥ १५ ॥ देवता एव त्रयस्त्रिंशस्याऽयतनं त्रयस्त्रिंशद्देवताः
प्रजापतिश्चतुस्त्रिंश एतदेव त्रयस्त्रिंशस्याऽयतनमेषाऽस्य
बन्धुता ॥ १६ ॥ आयतनवान् बन्धुमान् भवति य एवं वेद ॥ १७ ॥
तमु नाक इत्याहुर्न हि प्रजापितः कस्मै च नाऽकम् ॥ १८ ॥
छन्दांस्येव छन्दोमानामायतनमेषैषां बन्धुता ॥ १९ ॥

आयतनवान् बन्धुमान् भवति य एवं वेद ॥ २० ॥ तानु
पुष्टिरित्याहुः पशवो हि छन्दोमाः ॥ २१ ॥

द्वितीयः खण्डः

प्रजापतिः प्रजा असृजत सोऽताम्यत्तस्मै वाग्ज्योतिरुद—
गृह्णात्सोऽब्रवीत्कोमेऽयं ज्योतिरुदग्रहीदिति स्वैव ते वागित्य—
ब्रवीत्तामब्रवीद्विराजं त्वाच्छन्दसां ज्योतिष्कृत्वा यजान्ता इति ॥ १ ॥
तस्माद्यो विराजश्स्तोमः सम्पद्यते तं ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोम इत्याचक्षते
विराड्छन्दसां ज्योतिः ॥ २ ॥ ज्योतिः समानानां भवति य एवं
वेद ॥ ३ ॥ अनुष्टुप् च वै सप्तदशश्च समभवतां सानुष्टुप् चतुस्तुराणि
छन्दाँस्यसृजत षडुत्तरान् स्तोमान् सप्तदशस्तावेतान्मध्यतः
प्राजनयताम् ॥ ४ ॥ त्रिवृच्च त्रिणवश्च राथन्तरौ तावजश्चाऽश्वश्चान्व—
सृज्येतां तस्मात्तौ राथन्तरं प्राचीनं प्रधूनुतः ॥ ५ ॥ पञ्चदशश्चैक—
विंशश्च बार्हतौ तौ गौश्चाऽविश्चान्वसृज्येतां तस्मात्तौ बार्हतं प्राचीनं
भास्कुरुतः ॥ ६ ॥ एवं वै विद्वाँसमाहुरपि ग्राम्याणां पशूनां वाच
आजानाति ॥ ७ ॥

तृतीयः खण्डः

प्रजापतिरकामयत बहु स्यां प्रजायेयेति स आत्मनृत्वमपश्यत्तत
ऋत्विजोऽसृजत यदृत्वादसृजत तदृत्विजामृत्विक्त्वं तैरेतं द्वादशाह—
मुपासीदत्सोऽराध्नोत् ॥ १ ॥ पिता नोऽरात्सीदिति मासा उपासीदश्स्ते
दीक्षयैवाऽराध्नुवन्नुपसत्सु त्रयोदशमदीक्षयश्सोऽनुव्यमभवत्तस्मादुपसत्सु
दिदीक्षाणोऽनुव्यं भवत्येव च हि त्रयोदशं मासञ्चक्षते नैव च ॥ २ ॥
एकोदीक्षेतैको हि प्रजापतिरराध्नोद्द्वादश दीक्षेरन् द्वादश हि मासा
अराध्नुवश्चतुर्विंशतिर्दीक्षेरश्चतुर्विंशतिर्हर्द्धमासा अराध्नुवन् ॥ ३ ॥

यदि पञ्चविंशोदीक्षेतेमे पञ्चमे पञ्चमे पञ्चमे पञ्चमे चत्वारोऽ—
 सावेक इति निर्दिशेयुर्यस्मा अराद्धिकामाः स्युस्तमेवाऽराद्धिरन्वेति
 सर्व इतरे राध्वन्ति ॥ ४ ॥ यो वै देवानां गृहपतिं वेदाऽश्नुते
 गार्हपतं प्रगार्हपत माप्नोति ॥ ५ ॥ संवत्सरो वै देवानां गृहपतिः
 स एव प्रजापतिस्तस्य मासाएव सह दीक्षिणः ॥ ६ ॥ विन्दते सह
 दीक्षिणोऽश्नुते गार्हपतं प्रगार्हपतमाप्नोति य एवं वेद ॥ ७ ॥ यो
 वै छन्दसां स्वराजं वेदाऽश्नुते स्वाराज्यं प्रस्वाराज्यमाप्नोति बृहती
 वाव छन्दसां स्वराडश्नुते स्वाराज्यं प्रस्वाराज्यमाप्नोति य एवं
 वेद ॥ ८ ॥ तां वा एतामन्नाद्याय व्यावृज्याऽऽसते यदेतं द्वादशाहं
 द्वादश दीक्षा द्वादशोपसदो द्वादश प्रसुतः षट्त्रिंशदेता रात्रयो
 भवन्ति षट्त्रिंशदक्षराबृहती ॥ ९ ॥ जायते वाव दीक्षया पुनीत
 उपसद्भिर्देवलोकमेव सुत्ययाऽप्येति ॥ १० ॥ एतावद्वाव संवत्सरइन्द्रियं
 वीर्यं यदेतारात्रयो द्वादश पौर्णमास्यो द्वादशौकाष्टका द्वादशाऽमावास्या
 यावदेव संवत्सर इन्द्रियं वीर्यं तदेतेनाऽऽप्त्वावरुन्धे द्वादशाहेन ॥ ११ ॥
 त्रिंशदक्षरा वा एषा विराट् षडृतव ऋतुष्वेव विराजा प्रतितिष्ठ—
 त्यृतुभिर्विराजि ॥ १२ ॥ द्वात्रिंशदक्षरा वा एषाऽनुष्टुब्बागनुष्टुप्
 चतुष्पादाः पशवो वाचापशून्दाधार तस्माद्वाचा सिद्धा वाचाहूता
 आयन्ति तस्मादु नाम जानते ॥ १३ ॥

चतुर्थः खण्डः

भूतं पूर्वोऽतिरात्रो भविष्यदुत्तरः पृथिवी पूर्वोऽतिरात्रो
 द्यौरुत्तरोऽग्निः पूर्वोऽतिरात्र आदित्य उत्तरः प्राणः पूर्वोऽतिरात्र
 उदानउत्तरः ॥ १ ॥ चक्षुषी अतिरात्रौ कनीनिके अग्निष्टोमौ यस्मादन्तरा
 अग्निष्टोमावतिरात्राभ्यां तस्मादन्तरे सत्यौ कनीनिके भुङ्क्तः ॥ २ ॥
 संवत्सरस्य वा एतौ दँष्ट्रौ यदतिरात्रौ तयोर्न स्वप्तव्यं संवत्सरस्य
 दँष्ट्रयोरात्मानं नेदपि दधानीति ॥ ३ ॥

तदाहुः कोऽस्वप्तुमर्हति यद्वाव प्राणो जागार तदेव जागरितमिति ॥ ४ ॥ गायत्रीं वा एतां ज्योतिष्पक्षामासते यदेतं द्वादशाहमष्टौ मध्य उक्था अग्निष्टोमावभितो मासा स्वर्गल्लोक—
मेत्याऽऽजरसं ब्रह्माद्यमन्नमत्ति दीप्यमानः ॥ ५ ॥ त्रिषुरस्ताद्रथन्तर—
मुपयन्ति त्र्यावृद्धै वाक् सर्वमेव वाचमवरुध्य सर्वमन्नाद्यं द्वादशाहं
तन्वते ॥ ६ ॥ जामि वा एतद्यज्ञे क्रियत इत्वाहुर्यत्
त्रिषुरस्ताद्रथन्तरमुपयन्तीति सौभरमुक्थानां ब्रह्मसाम भवति तेनैव
तदजामि ॥ ७ ॥ प्रत्नवत्यः प्रायणीयस्याऽहः प्रतिपदो भवन्ति तेनो
एव तदजामि ॥ ८ ॥ त्रिवेवोपरिष्टाद्रथन्तरमुपयन्ति त्र्यावृद्धै वाक्
सर्वमेव वाचमवरुध्य सर्वमन्नाद्यं द्वादशाहादुत्तिष्ठन्ति ॥ ९ ॥

पञ्चमः खण्डः

त्रयो वा एते त्रिरात्रा यदेष द्वादशाहो गायत्रमुखः प्रथमो
गायत्रमध्ये द्वितीयो गायत्रोत्तमस्तृतीयः ॥ १ ॥ यस्माद्गायत्रमुखः
प्रथमस्तस्मादूर्ध्वोऽग्निर्दीदाय यस्माद्गायत्रमध्ये द्वितीयस्तस्मात्तिर्य्यङ्
वायुः पवते यस्माद्गायत्रोत्तमस्तृतीयस्तस्मादर्वाङादित्यस्तपति ॥ २ ॥
तेजसा वै गायत्री प्रथमं त्रिरात्रं दाधार पदैर्द्वितीयम—
क्षरैस्तृतीयम् ॥ ३ ॥ त्रिवृद्धै गायत्र्यास्तेजस्त्रिवृत्प्रायणीयमहस्तेन
प्रथमस्त्रिरात्रो धृतिस्त्रिपदा गायत्री त्रिरात्रो मध्ये तेन द्वितीयस्त्रि—
रात्रो धृतश्चतुर्विंशदत्यक्षरा गायत्री चतुर्विंशऽऽत्तममहस्तेन
तृतीयस्त्रिरात्रो धृतः ॥ ४ ॥ तेजसा वा एते प्रयन्ति तेजो मध्ये
दधति तेजोऽभ्युद्यन्ति ज्योतिषा वा एते प्रयन्ति ज्योतिर्मध्ये
दधति ज्योतिरभ्युद्यन्ति चक्षुषा वा एते प्रयन्ति चक्षुर्मध्ये दधति
चक्षुरभ्युद्यन्ति प्राणेन वा एते प्रयन्ति प्राणं मध्ये दधति प्राणमभ्युद्यन्ति
ये गायत्र्या प्रयन्ति गायत्रीं मध्ये दधति गायत्रीमभ्युद्यन्ति ॥ ५ ॥

तन्नं वा एतद्विनायते यदेष द्वादशाहस्तस्यैते मयूखा यद्गायत्र्य
संव्याथाय ॥ ६ ॥ गिरिक्षिदौच्चामन्यवेति होवाचाऽभिप्रतारी काक्षसेनिः
कथं द्वादशाह इति यथाऽरान्नेभिः पर्येत्येवमेनं गायत्री
पर्येत्यविस्रसाय यथाऽरा नाभौ धृता एवमस्यां द्वादशाहो
धृतः ॥ ७ ॥ अनुष्टुभं वा एतामन्नाद्याय व्यावृज्याऽऽसते यदेतं
द्वादशाहम् ॥ ८ ॥ अष्टाभिर्वा अक्षरैरनुष्टुप् प्रथमं द्वादशाहस्याह—
रुधच्छत्येकादशभिर्द्वितीयं द्वादशभिस्तृतीयम् ॥ ९ ॥ अक्षरं
त्र्यक्षरमुच्छिष्यते तदेवोत्तरं त्रिरात्रमनु विदधाति ॥ १० ॥
छन्दाँस्येवाऽस्यास्तृतीयं त्रिरात्रं वहन्ति ॥ ११ ॥ तां वा एतां प्रतीचीं
तिरश्चीं पराचीमासतेऽन्नाद्याय तस्मात्प्रत्यञ्चं तिर्य्यञ्चं पराञ्चं प्रजाः
पशुमुपजीवन्ति ॥ १२ ॥ छन्दाँसि वा अन्योन्यस्य लोकमभ्यधायन्
गायत्री त्रिष्टुभस्त्रिब्जगत्या जगती गायत्र्यास्तानि व्यौहन्यथा लोकं
ततो वै तानि यं यं काममकामयन्त तमसन्वन् ॥ १३ ॥ यत् कामो
व्यूहच्छन्दसा द्वादशाहेन यजते सोऽस्मै कामः समृध्यते ॥ १४ ॥
ओको वै देवानां द्वादशाहो यथा वै मनुष्या इमं लोकमाविष्टा
एवं देवता द्वादशाहमाविष्टा देवताह वा एतेन यजते य एवं
विद्वान् द्वादशाहेन यजते ॥ १५ ॥ गृहा वै देवानां द्वादशाहो
नाऽगृहताया भय्यम् ॥ १६ ॥ यो वै द्वादशाहमग्निष्टोमेन कल्पमानं
वेद कल्पतेऽस्मै प्रातःसवनेनैव प्रथमस्त्रिरात्रः कल्पते माध्यन्दिनेन
सवनेन द्वितीयस्तृतीयसवनेन तृतीयोऽग्निष्टोम साम्नैव दशममहः
कल्पते ॥ १७ ॥ कल्पतेऽस्मै य एवं वेद ॥ १८ ॥

षष्ठः खण्डः

एति प्रेत्याशुमद्वीतिमद्रुक्मत्तेजस्वद्युञ्जानं प्रथमस्याऽह्नोरूपं त्रिवृतः
स्तोमस्य गायत्रस्य छन्दसो रथन्तरस्य साम्नः ॥ १ ॥

वृषवद्वत्रहवद्रयिमद्विष्ववदुपस्थितं द्वितीयस्याऽह्नोरूपं पञ्चदशस्य
 स्तोमस्य त्रैष्टुभस्य छन्दसो बृहतः साम्नः ॥ २ ॥ उद्वत्त्रि-
 वद्विग्वद्गोमदृषभवत् तृतीयस्याऽह्नो रूपसप्तदशस्य स्तोमस्य
 जागतस्य छन्दसो वैरूपस्य साम्नः ॥ ३ ॥ राजन्वज्जनद्वत्सूर्य-
 वद्विराडनुतोदवच्चतुर्थस्याह्नो रूपमेकविंशस्य स्तोमस्याऽऽनुष्टुभस्य
 छन्दसो वैराजस्य साम्नः ॥ ४ ॥ चित्रवच्छिशुमत् पङ्क्तिः शकवरी
 घूनाक्षरा गोमदृषभवद्वज्यभिमतपञ्चमस्याऽह्नोरूपं त्रिणवस्य स्तोमस्य
 पाङ्क्तस्य छन्दसः शकवरीणांसाम्नः ॥ ५ ॥ परिवत्प्रतिवत्सप्तपदा
 द्विपदा विनाराशस्रा गोमदृषभवत् षष्ठस्याऽह्नो रूपं त्रयस्त्रिंशस्य
 स्तोमस्य सर्वेषां छन्दसां रूपं रेवतीनां साम्नः ॥ ६ ॥ यस्मादेषा
 समाना सती षडह विभक्तिर्नानारूपा तस्माद्विरूपः संवत्सरः ॥ ७ ॥
 विरूपमेनमनुप्रजायते य एवं वेद ॥ ८ ॥

सप्तमः खण्डः

अग्नइति प्रथमस्याऽह्नो रूपमग्निविभक्तेरग्निमिति
 द्वितीयस्याऽग्निनेति तृतीयस्याऽग्निरिति चतुर्थस्य ॥ १ ॥ देवा वै
 श्रियमैच्छन्तान् प्रथमेऽहन्यविन्दन् द्वितीयेन तृतीये
 ताञ्चतुर्थेऽहन्यविन्दन् विन्दते श्रियं य एवं वेदाऽग्नेरिति पञ्चमस्य
 तेनो श्रीः प्रत्युपोदितेत्याहुः ॥ २ ॥ अप्रतिवाद्येनं भ्रातृव्यो भवति
 य एवं वेद ॥ ३ ॥ अग्न इति षष्ठस्य येनैव रूपेण प्रयन्ति
 तदभ्युद्यन्ती ॥ ४ ॥ यस्मादेषा समाना सत्यग्निविभक्तिर्नानारूपा
 तस्माद्यथर्त्वादित्यस्तपति ॥ ५ ॥

अष्टमः खण्डः

इन्द्रेति प्रथमस्याऽह्नो रूपमिन्द्रविभक्तेरिन्द्रमिति द्वितीयस्येन्द्रेणेति
 तृतीयस्येन्द्रइति चतुर्थस्येन्द्रादिति पञ्चमस्येन्द्रेति षष्ठस्य येनैव

रूपेण प्रयन्ति तदभ्युद्यन्ती यस्मादेषा समाना सतीन्द्र—
विभक्तिर्ज्ञानारूपा तस्माद्यथत्त्वोषधयः पच्यन्ते ॥ १ ॥

नवमः खण्डः

यद्वा प्रस्तौति तत्प्रथमस्याऽहो रूपश्स्वर विभक्तेर्यत्पुरस्तात्
स्तोभं तद्वितीयस्य यदुभयतः स्तोभं तत्तृतीयस्य यदनुतुनं
तच्चतुर्थस्य यदभ्यारब्धं तत्पञ्चमस्य यदिहकारेणाऽभ्यस्तं तत्
षष्ठस्योऽहो रूपम् ॥ १ ॥ स्वराणां यस्मादेषा समाना सती स्वर—
विभक्तिर्ज्ञानारूपा तस्माद्यथर्तु वायुः पवते ॥ २ ॥

दशमः खण्डः

पदनिधनं प्रथमस्याऽहो रूपं निधनविभक्तेर्बहिर्निधनं द्वितीयस्य
दिङ्निधनं तृतीयस्येनिधनञ्चतुर्थस्याऽथकारिणिधनं पञ्चमस्य यदि—
हकारेणाभ्यस्तं तत् षष्ठस्याऽहो रूपं निधनानां यस्मादेषा समाना
सती निधनविभक्तिर्ज्ञानारूपा तस्मादिमे लोकाः सह
सन्तोनानैव ॥ १ ॥

एकादशः खण्डः

द्रवदिङं प्रथमस्याऽहो रूपमिडाविभक्तेरूर्द्ध्वं द्वितीयस्य
परिष्टुब्धेडं तृतीयस्येडाभिरैडं चतुर्थस्याऽध्यर्द्धेडं पञ्चमस्य यदि—
हकारेणाभ्यस्तं तत् षष्ठस्याऽहो रूपमिडानां यस्मादेषा समाना
सतीडाविभक्तिर्ज्ञानारूपा तस्मात्समानाः सन्तः पशवो नाना—
रूपाः ॥ १ ॥

द्वादशः खण्डः

भारद्वाजायना वै सत्रमासत तानपृच्छन् किं प्रथमेनाऽह्ना कुरुतेति
प्रैवैमेति किं द्वितीयेनेत्यवसमेवाऽकुर्महीति किं तृतीयेनेति

पर्य्येवाप्लवामहीति किं चतुर्थेनेति सतैव सदप्यदध्मेति किं पञ्चमेनेति प्राणानेव विच्छिन्दन्त ऐमेति किं षष्ठेनेतीदमेवाऽगच्छामेति ॥ १ ॥ यस्य पदेन प्रस्तौत्यथ स्वारमभि वाव तेन देवाः पशूनपश्यन् यत्पुरस्तात् स्तोभमथ स्वारमुदेव तेनासृजन्त यदुभयतः स्तोभमथ स्वारमेभ्य एव तेन लोकेभ्यो देवाः पशुभ्योऽन्नाद्यं प्रायच्छन् यदनुतुन्नमथ स्वारमुपैव तेनाशिक्षन्त्यस्व मध्ये निधनमथ स्वारं गर्भाश्स्तेनादधत तानि हवता स्वारेण प्राजनयन् ॥ २ ॥ इमं वाव देवा लोकं पदनिधनेनाऽभ्यजयन्मुं बहिर्णिधनेनाऽन्तरिक्षं दिङ्निधनेनाऽमृतत्वमीनिधनेनागच्छन् ब्रह्मवर्चसमथनिधनेनाऽवारून्धतास्मिन्नेव लोकइह निधनेन प्रत्यतिष्ठन् ॥ ३ ॥ इमं वाव देवा लोकं द्रवदिडेनाऽभ्यजयन्मुमूर्द्धेनान्तरिक्षं परिष्टुब्धेडेन प्रतिष्ठा—मिडाभिरैडेनाऽवारून्धत प्रतिष्ठायाऽध्यर्द्धेडेन व्यजयन्तास्मिन्नेव लोकइहेडेन प्रत्यतिष्ठन् ॥ ४ ॥ न वाक् संवत्सरमतिवदतीडैव संवत्सरमतिवदति गर्भेण संवत्सरे पर्यावृत्य प्रजायते तेनाऽति वदति ॥ ५ ॥ ता वा एताश्चतस्रः षडहं पराच्य इडा अतियन्त्येषा नूतैषा विषूच्येषा प्रतीच्येतद्वीडम् ॥ ६ ॥ संवत्सरोऽग्निर्वाक् संवत्सरो यदग्निर्विभज्यते वाचमेव तद्विभजन्ति ॥ ७ ॥ द्वे द्वे अक्षरे विभजन्ति द्वौ द्वौ हि मासावृतुरथो मासानामेव तद्रूपं क्रियते ॥ ८ ॥ षडहानि विभजन्ति षडृतव ऋतूनां घृत्या ऋतूनां प्रतिष्ठित्या अथो ऋतूनामेव तद्रूपं क्रियते षड् पुरुषा यानग्निरनुविहयते ॥ ९ ॥ यदिदं बहुधाग्निर्विहयते यदसावादित्यः सर्वाः प्रजाः प्रत्यङ् तस्मादेते एव देवते विभक्तिमानशाते नातोऽन्या काचन ॥ १० ॥

॥ इति दशमोऽध्यायः ॥



एकादशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

स्तोमोयुज्यते सत्रियेभ्योऽहर्भ्यः प्रत्नवतीभिश्चोपवतीभिश्च ॥ १ ॥
यत्प्रत्नवत्य उपवतीभ्यः पूर्वा युज्यन्ते ब्रह्म तत्पूर्वं क्षत्राद्युज्यते
ब्रह्म हि पूर्वं क्षत्रात् ॥ २ ॥ मनस्तत्पूर्वं वाचो युज्यते मनो हि पूर्वं
वाचो यद्धि मनसाऽभिगच्छति तद्वाचा वदति ॥ ३ ॥ बृहत्तत्पूर्वं
रथन्तराद्युज्यते बृहद्धि पूर्वश्चरथन्तराद्विजित्या तु वै रथन्तरं पूर्वं
योगमानशे ॥ ४ ॥ संभार्यास्तृचा भवन्ति यथाऽऽशिष्ठान्वहिष्ठान्
सम्भरेदेवमेवैतान् सम्भरन्ति गत्यै ॥ ५ ॥ नव भवन्ति नवाहस्य
युक्त्या ऋचर्च्वैवाऽहर्युनक्ति यथा प्रार्थस्य शम्या अवदध्या—
देवमेवैतन्नवाहस्य शम्या आवदधाति गत्यै ॥ ६ ॥ त्रिवृदेव स्तोमो
भवति तेजसे ब्रह्मवर्चसाय ॥ ७ ॥

द्वितीयः खण्डः

उभाभ्यां वै रूपाभ्यां बहिष्पवमान्यो युज्यन्ते यत्सामा स्तोमो
भवति तदाज्येषु ॥ १ ॥ निराहवन्त्याज्यानि भवन्ति युक्तमेव
तैराह्वयति ॥ २ ॥ 'अग्न आयाहि वीतय' 'आनो मित्रावरुणा'
'आयाहि सुषमा हि त' 'इन्द्राग्नी आगतश्सुत'मिति राथन्तरमेव
तद्रूपं निर्घोतयति स्तोम इति ॥ ३ ॥

तृतीयः खण्डः

'प्र सोमासो विपश्चित' इति गायत्री भवति प्रेत्या 'अभिद्रोणानि
बभ्रव' इत्यभिक्रान्त्यै 'सुता इन्द्राय वायव' इति सश्स्कृत्यै 'प्रसोम
देव वीतय' इति प्रेत्यै 'प्र तु द्रवे' ति प्रेत्यै प्रवा एतेनाऽह्ना
यन्ति ॥ १ ॥

गायत्रं भवति ॥ २ ॥ यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ३ ॥ आश्वं
भवति ॥ ४ ॥ अश्वो वै भूत्वा प्रजापतिः प्रजा असृजत स प्राजायत
बहुरभवत्प्रजायते बहुर्भवत्याश्वेन तुष्टुवानः ॥ ५ ॥ एकाक्षरं
निधनमुपयन्ति रथन्तरस्याऽनतिवादाय ॥ ६ ॥ अनतिवाद्येनं भ्रातृव्यो
भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥ सोमसाम भवति ॥ ८ ॥ यथा वा इमा
अन्या ओषधय एवऽसोम आसीत्स तपोऽतप्यत स
एतत्सोमसामाऽपश्यतेन राज्यमाधिपत्यमगच्छद्यशोऽभवद्वाज्यमाधिपत्यं
गच्छति यशो भवति सोमसाम्ना तुष्टुवानः ॥ ९ ॥ यौधाजयं
भवति यदेव यौधाजयस्य ब्राह्मणम् ॥ १० ॥ औशनं यदौशनस्य
स्तोमः ॥ ११ ॥

चतुर्थः खण्डः

‘अभि त्वा शूर नो नुम’ इत्यभीति रथन्तरस्य
रूपश्चरथन्तरश्चेतदहः ॥ १ ॥ ‘कयानश्चित्र आभुव’दिति कवयत्यस्तेन
प्राजापत्याः को हि प्रजापतिः प्रजापतेराप्त्यै ॥ २ ॥ ‘तं वो दस्म—
मृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसोऽभिवत्सं न स्वसरेषु धेनव’ इत्यभीति
रथन्तरस्य रूपश्चरथन्तरश्चेतदहः ॥ ३ ॥ ‘इन्द्रं गीभिर्हवामह’ इति
हवन्त एवैनम् ॥ ४ ॥ ‘तरोभि र्वो विदद्वसु’ मिति स्तोमो वै तरो
यज्ञो विदद्वसुः स्तोमेन वै यज्ञो युज्यते यत्तरोभि र्वो विदद्वसुमित्याह
यज्ञमेव तद्यनुनक्ति ॥ ५ ॥ रथन्तरं भवति ब्रह्म वै रथन्तरं ब्रह्म
प्रायणीयमहर्ब्रह्मण एव तद् ब्रह्माऽऽक्रम्य प्रयन्ति ॥ ६ ॥ इयं वै
रथन्तरमस्यामेव प्रतिष्ठाय सत्रमासते ॥ ७ ॥ वामदेव्यं भवति पशवो
वै वामदेव्यं पशूनामवरुध्यै प्राजापत्यं वै वामदेव्यं प्रजापतावेव
प्रतिष्ठाय सत्रमासते ॥ ८ ॥ नौधसं भवति ब्रह्म वै नौधसं ब्रह्म
प्रायणीयमहर्ब्रह्मण एव तद् ब्रह्माऽऽक्रमन्ते ॥ ९ ॥

कालेयं भवति समानलोके वै कालेयञ्च रथन्तरञ्चेयं वै
रथन्तरं पशवः कालेयमस्याञ्चैव पशुषु च प्रतिष्ठाय
सत्रमासते ॥१०॥ द्रवदिडं तथा ह्येतस्याऽहो रूपश्स्तोमः ॥११॥

पञ्चमः खण्डः

‘प्रसोमासो मदच्युत’ इति गायत्री भवति मदवद् वै रसवत्तृतीय—
सवनं मदमेव तद्रसं दधाति ‘अया पवस्व देवयु’रित्येति रथन्तरस्य
रूपश्चाथन्तरश्चेतदहः ‘पवतेऽहर्ह्यतो हरि’रिति बृहतो रूपं बृहदेव
तदेतस्मिन्नहनि युनक्ति तद्युक्तश्च आरभन्ते ‘प्रसुन्वानायाऽन्धस’
इति प्रवत्यो भवन्ति प्रणिनीषेण्यमिव ह्येतदहः ‘अभिप्रियाणि पवते
च नोहित’ इत्यभीति रथन्तरस्य रूपश्चाथन्तरश्चेतदहः ॥१॥
‘यज्ञायज्ञावो अग्नय’ इत्यग्निर्वै यज्ञो यज्ञएव तद्यज्ञं
प्रतिष्ठापयति ॥ २॥ गायत्रं भवति यदेवं गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ३॥
सश्चितं भवति ऋक्षैरणिधनं प्रतिष्ठायै प्रतिष्ठायैव सत्रमासते ॥ ४॥
सफं भवति ॥ ५॥ सफेन वै देवा इमान् लोकान् समाप्नुवन्
यत्समाप्नुवन्स्तत्सफस्य सफत्वमिमानेवैतेन लोकान् समाप्य
सत्रमासते ॥ ६॥ आक्षारं भवति ॥ ७॥ अष्टौ वा एताः कामदुघा
आसश्स्तासामेका समशीर्यत सा कृषिरभवद्ध्यतेऽस्मै कृषौ य
एवं वेद ॥ ८॥ तासु देवासुरा अस्पृहन्त ते देवा असुरान् काम—
दुघाभ्य आक्षारेणाऽनुदन्त नुदते भ्रातृव्यं कामदुघाभ्य आक्षारेण
तुष्टुवानः ॥ ९॥ एभ्यो वै लोकेभ्यो रसोऽपाक्रामत्तं प्रजापति—
राक्षारेणाऽऽक्षारयद्यदाक्षारयत्तदाक्षारस्याऽऽक्षारत्वम् ॥ १०॥ तस्माद्यः
पुरा पुण्यो भूत्वा पश्चात्पापीयान् स्यादाक्षारं ब्रह्मसाम
कुर्वीताऽऽत्मन्येवेन्द्रियं वीर्य्यश्चरसमाक्षारयति ॥ ११॥

जनुषैकच्चौ भवतोऽहो धृत्यै यद्वा एतस्याऽहोऽधृतं तदेता-
 भ्यान्दाधार ॥१२॥ गौरीवितं भवति ॥१३॥ गौरीवितिवं
 एतच्छाक्त्यो ब्रह्मणोऽतिरिक्तमपश्यत्तद्गौरीवितमभवत् ॥१४॥
 अतिरिक्तं वा एतदतिरिक्तेन स्तुवन्ति यद्गौरीवितेनाहीनाञ्छ्व-
 स्तनवद्भवत्यपि प्रजाया उपक्लृप्तम् ॥१५॥ वृषा वा एतद्वाजि-
 सामवृषभो रेतोधा अद्यस्तुवन्ति श्वः प्रजायते ॥१६॥ अनुष्टुभि
 छन्दसां क्रियतेऽनुष्टुब्धि छन्दसां योनिः स्वायामेव तद्योनौ
 रेतोधत्ते प्रजात्यै ॥१७॥ प्रजायते बहुर्भवति य एवं वेद ॥१८॥
 द्र्युदासं भवत्येतौ वा उदासौ स्वर्गस्य लोकस्याऽवसानदर्शौ पूर्वेण
 पूर्वमहः सऽस्थापयन्त्युत्तरेणोत्तरमहरभ्यति वदन्ति ॥१९॥ तद्यथाऽदः
 पूर्वैद्युः स्पष्टं तृणोदकमन्वस्यन्तो यन्त्येवमेवताभ्याऽस्वर्गं लोकमन्व-
 वस्यन्तो यन्ति ॥२०॥ गौतमं भवति ॥२१॥ सामाऽऽर्षेयवत्
 स्वर्गाय युज्यते स्वर्गाल्लोकान् च्यवते तुष्टुवानः ॥२२॥ यदु
 चैवाऽऽनुष्टुभस्य मध्ये निधनस्य ब्राह्मणं तदु चैतस्य ॥२३॥
 कावं भवति ॥२४॥ लोकबिन्दु साम विन्दते लोकं कावेन
 तुष्टुवानः ॥२५॥ स्वारमुस्वरेण स्वरेण हि देवेभ्योऽन्ततोऽन्नाद्यं
 प्रदीयते स्वरेणैव तद्देवेभ्योऽन्ततोऽन्नाद्यं प्रयच्छति ॥२६॥ यज्ञायज्ञीयं
 भवति ॥२७॥ वाग्यज्ञायज्ञीयं वाचि यज्ञः प्रतिष्ठितो वाच्येव
 तद्यज्ञमन्ततः प्रतिष्ठापयन्ति तं वाचोऽधि श्व आरभन्ते ॥२८॥
 त्रिवृदेव स्तोमो भवति तेजसे ब्रह्मवर्चसाय ॥२९॥

षष्ठः खण्डः

‘पवस्व वाचो अग्रिय’ इति द्वितीयस्याऽहः प्रतिपद्भवति ॥१॥
 ‘पवस्वेति वै राथन्तरश्चरूपमग्रिय’ इति बार्हतमुभे रूपे समारभते
 द्विरात्रस्याऽविस्रसाय ॥२॥

‘पवस्वेन्दो वृषासुत’ इत्यनुरूपो भवति वृषण्वद्वा एतदैन्द्रं
त्रैष्टुभमहर्ष्यत् द्वितीयं तदेव तदभिवदति ॥ ३ ॥ पूर्वमुच्चैव
तद्रूपमपरेण रूपेणाऽनुवदति यत्पूर्वश्चरूपमपरेण रूपेणाऽनुवदति
तदनुरूपस्याऽनुरूपत्वम् ॥ ४ ॥ अनुरूप एनं पुत्रो जायते य एवं
वेद ॥ ५ ॥ स्तोत्रीयानुरूपौ तृचौ भवतः प्राणापानानामवरुध्यै ॥ ६ ॥
वृषण्वन्तस्तृचा भवन्तीन्द्रियस्य वीर्यस्याऽवरुध्यै ॥ ७ ॥ तृच उत्तमो
भवति ॥ ८ ॥ येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ९ ॥ पञ्चदश
एव स्तोमो भवति ॥ १० ॥ ओजस्येवं तद्वीर्ये प्रतितिष्ठत्योजो
वीर्यं पञ्चदशः ॥ ११ ॥

सप्तमः खण्डः

उभाभ्यां वै रूपाभ्यां बहिष्पवमान्यो युज्यन्ते यत्सामास्तोमो
भवति तदाज्येषु ॥ १ ॥ निराहोपस्थितान्याज्यानि भवन्ति ॥ २ ॥
‘अग्निं दूतं वृणीमहे मित्रं वयश्हवामह इन्द्रमिद्राथिनो बृहदिन्द्रो
अग्ना नमो बृह’दिति बार्हतमेव तद्रूपं निर्द्योतयति स्तोमः ॥ ३ ॥

अष्टमः खण्डः

‘वृषा पवस्व धारये’ति गायत्री भवत्यहो धृत्यै ॥ १ ॥
वृषण्वत्यस्त्रिष्टुभोरूपेण त्रैष्टुभश्चेतदहः ॥ २ ॥ ‘पुनानः सोम
धारये’ति धृत्यै ॥ ३ ॥ वृषाशोणो अभि कनिक्रदद्वा इति ॥ ४ ॥
वृषण्वत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण समृद्धा वृषण्वद्वा एतदैन्द्रं त्रैष्टुभमहर्ष्यत्
द्वितीयं तदेव तदभिवदति ॥ ५ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य
ब्राह्मणम् ॥ ६ ॥ यौक्ताश्वं भवति ॥ ७ ॥ युक्ताश्वो वा आङ्गिरसः
शिशू जाता विपर्यहरत्तस्मान्मन्त्रोऽपाक्रामत्सतपोऽतप्यत स
एतद्यौक्ताश्वमपश्यत्तं मन्त्र उपावर्त्तत तद्वाव स तर्ह्यकामयत काम—
सनि साम यौक्ताश्वं काममेवैतेनाऽवरुन्धे ॥ ८ ॥

आयास्ये भवतः ॥ १॥ अयास्यो वा आङ्गिरस आदित्यानां
 दीक्षितानामन्नमाशनात्तश्शुगार्थासतपोऽतप्यत स एते आयास्ये
 अपश्यत्ताभ्याश्शुचमपाहताऽपशुचश्ह त आयास्याभ्यां
 तुष्टुवानः ॥ १०॥ एभ्यो वै लोकेभ्यो वृष्टिरपाक्रामत्तामयास्य
 आयास्याभ्यामच्यावयत् च्यावयति वृष्टिमायास्याभ्यां
 तुष्टुवानः ॥ ११॥ अन्नाद्यं वाव तदेभ्यो लोकेभ्योऽपाक्रामत्तदयास्य
 आयास्याभ्यामच्यावयत् च्यावयत्यन्नाद्यमायास्याभ्यां
 तुष्टुवानः ॥ १२॥ वासिष्ठं भवति ॥ १३॥ वसिष्ठो वा एतेन
 वैडवः स्तुत्वाञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य लोकस्याऽनुख्यात्यै
 स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः स्तोमः ॥ १४॥

नवमः खण्डः

‘त्वामिद्धि हवामह’ इति त्वमिति बृहतोरूपं बार्हतश्होत—
 दहः ॥ १॥ ‘अभिप्रवः सुराघस’मिति युञ्जते वै पूर्वेणाऽह्नाभ्येतेन
 प्रयन्ति ॥ २॥ त्वामिदाहो नर इत्यद्य चैवह्यश्च समारभते
 द्विरात्रस्याऽविस्रसाय ॥ ३॥ बृहद्भवति वर्षं वै बृहद्वर्षं
 द्वितीयमहर्वर्षणएव तद्वर्षाऽऽक्रमते ॥ ४॥ श्यैतं भवति साम्नो—
 विवाहो यज्ञस्य सन्तत्यै ॥ ५॥ माधुच्छन्दसं भवति सामार्षेयवत्स्वर्गाय
 युज्यते स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः ॥ ६॥ ऊर्ध्वेडं तथा
 होतस्याऽह्नोरूपश्स्तोमः ॥ ७॥

दशमः खण्डः

‘यस्ते मदो वरेण्य’ इति गायत्री भवति ॥ १॥ मदवद्वै
 रसवत्तृतीयसवनं मदमेव तद्रसं दधाति ॥ २॥ ‘पवस्व मधुमत्तम’
 इति ‘पवन्त इव होतेनाऽह्ना मधुमत्तम’ इत्यन्नं वै मध्वन्नाद्यमेव
 तद्यजमाने दधाति ॥ ३॥

‘इन्द्रमच्छ सुता इम’ इतीन्द्रियस्य वीर्यस्याऽऽवरुध्यै ॥ ४ ॥
 ‘अयं पूषा रयिर्मग’ इत्यनुष्टुभः सत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण त्रैष्टुभश्छेत
 दहः ॥ ५ ॥ ‘वृषामतीनां पवते विचक्षण’ इति जगत्यः सत्यस्त्रिष्टुभो
 रूपेण त्रैष्टुभश्छेतदहः ॥ ६ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य
 ब्राह्मणम् ॥ ७ ॥ हाविष्मतं भवति ॥ ८ ॥ हविष्माँश्च वै
 हविष्कृच्चाऽङ्गिरसावास्तां द्वितीयेऽहनि हविष्मानराध्नोन्वमेऽहनि
 हविष्कृत् ॥ ९ ॥ अयश्हविष्मानित्येव जातमहज्जातिश्सोमं प्राह
 देवेभ्यः साम्नैवास्मा आशिषमाशास्ते साम हि सत्याशीः ॥ १० ॥
 शङ्कु भवत्यहो घृत्यै यद्वा अघृतश्शङ्कुना तद्वाधार ॥ ११ ॥
 तदु सीदन्तीयमित्याहुरेतेन वै प्रजापतिरूद्ध्व इमान् लोकान—
 सीदद्यदसीदत्तत्सीदन्तीयस्य सीदन्तीयत्वमूद्ध्व इमान् लोकान् सीदति
 सीदन्तीयेन तुष्टुवानः ॥ १२ ॥ सुज्ञानं भवति ॥ १३ ॥ स्वर्वद्वै
 राथन्तरश्रूपश्स्वर्णिघनं बार्हतम् ॥ १४ ॥ स्वर्णिघनं भवति तथा
 ह्येतस्याऽहो रूपम् ॥ १५ ॥ प्लवौ वा एतावुपोहन्ते स्वर्गस्य लोकस्य
 समष्ट्यै ॥ १६ ॥ गौरीवितं भवति यदेव गौरीवितस्य
 ब्राह्मणम् ॥ १७ ॥ क्रौञ्चं भवति ॥ १८ ॥ वाग्वै क्रौञ्चं वाग्द्वादशाहो
 वाच्येव तद्वाचा स्तुवते यज्ञस्य प्रभूत्यै ॥ १९ ॥ यामं भवति ॥ २० ॥
 एतेन वै यमोऽनपजय्यममुष्य लोकस्याऽऽधिपत्यमाश्नु—
 ताऽनपजय्यममुष्य लोकस्याऽऽधिपत्यमश्नुते यामेन तुष्टुवानः ॥ २१ ॥
 एतेन वै यमो यमश्स्वर्गल्लोकमगमयत् स्वर्गस्य लोकस्याऽनुख्यात्यै
 स्वर्गाल्लोकान् च्यवते तुष्टुवानः स्तोमः ॥ २२ ॥

एकादशः खण्डः

‘एह्येषु बुवाणित’ इत्येहिवत्यो भवन्ति तृतीयस्याह उपहवाय
 सन्तत्यै ॥ १ ॥

अपच्छिदिव वा एतद्यज्ञकाण्डं यदुक्थानि यदेति
 सलोमत्वाय ॥ २ ॥ एवाहसि वीरयुरिति समानं वदन्तीद-
 मित्थमसदिति ॥ ३ ॥ इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्नित्यवर्द्धन्त ह्येतर्हि
 यजमानमेवैतया वर्द्धयन्ति ॥ ४ ॥ साकमश्वं भवत्युक्थानामभिजित्या
 अभिक्रान्त्यै ॥ ५ ॥ एतेन ह्यग्र उक्थान्यभ्यजयन्तेतेनाभ्यक्रामन् ॥ ६ ॥
 आमहीयवं भवति क्लृप्तिश्चाऽन्नाद्यञ्च समानं वदन्तीषु क्रियत
 इदमित्थमसदिति ॥ ७ ॥ क्षत्रं वा एतदहरभिनिर्वदति यत्पञ्चदशं
 यद्गायत्रीषु ब्रह्मसाम भवति ब्रह्म चैव तत्क्षत्रञ्च सयुजी करोति
 ब्रह्मैव क्षत्रस्य पुरस्तान्निदधाति ब्रह्मणे क्षत्रञ्च विशञ्चाऽनुगे
 करोति ॥ ८ ॥ ब्रह्म वै पूर्वमहः क्षत्रं द्वितीयं यद्गायत्रीषु ब्रह्मसाम
 भवति ब्रह्म तद्यज्ञसार्द्धयति ब्रह्म हि गायत्री ॥ ९ ॥ तदु समानं
 वदन्तीषु क्रियते समृद्ध्यै ॥ १० ॥ आष्टादशष्ट्रे भवतः ॥ ११ ॥
 ऐयाहा इति वा इन्द्रो वृत्रमहन्नैयादोहोवेतिन्यगृह्णाद्वार्त्रघ्ने सामनी
 वीर्यवती ॥ १२ ॥ ओजएवैताभ्यां वीर्यमवरुन्धे ॥ १३ ॥ पञ्चदश
 एव स्तोमो भवत्योजस्येव तद्वीर्यं प्रतितिष्ठत्योजो वीर्यं
 पञ्चदशः ॥ १४ ॥

॥ इति एकादशोऽध्यायः ॥



द्वादशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

दविद्युतत्यारुचेति तृतीयस्याऽहः प्रतिपद्भवति ॥ १ ॥ दविद्युतती
वै गायत्री परिष्टोभन्ती त्रिष्टुब् गवाशीर्ज्जगती त्रीणि रूपाणि
समारभते त्रिरात्रस्याऽविस्रःशाय ॥ २ ॥ एते असृग्रमिन्दव इत्यनुरूपो
भवति ॥ ३ ॥ एतइति वै प्रजापतिर्देवानसृतासृग्रमिति मनुष्यानिन्दव
इति पितृस्तदेव तदभिवदति ॥ ४ ॥ पूर्वमुच्चैव तद्रूपमपरेण
रूपेणानुवदति यत्पूर्वश्चरूपमपरेण रूपेणानुवदति तदनुरूपस्याऽनु-
रूपत्वमनुरूपेण पुत्रो जायते य एवं वेद ॥ ५ ॥ स्तोत्रीयानुरूपौ
तृचौ भवतः प्राणापानानामवरुध्यै ॥ ६ ॥ राजा मेघाभिरीयते पवमानो
मनावध्यन्तरिक्षेण यातव इति ॥ ७ ॥ अन्तरिक्षदेवत्यस्तृचो
भवत्यन्तरिक्षदेवत्यमेतदहर्ह्यत्तृतीयं तदेव तदभिवदति ॥ ८ ॥ पञ्चर्चो
भवति पञ्चपदा पङ्क्तिः पाङ्क्तमन्नमन्नाद्यस्याऽवरुध्यै ॥ ९ ॥ तृच
उत्तमो भवति येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ १० ॥ सप्तदश-
एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै प्रजात्यै ॥ ११ ॥

द्वितीयः खण्डः

‘अग्निनाग्निः समिध्यत’ इत्याग्नेयमाज्यं भवति ॥ १ ॥ पूर्वे
एव तदहनी समिद्धे तृतीयमहरभिसमिन्धे ॥ २ ॥ ‘मित्रश्हुवे
पूतदक्ष’मिति राथन्तरम्मैत्रावरुणम् ॥ ३ ॥ ‘हुव’ इति वै
राथन्तरश्चरूपम् ॥ ४ ॥ रथन्तरमेतत्परोक्षं यद्वैरूपं राथन्तरमेव तद्रूपं
निर्घोतयति ॥ ५ ॥ इन्द्रेण सःहि दक्षुस इत्यैन्द्रम् ॥ ६ ॥ समिव
वा इमे लोका ददृशिरेऽन्तरिक्षदेवत्यमेहर्ह्यत्तृतीयं तदेव
तदभिवदति ॥ ७ ॥

‘ता हुवे ययोरिद’मिति राथन्तरमैन्द्राग्नम् ॥ ८ ॥ ‘हुव’ इति वै राथन्तररूपश्चन्तरमेतत्परोक्षं यद्वैरूपं राथन्तरमेव तद्रूपं निर्घोतयति स्तोमः ॥ ९ ॥

तृतीयः खण्डः

‘उच्चा ते जातमन्धस’ इति गायत्री भवति ॥ १ ॥ उद्धृद्वा एतदहर्ष्यतृतीयं तदेव तदभिवदति ॥ २ ॥ अन्धस्वती भवत्यहर्वा अन्धोऽह आरम्भः ॥ ३ ॥ ‘अभि सोमास आयव’इति ॥ ४ ॥ ‘अभीति राथन्तरस्य रूपं बृहदिति बृहत उभयोः सह रूपमुपैत्युभौ हि वर्णावेतदहः ॥ ५ ॥ ‘तिस्रो वाच ईरयति प्रवहि’ रिति तृतीयस्याऽहो रूपं तेन तृतीयमहरारभन्ते ॥ ६ ॥ त्रिष्टुभः सत्यो जगत्यो रूपेण जागतश्चेतदहः ॥ ७ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ८ ॥ वैष्टम्भं भवति ॥ ९ ॥ अहर्वा एतदव्लीयत तद्देवा वैष्टम्भैर्व्यष्टभुवश्स्तद्वैष्टम्भस्य वैष्टम्भत्वम् ॥ १० ॥ ‘दिश’ इति निधनमुपयन्ति दिशां घृत्यै ॥ ११ ॥ पौरुमद्गं भवति ॥ १२ ॥ अहर्वा एतदव्लीयमानं तद्रक्षाश्च्यन्व सचन्त तस्माद्देवाः पौरुमद्देन रक्षाश्च्यपाघ्नन्नप पाप्मानं हते पौरुमद्देन तुष्टुवानः ॥ १३ ॥ देवाश्च वाऽसुराश्चाऽस्पृद्धन्त ते देवा असुराणां पौरुमद्देन पुरोऽमज्जयन्त्यत् पुरोऽमज्जयश्स्तस्मात्पौरुमद्गं पाप्मानमेवैतेन भ्रातृव्यं मज्जयति ॥ १४ ॥ गौतमं भवति ॥ १५ ॥ यदेव गौतमस्य ब्राह्मणम् ॥ १६ ॥ उभयतः स्तोभं तथाह्येतस्याऽहो रूपम् ॥ १७ ॥ अन्तरिक्षं भवति ॥ १८ ॥ अन्तरिक्षदेवत्यमेतदहर्ष्यतृतीयमन्तरिक्ष एव तदन्तरिक्षेण स्तुवते प्रतिष्ठायै ॥ १९ ॥ आष्कारणिधनं काण्वं भवति ॥ २० ॥ असिति वै राथन्तरं रूपं हसिति बार्हतं तृतीयमेव तद्रूपमुपयन्ति समृध्यै ॥ २१ ॥

अङ्गिरसाऽसंक्रोशो भवति ॥ २२ ॥ एतेन वा अङ्गिरसः
संक्रोशमानाः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गस्य लोकस्याऽनुख्यात्यै
स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः स्तोमः ॥ २३ ॥

चतुर्थः खण्डः

‘यद्याव इन्द्र ते शत’ मिति शतवत्यो भवन्ति ॥ १ ॥ शतवद्वै
पशूनाऽरूपऽसहस्रवत्पशूनामेवैताभीरूपमवरुन्धे ॥ २ ॥ ‘वयं घ त्वा
सुतावन्त’ इति सतो बृहत्यो वर्षीयश्छन्द आक्रमतेऽन-
पञ्चशाय ॥ ३ ॥ तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजाव इन्द्रं
पुरुहूतं नमे गिरेत्यावदक्षरमुद्धतमिव वै तृतीयमहर्ष्यदितदावदक्षरं
भवत्यहरेवैतेन प्रतिष्ठापयति ॥ ४ ॥ पञ्चनिधनं वैरूपं पृष्ठं भवति
दिशां घृत्यै ॥ ५ ॥ पञ्चपदा पङ्क्तिः पाङ्क्तमन्नमन्नाद्यस्याऽव-
रुध्यै ॥ ६ ॥ दिशां वा एतत्साम यद्वैरूपं दिशो ह्येवैतेनाऽभि-
वदति ॥ ७ ॥ अथ यत्पञ्चनिधनं तेनर्तूनां पञ्चहृतवः ॥ ८ ॥ ऋतुभिश्च
वा इमे लोकादिग्भिश्चाऽऽवृतास्तेष्वे वोभयेषु यजमानं प्रतिष्ठापयति
यजमानं वा अनु प्रतितिष्ठन्तमुद्राता प्रतितिष्ठति य एवं विद्वान्
वैरूपेणोद्गायति ॥ ९ ॥ दिग्वद्भवति भ्रातृव्यस्याऽपनुत्यै ॥ १० ॥ ‘दिशं
विश’ मिति निधनमुपयन्ति दिशां घृत्यै ॥ ११ ॥ ‘हसि’त्युपरिष्टादिशां
निधनमुपयन्ति तेन बार्हतम् ॥ १२ ॥ राथन्तरो वा अयं लोको
बार्हतोऽसावुभे एव तद्बृहद्रथन्तरयो रूपेणाऽपराध्नोति ॥ १३ ॥
अनड्वाहौ वा एतौ देवयानौ यजमानस्य यद्बृहद्रथन्तरे तावेव
तद्युनक्ति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ १४ ॥ अश्ववद्भवति
प्रजात्यै ॥ १५ ॥ यथा मण्डूक आद् करोत्येवं निधन-
मुपयन्त्ययातयामतायै ॥ १६ ॥

द्वादशवैरूपाणि भवन्ति द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सर एव
 प्रतितिष्ठति ॥ १७ ॥ विरूपः संवत्सरो विरूपमन्नमन्नाद्यस्याऽव-
 रुध्यै ॥ १८ ॥ महावैष्टभं ब्रह्मसाम भवत्यन्नाद्यस्याऽवरुध्यै ॥ १९ ॥
 यदा वै पुरुषोऽन्नमत्यथाऽन्तरतो विष्टब्धः ॥ २० ॥ 'दिश' इति
 निधनमुपयन्ति दिशां धृत्यै ॥ २१ ॥ सतो बृहतीषु स्तुवन्ति पूर्वयो-
 रहोः प्रत्युद्यमाय ॥ २२ ॥ रौरवमच्छावाकसाम भवति ॥ २३ ॥
 अग्निर्वै रूरो रुद्रोऽग्निः ॥ २४ ॥ अग्निर्वा एतस्य पशूनपक्रमयति
 यस्य पशवोऽपक्रामन्त्यग्निरेतस्य पशूनभिक्रमयति यस्य
 पशवोऽभिक्रामन्ति ॥ २५ ॥ अभ्यभ्येवाऽस्य पशवः क्रामन्ति य
 एवं विद्वान् रौरवेण स्तुवते ॥ २६ ॥ परिष्टुब्धेडं तथा ह्येतस्याऽहो
 रूपश्स्तोमः ॥ २७ ॥

पञ्चमः खण्डः

'तिस्रो वाच उदीरत' इति तृतीयस्याऽहो रूपं तेन तृतीय-
 महरारभन्ते ॥ १ ॥ उद्वद्वा एतत् त्रिवदहर्ह्यत् तृतीयं तदेव
 तदभिवदति ॥ २ ॥ 'आ सोता परिषिञ्चते'ति परिवृत्यो भवन्ति ॥ ३ ॥
 अन्तो वै तृतीयमहस्तस्यैताः पर्याप्त्यै ॥ ४ ॥ 'सखाय आ निषीदते'
 त्युद्धतमिव वै तृतीयमहर्ह्यदाह निषीदते' त्यहरेवैतेन
 प्रतिष्ठापयति ॥ ५ ॥ 'सुतासो मधुमत्तमा' इत्यनुष्टुभः सत्यो जगत्यो
 रूपेण जागतश्चेतदहः ॥ ६ ॥ 'पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पत'
 इति ॥ ७ ॥ विततमिव वा इदमन्तरिक्षमन्तरेमे अन्तरिक्ष देवत्यमेत-
 दहर्ह्यत्तृतीयं तदेव तदभिवदति ॥ ८ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य
 ब्राह्मणम् ॥ ९ ॥ पाष्ठौहं भवति ॥ १० ॥ पष्ठवाङ्वा
 एतेनाङ्गिरसश्चतुर्थस्याऽहो वाचं वदन्ती मुपाशृणोत्स होवागिति
 निधनमुपैतदस्याऽभ्युदितं तदहरवसत् ॥ ११ ॥

वाचः साम भवति ॥१२॥ वाग्वै द्वादशाहो वाच्येव तद्वाचा
स्तुवते यज्ञस्य प्रभूत्यै ॥१३॥ निष्किरीयाः सत्रमासत ते तृतीयमहर्न—
प्राजानश्स्तानेतत्साम गायमानान् वागुपाप्लवत् तेन तृतीयमहः
प्राजानश्स्तोऽब्रु 'वन्नियं वाव नस्तृतीयमहरदीदृश' दिति
तृतीयस्यैवैषाऽहो दृष्टिः ॥१४॥ शौक्तं भवति ॥१५॥ शुक्तिर्वा
एतेनाऽऽङ्गिरसोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य
लोकस्याऽनुख्यात्यै स्वर्गाल्लोकान् च्यवते तुष्टुवानः ॥१६॥
गौरीवितं भवति यदेव गौरीवितस्य ब्राह्मणम् ॥१७॥ त्वाष्ट्री
साम भवति ॥१८॥ इन्द्र वा अक्ष्यामयिणं भूतानि नाऽस्वा—
पयश्स्तमेतेन त्वाष्ट्र्योऽस्वापयश्स्तद्वाव तास्तर्ह्यकामयन्त ॥१९॥
कामसनि साम त्वाष्ट्री साम काममेवैतेनाऽवरुन्धे ॥२०॥ इन्द्रो
वृत्राद्विभ्यद्वां प्राविशत् त्वाष्ट्र्योऽब्रूवञ्जनयामेति तमेतैः
सामभिरजनयञ्जायामहा इति वै सत्र मासते जायन्त एव ॥२१॥
अरिष्टं भवति ॥२२॥ देवाश्च वा असुराश्चास्पृन्त यं देवानामघ्नन्
स समभवद्यमसुराणां सऽसोऽभवत्ते देवास्तपोऽतप्यन्त त
एतदरिष्टमपश्यश्स्ततोऽयं देवानामघ्नन् सऽसोऽभवद्यमसुराणां न
ससमभवदनेनारिषामेति तदरिष्टस्यारिष्टत्वमरिष्ट्या एवाऽरिष्टमन्ततः
क्रियते ॥२३॥ त्रीडं भवति त्रिरात्रस्य धृत्यै ॥२४॥
द्रवन्तीमिडामुत्तमामुपयन्ति चतुर्थस्याऽहः सन्तत्यै स्तोमः ॥२५॥

षष्ठः खण्डः

‘प्रमं हिष्ठाय गायते’ति ॥१॥ ‘यद्गायते’ति महस एव तद्रूपं
क्रियते ॥२॥ ‘तं ते मदं गृणी मसी’ति मदवद्वै रसवत्तृतीयसवनं
मदमेव तद्रसं दधाति ॥३॥

‘श्रुधीहवं तिरश्चया’ इति श्रुत्या एव ॥४॥ प्रमं हिष्ठीयं भवति ॥५॥ प्रमं हिष्ठीयेन वा इन्द्रो वृत्राय वज्रं प्रावर्त्तयत्तमस्तृणुत भ्रातृव्यवान् प्रमं हिष्ठीयेनोक्थानि प्रणयेत स्तृणुते भ्रातृव्यं वसीयाऽआत्मना भवति ॥६॥ हारिवर्णं भवति ॥७॥ इन्द्रश्च वै नमुचिश्चाऽसुरः समदधातां न नौ नक्तन्न दिवाऽहनन्नाऽऽर्द्धेण न शुष्केणेति तस्य व्यूषायामनुदित आदित्येऽपां फेनेन शिरोऽछिनदे— तद्वै न नक्तं न दिवायत् व्यूषायामनुदित आदित्यएतन्नाऽऽर्द्धन्नशुष्कं यदपां फेनस्तदेनं पापीयां वाचं वददन्ववर्त्तत वीरहन्नद्रुहोद्रुह इति तन्नर्च्चा न साम्नाऽपहन्तुमशक्नोत् ॥८॥ तद्धारिवर्णस्यैव निधनेनापाहत ॥९॥ अपशुचश्हते हारिवर्णस्य निधनेन श्रियश्च हरश्चोपैति तुष्टुवानः ॥१०॥ तैरश्च्यं भवति ॥११॥ अङ्गिरसः स्वर्गल्लोकं यन्तो रक्षाऽस्यन्वसचन्त तान्येतेन तिरश्चयाङ्गिरसस्तिर्य्यङ्— पर्य्यवैद्यतिर्य्यङ्पर्य्यवैत्तस्तातैरश्च्यं पाप्मा वावस तानसचत तं तैरश्च्येनापाघ्नतापपाप्मनश्हते तैरश्च्येन तुष्टुवानः ॥१२॥ सप्तदश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै प्रजात्यै ॥१३॥

सप्तमः खण्डः

‘प्र त आश्विनीः पवमानधेनव’ इति चतुर्थस्याऽह्नः प्रतिपद्भवति ॥१॥ आप्ते त्रिरात्रे गायत्र्यो रूपेण प्रयन्ति प्रेति वै गायत्र्या रूपम् ॥२॥ जगती प्रतिपद्भवति जागतमेत— दहर्त्यत्तृतीयञ्जगत्या एव तज्जगतीमभि संक्रामन्ति ॥३॥ यदतोऽन्या प्रतिपत् स्यात् प्रतिकूलं वाऽनुकूलं वा स्यात् ॥४॥ पवमानो अजीजनदित्यनुरूपो भवति ॥५॥ जनद्वद्वा एतदहर्त्यच्चतुर्थ— मन्नाद्यञ्जनयति विराजञ्जनयत्येकविंश स्तोमञ्जनयति ॥६॥

पूर्वमुच्चैव तद्रूपमपरेण रूपेणानुवदति यत्पूर्वश्रूपमपरेण रूपेणानुवदति तदनुरूपस्यानुरूपत्वमनुरूपं एनं पुत्रो जायते य एवं वेद ॥ ७ ॥ स्तोत्रीयानुरूपौ तृचौ भवतः प्राणापानानामवरुध्यै ॥ ८ ॥ षड्चौ भवत ऋतूनां धृत्यै ॥ ९ ॥ तृच उत्तमो भवति येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्त्येकविंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै प्रतितिष्ठति ॥ १० ॥

अष्टमः खण्डः

‘जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरि’त्याग्नेयमाज्यं भवति ॥ १ ॥ जनद्वद्वा एतदहर्ष्यच्चतुर्थमन्नाद्यञ्जनयति विराजञ्जनयत्येकविंश स्तोमञ्जनयति ॥ २ ॥ ‘अयं वां मित्रावरुणे’ति बार्हतं मैत्रावरुणम् ॥ ३ ॥ बृहदेतत्परोक्षं यद्वैरूपं बार्हतमेव तद्रूपं निर्घोतयति ॥ ४ ॥ ‘इन्द्रो दधीचो अस्थभि’रिति दाधीचस्तृचो भवति ॥ ५ ॥ दध्यङ्वा आङ्गिरसो देवानां पुरोधानीय आसीदन्नं वै ब्रह्मणः पुरोधान्नाद्यस्याऽवरुध्यै ॥ ६ ॥ ‘इयं वामस्य मन्मन’ इत्यैन्द्राग्नम् ॥ ७ ॥ ‘इन्द्राग्नी पूर्व्य’स्तुतिरभ्राद्वृष्टिरिवाऽजनी’—त्यानुष्टुभी वै वृष्टिरानुष्टुभमेतदहर्ष्यच्चतुर्थं समीच्यौ विराजौ दधात्यन्नाद्याय स्तोमः ॥ ८ ॥

नवमः खण्डः

‘पवस्व दक्षसाधन’ इति गायत्री भवति सिध्यै ॥ १ ॥ ‘यत् पवस्वे’ति तद्बृहतो रूपं बार्हतश्होतदहः ॥ २ ॥ ‘तवाहःसोमरारण सख्य इन्द्रो दिवे दिवे पुरूणि बभ्रो निचरन्ति मामव परिधीश्रतिताऽइही’ति ॥ ३ ॥ अति ह्यायञ्छकुना इव पप्तिमेत्यति ह्यपतत् ॥ ४ ॥ पुनानो अक्रमीदभीति ॥ ५ ॥

गायत्र्यः सत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण तस्मात्त्रिष्टुभां लोके
क्रियन्ते ॥ ६ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ७ ॥
चतुर्णिधनमाथर्वणं भवति चतूरात्रस्य धृत्यै ॥ ८ ॥ चतुष्पदा-
नुष्टुभाऽऽनुष्टुभमेतदहर्ष्यच्चतुर्थम् ॥ ९ ॥ भेषजं वाऽऽथर्वणानि
भेषजमेव तत्करोति ॥ १० ॥ निधनकामं भवति ॥ ११ ॥ एकं वा
अन्येन निरुक्तेन निधनेन कामश्सनोत्यथैतन्निधनकामश्सर्वेषां
कामानामवरुध्यै ॥ १२ ॥ आष्टादश्ष्णं भवति ॥ १३ ॥ यदेवाष्टा-
दश्ष्णस्य ब्राह्मणम् ॥ १४ ॥ आभीषवं भवत्यहो धृत्यै ॥ १५ ॥
यद्वा अधृतमभीशुना तद्वाधार ॥ १६ ॥ अनुतुन्नं गायति तथा
ह्येतस्याऽहो रूपम् ॥ १७ ॥ चतुर्णिधनमाङ्गिरसं भवति चतूरात्रस्य
धृत्यै ॥ १८ ॥ स्वःपृष्ठं तथा ह्येतस्याऽहो रूपम् ॥ १९ ॥ सत्रासाहीयं
भवति ॥ २० ॥ यद्वा असुराणामसोढमासीत्तद्देवाः सत्रासाहीयेनासहन्त
सत्रैनानसक्ष्महीति तत्सत्रासाहीयस्य सत्रासाहीयत्वम् ॥ २१ ॥ सत्रा
भ्रातृव्यश्सहते सत्रा साहीयेन तुष्टुवानः ॥ २२ ॥ गायत्रीषु स्तुवन्ति
प्रतिष्ठायै ब्रह्मवर्चसाय येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ २३ ॥
वृषण्वत्यो गायत्र्यो भवन्ति तदु त्रैष्टुभाद्रूपान्नयन्ति स्तोमः ॥ २४ ॥

दशमः खण्डः

‘पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्चाद्रिः
सोतुर्बाहुभ्याश्सुयतो नार्वे’त्यायतमिव वै चतुर्थमहस्तस्यैव
यत्यै ॥ १ ॥ ‘विश्वाः पृतना अभिभूतरं नर’ इत्यतिजगतीवर्षीयश्छन्द
आक्रमतेऽनपञ्चशाय ॥ २ ॥ अपञ्चश्श इव वा एष
यज्जायसश्छन्दसः कनीयश्छन्द उपैति यदेषा चतुर्थेऽहन्यतिजगती
क्रियतेऽनपञ्चशाय ॥ ३ ॥ यो राजा चर्षणीनामिति ॥ ४ ॥

राज्ये ह्येतर्हि वाचोऽगच्छन् राज्यमेवैतया यजमानं
गमयन्ति ॥ ५ ॥ छन्दोभिर्वै देवा आदित्यश्स्वर्गं लोकमहरन् स
नाऽऽश्रियत तं वैराजस्य निधनेनाद्दहश्स्तस्मात् पराङ् चाव्वाङ्
चादित्यस्तपति पराङ्चाव्वाङ्चेकारः ॥ ६ ॥ प्रस्तावं प्रस्तुत्य
विष्टम्भान्विष्टम्भोति मुखतएव तदन्नाद्यं धत्ते मुखश्हि साम्नः
प्रस्तावः ॥ ७ ॥ दशकृत्वो विष्टम्भोति दशाक्षरा विराङ्
वैराजमन्नमन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ८ ॥ त्रिंशत्कृत्वो विष्टम्भोति
भूयसोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ९ ॥ वैराजश्साम भवति विराट्शु स्तुवन्ति
वैराजा विष्टम्भाः समीचीर्विराजो दधात्यन्नाद्याय ॥ १० ॥ अनुतुन्नं
गायति रेतो धेयायाऽनुतुन्नाद्धि रेतो धीयते ॥ ११ ॥ दक्षिण
ऊरावुद्रातुरग्निं मन्यन्ति दक्षिणतो हि रेतः सिच्यते ॥ १२ ॥
उपाकृतेऽहिङ्कृते मन्यन्ति जातमभिहिङ्करोति ॥ १३ ॥ तस्माज्जातं
पुत्रं पशवोऽभि हिङ्कुर्वन्ति ॥ १४ ॥ तस्मै जातायामीमांससन्त
गार्हपत्ये प्रहरामा ३ आग्नीध्रा ३ आहवनीया ३ इति ॥ १५ ॥
आहवनीये प्रहरन्त्ये तदायतनो वै यजमानो यदाहवनीयः स्वमेव
तदायतनञ्ज्योतिष्मत्करोति ॥ १६ ॥ ज्योतिष्मान् ब्रह्मवर्चसी भवति
य एवं वेद ॥ १७ ॥ अभि जुहोति शान्त्यै आज्येनाभिजुहोति
तेजो वा आज्यं तेज एव तदात्मन्धत्ते ॥ १८ ॥ 'प्रेद्धो अग्ने
दीदिह पुरो न' इति विराजाऽभिजुहोत्यन्नं विराडन्नाद्यस्या—
वरुध्यै ॥ १९ ॥ त्रैशोकं ब्रह्मसाम भवति ॥ २० ॥ अतिजगतीषु
स्तुवन्त्यह उक्क्रान्त्या उद्रा एतेनाह्वा क्रामन्ति ॥ २१ ॥ दिवेति
निधनमुपयन्ति पाप्मनोऽपहत्या अपपाप्मानश्हते त्रैशोकेन
तुष्टुवानः ॥ २२ ॥ भरद्वाजस्य पृश्न्यच्छावाकसाम भवति ॥ २३ ॥
'अन्नं वै देवाः पृश्नी'ति वदन्त्यन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ २४ ॥ इडाभिरैडं
तथा ह्येतस्याऽहो रूपश्स्तोमः ॥ २५ ॥

एकादशः खण्डः

‘परि प्रिया दिवः कवि’रिति परिवृत्यो भवन्त्यन्तो वै चतुर्थमहस्तस्यैताः पर्याप्त्यै ॥१॥ ‘त्वश्छङ्ग दैव्ये’ति त्वमिति बृहतो रूपं बार्हतश्छेतदहः ॥२॥ ‘सोमः पुनान ऊर्मिणा व्यं वारे विधावति । अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रद’दिति ॥३॥ अग्रश्छे—तर्हि वाचोऽगच्छन्नग्रमेवैतया यजमानं गमयन्ति ॥४॥ ‘पुरो जितीवो अन्धस’ इति विराजौ वैराजश्छेतदहः ॥५॥ ‘सोमः पवते जनिता मतीना’ मिति प्रातःसवने षोडशिनं गृहीतं तृतीयसवने प्रजनयन्ति ॥६॥ त्रिष्टुभः सत्यो जगत्यो रूपेण तस्माज्जगतीनां लोके क्रियन्ते ॥७॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥८॥ और्णायवं भवति ॥९॥ अङ्गिरसो वै सत्रमासत तेषामाप्तः स्पृतः स्वर्गो लोक आसीत्पन्थानं तु देवयानं न प्राजानश्स्तेषाङ्कल्याण आङ्गिरसोऽध्यायमुदव्रजन् स ऊर्णायुङ्गन्धर्वमप्सरसां मध्ये प्रेङ्ख्यमाण—मुपैत्स ईयामिति यां यामभ्यदिशत्सैनमकामयत तमभ्यवदत्कल्याणा ३ इत्याप्तो वै वः स्पृतः स्वर्गो लोकः पन्थानं तु देवयानं न प्रजानीथेदश्साम स्वर्ग्यं तेन स्तुत्वा स्वर्गं लोकमेष्यथ मा तु वोचोऽहमदर्शमिति ॥१०॥ स ऐत्कल्याणः सोऽब्रवीदाप्तो वै नः स्पृतः स्वर्गो लोकः पन्थानं तु देवयानन्न प्रजानीम इवश्साम स्वर्ग्यं तेन स्तुत्वा स्वर्गं लोकमेष्याम इति कस्तेऽवोचदित्यहमेवाददर्शमिति तेन स्तुत्वा स्वर्गं लोकमायन्नहीयत्कल्याणोऽनृसश्हि सोऽवदत्स एषः श्वित्रः ॥११॥ स्वर्ग्यं वा एतत्साम स्वर्गलोकः पुण्यलोको भवत्यौर्णायवेन तुष्टुवानः ॥१२॥ बृहत्कं भवति ॥१३॥ सामाऽऽर्षेयेण प्रशस्तं त्वश्हीत्यन्नाद्यस्यावरुध्यै हीति वा अन्नं प्रदीयते षोडशिनमुचैवैतेनोद्यच्छति ॥१४॥

आतीषादीयं भवति ॥१५॥ आयुर्वा आतीषादीयमायुषोऽ-
वरुध्यै ॥१६॥ आतमितोर्निधनमुपयन्त्यायुरेव सर्वमाप्नुवन्ति ॥१७॥
नानदं भवति ॥१८॥ ज्यायोऽभ्यारम्भमतिहाय पञ्चममहः षष्ठस्याऽह
आरम्भस्तेन षष्ठमहरारभन्ते सन्तत्यै ॥१९॥ षोडशाक्षरेण प्रस्तौति
षोडशिनमुचैवैतेनोद्यच्छति ॥२०॥ आन्धीगवं भवति ॥२१॥ पद्या
वा अन्या विराडक्षर्याऽन्यास्माल्लोकात्पद्या विराजाऽन्नाद्यमव-
रुन्धेऽमुष्मादक्षर्ययोभयोरनयोर्लोकयोरन्नाद्यमवरुन्ध आन्धीगवेन
तुष्टुवानः ॥२२॥ वात्सप्रं भवति ॥२३॥ एतस्मिन्वै वैराजं प्रतिष्ठितं
प्रतितिष्ठति वात्सप्रेण तुष्टुवानः ॥२४॥ वत्सप्रीर्भालन्दनः श्रद्धां
नाऽविन्दत सतपोऽतप्यत स एतद्वात्सप्रमपश्यत्स श्रद्धामविन्दत श्रद्धां
विन्दामहा इति वै सत्रमासते विन्दते श्रद्धाम् ॥२५॥ ई निधनं
तथा ह्येतस्याहो रूपं निधनान्ताः पवमाना भवन्त्यहो धृत्यै
स्तोमः ॥२६॥

द्वादशः खण्डः

‘अग्निं वो वृधन्त’मिति ॥१॥ अवर्द्धन्त ह्येतर्हि यजमानमेवैतया
वर्द्धयन्ति ॥२॥ ‘वयमु त्वामपूर्व्ये’ त्यपूर्वाश्चेतर्हि प्रजापतेस्तनूम-
गच्छन्न पूर्वमेवैतया यजमानं गमयन्ति ॥३॥ ‘इममिन्द्र सुतं पिब
ज्येष्ठममर्त्यं मद’मिति ज्यैष्ठ्यश्चेतर्हि वाचोऽगच्छन् ज्यैष्ठ्यमेवैतया
यजमानं गमयन्ति ॥४॥ सैन्धुक्षितं भवति ॥५॥ सिन्धुक्षिर्द्वै
राजन्यर्षिर्ज्यौगपरुद्धश्चरन् स एतत् सैन्धुक्षितमपश्यत् सोऽवागच्छत्
प्रत्यतिष्ठदवगच्छति प्रतितिष्ठति सैन्धुक्षितेन तुष्टुवानः ॥६॥ सौभरं
भवति बृहतस्तेजः ॥७॥ पन्नमिव वै चतुर्थमहस्तदेतेन
बृहतस्तेजसोत्तभ्नोति सौभरेण ॥८॥ वसिष्ठस्य प्रियं भवति ॥९॥
एतेन वै वसिष्ठं इन्द्रस्य प्रेमाणमगच्छत् प्रेमाणं देवतानाङ्गच्छति
वासिष्ठेन तुष्टुवानः स्तोमः ॥१०॥

त्रयोदशः खण्डः

इन्द्रश्च बृहच्च समभवतां तमिन्द्रं बहदेकया तन्वात्यरिच्यत
तस्या अविभेदनयामाऽभि भविष्यतीति सोऽब्रवीत् षोडशी तेऽयं
यज्ञक्रतुरस्त्विति स षोडश्यभवत्तदस्य जन्म ॥१॥ अतिश्रिया
भ्रातृव्यश्चिच्यते यो गायत्रीषु द्विपदासु बृहता षोडशिना स्तुते ॥२॥
‘उप नो हरिभिः सुत’मित्येता वै गायत्र्यो द्विपदा एतासु
स्तोतव्यम् ॥३॥ इन्द्रः प्रजापतिमुपाधावद् वृत्रश्हनानीति तस्मा
एतामनुष्टुभमपहरसं प्रायच्छत्तया नाऽस्तृणुत यदस्तृतोव्यनदत्तन्नानदस्य
नानदत्वम् ॥४॥ तं पुनरुपाधावत्तस्मै सप्तानां होत्राणां हरो निर्माय
प्रायच्छत् तमस्तृणुत ॥५॥ स्तृणुते तं यं तुस्तूर्षते य एवं
वेद ॥६॥ तस्माद्द्वीवतीषु स्तुवन्ति हरिवतीः शःसन्ति हरिवतीषु
ग्रहो गृह्यते हरो ह्यस्मै निर्माय प्रायच्छत् ॥७॥ एकविंशायतनो
वा एष यत् षोडशी सप्त हि प्रातःसवने होत्रा वषट् कुर्वन्ति
सप्त माध्यन्दिने सवने सप्त तृतीयसवने ॥८॥ गौरीवितं
भवति ॥९॥ गौरीवितिर्वा एतच्छाक्त्यो ब्रह्मणोऽतिरिक्त-
मपश्यत्तद्गौरीवितमभवदतिरिक्तं वा एतदतिरिक्तेन स्तुवन्ति यद्गौरीवितेन
षोडशिनश्चस्तनवान् भवत्यपि प्रजाया उपकलृप्तः ॥१०॥ विशालं
लिबुजया भूत्याऽभ्यधादिति होवाचोपोदिति गौपालेयोऽनुष्टुभि
नानदमकगौरीवितेन षोडशिनमस्तोष्टाञ्जसा श्रियमुपागान्न श्रिया
अवपद्य इति ॥११॥ एष वै विशालं लिबुजया भूत्याऽभिदधाति
योऽनुष्टुभि नानदं कृत्वा गौरीवितेन षोडशिना स्तुतेऽञ्जसाश्रिय-
मुपैति न श्रिया अवपद्यते ॥१२॥ शक्वरीषु षोडशिना स्तुवीत
यः कामयेत वज्री स्यामिति ॥१३॥ वज्रो वै षोडशी वज्रः
शक्वर्यो वज्रेणैवास्मै वज्रःस्पृणोति वज्री भवति ॥१४॥

अनुष्टुप्सु षोडशिना स्तुवीत यः कामयेत न मा वागति
वदेदिति ॥१५॥ वज्रो वै षोडशी वागनुष्टुब्बज्जेणैवाऽस्मै
वाचःस्पृणोति नैनं वागतिवदति ॥१६॥ 'असावि सोम इन्द्र त'
इत्येतासु स्तोतव्यम् ॥१७॥ विराट्स्वन्नाद्यकामः षोडशिना स्तुवीत
वज्रो वै षोडशी वैराजमन्नं वज्जेणैवास्मा अन्नःस्पृणोत्यन्नादो
भवति ॥१८॥ 'प्र वो महे महे वृधे भरध्व'मित्येतासु
स्तोतव्यम् ॥१९॥ त्रयस्त्रिंशदक्षरा वा एता विराजो यदेकविंशतिः
प्रतिष्ठा सा यद्द्वादशप्रजातिः सा ॥२०॥ प्रतिष्ठाय प्रजायते नो
चाऽन्तस्थायाञ्जीयते य एवं वेद ॥२१॥ अथ वा एता एकपदाख्यक्षरा
विष्णोश्छन्दो भुरिजः शक्वर्व्यः ॥२२॥ एताभिर्वा इन्द्रो वृत्रमहन्
क्षिप्रं वा एताभिः पाप्मानं हन्ति क्षिप्रं वसीयान् भवति ॥२३॥
चतुस्त्रिंशदक्षराः सःस्तुतो भवति त्रयस्त्रिंशद्देवताः प्रजापतिश्चतु-
स्त्रिंशो देवतानां प्रजापतिमेवोपयन्त्यरिष्ट्यै ॥२४॥ हिरण्य-
सप्रदायः षोडशिना स्तुवते ज्योतिष्मानस्य षोडशी भवति ॥२५॥
अश्वः कृष्ण उपतिष्ठति साम्येक्ष्याय भ्रातृव्यलोकमेव स
विधमःस्तिष्ठति ॥२६॥ एकाक्षरं वै देवानामवमं छन्द-
आसीत्सप्ताक्षरं परमं नवाक्षरमसुराणामवमं छन्दआसीत् पञ्चदशाक्षरं
परमं देवाश्च वा असुराश्चास्पृद्धन्त तान् प्रजापतिरानुष्टुभो
भूत्वाऽन्तरातिष्ठत्तं देवासुरा व्यह्वयन्त स देवानुपावर्तत ततो देवा
अभवन् पराऽसुराः ॥२७॥ भवत्यात्मना पराऽस्य भ्रातृव्यो भवति
य एवं वेद ॥२८॥ ते देवा असुराणामेकाक्षरेणैव पञ्चदशाक्षरमवृञ्जत
द्व्यक्षरेण चतुर्दशाक्षरं त्र्यक्षरेण त्रयोदशाक्षरञ्चतुरक्षरेण द्वादशाक्षरं
पञ्चाक्षरेणैकादशाक्षरं षडक्षरेण दशाक्षरं सप्ताक्षरेण नवाक्षर-
मष्टाभिरेवाष्टा ववृञ्जत ॥२९॥

एवमेव भ्रातृव्याद्भूतिं वृङ्क्ते य एवं वेद ॥ ३० ॥ अपरुद्ध
यज्ञइव वा एष यत् षोडशी कनीयस्विनइव वै तर्हि देवा आसन्
भूयस्विनोऽसुराः कनीयस्वी भूयस्विनं भ्रातृव्यं वृङ्क्ते य एवं
वेद ॥ ३१ ॥ 'यस्मादन्यो न परोऽस्ति जातो य आवभूव भुवनानि
विश्वाः प्रजापतिः प्रजया सम्बिदानस्त्रीणि ज्योतींश्चि सचते स
षोडशीत्युद्गाता ग्रहमवेक्षते ॥ ३२ ॥ ज्योतिष्मानस्य षोडशी भवति
य एवं वेद ॥ ३३ ॥ एकविंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै
प्रतितिष्ठति ॥ ३४ ॥

॥ इति द्वादशोऽध्यायः ॥



त्रयोदशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

‘गोवित् पवस्व वसुविद्धिरण्यविदि’ति पञ्चमस्याहः
प्रतिपद्भवति ॥ १ ॥ गोविद्धा एतद्वसुविद्धिरण्यविद्यच्छक्वर्यः ॥ २ ॥
पशवः शक्वर्यः सर्वं पशुभिर्विन्दते ॥ ३ ॥ ‘त्वस्सुवीरो असि
सोम विश्वविदि’त्येष वाव सुवीरो यस्य पशवस्तदेव
तदभिवदति ॥ ४ ॥ ‘तास्ते क्षरन्तु मधुमद्घृतं पय’ इति मधुमद्वै
घृतं पयः पशवः क्षरन्ति तदेव तदभिवदति ॥ ५ ॥ पवमानस्य
विश्वविदित्यनुरूपो भवति ॥ ६ ॥ विश्वमेव तद्वित्तमभिवदति विश्वश्चि
पशुभिर्विन्दते ॥ ७ ॥ ‘प्र ते सर्गा असृक्षते’ति सृष्टानीव
ह्येतर्हहानि ॥ ८ ॥ पूर्वमुच्चैव तद्रूपमपरेण रूपेणानुवदति
यत्पूर्वस्वरूपमपरेण रूपेणानुवदति तदनुरूपस्यानुरूपत्वमनुरूप एनं
पुत्रो जायते य एवं वेद स्तोत्रीयानुरूपौ तृचौ भवतः प्राणा—
पानानामवरुध्यै ॥ ९ ॥ सप्तर्च्यौ भवतश्छन्दसां घृत्यै ॥ १० ॥
चतुर्ऋचो भवति प्रतिष्ठायै ॥ ११ ॥ तृच उत्तमो भवति येनैव
प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति त्रिणव एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै
पुष्ट्यै त्रिवृद्धा एष पुष्टः ॥ १२ ॥

द्वितीयः खण्डः

‘तव त्रियो वर्ष्मस्येव विद्युत’ इत्याग्नेयमाज्यं भवति ॥ १ ॥
श्रीर्वै पशवः श्रीः शक्वर्यस्तदेव तदभिवदति ॥ २ ॥ ‘अग्नेश्चिकित्
उषसामिवेतय’ इतीतानीव ह्येतर्हहानीत्याते यतन्ते रथ्यो यथा
पृथुगि’त्येव ह्येतर्हहानि यतन्ते ॥ ३ ॥

‘पुरूरुणाचिध्यस्त्यवो नूनं वां वरुणे’ति मैत्रावरुणं यद्वै यज्ञस्य दुरिष्टं तद्वरुणो गृह्णाति तदेव तदवयजति ॥ ४ ॥
 ‘उत्तिष्ठन्नोजसा सहे’त्यैन्द्रम् ॥ ५ ॥ पञ्च वा ऋतव उत्थानस्य रूपमोजसा सहेत्योजसैव वीर्य्येण सहोत्तिष्ठन्ति ॥ ६ ॥ ‘इन्द्राग्नी युवामिम’ इति राथन्तरमैन्द्राग्नम् ॥ ७ ॥ राथन्तरमेतत्परोक्षं यच्छक्वर्थ्यो राथन्तरमेव तद्रूपं निर्घोतयति स्तोमः ॥ ८ ॥

तृतीयः खण्डः

‘अर्षा सोम द्युमत्तम’ इति विष्णुमत्यो गायत्र्यो भवन्ति ॥ १ ॥
 ब्रह्म वै गायत्री यज्ञो विष्णुर्ब्रह्मण्येव तद्यज्ञं प्रतिष्ठापयति ॥ २ ॥
 ‘सोम उष्वाणस्तोतृभिरि’ति सिमानां रूपश्स्वेनैवैतास्तद्रूपेण समर्द्धयति ॥ ३ ॥ ‘यत्सोमचित्रमुक्थ्यामि’ति गायत्र्यः सत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण तस्मात् त्रिष्टुभां लोके क्रियन्ते ॥ ४ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ५ ॥ यण्वं भवति पशवो वै यण्वं पशूनाम—वरुध्यै ॥ ६ ॥ सन्ततं गायति यज्ञस्य सन्तत्यै ॥ ७ ॥ अध्यर्द्धेऽङ्गं तथा ह्येतस्याहो रूपम् ॥ ८ ॥ शाकलं भवति ॥ ९ ॥ एतेन वै शाकलः पञ्चमेऽहनि प्रत्यतिष्ठत्प्रतितिष्ठति शाकलेन तुष्टुवानः ॥ १० ॥ वार्शं भवति ॥ ११ ॥ वृशो वैजानस्यरुणस्य त्रैधात्वस्यैक्ष्वाकस्य पुरोहित आसीत्स ऐक्ष्वाकोऽधावयत् ब्राह्मणकुमारश्चरथेन व्यच्छिनत्स पुरोहितमब्रवीत्तव मा पुरोधायामिद—मीदृगुपागादिति तमेतेन साम्ना समैरयत्तद्वाव स तर्ह्यकामयत कामसनि साम वार्शं काममेवैतेनावरुध्ये ॥ १२ ॥ अध्यर्द्धेऽङ्गं तथा ह्येतस्याऽहो रूपम् ॥ १३ ॥ मानवं भवति ॥ १४ ॥ एतेन वै मनुः प्रजातिं भूमानमगच्छत्प्रजायते बहुर्भवति मानवेन तुष्टुवानः ॥ १५ ॥

आनूपं भवति ॥१६॥ एतेन वै वध्न्याश्च आनूपः पशूनां
भूमानमाश्नुत पशूनां भूमानमश्नुत आनूपेन तुष्टुवानः ॥१७॥ वाग्रं
भवति ॥१८॥ सामार्षेयेण प्रशस्तं यं वै गां यमश्चं यं पुरुषं
प्रशस्सन्ति ॥१९॥ अध्यर्द्धेऽङ्गं तथा ह्येतस्याहो रूपं ॥२०॥
त्रिणिघनमाग्नेयं भवति प्रतिष्ठायै ॥२१॥ अग्निः सृष्टो नोददीप्यत
तं प्रजापतिरेतेन साम्नोपाधमत् स उददीप्यत दीप्तिश्च वा एतत्साम
ब्रह्मवर्चसञ्च दीप्तिञ्चैवैतेन ब्रह्मवर्चसञ्चावरुन्धे ॥२२॥ शैशवं
भवति ॥२३॥ शिशुर्वा आङ्गिरसो मन्त्रकृतां मन्त्रकृदासीत् स
पितृन् पुत्रका इत्यामन्त्रयत तं पितरोऽब्रुवन्नघर्मं करोषि यो नः
पितृन् सतः पुत्रका इत्यामन्त्रयस इति सोऽब्रवीदहं वाव पितास्मि
यो मन्त्रकृदास्मीति तं देवेष्वपृच्छन्त ते देवा अब्रुवन्नेष वाव पिता
यो मन्त्रकृदिति तद्वै स उदजयदुज्जयति शैशवेन तुष्टुवानः ॥२४॥
गायत्रीषु स्तुवन्ति प्रतिष्ठायै ब्रह्मवर्चसाय येनैव प्राणेन प्रयन्ति
तमभ्युद्यन्ति ॥२५॥ विष्णुमत्यो गायत्र्यो भवन्ति तदु
त्रैष्टुभाद्रूपान्नयन्ति स्तोमः ॥२६॥

चतुर्थः खण्डः

इन्द्रः प्रजापतिमुपाधावद्वत्रश्हनानीति तस्माएतच्छन्दोभ्य इन्द्रियं
वीर्यं निर्माय प्रायच्छदेतेन शक्नुहीति तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वश्—
सीमानमभिनत्तत्सिमामह्वमकरोत्तन्मह्वया महान् दोष आसीत्
तन्महानाम्न्यः ॥१॥ दिशः पञ्चपदा दाधारर्तून् षट्पदा छन्दांसि
सप्तपदा पुरुषं द्विपदा ॥२॥ द्वयोपशाः सस्तुता भवन्ति तस्माद्
द्वयोपशाः पशवः ॥३॥ इडे अभितोऽथकारं तस्माच्छृङ्गे तीक्ष्णीयसी
स्तूपात् ॥४॥ उपक्षुद्रा गायति तस्मादुपक्षुद्राः पशवः ॥५॥

असश्शिलष्टा गायति तस्मा दसश्शिलष्टाः पशवः ॥ ६ ॥
 नानारूपा गायति तस्मान्नानारूपाः पशवः ॥ ७ ॥ आपो वै क्षीररसा
 आसस्ते देवाः पापवसीयसादविभयुर्यदप उपनिधाय स्तुवते
 पापवसीयसो विधृत्यै ॥ ८ ॥ विधृतिः पापवसीयसो भवति य
 एवं वेद ॥ ९ ॥ गायत्रमयनं भवति ब्रह्मवर्चसकामस्य स्वर्णिघनं
 मधुनाऽमुष्मिल्लोक उपतिष्ठते त्रैष्टुभमयनं भवत्योजस्कामस्याथ—
 कारणिघनमाज्येनामुष्मिल्लोक उपतिष्ठते जागतमयनं भवति
 पशुकामस्येडानिघनं पयसामुष्मिल्लोक उपतिष्ठते ॥ १० ॥
 अञ्जसाऽर्य्योमाल्यः शक्वरीः प्रारौत्सीदिति होवाचालम्भं
 पारिजातनश्चजनः कौणेयो यद्येताः प्रतिष्ठापश्शक्ष्यतीत्येतद्वा
 एतासामञ्ज एतत्प्रतिष्ठिता य आभिः क्षिप्रं प्रस्तुत्य
 क्षिप्रमुद्गायति ॥ ११ ॥ शक्वरीभिः स्तुत्वा पुरीषेण स्तुवते ॥ १२ ॥
 पशवो वै शक्वर्यो गोष्ठः पुरीषं गोष्ठमेव तत् पशुभ्यः पर्य्यस्यन्ति
 तमेवैनान् प्रवर्त्तयन्त्यविस्रसाय ॥ १३ ॥ 'इन्द्रो मदाय वावृध'
 इत्यवर्द्धन्त ह्येतर्हि ॥ १४ ॥ तासु बार्हद्गिरिस्म ॥ १५ ॥ 'स्वादोरित्था
 विषूवत' इति विषुवान् वै पञ्चममहस्तासु रायोवाजीयम् ॥ १६ ॥
 इन्द्रो यतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छत्तेषां त्रय उदशिष्यन्त
 पृथुरश्मिर्बृहद्गिरीरायोवाजस्तेऽब्रुवन् को न इमान् पुत्रान्
 भरिष्यतीत्यहमितीन्द्रोऽब्रवीत्तानधिनिधाय परिचार्य्यं चरन्वर्द्धयश्स्तान्
 वर्द्धयित्वाब्रवीत् कुमारका वरान् वृणीष्वमित, क्षत्रं मह्यमित्यब्रवीत्
 पृथुरश्मिस्तस्मा एतेन पार्थुरश्मेन क्षत्रं प्रायच्छत् क्षत्रकाम एतेन
 स्तुवीत क्षत्रस्यैवास्य प्रकाशो भवति, ब्रह्मवर्चसं मह्यमित्यब्रवीद्
 बृहद्गिरिस्तस्मा एतेन बार्हद्गिरेण ब्रह्मवर्चसं प्रायच्छत् ब्रह्मवर्चसकाम
 एतेन स्तुवीत ब्रह्मवर्चसी भवती, पशून् मह्यमित्यब्रवीद्रायोवाज

स्तस्मा एतेन रायोवाजीयेन पशून् प्रायच्छत् पशुकाम एतेन स्तुवीत्
पशुमान् भवति ॥१७॥ पार्थुरश्मश्राजन्याय ब्रह्मसाम कुर्यात्
बार्हद्गिरं ब्राह्मणाय रायोवाजीयं वैश्याय स्वेनैवैनास्तद्रूपेण समर्द्धयति
स्तोमः ॥१८॥

पञ्चमः खण्डः

‘असाव्यश्शुर्मदाये’ ति गायत्री भवति मदवद्वै रसवत्तृतीयसवनं
मदमेव तद्रसं दधाति ॥१॥ ‘अभिद्युम्नं बृहद्यश’ इत्यभीति रथन्तरस्य
रूपं बृहदिति बृहत उभयोः सह रूपमुपैत्युभौ हि वर्णावितदहः ॥२॥
‘प्राणा शिशुर्महीना’मिति सिमानाश्चरूपं मह्यो हि सिमाः स्वेनैवैना—
स्तद्रूपेण समर्द्धयति ॥३॥ ‘पवस्व वाजसातय’ इति वैष्णव्योऽनुष्टुभो
भवन्ति ॥४॥ यज्ञो वै विष्णुर्यदत्र नापि क्रियते तद्विष्णुना यज्ञेनापि
करोति ॥५॥ ‘इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा’ इति सिमानाश्चरूपं
स्वेनैवैनास्तद्रूपेण समर्द्धयति ॥६॥ त्रिष्टुभः सत्यो जगत्यो रूपेण
तस्माज्जगतीनांल्लोके क्रियन्ते ॥७॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य
ब्राह्मणम् ॥८॥ सन्तनि भवति पञ्चमस्याहः सन्तत्यै ॥९॥ वाग्वा
एषा प्रतता यद्द्वादशाहस्तस्या एष विषुवान् यत् पञ्चममहस्तामेवैतेन
सन्तनोति ॥१०॥ च्यावनं भवति ॥११॥ प्रजापतिर्वै च्यावनं
प्रजायते बहुर्भवति च्यावनेन तुष्टवानः ॥१२॥ एभ्यो वै लोकेभ्यो
वृष्टिरपाक्रामतां प्रजापतिश्च्यावनेनाच्यावयद्यदच्यावयत्तच्च्यावनस्य
च्यावनत्वं च्यावयति वृष्टिश्च्यावनेन तुष्टवानः ॥१३॥ क्रोशं
भवति ॥१४॥ एतेन वा इन्द्र इन्द्रक्रोशे विश्वामित्रजमदग्नी इमागाव
इत्यक्रोशत् पशूनामवरुध्यै क्रोशं क्रियते ॥१५॥ गौरीवितं भवति
यदेव गौरीवितस्य ब्राह्मणम् ॥१६॥ ऋषभः शक्वरो भवति ॥१७॥

पशवो वै शक्त्वर्थः पशुष्वेव तन्मिथुनमप्यर्ज्जति प्रजात्यै न
 ह वा अनृषभाः पशवः प्रजायन्ते ॥ १८ ॥ पार्थ भवति ॥ १९ ॥
 एतेन वै पृथुर्वैन्य उभयेषां पशूनामाधिपत्यमाश्नुतोभयेषां
 पशूनामाधिपत्यमश्नुते पार्थेन तुष्टुवानः ॥ २० ॥ अष्टेडः पदस्तोभो
 भवति ॥ २१ ॥ 'इन्द्रोवृत्राय वज्रमुदयच्छतं षोडशभिर्भोगैः पर्यभुजत्
 स एतं पदस्तोभमपश्यत्तेनापावेष्टयदपवेष्टयन्निव गायेत्
 पाप्मनोऽपहत्यै ॥ २२ ॥ पाप्मा वाव स तमगृह्णातं पदस्तोभे—
 नापाहतापपाप्मानश्हते पद स्तोभेन तुष्टुवानः ॥ २३ ॥ पदो—
 रुत्तममपश्यत्तत्पदस्तोभस्य पदस्तोभत्वम् ॥ २४ ॥ द्वादशनिधनो भवति
 प्रतिष्ठायै ॥ २५ ॥ दाशस्पत्यं भवति ॥ २६ ॥ यां वै गां प्रशस्सन्ति
 दाशस्पत्येति तां प्रशस्सन्त्यहरेवैतेन प्रशस्सन्ति ॥ २७ ॥ निधनान्ताः
 पवमाना भवन्त्यहो धृत्यै स्तोमः ॥ २८ ॥

षष्ठः खण्डः

'आते अग्न इधीमही'ति ॥ १ ॥ अपच्छिदिव वा एतद्यज्ञकाण्डं
 यदुक्थानि यदेति सलोमत्वायैव ॥ २ ॥ 'इन्द्राय साम गायते'ति
 पूर्णाः ककुभस्तेनानशनायुको भवति ॥ ३ ॥ पुरुषो वै ककुप्
 पुरुषमेव तन्मध्यतः प्रीणाति ॥ ४ ॥ 'असावि सोम इन्द्रत' इति
 सिमानाश्रूपश्स्वेनैवैनाश्स्तद्रूपेण समर्द्धयति ॥ ५ ॥ सञ्जयं
 भवति ॥ ६ ॥ देवाश्च वा असुराश्च समदधत समदधत यतरे नः
 सञ्जयाश्स्तेषां नः पशवोऽसानिति ते देवा असुरान् सञ्जयेन समजयन्
 यत्समजयश्स्तस्मात्सञ्जयं पशूनामवरुध्यै सञ्जयं क्रियते ॥ ७ ॥ सौमित्रं
 भवति ॥ ८ ॥ दीर्घजिह्वी वा इदश्शक्षो यज्ञहा यज्ञायानवलिहत्य—
 चरत्तामिन्द्रः कयाचन मायया हन्तुं नाशस्सताथ ह सुमित्रः कुत्सः
 कल्याण आस तमब्रवीदिमामच्छाब्रूष्वेति तामच्छाब्रूतसैनमब्रवीन्नाहैव—

तन्नु शुश्रुव प्रियमिव तु मे हृदयस्येति तामज्ञपयत्ताऽसऽस्कृतेऽहतां
तद्वाव तौ तर्ह्यकामयेतां कामसनि साम सौमित्रं काममेवैतेनाव—
रुन्धे ॥ ९ ॥ सुमित्रः सन् क्रूरमकरित्येनं वागभ्यवदत्तऽशुगार्थत्स—
तपोऽतप्यत स एतत्सौमित्रमपश्यत्तेन शुचमपाहतापशुचऽहते सौमित्रेण
तुष्टुवानः ॥ १० ॥ महावैश्वामित्रं भवति ॥ ११ ॥ पाप्मानऽहत्वा
यदमहीयन्त तत्महावैश्वामित्रस्य महावैश्वामित्रत्वम् ॥ १२ ॥ 'हयाइहया
ओहहे' ति पशूने वैतेन न्यौहन्त ॥ १३ ॥ त्रीडं भवति त्रिरात्रस्य
धृत्यै ॥ १४ ॥ द्रवन्तीमिडामुत्तमामुपयन्ति षष्ठस्याहः सन्तत्यै ॥ १५ ॥
त्रिणव एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै पुष्ट्यै त्रिवृद्धा एष पुष्टः ॥ १६ ॥

सप्तमः खण्डः

'ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधुप्रियमि'ति षष्ठस्याहः
प्रतिपद्भवति ॥ १ ॥ ज्योतिर्वै गायत्री छन्दसां ज्योती रेवती साम्नां
ज्योतिस्त्रयस्त्रिंशः स्तोमानां ज्योतिरेव तत्सम्यक् सन्दधात्यपि ह
पुत्रस्य पुत्रो ज्योतिष्मान् भवति ॥ २ ॥ 'मधुप्रियमि'ति पशवो वै
रेवत्यो मधुप्रियं तदेव तदभिवदति ॥ ३ ॥ 'मदिन्तमो मत्सरइन्द्रियोरस'
इतीन्द्रियं वै वीर्यं रसः पशवस्तदेव तदभिवदति ॥ ४ ॥ 'असृक्षत
प्रवाजिन' इत्यनुरूपो भवति ॥ ५ ॥ सृष्टानीव ह्येतर्ह्यहानि ॥ ६ ॥
पूर्वमुच्चैव तद्रूपमपरेण रूपेणानुवदति यत्पूर्व्वंरूपमपरेण रूपेणानु—
वदति तदनुरूपस्यानुरूपत्वमनुरूपेण पुत्रो जायते य एवं वेद
स्तोत्रीयानुरूपौ तृचौ भवतः प्राणापानानामवरुध्यै ॥ ७ ॥ दशर्च्यौ
भवतो दशाक्षरा विराड् वैराजमन्नमन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ८ ॥ उत्तरो
दशर्च्यो भवति सोदर्क इन्द्रियस्य वीर्यस्य रसस्यानतिक्षाराय ॥ ९ ॥
यत्र वै देवा इन्द्रियं वीर्यंरसमपश्यंस्तदनून्यतुदन् ॥ १० ॥

चतुर्ऋचो भवति प्रतिष्ठायै ॥११॥ ध्वस्रे वै पुरुषन्ती तरन्त—
 पुरुमीढाभ्यां वैददश्चिभ्याऽसहस्राण्यदिच्छतां तावैक्षेतां कथं
 नाविदमात्तमप्रतिगृहीतऽस्यादिति तौ प्रत्यैतां ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा
 सहस्राणि दद्महे तरत्समन्दी धावतीति ततो वै तत्तयोरात्तमप्रति—
 गृहीतमभवत् ॥१२॥ आत्तमस्याप्रतिगृहीतं भवति य एवं वेद ॥१३॥
 विनाराशऽसो भवत्युभयस्यान्नाद्यस्यावरुध्वै मानुषस्य च दैवस्य
 च ॥१४॥ त्व उत्तमो भवति येनैव प्राणेन प्रयन्ति
 तमभ्युद्यन्ति ॥१५॥ त्रयस्त्रिंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै
 देवतासु वा एष प्रतिष्ठितः ॥१६॥

अष्टमः खण्डः

‘इमऽस्तोममर्हते जातवेदस’ इत्याग्नेयमाज्यं भवति सोदर्क—
 मिन्द्रियस्य वीर्यस्य रसस्यानतिक्षाराय यत्र वै देवा इन्द्रियं
 वीर्यं रसमपश्यऽस्तदनुन्यतुदन् ॥१॥ ‘प्रतिवाऽसूर उदित’ इति
 सूरवन्मैत्रावरुणम् ॥२॥ अन्तो वै सूरोजन्त एतत् षष्ठमहरहामन्त
 एव तदन्ते न स्तुवते प्रतिष्ठायै ॥३॥ ‘भिन्धि विश्वा अपद्विष’
 इत्यैन्द्रऽसोदर्कमिन्द्रियस्य वीर्यस्य रसस्यानतिक्षाराय यत्र वै देवा
 इन्द्रियं वीर्यं रसमपश्यऽस्तदनुन्यतुदन् ॥४॥ ‘यज्ञस्य हिस्थं
 ऋत्विज’त्यैन्द्राग्नऽसोदर्कमिन्द्रियस्य वीर्यस्य रसस्यानतिक्षाराय यत्र
 वै देवा इन्द्रियं वीर्यं रसमपश्यऽस्तदनुन्यतुदन् स्तोमः ॥५॥

नवमः खण्डः

‘इन्द्रायेन्दो मरुत्वत’ इति मरुत्वत्यो गायत्र्यो भवन्ति ॥१॥
 मरुत्वद्धि माध्यन्दिनऽसवनम् ॥२॥ ‘मृज्यमानः सुहस्त्ये’ति
 सिमानाऽरूपम् ॥३॥

समानं वै सिमानाञ्च रूपं रेवतीनाञ्च सिमाभ्यो ह्यधिरेवत्यः
 प्रजायन्ते ॥ ४ ॥ 'एतमुत्यन्दशक्षिप' इत्यादित्या आदित्या वा इमाः
 प्रजास्तासामेव मध्यतः प्रतितिष्ठति ॥ ५ ॥ गायत्र्यः सत्यस्त्रिष्टुभो
 रूपेण तस्मात्त्रिष्टुभां लोके क्रियन्ते ॥ ६ ॥ गायत्रं भवति यदेव
 गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ७ ॥ इषोवृधीयं भवति ॥ ८ ॥ पशवो वा
 इषोवृधीयं पशूनामवरुध्या इषे वै पञ्चममहर्वृधेषष्ठमवर्द्धन्त ह्येतर्हि
 यजमानमेवैतेन वर्द्धयन्ति ॥ ९ ॥ क्रौञ्चं भवति ॥ १० ॥
 क्रुडेष्यमहरविन्देऽप्यमिव वै षष्ठमहरेवैतेन विन्दन्ति ॥ ११ ॥
 वाजदावर्यो भवन्ति ॥ १२ ॥ अन्नं वै वाजोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै यदा
 हि वा अन्नमथ गौरथाश्चोऽथ पुरुषो वाजी ॥ १३ ॥ रेवत्यो भवन्ति
 प्रतिष्ठायै ॥ १४ ॥ षणिणधना षड्रात्रस्य धृत्यै ॥ १५ ॥ आपो वै
 रेवत्यस्ता यत् पृष्ठं कुर्युरपशुर्यजमानः स्यात् पशूनस्य निर्दहेयुर्यत्र
 वा आपो वीव वर्तन्ते तदोषधयो जायन्तेऽथ यत्रावतिष्ठन्ते
 निर्मृतुकास्तत्र भवन्ति तस्मात् पवमाने कुर्वन्ति पराचा हि पवमानेन
 स्तुवते ॥ १६ ॥ मेथी वा इषोवृधीयश्चरज्जुः क्रौञ्चं वत्सो वाजदावर्यो
 रेवत्यो मातरो यदेतान्येवऽसामानि क्रियन्त एवमेव प्रत्तां
 दुग्धे ॥ १७ ॥ औक्ष्णोरन्ध्रे भवतः ॥ १८ ॥ उक्ष्णोरन्ध्रे वा एताभ्यां
 काव्योऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य लोकस्यानुख्यात्यै
 स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः ॥ १९ ॥ वाजजिह्ववति सर्वस्याप्त्यै
 सर्वस्य जित्यै सर्वं वा एते वाजं जयन्ति ये
 षष्ठमहरागच्छन्ति ॥ २० ॥ अन्नं वै वाजोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ २१ ॥
 वरुणसाम भवति ॥ २२ ॥ एतेन वै वरुणो राज्यमाधिपत्यम्—
 गच्छद्यशोऽभवद्राज्यमाधिपत्यं गच्छति यशो वरुणसाम्ना
 तुष्टुवानः ॥ २३ ॥

अङ्गिरसां गोष्ठो भवति ॥ २४ ॥ पशवो वै रेवत्यो गोष्ठमेव
तत्पशुभ्यः पर्यस्यन्ति तमेवैनान् प्रवर्तयन्त्यविस्रसाय ॥ २५ ॥
इहवद्दामदेव्यं भवति ॥ २६ ॥ एतेन वै वामदेवोऽन्नस्य पुरोधाम—
गच्छदन्नं वै ब्रह्मणः पुरोधान्नस्यावरुध्यै ॥ २७ ॥ गायत्रीषु स्तुवन्ति
प्रतिष्ठायै ब्रह्मवर्चसाय येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ २८ ॥
इन्द्रवत्यो गायत्र्यो भवन्ति तदु त्रैष्टुभाद्रूपान्नयन्ति स्तोमः ॥ २९ ॥

दशमः खण्डः

यातयामान्यन्यानि छन्दाश्स्ययातयामा गायत्री तस्माद्गायत्रीषु
स्तुवन्ति ॥ १ ॥ 'सुरूपकृत्तु मूतय' इत्यभ्यारम्भेण षट्पदाः
षष्ठस्याहो रूपं तेन षष्ठमहरारभन्ते सन्तत्यै ॥ २ ॥ 'उभे यदिन्द्र
रोदसी' इति षट्पदाः षष्ठस्याहो रूपं तेन षष्ठमहरारभन्ते
सन्तत्यै ॥ ३ ॥ रेवतीषु वारवन्तीयं पृष्ठं भवति ॥ ४ ॥ अपां वा
एष रसो यद्रेवत्यो रेवतीनाश्चरसो यद्वारवन्तीयश्चरसा एव तद्रेवतीः
प्रयुङ्क्ते यद्वारवन्तीयेन पृष्ठेन स्तुवते ॥ ५ ॥ रेवद्वा एतद्रेवत्यं
यद्वारवन्तीयमस्य रेवान् रैवत्यो जायते ॥ ६ ॥ रेवान् भवति य
एवं वेद ॥ ७ ॥ केशिने वा एतद्दाल्भ्याय सामाविरभवत्तदेनम—
ब्रवीदगातारो मा गायन्ति मा मयोद्गासिषुरिति कथं त आगा
भगव इत्यब्रवीदागेयमेवास्म्यागायन्निव गायेत्प्रतिष्ठायै तदलम्भं
पारिजानतं पश्चादक्षश्शयानमेतामागां गायन्तमजानत्तमब्रवीत्
पुरस्त्वादधा इति तमब्रुवन् को न्वयं कस्मा अलमित्यलन्नु वै
मह्यमिति तदलम्भस्यालम्भत्वम् ॥ ८ ॥ इहेहेति गायेत्प्रतिष्ठायै ॥ ९ ॥
ऋषभो रैवतो भवति ॥ १० ॥ पशवो वै रैवत्यः पशुष्वेव तन्मिथुन
मप्यर्ज्जति प्रजात्यै न ह वा अनृषभाः पशवः प्रजायन्ते ॥ ११ ॥

श्येनो भवति ॥१२॥ श्येनो ह वै पूर्वप्रेतानि वयाँस्याप्नोति
पूर्वप्रेतानीव वै पूर्वाण्यहानि तेषामाप्यै श्येनः क्रियते ॥१३॥
श्येनो वा एतदहः सम्पारयितुमर्हति स हि वयसामाशिष्ठस्तस्या—
नपहननाय सम्पारणायैतत् क्रियतेऽन्तो हि षष्ठञ्चाहः सप्तमञ्च ॥१४॥
ब्रह्मवादिनो वदन्ति यद् बृहदायतनानि पृष्ठान्यथैते द्वे गायत्र्यौ द्वे
जगत्यौ क्व तर्हि बृहत्यो भवन्तीति ॥१५॥ ये द्वे जगत्योः पदे
ते गायत्र्या उप सम्पद्येते तत् सर्वा बृहत्यो भवन्त्यायतने पृष्ठानि
यातयत्यायतनवान् भवति ॥१६॥ षट्पदासु स्तुवन्ति षड्रात्रस्य
धृत्यै ॥१७॥ सप्तपदया यजति सप्तमस्याहः सन्तत्यै स्तोमः ॥१८॥

एकादशः खण्डः

‘परिस्वानो गिरिष्ठा’ इति परिवत्यो गायत्र्यो भवन्ति सर्वस्य
पर्याप्त्यै ॥१॥ ‘स सुन्वेयो वसूनामि’ति पशवो वै वसु पशूनाम’
वरुध्यै ॥२॥ ‘तं वः सखायो मदाये’ति वालखिल्याः ॥३॥
वालखिल्यावेतौ तृचौ षष्ठे चाहनि सप्तमे च ॥४॥ यदेतौ
वालखिल्यौ तृचौ भवतोऽहोरेव व्यतिषङ्गाया व्यवस्रःसायं
सन्तत्यै ॥५॥ ‘सोमाः पवन्त इन्द्रव’ इत्यनुष्टुभो निभसदो भवन्ति
प्रतिष्ठायै ॥६॥ ‘अया पवा पवस्वैना वसूनी’ति त्रिष्टुभस्सत्यो
जगत्यो रूपेण तस्माज्जगतीनां लोके क्रियन्ते ॥७॥ गायत्रं भवति
यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥८॥ वैदन्वतानि भवन्ति ॥९॥ विदन्वान्वै
भार्गव इन्द्रस्य प्रत्यहस्तःशुगार्च्छत् स तपोऽतप्यत स एतानि
वैदन्वतान्यपश्यतैः शुचमपाहतापशुचश्हते वैदन्वता—
स्तुष्टुवानः ॥१०॥ भरद्वाजस्य लोम भवति पशवो वै लोम
पशूनामवरुध्यै ॥११॥

तदु दीर्घमित्याहुरायुर्वै दीर्घमायुषोऽवरुध्यै ॥ १२ ॥ कार्णश्रवसं
 भवति शृण्वन्ति तुष्टुवानम् ॥ १३ ॥ कर्णश्रवा वा एत दाङ्गिरसः
 पशुकामः सामापश्यत्तेन सहस्रं पशूनसृजत यदेतत्साम भवति
 पशूनां पुष्ट्यै ॥ १४ ॥ गौरीवितं भवति यदेव गौरीवितस्य
 ब्राह्मणम् ॥ १५ ॥ मधुश्चुनिधनं भवति ॥ १६ ॥ परमस्यान्नाद्यस्याव-
 रुध्यै परमं वा एतदन्नाद्यं यन्मधु ॥ १७ ॥ प्रजापतेर्वा एतौ स्तनौ
 यद् घृतश्चुनिधनञ्च मधुश्चुनिधनञ्च यज्ञो वै प्रजापतिस्तमेताभ्यां
 दुग्धे यं कामं कामयते तन्दुग्धे ॥ १८ ॥ क्रुङ्केष्यमहरविन्देष्टमिव
 वै षष्ठमहरहरेवैताभ्यां विन्दन्ति ॥ २० ॥ शनौष्ठं भवति ॥ २१ ॥
 शनुष्टिर्वा एतेनाङ्गिरसोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य
 लोकस्यानुख्यात्यै स्वर्गाल्लोकात्र च्यवते तुष्टुवानः ॥ २२ ॥ अग्नेर्वा
 एतद्वैश्वानरस्य साम दीदिहीति निधनमुपयन्ति दीदायेव
 ह्यग्निर्वैश्वानरः ॥ २३ ॥ निधनान्ताः पवमाना भवन्त्यहो घृत्यै
 स्तोमः ॥ २४ ॥

द्वादशः खण्डः

ब्रह्मवादिनो वदन्ति प्रायणतो द्विपदाः कार्य्या ३ उदयनता ३
 इति ॥ १ ॥ उदयनतएव कार्य्याः पुरुषो वै द्विपदाः प्रतिष्ठायै ॥ २ ॥
 वाचा वै सर्वं यज्ञं तन्वते तस्मात्सर्वा वाचं पुरुषो वदति सर्वा
 ह्यस्मिन् सञ्स्तुता प्रतितिष्ठति ॥ ३ ॥ गूर्दो भवति ॥ ४ ॥ गौपायनानां
 वै सत्रमासीनानां किरातकुल्या वसुरमाये अन्तः परिध्यसून् प्राकिरतां
 ते 'अग्ने त्वन्नो अन्तम' इत्यग्निमुपासीदश्स्तेनासूनस्पृण्वश्स्तद्वाव
 ते तर्ह्यकामयन्त कामसनि साम गूर्दः काममेवैतेनावरुन्धे ॥ ५ ॥
 गोतमस्य भद्रं भवति ॥ ६ ॥

आशिषमेवास्मा एतेनाशास्ते साम हि सत्याशीः ॥७॥ एतेन
 वै गोतमो जेमानं महिमानमगच्छत् तस्माद्यो च पराञ्चो गोतमाद्यो
 चार्वाञ्चस्त उभये गोतम ऋषयो ब्रुवते ॥८॥ उद्वंशशपुत्रो
 भवति ॥९॥ यद्वा उद्वंशीयं तदुद्वंशपुत्रः ॥१०॥ अर्द्धेडामति—
 स्वरति ॥११॥ तस्मादूधर्द्धारा अति क्षरन्तीडायामन्ततः पशुषु
 प्रतितिष्ठति ॥१२॥ क्लृप्त उपरिष्ठाच्छ् साम च विमुच्येते
 अभ्युस्वरेण सप्तममहः स्वरति सन्तत्यै ॥१३॥ ऊहुषीव वा एतर्हि
 वाग्यदा षडहः सन्तिष्ठते न बहु वदेन्नान्यं पृच्छेन्नान्यस्मै
 प्रब्रूयात् ॥१४॥ मधु वाशयेद् घृतं वा यथोहुषो बहं प्रत्यनक्ति
 तथा तत् ॥१५॥ त्रयत्रिंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै देवतासु
 वा एष प्रतिष्ठितः ॥१६॥

॥ इति त्रयोदशोऽध्यायः ॥



चतुर्दशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

आप्यन्ते वा एतत् स्तोमाश्छन्दांसि यत् षडह आप्यते ॥१॥
आप्ते षडहे छन्दांसि स्तोमान् कृत्वा प्रयन्ति ॥२॥ 'प्रकाव्यमुशने
वब्रुवाण' इति गायत्र्या रूपेण प्रयन्ति ॥३॥ इयं वै गायत्र्यस्यामेव
प्रतिष्ठाय प्रयन्ति ॥४॥ त्रिष्टुप् प्रतिपद्भवति ॥५॥ ओजोवीर्यं
त्रिष्टुबोजस्येव वीर्यं पराक्रम्य प्रयन्ति ॥६॥ स्तोत्रीयस्तृचो भवति
प्राणापानानामवरुध्यै ॥७॥ हरिवत्यो भवन्ति छन्दोमानामयात-
यामतायै ॥८॥ द्वादशर्चो भवतः ॥९॥ द्वादशमासाः संवत्सरः
संवत्सरमेव तत्पूर्वस्मै षडहाय प्रत्युद्यच्छति सवीवधतायै ॥१०॥
चतुर्विंशतिर्भवन्ति चतुर्विंशतिरर्द्धमासाः संवत्सरः संवत्सरमेव
तत्पूर्वस्मै षडहाय प्रत्युद्यच्छति सवीवधतायै ॥११॥ दृत ऐन्द्रोत
इति होवाचाभिप्रतारी काक्षसेनिर्ये महावृक्षस्याग्रं गच्छन्ति क्व ते
ततो भवन्ति प्र राजन् पक्षिणः पतन्त्यवापक्षाः पद्यन्ते ॥१२॥ यो
वै विद्वांसस्ते पक्षिणो येऽविद्वांसस्तेऽपक्षास्त्रिवृत्यञ्चदशावेव स्तोमौ
पक्षौ कृत्वा स्वर्गं लोकं प्रयन्ति ॥१३॥ चतुर्विंश एव स्तोमो
भवति प्रतिष्ठायै तेजसे ब्रह्मवर्चसाय ॥१४॥

द्वितीयः खण्डः

'मूर्द्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या' इत्याग्नेयमाज्यं भवति ॥१॥
मूर्द्धा वा एष दिवो यस्तृतीयस्त्रिरात्रः ॥२॥ 'वैश्वानर मृत
आजातमग्नि'मिति वैश्वानर इति वा अग्नेः प्रियं धाम प्रियेणैवैनं
तद्धाम्ना परोक्षमुपशिक्षति ॥३॥

‘प्र वो मित्राय गायते’ति द्यावापृथिवीयं मैत्रावरुणं द्यावा—
पृथिवी वै मित्रावरुणयोः प्रियं धाम प्रियेणैवैनौ तद्धाम्ना परोक्षमुप
शिक्षति ॥ ४ ॥ ‘इन्द्रायाहि चित्रभान’ वित्यार्भवमैन्द्रमृभवो वा
इन्द्रस्य प्रियं धाम प्रियेणैवैनं परोक्षमुपशिक्षति ॥ ५ ॥ ‘तमीडिश्चयो
अर्चिषे’त्यनिरुक्तमैन्द्राग्नं देवतानामनभिधर्षायोत्तमार्द्धं निराह
देवतानामप्रणाशाय स्तोमः ॥ ६ ॥

तृतीयः खण्डः

‘वृषा पवस्व धारये’ति गायत्री भवत्यहो धृत्यै ॥ १ ॥
वृषण्वत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण त्रैष्टुभश्होतदहः ॥ २ ॥ ‘पुनानः सोमश्च
धारये’ति धृत्यै ॥ ३ ॥ ‘प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृत’मिति प्रवत्यो
भवन्ति प्रणिनीषेण्यमिव होतदहः ॥ ४ ॥ जगत्यः सत्यस्त्रिष्टुभो
रूपेण तस्मात्त्रिष्टुभां लोके क्रियते ॥ ५ ॥ गायत्रं भवति यदेव
गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ६ ॥ सन्तनि भवति सप्तमस्याहः सन्तत्यै ॥ ७ ॥
यथा वै व्योकसौ विप्रद्रवत एवमेते षष्ठञ्चाहः सप्तमञ्च विप्रद्रवतस्तौ
यथा समानीय संयुज्यादेवमेवैते एतेन साम्ना संयुनक्ति ॥ ८ ॥
सौपर्णं भवति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ ९ ॥ यज्ञो वै
देवेभ्योऽपाक्रामत्स सुपर्णरूपं कृत्वा चरत्तं देवा एतैः सामभिरारभन्त
यज्ञइव वा एष यच्छन्दोमा यज्ञस्यैवैष आरम्भः ॥ १० ॥ रोहितकूलीयं
भवत्याजिजित्यायै ॥ ११ ॥ एतेन वै विश्वामित्रो रोहिताभ्याश्रोहित
कूलआजिमजयत् ॥ १२ ॥ विश्वामित्रो भरतानां मनस्सत्या—
यात्सौदन्तिभिर्नाम जनयतयाश्शं प्रास्यते मां मां यूयं
वस्निकाञ्जयायेमानि मह्यं यूयं पूरयाय यदीमा विदश्रोहितावश्माचितं
कूलमुद्रहात इति स एतेन सामनी अपश्यत्ताभ्यां युक्त्वा
प्रासेधत्स उदजयत् ॥ १३ ॥

आजिर्वा एष प्रततो यद्द्वादशाहस्तस्यैते उज्जित्यै ॥१४॥
 कण्वरथन्तरं भवति ॥१५॥ तेजो वा एतद्रथन्तरस्य यत्कण्व-
 रथन्तरश्सरसमेव तद्रथन्तरं प्रयुङ्क्ते यत्कण्वरथन्तरेण सप्तमेऽहनि
 स्तुवते ॥१६॥ जामि द्वादशाहस्यास्तीति ह स्माहोग्रदेवो राजनि-
 बर्हितं षष्ठमहर्बाहितश्सप्तमं यत्कण्वरथन्तरं भवति तेनाजामि ॥१७॥
 गौङ्गवं भवति ॥१८॥ अग्निरकामयतान्नादः स्यामिति स तपोऽतप्यत
 स एतद्गौङ्गवमपश्यतेनान्नादोऽभवद्यदनं वित्वा गर्दघदङ्गूयत्तद्गौङ्गवस्य
 गौङ्गवत्वमन्नाद्यस्यावरुध्यै गौङ्गवं क्रियते ॥१९॥ यत्साम देवताः
 प्रशंसति तेन यजमानाः सत्याशिषः सत्याशिषोऽसामेति वै
 सत्रमासते सत्याशिष एव भवति ॥ २० ॥ आयास्यं भवति तिरश्चीन-
 निधनं प्रतिष्ठायै ॥ २१ ॥ अयास्यो वा आङ्गिरस आदित्यानां
 दीक्षितानामन्नमाशनात् स व्यभ्रश्शत स एतान्यायास्यान्यपश्यतै-
 रात्मानश्समश्रीणाद्विभ्रष्टमिव वै सप्तममहर्ह्यदेतत्साम भवत्यहरेव
 तेन सश्श्रीणाति ॥ २२ ॥ प्रवद्गार्गवं भवति ॥ २३ ॥ प्रवता वै
 देवाः स्वर्गं लोकं प्रायन्नुद्धतोदायन् ॥ २४ ॥ निधनान्ताः पवमाना
 भवन्त्यहो धृत्यै स्तोमः ॥ २५ ॥

चतुर्थः खण्डः

‘वयं घत्वा सुतावन्त’ इति सतो बृहत्यो वर्षीयश्छन्द
 आक्रमतेऽनपभ्रश्शाय ॥१॥ ‘नकिष्टं कर्मणानश’दिति बृहत्यः
 सत्योऽभ्यारम्भेण जगत्यः ॥ २ ॥ अपभ्रश्श इव वा एष यज्ज्यायसः
 स्तोमात्कनीयांसं स्तोममुपयन्ति यदेता अभ्यारम्भेण जगत्यो भवन्त्यह
 एव प्रयुत्तम्भाय ॥ ३ ॥ अभिनिधनं काण्वं भवति ॥ ४ ॥ अभि-
 निधनेन वा इन्द्रो वृत्राय वज्रं प्राहरत्तमस्तृणुत स्तृणुते भ्रातृव्यमभि-
 निधनेन तुष्टवानः ॥ ५ ॥

वैखानसं भवति ॥ ६ ॥ वैखानसा वा ऋषय इन्द्रस्य प्रिया आसःस्ताग्रहस्युर्देवमलिम्लुङ्मुनिमरणोऽमारयत्ते देवा अबुवन् क्वतर्षयोऽभूवन्निति तान् प्रैषमैछत्तान्नाविन्दत्स इमान् लोकानेक— धारेणापुनात्तान्मुनिमरणोऽविन्दत्तानेतेन साम्ना समैरयत्तद्वाव स तर्हिकामयत कामसनि साम वैखानसं काममेवैतेनावरुन्धे स्तोमः ॥ ७ ॥

पञ्चमः खण्डः

‘यस्ते मदो वरेण्य’ इति गायत्री भवति मदवद्वै रसवत् तृतीयसवनं मदमेव तद्रसं दधाति ॥ १ ॥ ‘एषस्य धारया सुत’ इति ककुभः सत्योऽभ्यारम्भेण त्रिष्टुभः ॥ २ ॥ अपञ्चश इव वा एष यत् ज्यायसः स्तोमात्कनीयांसस्तोममुपयन्ति यदेता अभ्यारम्भेण त्रिष्टुभो भवन्त्यह एव प्रत्युत्तम्भाय ॥ ३ ॥ ‘सखाय आ निषीदते’ति वालखिल्या वालखिल्यावेतौ तृचौ षष्ठे चाहनि सप्तमे च यदेतौ वालखिल्यौ तृचौ भवतोऽहोरेव व्यतिषङ्गाया— व्यवस्रःसाय सन्तत्यै ॥ ४ ॥ ‘पुरोजिती वो अन्धस’ इति विराडन्नं विराडन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ५ ॥ ‘प्रवाज्यक्षा’ रित्यक्षर पङ्क्तिः स्तोमानां प्रभूतिः ॥ ६ ॥ अथो एतध्येवैतर्हि छन्दोयातयाम यदक्षरपङ्क्ति— स्तेन छन्दोमाअयातयामानः क्रियन्ते ॥ ७ ॥ ब्रह्मवादिनो वदन्ति यत् षडहे स्तोमाश्छन्दाश्स्थाप्यन्ते किं छन्दसश्छन्दोमा इत्येतच्छन्दसो यदेता अक्षरपङ्क्तय इति ब्रूयात् ॥ ८ ॥ ‘ये सोमासः परावती’ति परावतमिव वा एतर्हि यज्ञोगतस्तमेवैतेनान्विच्छन्ति ॥ ९ ॥ गायत्र्यः सत्यो जगत्यो रूपेण तस्माज्जगतीनां लोके क्रियन्ते ॥ १० ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्र्यस्य ब्राह्मणम् ॥ ११ ॥ दक्षणिघनं भवति ॥ १२ ॥

प्रजापतिः प्रजा असृजत ता अस्मात् सृष्टा अबलाइवाच्छदयः—
 स्तास्वेतेन साम्ना दक्षायेत्योजो वीर्यमदधाद्यदेतत् साम भवत्योज
 एव वीर्यमात्मन्धत्ते ॥१३॥ शार्करं भवति ॥१४॥ इन्द्रश्चर्वाणि
 भूतान्यस्तुवन् स शर्करश्शिशुमारर्षिमुपेत्याब्रवीत् स्तुहिमेति सोऽपः
 प्रस्कन्दन्नब्रवीदेतावतोऽहं त्वास्तुयामिति तस्मादपां वेगमवेजयत
 स हीन इवामन्यत स एतत्सामापश्यत्तेनापोनसमाश्नुत तद्वाव स
 तर्ह्यकामयत कामसनि साम शार्करं काममेवैतेनावरुन्धे ॥१५॥
 प्लवो भवति ॥१६॥ समुद्रं वा एते प्रस्नान्तीत्याहुर्व्ये द्वादशाह—
 मुपयन्तीति यो वा अप्लवः समुद्रं प्रस्नाति न स तत उदेति यत्
 प्लवो भवति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥१७॥ 'अति विश्वानि
 दुरिता तरे'मेति यदेवैषां दुष्टुतं दुःशस्तं तदेतेन तरन्ति ॥१८॥
 एकादशाक्षरणिधनो भवत्येकादशाक्षरा त्रिष्टुबोजोवीर्यं त्रिष्टुबोजस्येव
 वीर्यं प्रतितिष्ठति ॥१९॥ गौरीवितं भवति यदेव गौरीवितस्य
 ब्राह्मणम् ॥२०॥ कार्तयशं भवति ॥२१॥ हीति निधनमुपयन्ति
 पाप्मनोऽपहत्यै ॥२२॥ अपपाप्मानश्हते कार्तयशेन
 तुष्टुवानः ॥२३॥ सौहविषं भवति ॥२४॥ सुहविर्व्वा
 एतेनाङ्गिरसोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य लोकस्यानुख्यात्यै
 स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः ॥२५॥ ब्रह्मवादिनो वदन्ति यत्
 षडहे स्तोमाश्छन्दास्याप्यन्ते किं छन्दसश्छन्दोमा इति पुरुष—
 श्छन्दस इति ब्रूयात्पुरुषो वै पाङ्क्तः पुरुषो द्विपदा छन्दोमाना—
 मयातयामतायै ॥२६॥ जराबोधीयं भवत्यन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥२७॥
 अन्नं वै जराबोधीयं मुखं गायत्री मुख एव तदन्नं
 धत्तेऽन्नमत्ति ॥२८॥ अन्नादो भवति य एवं वेद ॥२९॥

गायत्रीषु स्तुवन्ति प्रतिष्ठायै ब्रह्मवर्चसाय येनैव प्राणेन
प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ३० ॥ इडान्ताः पावमाना भवन्ति पशवो
वा इडाः पशवश्छन्दोमाः पशुष्वेव तत्पशून्दधाति स्तोमः ॥ ३१ ॥

षष्ठः खण्डः

‘आ ते वत्सो मनो यम’दित्यपच्छिदिव वा एतद्यज्ञकाण्डं
यदुक्थानि यदेति सलोमत्वायैव ॥ १ ॥ ‘त्वं न इन्द्राभरे’ति पूर्णाः
ककुभः ॥ २ ॥ अपभ्रंश इव वा एष यज्ज्यायसः
स्तोमात्कनीयांसस्तोममुपयन्ति यदेताः पूर्णाः ककुभो भवन्त्यनप-
भ्रंशाय ॥ ३ ॥ ‘यदिन्द्र चित्र मं इह नास्ति त्वादातमद्रिवो
राघस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्याभरे’ति राद्धिमेवैतेनावरुन्धे ॥ ४ ॥
वात्सं भवति ॥ ५ ॥ वत्सश्च वै मेधातिथिश्च काण्वावास्तां तं
वत्सं मेधातिथिराक्रोशदब्राह्मणोऽसि शूद्रापुत्र इति सोऽब्रवीदृते-
नाग्निं व्ययाव यतरो नौ ब्रह्मीयानिति वात्सेन वत्सो
व्येन्मैधातिथेन मेधातिथिस्तस्य न लोम च नौषत्तद्वाव स तर्ह्य-
कामयत कामसनि साम वात्सं काममेवैतेनावरुन्धे ॥ ६ ॥ सौश्रवसं
भवति ॥ ७ ॥ उपगुर्वै सौश्रवसः कुत्सस्यौरवस्य पुरोहित आसीत्
स कुत्सः पर्यशपद्य इन्द्रं यजाता इति स इन्द्रः सुश्रवस-
मुपेत्याब्रवीद्यजस्व माशनायामि वा इति तमयजत स इन्द्रः पुरोडाश-
हस्तः कुत्समुपेत्याब्रवीदयक्षत मा क्व ते परिशप्तमभूदिति कस्त्वा
यष्टेति सुश्रवा इति स कुत्स औरव उपागाः सौश्रवसस्योद्गायत
औदुम्बर्या शिरोऽच्छिनत्स शुश्रवा इन्द्रमब्रवीत्त्वत्तनाद्वै मेदमीदृगु-
पागादिति तमेतेन साम्ना समैरयत्तद्वाव स तर्ह्यकामयत कामसनि
साम सौश्रवसं काममेवैतेनावरुन्धे ॥ ८ ॥ वीङ्गं भवति ॥ ९ ॥

च्यवनो वै दाधीचोऽश्विनोः प्रिय आसीत्सोऽजीर्यत्तमेतेन
साम्नाप्सु व्यैङ्कयेतां तं पुनर्युवानमकुरुतां तद्वाव तौ तर्हिकामयेतां
कामसनि साम वीङ्कं काममेवैतेनावरुध्वे ॥१०॥ चतुर्विंश एव
स्तोमो भवति तेजसे ब्रह्मवर्चसाय ॥११॥

सप्तमः खण्डः

‘शिशुञ्जज्ञानश्हर्यतं मृजन्ती’त्यष्टमस्याहः प्रतिपद्भवति ॥१॥
शिशुरिव वा एष सप्तमेनाह्वा जायते तमष्टमे नाह्वा मृजन्ति ॥२॥
स्तोत्रीयस्तृचो भवति प्राणापानानामवरुध्यै ॥३॥ हरिवत्यो भवन्ति
छन्दोमानामयातयामतायै ॥४॥ नवर्च्वा भवन्ति ॥५॥ नव वै
प्राणाः पशवश्छन्दोमाः पशुष्वेव तत्प्राणान्दधाति ॥६॥ पञ्चर्चो
भवति पञ्चपदाः पङ्क्तिः पाङ्क्तमन्नमन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥७॥ वाणवान्
भवन्त्यन्तो वै वाणोऽन्त एतदष्टममह्ममन्त एव तदन्तेन स्तुवते
प्रतिष्ठायै ॥८॥ त्रयस्तृचा भवन्ति प्राणापानानां सन्तत्यै ॥९॥
चतुश्चत्वारिंश एव स्तोमो भवत्योजस्येव तद्वीर्यं प्रतितिष्ठत्योजो
वीर्यं त्रिष्टुप् ॥१०॥

अष्टमः खण्डः

‘अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा’ इत्याग्नेयमाज्यं भवति ॥१॥
अग्निभिरित्येव पूर्वाण्यहानि समिद्धान्यष्टममहरभिसमिन्ध्वे ॥२॥
‘मित्रं वयश्हवामह’ इति बार्हतं मैत्रावरुणम् ॥३॥ उग्रगाधमिव
वा एतद्यच्छन्दोमास्तद्यथाद उग्रगाधे व्यतिषज्य गाहन्त एवमेवै—
तद्रूपे व्यतिषजति छन्दोमानामसं व्याथाय ॥४॥ ‘तमिन्द्रं
वाजयामसी’त्यैन्द्रम् ॥५॥ अष्टमेन वै देवा अहेन्द्रमवाजयन्नवमेन
पाप्मानमघ्नन्नहरेवैतेन वाजयन्ति ॥६॥

‘इन्द्रे अग्ना नमो बृहदि’ति बार्हतमैन्द्राग्नम् ॥७॥ उग्र
गाधमिव वा एतद्यच्छन्दोमास्तद्यथाद उग्रगाधे व्यतिषज्य गाहन्त
एवमेवैतद्रूपे व्यतिषजति छन्दोमानामसंव्याथाय स्तोमः ॥८॥

नवमः खण्डः

‘अध्वर्यो अद्रिभिः सुतमि’ति गायत्री भवत्यहो धृत्यै ॥१॥
गायत्र्यः सत्यस्त्रिष्टुभोरूपेण त्रैष्टुभश्चेतदहः ॥२॥ ‘अभि सोमास
आयव’ इत्यभीति रथन्तरस्य रूपं बृहदिति बृहत उभयोः सह
रूपमुपैत्युभौ हि वर्णवेतदहः ॥३॥ ‘धर्ता दिवः पवते कृतव्यो
रस’ इत्यधृत इव वा एष त्र्यहो यद्धर्तेति धृत्या एव ॥४॥
जगत्यः सत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण तस्मात्त्रिष्टुभां लोके क्रियन्ते ॥५॥
गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥६॥ वैरूपं भवति ॥७॥
पशवो वै वैरूपं पशूनामवरुध्यै विरूपः संवत्सरो विरूपमन्नमन्नाद्यस्या—
वरुध्यै ॥८॥ आशुभार्गवं भवति ॥९॥ अहर्वा एतदल्वीयत
तद्देवा आशुनाभ्यधिन्वस्तदाशोराशुत्वम् ॥१०॥ मार्गीयवं
भवति ॥११॥ देवं वा एतं मृगयुरिति वदन्त्येतेन वै स उभयेषां
पशूनामाधिपत्यमाश्नुतोभयेषां पशूनामाधिपत्यमश्नुते मार्गीयवेण
तुष्टुवानः ॥१२॥ सौमित्रं भवति ॥१३॥ यदेव सौमित्रस्य
ब्राह्मणम् ॥१४॥ ऐढतं भवति ॥१५॥ इढन्वा एतेन काव्योऽञ्जसा
स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य लोकस्यानुख्यात्यै स्वर्गाल्लोकान्न
च्यवते तुष्टुवानः ॥१६॥ साकमश्चं भवति यदेव साकमश्चस्य
ब्राह्मणम् ॥१७॥ तदु धुराऽसामेत्याहुः प्राणा वै धुरः प्राणानाम—
वरुध्यै ॥१८॥ विलम्बसौपर्णं भवति ॥१९॥ आत्मा वा एष
सौपर्णानां यदष्टमेऽहनि पक्षावेतावभितो भवतो ये सप्तमनवमयोर्व्वीव
वा अन्तरात्मा पक्षौ लम्बते यदन्तरात्मा पक्षौ विलम्बते तस्माद्
विलम्बसौपर्णम् ॥२०॥

स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै सौपर्णं क्रियते ॥ २१ ॥ द्विहिङ्गारं
 वामदेव्यं भवत्यन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ २२ ॥ द्वितीयश्छेतद्रूपं
 यच्छन्दोमाः ॥ २३ ॥ पशवो वै वामदेव्यं पशवश्छन्दोमाः पशुष्वेव
 तत् पशून्धाति ॥ २४ ॥ गायत्रपाश्वं भवति ॥ २४ ॥ अहर्वा
 एतदल्वीयत तद्देवा गायत्रपाश्वेन समतन्वस्तस्माद्
 गायत्रपार्श्वम् ॥ २६ ॥ त्रिरात्रो यद्व्यशीर्यत तमेतैः सामभिरभिषज्यन्
 गायत्रपार्श्वेनोपायच्छन् सन्तनिना समतन्वन् सङ्कृतिना समस्कुर्वन्
 प्रतिष्ठितौ पूर्वा त्रिरात्रावप्रतिष्ठित एष यदेतान्येवऽसामानि क्रियन्त
 एतस्यैव प्रतिष्ठित्यै ॥ २७ ॥ पौरुहन्मनं भवति ॥ २८ ॥ पुरुहन्मा
 वा एतेन वैखानसोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य
 लोकस्यानुख्यात्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः ॥ २९ ॥
 अभ्याघात्यं भवत्यभ्याघात्य सामानो हि छन्दोमाः ॥ ३० ॥ द्वैगतं
 भवति ॥ ३१ ॥ द्विगद्वा एतेन भार्गवो द्विः स्वर्गं लोकमगच्छ-
 दागत्य पुनरगच्छद्वयोः कामयोरवरुध्यै द्वैगतं क्रियते ॥ ३२ ॥ हारायणं
 भवति ॥ ३३ ॥ इन्द्रस्तेजस्कामोहरस्कामस्तपोऽतप्यत, स
 एतद्द्वारायणमपश्यत्तेन तेजो हरोऽवारुन्ध तेजस्वी हरस्वी भवति
 हारायणेन तुष्टुवानः ॥ ३४ ॥ अछिद्रं भवति ॥ ३५ ॥ यद्वा
 एतस्याह्निश्छिद्रमासीत्तद्देवा अच्छिद्रेणाप्यौहस्तदछिद्रस्या-
 छिद्रत्वम् ॥ ३६ ॥ बार्हदुक्थं भवति ॥ ३७ ॥ बृहदुक्थो वा एतेन
 वाम्नेयोऽन्नस्य पुरोधामगच्छदन्नं वै ब्रह्मणः पुरोधान्नाद्यस्याव-
 रुध्यै ॥ ३८ ॥ उद्वद्भार्गवं भवति ॥ ३९ ॥ प्रवता वै देवाः स्वर्गं
 लोकं प्रायन्नुद्वतोदायन् ॥ ४० ॥ निघनान्ताः पवमाना भवन्त्यहो
 धृत्यै स्तोमः ॥ ४१ ॥

दशमः खण्डः

‘क ई वेद सुते सचे’ति सतोबृहत्यः ॥१॥ अपघ्नश्श इव वा एष यस्सप्तमेऽहनि सतो बृहत्यो भवन्ति नाष्टमे तस्मादष्टमे कार्या अपघ्नश्शाय ॥२॥ तदाहुः शिथिलमिव वा एतच्छन्दो यत्सतोबृहत्येषा वै प्रतिष्ठिता बृहती या पुनः पदा यदिन्द्र प्रागपागुद— गिति दिशां विमर्शः प्रतिष्ठित्यै ॥३॥ तासु नैपातिथं ब्रह्मसाम ॥४॥ सामार्षेयवत् स्वर्गाय युज्यते स्वर्गाल्लोकात्र च्यवते तुष्टुवानः ॥५॥ ‘उभयश्शृणवच्च न’ इति ॥६॥ यच्च पृष्ठानि यानि चैतान्यहानि तेषामुभयेषाऽसन्तत्यै ॥७॥ तासु वैयश्वम् ॥८॥ व्यश्नो वा एतेनाङ्गिरसोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य लोकस्यानुख्यात्या एतत् पृष्ठाना मन्ततः क्रियते स्तोमः ॥९॥

एकादशः खण्डः

‘पवस्व देव आयुष गिन्द्रं गच्छतु ते मद’ इति गायत्री भवति मदवद्वै रसवत्तृतीयसवनं मदमेव तद्रसं दधाति ॥१॥ ‘अभिद्युमं बृहद्यश’ इत्यभीति रथन्तरस्य रूपं बृहदिति बृहत उभयोः सह— रूपमुपैत्युभौ हि वर्णा वेतदहः ॥२॥

‘प्राणाशिशुर्महीनामिति’ प्राणवत्यो भवन्ति प्राणानेव तद्यजमाने दधाति ॥३॥ ‘अभी नो वाजसा तम’मित्यभीति रथन्तरस्य रूपश्शरथन्तरश्छेतदहः ॥४॥ ‘पवस्व सोम महान् त्समुद्र’ इत्यक्षर पङ्क्तिः स्तोमानां प्रभूतिरथो एतद्धचेवैतर्हि छन्दोयातयाम यदक्षर पङ्क्तिस्तेन छन्दोमा अयातयामानः क्रियन्ते ब्रह्मवादिनो वदन्ति यत् षडहे स्तोमाश्छन्दाऽस्याप्यन्ते किं छन्दसश्छन्दोमा इत्येतच्छदसो यदेता अक्षरपङ्क्तय इति ब्रूयात् ॥५॥

‘हिन्वन्ति सूर मुस्रय’ इति गायत्र्यः सत्यो जगत्यो रूपेण तस्माज्जगतीनां लोके क्रियन्ते ॥ ६ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ७ ॥ स्वाशिरामर्को भवति ॥ ८ ॥ अन्नं वा अर्कोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै प्राणा वै स्वाशिरः प्राणानामवरुध्यै ॥ ९ ॥ सुरूपं भवति ॥ १० ॥ पशवो वै सुरूपं पशूनामवरुध्यै ॥ ११ ॥ भासं भवति भाति तुष्टुवानः ॥ १२ ॥ पदनिधनं राथन्तरं ह्येतदहः ॥ १३ ॥ स्वर्भानुर्वा आसुर आदित्यं तमसाविध्यत् स न व्यरोचत तस्यात्रिर्भासेन तमोऽपाहन् स व्यरोचत यद्वै तद्भा अभवत्तद्भासस्य भासत्वम् ॥ १४ ॥ तम इव वा एतान्यहानि यच्छन्दोमास्तेभ्य एतेन साम्ना विवासयति ॥ १५ ॥ काक्षीवतं भवति ॥ १६ ॥ कक्षीवान्वा एतेनौशिजः प्रजातिं भूमानमगच्छत् प्रजायते बहुर्भवति काक्षीवतेन तुष्टुवानः ॥ १७ ॥ आसितं भवति ॥ १८ ॥ असितो वा एतेन दैवलस्त्रयाणां लोकानां दृष्टिमपश्यत् त्रयाणां कामानामवरुध्या आसितं क्रियते ॥ १९ ॥ ऐषिरं भवति ॥ २० ॥ प्रजापति र्वा ऐषिराणि प्रजायते बहुर्भवत्यैशिरेण तुष्टुवानः ॥ २१ ॥ त्रैतं भवति प्रतिष्ठायै ॥ २२ ॥ पदनिधनं राथन्तरं राथन्तरं ह्येतदहः ॥ २३ ॥ नाथविन्दु साम विन्दते नाथं नाथविन्दून्येतावन्यहानि यत् छन्दोमा नाथमेवैतैर्विन्दते ॥ २४ ॥ गौरीवितं भवति यदेव गौरीवितस्य ब्राह्मणम् ॥ २५ ॥ कौत्सं भवति ॥ २६ ॥ एतेन वै कुत्सोऽन्धसो विपानमपश्यत् स ह स्म वै सुरादृतिनोपवसथं धावयत्युभयस्यान्नाद्यस्यावरुध्यै कौत्सं क्रियते ॥ २७ ॥ शुद्धाशुद्धीयं भवति ॥ २८ ॥ इन्द्रोयतीन् सालावृकेभ्यः प्रायच्छत्तमश्लीला वागभ्यवदत्सोऽशुद्धोऽमन्यत स एतच्छुद्धाशुद्धीयमपश्यत्तेनाशुध्यच्छुध्यति शुद्धाशुद्धीयेन तुष्टुवानः ॥ २९ ॥

क्रौञ्चं भवति यदेव क्रौञ्चस्य ब्राह्मणं यत् द्वितीयेऽहनि ॥ ३० ॥
 रयिष्ठं भवति ॥ ३१ ॥ पशवो वै रयिष्ठं पशूनामवरुध्यै ॥ ३२ ॥
 औदलं भवति ॥ ३३ ॥ उदलो वा एतेन वैश्वामित्रः प्रजातिं
 भूमानमगच्छत् प्रजायते बहुर्भवत्यौदलेन तुष्टुवानः ॥ ३४ ॥ धर्म
 भवति धर्मस्य धृत्यै ॥ ३५ ॥ ब्रह्मवादिनो वदन्ति यत् षडहे
 स्तोमाश्छन्दाः स्याप्यन्ते किं छन्दसश्छन्दोमा इति पुरुषश्छन्दस
 इति ब्रूयात् पुरुषो वै पाङ्क्तः पुरुषो द्विपदाश्छन्दोमानामयात—
 यामतायै ॥ ३६ ॥ विशोविशीयं भवति ॥ ३७ ॥ अग्निरकामयत
 विशोविशोऽतिथिः स्यां विशोविश आतिथ्यमप्नुवीयेति स तपोऽतप्यत
 स एतद्विशोविशीयमपश्यत्तेन विशोविशोऽतिथिरभवत् विशोविश
 आतिथ्यमाश्नुत विशोविशोऽतिथिर्भवति विशोविश आतिथ्यमश्नुते
 विशोविशीयेन तुष्टुवानः ॥ ३८ ॥ गायत्रीषु स्तुवन्ति प्रतिष्ठायै
 ब्रह्मवर्चसाय येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ३९ ॥ इडान्ताः
 पवमाना भवन्ति पशवो वा इडा पशवश्छन्दोमाः पशुष्वेव
 तत्पशून् दधाति स्तोमः ॥ ४० ॥

द्वादशः खण्डः

‘प्रेष्ठं वो अतिथिमि’त्यातिथ्यस्यैव तद्रूपं क्रियते ॥ १ ॥ ‘एन्द्र
 नो गधि प्रिये’तीन्द्रियस्य वीर्यस्यावरुध्यै ॥ २ ॥ ‘पुरां भिन्दुर्युवा
 कवि रमितौजा अजायत’ इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री
 पुरुष्टुत’ इति धृत्या एव ॥ ३ ॥ औशनं भवति ॥ ४ ॥ उशना वै
 काव्योऽकामयत यावानितरेषां काव्यानां लोकस्तावन्तस्स्पृणुया—
 मिति स तपोऽतप्यत स एतदौशनमपश्यत्तेन तावन्तं लोकमस्पृणो—
 द्यावानितरेषां काव्यानामासीत्तद्वाव स तर्ह्यकामयत कामसनि सामौशनं
 काममेवैतेनावरुन्धे ॥ ५ ॥

सांवर्त्तं भवति ॥६॥ देवानां वै यज्ञश्चक्षुःस्यजिघाःसः—
 स्तान्येतेन इन्द्रः संवर्त्तमुपावपद्यत् संवर्त्तमुपावपत्तस्मात् सांवर्त्तं
 पाप्मा वाव स तानसचत तं सांवर्त्तेनापाघ्नताप पाप्मानश्हते सांवर्त्तेन
 तुष्टुवानः ॥७॥ मारुतं भवति ॥८॥ मासा वै रश्मयोमरुतो
 रश्मयो मरुतो वै देवानां भूयिष्ठा भूयिष्ठा असामेति वै सत्रमासते
 भूयिष्ठा एव भवन्त्यतुमन्ति पूर्वाण्यहान्यनृतवः छन्दोमा यदेतत्साम
 भवति तेनैतान्यहान्यनृतुमन्ति भवन्ति ॥९॥ चतुश्चत्वारिंश एव
 स्तोमो भवत्योजस्येव तद्वीर्यं प्रतितिष्ठत्योजो वीर्यं त्रिष्टुप् ॥१०॥

॥ इति चतुर्दशोऽध्यायः ॥



पञ्चदशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

‘अक्रान् त्समुद्रः परमे विधर्मन्नि’ति नवमस्याहः
प्रतिपद्भवति ॥ १ ॥ परमं वा एतदहर्विधर्मं विधर्मं वा एतदन्यै—
रहभिरहर्घ्यन्नवमं ज्येष्ठं हि वरिष्ठम् ॥ २ ॥ ‘मत्सि वायुमिष्टये
राधसे न’ इति वारुण्येषा भवति यद्वै यज्ञस्य दुरिष्टं तद्वरुणो
गृह्णाति तदेव तदवयजति ॥ ३ ॥ स्तोत्रीयस्तृचो भवति
प्राणापानानामवरुध्यै ॥ ४ ॥ दशर्चो भवति दशाक्षरा विराट् वैराज—
मन्नमन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ५ ॥ सप्रभृतयो भवन्तीन्द्रियस्य वीर्यस्य
रसस्यानतिक्षाराय यत्र वै देवा इन्द्रियं वीर्यं रसमपश्यन्—
स्तदनुन्यतुदन् ॥ ६ ॥ अष्टर्चो भवति ॥ ७ ॥ अष्टाशफाः पशवः
शफशस्तत्पशूनाप्नोति अष्टाक्षरा गायत्री तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री
तेज एव ब्रह्मवर्चसमवरुध्ये ॥ ८ ॥ षड्चा भवन्त्यृतूनां धृत्यै ॥ ९ ॥
चत्वारः षड्चा भवन्ति चतुर्विंशतिरर्द्धमासाः संवत्सरः संवत्सर
एव प्रतितिष्ठति ॥ १० ॥ स वानुत्तमः षड्चो भवत्युभयस्य परोक्ष—
प्रत्यक्षस्यावरुध्यै ॥ ११ ॥ तृच उत्तमो भवति येनैव प्राणेन प्रयन्ति
तमभ्युद्यन्ति ॥ १२ ॥ अष्टाचत्वारिंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै
प्रजात्यै ॥ १३ ॥

द्वितीयः खण्डः

‘अगन्म महा नमसा यविष्ठ’ मित्याग्नेयमाज्यं भवति ॥ १ ॥
गच्छन्तीव वा एते ये नवममहर्गच्छन्ति ॥ २ ॥ ‘यो दीदाय समिद्धःस्वे
दुरोण’ इति दीदायेव ह्येष यो नवभिरहर्भिस्तुष्टुवानः ‘स्वाहुतमि’ति

स्वाहुतो ह्येष यो नवभिरहर्भिराहुतो 'विश्वतःप्रत्यञ्च' मिति विश्वतो—
 ह्येष प्रत्यङ् ॥ ३ ॥ 'त्वं वरुण उत मित्रो अग्न' इति वारुण्येका
 भवति यद्वै यज्ञस्य दुरिष्टं तद्वरुणो गृह्णाति तदेव तदवयजति ॥ ४ ॥
 'मित्रश्हुवे पूतदक्षमि'ति राथन्तरं मैत्रावरुणम् ॥ ५ ॥ उग्रगाधमिव
 वा एतद्यच्छन्दोमास्तद्यथाद उग्रगाधे व्यतिषज्य गाहन्त एवमेवै—
 तद्रूपे व्यतिषजति छन्दोमानामसंव्याथाय ॥ ६ ॥ 'महाश्इन्द्रो य
 ओजसे'त्यैन्द्रमष्टमेन वै देवा अहेन्द्रमवाजयन्नवमेन पाप्मानमघ्नन्—
 हरेवैतेन महयन्ति ॥ ७ ॥ 'ता हुवे ययोरिदमि'ति राथन्तर—
 मैन्द्राग्नम् ॥ ८ ॥ उग्र गाधमिव वा एतद्यच्छन्दोमास्तद्यथादं
 उग्रगाधे व्यतिषज्य गाहन्त एव मेवै तद्रूपे व्यतिषजति छन्दोमाना—
 मसंव्याथाय स्तोमः ॥ ९ ॥

तृतीयः खण्डः

'पवमानस्य जिघ्रतो हरेश्चन्द्रा असृक्षते'ति हरिवत्यो गायत्र्यो
 भवन्ति च्छन्दोमानामयातयामतायै ॥ १ ॥ 'पवमानस्य जिघ्रत' इति
 वै बृहतो रूपश्च'हरेश्चन्द्रा असृक्षते' ति जगत्या उभयोः सह
 रूपमुपैति साम्नश्च छन्दसश्च ॥ २ ॥ 'परीतो षिञ्चता सुत'मिति
 परिवत्यो भवन्त्यन्तो वै नवममहस्तस्यैताः पर्याप्त्यै ॥ ३ ॥ 'असावि
 सोमो अरुषो वृषा हरि'रिति जगत्यः सत्यस्त्रिष्टुभो रूपेण तस्मा—
 त्रिष्टुभां लोके क्रियन्ते ॥ ४ ॥ भरद्वाजस्यादारसृङ्भवति ॥ ५ ॥
 दिवोदासं वै भरद्वाज पुरोहितं नाना जनाः पर्य्ययतन्त स उपासीद—
 दृषे गातुं मे विन्देति तस्मा एतेन साम्ना गातुमविन्दद्गातुविद्वा
 एतत्सामानेनं दारेनासृन्मेति तददारसृतोऽदारसृत्वं विन्दते गातुं न
 दारेधावत्यदारसृता तुष्टुवानः ॥ ७ ॥ सुरूपं भवति यदेव सुरूपस्य
 ब्राह्मणम् ॥ ८ ॥

हरिश्रीनिधनं भवति ॥ ९ ॥ पशवो वै हरिश्रियः पशूनामव-
रुध्यै श्रियञ्च हरश्चोपैति तुष्टुवानः ॥ १० ॥ सैन्धुक्षितं भवति यदेव
सैन्धुक्षितस्य ब्राह्मणम् ॥ ११ ॥ गतनिधनं बाभ्रवं भवति गत्यै ॥ १२ ॥
बभ्रुर्वा एतेन कौम्भ्योऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत् स्वर्गस्य
लोकस्यानुख्यात्यै स्वर्गाल्लोकात्र च्यवते तुष्टुवानः ॥ १३ ॥
इडानाऽसक्षारो भवति ॥ १४ ॥ पशवो वा इडा पशवश्छन्दोमाः
पशुष्वेव तत्पशून्द्धाति ॥ १५ ॥ ऋषभः पावमानो भवति ॥ १६ ॥
पशवो वै छन्दोमाः पशुष्वेव तन्मिथुनमप्यज्जति प्रजात्यै न ह वा
अनृषभाः पशवः प्रजायन्ते ॥ १७ ॥ पृष्ठं भवति ॥ १८ ॥ पृष्ठं वा
एतदह्नां यन्नवमं पृष्ठ एव तत्पृष्ठेन स्तुवते प्रतिष्ठायै ॥ १९ ॥
कौल्मलबर्हिषं भवति ॥ २० ॥ कौल्मलबर्हिर्वा एतेन स्वर्गं
लोकमपश्यत् प्रजापतिं भूमानमगच्छत् प्रजायते बहुर्भवति कौल्मल-
बर्हिषेण, तुष्टुवानः ॥ २१ ॥ अर्कपुष्पं भवति ॥ २२ ॥ अन्नं वै
देवा अर्क इति वदन्ति रसमस्य पुष्पमिति सरसमेवान्नाद्यमव-
रुन्धेऽर्कपुष्पेण तुष्टुवानः ॥ २३ ॥ दैर्घश्रवसं भवति ॥ २४ ॥ दीर्घश्रवा
वै राजन्य ऋषिर्ज्योतिषपरुद्धोऽशनायश्श्वरन् स एतदैर्घश्रवसमपश्यत्तेन
सर्वाभ्यो दिग्भ्योऽन्नाद्यमवारुन्ध सर्वाभ्यो दिग्भ्योऽन्नाद्य मवारुन्धे
दैर्घश्रवसेन तुष्टुवानः ॥ २५ ॥ वैयश्वं भवति यदेव वैयश्वस्य
ब्राह्मणम् ॥ २६ ॥ अभीशवं यदाभीशवस्येति ॥ २७ ॥ देवस्थानं
भवति प्रतिष्ठायै संस्कृति भवति संस्कृत्यै ॥ २८ ॥ अहर्वा एत-
दल्वीयत तद्देवा देवस्थाने तिष्ठन्तः सङ्कृतिनां समस्कुर्वन्स्तत्
सङ्कृतेः सङ्कृतित्वं देवस्थानेन वै देवाः स्वर्गे लोके प्रत्यतिष्ठन्
स्वर्गे लोके प्रतितिष्ठामेत्येतत् ॥ २९ ॥ वरुणाय देवता राज्याय
नातिष्ठन्त स एतद्देवस्थानमपश्यत्ततो वै तास्तस्मै राज्यायातिष्ठन्त
तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः श्रैष्ठ्याय ॥ ३० ॥

क्षत्रस्येवास्य प्रकाशो भवति प्रतितिष्ठति य एवं वेद ॥ ३१ ॥
 भर्गएव भर्गेण तुष्टुवानो भवति यशो यशसा ॥ ३२ ॥ वासिष्ठं
 भवति यदेव वासिष्ठस्य ब्राह्मणम् ॥ ३३ ॥ दीर्घतमसोऽर्को भवत्यन्नं
 वा अर्कोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ३४ ॥ सामराजं भवति साम्राज्य-
 माधिपत्यं गच्छति सामराजा तुष्टुवानः ॥ ३५ ॥ तदु संवदित्याहुः
 संवता वै देवाः स्वर्गं लोकं प्रायन्नुद्धतोदायन् ॥ ३६ ॥ निधनान्ताः
 पवमाना भवन्त्यहो धृत्यै स्तोमः ॥ ३७ ॥

चतुर्थः खण्डः

‘श्रायन्त इव सूर्यमि’ति सूर्यवत्यो भवन्ति ॥ १ ॥ आदित्य-
 देवत्यश्छेतदहरन्तो वै सूर्योऽन्त एतन्नवममहामन्त एव तदन्तेन
 स्तुवते प्रतिष्ठायै ॥ २ ॥ ‘यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं
 कृधि मघवज्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो वि मृधो जही’ति
 द्विषश्चैव मृधश्च नवमेनाह्वा विहत्य दशमेनाहोत्तिष्ठन्ति ॥ ३ ॥
 श्रायन्तीयं भवति ॥ ४ ॥ श्रीर्वै श्रायन्तीयश्श्रीर्नवममहः श्रियमेव
 तच्छ्रियां प्रतिष्ठापयति ॥ ५ ॥ समन्तं भवति ॥ ६ ॥ समन्तेन
 पशुकामः स्तुवीत पुरोधाकामः समन्तेन स्तुवीत ॥ ७ ॥ आग्नेयी
 पृथिव्याग्नेयो ब्राह्मण ऐन्द्री द्यौरैन्द्री राजन्योऽन्तरिक्षेण द्यावापृथिवी
 समन्ते अन्तरिक्षेणैवैनश्चसमन्तं करोति विन्दते पशून् प्र पुरोधा-
 माप्नोति य एवं विद्वान् समन्तेन स्तुते स्तोमः ॥ ८ ॥

पञ्चमः खण्डः

‘त्वश्सोमासि धारयु’रिति गायत्रो भवत्यहो धृत्यै त्वमिति
 बृहतो रूपं बार्हतश्छेतदहः ॥ १ ॥ ‘त्वश्छद्ग दैव्ये’ति त्वमिति
 बृहतो रूपं बार्हतश्छेतदहः ॥ २ ॥

‘पवस्व देव वीतय’ इति बृहतो रूपं बार्हतश्चेतदहः ॥ ३ ॥
 ‘परित्यश्हर्यतश्हरि’मिति परिवत्यो भवन्त्यन्तो वै नवममहस्तस्यैताः
 पर्याप्त्यै ॥ ४ ॥ ‘पवस्व सोम महे दक्षाये’ त्यक्षरपङ्क्तिः स्तोमानां
 प्रभूतिरथो एतद्धयेवैतर्हि छन्दोऽयातयाम यदक्षरपङ्क्तिस्तेन छन्दोमा
 अयातयामानः क्रियन्ते ब्रह्मवादिनो वदन्ति यत् षडहे स्तोमा—
 श्छन्दाऽस्याप्यन्ते किं छन्दसश्छन्दोमा इत्येतच्छन्दसो यदेता अक्षर—
 पङ्क्तय इति ब्रूयात् ॥ ५ ॥ ‘उपोषु जातमप्सुर’मिति गायत्र्यः सत्यो—
 जगत्यो रूपेण तस्मात् जगतीनां लोके क्रियन्ते ॥ ६ ॥ गायत्रं
 भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ७ ॥ आश्वसूक्तं भवति ॥ ८ ॥
 अग्निं वै पूर्वैरहभिराजुहोत्यथैतदादित्यदैवत्यमहः शुक्र आहुत
 इत्यसौ वा आदित्यः शुक्रस्तमेवैतेनाजुहोति ॥ ९ ॥ शाम्मदं
 भवति ॥ १० ॥ शम्मद्वा एतेनाङ्गिरसोऽञ्जसा स्वर्गं लोकमपश्यत्
 स्वर्गस्य लोकस्यानुख्यात्यै स्वर्गाल्लोकान्न च्यवते तुष्टुवानः ॥ ११ ॥
 दावसुनिधनं भवति ॥ १२ ॥ आशिषमेवास्मा एतेनाशास्ते साम
 हि सत्याशीः ॥ १३ ॥ दावसुर्वा एतदाङ्गिरसः पशुकामः सामापश्यतेन
 सहस्रं पशून्सृजत यदेतत् साम भवति पशूनां पुष्ट्यै ॥ १४ ॥
 प्रतीचिनेडं काशीतं भवति ॥ १५ ॥ पराचीभिर्वा अन्याभिरिडाभी—
 रेतो दधदेत्यथैतत्प्रतीचीनेडं काशीतं प्रजात्यै तस्मात्पराञ्चो गर्भाः
 सम्भवन्ति प्रत्यञ्चः प्रजायन्ते तस्मादु तेऽवाचीन बिलेभ्यो नाव—
 पद्यन्त एतेन ह्येव ते धृताः ॥ १६ ॥ हाविष्कृतं भवति प्रतिष्ठायै
 कृतानुवाद एव सः ॥ १७ ॥ सौपर्णं भवति यदेव सौपर्णस्य
 ब्राह्मणम् ॥ १८ ॥ वैश्वमनसं भवति ॥ १९ ॥ विश्वमनसं वा ऋषि
 मध्यायमुद्रजितश्रक्षोऽगृह्णात्तमिन्द्रोऽजायदृषिं वै रक्षोऽग्रहीदिति,
 तमभ्यवददृषे कस्त्वैष इति, स्थाणुरिति ब्रूहीति रक्षोऽब्रवीत् स

स्थाणुरित्यब्रवीत्तस्मै वा एतेन प्रहरेत्यस्मा इषीकां वज्रं प्रयच्छन्न—
 ब्रवीत्तेनास्य सीमानमभिनत् सैवेन्द्रेणतेषीका पाप्मा वाव स तमंगृह्णात्तं
 वैश्वमनसेनापाहतापपाप्मानश्हते वैश्वमनसेन तुष्टुवानः ॥ २० ॥
 गौरीवितं भवति यदेव गौरीवितस्य ब्राह्मणम् ॥ २१ ॥ निहवो
 भवत्यन्नाद्यस्याऽवर्ध्वै ॥ २२ ॥ हीति वा अन्नं प्रदीयत
 ईत्यग्निरन्नमत्ति ॥ २३ ॥ ऋषयो वा इन्द्रं प्रत्यक्षं नापश्यन् स
 वसिष्ठोऽकामयत कथमिन्द्रं प्रत्यक्षं पश्येयमिति स
 एतन्निहवमपश्यत्ततो वै स इन्द्रं प्रत्यक्षमपश्यत्, स एनमब्रवीद्
 ब्राह्मणं ते वक्ष्यामि यथा त्वत्पुरोहिता भरताः प्रजनिष्यन्तेऽथ
 मान्येभ ऋषिभ्यो मा प्रवोच इति तस्मा एतान् स्तोमभागानब्रवीत्ततो
 वै वसिष्ठपुरोहिता भरताः प्राजायन्त सेन्द्रं वा एतत्साम यदेतत्साम
 भवति सेन्द्रत्वाय ॥ २४ ॥ यद्वाहिष्ठीयं भवति ॥ २५ ॥ ब्रह्मयशसं
 वा एतानि सामान्यृचा श्रोत्रीयाणि ब्रह्मयज्ञासी भवति यद्वाहिष्ठीयेन
 तुष्टुवानः ॥ २६ ॥ आसितं भवति यदेवासितस्य ब्राह्मणम् ॥ २७ ॥
 साध्नं भवति सिद्धयै ॥ २८ ॥ आकूपारं भवति ॥ २९ ॥ अकूपारो
 वा एतेन कश्यपो जेमानं महिमानमगच्छज्जेमानं महिमानं
 गच्छत्याकूपारेण तुष्टुवानः ॥ ३० ॥ विधर्मं भवति धर्मस्य
 विधृत्यै ॥ ३१ ॥ ब्रह्मवादिनो वदन्ति यत् षडहे स्तोमाश्छन्दाः—
 स्याप्यन्ते किं छन्दसश्छन्दोमा इति पुरुषच्छन्दस इति ब्रूयात्
 पुरुषो वै पाङ्क्तः पुरुषो द्विपदाच्छन्दोमानामयातयामतायै ॥ ३२ ॥
 श्रुध्यं भवति ॥ ३३ ॥ पशवो वै श्रुध्यं पशूनामवर्ध्वै ॥ ३४ ॥
 प्रजापतिः पशूनसृजत तेऽस्मात् सृष्टा अपाक्रामश्स्तानेतेन साम्ना
 श्रूधिया एहियेत्यन्वह्यत्त एनमुपावर्तन्त यदेतत् साम भवति पशूना—
 मुपावृत्यै ॥ ३५ ॥

उपैनं पशव आवर्तन्ते य एवं वेद ॥ ३६ ॥ गायत्रीषु स्तुवन्ति प्रतिष्ठायै ब्रह्मवर्चसाय येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्तीडान्ताः पवमाना भवन्ति पशवो वा इडा पशवश्छन्दोमाः पशुष्वेव तत्पशून्—
धाति स्तोमः ॥ ३७ ॥

षष्ठः खण्डः

आग्नेयीषु पूर्वेषामहामुक्थानि प्रणयन्त्यथैतस्याह आग्नेय्यैन्द्रयां प्रणयन्त्युभयोरेव रूपयोः प्रतितिष्ठति ॥ १ ॥ ऐध्मवाहं भवति ॥ २ ॥ आग्नेय्यैन्द्रीषु स्तुवन्ति ब्रह्म चैव तत् क्षत्रञ्च सयुजी करोति ब्रह्मैव क्षत्रस्य पुरस्तान्निदधाति ब्रह्मणे क्षत्रञ्च विशञ्चानुगे करोति ॥ ३ ॥ त्रैककुभं भवति ॥ ४ ॥ ओजस्येव तद्वीर्यं प्रतितिष्ठत्योजो वीर्यं त्रैककुभम् ॥ ५ ॥ उद्वंशीयं भवति यदेवोद्वंशीयस्य ब्राह्मणम् ॥ ६ ॥ अष्टाचित्वारिंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै प्रजात्यै ॥ ७ ॥

सप्तमः खण्डः

गायत्रं वै सप्तममहस्त्रैष्टुभमष्टमञ्जागतं नवममथैतदानुष्टुभ—
महर्ष्यद्दशमम् ॥ १ ॥ तदाहुर्ष्यदनुष्टुभश्स्तोम्यां प्रत्यक्षमुपेयुः परम्परावतं यजमानो गच्छेन्न प्रतितिष्ठेदिति या वै चतुर्विंशति—
र्गायत्र्यस्ता अष्टादशानुष्टुभोऽनुष्टुभमेव तत् स्तोम्यां परोक्षमुपयन्ति प्रतिष्ठायै प्रतितिष्ठति ॥ २ ॥ प्रजापतिं वा एतेनाह्मा परिवेविषति तन्न व्यववद्यं यद्वै श्रेष्ठे परिविष्यमाणोऽवदत्यन्नाद्यस्य सोवग्रह—
स्तस्मान्न व्यववद्यमन्नाद्यस्यानवग्राहाय ॥ ३ ॥ तदु व्यववद्यं यथा श्रेष्ठाय बलिं ह्वयमाणं पन्थानं पर्य्वनुदति गत्यै तथा तत् ॥ ४ ॥ यावत्यनुष्टुप्तावतीं वाचं सम्पाद्य विब्रूयुस्तद्वनतिरिक्तं स्वस्योचैव यज्ञस्यारिष्ट्यै ॥ ५ ॥

अभि वा एते देवानारोहन्तीत्याहुर्ह्ये दशभिरहर्भिः स्तुवत
इति पञ्चानामहामनुरूपैः प्रत्यवयन्ति यथाभ्यारुह्य प्रत्यवरोहेत्तथा
तन्नवर्चो भवति या एवामूः प्रयञ्छम्या अवदधाति ता एता
उदस्यति ॥ ६ ॥ वारुण्येका भवति यद्वै यज्ञस्य दुरिष्टं तद्वरुणो
गृह्णाति तदेव तदवयजत्यादित्यैका भवतीयं वा अदितिरस्यामेव
प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ चतुर्विंश एव स्तोमो भवति तेजसे
ब्रह्मवर्चसाय ॥ ८ ॥

अष्टमः खण्डः

‘सुषमिद्धो न आवहे’ त्याप्रिय आज्यानि भवन्ति ॥ १ ॥
प्रजापतिः प्रजा असृजत सदुग्धो रिरिचानोऽमन्यत स
एतान्याप्रियआज्यान्यप्यतैरात्मानमाप्रीणात् दुग्धइव वा एष रिरिचानो
यो दशभिरहर्भिस्तुष्टुवानो यदेतान्याप्रिय आज्यानि भवन्त्यात्मान—
मेवैतैराप्रीणाति ॥ २ ॥ ‘यदद्य सूर उदित’ इति सूरवन्मैत्रावरुण—
मन्तो वै सूरुऽन्त एतद्दशममहामन्त एव तदन्तेन स्तुवते प्रतिष्ठाया
‘उत्वा मन्दन्तु सोमा’ इत्युद्वदन्द्रमुत्थानस्य रूपम् ॥ ३ ॥ ‘इन्द्राग्नी
आगतं सुतमि’ति येनैव रूपेण प्रयन्ति तदभ्युद्यन्ती स्तोमः ॥ ४ ॥

नवमः खण्डः

‘उच्चा ते जात मन्धस’ इत्युद्वत्यो गायत्र्यो भवन्त्युत्थानस्य
रूपम् ॥ १ ॥ ‘पुनानः सोमधारये’ति पन्थानमेव तत्
पर्यवयन्ति ॥ २ ॥ ‘आ जागृविर्विप्र ऋतं मतीना’मिति यदाप्ते
प्रवतीः कुर्युरतिपद्येरन्यदावत्यो भवन्त्यनतिपादाय ॥ ३ ॥ गायत्रं
भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ ४ ॥ आमहीयवं भवति
क्लृप्तिश्चान्नाद्यञ्च क्लृप्तिश्चैवैतेनान्नाद्यञ्चाभ्युत्तिष्ठन्ति ॥ ५ ॥

आजिगं भवत्याजिजित्यायै ॥ ६ ॥ आजिर्वा एष प्रततो यत्
 द्वादशाहस्तस्यैतदुज्जित्यै ॥ ७ ॥ आभीकं भवत्यभिक्रान्त्यै ॥ ८ ॥
 अङ्गिरसस्तपस्तेपानाः शुचमशोचश्स्त एतत्सामापश्यः—
 स्तानभीकेऽभ्यवर्षत्तेन शुचमशमयन्त यदभीकेऽभ्यवर्षत्तस्मादाभीकं
 यामेव पूर्वैरहर्भिः शुचश्शोचन्ति तामेतेनात्र शमयित्वो—
 तिष्ठन्ति ॥ ९ ॥ उत्सेधो भवति ॥ १० ॥ उत्सेधेन वै देवाः पशू—
 नुदशेधन्निषेधेन पर्य्यगृह्णन् ॥ ११ ॥ अन्तरोत्सेधनिषेधौ
 यज्ञायज्ञीयम् ॥ १२ ॥ पशवोऽन्नाद्यं यज्ञायज्ञीयं पशूनेव तदन्नाद्य—
 मुत्सेधनिषेधाभ्यां परिगृह्णाति ॥ १३ ॥ माध्यन्दिने वै पवमाने देवा
 यज्ञायज्ञीयेन यज्ञं सऽस्थाप्य स्वर्गं लोकमारोहश्स्तद्य एवं वेद
 माध्यन्दिन एवैतत्पवमाने यज्ञायज्ञीयेन यज्ञः सऽस्थाप्य स्वर्गं
 लोकमारोहति ॥ १४ ॥ अथो परोक्षमनुष्टुभं सम्पद्यतेऽहरेषा वै
 प्रत्यक्षमनुष्टुप् यद्यज्ञायज्ञीयं तद्यत्तृतीयसवने कुर्य्युः प्रत्यक्षमनुष्टुभ—
 मृच्छेयुस्तस्मान्माध्यन्दिने कुर्वन्ति तेन परोक्षमनुष्टुभमुपयन्ति ॥ १५ ॥
 गौरीवितं भवति ॥ १६ ॥ एतद्वै यज्ञस्य श्वस्तनं यद्गौरीवितमेतदायतनो
 यजमानो यन्माध्यन्दिनो यद्गौरीवितं माध्यन्दिने भवति श्वस्तनमेव
 तद्यजमान आत्मन्धत्ते स्तोमः ॥ १७ ॥

दशमः खण्डः

‘कया नश्चित्र आभुवदि’ति कवत्यस्तेन प्राजापत्याः को हि
 प्रजापतिः प्रजापतिराप्त्यै ॥ १ ॥ ‘मा चिदन्य द्विशंसते’त्युत्थानमे—
 तदाशिषोह्येतर्हि ॥ २ ॥ ‘उदु त्ये मधुमत्तमा’ इत्युद्वत्य
 उदयनीयेऽहन्येतदाशिषोह्येवैतर्हि ॥ ३ ॥ ‘तरोभि वो विद द्रसु’मिति
 स्तोमो वै तरो यज्ञो विदद्रसुः स्तोमेन वै यज्ञो युज्यते यत्तरोभि
 वो विदद्रसुमित्याह यज्ञमेव तद्यनक्ति ॥ ४ ॥

वामदेव्यस्यर्क्षु रथन्तरं पृष्ठं भवति गायत्री वै रथन्तरस्य योनिः स्वायामेव तद्योनौ रथन्तरं प्रतिष्ठापयति ॥ ५ ॥ तेजो वै गायत्री छन्दसां तेजो रथन्तरश्साम्नां तेजश्चतुर्विंशस्तोमानां तेज— एव तत्सम्यक् सन्दधात्यपिह पुत्रस्य पुत्रस्तेजस्वी भवति ॥ ६ ॥ अष्टाक्षरेण प्रथमाया ऋचः प्रस्तौत्यष्टा शफाश्स्तत्पशूनवरुन्धे ॥ ७ ॥ द्व्यक्षरेणोत्तरयोर्ऋचोः प्रस्तौति द्विपाद्यजमानो यजमानमेव यज्ञे पशुषु प्रतिष्ठापयति ॥ ८ ॥ गायत्रं वै रथन्तरं गायत्रच्छन्दो यद्गायत्रीषु रथन्तरं भवति तेन स्वायां जनतायामृध्नोतीमे वै लोका गायत्री यद्गायत्रीषु रथन्तरं भवतीमानेव तल्लोकान् समाप्योत्तिष्ठन्ति ॥ ९ ॥ मैधातिथं भवति ॥ १० ॥ एतेन वै मैधातिथिः काण्वो विभिन्दुकाद् व्यूध्नीर्गा उदसृजत पशूनामवरुध्यै मैधातिथं क्रियते ॥ ११ ॥ अभीवर्तो ब्रह्मसाम भवत्येकाक्षरणिघनः प्रतिष्ठायै ॥ १२ ॥ एकाक्षरा वै वाग्वाच्येव प्रतिष्ठायोत्तिष्ठन्ति ॥ १३ ॥ कालेयमच्छावाकसाम भवति ॥ १४ ॥ समान लोके वै कालेयश्च रथन्तरञ्चेयं वै रथन्तरं पशवः कालेयमस्याञ्चैव पशुषु च प्रतिष्ठायोत्तिष्ठन्ति स्तोमः ॥ १५ ॥

एकादशः खण्डः

‘स्वादिष्ठया मदिष्ठये’ति गायत्री भवति मदवद्वै रसवत्तृतीय सवनं मदमेव तद्रसं दधाति ॥ १ ॥ गायत्रं भवति यदेव गायत्रस्य ब्राह्मणम् ॥ २ ॥ संहितं भवति द्व्यक्षरणिघनं प्रतिष्ठायै प्रतिष्ठायै— वोत्तिष्ठन्ति ॥ ३ ॥ सफं भवति ॥ ४ ॥ सफेन वै देवा इमान् लोकान् समाप्नुवन्त्यत्समाप्नुवन्स्तत्सफस्य सफत्वमिमानेवैतेन लोकान् समाप्योत्तिष्ठन्ति ॥ ५ ॥ रोहितकूलीयं भवति यदेव रोहितकूलीयस्य ब्राह्मणम् ॥ ६ ॥ श्यावाश्वान्धीगवे भवतः समीच्यौ विराजौ दधात्यन्नाद्याय ॥ ७ ॥

पिपीलिकमध्यासु स्तुवन्ति ॥ ८ ॥ इन्द्रो वृत्रं हत्वा नास्तृषीति
मन्यमानः परां परावतमगच्छत्स एतामनुष्टुभं व्यौहतां मध्ये
व्यवासर्पदिन्द्रगृहे वा ऐषोभये यजतेऽभय उत्तिष्ठति य एवं विद्वानेतासु
स्तुते ॥ ९ ॥ यज्ञायज्ञीयनिधनःसौहविषं भवति यज्ञायज्ञीयादेव
तत्तृतीयसवनेन यन्ति ॥ १० ॥ वाजजिद्धवति ॥ ११ ॥ सर्वस्याप्त्यै
सर्वस्य जित्यै सर्वं वा एते वाजं जयन्ति ये दशममहरागच्छन्त्यनं
वै वाजोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ १२ ॥ दशाक्षरं निधनमुपयन्ति दशरात्रस्य
धृत्यै दशाक्षरा विराड्वैराजमन्नमन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ १३ ॥ सूर्य्य वतीषु—
स्तुवन्त्यतो वै सूर्योऽन्त एतद्दशममहामन्तएव तदन्तेन स्तुवते
प्रतिष्ठायै ॥ १४ ॥ उपवत्यो भवन्ति प्रतिष्ठायै परिवत्यो भवन्ति
सर्वस्य पर्याप्त्यै ॥ १५ ॥ चतुर्विंशएव स्तोमो भवति तेजसे
ब्रह्मवर्चसाय ॥ १६ ॥

द्वादशः खण्डः

विराट्सु वामदेव्यमग्निष्टोमसाम भवति शान्त्यै क्लृप्त्यै ॥ १ ॥
सद्वै वामदेव्यःसाम्नाःसद्विराट् छन्दसाःसत्रयस्त्रिंशः स्तोमानाः—
सतामन्तान् सन्धायोत्तिष्ठन्त्यपिह पुत्रस्य पुत्रः सत्वमश्नुते ॥ २ ॥
ब्रह्मवादिनो वदन्ति यतः सत्रादुदस्थाता ३ स्थिता ३ दिति यद्यत
इति ब्रूयुरप्रतिष्ठाना अप्रजसो भविष्यन्तीत्येनान् ब्रूयाद्यत् स्थितादिति
ब्रूयुः स्थायुकैषाःश्रीर्भविष्यति न वसीयाःसो भविष्यन्तीत्येनान्
ब्रूयात् पूर्णादेव पूर्णमभ्युदस्थामेति ब्रूयुः ॥ ३ ॥ एते वै पूर्णात्
पूर्णमभ्युत्तिष्ठन्ति ये वामदेव्येन स्तुत्वोत्तिष्ठन्ति ॥ ४ ॥ अन्तरिक्षं
वै वामदेव्यमन्तरिक्षेणेदःसर्वं पूर्णम् ॥ ५ ॥ एष वै समृद्धः स्तोमो
यत् त्रयस्त्रिंशस्त्रयस्त्रिंशदक्षरासु समृद्धावेव प्रतितिष्ठन्ति ॥ ६ ॥

सर्वेषां वा एताश्छन्दसारूपं यत्त्रिपदास्तेन गायत्र्यो
 यदेकादशाक्षराणि पदानि तेन त्रिष्टुभो यत् द्वादशाक्षरं पदं तेन
 जगत्यो यत् त्रयस्त्रिंशदक्षरास्तेन विराजस्तेनैव चानुष्टुभो न
 ह्येकस्मादक्षराद्विराजयन्ति ॥ ७ ॥ त्रयस्त्रिंशएव स्तोमो भवति
 प्रतिष्ठायै देवतासु वा एष प्रतिष्ठितः ॥ ८ ॥

॥ इति पञ्चदशोऽध्यायः ॥



षोडशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

प्रजापतिर्वा इदमेक आसीन्नाहरासीन्न रात्रिरासीत्सोऽस्मिन्नन्ये
तमसि प्रासर्पत्स ऐच्छत्स एतमभ्यपद्यत ततो वै तस्मै व्यौछद्—
व्युष्टिर्वा एष आहूयते यद्वै तज्ज्योतिरभवत्तत ज्योतिषो
ज्योतिष्ट्वम् ॥ १ ॥ एष वाव प्रथमो यज्ञानां य एतेनानिष्ट्वाथान्येन
यजते कर्त्तव्यमेव तज्जीयते वा प्रवामीयते ॥ २ ॥ यथा वा
इदमग्नेर्ज्जातादग्नयो विह्वयन्त एवमेतस्मादध्यन्ये यज्ञाविह्वयन्ते ॥ ३ ॥
यो हि त्रिवृदन्यं यज्ञक्रतुमापद्यते सतं दीपयति यः पञ्चदशः स तं
यः सप्तदशः स तं य एकविंशः स तम् ॥ ४ ॥ एतत्तद्यदाहु—
रेको यज्ञ इत्येतद्धि सर्वे ज्योतिष्टोमा भवन्ति ॥ ५ ॥ अस्थूर्निर्वा
एष सन्ततो यज्ञो द्वौ द्वौ हि स्तोमौ सवनं वहतस्त्रिवृत्पञ्चदशौ
प्रातःसवनं पञ्चदशसप्तदशौ माध्यन्दिनश्सवनश्सप्तदशौकविंशौ
तृतीयसवनम् ॥ ६ ॥ या मितदक्षिणैव स्यादेष एव कार्य्यं इयं वै
ज्योतिरियममितस्य यन्त्रिकैषा वा एतं यन्तुमर्हति ॥ ७ ॥ तस्य
नवतिशतश्स्तोत्रीयास्तासां या अशीतिशतं ताः षट्त्रिंशिन्यो
विराजः षडृतव ऋतुष्वेव विराजा प्रतितिष्ठति ॥ ८ ॥ अथ या
दशैषा वा आत्मन्या विराडेतस्यां वा इदं पुरुषः प्रतिष्ठितः ॥ ९ ॥
गौश्चाश्वश्चाश्वतरश्च गर्दभश्चाजाश्चावयश्च व्रीहयश्चयवाश्च तिलाश्च
माषाश्चैतस्यामेव विराजि प्रतितिष्ठति ॥ १० ॥ तस्य द्वादशश्शतं
दक्षिणाः ॥ ११ ॥ वीरहा वा एष देवानां यः सोममभिषुणोति याः
शतं वैरं तद्देवानवदयतेऽथ या दशदशप्राणाश्स्ताभिस्पृणोति
यैकादश्यात्मानं तथा या द्वादशी सैव दक्षिणा ॥ १२ ॥

श्लेष्म वा एतद्यज्ञस्य यदक्षिणा न वा अश्लेष्मा रथो वहत्यथ
यथाश्लेष्मवता यं कामं कामयते तमभ्यश्नुत एवमेतेन दक्षिणावता
यं कामं कामयते तमभ्यश्नुते ॥१३॥ शुभो वा एता यज्ञस्य
यदक्षिणा यदक्षिणावता यजते शुभमेवास्मिन्दधाति ॥१४॥

द्वितीयः खण्डः

अथैष गौः ॥१॥ गवा वै देवा असुरानेभ्यो लोकेभ्योऽनुदन्तैभ्यो
लोकेभ्यो भ्रातृव्यं नुदते य एवं वेद ॥२॥ यद्वै तदेवा असुरानेभ्यो
लोकेभ्यो गोवयश्स्तद्गोर्गोत्वम् ॥३॥ गोवयति पाप्मानं भ्रातृव्यं
य एवं वेद ॥४॥ तस्य पञ्चदशं बहिष्पवमानं वज्रो वै पञ्चदशो
वज्रमेव तत्पुरस्तान्निदधाति तेन विजयते ॥५॥ पशुस्तोमो वा
एष एवमिव वै पशुः समाहितः शिरः स्थवीयोऽणीयस्यो ग्रीवा
पार्श्वभ्यां वरीयाः सक्थिभ्यां वरिष्ठः ॥६॥ यत् पञ्चदशं बहिष्पवमानं
भवति त्रिवृन्त्याज्यानि सप्तदश माध्यन्दिनश्सवनमेकविंशं
तृतीयसवनश्रूपेणैवैनं तत् समर्द्धयति ॥७॥ एका सश्स्तुतानां
विराजमतिरिच्यते तस्मात् पशोः पश्चादतिरिक्तम् ॥८॥

तृतीयः खण्डः

अथैष आयुः ॥१॥ आयुषा वै देवा असुरानायुवतायुते
भ्रातृव्यं य एवं वेद ॥२॥ स्वर्गकामो यजेत ॥३॥ ऊर्ध्वाः
स्तोमा यन्त्यनपन्नश्शाय ॥४॥ एतेनैवामयाविनं याजयेदतिरात्रः
कार्यः ॥५॥ स गायत्रीश्सम्पद्यते प्राणो गायत्र्यायुरेष आयुश्चैवास्मिन्
प्राणञ्चोभे समीची दधाति ॥६॥ स्वर्ग्या वा एते स्तोमा यत्
ज्योतिर्भवति ज्योतिरेवास्मै स पुरस्ताद्धरत्यथैष गौरैकया विराज-
मतिरिक्त आरम्भणमेव तदथैष आयुरेकस्या विराज ऊन आसाद
एव सोऽथो ऊनातिरिक्तौ स्तोमौ मिथुनौ प्रजातौ ॥७॥

एते वै त्रिकद्रुकाः स्तोमा एतैर्वा इन्द्रः सर्वा तृप्ति—
मतृप्यत् ॥ ८ ॥ तृप्यति प्रजया पशुभिर्य एवं वेद ॥ ९ ॥

चतुर्थः खण्डः

प्रजापतिः प्रजा असृजत ता अस्मै श्रैष्ठ्याय नातिष्ठन्त स
आसां दिशां प्रजानाञ्च रसं प्रबृहत् स्रजं कृत्वा प्रत्यमुञ्चत ततोऽस्मै
प्रजाः श्रैष्ठ्यायातिष्ठन्त ॥ १ ॥ तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः श्रैष्ठ्याय य
एवं वेद ॥ २ ॥ सोऽकामयतेन्द्रो मे प्रजायाश्श्रेष्ठः स्यादिति तामस्मै
स्रजं प्रत्यमुञ्चततो वा इन्द्राय प्रजाः श्रैष्ठ्यायातिष्ठन्त तच्छिल्पं
पश्यन्त्यो यत्पितर्य्यपश्यन् ॥ ३ ॥ तस्माद्यः पुत्राणां दायं
धनतममिवोपैति तं मन्यन्तेऽयमेवेदं भविष्यतीति ॥ ४ ॥ ततो वा
इदमिन्द्रो विश्वमजयद्यद्विश्वमजयत्तस्माद्विश्वजित् ॥ ५ ॥ सोऽकामयत
यन्मेऽनभिजितं तदभिजयेयमिति स एतमभिजितमपश्यत्तेनानभिजित—
मभ्यजयत् ॥ ६ ॥ यदभिजिद्धवत्यनभिजितस्याभिजित्यै ॥ ७ ॥ तौ
वा एताविन्द्रस्तोमौ वीर्य्यवन्तौ शिल्पं वा एतौ नामस्तोमा—
वास्ताम् ॥ ८ ॥ पश्यते गृहे शिल्पं य एवं वेद ॥ ९ ॥ न वै यमौ
नाम स्तोमौ स्तो यो यमाभ्यां यजेतैताभ्यां यजेत समृद्धयै ॥ १० ॥
पुनरभ्यावर्त्तश्स्तोमा भवन्ति पुनरभ्यावर्त्तश्छेताभ्यामिन्द्रोऽ—
जितमजयत् ॥ ११ ॥ त्रींस्त्रिवृदभिजितः प्रणयति त्रीन् पञ्चदश—
स्त्रीन् सप्तदशस्त्रीनेकविंशस्ते द्वादश सम्पद्यन्ते द्वादशमासाः
संवत्सरः संवत्सरः प्रजापतिः प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ १२ ॥ चतुर—
स्त्रिवृद्विश्वजितः प्रणयति चतुरः पञ्चदशश्चतुरः सप्तदशस्ते द्वादश
सम्पद्यन्ते द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरः प्रजापतिः प्रजापति—
मेवाप्नोति ॥ १३ ॥

पञ्चमः खण्डः

‘उप त्वा जामयो गिर’ इत्युपवती प्रतिपद्भवति स्तोमस्य रूपम् ॥१॥ ‘प्राणैर्वा एष व्यृध्यत इत्याहुयः सर्वं ददाति सर्वान् स्तोमान् सर्वाणि पृष्ठान्युपैतीति यद्वायव्या भवति प्राणानाश्-समृद्धयै ॥२॥ सरस्वतश्च सरस्वत्याश्चोत्तरे भवतः ॥३॥ मिथुनं वा एतद्यत् सरस्वाश्च सरस्वती च मिथुनमेवास्य यज्ञमुखे दधाति प्रजननाय ॥४॥ सावित्री चतुर्थी भवति ॥५॥ दुष्करं वा एष करोति यः सर्वं ददाति यत् सावित्री भवति सवितृप्रसूतं मे कर्मासदिति सवितृप्रसूतमेवास्य कर्म भवति ॥६॥ ब्राह्मणस्पत्या पञ्चमी भवति ॥७॥ ब्रह्म वै ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्मैवास्य यज्ञमुखे दधाति ॥८॥ आग्निपावमानो षष्ठी भवति ॥९॥ अग्निरेवैनं निष्टपतिः पवमानः पुनाति पूतमेवैनं यज्ञियं पृष्ठान्युपनयति ॥१०॥ ‘यन्ति वा एते पथ’ इत्याहुयै सम्भार्याः कुर्वते ॥११॥ पवमान उत्तमस्तृचो भवति तेन पथो नयन्ति ॥१२॥ ‘स तु वै पृष्ठैः स्तुवीते’त्याहुय एतानि बहिष्पवमाने युञ्ज्यादिति ॥१३॥ उपवती प्रतिपद्भवत्युप वै रथन्तरश्चरन्तमेवास्मै तया युनक्ति ॥१४॥ सरस्वती द्वितीया भवति स्वर्गो लोकः सरस्वान् स्वर्गो लोको बृहद् बृहदेवास्मै तया युनक्ति ॥१५॥ सरस्वत्यास्तृतीया भवति वाग्वै सरस्वती वाग्वैरूपं वैरूपमेवास्मै तया युनक्ति ॥१६॥ सावित्री चतुर्थी भवति प्रजापतिर्वै सविता प्रजापतिर्वैराजं वैराजमेवास्मै तया युनक्ति ॥१७॥ ब्राह्मणस्पत्या पञ्चमी भवति ब्रह्म वै ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म शक्वर्यः शक्वरीरेवास्मै तया युनक्ति ॥१८॥ आग्निपावमानी षष्ठी भवति गायत्री वै रेवती गायत्रच्छन्दा अग्नीरेवतीरेवास्मै तया युनक्ति ॥१९॥

न चत्वारि षड्भ्यो विभवन्ति यदनिरुक्तानि तेन विभवन्ति ॥ २० ॥ सव्वाणि स्वाराण्याज्यानि तज्जामि नानादेवत्यैः स्तुवन्त्यजामितायै ॥ २१ ॥ 'सुषमिद्धो न आवहे'त्याप्रिय आज्यानि भवन्ति ॥ २२ ॥ प्रजापतिः प्रजा असृजत स दुग्धोरिरिचानोऽमन्यत स एतान्याप्रिय आज्यान्यप्स्यतैरात्मान माप्रीणात् दुग्धइव वा एष रिरिचानो यः सर्वं ददाति यदाप्रिय आज्यानि भवन्त्यात्मानमेव तैराप्रीणाति ॥ २३ ॥ एतर्हि तु वै पृष्ठानि यथायतनं कल्पन्त इत्याहुर्यद्रथन्तरं प्रथमं बृहदुत्तमं मध्यइतराणीति ॥ २४ ॥ 'जामि वा एतद्यज्ञे क्रियत' इत्याहुर्यत्सव्वाणि निधनवन्ति सह क्रियन्त इति यदन्तरा सोमा यन्त्यन्तरोक्थानि शस्यन्तेऽन्तरा वषट्कुर्वन्ति तेनाजामि ॥ २५ ॥ व्यत्यासमिडाश्च निधनानि चाहु— स्तेनाजामि ॥ २६ ॥ च्यवन्ते वा एतद्रेवत्यः स्वादायतनादित्याहुर्यत् त्रयस्त्रिंशात् स्तोमाद्यन्तीति यद्गायत्र्यो भवन्ति तेनायतनान्न च्यवन्ते या हि का च गायत्री सा रेवती ॥ २७ ॥

षष्ठः खण्डः

'पशुभिर्वा एष व्यृध्यत' इत्याहुर्यः सर्वं ददातितच्छवीं परिधत्ते पशुभिरेव समृध्यते ॥ १ ॥ रोहिणीं छवीं भवत्येतद्वै पशूनां भूयिष्ठरूपं यद्रोहितः साक्षादेवैनानवरुन्धे ॥ २ ॥ अरण्ये तिस्रो वसत्यारण्यं ताभिरन्नाद्यमवरुन्धे ॥ ३ ॥ उदुम्बरे वसत्यूर्गुदुम्बर ऊर्जमेवावरुन्धे ॥ ४ ॥ खनित्रेण जीवत्यवृत्तिमपजयति ॥ ५ ॥ उभयतः क्षुदग्निर्भवत्युभयत एवास्मा अन्नाद्यश्चरदत्यस्माच्च लोकाद— मुष्माच्च ॥ ६ ॥ निषादेषु तिस्रो वसत्यस्यां वा एते परीत्ताय देवास्यामन्नाद्यं तदवरुन्धे ॥ ७ ॥ जने तिस्रो वसति जन्यं ताभि— रन्नाद्यमवरुन्धे ॥ ८ ॥

समानजने तिस्रः समानजन्यं ताभिः ॥ ९ ॥ द्वादशैता रात्रयो
भवन्ति द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरमन्वन्नाद्यं प्रजायते
तदेवाप्त्वावरुन्धे ॥ १० ॥ संवत्सरं न याचेदामाद्यमिव वा एतद्यः
सद्योदत्तं प्रत्यत्ति सद्यो वै देवानाः संवत्सरः ॥ ११ ॥ नोदीयमानं
प्रति नुदेदन्नाद्यस्याप्रतिनोदाय ॥ १२ ॥ उष्णीषं बिभर्त्ति
शिल्पत्वाय ॥ १३ ॥ न मृन्मयेन पिबेदाहुतिर्वा एषा यद् ब्राह्मणस्य
मुखं न वै मृन्मयमाहुतिमानशोऽथ यदमृन्मयपो भवति स्व एव
मुख आहुतिञ्चुहोति ॥ १४ ॥

सप्तमः खण्डः

पञ्च विंशोऽग्निष्टोमः ॥ १ ॥ सर्व्वजिता वै देवाः सर्वमजयन्
सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वञ्जयति ॥ २ ॥
तस्य महाव्रतं पृष्ठम् ॥ ३ ॥ अक्यं शस्यते ॥ ४ ॥ चतुर्विंशतिः
संवत्सरस्यार्द्धमासाः संवत्सरः पञ्चविंशोऽन्नं व्रतं संवत्सरादेते—
नान्नाद्यमवरुन्धे ॥ ५ ॥ अन्नादो भवति य एवं वेद ॥ ६ ॥ एतेन वै
गौराङ्गिरसः सर्वं पाप्मानमतरत्सर्वं पाप्मानं तरत्येतेन स्तोमेन
तुष्टुवानः ॥ ७ ॥

अष्टमः खण्डः

अथैष ज्योतिः ॥ १ ॥ पराङ्ग्वै त्रिरात्रोऽर्वाङ्ग्निष्टोमो यस्त्रिरात्रे
विभ्रंश्शते न तस्मिन् पुनरस्त्यथ योऽग्निष्टोमे प्रायश्चित्तिमत्तदपि
ह्येतेनैकविंशति दक्षिणेन पुनर्यजेत यस्मिन् ह्येव यज्ञक्रतौ विभ्रंश्—
शते सैव तस्य प्रायश्चित्तिः ॥ २ ॥ उपसदि सहस्रं प्रातरनुवाक—
मन्वाह तदसौ लोकः सहस्रं दक्षिणास्तदन्तरिक्षं सहस्रमेतान्यक्षराणि
तदयं लोक एषु लोकेषु प्रतितिष्ठति य एवं वेद ॥ ३ ॥

‘ऋक्था वा अन्यत् सहस्रं’ मित्याहुस्क्षरेस्था अन्यदिति यत्
त्रिरात्रे दीयते तदृक्था अथ यदग्निष्टोमे तदक्षरेस्था ॥४॥ यत्
सहस्राक्षरासु ब्रह्मसाम भवति सहस्रस्यैव सा प्रतिष्ठुतिः ॥५॥
‘यावद्वै सहस्रं गाव उत्तराधरा’ इत्याहुस्तावदस्मात् लोकात् स्वर्गो
लोक इति तस्मादाहुः सहस्रयाजी वा इमान् लोकान् प्राप्नोति ॥६॥
‘पशुभिर्वा एष व्यृध्यत’ इत्याहुर्यः सद्यः सहस्रं ददातीति पङ्क्तिषु
ब्रह्मसाम भवति पाङ्क्तो यज्ञः पाङ्क्ताः पशवो यज्ञएव पशुषु
प्रतितिष्ठति ॥७॥ त्रिवृतश्स्तोमश्सम्पद्यते विराजं छन्दः ॥८॥
प्राणो वै त्रिवृदन्नं विराण्वैव प्राण ऋतेऽन्नात्पारयति नान्नमृते
प्राणात्प्राणेषु चैवान्नाद्ये च प्रतितिष्ठति ॥९॥

नवमः खण्डः

अथैष सर्व्वज्योतिः सर्व्वस्याप्तिः सर्व्वस्य जितिः सर्व्वमेवै—
तेनाप्नोति सर्व्वं जयति ॥१॥ परमो या एष यज्ञः परमश्सहस्रं
परमतां गच्छति य एवं वेद ॥२॥ तस्य द्विशताः स्तोत्रीया अन्तो
वै वाचो द्विशतमन्तः सहस्रमन्त एव तदन्तं प्रतिष्ठापयति ॥३॥
कृतस्तोमो वा एष सर्व्वमेवैतेनाप्नोति सर्व्वं जयति सर्व्वं हि कृतेन
जयति ॥४॥ विराजश्सम्पद्यतेऽन्नं विराडन्नाद्यमेवावरुन्धे ॥५॥
एकविंशोऽग्निष्टोमो भवति प्रतिष्ठा वा एकविंशोऽन्तत एव
यज्ञस्य प्रतितिष्ठति ॥६॥

दशमः खण्डः

अथैष विश्वज्योतिरुक्थ्यः ॥१॥ पशवो वा उक्थानि पशवो
विश्वज्योतिर्विश्व एव ज्योतौ पशुषु प्रतितिष्ठति ॥२॥ अहर्भिर्व्वै
त्रिरात्र इमान् लोकानाप्नोति सवनैरेष उत्तरामुत्तरं त्रिरात्रस्याहर्बर्षीय

उत्तरमुत्तरमेतस्य सवनं वर्षीयस्तेन त्रिरात्रमाप्नोत्युत्तर उत्तर एषां
 लोकानां ज्यायाऽस्तेनेमान् लोकानाप्नोति ॥ ३ ॥ अस्थूरिर्वा एष
 सन्ततो यज्ञो द्वौ द्वौ हि स्तोमौ सवनं वहतः ॥ ४ ॥ त्रिवृत्यञ्चदशौ
 प्रातःसवनः सप्तदशपञ्चविंशौ माध्यन्दिनः सवनं चतुर्विंशौ कविंशौ
 तृतीयसवनम् ॥ ५ ॥ यद्वै युक्ते सन्तत आधीयते वहति तद्यथा
 युक्ते सन्तत आदध्यादेवमेतस्मिन् सहस्रमाधीयते ॥ ६ ॥ उभे
 बृहद्रथन्तरे भवतः ॥ ७ ॥ इयं वै रथन्तरं द्यौर्बृहदेवा-
 स्माल्लोकाद्गायत्येवामुष्मादुभयोरनयोर्लोकयोः प्रतितिष्ठति ॥ ८ ॥
 अनुष्टुभ्याथर्वणं भवति ॥ ९ ॥ भेषजं वै देवानामथर्वाणो भेषज्या-
 यैवारिष्ट्यै ॥ १० ॥ उद्वंशीयमुक्थानामन्ततो भवति सर्व्वेषां वा
 एतत् पृष्ठानां रूपः सर्व्वेष्वेव रूपेषु प्रतितिष्ठति ॥ ११ ॥ उक्थो
 भवति पशवो वा उक्थानि पशवः सहस्रं पशुष्वेव तत्प-
 शून्द्धाति ॥ १२ ॥

एकादशः खण्डः

यो वा अग्निष्टोमे त्रिरात्रं प्रोतं विद्यात्सोऽग्निष्टोमे सहस्रं
 दद्यात् त्रिरात्रायतनं हि सहस्रम् ॥ १ ॥ 'उपास्मै गायता नरः' 'उपोषु
 जातमप्तुरं' 'पवस्व वाचो अग्रिय' इति प्रतिपदो भवन्त्येतद्वै
 त्रिरात्रमकः ॥ २ ॥ पवमाने रथन्तरं करोति पवमानस्यान्त्यं वामदेव्यं
 बृहत् पृष्ठम् ॥ ३ ॥ इयं वै रथन्तरमन्तरिक्षं वामदेव्यं द्यौर्बृहदिमे
 लोकास्त्रिरात्रो यदेतानि सामानि सध्वयञ्चि करोतीमानेव तल्लोकान्
 सन्दधाति तेन त्रिरात्रमाप्नोति ॥ ४ ॥ ककुभं प्राचीमुदूहति ॥ ५ ॥
 पुरो ह्येतया सत्या अपशुवीर्य्यं करोति ॥ ६ ॥ तस्यामिडानां
 संक्षारः पुरुषो वै ककुप् पशव इडानां संक्षार आत्मन्येव तत्पशून्
 प्रतिष्ठापयति ॥ ७ ॥

‘प्रत्नं पीयूषं पूर्वं यदुक्थ’ मिति सतोबृहत्यो भवन्ति ॥ ८ ॥
 सतोबृहत्यावै देवा इमान् लोकान् व्याप्नुवन्निमानेवैताभिल्लोकान्
 व्याप्नोति ॥ ९ ॥ ता वा एता गायत्र्यो यत्त्रिपदास्तेन गायत्र्यस्तावा
 एता जगत्यो यद् द्वादशाक्षराणि पदानि तेन जगत्यस्तावा एता
 बृहत्यो यत् षट्त्रिंशदक्षरास्तेन बृहत्यः सर्वेषां वा
 एताश्छन्दसां रूपसर्वाणि रूपाणि पशूनामवरुन्धे ॥ १० ॥ एतद्वै
 प्रत्यक्षं महाव्रतं तस्य गायत्रश्शिरो बृहद्रथन्तरे पक्षौ वामदेव्य—
 मात्मा यज्ञायज्ञीयं पुच्छं दक्षिणा एवाकर्क्यमेष वाव प्रत्यक्षं महाव्रतेन
 स्तुते य एतेन यजते ॥ ११ ॥ तस्य बृहत्पृष्ठं पङ्क्तिषु ब्रह्मसाम
 तदाहुश्छन्दो व्याधीयते यद् बृहत्पृष्ठं भवति पङ्क्तिषु
 ब्रह्मसामेति ॥ १२ ॥ श्रायन्तीयमेव कार्यं न छन्दो व्याधीयते ॥ १३ ॥
 एषो सहस्रस्य प्रतिष्ठुतिः ॥ १४ ॥ सहस्रमन्य मभितिष्ठतीत्याहुः
 सहस्रमन्योऽन्वातिष्ठतीति ॥ १५ ॥ ककुभं प्राचीमुदूहत्यथ यदेषा
 द्विपदा ककुभो लोके क्रियते सहस्रस्यैव सोऽन्वास्थायः ॥ १६ ॥
 अनुष्टुभसम्पद्यते वागनुष्टुब्वाक् त्रिरात्रस्तेन त्रिरात्रमाप्नोति ॥ १७ ॥

द्वादशः खण्डः

आदित्याश्चाङ्गिरसश्चादीक्षन्त ते स्वर्गे लोकेऽस्पृद्धन्त तेऽङ्गिरस
 आदित्येभ्यः श्वः सुत्यां प्राब्रुवन्स्त आदित्या एतमपश्यन्स्तस्य
 परिक्रीयायास्यमुद्रातारं वृत्वा तेन स्तुत्वा स्वर्गं लोकमायन्न—
 हीयन्ताङ्गिरसः ॥ १ ॥ भ्रातृव्यवान्यजेत ॥ २ ॥ भवत्यात्मना परास्य
 भ्रातृव्यो भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥ तस्मा अमुमादित्यमश्वश्चेतं
 कृत्वा दक्षिणामानयन्स्तं प्रतिगृह्य व्यभ्रश्शत स एतान्यायास्या—
 न्यपश्यतैरात्मानं समश्रीणात् ॥ ४ ॥ यदायास्यानि भवन्ति भेषजायैव
 शान्त्यै ॥ ५ ॥

स्वर्गकामो यजेत ॥ ६ ॥ बृहतीऽसम्पद्यते बृहत्या वै देवाः
स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गमेवैतेन लोकमाप्नोति ॥ ७ ॥ पशुकामो
यजेत ॥ ८ ॥ पशवो वै बृहती पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥ ९ ॥

त्रयोदशः खण्डः

एतस्यैवैकविंशमग्निष्टोमसाम कृत्वामयाविनं याजयेत् ॥ १ ॥
प्राणो वै त्रिवृत्प्राण आदित्यः प्राणैरेष व्यृध्यते य आमयावी
प्राणैरेवैनऽसमर्द्धयति ॥ २ ॥ विराजऽसम्पद्यतेऽप वा एतस्मादन्नाद्यं
क्रामति य आमयाव्यन्नं विराडन्नाद्य मेवास्मिन् दधाति ॥ ३ ॥
एकविंशोऽग्निष्टोमो भवत्यप्रतिष्ठितो वा एष य आमयावी
प्रतिष्ठैकविंशः प्रत्येव तिष्ठति ॥ ४ ॥ एतेनैवान्नाद्य कामो वा
प्रतिष्ठाकामो वा यजेतान्नं विराट् प्रतिष्ठैकविंशोऽत्यन्नं
प्रतितिष्ठति ॥ ५ ॥ उर्वरा वेदिर्भवत्येतद्वा अस्यावीर्य्यवत्तमं वीर्य्येणैव
यज्ञऽसमर्द्धयति ॥ ६ ॥ खल उत्तरवेदिस्त्र हि स रसः समवैति
सरसमेव यज्ञं करोति ॥ ७ ॥ खलेवाली यूपो भवत्येतया हि
तश्चरसमुत्कृषन्ति ॥ ८ ॥ त्रिवत्सः साण्डः सोमक्रयणः
सेन्द्रत्वाय ॥ ९ ॥ सर्वा दिशोऽध्वतरथाः सोमप्रवाका
विधावन्ति ॥ १० ॥ सर्वाभ्य एवास्मै दिग्भ्योऽन्नाद्यमवरुन्धे ॥ ११ ॥
योजने चतुर्वाहिणा प्राच्यां दिशि प्राहैवमिव वा अध्वानो
विमिता यैवाध्वनो मात्रा तां धावयन्ति त्रैपदे प्रतिष्ठवाहिनो-
दीच्यां गव्यूतौ द्व्योगेन प्रतिच्यां क्रोशे स्थूरिणा दक्षिणैतद द्वै
दिशाऽरूपं यदेव दिशाऽरूपन्तेन यज्ञऽसमर्द्धयति ॥ १२ ॥
सक्षीरद्वयो रथा भवन्ति ततोऽयन्नवनीतमुदियात्तदाज्येऽपि
कार्य्यऽसद्यस्त्वाय ॥ १३ ॥

चतुर्दशः खण्डः

अथैषोऽङ्गिरसामनुक्रीः ॥१॥ एतेन वा अङ्गिरस
आदित्यानाप्नुवन् यो हीन आनुजावरइव स्यात् स एतेन यजेताप्नोति
पूर्वेषां प्रहामाप्नुवन् ह्येतेनाङ्गिरस आदित्यान् ॥ २॥ तस्य चतुर्विंशौ
पवमानौ ॥ ३॥ चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री गायत्र्या वै देवा इमान्
लोकान् व्याप्नुवन्निमानेवैतेन लोकान् व्याप्नोति ॥ ४॥ तेजो
ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेजएव ब्रह्मवर्चसमवरुन्धे प्राणो गायत्री प्रजननं
प्राणादेव गायत्र्याः प्रजायते ॥ ५॥ उभये स्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्च
तन्मिथुनं तस्मान्मिथुनात्प्रजायते ॥ ६॥ विराजश्सम्पद्यतेऽन्तं
विराडन्नाद्यमेवावरुन्धे ॥ ७॥ एकविंशोऽग्निष्टोमो भवति प्रतिष्ठा
वा एकविंशोऽन्तत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठति ॥ ८॥

पञ्चदशः खण्डः

अथैष विश्वजिच्छिल्पः ॥१॥ शिल्पं वा एष स्तोमानां पश्यते
गृहे शिल्पं य एवं वेद ॥ २॥ तस्याष्टादशौ पवमानौ ॥ ३॥
चक्रीवान्वा एष यज्ञः कामाय यं कामं कामयते तमेतेनाभ्यश्नुते
यत्र हि चक्रीवता कामयते तदभ्यश्नुते ॥ ४॥ स्वर्गकामो
यजेत ॥ ५॥ स्वर्गो लोकः पृष्ठानि स्वर्गमेवैतेन लोकमाप्नोति ॥ ६॥
तेजो ब्रह्मवर्चसं पृष्ठानि यदेकधा पृष्ठानि भवन्त्येकधैवास्मिन्स्तेजो
ब्रह्मवर्चसं दधाति ॥ ७॥ अन्नं पशवः पृष्ठानि यदेकधा पृष्ठानि
भवन्त्येकधैवास्मिन्नन्नाद्यं पशून् दधाति ॥ ८॥ तदाहुर्नानालोकानि
पृष्ठानि यदेकस्मिन्यज्ञक्रतौ समवरुध्यन्त ईश्वरो यजमानोऽ—
प्रतिष्ठातोरिति ॥ ९॥ एकविंशश्होतुः पृष्ठं भवति प्रतिष्ठा वा
एकविंशोऽमध्यत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठत्येकविंशोऽग्निष्टोमो भवति
प्रतिष्ठा वा एकविंशोऽन्तत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठति ॥ १०॥

द्वावेता वेकविंशौ भवतो द्विपाद्यजमानो यजमानमेव यज्ञे
पशुषु च प्रतिष्ठापयति ॥११॥

षोडशः खण्डः

अथैष एकत्रिकः प्रजापतेरुद्भिन् ॥१॥ एतेन वै प्रजापति-
रैषां लोकानामुदभिनत् ॥२॥ कृतस्तोमो वा एष उद्भिन्नश्चेव
कृतस्य ॥३॥ यदेकया स्तुवन्त्येको वै प्रजापतिः प्रजापतिमेवाप्नोत्यथ
यत्तिसृभिस्त्रय इमे लोका एष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥४॥ ता
उ चतस्रः सम्पद्यन्ते चतुष्पादाः पशवः पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥५॥
गायत्रीऽसम्पद्यते तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेज एव ब्रह्मवर्चस-
मवरुन्धे ॥६॥ प्राणो गायत्री प्रजननं प्राणादेव गायत्र्याः
प्रजायते ॥७॥ 'अयारुंचा हरिण्या पुनान' इत्यार्भवः पवमानः ॥८॥
सर्वेषां वा एषा च्छन्दसाऽरूपऽसर्वेष्वेवच्छन्दः स्वार्भवं पवमानं
प्रतिष्ठापयति ॥९॥ तस्यां गायत्रपाश्वं न गायत्रादेति न साम्नो
न निधनात् ॥१०॥

॥ इति षोडशोऽध्यायः ॥



सप्तदशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

देवा वै स्वर्गं लोकमायश्स्तेषां देवा अहीयन्त व्रात्यां प्रवसन्तस्त
आगच्छन् यतो देवाः स्वर्गं लोकमायश्स्तेन तश्स्तोमं न
छन्दोऽविन्दन्येन तानाप्यश्स्ते देवा मरुतोऽब्रुवन्नेतेभ्यस्तश्स्तोमं
तच्छन्दः प्रायच्छत येनास्मानाप्यवानिति तेभ्य एतश्षोडशश्स्तोमं
प्रायच्छन् परोक्षमनुष्टुभं ततो वै ते तानाप्युवन् ॥ १ ॥ हीना वा
एते हीयन्ते ये व्रत्यां प्रवसन्ति न हि ब्रह्मचर्यं चरन्ति न कृषिं न
वणिज्याश्षोडशो वा एतत् स्तोमः समाप्तु मर्हति ॥ २ ॥ मरुत्स्तोमो
वा एष यानि क्षुद्राणि छन्दाश्सि तानि मरुताम् ॥ ३ ॥ ककुभं
प्राचीमुदूहत्यथ यदेषा द्विपदा ककुभो लोके क्रियते रूपेणैवैनाश्स्तत
समर्द्धयति ॥ ४ ॥ 'अघा हीन्द्र गिर्वण' इति विषमं छन्दो विषमइव
वै व्रातः सर्वानेवैतान् समान् करोति ॥ ५ ॥ तासु द्यौतानम् ॥ ६ ॥
द्युतानो मारुतस्तेषां गृहपतिरासीत् एतेन स्तोमेनायजन्त ते सर्व
आर्ध्ववन् यदेतत् साम भवत्यृध्या एव ॥ ७ ॥ यन्निरुक्तं
निधनमुपेयुर्गृहपतिरेवर्ध्वायदपेतरान् आधीताथ यदनिरुक्तमुपयन्ति
सर्वानेवैतान्द्वौ भूतौ प्रतिष्ठापयति ॥ ८ ॥ गरगिरो वा एते ये
ब्रह्माद्यं जन्यमन्नमदन्त्यदुरुक्तवाक्यं दुरुक्तमाहुरदण्ड्यं दण्डेन
घ्नन्तश्चरन्त्यदीक्षिता दीक्षितवाचं वदन्ति षोडशो वा एतेषाश्स्तोमः
पाप्मानं निर्हन्तुमर्हति यदेते चत्वारः षोडशा भवन्ति तेन
पाप्मनोऽधिनिर्मुच्यन्ते ॥ ९ ॥ 'देवो वो द्रविणोदा' इत्यग्निष्टोमसाम
कार्यं देवतास्वेवैनान् प्रतिष्ठापयति ॥ १० ॥

अथो खल्वाहु 'अदर्शि गातुवित्तम' इत्येव सतो बृहतीषु कार्य्यं विषमइव वै व्रातः सव्वनिवैनान् सतोबृहतः करोति ॥११॥ तदाहुः शिथिलमिव वा एतत् छन्दश्चराचरं यत् सतो बृहती 'देवो वो द्रविणोदा' इत्येव कार्य्यम् ॥१२॥ एषा वै प्रतिष्ठिता बृहती या पुनः पदा तद्यत्पदं पुनरारभते तस्मात्पुत्रो मातरमध्येति ॥१३॥ उष्णीषश्च प्रतोदश्च ज्याह्णोडश्च विपथश्च फलकास्तीर्णः कृष्णशं वासः कृष्णवलक्षे अजिने रजतो निष्कस्तद् गृहपतेः ॥१४॥ वलूकान्तानि दामतूषाणी तरेषां द्वे द्वे दामनी द्वे द्वे उपानहौ द्विषश्हितान्यजिनानि ॥१५॥ एतद् वै व्रात्यधनं यस्मा एतद्ददति तस्मिन्नेवमृजाना यन्ति ॥१६॥ त्रयस्त्रिंशता त्रयस्त्रिंशता गृहपति मभिसमायन्ति त्रयस्त्रिंशद्वि देवा आर्ध्वन् ऋध्या एव ॥१७॥

द्वितीयः खण्डः

अथैष षट्षोडशी ये नृशःसा निन्दिताः सन्तो व्रात्यां प्रवसेयुस्त एतेन यजेरन् ॥१॥ अभिपूर्व्वेण वा एते पाप्मना गृहीता ये नृशःसा निन्दिताः सन्तो व्रात्यां प्रवसन्ति यत् षट्षोडशानि स्तोत्राणि भवन्ति तेन पाप्मनोऽधि निर्मुच्यन्ते ॥२॥ यदेक-विंशोऽग्निष्टोमो भवति प्रतिष्ठा वा एकविंशोमध्यत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठन्ति ॥३॥ उक्थो भवति पशवो वा उक्थानि पशवो नृशःसमग्रं परिणयन्ति पशुभिरेवैनानग्रं परिणयन्ति ॥४॥

तृतीयः खण्डः

अथैष द्वि षोडशी ये कनिष्ठाः सन्तो व्रात्यां प्रसवेयुस्त एतेन यजेरन् ॥१॥ हीना वा एते हीयन्ते ये कनिष्ठाः सन्तो व्रात्यां प्रवसन्ति यत्त्रिवृतः पवमाना भवन्ति मुखं वै त्रिवृत् स्तोमानां मुखत एवैनान् यज्ञस्य परिणयति ॥२॥

यद् वै षोडशे स्तोत्रे भवतस्तेन पाप्मनोऽधि निर्मुच्यन्ते ॥ ३ ॥
एकविंशाग्निष्टोमो भवति प्रतिष्ठा वा एकविंशोन्तत एव यज्ञस्य
प्रतितिष्ठन्ति ॥ ४ ॥

चतुर्थः खण्डः

अथैष शमनीचामेद्वाणास्तोमो ये ज्येष्ठाः सन्तो व्रात्यां
प्रवसेयुस्त एतेन यजेरन् ॥ १ ॥ अग्रादग्रश्रोहृत्यूर्ध्वाः स्तोमा
यन्त्यनपञ्चशाय ॥ २ ॥ एतेन वै शमनीचामेद्वा अयजन्त तेषां
कुषीतकः सामश्रवसो गृहपतिरासीत्तान् लुशाकपिः खार्गलिरनु—
व्याहरदवाकीर्षत कनीयाःसौ स्तोमावुपागुरिति तस्मात्कोषीतकीनां
न कश्चनातीव जिहीते यज्ञावकीर्णा हि ॥ ३ ॥

पञ्चमः खण्डः

इन्द्रो वै त्रिशिरसं त्वाष्ट्रमहस्तमश्लीला वागभ्यवदत्
सोऽग्निमुपाधावत् स एतदग्निस्तोत्रमपश्यत्तदात्मन्यधि विधाय
तेनैनमयाजयत्तेनास्याश्लीलां वाचमपाहन् ॥ १ ॥ अपाश्लीलां वाचश्हते
य एवं वेद ॥ २ ॥ योऽपूतइव स्यादग्निष्टुता यजेताग्निनैवास्य
पाप्मानमपहत्य त्रिवृता - तेजो ब्रह्मवर्चसं दधाति ॥ ३ ॥
तदाहुर्यत्रिवृद्भवत्येकस्मादेवाङ्गात् पाप्मानमपहन्ति मुखादेवेति ॥ ४ ॥
ज्योतिष्टोम एव कार्य्यः ॥ ५ ॥ यत्रिवृद्भवति यदेवास्य मुखतोऽपूतं
तत्तेनापहन्ति यत् पञ्चदशो यदेवास्योरस्तो बाह्वोरपूतं तत्तेनापहन्ति
यत् सप्तदशो यदेवास्य मध्यतोऽपूतं तत्तेनापहन्ति यदेकविंशो
यदेवास्य पदोरष्टीवतोरपूतं तत्तेनापहन्ति ॥ ६ ॥ वैश्वानरं वा एष
प्रविशतीत्याहुर्योऽग्निष्टुता यजत इति वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम
कार्य्यं तस्य यदपूतं तदग्निः क्षापयत्यथेतारः शुचिः पूतउदेति ॥ ७ ॥

षष्ठः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमस्तस्य वायव्या स्वग्निष्टोमसाम ॥ १ ॥ ब्रह्मवर्च-
सकामो यजेत ॥ २ ॥ तेजो वै त्रिवृद् ब्रह्मवर्चसं यद्वायव्या-
स्वग्निष्टोमसाम भवत्युपैवैनं तद्धमति ॥ ३ ॥ यथा हिरण्यं
निष्टपेदेवमेनमग्निष्टुन्निष्टपति ॥ ४ ॥

सप्तमः खण्डः

एतस्यैव रेवतीषु वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम कृत्वा पशुकामो
यजेत ॥ १ ॥ जरत्कक्षो वा एष योऽपशुर्यथा वै जरत्कक्षे पशवो
न रमन्त एवमेतस्मिन् पशवो न रमन्ते योऽपशुर्यथा वै
जरत्कक्षमग्निर्दहत्यथैनमभिवर्षत्यथास्मिन्नोषधयो जायन्तेऽथ वै तस्मिन्
पशवो रमन्ते ॥ २ ॥ रमन्तेऽस्मिन् पशवो य एवं वेद ॥ ३ ॥
यदेवास्यापशव्यं तदग्निष्टुन्निर्दहति यदग्निष्टुन्निर्दहति तदद्भीरेवतीभिः
शमयति ॥ ४ ॥

अष्टमः खण्डः

ज्योतिष्टोमेनाग्निष्टुता यज्ञ विभ्रष्टो यजेत ॥ १ ॥ यस्मिन् वा
यज्ञक्रतौ विभ्रश्शते ॥ २ ॥ अग्निर्वा एतस्य हव्यमति यो यज्ञे
विभ्रश्शते न देवता हव्यं गमयत्यग्निमेवैकघर्ध्नोति ॥ ३ ॥ यद्वै
सश्शीर्यतेऽथान्यन्निष्कुर्वन्ति न तेन तद्याति यदा वाव तन्निष्कुर्वन्त्यथ
तद्याति येष्वेव स्तोमेषु विभ्रश्शते यस्मिन् यज्ञक्रतौ तैरेव यजेत
येष्वेव स्तोमेषु विभ्रश्शते यस्मिन् यज्ञक्रतौ तेष्वेव प्रतितिष्ठति ॥ ४ ॥

नवमः खण्डः

सप्तदशेनाग्निष्टुतात्राद्यकामो यजेत ॥ १ ॥ अन्नं वै
सप्तदशोऽग्निरन्नाद्यस्य प्रदाताग्निरेवास्मा अन्नाद्यं प्रयच्छति ॥ २ ॥

अन्नादो भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥ सर्वः सप्तदशो भवति
प्रजापतिर्वै सप्तदशः प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ४ ॥

दशमः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमस्तस्यानिरुक्तं प्रातःसवनम् ॥ १ ॥ प्रजापतिः प्रजा
असृजत ता अस्मात्सृष्टा अपाक्रामन् स एतदनिरुक्तं प्रातः
सवनमपश्यत्तेनासां मध्यं व्यवैत्ता एनमुपावर्तन्त पर्य्येनमाविशन् ॥ २ ॥
ग्रामकामो यजेत यदेतदनिरुक्तं प्रातःसवनं भवति मध्यमेवासां
व्यवैत्युपैनमावर्तन्ते पर्य्येनं विशन्ति ॥ ३ ॥ स एष प्रजापतेर—
पूर्वोनास्मात् पूर्वो भवति य एवं वेद ॥ ४ ॥

एकादशः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमः ॥ १ ॥ तस्य प्रातःसवने सन्नेषु नाराशःसेष्वेका—
दशदक्षिणाव्यादिशत्यश्चद्वादशा माध्यन्दिने ता उभयोरपाकरोत्येकादश
तृतीय सवने ता वशायामपाकरोति ॥ २ ॥ त्रयस्त्रिंशद्देवता दक्षिणा
भवन्ति त्रयस्त्रिंशद्देवता देवता एवाप्नोत्यश्चतुस्त्रिंशो दक्षिणानां
प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो देवतानां प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ३ ॥ स एष
बृहस्पति सवो बृहस्पतिरकामयत देवानां पुरोधां गच्छेयमिति स
एतेनायजत स देवानां पुरोधामगच्छत् ॥ ४ ॥ गच्छति पुरोधां य
एवं वेद ॥ ५ ॥ स एष स्थपति सवो यःस्थापत्यायाभिषिञ्चेरन् स
एतेन यजेत ॥ ६ ॥ गच्छति स्थपत्यं य एवं वेद ॥ ७ ॥ कृष्णा—
जिनेऽध्यभिषिच्यत एतद् वै प्रत्यक्षं ब्रह्मवर्चसं ब्रह्मवर्चस
एवाध्यभिषिच्यते ॥ ८ ॥ आज्येनाभिषिच्यते तेज आज्यं तेज
आत्मन्धत्ते ॥ ९ ॥

द्वादशः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमः स सर्वस्वारो यः कामयेतानामयतामुं
 लोकमियामिति स एतेन यजेत ॥ १ ॥ प्राणो वै त्रिवृत्प्राणः स्वरः
 प्राणानेवास्य बहिर्णिरादधाति ताजक् प्रमीयते ॥ २ ॥ त्रिवृद् वै
 स्तोमानां क्षेपिष्ठो यत्त्रिवृद्धवत्याशीयः सङ्गच्छाता इत्यनन्तो वै
 स्वरोऽनन्तोऽसौ लोकोऽनन्तमेवैनश्स्वर्गं लोकं गमयति ॥ ३ ॥
 अभिवत्यः प्रवत्यो भवन्त्यस्मादेवैनं लोकात् स्वर्गं लोकं
 गमयन्ति ॥ ४ ॥ आर्भपवमाने स्तूयमान औदुम्बर्या दक्षिणा प्रावृतो
 निपद्यते तदेव सङ्गच्छते ॥ ५ ॥ स एष शुनस्कर्णस्तोम एतेन वै
 शुन स्कर्णोबाष्किहोऽयजततस्माच्छुनस्कर्णस्तोम इत्याख्यायते ॥ ६ ॥

त्रयोदशः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमो वैश्वदेवस्य लोकः ॥ १ ॥ आग्नेयी प्रतिपद्
 वैश्वदेवः पशुर्बाह्विस्पत्यानूबन्ध्या ॥ २ ॥ न यूपं मिन्वन्ति नोत्तरवेदिं
 निवपन्ति ॥ ३ ॥ परिधौ पशुं नियुञ्जन्ति ॥ ४ ॥ पञ्चाशदक्षिणा ॥ ५ ॥
 अहतं वसानोऽवभृथादुदैति चतुरोमासो न माश्समश्नाति न
 स्त्रियमुपैति ॥ ६ ॥ ततश्चतुर्षु मासेषु वरुणप्रघासानां लोके
 द्विदिवः ॥ ७ ॥ वारुणी प्रतिपन्मारुतः पशुः ॥ ८ ॥ कवती
 प्रतिपद्धारुणः पशुः ॥ ९ ॥ मैत्रावरुण्यनूबन्ध्या मिन्वन्ति यूपं न्युत्तरवेदिं
 वपन्ति यूपे पशू नियुञ्जन्ति ॥ १० ॥ शतं दक्षिणा अहतं
 वसानोऽवभृथादुदैति चतुरोमासो न माश्समश्नाति न
 स्त्रियमुपैति ॥ ११ ॥ ततश्चतुर्षु मासेषु साकमेधानां लोके
 त्रिरात्रः ॥ १२ ॥ अनीकवती प्रतिपदाग्नेयः पशुर्मारुती प्रतिपदैन्द्राग्नः
 पशुर्वैश्वकर्म्मणी प्रतिपदेकादशिनीपशवः सौर्यानूबन्ध्यामिन्वन्ति यूपं

न्युत्तरवेदिं वपन्ति यूपे पशू नियुञ्जन्ति पञ्चाशच्छतं दक्षिणा ॥१३॥
 अहतं वसानोऽवमृथादुदैति चतुरोमासो न माऽसमश्नाति न
 स्त्रियमुपैति ॥१४॥ ततश्चतुर्षु मासेषु शुनासीर्य्यस्य लोके
 ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोमः ॥१५॥ उपवती प्रतिपद्वायव्यः पशुराश्वि-
 न्यनूबन्ध्या मिन्वन्ति यूपं न्युत्तरवेदिं वपन्ति यूपे पशुं नियुञ्जन्ति
 द्वादशशतं दक्षिणा ॥१६॥ अग्निः संवत्सरः सूर्य्यः परिवत्सरश्चन्द्रमा
 इदावत्सरो वायुरनु वत्सरोऽग्निः संवत्सरं वैश्वदेवेनाप्नोति सूर्य्य
 परिवत्सरं वरुणप्रघासैश्चन्द्रमसमिदावत्सरः साकमेधैर्वायुमनुवत्सरः
 शुनासीर्य्येण ॥१७॥ हविर्य्यज्ञैर्वै देवा इमं लोकमभ्यजयन्नन्तरिक्षं
 पशुमद्भिः सोमैरमुमिमानेवैतेन लोकानाप्नोत्येषु लोकेषु प्रतितिष्ठति
 य एवं वेद ॥१८॥

चतुर्दशः खण्डः

यदाग्निहोत्रं जुहोत्यथ दशगृहमेधिन आप्नोत्येकया रात्र्या,
 यदा दशसंवत्सरानग्निहोत्रं जुहोत्यथ दर्शपूर्णमासयाजिनमाप्नोति,
 यदा दश संवत्सरान् दर्शपूर्णमासाभ्यां यजतेऽथाग्निष्टोम-
 याजिनमाप्नोति, यदा दशभिरग्निष्टोमैर्य्यजतेऽथ सहस्रयाजिनमाप्नोति,
 यदा दशभिः सहस्रैर्य्यजतेऽथाऽयुतयाजिनमाप्नोति, यदा
 दशभिरयुतैर्य्यजतेऽथ प्रयुत याजिनमाप्नोति, यदा दशभिः
 प्रयुतैर्य्यजतेऽथनियुतयाजिनमाप्नोति, यदा दशभिर्नियुतैर्य्यजतेऽथा-
 बुदयाजिनमाप्नोति, यदा दशभिरबुदैर्य्यजतेऽथन्यबुद याजिनमाप्नोति,
 यदा दशभिर्न्यबुदैर्य्यजतेऽथ निखर्व्वकयाजिनमाप्नोति, यदा
 दशभिर्निखर्व्वकैर्य्यजतेऽथ बद्धयाजिनमाप्नोति, यदा दशभिर्बद्धै-
 र्य्यजतेऽथाक्षितयाजिनमाप्नोति, यदा दशभिरक्षितैर्य्यजतेऽथ गौर्भवति,

यदा गौर्भवत्यथाग्निर्भवति यदाग्निर्भवत्यथ संवत्सरस्य
 गृहपतिमाप्नोति ॥ १ ॥ यदा संवत्सरस्य गृहपतिर्भवत्यथ वैश्वदेवस्य
 मात्रामाप्नोत्यतो वा इतरे परस्तरां परस्तरामेव सर्वे ॥ २ ॥ एतानेव
 लोकानाप्नोत्येतान् लोकाञ्जयति य एवं वेद ॥ ३ ॥

॥ इति सप्तदशोऽध्यायः ॥



अष्टादशोऽध्यायः

प्रथमः खण्ड

सप्तदशोऽग्निष्टोमः ॥ १ ॥ देवाश्च वा असुराश्च प्रजापतेर्याः
पुत्रा आसःस्तेऽसुराभूयाःसो बलीयाःस आसन् कनीयाःसो देवास्ते
देवाः प्रजापतिमुपाधावन् स एतमुपहव्यमपशत् ॥ २ ॥ स ऐक्षत
यन्निरुक्तमाहरिष्याम्यसुरामे यज्ञःहनिष्यन्तीति सोऽनिरुक्त—
माहरत् ॥ ३ ॥ स उत्तमे स्तोत्रे 'देवो वो द्रविणोदा' इति
देवानभिपर्य्यावर्तत ॥ ४ ॥ ततो देवा अभवन् परासुराः ॥ ५ ॥
भवत्यात्मना पराऽस्य भ्रातृव्यो भवति य एवं वेद ॥ ६ ॥ अथो
खल्वाहुः 'यज्ञायज्ञा वो अग्नय' इत्येव कार्य्यम् ॥ ७ ॥ अग्निर्वै
सर्वा देवतास्तेन न देवतानां काञ्चनान्तरेति ॥ ८ ॥ इन्द्रो यतीन्
सालावृकेभ्यः प्रायच्छत्तमश्लीला वागभ्यवदत् स प्रजापति—
मुपाधावत्तस्मा एतमुपहव्यं प्रायच्छत्तं विश्वे देवा उपाह्वयन्त यदुपाह्वयन्त
तस्मादुप हव्यः ॥ ९ ॥ अभिशस्यमानं याजयेत् ॥ १० ॥ देवता
वा एतं परिवृजन्ति यमनृतमभिशःसन्ति देवता एवास्यान्मा—
दयन्ति ॥ ११ ॥ तस्य पूतस्य स्वदितस्यमनुष्या अन्नमदन्ति ॥ १२ ॥
ग्रामकामो यजेत ॥ १३ ॥ मारुती भवति मरुतो वै देवानां विशो
विशमेवास्मा अनुनियुक्त्यनपक्रामुकास्माद्विद्भवति ॥ १४ ॥ पशुकामो
यजेत पौषी भवति ॥ १५ ॥ पशवो वै पूषा पशूनेवावरुन्धे ॥ १६ ॥
वैश्वदेवी भवति विश्वे ह्येनं देवा उपाह्वयन्त ॥ १७ ॥ बृहत्सामा
भवति ॥ १८ ॥ प्रजापतिर्ह्येनमिन्द्राय प्रायच्छत् ॥ १९ ॥ अश्वः श्यावो
दक्षिणा ॥ २० ॥ स ह्यनिरुक्तः ॥ २१ ॥ स ब्रह्मणे देयः ॥ २२ ॥

ब्रह्मा वा ऋत्विजामनिरुक्तः स्वेनैवैनं तद्गुणेण
समर्द्धयति ॥ २३ ॥ यावद्ध वै कुमारे सद्योजात एनो नास्मिंस्तावच्च
नैनो भवति य एवं वेद ॥ २४ ॥

द्वितीयः खण्डः

सप्तदशोऽग्निष्टोमः ॥ १ ॥ तस्य द्वादश दीक्षोपसदः ॥ २ ॥
स्वर्गं कामो यजेत ॥ ३ ॥ द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सरः
स्वर्गोलोकः स्वर्गमेवैतेन लोकमाप्नोति ॥ ४ ॥ घृतव्रतो भवति ॥ ५ ॥
देवव्रतं वै घृतं देवव्रतेनैव देवता अप्येति ॥ ६ ॥ उत्तरेणोत्तरेण
काण्डेनोपैत्युत्तर उत्तर एषां लोकानां ज्यायान् स्वर्गस्य लोकस्य
समष्ट्यै ॥ ७ ॥ बृहत् सामा भवति बृहता वै देवाः स्वर्गं लोकमायन्
स्वर्गमेवैतेन लोकमाप्नोति ॥ ८ ॥ ऋतमुक्त्वा प्रसर्पन्त्यृतेनैवैनं
स्वर्गं लोकं गमयन्ति ॥ ९ ॥ सोमचमसो दक्षिणा देवतयैव देवता
अप्येति ॥ १० ॥ औदुम्बरो भवत्यूर्गुदुम्बर ऊर्जमेवावरुन्धे ॥ ११ ॥
सगोत्राय ब्रह्मणे देयः सोमपीथस्याविदोहाय ॥ १२ ॥ सर्वः सप्तदशो
भवति ॥ १३ ॥ द्वादशमासाः पञ्चर्तवः स वै संवत्सरः संवत्सरः
स्वर्गोलोकः स्वर्गमेवैतेन लोकमाप्नोति ॥ १४ ॥

तृतीयः खण्डः

सप्तदशोऽग्निष्टोमः ॥ १ ॥ तस्य दीक्षणीयायामिष्टौ द्वादश—
मानश्हिरण्यं ददाति चतुर्विंशतिमानं प्रायणीयायां द्वे चतुर्विंशतिमाने
आतिथ्यायां चत्वारि चतुर्विंशतिमानानि प्रातः प्रथमायामुपसद्यष्टौ
चतुर्विंशतिमानान्यपराह्णे प्रथमायामुपसदि षोडशचतुर्विंशतिमानानि
प्रातर्मध्यमायामुपसदि द्वात्रिंशतं चतुर्विंशतिमानान्यपराह्णे
मध्यमायामुपसदि चतुःषष्टिं चतुर्विंशतिमानानि प्रातरुत्तमाया—

मुपसद्यष्टाविंशति शतं चतुर्विंशतिमानान्यपराह उत्तमायामुपसदि
द्वे अष्टाविंशतिशतमाने अग्नीषोमीयस्य पशोर्वपायाम्
चत्वार्यष्टाविंशतिशतमानानि प्रातः पशोर्वपायामष्टावष्टा—
विंशतिशतमानानि प्रातः सवने सन्नेषु नाराशःसेषु
षोडशाष्टाविंशतिशतमानानि माध्यन्दिने सवनेऽनडुच्छतञ्च रुक्मी
होतुः सगुद्रातुर्द्वात्रिंशतमष्टाविंशतिशतमानानि तृतीयसवनेषु सन्नेषु
नाराशःसेषु चतुःषष्टिमष्टाविंशतिशतमानान्युदयनीयायामिष्टौष्टा—
विंशतिशतमष्टाविंशतिशतमानानि वशायां वपायाम् ॥ २ ॥ एष
वा अनडुहो लोकमाप्नोति य एवं वेद ॥ ३ ॥ एष वै ज्योतिष्मन्तं
पुण्यं लोकं जयति य एवं विद्वानेतेन यजते ॥ ४ ॥

चतुर्थः खण्डः

सप्तदशोऽग्निष्टोमः ॥ १ ॥ तस्य प्रातःसवनीयान् सोमान्
प्रतिदुहा श्रीणाति श्रुतेन मध्यन्दिने दध्ना तृतीयसवने ॥ २ ॥ पशुकामो
यजेत ॥ ३ ॥ यत् सर्वाणि सवनान्याशीर्त्वन्ति भवन्त्यनुसवनमेवैनं
पशुभिः समर्द्धयति प्रजात्वस्य मीलितेव भवति शुक्रिये हि सवने
पयसा श्रीणाति ॥ ४ ॥ वैश्यं याजयेत् ॥ ५ ॥ एतद्वै वैश्यस्य
समृद्धं यत्पशवः पशुभिरेवैनं समर्द्धयति ॥ ६ ॥ तस्य कण्वरथन्तरं
पृष्ठम् ॥ ७ ॥ सदोविशीयं ब्रह्मसाम ॥ ८ ॥ पशवो वै कण्वरथन्तरं
पशवः सदोविशीयमभि पूर्वाग्निवास्मिन् पशून् दधाति ॥ ९ ॥ सर्वः
सप्तदशो भवति ॥ १० ॥ द्वादशमासाः पञ्चर्तवः स वै संवत्सरः
संवत्सरं पशवोऽनुप्रजायन्ते तानेवाप्त्वा वरुन्धे ॥ ११ ॥

पञ्चमः खण्डः

सप्तदश उक्थ्यः ॥ १ ॥ इन्द्रो वृत्रमहन् स विष्वङ्वीर्येण
व्यार्च्छत्तस्मै देवाः प्रायश्चित्तिमैच्छन्तं न किञ्चनाधिनोतं तीव्रसोम

एवाधिनोत् ॥ २ ॥ सोमातिपवितं याजयेत् ॥ ३ ॥ छिद्रइव वा एष
 यश्सोमोऽतिपवते यत्तीव्रसोमेन यजते पिहित्या एवाच्छिद्रतायै ॥ ४ ॥
 राजानमपरुद्धं याजयेत् ॥ ५ ॥ विडवा एतमतिपवते यो राजा—
 वरुध्यते यत्तीव्रसोमेन यजते पिहित्या एवाच्छिद्रतायै ॥ ६ ॥ ग्रामकामो
 यजेत् ॥ ७ ॥ ग्रामो वा एतमति पवते योऽलं ग्रामाय सन् ग्रामं न
 विन्दते यत्तीव्रसोमेन यजते पिहित्या एवाच्छिद्रतायै ॥ ८ ॥ प्रजाकामो
 यजेत प्रजा वा एतमतिपवते योऽलं प्रजायाः सन् प्रजां न विन्दते
 यत्तीव्रसोमेन यजते पिहित्या एवाच्छिद्रतायै ॥ ९ ॥ पशुकामो यजेत
 पशवो वा एतमतिपवन्ते योऽलं पशुभ्यः सन् पशूं न विन्दते
 यत्तीव्रसोमेन यजते पिहित्या एवाच्छिद्रतायै ॥ १० ॥ आमयाविनं
 याजयेत् प्राणा वा एत मतिपवन्ते य आमयावी यत्तीव्रसोमेन
 यजते पिहित्या एवाच्छिद्रतायै ॥ ११ ॥ शतमाशिरं दुहन्ति
 तीव्रयन्त्येवैनम् ॥ १२ ॥ तत्ता उ एव दक्षिणाः ॥ १३ ॥
 अभ्यभिसोमानुन्नयन्ति तीव्रएनं धिनवदित्युभावध्वर्यू सर्वे
 चमसाध्वर्य्वोऽच्छावाकाय प्रतिगृणन्ति तीव्रयन्त्येवैनम् ॥ १४ ॥
 तदभक्षयन्त ऋत्विजश्चमसानवजिघ्रति तीव्रयन्त्येवैनं
 तत्तानच्छावाकस्यस्तोत्रे भक्षन्ति तीव्रयन्त्येवैनम् ॥ १५ ॥ तद्यत्
 सवनानि व्यवभक्षयेयुरपक्रामुका यजमानाच्छ्रीः स्यात्
 सकृत्सकृत्सवनानामन्ततो भक्षयन्ति सवनानामसंभेदाय ॥ १६ ॥
 रथन्तरं साम भवति ॥ १७ ॥ इयं वै रथन्तरमस्यां वा एष न
 प्रतितिष्ठति यो न प्रतितिष्ठत्यस्यामेवैनं प्रतिष्ठापयति ॥ १८ ॥
 श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम भवत्येतदेवास्मिञ्छ्रीणाति ॥ १९ ॥
 यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि भवति ॥ २० ॥ वागनुष्टुप् वाचोरसो यज्ञायज्ञीयं
 वाच्येवास्यरसं दधाति ॥ २१ ॥

विशोविशीयमग्निष्टोमसाम भवत्येतदेवास्मिन् सर्वं
प्रतिष्ठापयति ॥ २२ ॥ उद्धृशीयमुक्थानामन्ततो भवति सर्वेषां वा
एतत्पृष्ठानां रूपं सर्वेष्वेवरूपेषु प्रतितिष्ठति ॥ २३ ॥ उक्थ्यो भवति
पशवो वा उक्थानि पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥ २४ ॥

षष्ठः खण्डः

सप्तदश उक्थ्य षोडशिमान् सप्तदशी ॥ १ ॥ यावान्वै प्रजापति
रूर्ध्वस्तावांस्तिर्य्यक् ॥ २ ॥ यावन्त इमे लोका ऊर्ध्वस्तावन्त
स्तीर्य्यञ्चः ॥ ३ ॥ वाजपेययाजी वाव प्रजापतिमाप्नोति ॥ ४ ॥ यत्
सप्तदशस्तोत्राणि तेनोर्ध्वमाप्नोति यत्सर्वः सप्तदशस्तेन
तिर्य्यञ्चम् ॥ ५ ॥ तस्य नानावीर्याणि सवनानि ॥ ६ ॥ अनिरुक्तं
प्रातःसवनं वाजवन् माध्यन्दिनसवनं चित्रवत् तृतीयसवनम् ॥ ७ ॥
यदनिरुक्तं प्रातःसवनं भवत्यनिरुक्तो वै प्रजापतिः प्रजापतिमेवाप्नोति
यद्वाजवन् माध्यन्दिनसवनमन्नं वै वाजोऽन्नाद्यस्यावरुध्यै यच्चित्रवत्
तृतीयसवनस्य स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ ८ ॥ वियोनिर्वाजपेयइत्याहुः
प्राजापत्यस्स निरुक्त सामेति यदनिरुक्तं प्रातःसवनं तेन
सयोनिः ॥ ९ ॥ रथन्तरसाम भवत्याशीय उज्झित्यै ॥ १० ॥ इयं
वै रथन्तरमस्यामेवाध्यभिषिच्यते ॥ ११ ॥ तस्माद्वाजपेययाज्य—
प्रत्यवरोही ॥ १२ ॥ अस्यांहि सोऽध्यभिषिच्यते ॥ १३ ॥ अभीवर्त्तो
ब्रह्मसाम भवति ब्रह्मणो वा एष ऋषभ ऋषभतामेवैनं गमयति ॥ १४ ॥
यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि भवति वागनुष्टुब् वाचोरसो यज्ञायज्ञीयं
वाच्येवास्य रसं दधाति ॥ १५ ॥ वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम
भवतीन्द्रियस्य वीर्य्यस्य परिगृहीत्यै ॥ १६ ॥ उद्धृशीयमुक्थानामन्ततो
भवति सर्वेषां वा एतत् पृष्ठानां रूपं सर्वेष्वेव रूपेषु
प्रतितिष्ठति ॥ १७ ॥ गौरीवितषोडशिसाम भवति ॥ १८ ॥

अतिरिक्तं गौरीवितमतिरिक्तः षोडश्यतिरिक्तएवातिरिक्तं
 दधाति ॥ १९ ॥ तदाहुर्ज्जामि वा एतद्यज्ञे क्रियते
 यदुद्वंशीयाद्गौरीवितेनस्तुवते स्वारात् स्वारेणेति ॥ २० ॥ न
 जाम्यस्ति सवनं सन्तिष्ठते ॥ २१ ॥ उक्थंशस्यते वषट्कारोऽन्तरा
 तेनाजामि ॥ २२ ॥ अपच्छिदिव वा एतद्यज्ञकाण्डं यत् षोडशी
 तेनाजामि ॥ २३ ॥ यज्ञारण्ये सन्तिष्ठत इत्याहुरत्युक्तान्येत्यति
 षोडशिनं न रात्रिं प्राप्नोतीति ॥ २४ ॥ विष्णोः शिपिविष्टवतीषु
 बृहदुत्तमं भवति ॥ २५ ॥ एषा वै प्रजापतेः पशुष्ठा तनूर्य्यच्छिपिविष्टः
 प्राणो बृहत् प्राणएव पशुषु प्रतितिष्ठति ॥ २६ ॥ बृहतां स्तुवन्ति
 बृहदमुं लोकमाप्नुमर्हति तमेवाप्नोति ॥ २७ ॥

सप्तमः खण्डः

प्रजापतिरकामयत वाजमाप्नुयाः स्वर्गं लोकमिति स एतं
 वाजपेयमपश्यद्वाजपेयो वा एष वाजमेवैतेभ्यः स्वर्गं
 लोकमाप्नोति ॥ १ ॥ शुक्रवत्यो ज्योतिष्मत्यः प्रातःसवने भवन्ति
 तेजो ब्रह्मवर्चसं ताभिरवरुन्धे ॥ २ ॥ वाजवत्यो मध्यन्दिने भवन्ति
 स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥ ३ ॥ अन्नवत्यो गणवत्यः
 पशुमत्यस्तृतीयसवने भवन्ति भूमानं ताभिरवरुन्धे ॥ ४ ॥ सर्वः
 सप्तदशो भवति प्रजापतिर्वै सप्तदशः प्रजाप्रतिमेवाप्नोति ॥ ५ ॥
 हिरण्यस्रज ऋत्विजो भवन्ति महसएव तद्रूपं क्रियते ॥ ६ ॥ एष
 मेऽमुष्मिन् लोके प्रकाशोऽसदिति ॥ ७ ॥ ज्योतिर्वै हिरण्यं
 ज्योतिरेवास्मिन्दधाति ॥ ८ ॥ आजिं धावन्ति यजमानमुज्जापयन्ति
 स्वर्गमेवैनं तल्लोकमुज्जापयन्ति ॥ ९ ॥ नाकश्रोहति स्वर्गमेव
 तल्लोकश्रोहति ॥ १० ॥ सरजसे रोहति मनुष्यलोकादेवै-
 नमन्तर्दधति ॥ ११ ॥

वाजिनाऽसाम ब्रह्मा रथचक्रेऽभिगायति वाजो वै स्वर्गोलोकः
स्वर्गमेवैनं तल्लोकमुज्जापयति ॥१२॥ विष्णोः शिपिविष्टवतीषु
बृहदुत्तमं भवति स्वर्गमेव तल्लोकश्चरुद्वा ब्रध्नस्य विष्टपमभ्यति
क्रामति ॥१३॥

अष्टमः खण्डः

अग्निष्टोमं प्रथममाहरति यज्ञमुखं वा अग्निष्टोमो
यज्ञमुखमेवारभ्य सर्वमाक्रमते ॥१॥ अथैषोऽभिषेचनीयः ॥२॥
तस्य द्वात्रिंशाः पवमाना द्वित्रिंशदक्षरारनुष्टुब्बागनुष्टुब्यावती वाक्
तयैव सूयते ॥३॥ तदाहुः सऽशर इव वा एष छन्दसां यद्विषमास्तोमा
अयथापूर्वमिति ॥४॥ यत्समाः पवमानास्तेनासऽशरस्तेन
यथापूर्वम् ॥५॥ आत्मना वा अग्निष्टोमेनर्धोत्यात्मना पुण्यो
भवत्यथ यदुक्त्यानि पशवो वा उक्त्यानि विडुक्त्यानि यदुक्त्यानि
भवन्त्यनुसन्तत्या एव ॥६॥ 'वायो शुक्रो अयामित' इति वायव्या
प्रतिपद्भवति वाग्वै वायुर्वाचमेवास्य यज्ञमुखे युनक्ति तयाभिषिच्यते
सर्वस्या एव वाचः सूयते सर्वा एनं वाचो राजेति वदन्ति ॥७॥
सम्भार्या भवन्ति पृष्ठान्येव ताभिर्युनक्ति यन्नानादेवत्यास्तेन युनक्ति
वीर्यं वै पृष्ठानि वीर्यं एवाध्यभिषिच्यते ॥८॥ यन्ति वा एते
यज्ञमुखादित्याहुर्व्ये सम्भार्याः कुर्वत इति ॥९॥ यत् 'पवस्व
वाचो अग्रिय' इति तेन यज्ञमुखान्नयन्ति ॥१०॥ 'दविद्युतत्या
रुचे'ति छन्दसाश्चरुपं छन्दाऽस्येवास्य यज्ञमुखे युनक्ति
तैरभिषिच्यते ॥११॥ 'एत मु त्यं दश क्षिप' इत्यादित्या आदित्या
वा इमाः प्रजास्तासामेव मध्यतः सूयते ॥१२॥ 'पवस्वेन्दो वृषा
सुत' इति वृषण्वत्यो भवन्ति त्रिष्टुभो रूपं वीर्यं वै त्रिष्टुप् वीर्यं
एवाध्यभिषिच्यते ॥१३॥

‘उत्ते शुष्मास ईरत’ इत्युद्वत्यो भवन्त्युद्वद्वा अनुष्टुभो
 रूपमानुष्टुभो राजन्यस्तस्मादुद्वत्यो भवन्ति ॥१४॥ ‘पवमानस्य ते
 कव’ इति प्राणानां क्लृप्त्यै ॥१५॥ ‘अघ क्षपा परिष्कृत’ इत्यनुष्टुप्
 प्रथमाऽनुष्टुबुत्तमा वाग्वा अनुष्टुप् वाचैव प्रयन्ति
 वाचमभ्युद्यन्ति ॥१६॥ छिन्नमिव वा एतद्यदेकर्च्चा यदेतावानुष्टुभौ
 तृचावभितो भवतो बहवः पुरएतारो भवन्ति बहवः पश्चापिनः ॥१७॥
 सौर्य्यानुष्टुबुत्तमा भवति स्वर्गस्य लोकस्य समष्ट्यै ॥१८॥

नवमः खण्डः

वरुणस्य वै सुषुवाणस्य भर्गोऽपाक्रामत्स त्रेधापतद्—
 भृगुस्तृतीयमभवच्छ्रायन्तीयं तृतीयमपस्तृतीयं प्राविशत् ॥१॥
 यद्भार्गवोहोता भवति तेनैव तदिन्द्रियं वीर्य्यमाप्त्वावरुन्धे यत्
 श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम भवति तेनैव तदिन्द्रियं वीर्य्यमाप्त्वावरुन्धे यत्
 पुष्करस्रजं प्रतिमुञ्चते तेनैव तदिन्द्रियं वीर्य्यमाप्त्वावरुन्धे ॥२॥
 दशमी भवति ॥३॥ दशचमसा दशचमसाध्वर्य्यवो दश दश
 चमसमभयन्त्यादशमात् पुरुषदन्वाख्याय प्रसर्पन्ति दशसमृद्धो ह्येष
 यज्ञ एनं वाव ते तद्यज्ञमनैच्छन्त्य एतेन यजत एतदेवेन्द्रियं
 वीर्य्यमाप्त्वास्मिन् दधाति ॥४॥ सर्वः सप्तदशो भवति द्वादशमासाः
 पञ्चर्तवः स वै संवत्सरः संवत्सरादेवेन्द्रियं वीर्य्यमाप्त्वावरुन्धे ॥५॥
 इन्द्रो वृत्रमहं स्तस्येयं चित्राण्युपैद्रूपाण्यसौ नक्षत्राणामवकाशेन
 पुण्डरीकं जायते यत् पुष्करस्रजं प्रतिमुञ्चते वृत्रस्यैव तद्रूपं क्षत्रं
 प्रतिमुञ्चते ॥६॥ द्वादशपुष्करा भवति द्वादशमासाः संवत्सरः
 संवत्सरेऽन्तर्भूतञ्च भव्यञ्च भूतेन चैवैनं भव्येन च समर्द्धयति ॥७॥
 स्रगुद्गातुस्सौर्य्य उद्गाता न वै तस्मै व्यौच्छदथो व्येवास्मै
 वासयति ॥८॥

रुक्मोहोतुराग्नेयो होताथो अमुमेवास्मा आदित्यमुन्नयति ॥ ९ ॥
 प्राकाशा वध्वर्य्योर्ध्वमाविव ह्यध्वर्य्यं अथो चक्षुषी एवास्मिन्
 दधाति ॥ १० ॥ अश्वः प्रस्तोतुः प्राजापत्योऽश्वः प्राजापत्यः प्रस्तोताथो
 प्रेव ह्यश्वः प्रोथति प्रेव प्रस्तोता स्तौति ॥ ११ ॥ धेनुः प्रतिहर्तुः
 पय एवास्मिन् दधाति ॥ १२ ॥ वशा मैत्रावरुणस्य वशं मा
 नयादिति ॥ १३ ॥ ऋषभो ब्राह्मणाच्छंसिनो वीर्य्यं वा ऋषभो
 वीर्य्यमेवास्मिन् दधाति ॥ १४ ॥ वासः पोतुः पवित्रत्वाय ॥ १५ ॥
 वरासी नेष्टुरनुलम्बेवह्येषा होत्रा ॥ १६ ॥ स्थूरियवाचितमच्छावाकस्य
 स्थूरिरिवह्येषा होत्राथो निर्व्वरुणत्वायैव यवा न वै तर्हि सदस्यां
 दक्षिणा अभ्यभवन्नथो अस्य त एव तेनाभीष्टाः प्रीता भवन्ति ॥ १७ ॥
 अनड्वानग्नीधो युक्त्यै ॥ १८ ॥ अजः सुब्रह्मण्यायै ॥ १९ ॥
 वत्सतय्युन्नेतुः साण्डः स्त्रिवत्सो ग्रावस्तुतो मिथुनत्वाय ॥ २० ॥
 द्वादशपष्ठौह्यो गर्भिण्यो ब्रह्मणो द्वादशमासाः संवत्सरः संवत्सर
 एव प्रतितिष्ठत्यथ यद्गर्भिण्यो वाग्वै धेनुर्मन्त्रो गर्भो वाच्ये वास्य
 मन्त्रं दधात्यामन्त्रणीयो भवत्यथ यद्धेनुभव्या द्वादश पयांसि
 तान्येवास्मिन् दधाति तस्मादाहुः पयस्वी राजा पुण्य इति ॥ २१ ॥

दशमः खण्डः

यो वै सवादेति नैनश्च उपनमत्यथ यः सामभ्य एति
 पापीयान् सुषुवाणो भवति ॥ १ ॥ सम्भार्या भवन्ति पृष्ठान्येव
 ताभिर्युनक्ति ॥ २ ॥ एतानि वाव सामानि यत् पृष्ठानि ॥ ३ ॥
 यत् सम्भार्या भवन्ति तदेव सामभ्यो नैति ॥ ४ ॥ यानि देवराज्ञां—
 सामानि तैरमुष्मिन् लोक ऋद्धनोति यानि मनुष्यराज्ञां
 तैरस्मिन्नुभयोरनयोर्लोकयोर्ऋद्धनोति देवल्लोके च मनुष्यलोके
 च ॥ ५ ॥

साम त्रिष्टुभ्यध्यभिषिच्यते वीर्यं वै सामत्रिष्टुप् वीर्यं एवाह
यभिषिच्यते ॥ ६ ॥ एकादश राजसामानि भवन्त्येकादशाक्षरा
त्रिष्टुबोजोवीर्यं त्रिष्टुबोजस्येव वीर्येऽध्यभिषिच्यते ॥ ७ ॥ यत्
त्रिवृतमभिषेचनीये कुर्युर्ब्रह्मक्षत्रायापि दध्युर्यत्रिवृतमुद्धरन्ति ब्रह्म
तत् क्षत्रादुद्धरन्ति तस्माद्धरतां प्रतिदण्डा ब्राह्मणा न हि तं
त्रिवृतमभिषेचनीये कुर्वन्ति ॥ ८ ॥ एकविंशोऽभिषेचनीयस्योत्तमः
सप्तदशो दशपेय एकविंशः केशवपनीयस्य प्रथमःक्षत्रं वा
एकविंशो विद् सप्तदशः क्षत्रेणैवास्मै विशमुभयतः
परिगृह्णात्यनपक्रामुकास्माद्विद् भवति ॥ ९ ॥ यद्वै राजसूयेनाभिषिच्यते
तत् स्वर्गं लोकमारोहति स यदिमं लोकं नोपावरोहेदति जनं वा
गच्छेदुद्दामाद्येद्यदेशोऽर्वाचीनस्तोमः केशवपनीयो भवत्यस्य
लोकस्यानुद्वानाय यथा शाखायाः शाखामालम्भ—
मुपावरोहेदेवमेतेनेमं लोकमुपावरोहति प्रतिष्ठायै ॥ १० ॥

एकादशः खण्डः

इन्द्रोवृत्रमहन् स विष्यद्वीर्येण व्यभ्रंशत स एतच्छ्रायन्तीय—
मपश्यतेनात्मानं समश्रीणादिन्द्रियेण वा एष वीर्येण व्यृध्यते यो
राजसूयेनाभिषिच्यते वृत्रं हि हन्ति यच्छ्रायन्तीयं ब्रह्मसाम भवति
पुनरेवात्मानं समश्रीणाति ॥ १ ॥ यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि भवति वाचा
वा एष व्यृध्यते यो राजसूयेनाभिषिच्यते वृत्रं हि हन्ति वागनुष्टुब्वाचो
रसो यज्ञायज्ञीयं वाच्येवास्य रसं दधाति ॥ २ ॥ वारवन्तीय—
मग्निष्टोमसाम भवतीन्द्रियेण वा एष वीर्येण व्यृध्यते यो
राजसूयेनाभिषिच्यते वृत्रं हि हन्ति यद्वारवन्तीयमग्निष्टोमसाम
भवतीन्द्रियस्य वीर्यस्य परिगृहीत्यै ॥ ३ ॥

अश्रयन्वाव श्रायन्तीयेनावारयन्त वारवन्तीयेनेन्द्रियस्य वा एषा वीर्य्यस्य परिगृहीतिः ॥ ४ ॥ अप्रतिष्ठितो वा एष यो राजसूयेनाभिषिच्यते यदा वा एतेन द्विरात्रेण यजतेऽथैव प्रतिष्ठा ॥ ५ ॥ यावन्ति संवत्सरस्याहोरात्राणि तावत्य एताः स्तोत्रीयाः संवत्सर एव प्रतितिष्ठति ॥ ६ ॥ अग्निष्टोमः पूर्वमहरतिरात्र उत्तरं नानैवाहोरात्रयोः प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ अमावास्यायां पूर्वमहरदृष्ट उत्तरं नानैवार्द्धमासयोः प्रतितिष्ठति पौर्णमास्यां पूर्वमहर्व्यष्टकायामुत्तरं नानैवमासोः प्रतितिष्ठति तदाहुर्व्ये एव समानपक्षे पुण्याहनी स्यातां तयोरेव कार्य्यसमृद्धयै ॥ ८ ॥ अपशव्यो द्विरात्र इत्याहुर्द्वे ह्येते छन्दसी गायत्रञ्च त्रैष्टुभञ्च जगतीमन्तर्य्यन्तीति न तेन जगती कृता यत्तृतीयसवने क्रियते ॥ ९ ॥ यदा वा एषा हीनस्याहर्भजते साहस्य वा सवनमथैव जगती कृता त्रैशोकमुत्तर स्याहो ब्रह्मसाम भवति वैखानसमच्छावाकसाम यच्छुक्रिये सवने क्रियेते तेनैव जगती कृता तेन पशव्यः ॥ १० ॥ व्युष्टिर्वा एष द्विरात्रोव्येवास्मै वासयति ॥ ११ ॥

॥ इति अष्टादशोऽध्यायः ॥



एकोनविंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

अथैष राट् ॥१॥ यो राज्य आशस्मानो राज्यं न प्राप्नुयात्
स एतेन यजेत राजैवैनश्राजानं करोति तं तु वैराजेति वदेयुर्यः—
राजा राजानश्कुर्व्याद्राजैवैनश्राजानं करोति ॥ २॥ छन्दोऽन्ये यज्ञाः
सम्पद्यन्ते स्तोममेषवीर्यं वै स्तोमोवीर्यं एवाध्यभिषिच्यते ॥ ३॥
अष्टावेकविंशाः सस्तुतो भवत्यष्टौ वै वीराराष्ट्रसमुद्यच्छन्ति
राजभ्राता च राजपुत्रश्च पुरोहितश्च महिषी च सूतश्च ग्रामणी च
क्षता च संग्रहीता चैते वै वीरा राष्ट्रसमुद्यच्छन्त्येतेष्वे—
वाध्यभिषिच्यते ॥ ४॥ क्षत्रं वा एकविंशः प्रतिष्ठा क्षत्रस्येवास्य
प्रकाशो भवति प्रतितिष्ठति य एवं वेद ॥ ५॥

द्वितीयः खण्डः

अथैष विराड्नाद्यकामो यजेत ॥१॥ परोक्षमन्ये यज्ञा विराजः—
सम्पद्यन्ते प्रत्यक्षमेष विराजः सम्पन्नः ॥ २॥ प्रत्यक्षमेतेनान्नाद्यमव—
रुन्धेऽन्नादो भवति य एवं वेद ॥ ३॥ सव्वो दशदशी भवति
दशाक्षरा विराड्वैराजमन्नमन्नाद्यस्यावरुध्यै ॥ ४॥ ता उ पञ्च पञ्च
भवन्ति पाङ्क्तो यज्ञः पाङ्क्ताः पशवो यज्ञएव पशुषु
प्रतितिष्ठति ॥ ५॥ एतेनैव प्रतिष्ठाकामो यजेत दशभिर्वा इदं
पुरुषः प्रतिष्ठितोऽस्यामेव प्रतितिष्ठति ॥ ६॥

तृतीयः खण्डः

अथैष औपशदः ॥१॥ गन्धर्वाप्सरसाश्स्तोमः प्रजाकामो यजेत
गन्धर्वाप्सरसो वै मनुष्यस्य प्रजाया वा प्रजस्ताया वेशते तेषामत्र

सोमपीथस्तान् स्वेन भागधेयेन प्रीणाति तेऽस्मै तृप्ताः प्रीताः प्रजां प्रयच्छन्ति ॥ २ ॥ एकैका स्तोत्रीयोपजायते प्रजामेवास्मा उप जनयति ॥ ३ ॥ ककुभं प्राचीमुदूहति पुरुषो वै ककुब्गर्भं एव स मध्यतो धीयते ॥ ४ ॥ अथ यदेषा द्विपदा ककुभो लोके क्रियते गर्भमेव तद्धितं प्रजनयति ॥ ५ ॥ च्यावनं भवति प्रजातिर्वै च्यावनम् ॥ ६ ॥ प्रजायते बहुर्भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥ वसिष्ठस्य जनित्रे भवती वसिष्ठो वा एते पुत्रहतः सामनी अपश्यत् स प्रजया पशुभिः प्राजायत यदेते सामनी भवतः प्रजान्त्यै ॥ ८ ॥ द्वे सःस्तुतानां विराजमतिरिच्येते द्वे स्त्रिया ऊने प्रजननाय प्रजननमेव तत्क्रियते प्रजात्यै ॥ ९ ॥

चतुर्थः खण्डः

अथैष पुनस्तोमः ॥ १ ॥ यो बहु प्रतिगृह्य गरगीरिव मन्येत स एतेन यजेत ॥ २ ॥ यैकादशी यदेव पूर्ववयसे बहु प्रतिगृह्णाति यद्गरं गिरति यदनन्नमत्ति प्रातःसवनाय तन्निहरति ॥ ३ ॥ अथ या द्वादशी यदेवोत्तरवयसे बहु प्रतिगृह्णाति यद्गरं गिरति यदनन्नमत्ति तृतीयसवनाय तन्निहरति ॥ ४ ॥ वैराजो वै पुरुषः स मध्यतोऽशुद्धो मध्यत एवैनं पाप्मनो मुञ्चति ॥ ५ ॥ शुद्धाशुद्धीये भवतः ॥ ६ ॥ इन्द्रो यतीन् सालावृकेयेभ्यः प्रायच्छत्तमश्लीला वागभ्यवदत्सोऽशुद्धोऽमन्यत स एते शुद्धाशुद्धीये अपश्यत्ताभ्यामशुध्यत् ॥ ७ ॥ यदेव बहु प्रतिगृह्णाति यदनन्नमत्ति यदशुद्धो मन्यते तदेताभ्यां शुध्यति ॥ ८ ॥ गौषूक्तश्चाश्वसूक्तश्च भवतः ॥ ९ ॥ गौषूक्तिश्चाश्वसूक्तिश्च बहु प्रतिगृह्य गरगिरावमन्येतां तावेते सामनी अपश्यतां ताभ्यां गरं निरघ्नातां यदेव बहु प्रतिगृह्णाति यद्गरं गिरति यदनन्नमत्ति तदेताभ्यां निर्हते ॥ १० ॥

पञ्चदश स्तोत्राणि भवन्त्योजो वीर्यं पञ्चदशः पाप्मन एवैनं
मुक्त्वौजसा वीर्येण समर्द्धयति ॥११॥

पञ्चमः खण्डः

अथैष चतुष्टोमः ॥१॥ पशुकामो यजेत ॥२॥ यच्चतसृभि-
र्बहिष्पवमानं भवति चतुष्पादाः पशवः पशूनेवा
वरुन्धे ॥३॥ यदष्टाभिराज्यान्यष्टाशफाः पशवः शफाशस्तत्
पशूनाप्नोति ॥४॥ यत् द्वादशो माध्यन्दिनः पवमानो द्वादशमासाः
संवत्सरः संवत्सरं पशवोऽनु प्रजायन्ते तानेवावरुन्धे ॥५॥ यत्
षोडशानि पृष्ठानि षोडश कलाः पशवः कलाश-
स्तत्पशूनाप्नोति ॥६॥ यद्विंश आर्भवः पाङ्क्तत्वमेषां
तदाप्नोति ॥७॥ यच्चतुर्विंशोऽग्निष्टोमश्चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री
तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेजएव ब्रह्मवर्चसमवरुन्धे ॥८॥ प्राणो
गायत्री प्रजननं प्राणादेव गायत्र्याः प्रजायते ॥९॥ एकसाम
बहूनि छन्दांसि तस्मादेको बहून् पोषान् पुष्यति ॥१०॥ आत्मा
वा अग्निष्टोमः पशवश्छन्दास्यात्मन्येव तत्पशून् प्रतिष्ठापयति
नोक्थोनाग्निष्टोमो न हि ग्राम्याः पशवो नारण्याः ॥११॥

षष्ठः खण्डः

अथ यस्य चत्वारि स्तोत्राणि चतसृभिश्चत्वार्यष्टाभिश्चत्वारि
द्वादशभिश्चत्वारि षोडशभिस्स गां नातिवदति ॥१॥ षोडश कलाः
पशवः कलाशस्तत्पशूनाप्नोति ॥२॥ उक्थः षोडशिमान् भवति
पशवो वा उक्थानि वज्रः षोडशी वज्रेणै वास्मै पशून्
परिगृह्णात्यनपक्रामुका अस्मात्पशवो भवन्ति नोक्थो नातिरात्रो न
हि ग्राम्याः पशवो नारण्याः ॥३॥

सप्तमः खण्डः

असुराणां वै बलस्तमसा प्रावृतोऽश्मापिधानश्चासीत्तस्मिन् गव्यं
वस्वन्तरासीत्तं देवानाशक्नुवन् भेतुं ते बृहस्पतिमब्रुवन्निमान्नउत्सृजेति
स उद्भिदैव बलं व्यच्यावयद्बलभिदाभिनत्तानुत्सेधे नैवोदसृज—
त्रिषेधेन पर्यगृह्णात् ॥ १ ॥ पशुकामो यजेत ॥ २ ॥ यदुद्भिदा
यजते बलमेवास्मै विच्यावयति यद् बलभिदा बलमेवास्मै भिनत्ति ॥
३ ॥ उत्सेधनिषेधौ ब्रह्मसामनी भवत उत्सेधेनैवास्मै पशूनुत्सिध्य
निषेधेन परिगृह्णाति ॥ ४ ॥ 'यज्ञइन्द्रमवर्द्धय'दिति ब्रह्मणआज्यश्रूपेण
समृद्धम् ॥ ५ ॥ सप्तिदशौ भवतो यत्सप्तभिः स्तुवन्ति सप्तग्राम्याः
पशवः पशूनेवावरुन्धे सप्तपदा शक्वरी पशवः शक्वरी पशूनेवाव—
रुन्धेऽथ यत्सप्तदशभिः प्रजापतिर्वै सप्तदशः प्रजापति—
मेवाप्नोति ॥ ६ ॥ गायत्रीऽसम्पद्यते तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेजएव
ब्रह्मवर्चसमवरुन्धे प्राणो गायत्री प्रजननं प्राणादेव गायत्र्याः
प्रजायते ॥ ७ ॥

अष्टमः खण्डः

अथैषोऽपचितिरपचितिकामो यजेतापचित्यवास्मा अपचितिं
विन्दति ॥ १ ॥ तस्य चतुर्विंशौ पवमानौ चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री
तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेजसैवास्मै ब्रह्मवर्चसेनापचितिं विन्दति ॥ २ ॥
उभे बृहद्रथन्तरे भवत उभाभ्यामेवास्मै बृहद्रथन्तराभ्यामपचितिं
विन्दति ॥ ३ ॥ भर्गयशसी भवती भर्गेणैवास्मै भर्गो दधाति यशसा
यशः ॥ ४ ॥ उभये स्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्चोभयैरेवास्मैस्तोमैरपचितिं
विन्दति ॥ ५ ॥ तदाहुर्विलोमानस्तोमा ईश्वरा यजमानं विक्षेतोर्व्युहति—
यन्तीति ॥ ६ ॥ एकविंशोग्निष्टोमो भवति प्रतिष्ठा वा
एकविंशोऽन्तत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥

नवमः खण्डः

अथैष सर्व्वस्तोमोऽपचितिरपचितिकामो यजेत सर्व्वैरेवा—
 स्मैस्तोमैरपचितिं विन्दति ॥ १ ॥ विराजश्सम्पद्यत एष वा
 अपचितोयोऽन्नादोऽन्नं विराडन्नाद्यमेवास्मिन्दधाति ॥ २ ॥ उभे
 बृहद्रथन्तरे भवतो भर्गयशसी भवत उभये स्तोमाश्छन्दोमाश्च
 पृष्ठ्याश्च उभयैरेवास्मैस्तोमैरपचितिं विन्दति ॥ ३ ॥ तस्य छन्दोमाः
 पृष्ठानि पशवो वै छन्दोमा अन्नं पृष्ठान्यभिपूर्वमेवास्मिन्नन्नाद्यं
 पशून् दधाति यच्छन्दोभवाश्स्तेन द्वादशाह याजिनमाप्नोति ॥ ४ ॥
 तदाहुर्नानालोकाः स्तोमाश्छन्दोमाश्च पृष्ठ्याश्च यदेकस्मिन् यज्ञक्रतौ
 समवरुध्यन्त ईश्वरा यजमानोऽप्रतिष्ठातोरिति ॥ ५ ॥
 एकविंशोऽग्निष्टोमो भवति प्रतिष्ठा वा एकविंशः प्रतिष्ठामेव
 तदभ्यायन्ति ॥ ६ ॥

दशमः खण्डः

पक्षी वा एष स्तोमः ॥ १ ॥ पक्ष्येष निधीयते ॥ २ ॥ न वा
 अपक्षः पक्षिणमाप्नोत्यथ यदेष पक्षी पक्षिणि निधीयते तस्मात्पक्षिणः
 पक्षैः पतन्ति ॥ ३ ॥ पक्षी ज्योतिष्मान् पुण्यान् लोकान् सञ्चरति य
 एवं वेद ॥ ४ ॥ त्रिवृतावभितो भवतस्तेजो ब्रह्मवर्च्वसं त्रिवृत्तेजएव
 ब्रह्मवर्च्वसमवरुन्धे ॥ ५ ॥ अथ पञ्चदशौ वीर्य्यं वै पञ्चदशो
 वीर्य्यमेवावरुन्धे ॥ ६ ॥ अथ सप्तदशौ पशवो वै सप्तदशः
 पशून् एवावरुन्धे ॥ ७ ॥ अथैकविंशो प्रतिष्ठा वा एकविंशो
 मध्यत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठति ॥ ८ ॥ अथ त्रिणवाविमे वै
 लोकास्त्रिणव एष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥ ९ ॥ अथ त्रयस्त्रिंशौ
 वर्ष्वं वै त्रयस्त्रिंशः ॥ १० ॥ वर्ष्वस्वानां भवति य एवं वेद ॥ ११ ॥
 एष वाव ब्रध्नस्य विष्टपो यदेतौ त्रयस्त्रिंशौ मध्यतः
 सन्धीयेते तेन ब्रध्नस्य विष्टपमारोहति ॥ १२ ॥

मध्यतो वा अग्निर्वरिष्ठस्तस्मादेति स्तोमा मध्यतो वरिष्ठाः क्रियन्ते ॥१३॥ त्रिवृता प्रैति त्रिवृतोदेति प्राणो वै त्रिवृत्प्राणेनेव प्रैतिप्राणमभ्युदेति ॥१४॥

एकादशः खण्डः

अथैष ज्योतिः ॥१॥ तस्य त्रिवृद्बहिष्पवमानं पञ्चदशान्याज्यानि चतुर्विंशो माध्यन्दिनः पवमानः सप्तदशानि पृष्ठानि ॥२॥ प्राणो वै त्रिवृदात्मा पञ्चदशः ॥३॥ मुखं गायत्र्यन्नसप्तदशो मुखत एव तदन्नं धत्ते ॥४॥ अन्नमत्यन्नादो भवति य एवं वेद ॥५॥ माध्यन्दिनेन वै पवमानेन देवाः स्वर्गं लोकमायन्यदेष चतुर्विंशो माध्यन्दिनः पवमानो भवति स्वर्गस्य लोस्याक्रान्त्यै चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री तेजएव ब्रह्मवर्चसमवरुन्धे प्राणो गायत्री प्रजननं प्राणादेव गायत्र्याः प्रजायते ॥६॥ उभये स्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्च तन्मिथुनं तस्मान्मिथुनात् प्रजायते ॥७॥ पक्षि वा एतच्छन्दः पक्षी ज्योतिष्मान् पुण्यान् लोकान् सञ्चरति य एवं वेद ॥८॥ मध्यतो वा अग्निर्वरिष्ठस्तस्मादेतेस्तोमा मध्यतो वरिष्ठाः क्रियन्ते ॥९॥ एका सस्तुतानां विराजमतिरिच्यत एकाकिन—मेवैनमन्नाद्यस्याध्यक्षं करोति ॥१०॥ ज्योतिर्वा एषाऽग्निष्टोमो ज्योतिष्मन्तं पुण्यं लोकं जयति य एवं विद्वानेतेन यजते ॥११॥

द्वादशः खण्डः

अथैष ऋषभः ॥१॥ ऋषभो वा एष स्तोमानामृषभतां गच्छति य एवं वेद ॥२॥ राजन्यं याजयेदृषभो वै पशूनामधिपतीराजन्यो मनुष्याणां यो वा अस्ति सोऽधिपतिः ॥३॥ अधिपतिः समानानां भवति य एवं वेद ॥४॥

तस्य सदोविशीयं माध्यन्दिने पवमाने भवति विशमेवास्मै
 सवनाभ्यां परिगृह्णात्यनपक्रामुकास्माद्विद् भवति ॥ ५ ॥ समन्तं
 भवति समन्तामेवास्मै विशं करोत्यनपक्रामुकास्माद्विद् भवति ॥ ६ ॥
 उभे बृहद्रथन्तरे भवत इयं वै रथन्तरं द्यौर्बृहदेवास्माल्लोकाद्वाय-
 त्येवामुस्मादुभयोरनयोर्लोकयोः प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ अनुष्टुभि
 बृहद्भवत्यन्तो वा अनुष्टुप् छन्दसामन्तो बृहत् साम्नामन्तो राजन्यो
 मनुष्याणामन्त एव तदन्तं प्रतिष्ठापयति तस्माद्यो राजन्यानांश्हीयते
 न स पुनरग्रं पर्य्येति ॥ ८ ॥

त्रयोदशः खण्डः

यो वै वाजपेयः स राजसूयो यो राजसूयः स वरुणसवो थैष
 गोसवः स्वाराज्यो यज्ञः ॥ १ ॥ स्वाराज्यं गच्छति य एवं वेद ॥ २ ॥
 प्रजापतिर्हि स्वाराज्यं परमेष्ठी स्वाराज्यम् ॥ ३ ॥ परमेष्ठितां गच्छति
 य एवं वेद ॥ ४ ॥ उभे बृहद्रथन्तरे भवतस्तद्वि स्वाराज्यं स्वाराज्यं
 गच्छति य एवं वेद ॥ ५ ॥ अयुतं दक्षिणास्तद्वि स्वाराज्यं स्वाराज्यं
 गच्छति य एवं वेद ॥ ६ ॥ प्रतिदुहाभिषिच्यते तद्वि स्वाराज्यं-
 स्वाराज्यं गच्छति य एवं वेद ॥ ७ ॥ बृहतः स्तोत्रं प्रत्यभिषिच्यते
 तद्वि स्वाराज्यं स्वाराज्यं गच्छति य एवं वेद ॥ ८ ॥ अनुद्धते
 दक्षिणत आहवनीयस्याभिषिच्यतेऽस्यामेवानन्तर्हितेऽध्यभि-
 षिच्यते ॥ ९ ॥ सर्वः षट्त्रिंशस्तेन गोसवः ॥ १० ॥

चतुर्दशः खण्डः

अथैष मरुत्स्तोम एतेन वै मरुतोऽपरिमितां पुष्टिमपुष्यन्नपरिमितां
 पुष्टिं पुष्यति य एवं वेद ॥ १ ॥ यद्गणशः स्तोमास्तेन मरुत्स्तोमो
 गणशो हि मरुतः ॥ २ ॥ एतेनैव त्रीन् याजयेत् ॥ ३ ॥

यत् त्रीणि त्रिवृन्ति स्तोत्राणि भवन्ति नाना ब्रह्मवर्चसे
प्रतितिष्ठन्ति ॥ ४ ॥ यत् त्रीणि पञ्चदशानि नानावीर्ये ॥ ५ ॥ यत्
त्रीणि सप्तदशानि नाना पशुषु ॥ ६ ॥ यत् त्रीण्येकविंशानि नाना
प्रतितिष्ठन्ति ॥ ७ ॥ प्रतितिष्ठति य एवं वेद ॥ ८ ॥

पञ्चदशः खण्डः

अथैष इन्द्राग्न्योः कुलायः प्रजाकामो वा पशुकामो वा
यजेत प्रजा वै कुलायं पशवः कुलायं गृहाः कुलायं कुलायमेव
भवति ॥ १ ॥ एतेनैव द्वौ याजयेत् ॥ २ ॥ यत् षट् त्रिवृन्तिस्तोत्राणि
भवन्ति नाना ब्रह्मवर्चसे प्रतितिष्ठतो यत् द्वे पञ्चदशे नानावीर्ये
यत् द्वे सप्तदशे नाना पशुषु यत् द्वे एकविंशे नाना प्रतितिष्ठतः
प्रतितिष्ठति य एवं वेद ॥ ३ ॥

षोडशः खण्डः

अथैष पञ्चदश इन्द्रस्तोम उक्थ्यः ॥ १ ॥ एतेन वा इन्द्रोऽत्यन्या
देवता अभवदत्यन्याः प्रजा भवति य एवं वेद ॥ २ ॥ राजन्यं
याजयेत् ॥ ३ ॥ सर्व्वः पञ्चदशो भवत्योजो वीर्य्यं पञ्चदश ओजसैवैनं
वीर्य्येण समर्द्धयति ॥ ४ ॥ ऐन्द्रीषु भवन्तीन्द्रियेणैवैनं वीर्य्येण
समर्द्धयति ॥ ५ ॥ उक्थ्यो भवति पशवो वा उक्थानि विडुक्थानि
विशमेवास्मै पशूननुनियुनक्त्यनपक्रामुकास्माद्विड् भवति ॥ ६ ॥
पञ्चदशस्तोत्राणि पञ्चदशानि भवन्त्योजो वीर्य्यं
पञ्चदशोऽभिपूर्वमेवास्मिन्नोजो वीर्य्यन्दधाति ॥ ७ ॥

सप्तदशः खण्डः

अथैष इन्द्राग्न्योः स्तोम एतेन वा इन्द्राग्नी अत्यन्या देवता
अभवतामत्यन्याः प्रजा भवति य एवं वेद ॥ १ ॥ त्रिवृत् पञ्चदशो
भवति ॥ २ ॥

ब्रह्म वै त्रिवृत् क्षत्रं पञ्चदशो ब्रह्मण इव चास्य क्षत्रस्येव च प्रकाशो भवति य एवं वेद ॥३॥ राजा च पुरोहितश्च यजेयाताम् ॥४॥ गायत्रीञ्च जगतीञ्च सम्पद्यते ॥५॥ तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्र्या ब्राह्मणोऽवरुन्धे विशःराजा जगत्या प्रविशति ॥६॥ पुरोधा कामो यजेत ॥७॥ बृहस्पतिरकामयत देवानां पुरोधां गच्छेयमिति स एतेनायजत स देवानां पुरोधामगच्छद्गच्छति पुरोधां य एवं वेद ॥८॥

अष्टादशः खण्डः

अथैष विघनः ॥१॥ इन्द्रोऽकामयत पाप्मानं भ्रातृव्यं विहन्यामिति स एतं विघनमपश्यत्तेन पाप्मानं भ्रातृव्यं व्यहन् विपाप्मानं भ्रातृव्यं हते य एवं वेद ॥२॥ यत् त्रिवृद्भवति प्राणाः स्तेनाऽवरुन्धे यत् द्वादशः संवत्सरं तेन यत् पञ्चदशो वीर्यं तेन यत् सप्तदशोऽन्नाद्यं तेन यदेकविंशः प्रतिष्ठा तेन यन्नवदशः प्रजननं तेन यच्चतुर्विंशो ब्रह्मवर्चसं तेन यत्त्रिणवो वज्रं भ्रातृव्याय प्रहरति ॥३॥ पशुकामो यजेत बृहतीं सम्पद्यते पशवो वै बृहती पशूनेवावरुन्धे ॥४॥ षडेता बृहत्यो भवन्ति षडृतवः संवत्सरः संवत्सरं पशवोऽनु प्रजायन्ते तानेवाप्तावरुन्धे ॥५॥

एकोनविंशः खण्डः

इन्द्रमदेव्यो माया असचन्त स प्रजापतिमुपाधावत्तस्मा एतं विघनं प्रायच्छत्तेन सर्वामृधो व्यहत यद्व्यहृत तद्विघनस्य विघनत्वम् ॥१॥ सर्वामृधो विहते य एवं विद्वान् विघनेन यजते यमेवं विद्वान् विघनेन याजयति ॥२॥ पशुकामो यजेत पशवो वै बृहती पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥३॥

॥ इति एकोनविंशोऽध्यायः ॥



विंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

त्रिवृद् बहिष्पवमानं पञ्चदशान्याज्यानि पञ्चदशो माध्यन्दिनः
पवमानः सप्तदशानि पृष्ठानि सप्तदश आर्भव एकविंशोऽग्निष्टोमः
सोकथ्यः पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ १ ॥ ज्योतिष्टोमेनाति—
रात्रेणर्द्धिकामो यजेताभिक्रमो वा एषस्तोमानामभिक्रान्त्या अभिक्रान्तेन
हि यज्ञस्यर्ध्नोति ॥ २ ॥ एषोऽग्निष्टोम एष उक्थ्य
एषोऽतिरात्रोऽग्निष्टोमेन वै देवा इमं लोकमभ्यज—
यन्नुक्थ्यैरन्तरिक्षं रात्र्यामुं लोकमजयन्नहोरात्राभ्यामभ्य वर्तन्त ॥ ३ ॥
पराच्यो वा अन्या व्युच्छन्ति प्रतीच्योऽन्या एषा वाव प्रतीची
व्युच्छति याश्चिनेन व्युच्छति प्रतीचीरेवास्मा उषसो विवासयति ॥ ४ ॥
द्वे सश्स्तुतानां विराजमतिरिच्यते एषा वै स्तनवती विराट् यं कामं
कामयते तमेतां दुग्धे ॥ ५ ॥ त्रिवृता प्रैति त्रिवृतोदेति प्राणो वै
त्रिवृत्प्राणेनैव प्रैति प्राणमभ्युदेति ॥ ६ ॥

द्वितीयः खण्डः

त्रिवृद्बहिष्पवमानं पञ्चदशान्याज्यानि सप्तदशो माध्यन्दिनः
पवमान एकविंशानि पृष्ठानि त्रिणव आर्भवस्त्रयस्त्रिंशोऽग्निष्टोमः
प्रत्यवरोहीण्युक्थानि त्रिणवं प्रथमं द्वे एकविंशे सषोडशिके
पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ १ ॥ सर्वस्तोमेनातिरात्रेण बुभूषन्यजेत
सर्वस्याप्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वं जयति ॥ २ ॥
यत्त्रिवृद् बहिष्पवमानं भवति तत्त्रिवृतस्तोममाप्नोति गायत्रीं छन्दो
यत् पञ्चदशान्याज्यानि तत् पञ्चदशस्तोममाप्नोति त्रिष्टुभं छन्दो

यत्सप्तदशो माध्यन्दिनः पवमानस्तत्सप्तदशस्तोममाप्नोति जगतीं
 छन्दो यदेकविंशानि पृष्ठानि तदेकविंशस्तोममाप्नोत्यनुष्टुभं
 छन्दो यत्त्रिणवस्तोममाप्नोति पङ्क्तिं छन्दोयत्त्रयस्त्रिंशोऽग्निष्टोमस्तत्त्रयस्त्रिंशस्तोममाप्नोति विराजं छन्दोयदुष्णिक्कुभौ
 क्रियेते तदुष्णिक्कुभवाप्नोति यद्बृहतीषु सन्धिना स्तुवन्ति
 तद्बृहतीमाप्नोति यदाश्विनश्शस्यते तत्सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वं
 जयति ॥ ३ ॥ प्राञ्चं वै त्रयस्त्रिंशो यज्ञं प्रभुजति तमध्वर्यु-
 रेकादशिन्या पुरस्तात्प्रत्युद्यच्छत्येकादश रशना एकादश पशव
 एकादश यूपो भवन्ति, तत्त्रयस्त्रिंशो त्रयस्त्रिंशं प्रतिष्ठापयति ॥ ४ ॥
 तथा समुद्यतया रात्र्या यं यं कामं कामयते तं तं अभ्यश्नुते यं
 यं कामं कामयते तं तं अभ्यश्नुते य एवं वेद ॥ ५ ॥

तृतीयः खण्डः

त्रिवृद्बहिष्पवमानं पञ्चदशान्याज्यानि सप्तदशो माध्यन्दिनः
 पवमान एकविंशश्होतुः पृष्ठं छन्दोमा इतराणि त्रिणव
 आर्धवस्त्रयस्त्रिंशोऽग्निष्टोमः, प्रत्यवरोहीण्युक्थानि त्रिणवं
 प्रथममथैकविंशमथसप्तदशमेकविंशः षोडशी, पञ्चदशी
 रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिस्त्रिवृत् प्रथममतिरिक्तस्तोत्रमथपञ्चदशमथ—
 सप्तदशमथैकविंशम् ॥ १ ॥ प्रजापतिः पशूनसृजत तेऽस्मात् सृष्ट्या
 अपाक्रामस्तानग्निष्टोमेन नाप्नोत्तानुक्थैर्नाप्नोत्तान् षोडशिना
 नाप्नोत्तान्नात्र्या नाप्नोत्तान् सन्धिना नाप्नोत्तानाश्विनेन नाप्नोत्तानग्निम-
 ब्रवीदिमान्म ईप्सेति तानग्निस्त्रिवृतास्तोमेन जराबोधीयेन साम्ना
 नाप्नोत्तानिन्द्रमब्रवीदिमान्म ईप्सेति तानिन्द्रः पञ्चदशेन स्तोमेन
 सत्रासाहीयेन साम्ना नाप्नोत्तान् विश्वान् देवानब्रवीदिमान्म ईप्सतेति
 तान्विश्वे देवाः सप्तदशेन स्तोमेन मार्गीयवेण साम्ना

नाप्नुवश्स्तान्विष्णुमब्रवीदिमान्म ईप्सेति तान् विष्णुरेकविंशेन
स्तोमेनाप्नोद्धारवन्तीयेनावारयत 'इदं विष्णुर्विचक्रम' इति
व्यक्रमत ॥ २ ॥ यस्मात्प्रप्रेव पशवो भ्रंशेन स एतेन यजेत ॥ ३ ॥
एतेन वै देवा जैत्वानि जित्वा यं यं काममकामयन्त तं तमाप्नुवन्
यं कामं कामयते तमेतेनाप्नोति ॥ ४ ॥ तदप्तोऽर्थ्याप्नोऽप्तोऽर्थ्या-
मत्वम् ॥ ५ ॥

चतुर्थः खण्डः

त्रिवृद् बहिष्पवमानं पञ्चदशऽहोतुराज्यं नव सप्तदशानि
स्तोत्राण्येकविंशोऽग्निष्टोमः सोकथः पञ्चदशी रात्रिस्त्रि-
वृत्सन्धिः ॥ १ ॥ नवसप्तदशेनातिरात्रेण प्रजाकामो यजेत नव वै
प्राणाः प्रजापतिः सप्तदशः, प्राणेभ्य एव तदधि प्रजापतेः प्रजाः
प्रजायन्ते ॥ २ ॥ ककुभं प्राचीमुदूहति पुरुषो वै ककुब् गर्भो वा
एष मध्यतो धीयते ॥ ३ ॥ तस्याऽसाकमश्चम् ॥ ४ ॥ प्रजापतिः
प्रजा असृजत तान् प्रजायन्त स एतत् सामापश्यत्ता अश्वो
भूत्वाभ्यजिघ्रत्ताः प्राजायन्त प्रजनं वा एतत् साम ॥ ५ ॥ प्रजायते
बहुर्भवति य एवं वेद ॥ ६ ॥ द्विपदां ककुभो लोके करोति
गर्भमेव तद्धितं मध्यतः प्रजनयति ॥ ७ ॥ अतिरात्रो भवत्यहोरात्रे
वा अनुप्रजाः प्रजायन्तेऽहोरात्रे एवानुप्रजया पशुभिः प्रजायते ॥ ८ ॥

पञ्चमः खण्डः

त्रिवृद् बहिष्पवमानं पञ्चदशान्याज्यानि पञ्चदशो माध्यन्दिनः
पवमानः सप्तदशानि पृष्ठानि सप्तदश आर्भव एकविंशोऽग्निष्टोमः
सप्तदशान्युक्त्यानि पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ १ ॥ विषुवतातिरात्रेण
ज्येष्ठं ज्यैष्ठिनेयं याजयेत् विषुवान् वा एष स्तोमानां विषुवानेव
भवति ॥ २ ॥

यदेकएकविंशो भवत्येकविंशो वा इतोऽसावादित्यो
द्वादशमासाः पञ्चर्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंश
आदित्यस्यै वैनं मात्रां गमयति ॥ ३ ॥ एष वा उदेति न वा
एनमन्यत् ज्योतिषां ज्योतिः प्रत्युदेति ॥ ४ ॥ नैनमन्यः स्वेषु
प्रत्युदेति य एवं वेद ॥ ५ ॥

षष्ठः खण्डः

पञ्चदशं बहिष्पवमानं त्रिवृन्त्याज्यानि सप्तदशं माध्यन्दिनं—
सवनमेकविंशं तृतीयसवनं सोक्थं पञ्चदशी रात्रिस्त्रि—
वृत्सन्धिर्गोष्टोमेनातिरात्रेण भ्रातृव्यवान्यजेत, गवा वै देवा असुरानेभ्यो
लोकेभ्योऽनुदन्त, रात्र्यानपजय्यमजयत्रेभ्यो लोकेभ्यो भ्रातृव्यं प्रणुद्य
रात्र्यानपजय्यं जयति ॥ १ ॥

सप्तमः खण्डः

त्रिवृद् बहिष्पवमानं, पञ्चदशान्याज्यानि, सप्तदशं माध्यन्दिनं—
सवनमेकविंशं तृतीयसवनं सोक्थं, पञ्चदशी रात्रिस्त्रि—
वृत्सन्धिरायुष्टोमेनातिरात्रेण, स्वर्गकामो यजेतोर्ध्वाः स्तोमा
यन्त्यनपञ्चशाय यदतिरात्रो भवत्यहोरात्राभ्यामेव स्वर्ग
लोकमेति ॥ १ ॥

अष्टमः खण्डः

त्रिवृद् बहिष्पवमानं, पञ्चदशं होतुराज्यं सप्तदशं मैत्रावरुणस्य,
पञ्चदशं ब्राह्मणाच्छंसिनः सप्तदशमच्छावाकस्यैकविंशो माध्यन्दिनः
पवमानः सप्तदशं होतुः पृष्ठमेकविंशं मैत्रावरुणस्य त्रिणवं
ब्राह्मणाच्छंसिन, एकविंशमच्छावाकस्य त्रिणव आर्भवस्त्रयस्त्रिंश—
शोग्निष्टोमः, प्रत्यवरोहीण्युक्थानि त्रिणवं प्रथमं, द्वे एकविंशो,

स षोडशिके, पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिरभिजितातिरात्रेण
भ्रातृव्यवान्यजेताभिजिता वै देवा असुरानिमान् लोकानभ्यजयन्ना-
त्र्यानपजय्यमजयन्नभिजितैव भ्रातृव्यमिमान् लोकानभिजित्य
रात्र्यानपजय्यं जयति ॥१॥

नवमः खण्डः

त्रिवृद् बहिष्पवमानं, पञ्चदशश्होतुराज्यः सप्तदशं
मैत्रावरुणस्यैकविंशं ब्राह्मणच्छंसिनः, पञ्चदशमच्छावाकस्य,
सप्तदशो माध्यन्दिनः पवमान एकविंशं होतुः पृष्ठं, त्रिणवं
मैत्रावरुणस्य, सप्तदशं ब्राह्मणाच्छंसिन, एकविंशमच्छावाकस्य,
त्रिणव आर्भवस्त्रयस्त्रिंशोऽग्निष्टोमः प्रत्यवरोहीण्युक्त्यानि, त्रिणवं
प्रथमं, द्वे एकविंशे षोडशिके, पञ्चदशीरात्रिस्त्रिवृत्सन्धि-
र्विश्वजितातिरात्रेण पशुकामो यजेत ॥१॥ रेतो हि नाभा नेदिष्ठीयं,
पशवो वालखिल्यायन्नाभा नेदिष्ठीयं पूर्वः शस्यत उत्तरा वालखिल्या
रेतसस्तत्पशवः प्रजायन्ते रूपाणिविकरोति यद्वार्षाकपमृतुषु
प्रतितिष्ठति यदेवयामरुत् ॥२॥

दशमः खण्डः

त्रिवृतातिरात्रेण ब्रह्मवर्चसकामो यजेत तेजो वै त्रिवृत् ब्रह्मवर्चसं
तेजएव ब्रह्मवर्चसमवरुन्धे तेजसि ब्रह्मवर्चसे प्रतितिष्ठति
पञ्चदशेनातिरात्रेण वीर्यकामो यजेतौजो वीर्यं पञ्चदश ओजएव
वीर्यमवरुन्ध ओजसि वीर्यं प्रतितिष्ठति सप्तदशेनाति-
रात्रेणान्नाद्यकामो यजेतान्नं वै सप्तदशोऽन्नाद्यमेवावरुन्ध
एकविंशेनातिरात्रेण प्रतिष्ठाकामो यजेत प्रतिष्ठा वा एकविंशो
यदतिरात्रो भवत्यहोरात्रयोरेव प्रतितिष्ठति ॥१॥

एकादशः खण्डः

ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोमः पूर्वमहः सर्वस्तोमोऽतिरात्र उत्तरम् ॥ १ ॥
तस्य चतुर्विंशं बहिष्पवमानं, पञ्चदशान्याज्यानि सप्तदशो
माध्यन्दिनः पवमान, एकविंशानि पृष्ठानि, त्रिणवआर्भवस्त्रयस्त्रिंश-
शोऽग्निष्टोमः प्रत्यवरोहीण्युक्थानि त्रिणवं प्रथममथैकविंशमथ
सप्तदशमेकविंशः षोडशी, पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ २ ॥
अङ्गिरसः स्वर्गं लोकमायस्तेषां हविष्माश्च हविष्कृच्चाङ्गि-
रसात्त्वहीयेतां तावागच्छेतां यतोऽङ्गिरसः स्वर्गं लोकमायस्-
स्तावत्प्येतां तावेते सामनी अपश्यतां ताभ्यां द्विरात्रमतन्वातां तेन
लोकमैताम् ॥ ३ ॥ यः पौण्योहीन इव स्यात् स एतेन यजेताप्नोति
पूर्वेषां प्रहामाप्नुतां हि तावङ्गिरसः ॥ ४ ॥ प्रजाकामो यजेत द्वितीयं
होतृघ्नं त्रिजा ॥ ५ ॥ स्वर्गकामो यजेत द्वितीयाद्धि
लोकात्प्रसोकोऽभिप्रक्रम्यो दुराधो द्विरात्र इत्याहुयदग्निष्टोमः
पूर्वमहर्भवत्युक्थ्यमन्तर्यन्ति यद्युक्थ्योऽग्निष्टोमम् ॥ ६ ॥
यज्ज्योतिरुक्थ्यः पूर्वमहर्भवति नाग्निष्टोममन्तर्यन्ति नोक्थानि ॥ ७ ॥
तदाहुरेषा वाव यज्ञस्य मात्रा यदग्निष्टोमो यदग्निष्टोमः पूर्वमहर्भवति
यज्ञस्य मात्रां नाति क्रामत्यथोत्तरस्याह उक्थ्येभ्योऽधिरात्रिमुपयन्ति
तेनोक्थान्यनन्तरितानि ॥ ८ ॥ चतुर्विंशं बहिष्पवमानं
भवत्युत्तरस्याहश्चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री प्रजननं गायत्री
प्रजात्यै ॥ ९ ॥ उभये स्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्च तन्मिथुनं
तस्मान्मिथुनात्प्रजायते ॥ १० ॥ सर्वस्तोमोऽतिरात्रो भवति सर्वस्याप्त्यै
सर्वस्य जित्यै सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वं जयति ॥ ११ ॥

द्वादशः खण्डः

अथ यस्य ज्योतिरुक्थ्यः पूर्वमहर्भवत्यायुरतिरात्र उत्तरम् ॥ १ ॥

तिस्रः पूर्वस्याहो विराजमतिरिच्यन्ते द्वाभ्यामुत्तरमहर्विराज—
ऊनमूनातिरिक्तं वा अनुप्रजाः प्रजायन्ते ॥ २ ॥ प्रप्रजया
प्रपशुभिर्ज्जायते य एवं वेद ॥ ३ ॥ एका सस्तुतानां
विराजमतिरिच्यत एकाकिनमेवैनमन्नाद्यस्याध्यक्षं करोति ॥ ४ ॥ एतेन
वै चित्ररथं कापेया अयाजयस्तमेकाकिनमन्नाद्यस्याध्यक्षमकुर्वन्—
स्तस्माच्चैत्ररथीनामेकः क्षत्रपतिर्ज्जायतेऽनुलम्ब इव द्वितीयः ॥ ५ ॥

त्रयोदशः खण्डः

अथ यस्य त्रिवृत्पञ्चदशोऽग्निष्टोमः पूर्वमहर्भवत्यायुरतिरात्र
उत्तरम् ॥ १ ॥ मिथुनाभ्यां स्तोमाभ्यामुत्तरमहः प्रजनयन्ति तत्प्रजातश्च
आरभन्ते चक्रे वा एते साकंवृती यत् त्रिवृत्पञ्चदशौ स्तोमौ यं
कामं कामयते तमेतेनाभ्यश्नुते यत्र यत्र हि चक्रीवता कामयते
तत्तदभ्यश्नुते ॥ २ ॥ अथ यदायुरतिरात्रो भवति प्रतिष्ठित्यै ॥ ३ ॥
एतेन वै कपिवनो भौवायन इष्ट्वा रूक्षतामगच्छत् ॥ ४ ॥ अरूक्षो
भवति य एवं विद्वानेतेन यजते ॥ ५ ॥

चतुर्दशः खण्डः

त्रिवृत्प्रातः सवनं, पञ्चदशं माध्यन्दिनसवनसप्तदशं
तृतीयसवनं, पञ्चदशं प्रातःसवनं, सप्तदशं माध्यन्दिनसवनमेकविंशं
तृतीयसवनसोक्त्यमेकविंशं प्रातःसवनं, त्रिणवं माध्यन्दिनसवनं,
त्रयस्त्रिंश आर्भवश्चतुस्त्रिंशोऽग्निष्टोम, एकविंशान्युक्त्यानि स
षोडशिकानि षोडशं प्रथमश्चात्रिषाम्, पञ्चदशी रात्रिस्त्रि—
वृत्सन्धिः ॥ १ ॥ प्रजापतिर्वा इदमेक आसीत्तस्य वागेव स्वमासीद्वाग्
द्वितीया स ऐक्षतेमामेव वाचं विसृजा इयं वा इदंसर्वं
विभ्वन्त्येष्यतीति स वाचं व्यसृजत सेदंसर्वं विभ्वन्त्यैत्
सोर्ध्वोदातनोद्यपथापां धारा सन्ततैवं तस्या एति

तृतीयमच्छिनत्तद्भूमिरभवदभूदिव वा इदमिति तद्धूमेभूमित्वं केति
 तृतीयमच्छिनत्तदन्तरिक्षमभवदन्तरेव वा इदमिति
 तदन्तरिक्षस्यान्तरिक्षत्वश्चो इति तृतीयमूर्ध्वमुदास्यत् तत्
 द्यौरभवदद्युतदिव वा अदइति तदिवो दिवत्वम् ॥ २ ॥ 'एषा वाव
 प्रत्यक्षं वाग्यज्जिह्वाग्रेणैतद्वाचो वदति यदेति मध्येनैतद्वाचो वदति
 यत् केति सर्वयैतद्वाचो रसोऽध्यूर्ध्व उद्वदति यद्धो' इति ॥ ३ ॥
 यदेतानि रूपाण्यन्वहं व्यज्यन्ते मुखतएव तद्वाचं विसृजन्ते मुखतो
 यज्ञियं कर्म ॥ ४ ॥ प्रजापतिर्वा इदमेकाक्षरां वाचश्सतीं
 त्रेधाव्यकरोत्तद्द्विमे लोका अभवन् रूक्षा अनुपजीवनाः स ऐक्षत
 कथमिमेलोकालोम गृह्णीयुः कथमुपजीवनीयाः स्युरिति स एतं
 त्रिरात्रमपश्यत्तमाहरत्तेनेमान् लोकानन्वातनोत्ततो वा इमे लोका
 लोमागृह्णन्स्तत उपजीवनीया अभवन्स्त्रिरात्रस्य वा इदं पुष्टं
 त्रिरात्रस्योदरणं यदिदमेषु लोकेष्वधि ॥ ५ ॥ गच्छति पशूनां भूमानं
 द्विपदां चतुष्पदां य एवं वेद ॥ ६ ॥ प्रजापतिर्यद्वाचं व्यसृजत
 साक्षरदेवेति प्रथमं क्षेति द्वितीयं रेति तृतीयं येन येन वै रूपेण
 प्रजापतिर्वाचं व्यसृजत तेन तेन रूपेणाज्यानिचारभ्यन्तेऽहानि
 चाप्यन्ते ॥ ७ ॥ तदाहुर्ब्रह्मवादिनोऽक्षरेस्था वै त्रिरात्र इत्येकाक्षरा
 वै वाक् त्र्यक्षरमक्षरं त्र्यक्षरः पुरुषः स वा एनं वेदेत्याहुर्व्य एनं
 पुरुष सम्मितं वेदेति ॥ ८ ॥

पञ्चदशः खण्डः

एतेन वै देवा एषु लोकेष्वार्धुवन्नेतेन स्वर्गं लोकमायन् ॥ १ ॥
 वाग्वै त्रिरात्रो वाचो रूपेणाज्यानि चाहानि च विभज्यन्त एकाक्षरा
 वै वाक् त्र्यक्षरमक्षरमक्षरस्य रूपेण विभज्यन्ते त्रयोगन्धर्वास्तेषामेषा
 भक्तिरग्नेः पृथिवी वायोरन्तरिक्षमसावादित्यस्य द्यौस्त्रयोधर्मास

उषसश्सचन्ते ॥ २ ॥ अग्निरुषसश्सचते वायुरुषसश्सचतेऽसावादित्य
 उषसश् सचते ॥ ३ ॥ त्रीणि मिथुनानि तान्येषः ॥ ४ ॥ मिथुनं द्वे
 सम्भवतो मिथुनाद्यत्प्रजायते तत्तृतीयम् ॥ ५ ॥ इन्द्रो
 वृत्रायवज्रमुदयच्छत्सोऽब्रवीन्मा मे प्रहार्षीरस्ति वा इदं मयि वीर्यं
 तत्ते प्रदास्यामीति तदस्मै प्रायच्छत्तद्विष्णुः प्रत्यगृह्णात् स द्वितीयं
 स तृतीयमुदयच्छत्स एवाब्रवीन्मा मे प्रहार्षीरस्ति वा इदं मयि
 वीर्यं तत्तेप्रदास्यामीति तदस्मै प्रायच्छत् तद्विष्णुः प्रत्यगृह्णादेतद्वाव
 तदभ्यनूच्यते ॥ ६ ॥ 'उभा जिग्यथुर्न पराजयेथे न पराजिग्ये कतरश्च
 नैनोरिन्द्रश्च विष्णो यदस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वितदैरयेथा' मिति ॥ ७ ॥
 एतद्वा आभ्यां तत्सहस्रं प्रायच्छत् ॥ ८ ॥ तस्यैषा भक्तिर्य आर्षेयो
 विद्वाश्स्तस्मै प्रथमेऽहनि देयं यथा वा इयमेवश्स प्रतिष्ठितेयं
 प्रतिष्ठितः सः ॥ ९ ॥ योनार्षेयो विद्वाश्स्तस्मै द्वितीयोऽहनि देयं
 यथा वा अन्तरिक्षमेवश्सोऽन्तरिक्षमित्यन्तरिक्षं विदुर्वेदं तस्य
 विदुः ॥ १० ॥ य आर्षेयो विद्वाश्स्तस्मै तृतीयेऽहनि देयं यथा वै
 द्यौरवश्स द्यौरिति दिवं विदुर्बन्धु तस्य विदुः ॥ ११ ॥ शतान्यन्वहं
 दीयन्त एषा वाव यज्ञस्य मात्रा यच्छतं सैव सा विच्छिन्ना दीयते
 दशतोऽन्वहं दीयन्ते दशाक्षरा विराड्वैराजोयज्ञः सैव सा विच्छिन्ना
 दीयते ॥ १२ ॥ त्रयस्त्रिंशच्च त्रीणि च शतानि प्रथमेऽहनि देयास्तथा
 द्वितीये तथा तृतीये ॥ १३ ॥ अथैषा द्विदेवत्यात्रिरूपा ब्रह्मणो द्वे
 तृतीये तृतीयमग्नीधः ॥ १४ ॥ काम्यासि प्रियासि हव्यासीडेरन्ते
 सरस्वति महि विश्रुत एतानि तेऽध्वे नामानि देवेषु नः सुक्रतो
 ब्रूयात् ॥ १५ ॥

षोडशः खण्डः

इदं वाव प्रथमेनाह्ना व्यकरोद्यदिदमस्यामध्यायत्तमूलमिदं द्वितीयेन
 यदिदं प्राणादेजत्यदस्तृतीयेन यद्वर्षति यन्नक्षत्राणि यदमुं लोकं

भेजे ॥१॥ तदाहुर्ब्रह्मवादिनो महाव्रतं वा एतद्यदेषा त्रिरात्र इति तस्यै तदेव मुखं यदेतेषामह्नां बहिष्पवमानं ये अभितोऽहनी तौ पक्षौ यन्मध्यममहः स आत्माऽग्निष्टोम सामानि पुच्छम् ॥२॥ यदेवासावुदेति तन्मुखं ये अभितोऽहनी तौ पक्षौ यन्मध्यममहः स आत्माग्निः पुच्छम् ॥३॥ यदेवासावुदेति तन्मुखं ये अभितोऽहनी तौ पक्षौ यन्मध्यममहः स आत्मा यदस्तमेति तत्पुच्छम् ॥३॥ एतावान्वाव त्रिरात्रो गायत्रः प्राणस्त्रैष्टुभं चक्षुर्जागतं श्रोत्रं सर्वमायुरेति य एवं वेद ॥५॥ तदाहुर्ब्रह्मवादिनः कियश्स्त्रिरात्रइतीयानिति ब्रूयादियध्येत दभ्यथो इयानिति ब्रूयादियध्येवैतदभिपरा३—
 डर्वा३डित्याहुः पराडिति ब्रूयात्पराड् हि वदति पराड् पश्यति पराड् प्राणित्येका३द्वा३ उत्त्रया३इत्याहुरेक इति ब्रूयात् समानो ह्येष यत् प्राणोऽपानोव्यानस्तद्यथा अदोमणौ सूत्रमोतमेवमेषु लोकेषु त्रिरात्र ओतः शोभतेऽस्य मुखं य एवं वेद ॥६॥ यद्वै त्रिरात्रस्य सलोम तदस्य विलोम यदस्य विलोम तदस्य सलोम तद्यदेतत्परं सदहरवरं क्रियते यजमानायैव तत्पशून् परिगृह्णाति प्रजननाय न ह्यमुष्मिन् लोके पशवः प्रजायन्ते ॥७॥ एते वाव छन्दसां वीर्यवत्तमे यद्गायत्री च त्रिष्टुप् च यदेते अभितो भवतो मध्ये जगती वीर्यवतीभ्यामेव तच्छन्दोभ्यां पशून् परिगृह्णाति प्रजननाय न ह्यमुष्मिन् लोके पशवः प्रजायन्ते ॥८॥ असौ वाव त्रिरात्रो यथोदेत्येवं प्रथममहर्यथा मध्यन्दिन एवं द्वितीयं यथाऽस्तमेत्येवं तृतीयं गच्छत्यमुष्य सायुज्यं गच्छति सावेश्यं य एवं वेद ॥९॥

॥ इति विंशोऽध्यायः ॥



एकविंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

इन्द्रोमरुतः सहस्रमजिनात् स्वां विशं सोमाय राज्ञे प्रोच्य
तस्माद्राज्ञे प्रोच्य विशं जिनन्ति तौ यमोऽशृणोन्मरुतो ह
सहस्रमिज्यासृष्टामिति स आगच्छत्सोऽब्रवीदुपमास्मिन् सहस्रे
ह्वयेथामिति तमुपाह्वयेताश्च यमोऽपश्यदेकाङ्गाश्चसहस्रेऽपि सहस्रस्य
पयोभिभ्रतीश्चोऽब्रवीदियमेव ममास्तु सहस्रं युवां विकल्पयेथामिति
ता वब्रूतां यथा वाव त्वमेतां पश्यस्येवमावमेतां पश्याव इति ॥ १ ॥
तया वा इदश्चसहस्रं विकल्पयामहा इत्यब्रुवश्चस्तामुदके
प्रावेशयश्चोऽब्रुवन्नश्शानाहरामहै यस्मै न इयं प्रथमायो देष्यति
इति तेश्शानाहरन्त सोमस्य प्रथम ऐदथेन्द्रस्याथ यमस्य ॥ २ ॥
तेऽब्रुवन् सोमाय राज्ञ उदेहि तृतीयेन चात्मनस्तृतीयेन च सहस्रस्य
पयस इति सा बभ्रुः पिङ्गाक्ष्येकवर्षोदैतृतीयेन चात्मनस्तृतीयेन च
सहस्रस्य पयसः सा या सोमक्रयणी सैव सा ॥ ३ ॥ तृतीयेन
चास्य तस्या आत्मनस्तृतीयेन च सहस्रस्य पयसः सोमः क्रीतो
भवति य एवं विद्वान् सोमं क्रीणाति यस्मा एवं विदुषे सोमं
क्रीणन्ति ॥ ४ ॥ तेऽब्रुवन्निन्द्रायो देहि तृतीयेन चात्मनस्तृतीयेन च
सहस्रस्य पयस इति सा शबली पष्ठौह्युदैत् तृतीयेन चात्मनस्तृतीयेन
च सहस्रस्य पयसः सा येन्द्रियैष्या सैव सा ॥ ५ ॥ तृतीयेन चास्य
तस्या आत्मनस्तृतीयेन च सहस्रस्य पयस इन्द्रियैष्या दत्ता भवति
य एवं विद्वानिन्द्रियैष्यां ददाति यस्मा एवं विदुष इन्द्रियैष्यां
ददाति ॥ ६ ॥ तेऽब्रुवन्यमायोदेहि तृतीयेन चात्मनस्तृतीयेन च सहस्रस्य
पयस इति सा जरती कुष्टाऽशृङ्गयुदैद्भूमा वा दित्यौ हीर्मतो

हसीयसी तृतीयेन चात्मनः तृतीयेन च सहस्रस्य पयसः सा यानुस्तरणी सैव सा ॥ ७ ॥ तृतीयेन चास्य तस्या आत्मनस्तृतीयेन च सहस्रस्य पयसोऽनुस्तरणी कृता भवति य एवं विद्वाननुस्तरणी करोति यस्मा एवं विदुषेऽनुस्तरणीङ्कुर्वन्ति नाचकृवान्मन्यते ॥ ८ ॥ तदाहुर्ब्रह्मवादिनो न वा अमुष्मिन् लोके सहस्रयाडलोकोऽस्तीति तद् यावदितः सहस्रस्य गौर्गवि प्रतिष्ठिता तावदस्माल्लोकादसौ लोकः सहस्रयाजी वा इमान् लोकान् व्याप्नोत्यथो यावत् सहस्रं योजनान्यथो यावत् सहस्रमाश्वीनान्यथो यावत् सहस्रमह्वयानि तद्गवा गवा स्पृणोति समाक्रयणाय वा एता दीयन्ते ॥ ९ ॥ सहस्रं यदसृजत तस्य तार्य्यं योनिरासीद्यत्तार्य्यं प्रत्यस्य नयति सयोनित्वाय ॥ १० ॥

द्वितीयः खण्डः

प्रजापतिः प्रजा असृजत ता अस्मान् सृष्ट्याः पराच्य आयन्नतस्यति न इति विभ्यत्यः सोऽब्रवीदुपमावर्तध्वं तथा वै वोऽत्स्यामि यथाद्यमाना भूयस्यः प्रजनिष्यथ इति ताभ्यो वैनं ऋतं ब्रूहीत्यब्रुवन्स्ताभ्य ऋत निधनेनर्तमब्रवीदीनिधनेना वयत्त्रिणिधनेन प्राजनयदेतैर्ह वा इदं— सामभिर्मृत्युः प्रजा अत्ति च प्रजनयति ॥ १ ॥ अद्यमानस्य भूयो भवति य एवं वेद ॥ २ ॥ ज्येष्ठसामानि वा एतानि श्रेष्ठसामानि प्रजापति सामानि ॥ ३ ॥ गच्छति ज्यैष्ठ्यं श्रेष्ठ्यं एवं वेद ॥ ४ ॥ एतैर्वै सामभिः प्रजापतिरिमान् लोकान् सर्वान् कामान् दुग्धे यदाच्या दुग्धे तदाच्यादोहानामाच्यादोहत्वम् ॥ ५ ॥ सर्वानिमान् लोकान् कामान् दुग्धे य एवं विद्वानेतैः सामभिः स्तुते ॥ ६ ॥ इमे वै लोका एतानि सामान्ययमेवर्तनिधनमन्तरिक्षमीनिधनं द्यौश्चिणि— धनम् ॥ ७ ॥ यथा क्षेत्रज्ञः क्षेत्राण्यनुसञ्चरत्येवमिमान् लोकाननु सञ्चरति य एवं वेद ॥ ८ ॥

अग्नेर्वा एतानि वैश्वानरस्य सामानि यत्र वा एतै रशान्तैः
स्तुवन्ति तत् प्रजा देवोघातुको भवत्यग्निमुपनिधाय स्तुवते स्वाया
एव तद्देवतायाः साम्येक्षाय नमस्कृत्योद्गायति शान्तैः स्तुवन्ति ॥ ९ ॥

तृतीयः खण्डः

वाग्वै शबली तस्यास्त्रिरात्रो वत्सस्त्रिरात्रो वा एतां
प्रदापयति ॥ १ ॥ तद्य एवं वेद तस्मा एषा प्रप्ता दुग्धे ॥ २ ॥
योऽलमन्नाद्याय सन्नथान्नं नाद्यात् ॥ ३ ॥ वरासीं परिधाय तप्तं
पिबन् द्वादशरात्रीरथः शयीत ॥ ४ ॥ या द्वादशीस्यात्तस्या उपव्युषः—
शबलीहोमं हुत्वा पुरा वाग्व्यः सम्प्रवदितोर्यत्र ग्रामस्य
पशोर्नाश्रिणुयात्तदरण्यं परेत्यदर्भस्तम्बमालभ्य शबलि शबलीति
त्रिराह्वयेद्यदच्छुनश्च गर्दभाच्च प्रतिवाश्यते सा समृद्धा ॥ ५ ॥ यदि
न प्रतिवाश्येत संवत्सरे पुनराह्वयेत् ॥ ६ ॥ शबलि समुद्रोऽसि
विश्वव्यचा ब्रह्म देवानां प्रथमजा ऋतस्यान्नमसि शुक्रमसि
तेजोऽस्यमृतमसि तां त्वा विद्म शबलि दीद्यानान्तस्यास्ते पृथिवी
पादोन्तरिक्षं पादो द्यौः पादः समुद्रः पाद एषासि शबलि तां त्वां
विद्मसान् इषमूर्जं धुक्ष्ववसोर्द्धारां शबलि प्रजानां शचिष्ठा
व्रतमनुगेषं स्वाहा ॥ ७ ॥

चतुर्थः खण्डः

चतुष्टोमोऽग्निष्टोम एकविंश उक्थ्यः सर्व्वस्तोमोऽतिरात्रः ॥ १ ॥
प्रजापतेर्वा अक्षयश्चयत्तत्परापतत्तदश्वोऽभवत्तदश्वस्याश्वत्वं तद्देवा
अश्वमेधेन प्रत्यदधुरेष वाव प्रजापतिस्सर्व्वं करोति योऽश्वमेधेन
यजते ॥ २ ॥ एष वाव सशरीरः सम्भवत्यमुष्मै लोकाय
योऽश्वमेधी ॥ ३ ॥ सरघा वा अश्वस्य सक्थ्या बृहत्तद्देवाश्चतुष्टोमेन
प्रत्यदधुर्य्यच्चतुष्टोमो भवत्यश्वस्य सर्व्वत्वाय ॥ ४ ॥

यत्तिष्ठोऽनुष्टुभश्चतस्रो गायत्रीः करोति तस्मात्त्रिभिस्तिष्ठन्
 प्रतितिष्ठति सर्वान् पलायमानः प्रतिदधाति ॥५॥ अन्तो वा
 अश्वः पशूनामन्तोऽनुष्टुपृच्छन्दसामन्तोविष्णुर्देवतानामन्तश्चतुष्टोम—
 स्तोमानामन्तस्त्रिरात्रो यज्ञानां यद्वैष्णव्योऽनुष्टुभः प्रतिपदो भवन्ति
 चतुष्टोमस्तोमस्त्रिरात्रो यज्ञोऽन्त एव तदन्तं प्रतिष्ठापयति ॥६॥
 एकविंशमहर्भवति यस्मिन्नश्च आलभ्यत एकविंशो वा
 इतोऽसावादित्यो द्वादशमासाः पञ्चर्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य
 एकविंश आदित्यस्यैवैनं मात्रां गमयति ॥७॥ तस्य महानामन्यः
 पृष्ठं भवति ॥८॥ अन्यदन्यद्वा एताश्छन्दोऽन्योन्य एते पशव
 अलभ्यन्त एता वा एतःसमाप्नुवन्ति यन्महानामन्यः पृष्ठं भव—
 न्त्यश्वस्य सर्वत्वाय ॥९॥ पार्थुरश्मं ब्रह्मसाम भवति ॥१०॥ ईश्वरा
 वा एषोऽयतोधृतः परां परावतमेतो रश्मिना वा अश्वोधृतो यत्पार्थुरश्मं
 ब्रह्मसाम भवत्यश्वस्यैवयत्यै ॥११॥ सर्वस्तोमोऽतिरात्रो भवति
 सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वं जयति ॥१२॥
 एकयूपोवैकादशिनी वान्येषां यज्ञानां भवत्येकविंशिन्यश्वमेधस्य
 खादिरो वा वैल्वो वा पाणो वान्येषां यज्ञानां भवति नैचुदार
 एकविंशत्यरत्निरश्वमेधस्य नान्येषां पशूनां तेदन्या
 अवघन्त्यवघन्त्यश्वमेधस्य दक्षिणतोऽन्येषां पशूनामवघन्त्युत्तरतोऽश्व—
 मेधस्य प्लक्षणखास्वन्येषां पशूनामवघन्ति वेतस शाखास्वश्व—
 मेधस्य ये ग्राम्यान्पशून्त्रियुञ्जन्त्यारोकेष्वारण्यां धारयन्त्या ग्राम्यान्पशून्
 लभन्ते प्रारण्यान् सृजन्ति ॥१३॥

पञ्चमः खण्डः

त्रयस्त्रिवृतोऽतिरात्राः सर्वे षोडशिमन्तः ॥१॥ यो राज्य
 आशसेत स एतेन यजेत ॥२॥

राजा वा एष स्तोमानां राज्यमेवास्मिन्दधाति ॥ ३ ॥ यदाक्षराणि
प्रथममहर्भजन्त एकाक्षरो वै वाग्वाचो नतिवादाय ॥ ४ ॥ अथ
यत् द्व्यक्षरणिधनमाज्यदोहं भवत्युत्तरयोरह्नोरभि सन्तत्या अन्वह—
माज्यदोहानि भवन्त्यन्वहमेवैनं पशुभिः समर्द्धयन्ति ॥ ५ ॥ सर्व्वे
षोडशिमन्तो भवन्तीन्द्रियं वीर्य्यं षोडशीन्द्रियेणैवैनान् वीर्य्येण
समर्द्धयति ॥ ६ ॥

षष्ठः खण्डः

चतुर्विंशः पवमानास्त्रिवृत्याज्यानि पञ्चदशानि पृष्ठानि
सप्तदशोऽग्निष्टोमश्चतुश्चत्वारिंशः पवमानाः पञ्चदशान्याज्यानि
सप्तदशानि पृष्ठान्येकविंशोऽग्निष्टोमः सोक्थोऽष्टाचत्वारिंशः
पवमाना एकविंशान्याज्यानि त्रिणवानि पृष्ठानि त्रयस्त्रिंशोऽग्निष्टोम
एकविंशान्युक्थानि सषोडशिकानि पञ्चदशी रात्रिस्त्रि—
वृतसन्धिश्छन्दोम पवमानः ॥ १ ॥ पशुकामो यजेत ॥ २ ॥ पशवो
वै छन्दोमा यच्छन्दोमाः पवमाना भवन्ति पशूनेवावरुन्धे ॥ ३ ॥
उभयेस्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्च तन्मिथुनं तस्मान्मिथुनात्प्रजायते ॥ ४ ॥

सप्तमः खण्डः

त्रिवृत्प्रातःसवनं, पञ्चदशं माध्यन्दिनं सवनं सप्तदशं तृतीयसवनं
चतुर्विंशं प्रातः सवनं चतुश्चत्वारिंशं माध्यन्दिनं सवनमष्टा—
चत्वारिंशं तृतीयसवनं सोक्थमेकविंशं प्रातः सवनं, त्रिणवं
माध्यन्दिनं सवनं, त्रयस्त्रिंशं तृतीयसवनं सोक्थमेकविंशः षोडशी,
पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत् सन्धिरन्तर्वसुः ॥ १ ॥ इमे लोकास्त्रिरात्रः ॥ २ ॥
अस्तीव वा अयं लोकोऽस्तीवासौ छिद्रमिवान्तरिक्षम् ॥ ३ ॥ अस्तीव
त्रिरात्रस्य प्रथममहरस्तीवोत्तमं छिद्रमिव मध्यतः ॥ ४ ॥

पशवो वै छन्दोमायच्छन्दोमा मध्यतो भवन्त्यपिहित्या—
एवाच्छिद्रतायै ॥ ५ ॥

अष्टमः खण्डः

त्रिवृत् प्रातःसवनं, पञ्चदशं माध्यन्दिनःसवनं सप्तदशं
तृतीयसवनं, एकविंशं प्रातःसवनं, त्रिणवं माध्यन्दिनःसवनं,
त्रयस्त्रिंशं तृतीय सवनं सोक्थं चतुर्विंशं प्रातःसवनं
चतुश्चत्वारिंशं माध्यन्दिनःसवनमष्टाचत्वारिंशं तृतीयसवनं—
सोक्थमेकविंशः षोडशी, पञ्चदशी रात्रि स्त्रिवृत्सन्धिः पराकः ॥ १ ॥
पराकेण वै देवाः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गकामो यजेत पराङ्घेवैतेन
स्वर्गं लोकमाक्रमते ॥ २ ॥ यद्वा एतस्याकन्तदस्य पराक् तत् पराक्तस्य
पराकत्वम् ॥ ३ ॥ न वै तत्र जग्मुषे किञ्चनाकम् ॥ ४ ॥ नास्माअकं
भवति य एवं वेद ॥ ५ ॥ प्रजायास्वत्कलृप्तः पराङ्घेवैतेन स्वर्गं
लोकमाक्रमते तद्यदेकविंशः षोडशी भवति पञ्चदशी रात्रिस्त्रि-
वृत्सन्धिस्तेनास्मिन् लोके प्रतितिष्ठति ॥ ६ ॥

नवमः खण्डः

चतुर्विंशः पवमानास्त्रिवृन्त्याज्यानि पञ्चदशानि पृष्ठानि,
सप्तदशोऽग्निष्टोमश्चतुर्विंशः पवमानाः, पञ्चदशान्याज्यानि,
सप्तदशानि पृष्ठान्येकविंशोऽग्निष्टोमः, सोक्थश्चतुर्विंशः
पवमानाः, सप्तदशान्याज्यान्येकविंशानि पृष्ठानि, त्रिणवोऽग्निष्टोमः,
सोक्थश्चतुर्विंशः पवमाना, एकविंशान्याज्यानि, त्रिणवानि पृष्ठानि,
त्रयस्त्रिंशोऽग्निष्टोम, एकविंशान्युक्थानि, सषोडशिकानि, पञ्चदशी
रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ १ ॥ अत्रिरकामयत चत्वारो मे वीरा
आजायेरन्निति स एतमपश्यत्तस्य चत्वारो वीरा आजायन्तास्य
चत्वारो वीरा जायन्ते य एवं वेद ॥ २ ॥

एकस्तोममुत्सृज्यैकमभ्यारभते वीरजननं वै स्तोमो वीरमेवास्मै
तत् प्रजनयति ॥ ३ ॥ चतुर्विंशः पवमाना भवन्ति चतुर्विंशत्यक्षरा
गायत्री प्रजननं गायत्री प्रजात्यै ॥ ४ ॥ उभये स्तोमायुग्मन्तश्चा-
युज्यश्चतन्मिथुनं तस्मान्मिथुनात् प्रजायते ॥ ५ ॥ अग्निष्टोमः
प्रथममहरुक्थो द्वितीयश्षोडशी तृतीयमतिरात्रश्चतुर्थं
नानावीर्यतायै ॥ ६ ॥ नानावीर्याण्यहानि करोति ॥ ७ ॥ गायत्रं
वै प्रथममहस्रैष्टुभं द्वितीयं जागतं तृतीयमानुष्टुभं चतुर्थम् ॥ ८ ॥
तदाहुर्व्यत् तृतीयेहनि षोडशिनं गृह्णीयुस्तृतीयेनाहानुष्टुभमाप्नुयु-
रच्छन्दश्चतुर्थमहः स्यादानुष्टुभो वै षोडशीति ॥ ९ ॥ चतुर्थेऽहनि
षोडशी ग्रहीतव्यः स्व आयतने षोडशी गृह्यते ॥ १० ॥ छन्दोभिरहानि
नानावीर्याणि करोति ॥ ११ ॥ नौघसं प्रथमस्याहो ब्रह्मसाम श्यैतं
द्वितीयस्य श्रायन्तीयं तृतीयस्य त्रैशोकं चतुर्थस्य ॥ १२ ॥
तदाहुरपञ्चश इव वा एष यत् ज्यायसः छन्दोऽधिकनीयश्छन्द
उपैतीति ॥ १३ ॥ तद्यदेषा चतुर्थेऽहन्यतिजगती क्रियतेऽनप-
ञ्चशाय ॥ १४ ॥ कालेयं प्रथमस्याहोच्छावाकसाम माधुच्छन्दसं
द्वितीयस्य रौरवं तृतीयस्य समन्तं चतुर्थस्य नानावीर्यतायै
नानावीर्याण्यहानि करोति ॥ १५ ॥ 'अभि त्वा वृषभा सुत'इति
तृतीयस्याहो रथन्तरं 'कस्तमिन्द्र त्वा वसवि'ति वामदेव्यं 'यज्जा
यथा अपूर्व्ये'ति चतुर्थस्याहो बृहत् 'एदु मघोर्मदिन्तरमि'ति वामदेव्यं
छन्दसां नानावीर्यतायै नानावीर्याण्यहानि करोति ॥ १६ ॥

दशमः खण्डः

त्रिवृत्पञ्चदशोग्निष्टोमः प्रथममहः ॥ १ ॥ अथोत्तरस्याहश्चतुर्विंशं
बहिष्पवमानं पञ्चदशानि त्रीण्याज्यानि, सप्तदशमच्छावाकस्यैकविंशो
माध्यन्दिनः पवमानः सप्तदशे द्वे पृष्ठे, एकविंशे द्वे, एकविंशं
तृतीयं सवनसोक्थम् ॥ २ ॥

तृतीयस्याह एकविंशं बहिष्पवमानं त्रीणि चाज्यानि,
 पञ्चदशमच्छावाकस्य, चतुर्विंशो माध्यन्दिनः पवमान, एकविंशानि
 पृष्ठानि त्रिणवं तृतीयसवनं, द्वे चोक्थे, एकविंशमच्छा-
 वाकस्य ॥ ३ ॥ चतुर्थस्याहश्चतुर्विंशाः पवमानाः पञ्चदश-
 होतुरान्यः सप्तदशानि, त्रीण्येकविंशानि पृष्ठानि,
 त्रयस्त्रिंशोग्निष्टोम, एकविंशान्युक्थानि स षोडशिकानि, पञ्चदशी
 रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ ४ ॥ जमदग्निः पुष्टिकाम एतमाहरत्स इमान्
 पोषनपुष्यत् ॥ ५ ॥ यदिदमाहुर्नवा ऊर्वौ पलितौ संजानाते इति ॥ ६ ॥
 तत्सवनिवैतेन पोषान् पुष्यति ॥ ७ ॥ जगती छन्दोभिः सम्पद्यते ॥ ८ ॥
 जगती वै छन्दसां परमं पोषं पुष्टा परममेवैतेन पोषं पुष्यति ॥ ९ ॥
 पुरोडाशिन्य उपसदो भवन्ति पशवो वै पुरोडाशाः पशुष्वेव
 प्रतितिष्ठति ॥ १० ॥ अग्ने वेर्होत्रं वेरध्वरमापितरं वैश्वानर-
 मवसेऽकरिन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ ११ ॥ देवावश्विनौ
 मधुकशयाद्येयं यज्ञं यजमानायमिमिक्षतमिन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः
 स्वाहा ॥ १२ ॥ देव विष्णो उर्व्वद्यास्मिन्यज्ञे यजमानायाधिविक्रमस्वेन्द्राय
 देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ १३ ॥ देव सोम रेतोधा अद्यास्मिन्यज्ञे
 यजमानायैधीन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ १४ ॥ देव सवितः
 सुसावित्रमद्यास्मिन्यज्ञे यजमानायासुवस्वेन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः
 स्वाहा ॥ १५ ॥ देव धातुः सुधाताद्यास्मिन्यज्ञे यजमानायैधीन्द्राय
 देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ १६ ॥ देवा ग्रावाणो मधुमतीमद्यास्मिन्यज्ञे
 यजमानाय वाचं वदतैन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ १७ ॥
 देव्यनुमतेऽन्वद्येयं यज्ञं यजमानाय मन्यस्वेन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः
 स्वाहा ॥ १८ ॥ देव्यदितेस्वादित्यमद्यास्मिन्यज्ञे यजमानायासुवस्वेन्द्राय
 देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ १९ ॥

देव्य आपो नन्नम्यध्वमद्यास्मिन्यज्ञे यजमानायेन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ २० ॥ सदःसदः प्रजावानृभुर्जुषाण इन्द्राय देवेभ्यो जुहुताहविः स्वाहा ॥ २१ ॥ देव त्वष्टा सुरेतोधा अद्यास्मिन्यज्ञे यजमानायैधीन्द्राय देवेभ्यो जुहुता हविः स्वाहा ॥ २२ ॥ आग्नेय एककपाल, आश्विनौ द्विकपालो वैष्णवस्त्रिकपालः, सौम्यश्चतुष्कपालः, सावित्रः पञ्चकपालो, धात्रः षट्कपालो, मारुतः सप्तकपालो, बार्हस्पत्योऽष्टाकपालो, मैत्रो नवकपालो, वारुणो दशकपाल, ऐन्द्र एकादश कपालो, वैश्वदेवो द्वादशकपालः ॥ २३ ॥

एकादशः खण्डः

त्रिवृत् प्रातःसवनं, पञ्चदशं माध्यन्दिनःसवनःसप्तदशं तृतीयसवनं, पञ्चदश प्रातःसवनःसप्तदशं माध्यन्दिनः—सवनमेकविंशःतृतीयसवनःसोक्थःसप्तदशं प्रातःसवनमेकविंशं माध्यन्दिनःसवनं, त्रिणवं तृतीय सवनः, सोक्थमेकविंशं प्रातःसवनं त्रिणवं माध्यन्दिनःसवनं, त्रयस्त्रिंशं तृतीय सवनं, प्रत्यवरोहीण्युक्थानि, त्रिणवं प्रथमं, द्वे एकविंशे सषोडशिके, पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत् सन्धिः ॥ १ ॥ वसिष्ठः पुत्रहतो हीन इवामन्यत स एतमपश्यत्सोऽग्रं पर्यैद्योहीन इव मन्येत स एतेन यजेत ॥ २ ॥ यत् स्तोमात् स्तोममभिसंक्रामत्यग्रादेवाग्रः रोहति वसिष्ठस्य जनित्रे भवतः प्रजात्यै ॥ ३ ॥ प्रत्यवरोहीण्युत्तमस्याह उक्थानि भवन्ति प्रतिष्ठित्यै ॥ ४ ॥

द्वादशः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदशउक्थः सप्तदशउक्थ एकविंशोऽतिरात्रो विश्वामित्रस्य सञ्जयः ॥ १ ॥

जह्नुवृचीवन्तो राष्ट्र आहिंसन्त स विश्वामित्रो जाह्नवो
 राजैतमपश्यत् स राष्ट्रमभवदराष्ट्रमितरे ॥ २ ॥ भ्रातृव्यवा-
 न्यजेत ॥ ३ ॥ भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो भवति य एवं
 वेद ॥ ४ ॥ ज्योतिर्वा एष विहृतः ॥ ५ ॥ ज्योतिः प्रजानां भवति
 य एवं वेद ॥ ६ ॥ चतुष्टोमो वा एष चतुष्पादाः पशवः पशुष्वेव
 प्रतितिष्ठति ॥ ७ ॥ एकविंशस्तोमानातियन्ति प्रतिष्ठा वा
 एकविंशोऽन्तत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठति ॥ ८ ॥

त्रयोदशः खण्डः

द्वे त्रिवृतो सवने पञ्चदशमेकं, द्वे पञ्चदशे सवने सप्तदशमेकं,
 द्वे सप्तदशे सवने एकविंशमेकं, द्वे एकविंशे सवने त्रिणवमेकं,
 द्वे त्रिणवे सवने त्रयस्त्रिंशमेकं प्रत्यवरोहीण्युक्तानि, त्रिणवं
 प्रथमं द्वे एकविंशे सषोडशिके, पञ्चदशी रात्रिस्त्रिवृत्सन्धिः ॥ १ ॥
 देवाश्च वा असुराश्चास्पृद्धन्त ते न व्यजयन्त तेऽब्रुवन् वाचो
 मिथुनेन विजयामहै यतरेनो वाचो मिथुनं न प्रतिविन्दाश्स्ते
 पराभवानिति ते देवा एक इत्यब्रुवन्नेकेत्यसुरा वाचो मिथुनं प्रत्यविन्दन्
 द्वाविति देवा अब्रुवन् द्वे इत्यसुरा वाचो मिथुनं प्रत्यविन्दश्चत्रय
 इति देवा अब्रुवन्स्त्रिस इत्यसुरा वाचो मिथुनं प्रत्यविन्दश्चत्वार
 इति देवा अब्रुवन्श्चतस्र इत्यसुरा वाचो मिथुनं प्रत्यविन्दन् पञ्चेति
 देवा अब्रुवन्नासुरा अविन्दश्स्ततो देवा अभवन् परासुराः ॥ २ ॥
 भवत्यात्मना परास्य भ्रातृव्यो य एवं वेद ॥ ३ ॥ संवत्सरं वा
 एषान्तद्वीर्यमन्नाद्यमवृंजत ॥ ४ ॥ संवत्सरं वीर्यमन्नाद्यं भ्रातृव्यस्य
 वृङ्क्ते य एवं वेद ॥ ५ ॥ पञ्चरात्रो वा एष पाङ्क्तः पुरुषः
 पाङ्क्ताः पशव स्तेन पुरुषश्च पशूँश्चाप्नोति ॥ ६ ॥ अस्थूरिर्वा एष
 सन्ततो यज्ञो द्वौ द्वौ हि स्तोमावहर्वहतो यं कामं कामयते
 तमेतेनाभ्यश्नुते ॥ ७ ॥

यत्र यत्र ह्यस्थूरिणा कामयते तत्तदभ्यश्नुते ॥ ८ ॥ अभ्यासंग्यः
पञ्चाहो भवति सन्तत्यै ॥ ९ ॥ प्रत्यवरोहीण्युत्तमस्याह उक्थानि
भवन्ति प्रतिष्ठित्यै ॥ १० ॥

चतुर्दशः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदशउक्थः सप्तदशउक्थः पञ्चदशउक्थः
सप्तदशोऽतिरात्रः पञ्चशारदीयो मरुताश्स्तोमः ॥ १ ॥ यः कामयते
बहु स्यामिति स एतेन यजेत ॥ २ ॥ मरुतो वै देवानां भूयिष्ठा
बहुरेव भवति ॥ ३ ॥ सप्तदशश्स्तोमानातियन्ति प्रजापतिर्वै सप्तदशः
प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ४ ॥ अगस्त्यो वै मरुद्भ्य उक्ष्णः प्रौक्षतानिन्द्राया
बध्नात्ते वज्रमादायाभ्यपतन् स एतत्कयाशुभीयं पश्यते—
नाशमयत् ॥ ५ ॥ यत् कयाशुभीयं शस्यते शान्त्या एव ॥ ६ ॥
सप्तदश पृश्नीनुक्ष्णः पञ्चवर्षात्सप्तदश पृश्नीस्त्रिवत्सा अप्रवीतास्तान्
पर्यग्निकृतान् प्रोक्षितानेतरे लभन्ते प्रेतरेण सृजन्ति ॥ ७ ॥ ततः
संवत्सरे नवनीतपृश्नीररुणा आनयन्ति ताश्चैवोक्ष्णस्तान् पर्यग्निकृतान्
प्रोक्षितानेतरे लभन्ते प्रेतरेण सृजन्ति ततः संवत्सरे राजीवा आनयन्ति
ताश्चैवोक्ष्णस्तान् पर्यग्निकृतान् प्रोक्षितानेतरे लभन्ते प्रेतरेण सृजन्ति
ततः संवत्सरे पिशङ्गीरानयन्ति ताश्चैवोक्ष्णस्तान् पर्यग्निकृतान्
प्रोक्षितानेतरे लभन्ते प्रेतरेण सृजन्ति ततः संवत्सरे सारङ्गीरानयन्ति
ताश्चैवोक्ष्णस्तान् पर्यग्निकृतान् प्रोक्षितानेतरे लभन्ते प्रेतरेण
सृजन्ति ॥ ८ ॥ ततः संवत्सरे सोमा भवन्ति ॥ ९ ॥
त्रींस्त्रीनवहमालभन्ते पञ्चोत्तमेऽहनि ॥ १० ॥ अजोऽग्नी—
षोमीयः ॥ ११ ॥ ऐन्द्रामारुता उक्षाणो मारुत्यो वत्सतर्ह्यः ॥ १२ ॥
यदि रुद्रोऽभिमन्येताग्नये रुद्रवते पुरोडाशमष्टाकपालं
निरूप्याथान्यमालभेत ॥ १३ ॥

यदि स॒शीर्ये॒त भौममेककपालं निरूप्याथान्यमालभेत ॥१४॥
 यद्यवसीदे नै॒ऋतं चरुं निरूप्याथान्यमालभेत यद्यप्सुम्रियेतापोनज्जीयं
 चरुं निरूप्याथान्यमालभेत यद्यन्धः स्यात् सौर्यं चरुं निरूप्याथान्य—
 मालभेत ॥१५॥ यदि श्र॒वणो वा कूटो वा स्याद् बार्हस्पत्यं चरुं
 निरूप्याथान्यमालभेत ॥१६॥ यदि पलायेत वायव्यं चरुं
 निरूप्याथान्यमालभेत ॥१७॥ यदि प्रासहाजयेयुरिन्द्राय प्रसह्न
 एकादशकपालं निरूप्याथान्यमालभेत ॥१८॥ यद्यन्येन मृत्युना
 म्रियेत प्राजापत्यं द्वादश कपालं निरूप्याथान्यमालभेत ॥१९॥
 एतेन वा एकया वा गान्दमो वेतस्तीष्वा सर्वामृद्धिमाद्धनोत् ॥ २०॥
 सर्वामृद्धिमृद्धनोति य एवं वेद ॥ २१॥

पञ्चदशः खण्डः

ज्योति॒ष्टोमोऽग्नि॒ष्टोमो गौरु॒क्थो महाव्रतं गौरु॒क्थ—
 आयुरतिरात्रः ॥१॥ संवत्सरो वै व्रतं तस्य वसन्त ऋतुर्मुखं
 ग्रीष्मश्च वर्षाश्च पक्षौ शरन्मध्यः हेमन्तः पुच्छम् ॥२॥
 तस्माच्छरदमोषघयोऽभिसंपच्यन्ते शरद्धिमध्यःसंवत्सरस्य ॥३॥
 अकृतं वा एते कुर्वन्ति ये पुरा संवत्सरात् व्रतमुपयन्ति ॥४॥
 एतद्वै व्रतमाप्तं यत्पञ्चरात्रे पञ्चहृतवः ॥५॥ आप्तेन व्रतेनस्तुते
 सर्वमायुरेति य एवं वेद ॥६॥

॥ इति एकविंशोऽध्यायः ॥



द्वाविंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

पृष्ठ्यः षडहः ॥ १ ॥ ऋतवो न प्रत्यतिष्ठस्त एतेन प्रत्यतिष्ठन्
प्रतिष्ठाकामो यजेत प्रत्येव तिष्ठति ॥ २ ॥ षड्वा ऋतव ऋतुष्वेवैतेन
प्रतिष्ठति पृष्ठ्यः षडहो भवति प्रत्यक्षमृध्यै ॥ ३ ॥ प्रत्यक्षं
ह्येतेनर्तव आर्ध्ववृद्ध्या एव ॥ ४ ॥

द्वितीयः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदशउक्थः सप्तदशउक्थो ज्योतिर्गौरायु-
रतिरात्रः ॥ १ ॥ यः कामयेत सर्वमायुरियामिति स एतेन यजेत ॥ २ ॥
यत्न्यहः पुरस्ताद्भवति त्रयः प्राणापानव्यानास्त एवतत्सन्धीयन्ते ॥ ३ ॥
अथ यत् ज्योतिर्गौरायुरतिरात्रो भवति प्रतिष्ठित्यै ॥ ४ ॥

तृतीयः खण्डः

अभ्यासंग्य पञ्चाहो विश्वजिदतिरात्रः ॥ १ ॥ अन्यस्मै वै कामाय
सत्रमन्यस्मै यज्ञो न तत्सत्रेणाप्नोति यस्मैकं यज्ञो न तद्यज्ञेनाप्नोति
यस्मैकं सत्रम् ॥ २ ॥ सत्रमिव वा एतद्यदनुलोमं पृष्ठानि
यदेकधा पृष्ठानि भवन्त्येकधैवास्मिस्तदोजोवीर्य्यन्दधाति ॥ ३ ॥
अन्नं पृष्ठान्यन्नाद्यमेवास्मिन्दधाति ॥ ४ ॥ पशवः पृष्ठानि पशुष्वेव
प्रतिष्ठति ॥ ५ ॥ अभ्यासंग्य पञ्चाहो भवति सन्तत्यै ॥ ६ ॥
विश्वजिदतिरात्रो भवति विश्वस्याभिजित्यै ॥ ७ ॥

चतुर्थः खण्डः

पृष्ठ्यः षडहो महाव्रतमतिरात्रः ॥ १ ॥

सप्तऋषय एतेनार्ध्वस्तेनर्द्धिस्तस्मादेतेन यजन्त ऋध्वा
एव ॥ २ ॥ सप्तशिरसि प्राणाः प्राणा इन्द्रियाणीन्द्रियाण्ये वै
तेनाप्नोति ॥ ३ ॥ सप्त ग्राम्याः पशवस्तानेतेनाप्नोति ॥ ४ ॥ व्रतः—
सप्तमस्याहः पृष्ठं भवति तद्ध्यनाप्तमन्नं वै व्रतमन्नाद्य—
मेवैतेनाप्नोति ॥ ५ ॥ पृष्ठयः षडहो भवति प्रत्यक्षमृध्यै ॥ ६ ॥
प्रत्यक्षश्चेतेन सप्त ऋषय आर्ध्ववन्नृद्ध्या एव ॥ ७ ॥

पञ्चमः खण्डः

पृष्ठयः षडहः सप्तदशं महाव्रतमतिरात्रः ॥ १ ॥ तस्य त्रिवृच्छिरः
पञ्चदशौ पक्षौ सप्तदशआत्मैकविंशं पुच्छम् ॥ २ ॥ एतेन वै
प्रजापतिः प्रजा असृजत ॥ ३ ॥ प्र प्रजया प्र पशुभिर्जायते य एवं
वेद ॥ ४ ॥ सप्तदशो वै प्रजापतिर्यत् सप्तदशं व्रतं भवति
प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ५ ॥ यत् त्रिवृच्छिरो भवति नवप्राणाः प्राणेष्वेव
प्रतिष्ठति ॥ ६ ॥ यत्पञ्चदशौ पक्षौ सवीवधत्वाय ॥ ७ ॥ सप्तदश
आत्मा भवति प्रजापतिर्वै सप्तदशः प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ८ ॥
एकविंशं पुच्छं भवति प्रतिष्ठित्यै ॥ ९ ॥

षष्ठः खण्डः

पृष्ठयः षडहश्छन्दोम पवमानं महाव्रतमतिरात्रः ॥ १ ॥ पशुकामो
यजेत ॥ २ ॥ पशवो वै छन्दोमाः ॥ ३ ॥ यच्छन्दोमाः पवमाना
महाव्रतस्य भवन्ति पशून्वावरुन्धे ॥ ४ ॥ उभये स्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्च
तन्मिथुनं तस्मान्मिथुनात् प्रजायते ॥ ५ ॥

सप्तमः खण्डः

अभ्यासंग्यः पञ्चाहोऽथ त्रयस्त्रिंशमहस्तस्य चतुस्त्रिंश—
शोऽग्निष्टोमः सप्तदशं महाव्रतमतिरात्रस्तस्य चतुर्विंशं बहिष्यमानं

त्रिवृच्छिरः पञ्चदशौ पक्षौ सप्तदश आत्मैकविंशं पुच्छम् ॥ १ ॥
 एतेन वै जमदग्निः सर्वान् पोषानपुष्यत्सर्वानिवैतेन पोषान्युष्यति ॥ २ ॥
 यदभ्या संग्यः पञ्चाहः पुरस्ताद्भवति सन्तत्या एव ॥ ३ ॥ अथैत
 त्रयस्त्रिंशमहस्त्रिंशदेवता देवता एवाप्नोति ॥ ४ ॥ तस्य चतुस्त्रिं—
 शोऽग्निष्टोमः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो देवतानां प्रजापतिमेवाप्नोति ॥ ५ ॥
 चतुर्विंशं बहिष्पवमानं भवति महाव्रतस्य चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री
 प्रजननं गायत्री प्रजात्यै ॥ ६ ॥ उभये स्तोमा युग्मन्तश्चायुजश्च
 तन्मिथुनं तस्मान् मिथुनात् प्रजायते ॥ ७ ॥ यत्रिवृच्छिरो भवति
 नव प्राणाः प्राणेष्वेव प्रतितिष्ठति यत् पञ्चदशौ पक्षौ
 सवीवधत्वाय सप्तदश आत्मा भवति प्रजापतिर्वै सप्तदशः
 प्रजापतिमेवाप्नोत्येकविंश पुच्छं भवति प्रतिष्ठित्यै ॥ ८ ॥

अष्टमः खण्डः

ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोमो गौरुक्थं आयुरुक्थ्योऽभिजिदग्निष्टोमो
 विश्वजिदग्निष्टोमः सर्वजिदग्निष्टोमः सर्वस्तोमोऽतिरात्रः ॥ १ ॥ एतेन
 वा इन्द्रोऽत्यन्या देवता अभवदत्यन्या प्रजा भवति य एवं वेद ॥ २ ॥
 यत् ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः पुरस्ताद्भवति प्रज्ञातान् स्तोमानुपैतीमानेव
 लोकानेष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठति ॥ ३ ॥ अथाभिजिदभिजिता वै
 देवा इमान् लोकानभ्यजयन्विश्वजिता विश्वमजयन् सर्वजिता
 सर्वमजयन् ॥ ४ ॥ सर्वस्तोमोऽतिरात्रो भवति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य
 जित्यै सर्वमेवैतेनाप्नोति सर्वं जयति ॥ ५ ॥

नवमः खण्डः

चत्वारि त्रिवृन्त्यहान्यग्निष्टोममुखानि विश्वजिन्महाव्रतं
 ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रः ॥ १ ॥

एतेन वै प्रजापतिः पुरुषमसृजत स सर्वस्यान्नाद्य—
स्याधिपत्यमगच्छत् ॥ २ ॥ सर्वस्यान्नाद्यस्याधिपत्यं गच्छति य एवं
वेद ॥ ३ ॥ शिरो वा अग्रे सम्भवतः सम्भवति चतुर्द्धाविहितं वै
शिरः प्राणश्चक्षुः श्रोत्रं वागात्मा वै पृष्ठानि यत्पृष्ठान्युपैति
शिरएवात्मानमनुसन्दधाति ॥ ४ ॥ एतद्वै पुरुषमकस्तस्मा अन्नमेव
व्रतमपि दधाति ॥ ५ ॥ अथ यत् ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रो भवत्यक्लृप्तस्य
क्लृप्त्यै ॥ ६ ॥

दशमः खण्डः

पृष्ठ्यः स्तोमः षडहोविश्वजिदतिरात्रः ॥ १ ॥ अन्यस्मै वै कामाय
सत्रमन्यस्मै यज्ञेन तत्सत्रेणाप्नोति यस्मैकं यज्ञो न तद्यज्ञेनाप्नोति
यस्मैकं सत्रश्चसत्रमिव वा एतद्यदनुलोमं पृष्ठानि यदैकधा पृष्ठानि
भवत्येकधैवास्मिश्स्तदोजोवीर्यं दधात्यन्नं पृष्ठान्यन्नाद्यमेवास्मिन्
दधाति पशवः पृष्ठानि पशुष्वेव प्रतितिष्ठति ॥ २ ॥ यद्वै मनुष्याणां
प्रत्यक्षं तद्देवानां परोक्षमथ यन्मनुष्याणां परोक्षं तद्देवानां
प्रत्यक्षम् ॥ ३ ॥ एतद्वै परोक्षं व्रतं यद्विश्वजित् प्रत्यक्षमेवैतेनान्नाद्यमव—
रुन्धे ॥ ४ ॥

एकादशः खण्डः

पृष्ठ्यः षडहो महाव्रतं ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रः ॥ १ ॥ एतेन वै
देवा देवत्वमगच्छन् ॥ २ ॥ देवत्वं गच्छति य एवं वेद ॥ ३ ॥
एतद्वै व्रतमाप्तं यदष्टरात्रेऽग्निष्टोमो हि व्रतश्चसम्पद्यते ॥ ४ ॥ अथ
यत् ज्योतिष्टोमोऽतिरात्रो भवत्यक्लृप्तस्य क्लृप्त्यै ॥ ५ ॥ अष्टरात्रेण
वै देवाः सर्वमाश्नुवत ॥ ६ ॥ सर्वमाश्नुते य एवं वेद ॥ ७ ॥

द्वादशः खण्डः

पृष्ठ्यः षडहो ज्योतिर्गौरायुरतिरात्रो देवा वै मृत्योरविभयुस्ते
प्रजापतिमुपाधावस्तेभ्य एतेन नवरात्रेणामृतत्वं प्रायच्छत् ॥ १ ॥
एतद्वाव मनुष्यस्यामृतत्वं यत् सर्वमायुरेति वसीयान् भवति ॥ २ ॥
सर्वमायुरेति वसीयान् भवति य एवं वेद ॥ ३ ॥ नवरात्रो वा एष
नव प्राणाः प्राणेष्वेव प्रतितिष्ठति ॥ ४ ॥ पृष्ठ्यः षडहो भवति
प्रत्यक्षमृद्ध्या अथ यत् ज्योतिर्गौरायुरतिरात्रो भवति
प्रतिष्ठित्यै ॥ ५ ॥

त्रयोदशः खण्डः

ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोमो गौरुक्थ्य आयुरुक्थ्योऽभ्यासंग्यः पञ्चाहो
विश्वजिदतिरात्रः पशुकामो यजेत ॥ १ ॥ यत् ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः
पुरस्ताद्भवति प्रज्ञातान् स्तोमानुपैतीमानेव लोकानेष्वेव लोकेषु
प्रतितिष्ठति ॥ २ ॥ अथ यदभ्यासंग्य पञ्चाहो मध्यतो भवति
पाङ्क्तः पुरुषः पाङ्क्ताः पशवस्तेन पुरुषं च पशूँश्चप्नोति ॥ ३ ॥
विश्वजिदतिरात्रो भवति विश्वस्याभिजित्यै ॥ ४ ॥

चतुर्दशः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदश उक्थ्यस्त्रिवृदग्निष्टोमः सप्त—
दशोऽग्निष्टोम एकविंश उक्थ्यः सप्तदशोऽग्निष्टोमस्त्रिण—
वोऽग्निष्टोमस्त्रयस्त्रिंश उक्थ्यास्त्रिणवोऽग्निष्टोमो विश्व—
जिदतिरात्रः ॥ १ ॥ इन्द्रोऽसुरान् हत्वाऽकार्यञ्चकृवाँ अमन्यत तं
देवा एतेन स्तोमेनाजयन् स पाप्मनो नैर्दश्यमगच्छत् ॥ २ ॥
तस्मादिषुवतो वा दण्डहतो वा दशमीं नैर्दश्यं गच्छति ॥ ३ ॥
दश दशिनी वा एषा विराडन्नं विराडन्नाद्यमेवास्मिन् दधाति ॥ ४ ॥

अग्निष्टोमेन वै देवा असुराग्निगृह्य मध्यत उक्थ्यैः प्रजया पशुभिः प्राजायन्ताग्निष्टोमेनैव भ्रातृव्यं निगृह्य मध्यत उक्थ्यैः प्रजया प्रजायते ॥ ५ ॥ त्रिककुब्वा एष यज्ञः ॥ ६ ॥ त्रिककुप् समानानाञ्च प्रजानाञ्च भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥

पञ्चदशः खण्डः

त्रयस्त्रिवृतोऽग्निष्टोमास्त्रयः पञ्चदश उक्थ्यास्त्रयः सप्तदश उक्थ्या एकविंशोऽतिरात्रः कुसुरुविन्ददशरात्रः ॥ १ ॥ यः कामयेत बहुस्यामिति स एतेन यजेत ॥ २ ॥ यद्गणशः स्तोमा बहुरेव भवति ॥ ३ ॥ सह त्रिवृतः सह पञ्चदशाः सह सप्तदशाः ॥ ४ ॥ एकविंशोऽतिरात्रो भवति प्रतिष्ठित्यै ॥ ५ ॥ ज्योतिर्वा एष विहृतः ॥ ६ ॥ ज्योतिर्भ्रजानां भवति य एवं वेद ॥ ७ ॥ चतुष्टोमो वा एष चतुष्पादाः पशवः पशुष्वेव प्रतिष्ठिति ॥ ८ ॥ एकविंशस्तोमानातियन्ति प्रतिष्ठा वा एकविंशः प्रत्येव तिष्ठति ॥ ९ ॥ एतेन वै कुसुरुविन्द औद्दालकिरिष्ट्वा भूमानमाश्नुत ॥ १० ॥ भूमानमश्नुते यः एवं वेद ॥ ११ ॥

षोडशः खण्डः

अभ्यासंग्यः पञ्चाहश्चत्वारश्छन्दोमा विश्वजिदतिरात्रः पशुकामो यजेत ॥ १ ॥ यदभ्यासंग्यः पञ्चाहः पुरस्ताद्भवति पाङ्क्तः पुरुषः पाङ्क्ताः पशवस्तेन पुरुषञ्च पशूश्चाप्नोति ॥ २ ॥ छन्दोमा मध्यतो भवन्ति पशवो वै छन्दोमाः पशूनामवरुध्यै ॥ ३ ॥ विश्वजिदतिरात्रो भवति विश्वस्याभिजित्यै ॥ ४ ॥

सप्तदशः खण्डः

त्रिष्टोमोऽग्निष्टोमो ज्योतिरुक्थ्यस्त्रिष्टोमोऽग्निष्टोमो गौरुक्थ्योभिजिदग्निष्टोमो गौरुक्थ्यो विश्वजिदग्निष्टोम आयुरुक्थ्यो

विश्वजिदग्निष्टोमस्य सर्वस्तोमोऽतिरात्रः ॥ १ ॥ देवा वा
असुरैर्हन्यमानास्ते प्रजापतिमुपाधावः स्तेभ्य एतां देवपुरं प्रायच्छत्
तां प्राविशन् ॥ २ ॥ अभिचार्यमाणं याजयेदेतामेव देवपुरं
प्रविशत्यस्तुत्यै ॥ ३ ॥

अष्टादशः खण्डः

अभ्यासंग्यः षडहस्त्रयश्छन्दोमाश्चतुष्टोमोऽग्निष्टोमो विश्वजि-
दतिरात्रः ॥ १ ॥ स्वाराज्यो वा एष यज्ञः ॥ २ ॥ स्वाराज्यं गच्छति
य एवं वेद ॥ ३ ॥ प्रजापतिर्हि स्वाराज्यं परमेष्ठी स्वाराज्यम् ॥ ४ ॥
परमेष्ठितां गच्छति य एवं वेद ॥ ५ ॥ उभे बृहद्रथन्तरे भवतस्तद्धि
स्वाराज्यमयुतं दक्षिणास्तद्धि स्वाराज्यं षड्विंशस्तोमो भवति स
हि स्वाराज्यं चतुष्टोमस्तोमः स ह्यन्तोऽन्तं श्रिया गच्छति य एवं
वेद ॥ ६ ॥ एतेन वै क्षेम धृत्वा पौण्डरीक इष्ट्वा सुदाम्नस्तीर
उत्तरे ॥ ७ ॥ सर्व्वामृद्धिमादर्धोत् सर्व्वामृद्धिमादर्धोति य एवं वेद ॥ ८ ॥

अहीनः समाप्तः

॥ इति द्वाविंशोऽध्यायः ॥



त्रयोविंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

अतिरात्रः पृष्ठ्यः षडहः सर्वस्तोमोऽतिरात्रश्चत्वारश्छन्दोमा
अतिरात्रः ॥ १ ॥ एष वा आप्तो द्वादशाहो यत् त्रयोदशरात्रयः ॥ २ ॥
स्मानोहोष यत् प्रायणीयश्चोदयनीयश्चातिरात्रौ यं कामं कामयन्ते
तमेताभिरभ्यश्नुवते ॥ ३ ॥ गृहपतेस्तु वागुपदासुका भवति
तद्यन्मध्ये सर्वस्तोमोऽतिरात्रो भवति तेन गृहपतेर्वागनुपदासुका
भवति ॥ ४ ॥ एता वा अर्य्यलगृहपतय आरुणि होतारः सुभगा
सूपयन्ति ते सर्वामृद्धिमार्ध्वन् सर्वामृद्धिमार्ध्वन्ति य एता
उपयन्ति ॥ ५ ॥

द्वितीयः खण्डः

अतिरात्रो द्वादशाहस्य दशाहनि महाव्रतं चातिरात्रश्च ॥ १ ॥
वाग्वा एषा प्रतायते यदेष द्वादशाहस्तां विच्छिन्दुर्यन्मध्येऽतिरात्रं
कुर्युः ॥ २ ॥ यदुपरिष्टाद् व्रतमुपयन्ति न वाचं विच्छिन्दन्त्याप्नुवन्ति
त्रयोदशं मासम् ॥ ३ ॥ एता वै प्रतिष्ठितास्त्रयोदशरात्रयः प्रतितिष्ठन्ति
य एता उपयन्ति ॥ ४ ॥

तृतीयः खण्डः

अतिरात्रः पृष्ठ्यः षडहः पृष्ठ्यः षडहस्त्रयस्त्रिं
शारम्भणोऽतिरात्रः ॥ १ ॥ कामसनयो वा एता रात्रयः ॥ २ ॥ विराड्वि
दशात्मैकादशी प्रजा द्वादशी पशवस्त्रयोदशी कामाय चतुर्दशी ॥ ३ ॥
सर्वनिवैताभिः कामानवरुन्धते ॥ ४ ॥ एता वाव ब्रध्नस्य विष्टपो
यदेतौ त्रयस्त्रिंशौ मध्यतः सन्धीयेते तेन ब्रध्नस्य
विष्टपश्रोहन्ति ॥ ५ ॥

द्विःपृष्ठान्युपयन्त्यभिपूर्वमेवैताभिरन्नाद्यं दधते ॥ ६ ॥ पक्षिण्यो
वा एता रात्रयो यं कामं कामयन्ते तमेताभिरभ्यश्नुवते ॥ ७ ॥ यत्र
यत्र हि पक्षी कामयते तत्तदभ्यश्नुते ॥ ८ ॥ त्रिवृता प्रयन्ति त्रिवृतोद्यन्ति
प्राणा वै त्रिवृत् स्तोमानां प्राणैरेव प्रयन्ति प्राणेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ९ ॥

चतुर्थः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः पृष्ठ्यः षडह आयुर्गौज्योति—
रतिरात्रः ॥ १ ॥ याश्स्तल्पे वोदके वा विवाहे वा मीमांसेरश्स्त
एता उपेयुः ॥ २ ॥ यत् ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः प्रज्ञाताश्स्तो—
मानुपयन्ति ॥ ३ ॥ इमानेव लोकानेष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ४ ॥
अथ यत् पृष्ठ्यः षडहोमध्यतो भवत्येष वाव देवतल्पो देवतल्पमेव
तदारोहन्ति तल्प्या भवन्ति ॥ ५ ॥ प्रवसीयसस्तल्पमाप्नुवन्ति ॥ ६ ॥
अथ यदायुर्गौज्योतिरात्रोयेनेतोयन्ति तेन पुनरायन्ति ॥ ७ ॥

पञ्चमः खण्डः

अतिरात्रो गौश्चायुश्च द्वे अहनी द्वादशाहस्य
दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ यद्गौश्चायुश्च द्वे अहनी भवतो मिथुनौ
स्तोमावुपयन्ति प्रजात्यै ॥ २ ॥ अथ यानि द्वादशाहस्य दशाहानि
वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति प्रजननाय ॥ ३ ॥ एता वै प्रतिष्ठिताश्च—
तुर्दशरात्रयः प्रतितिष्ठन्ति य एता उपयन्ति ॥ ४ ॥

षष्ठः खण्डः

अतिरात्रः पृष्ठ्यः षडहो महाव्रतं पृष्ठ्यः
षडहस्त्रयस्त्रिंशारम्भणोऽति रात्रः ॥ १ ॥ एताभिर्वै देवा
देवत्वमगच्छन् देवत्वं गच्छन्ति य एता उपयन्ति ॥ २ ॥ एतद्वै
देवानां सत्रं तदद्यापि देवाः सत्रमासते ॥ ३ ॥

पौर्णमास्यतिरात्रोऽथ यानि षडहानि स पृष्ठयः षडह एकाष्टका
महाव्रतमथ यानि षडहानि स पृष्ठयः षडहोऽमावास्यातिरात्रः ॥ ४ ॥
तस्मात्तर्हि मनुष्याणां न सुतो देवानां हि तर्हि सुतः प्रत्यक्षमेवै—
ताभिर्देवता अभ्यारोहन्ति ॥ ५ ॥ प्रतिनोदात्तुभ्यमितरमनुपक्षो
दीक्षेरन्नप्रतिनोदाय ॥ ६ ॥

सप्तमः खण्डः

अतिरात्रस्त्रिवृदग्निष्टोमो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः पृष्ठयः षडह
आयुर्गौर्ज्योतिरतिरात्रः ॥ १ ॥ क्षत्रं वा एता रात्रयोऽभि
निर्वदन्ति ॥ २ ॥ ब्रह्मवर्चसकामा उपेयुः ॥ ३ ॥ यत् त्रिवृदग्निष्टोमो
भवति ब्रह्म तद्यज्ञसार्द्धयति ॥ ४ ॥ ब्रह्म वै त्रिवृत् ॥ ५ ॥ यत्
ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः प्रज्ञातान् स्तोमानुपयन्तीमानेव लोकानेष्वेव
लोकेषु प्रतितिष्ठन्त्यथ यत् पृष्ठयः षडहो मध्यतो भवत्यन्नं वै
पृष्ठान्यन्नमेव तन्मध्यतो धीयते तस्मान्मध्ये सदन्नं धिनोत्यथ
यदायुर्गौर्ज्योतिरतिरात्रोयेनेतोयन्ति तेनपुनरायन्ति ॥ ६ ॥

अष्टमः खण्डः

त्रिवृदग्निष्टोदग्निष्टोमो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहो द्वादशाहस्य दशाहा—
न्यतिरात्रः ॥ १ ॥ अन्यस्मै वै कामाय सत्रमन्यस्मै यज्ञो न तत्
सत्रेणाप्नोति यस्मैकं यज्ञो न तद्यज्ञेनाप्नोति यस्मैकश्चसत्रम् ॥ २ ॥
यदन्यतोऽतिरात्रास्तेन यज्ञोऽथ यानि द्वादशाहस्य दशाहानि तेन
सत्रम् ॥ ३ ॥ उभावेवैताभिः कामाववरुन्धते ॥ ४ ॥

नवमः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहो द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः
प्रजाकामा उपेयुः ॥ १ ॥

एताभिर्वै प्रजापतिः प्रजा असृजत प्र प्रजया प्र पशुभि—
ज्जायन्ते य एता उपयन्ति ॥ २ ॥ यत् ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहः प्रजातान्
स्तोमानुपयन्तीमानेव लोकानेष्वेव लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ३ ॥ अथ
यानि द्वादशाहस्य दशाहानि वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति प्रजननाय ॥ ४ ॥
एता वै प्रतिष्ठिताः पञ्चदशरात्रयः प्रतितिष्ठन्ति एता उपयन्ति ॥ ५ ॥

दशमः खण्डः

एता एव समहाव्रताः ॥ १ ॥ एताभिर्वा इन्द्रः परमां विजितं
व्यजयत परमामेवैताभिर्विजितिं विजयन्ते ॥ २ ॥ पञ्चदशो वै वज्रो
न वा अगृहीतेन वज्रेण वीर्यं करोति या षोडश्यारम्भणमेव
तद्गृहीतेन वज्रेण वीर्यं करोति ॥ ३ ॥

एकादशः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुर्गौरायुः पञ्चाहो द्वादशाहस्य
दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ एताभिर्वै प्रजापतिरनन्ताश्च्रियमजदनन्ता
वा एता यत् पञ्चाहविधाः ॥ २ ॥ यत् पञ्चाहोऽनन्तादेव
प्रजायन्ते ॥ ३ ॥ अथ यानि द्वादशाहस्य दशाहानि
वाचविच्छिन्नामुपयन्ति प्रजननाय ॥ ४ ॥ एता वै प्रतिष्ठिताः
सप्तदशरात्रयः प्रतितिष्ठन्ति य एता उपयन्ति ॥ ५ ॥

द्वादशः खण्डः

अतिरात्रोऽभिप्लवः षडहो द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥
देवा वै मृत्यरविभयुस्ते प्रजापतिमुपाधावश्स्तेभ्य एतेनाष्टादश—
रात्रेणामृतत्वं प्रायच्छत् ॥ २ ॥ एतद्वाव मनुष्यस्यामृतत्वं यत्
सर्वमायुरेति वसीयान् भवति ॥ ३ ॥ सर्वमायुर्य्यन्ति वसीयाऽसौ
भवन्ति य एता उपयन्ति ॥ ४ ॥ द्विर्वा एता नव नव प्राणा
अभिपूर्वमेवैताभिरायुर्दधते ॥ ५ ॥

त्रयोदशः खण्डः

एता एव समहाव्रताः ॥१॥ एताभिर्वै वायुरारण्यानां पशू-
नामाधिपत्यमाश्नुतोभयेषां पशूनामाधिपत्यं गच्छन्ति य एता
उपयन्ति ॥२॥ मृगसत्रं वा एतत् ॥३॥ एताभिर्वा आरण्याः
पशवो नाकृताः प्रजायन्ते ॥४॥ अनाकृतमेषां प्रजायते य एता
उपयन्ति ॥५॥

चतुर्दशः खण्डः

अतिरात्रोऽभिप्लवः षडहोऽभिजिच्च विश्वजिच्च द्वे अहनी
द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः ॥१॥ पुरुषकामा उपेयुरेताभिर्वै
प्रजापितः पुरुषममसृजत ॥२॥ स सर्वस्यान्नाद्यस्याधिपत्यमगच्छत्
सर्वस्यान्नाद्यस्याधिपत्यं गच्छन्ति य एता उपयन्ति ॥३॥ पुरुषसत्रं
वा एतत् ॥४॥ विश्वो वै पुरुषो दश हि हस्त्या अङ्गुल्यो
दशपाद्याः ॥५॥ यदेता विश्वतीरात्रयो भवन्त्येष्वेवैताभिल्लोकेषु
पुरुषं प्रतिष्ठापयन्ति ॥६॥ एता वै प्रतिष्ठिता विश्वतीरात्रयः
प्रतितिष्ठन्ति य एता उपयन्ति ॥७॥

पञ्चदशः खण्डः

अतिरात्रोऽभिप्लवः षडहोऽतिरात्रोऽभिप्लवः षडहोऽभिप्लवः
षडहोऽतिरात्रः पशुकामा उपेयुः ॥१॥ एताभिर्वा आदित्याः सप्त
ग्राम्यान् पशूनुदसृजन्त पशूनेवैताभिरुत्सृजन्ति ॥२॥ त्रिवै सप्त
सप्तादित्याः ॥३॥ पशव आदित्याः ॥४॥ आदित्या
अस्मिंल्लोकऋद्धा आदित्या अमुष्मिन् ॥५॥ पशवोऽस्मिन्
ऋतवोऽमुष्मिन् ॥६॥ उभयोरनयोर्लोकयोर्ऋध्नवन्ति देवलोके च
मनुष्यलोके च एता उपयन्ति ॥७॥

षोडशः खण्डः

अतिरात्रः पृष्ठयः षडहस्त्रयः स्वरसामानो दिवाकीर्त्यमहस्त्रयः
स्वरसामानः पृष्ठयः षडहस्त्रयस्त्रिंशारम्भणोऽतिरात्रो ब्रह्मवर्चस—
कामाउपेयुः ॥१॥ स्वर्भानुर्वा आसुरः सूर्यं तमसाविध्यत्तस्मै देवाः
प्रायश्चित्तिमैच्छंस्तएता अविन्दंस्ताभिरस्मात्तमोऽपाघ्नन् ॥२॥
अपतमोघ्नते य एता उपयन्ति ॥३॥ सौमपौषं पशुमुपालभ्य—
मालभेन् ॥४॥ सोमो वै ब्राह्मणः पशवः पूषा स्वामेव तद्देवतां
पशुभिर्वश्यन्ते त्वचमेवाक्रत ॥५॥ मनोऋचः सामिधेन्यो
भवन्ति ॥६॥ मनुर्वै यत् किञ्चावदत्तद्भेषजं भेषजतायै ॥७॥
नैदाधीय उपेयुः ॥८॥ तद्ध्येष प्रतितेजिष्ठं तपति ॥९॥
किलासत्वात्तुभयमतिह्येभ्योऽपहन्ति ॥१०॥ एता वा उग्रदेवो
राजनिरुपैत् स किलासोऽभवत् ॥११॥ अकिलासो भवति य एवं
विद्वानेता उपैति ॥१२॥

सप्तदशः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहोऽभिप्लवः षडहो द्वादशाहस्य
दशाहानि महाव्रतञ्चातिरात्रञ्चान्नाद्यकामा उपेयुः ॥१॥ पञ्चर्तवो
द्वादशमासास्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंशोत्रं द्वाविंशमेभ्यो
लोकेभ्यः संवत्सरादमुष्मादादित्यादन्नाद्यमवरुन्धते य एता
उपयन्ति ॥२॥

अष्टादशः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुर्गौरायुः पञ्चाहोऽभिप्लवः षडहो
द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः प्रतिष्ठाकामा उपेयुः ॥१॥ एताभिर्वै
प्रजापतिरेषु लोकेषु प्रत्यतिष्ठत् ॥२॥

यदेतास्त्रयोविंशतीरात्रयो भवन्ति त्रय इमे लोका
एष्वेवैताभिल्लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ३ ॥ एता वै प्रतितिष्ठता
स्त्रयोविंशती रात्रयः प्रतितिष्ठन्ति य एता उपयन्ति ॥ ४ ॥

एकोनविंशः खण्डः

अतिरात्रः पृष्ठ्यः स्तोमः षडहस्त्रयस्त्रिंशमहरनिरुक्तमुपहव्यस्य
तन्ने क्लृप्तान्तस्य कण्वरथन्तरं मध्यन्दिनेऽथ त्रयस्त्रिंशं निरुक्तं
त्रिणवं द्वे एकविंशे त्रिणवं त्रयस्त्रिंशमहरनिरुक्तं त्रयस्त्रिं—
शमहरनिरुक्तं पृष्ठ्यः स्तोमः षडहः प्रत्यङ्त्रिवृदहरनिरुक्तं
ज्योतिष्टोमोऽग्निष्टोमोऽतिरात्रः ॥ १ ॥ एताभिर्वै देवाः स्वर्गे लोके
समसीदन् स्वर्गे लोके सीदामेत्येताः ॥ २ ॥ एता वाव ब्रध्नस्य
विष्टपोयदेते त्रयस्त्रिंशा मध्यतः सन्धीयन्ते तेन ब्रध्नस्य
विष्टपः शोहन्ति ॥ ३ ॥ मध्यतः पृष्ठान्युपयन्त्यन्नं वै पृष्ठान्यन्नमेव
तन्मध्यतो धीयते तस्मान्मध्ये सदनं धिनोति ॥ ४ ॥ सप्ताहा वा
एते ॥ ५ ॥ अतो वै प्रजाः प्रजायन्ते ॥ ६ ॥ प्र प्रजया प्र
पशुभिर्जायन्ते य एता उपयन्ति ॥ ७ ॥ अपशव्यं वा एतत् सत्रं
यदच्छन्दोमं यत्सप्ताहास्तेन छन्दोमवत्यस्तेन पशव्याः ॥ ८ ॥
त्रयस्त्रिंश स्त्रयस्त्रिंशमन्वेति त्रिवृत् त्रिवृतमग्रादग्रशोहन्ति
यत्त्रयस्त्रिंशत्त्रयस्त्रिंशमन्वेति प्राणात् प्राणेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ९ ॥
यत् त्रिवृत् त्रिवृतम् ॥ १० ॥ विलोमानो वा एता रात्रयो
यज्ज्योतिरग्निष्टोम उत्थानीयमहर्भवत्यक्लृप्तस्य क्लृप्त्यै ॥ ११ ॥

विंशः खण्डः

अतिरात्रो द्वावभिप्लवौ षडहौ द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः
प्रजाकामा वा पशुकामावोपेयुः ॥ १ ॥

क्लृप्ताद्वै योनेः प्रजाः पशवः प्रजायन्ते यत् क्लृप्तौ
षड्हावुपयन्ति क्लृप्तादेव योनेः प्रजया पशुभिः प्रजायन्ते ॥ २ ॥
अथ यानि द्वादशाहस्य दशाहानि वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति
प्रजननाय ॥ ३ ॥ एता वै प्रतिष्ठिताश्चतुर्विंशती रात्रयः प्रतितिष्ठन्ति
य एता उपयन्ति ॥ ४ ॥

एकविंशः खण्डः

एता एव समहाव्रताः ॥ १ ॥ एताभिर्वै प्रजापतिः
सर्वमन्नाद्यमवारुन्ध ॥ २ ॥ चतुर्विंशतिः संवत्सरस्यार्द्धमासाः
संवत्सरः पञ्चविंशोऽन्नं व्रतं संवत्सरादेताभिरन्नाद्यमवारुन्धते य
एता उपयन्ति ॥ ३ ॥

द्वाविंशः खण्डः

अतिरात्रो गौश्चायुश्च द्वे अहनी द्वावभिप्लवौ षडहौद्वादशाहस्य
दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ ऋतवो न प्रत्यतिष्ठन्त एताभिः प्रत्यतिष्ठन्
प्रतिष्ठाकामा उपेयुः प्रत्येव तिष्ठन्ति ॥ २ ॥ षड्वा ऋतव ऋतुष्वेवै—
ताभिः प्रतितिष्ठन्ति ॥ ३ ॥ यद्वौश्चायुश्च द्वे अहनी भवतो मिथुनौ
स्तोमावुपयन्ति प्रजात्यै ॥ ४ ॥ यत् क्लृप्तौ षड्हावुपयन्ति क्लृप्त्या
एव ॥ ५ ॥ अथ यानि द्वादशाहस्य दशाहानि वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति
प्रजननाय ॥ ६ ॥ एता वै प्रतिष्ठिता षड्विंशतीरात्रयः प्रतितिष्ठन्ति
य एता उपयन्ति ॥ ७ ॥

त्रयोविंशः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहो द्वावभिप्लवौ षडहौ द्वादशाहस्य
दशाहान्यतिरात्र ऋद्धिकामा उपेयुः ॥ १ ॥ एताभिर्वै नक्षत्राणि
सर्वामृद्धिमार्ध्वन् सर्वामृद्धिमृध्नुवन्ति य एता उपयन्ति ॥ २ ॥

यदेताः सप्तविंशतीरात्रयो भवन्ति सप्तविंशतिर्नक्षत्राणि
नक्षत्रसम्मिता वा एता रात्रयो नक्षत्राणामेवर्द्धिमृध्नुवन्ति ॥ ३ ॥

चतुर्विंशः खण्डः

एता एव समहाव्रताः पशुकामा उपेयुर्यदेता
अष्टाविंशतीरात्रयो भवन्त्यष्टाशफाः पशवः शफशाएवैताभिः
पशून्वरुन्धते ॥ १ ॥

पञ्चविंशः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुर्गौरायुः पञ्चाहोद्वावभिप्लवौ षडहौ
द्वादशाहस्य दशाहान्यातेरात्रः ॥ १ ॥ एताभिर्वै प्रजापतिरनन्ताः—
श्रियमजयत् ॥ २ ॥ अनन्ता वा एता या एकया न त्रिंशन्नेति वै
वाचोऽनन्तम् ॥ ३ ॥ यदेता एकया न त्रिंशद्वात्रयो
भवन्त्यनन्तामेवैताभिः श्रियं जयन्ति ॥ ४ ॥

षडविंशः खण्डः

अतिरात्रस्त्रयोऽभिप्लवा षडहाद्वादशाहस्य दशाहान्यति—
रात्रोऽन्नाद्यकामा उपेयुः ॥ १ ॥ परोक्षमन्यानि सत्राणि विराजं सम्पद्यन्ते
प्रत्यक्षमेता विराजःसम्पन्नाः ॥ २ ॥ प्रत्यक्षमेताभिरन्नाद्यमवरुन्धते य
एता उपयन्ति ॥ ३ ॥

सप्तविंशः खण्डः

एता एव समहाव्रता एताभिर्वै प्रजापतिरभिपूर्वमन्नाद्यमवा—
रुन्ध ॥ १ ॥ अन्नं विराडन्नं व्रतम् ॥ २ ॥ अभिपूर्वमेवैताभिरन्नाद्यमव—
रुन्धते ॥ ३ ॥

अष्टाविंशः खण्डः

अतिरात्रो गौश्चायुश्च द्वे अहनी त्रयोऽभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य
दशाहान्यतिरात्रः पशुकामा उपेयुः ॥ १ ॥ अनुष्टुब्वा
एतारात्रयः ॥ २ ॥ द्वात्रिंशदक्षरानुष्टुप् ॥ ३ ॥ वागनुष्टुप् ॥ ४ ॥
चतुष्पादाः पशवः ॥ ५ ॥ वाचापशून्दाधार ॥ ६ ॥ एताभी-
रात्रीभिः ॥ ७ ॥ तस्मात्ते वाचा सिद्धा वाचाहूता आयन्ति ॥ ८ ॥

॥ इति त्रयोविंशोऽध्यायः ॥



चतुर्विंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

अतिरात्रस्त्रयः पञ्चाहा विश्वजिदतिरात्र एकः पञ्चाहो द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ प्रजापतिः प्रजा असृजत तान् प्रत्यतिष्ठस्त एताभिः प्रत्यतिष्ठन्निमे लोका न प्रत्यतिष्ठस्त एताभिः प्रत्यतिष्ठन् प्रतिष्ठाकामा उपेयुः प्रत्येवतिष्ठन्ति ॥ २ ॥ अरूपेण वा एताः सरूपा अरूपेण प्रजाः सरूपा अरूपेणेमे लोकाः सरूपा यद्रथन्तरस्य लोकं बृहदापद्यते बृहतो रथन्तरमरूपेणैवैभ्यस्तत् सरूपं प्रजनयन्ति ॥ ३ ॥ लुप्यते वा एतत् षष्ठमहर्ष्यत् पञ्चाहानुपयन्ति नर्त्तवः कल्पन्ते यत् पृष्ठयः षडहस्तने षष्ठमहर्न् लुप्यते तेनर्त्तवः कल्पन्ते ॥ ४ ॥ अथ यानि द्वादशाहस्य दशाहानि तेन पञ्चाहेभ्यो न यन्ति ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वा अन्तरिक्षस्तेनावभितोऽनेन वा एष देवेभ्यो दुग्धेऽमुना प्रजाभ्यः ॥ ६ ॥ इयं वा अन्तरिक्षं वियदिमौ स्तनावभितः ॥ ७ ॥ तदभ्यनूक्ता ॥ ८ ॥ त्रिंशति त्रयः परो ये देवा बर्हिंरासतव्यं न ह द्वितातनेति ॥ ९ ॥ ऊर्ध्वं मध्यमोऽतिरात्रः स्तनावभितः ॥ १० ॥ यदेषोऽनतिरात्रः स्यादूधः प्रतिहरेत् ॥ ११ ॥ तस्मादतिरात्रः कार्य्य ऊर्ध्वसोऽप्रतिहाराय ॥ १२ ॥ त्रयस्त्रिंशद्देवता एताभिरार्ध्वस्तेनर्द्धिस्तस्मादेताभिर्यजन्त ऋध्या एव ॥ १३ ॥ नाना ब्रह्मसामान्युपयन्त्यह्नां नानावीर्यतायै नानैव वीर्याण्येवरुन्धते ॥ १४ ॥

द्वितीयः खण्डः

अतिरात्रोऽभिप्लवः षडहोऽतिरात्रोऽभिप्लवः षडहोऽति—
रात्रोऽभिप्लवः षडहोद्वादशाहस्य दशाहानि महाव्रतञ्चातिरात्रश्च ॥ १ ॥

आदित्याश्चाङ्गिरसश्चैतत् सत्रं समदधतादित्यानामेकविंशतिरङ्गिरसां द्वादशाहआदित्या अस्मिंल्लोक ऋद्धा आदित्या अमुष्मिन्नङ्गिरसोऽस्मिन्नङ्गिरसोऽमुष्मिन् द्वयं सत्रं यावद्द्वयेन सत्रेण ध्रुवन्ति तावत्येतासामृद्धिः ॥ २ ॥

तृतीयः खण्डः

अतिरात्रस्त्रयः पञ्चाहा विश्वजिदतिरात्रस्त्रयः पञ्चाहा अतिरात्रः ॥ १ ॥ अपशव्यं वा एतत् सत्रं यदच्छन्दोमं यद्विश्वजिति छन्दोमानुपयन्ति तेन छन्दोमवत्यस्तेन पशव्याः ॥ २ ॥ पक्षिण्यो वा एता रात्रयो यं कामं कामयन्ते तमेताभिरभ्यश्नुवते यत्र यत्र हि पक्षी कामयते तत्तदभ्यश्नुते ॥ ३ ॥ त्रिवृता प्रयन्ति त्रिवृतोद्यन्ति प्राणावै त्रिवृत् स्तोमानां प्राणैरेव प्रयन्ति प्राणेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ४ ॥

चतुर्थः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुस्तत्र्यहस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य दशाहानि महाव्रतञ्चातिरात्रश्चर्द्धिकामा उपेयुः ॥ १ ॥ एताभिर्वै प्रजापतिः सर्व्वामृद्धिमाध्वोत्सर्व्वामृद्धिमृध्नुवन्ति य एता उपयन्ति ॥ २ ॥ यदेताश्चतुस्त्रिंशद्रात्रयो भवन्ति त्रयस्त्रिंशद्देवताः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो देवतानां प्रजापतेरेवर्द्धिमृध्नुवन्ति ॥ ३ ॥

पञ्चमः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुर्गौरायुः पञ्चाहस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः पशुकामा उपेयुः ॥ १ ॥ यदेताः पञ्चत्रिंशद्रात्रयो भवन्ति पाङ्क्ताः पशवः पशूनेवैताभिरेव—
रुन्धते ॥ २ ॥

षष्ठः खण्डः

अतिरात्रश्चत्वारोऽभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः पशुकामा उपेयुः ॥ १ ॥ एताभिर्वै देवा आदित्यमस्तभुवन्नादित्यलोकं जयन्ति य एता उपयन्ति ॥ २ ॥ बृहती वा एता रात्रयः स्वाराज्यं छन्दसां बृहती यो वै पशूनां भूमानं गच्छति स स्वाराज्यं गच्छति प्र स्वाराज्यमाप्नुवन्ति य एता उपयन्ति ॥ ३ ॥

सप्तमः खण्डः

एता एव समहाव्रताः ॥ १ ॥ एताभिर्वै प्रजापतिरुभौ कामाववा—
रुन्धानं व्रतं पशवो बृहत्युभावेवैताभिः कामाववरुन्धते ॥ २ ॥

अष्टमः खण्डः

अतिरात्रो गौश्चायुश्च द्वे अहनी चत्वारोऽभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः पशुकामा उपेयुः ॥ १ ॥ यदेता अष्टात्रिंशद्रात्रयो भवन्त्यष्टाशफाः पशवः शफश एवैताभिः पशूनवरुन्धते ॥ २ ॥

नवमः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गोरायुस्तत्र्यहश्चत्वारोऽभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ एताभिर्वै प्रजापतिरनन्ताश्—
श्रियमजयदनन्ता वा एता या एकया न चत्वारिंशन्नेति वै वाचोऽनन्तम् ॥ २ ॥ यदेता एकया न चत्वारिंशद्रात्रयो भवन्त्यनन्तामेवैताभिः श्रियं जयन्ति ॥ ३ ॥

दशमः खण्डः

एता एव समहाव्रताः ॥ १ ॥ सर्वा वा एता विराजो दशिनी प्रथमा विशिनी द्वितीया त्रिंशिनी तृतीयैषा वै परमा विराट्

यच्चत्वारिंशद्रात्रयः पङ्क्तिर्वै परमा विराट् ॥ २ ॥ परमायामेव विराजि प्रतितिष्ठन्ति ॥ ३ ॥

एकादशः खण्डः

अतिरात्रस्त्रीणि त्रिवृन्त्यहान्यग्निष्टोममुखान्यतिरात्रो दश पञ्चदशा उक्थ्याः षोडशिमदशममहरतिरात्रो द्वादश सप्तदश उक्थ्या अतिरात्रो पृष्ठ्यः षडहोऽतिरात्रो द्वादशैकविंशा उक्थ्या अतिरात्रः ॥ १ ॥ प्रजापतिः प्रजा असृजत ता अविधृता असञ्ज्ञानाना अन्योन्यामादस्तेन प्रजापतिरशोचत्स एता अपश्यत्ततो वा इदं व्यावर्तत गावो गावोऽभवन्नश्वा अश्वाः पुरुषाः पुरुषामृगामृगाः ॥ २ ॥ वि पाप्मना वर्तन्ते य एता उपयन्ति ॥ ३ ॥ यदतिरात्रा अन्तरा विधृत्यै तस्मान्नेतर इतरस्मिन्रेतो दधाति ॥ ४ ॥ यत् पृष्ठ्यः स्तोमाः सऽसृष्टास्तस्मादजावयः पशूनाऽसह चरन्ति तस्मादुगर्दभो वडवायाश्रेतो दधाति ॥ ५ ॥ अपशव्यं वा एतत्सत्रं यदच्छन्दोमं यत्सन्धिषामसु छन्दाऽस्युपयन्ति तेन छन्दोमवत्यस्तेन पशव्याः ॥ ६ ॥ गायत्रीषु जराबोधीयमुष्णिक्षु श्रुध्यमनुष्टुप्सु नानदं बृहतीषु रथन्तरं पङ्क्तिषु रायोवाजीयं त्रिष्टुप्स्वौशनं जगतीषु कावम् ॥ ७ ॥ ऊर्ध्वानि छन्दाऽस्युपयन्त्यनपञ्चशाय ॥ ८ ॥ प्राणो वै स्वरोयत् स्वरावन्ततो भवतस्तस्मात् द्वावन्ततः प्राणौ ॥ ९ ॥

द्वादशः खण्डः

अतिरात्रौ द्वावभिप्लवौ षडहौ गौश्चायुश्चातिरात्रौ द्वावभिप्लवौ षडहावभिजिच्च विश्वजिच्चातिरात्रावेकोऽभिप्लवः षडहः सर्वस्तोमश्च नव सप्तदशश्चातिरात्रो द्वादशाहस्य दशाहानि महाव्रतश्चाति— रात्रश्च ॥ १ ॥ आदित्यानां यमातिरात्राः ॥ २ ॥

यमेवैषाश्श्रीर्भवति य एता उपयन्ति ॥ ३ ॥ एताभिर्वा आदित्या
 द्वन्द्वमार्घुवन्मित्रश्चवरुणश्च घाता चार्य्यमा चाश्शश्च भगश्चेन्द्रश्च
 विवस्वाश्चैतासामेव देवतानामृद्धिमृध्नुवन्ति य एता उपयन्ति ॥ ४ ॥
 तदभ्यनूक्ता ॥ ५ ॥ अष्टौ पुत्रासो अदितेर्य्ये जातास्तन्वं परि
 देवाऽउपप्रैत् सप्तभिः परामार्तण्डमास्यदिति । ॥ ६ ॥ आदित्या
 अस्मिंल्लोक ऋद्धा आदित्या अमुष्मिन्नुभयोरनयोर्ल्लोकयोर्ऋध्नुवन्ति
 देवलोके च मनुष्यलोके च य एता उपयन्ति ॥ ७ ॥

त्रयोदशः खण्डः

अतिरात्रश्चत्वारोऽभिप्लवाः षडहाः सर्व्वस्तोमोऽतिरात्रो
 द्वावभिप्लवौ षडहौ द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ प्रजापतिः
 प्रजा असृजत सरूक्षोऽभवत्तत्सरूक्षं नाजानन् स आचाङ्क्ताभि-
 चाङ्क्त । ॥ २ ॥ य आत्मानं नेव जानीरश्स्त एता उपेयुर्य्यदा
 चाञ्जतेऽभिचाञ्जते शुभमेवात्मन्दधते जानन्त्येनान् ॥ ३ ॥ गौगुलवेन
 प्रातःसवने सौगन्धिकेन माध्यन्दिने सवने पैतुदारवेण
 तृतीयसवने ॥ ४ ॥ अग्निर्वै देवानाश्चैत्रमुपैष्यञ्छरीरमधूनुत तस्य
 यन्माँस मासीत्तद्गुग्गुल्वभवद्यत्स्नाव तत्सुगन्धि तेजनं यदस्थि तत्
 पीतुदार्वेतानि वै देवसुरभीणि देवसुरभिभिरेव तदभ्यञ्जते ॥ ५ ॥

चतुर्दशः खण्डः

अतिरात्रश्चतुर्विंशं प्रायणीयमहस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहा
 अभिजित्त्रयः स्वरसामानोदिवाकीर्त्यमहस्त्रयः स्वरसामानो
 विश्वजिदेकोऽभिप्लवः षडह आयुश्च गौश्च द्वे अहनी द्वादशाहस्य
 दशाहानि महाव्रतं चातिरात्रश्च संवत्सरसम्मिता यावती
 संवत्सरस्यर्द्धिस्तावत्येतासामृद्धिः ॥ १ ॥

तदाहुर्द्यच्चतुर्विंशमहः प्रायणीयं कुर्युः संवत्सरमारभ्य न
समापयेयुरिति त्रिवृदेव कार्यं प्राणावै त्रिवृत् प्राणानेवोपयन्ति ॥ २ ॥
अथो खल्वाहुश्चतुर्विंशमेव कार्यं समृध्यै ॥ ३ ॥ अथैते स्वरसामानः
शिरो वै दिवाकीर्त्यं प्राणाः स्वरसामानो यदिवाकीर्त्यमभितः
स्वरसामानो भवन्ति शिरस्येव तत् प्राणा धीयन्ते ॥ ४ ॥ अथ
यावन्त्यौ प्राणौ तौ विश्वजिदभिजितावथैते गो आयुषी मिथुनौ
स्तोमावुपयन्ति प्रजात्यै ॥ ५ ॥ अथैतानि द्वादशाहस्य दशाहानि
वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति प्रजननाय ॥ ६ ॥ अथैतद्व्रतमन्नं वै व्रतं
न वा अन्यत्र मुखादन्नन्धिनोति यदुपरिष्ठाद्व्रतमुपयन्ति मुखतएव
तदन्नाद्यं धीयते तस्मान्मुखे सदनं धिनोति ॥ ७ ॥ अथैतौ
प्रायणीयोदयनीयावतिरात्रौ येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ८ ॥

पञ्चदशः खण्डः

अतिरात्रो नव त्रिवृन्त्यहान्यग्निष्टोममुखः षडहोऽथ यानि
त्रीण्यहान्यग्निष्टोमावभित उक्थ्यं मध्यतो नवपञ्चदशाहान्यग्निष्टोममुखः
षडहोऽथ यानि त्रीण्यहान्यग्निष्टोमावभित उक्थ्यं मध्यतो नव
सप्तदशान्यहान्यग्निष्टोममुखः षडहोऽथ यानि त्रीण्यहा-
न्यग्निष्टोमावभित उक्थ्यं मध्यतो नवैकविंशान्यहान्यग्निष्टोममुखः
षडहोऽथ यानि त्रीण्यहान्यग्निष्टोमावभित उक्थ्यं मध्यतो द्वादशाहस्य
दशाहानि महाव्रतञ्चातिरात्रश्च ॥ १ ॥ एताभिर्वै सविता सर्व्वस्य
प्रसवमगच्छत् ॥ २ ॥ सर्व्वस्य प्रसवं गच्छन्ति य एता उपयन्ति ॥ ३ ॥
यद्गणशः स्तोमाबहव एव भवन्ति सह त्रिवृतः सह पञ्चदशाः सह
सप्तदशाः सहैकविंशाः सवितुर्वा एताः ककुभः ॥ ४ ॥ ककुभः
समानानां च प्रजानां च भवन्ति य एता उपयन्ति ॥ ५ ॥

षोडशः खण्डः

अतिरात्रश्चत्वारोऽभिप्लवाः षडहा महाव्रतं द्वावभिप्लवौ षडहौ
द्वादशाहस्य दशाहान्यतिरात्रः ॥ १ ॥ ऋतवो न प्रत्यतिष्ठन्त एताभिः
प्रत्यतिष्ठन् प्रतिष्ठाकामा उपेयुः ॥ २ ॥ प्रत्येव तिष्ठन्ति षड्वा
ऋतव ऋतुष्वेवैताभिः प्रतितिष्ठन्ति यत् क्लृप्तान् षडहानुपयन्ति
क्लृप्त्या एव ॥ ३ ॥ अथैतद्व्रतमन्नं वै व्रतं नवा अन्यत्र
मध्यादन्नन्धिनोति यद्व्रतं मध्यत उपयन्ति मध्यत एव
तदन्नाद्यन्धीयते तस्मान्मध्ये सदनन्धिनोति ॥ ४ ॥ यत् क्लृप्तौ
षडहावुपयन्ति क्लृप्त्या एव ॥ ५ ॥ अथैतानि द्वादशाहस्य दशाहानि
वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति प्रजननायाथैतौ प्रायणीयोदयनीयावतिरात्रौ
येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ६ ॥

सप्तदशः खण्डः

अतिरात्रः षडभिप्लवाः षडहा द्वादशाहस्य दशाहानि महाव्रतं
चातिरात्रश्च ॥ १ ॥ एताभिर्वा इन्द्राग्नी अत्यन्यादेवता
अभवतामत्यन्याः प्रजा भवन्ति य एता उपयन्ति ॥ २ ॥ इन्द्राग्नी
वै देवानामोजिष्ठा भवन्ति य एता उपयन्ति ॥ ३ ॥ यत् क्लृप्तान्
षडहानुपयन्ति क्लृप्त्या एवाथैतानि द्वादशाहस्य दशाहानि
वाचमविच्छिन्नामुपयन्ति प्रजननायाथैतद्व्रतमथैतौ प्रायणीयोदय-
नीयावतिरात्रौ येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ४ ॥

अष्टादशः खण्डः

अतिरात्रश्चतुर्विंशं प्रायणीयमहस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहाः पृष्ठयः
षडहोऽभिजित् त्रयः स्वरसामानो दिवाकीर्त्यमहस्त्रयः स्वरसामानो
विश्वजित्पृष्ठयः षडहस्त्रयस्त्रिंशारम्भण एकोभिप्लवः षडहआयुश्च

गौश्च द्वे अहनी द्वादशाहस्य दशाहानि महाव्रतञ्चातिरात्रश्च
तदेतदेकषष्टिरात्रं दैवानां व्रात्यानाम् ॥ १ ॥ दैवा वै व्रात्याः सत्रमासत
बुधेन स्थपतिना ते ह वा अनिर्याच्य वरुणश्चराजानं देवयजनं
दिदीक्षुस्तान् ह वा वरुणोराजानुव्याजहारान्तरेमि वो यज्ञियान्द्रा-
गधेयान्न देवयानं पन्थानं प्रज्ञास्यथेति तस्मात्तेभ्यो न हविर्गृह्णन्ति
न ग्रहम् ॥ २ ॥ अथ ह वै तर्हि नौषधीषु पय आसीन्न क्षीरे
सर्पिर्न मांसे न मेदो न त्वचि लोमानि न वनस्पतिषु पलाशानि
तद्यत एतदेकषष्टिरात्रं दैवाव्रात्या उपायस्ततो वै तानि तान्येतैर्वीर्यैः
समसृज्यन्त तेजस्वन्त्येवासन् पयस्वन्ति ॥ ३ ॥ तदेष
शलोकोऽभ्यनूच्यत ॥ ४ ॥ किमकर्तेति यत्पुत्रान् मुहुर्दैवाऽपृच्छत
महीबुधस्यासीदीक्षा स क्षीरे सर्पिराहरत् ॥ ५ ॥ महीं दीक्षां सौमायनो-
बुधो यदुदयच्छदनन्दत्सर्वमाप्नोन्मन्मांसे मेदोऽघा इति ॥ ६ ॥ दरिद्रा
आसन् पशवः कृशाः सन्तोव्यवस्थकाः सौमायनस्य
दीक्षायाऽसममृज्यन्तमेदसेति ॥ ७ ॥ तद्य एतदेकषष्टिरात्रमुपेयुस्ते
देवयजनमध्यवसाय गार्हपत्यआहुतिं जुहुयुर्देव वरुण देवयजनं नो
देहि स्वाहेति ते दत्ते देवयजनेन यजन्ते ॥ ८ ॥ ते सर्वामृद्धिमा-
ध्वुवन् सर्वामृद्धिमृध्नुवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ९ ॥

एकोनविंशः खण्डः

अतिरात्रो ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहश्चतुर्दशाभिप्लवाः षडहा
द्वादशाहस्य दशाहानि महाव्रतञ्चातिरात्रश्च ॥ १ ॥ देवा वै
मृत्योरविभयुस्ते प्रजापतिमुपाधावस्तेभ्य एतेन शतरात्रेणामृतत्वं
प्रायच्छदेतद्वाव मनुष्यस्यामृतत्वं यत् सर्वमायुरेति वसीयान्
भवति सर्वमायुर्यन्ति वसीयांसो भवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ २ ॥
अभिप्रयायमभिषुण्वन्त्यभिक्रान्त्यै समानत्राभिषुण्वन्ति
प्रतिष्ठित्यै ॥ ३ ॥

विंशःखण्डः

अतिरात्रश्चतुर्विंशं प्रायणीयमहश्चत्वारोऽभिप्लवाः षडहाः पृष्ठ्यः
 षडहः स मासः स द्वितीयः स तृतीयः स चतुर्थः स
 पंचमस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहाः पृष्ठ्यः षडहोऽभिजित् त्रयः स्वरसामानो
 दिवाकीर्त्यमहस्त्रयः स्वरसामानो विश्वजित् पृष्ठ्यः षडहस्त्रय
 स्त्रिंशारम्भणस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहाः पृष्ठ्यः षडहस्त्रयस्त्रिं—
 शारम्भणश्चत्वारोऽभिप्लवाः षडहाः स मासः स द्वितीयः स तृतीयः
 स चतुर्थस्त्रयोऽभिप्लवाः षडहा आयुश्च गौश्च द्वे अहनी द्वादशाहस्य
 दशाहानि महाव्रतश्चातिरात्रश्च ॥ १ ॥ संवत्सर ब्राह्मणं ब्राह्मणम् ॥ २ ॥

॥ इति चतुर्विंशोऽध्यायः ॥



पञ्चविंशोऽध्यायः

प्रथमः खण्डः

अतिरात्रश्चतुर्विंशं प्रायणीयमहर्द्रौ त्रिवृत्पञ्चदशौ षडहौ पृष्ठ्यः
षडहौ द्वौ त्रिवृत्पञ्चदशौ षडहौ स मासः स द्वितीयः स तृतीयः
स चतुर्थः स पञ्चमस्त्रयस्त्रिवृत्पञ्चदशाः षडहाः पृष्ठ्यः
षडहस्त्रिवृद्बृहस्पतिस्तोमस्त्रयः स्वरसामानोदिवाकीर्त्यमहस्त्रयः
स्वरसामानः पञ्चदश इन्द्रस्तोम उक्थ्यः पृष्ठ्यः
षडहस्त्रयस्त्रिंशारम्भण एकः पञ्चदशस्त्रिवृत् षडहो, द्वादशाहस्य
दशाहानि व्यूढा अग्निष्टोमास्त्रिवृत् उद्भिच्च बलभिच्च द्वे अहनी
द्वौ पञ्चदशस्त्रिवृत्तौ षडहौ पृष्ठ्यः षडहौ द्वौ पञ्चदशस्त्रिवृत्तौ
षडहौ स मासः स द्वितीयः स तृतीयः स चतुर्थः पञ्चदशस्त्रिवृत्षडहः
पृष्ठ्यः षडहः पञ्चदशस्त्रिवृत्षडहोगौश्चायुश्च द्वे अहनीच्छन्दोम—
दशाहोऽष्टाचत्वारिंशं प्रथममहरथचतुश्चत्वारिंशं चत्वारिंशं
षट्त्रिंशं द्वात्रिंशं त्रिंशं द्वे अष्टाविंशो पञ्चविंशं
चतुर्विंशम्महाव्रतश्चातिरात्रश्च ॥ १ ॥ आदित्यानां मध्ये पृष्ठ्यम् ॥ २ ॥
मध्ये पृष्ठेन वा आदित्याः स्वर्गं लोकमाक्रमन्त यन्मध्ये पृष्ठान्युपयन्ति
स्वर्गस्य लोकस्याक्रान्त्यै ॥ ३ ॥ अन्नं वै पृष्ठान्यन्नमेव तन्मध्य—
तोधीयते तस्मान्मध्ये सदन्नं धिनोति ॥ ४ ॥ पशवः पृष्ठानि पशुष्वेव
प्रतितिष्ठन्ति ॥ ५ ॥ चक्रे वा एते साकं वृतीयत् त्रिवृत् पञ्चदशौ
स्तोमौ यं कामं कामयन्ते तमेतेनाभ्यश्नुवते यत्र यत्र हि चक्रीवता
कामयते तत्तदभ्यश्नुते ॥ ६ ॥ अथैष त्रिवृद्बृहस्पतिस्तोम एतेन वै
बृहस्पतिर्देवानां पुरोधामगच्छत् पुरोधाकामानुपेयुर्गच्छन्ति पुरोधां
पुर एतान्दधते ॥ ७ ॥

अथैते स्वरसामानः शिरोवै दिवाकीर्त्य प्राणाः
 स्वरसामानोयद्विवाकीर्त्यमभितः स्वरसामानो भवन्ति शिरस्येव
 तत्प्राणाधीयन्ते ॥ ८ ॥ अथैष पञ्चदश इन्द्रस्तोम उक्थ्य एतेन वा
 इन्द्रोऽत्यन्यादेवता अभवदत्यन्याः प्रजाभवन्ति य एत दुपयन्ति ॥ ९ ॥
 अथैतानि द्वादशाहस्य दशाहानि व्यूढा अग्निष्टोमास्त्रिवृतो
 मध्यतः पाप्मनो मुच्यन्त एष वाव देवतल्पो देवतल्पमेव तदारोहन्ति
 तल्प्या भवन्ति प्रवसीयसस्तल्पमाप्नुवन्ति ॥ १० ॥ अथैता
 वुद्धिद्वलभिदावेताभ्यां वै बृहस्पतिर्देवेभ्यः पशूनुदसृजत्पशूने-
 वैताभ्यामुत्सृजन्ते ॥ ११ ॥ अथैते गो आयुषी मिथुनौ स्तोमावुपयन्ति
 प्रजात्यै ॥ १२ ॥ अथैष छन्दोमदशाहश्छन्दसां दोहोऽर्वाञ्चिच्छन्दाश्-
 स्युपयन्ति तस्मादर्वाञ्चोभुञ्जन्तः पशव उपतिष्ठन्ते ॥ १३ ॥
 अथैतद्वृतमन्नं वै व्रतन्नं वा अन्यत्र मुखादन्नन्धिनोति
 यदुपरिष्ठाद्व्रतमुपयन्ति मुखत एव तदन्नाद्यन्धीयते तस्मान्मुखे
 सदनन्धिनोति ॥ १४ ॥ अथैतौ प्रायणीयोदयनीयावतिरात्रौ येनैव
 प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ १५ ॥

द्वितीयः खण्डः

अतिरात्रश्चतुर्विंशं प्रायणीयमहः पृष्ठ्यः षडहश्चत्वारस्त्रि-
 वृतोऽभिप्लवाः षडहाः स मासः स द्वितीयः स तृतीयः स चतुर्थः
 स पञ्चमस्त्रयस्त्रिवृतोऽभिप्लवाः षडहाः पृष्ठ्यः षडहस्त्रिवृद्बृहस्पति-
 स्तोमस्त्रयः स्वरसामानोद्विवाकीर्त्यमहस्त्रयः स्वरसामानः पञ्चदश
 इन्द्रस्तोम उक्थ्यः पृष्ठ्यः षडहस्त्रयस्त्रिंशारम्भण एकस्त्रिवृदभिप्लवः
 षडहो द्वादशाहस्य दशाहानि व्यूढा अग्निष्टोमास्त्रिवृत उद्भिच्च
 बलभिच्च द्वे अहनी द्वौ चत्वारस्त्रिवृतोऽभिप्लवाः षडहाः पृष्ठ्यः
 षडहः स मासः स द्वितीयः स तृतीयः स चतुर्थो द्वौ

त्रिवृतावभिप्लवौ षडहौ पृष्ठ्यः षडह आयुश्च गौश्च द्वे अहनी
छन्दोमदशाहश्चतुर्विंशं प्रथममहर्द्धे अष्टाविंशो त्रिंशं द्वात्रिंशं
षट्त्रिंशञ्चत्वारिंशञ्चतुश्चत्वारिंशमष्टाचत्वारिंशञ्चतुर्विंशम्महा—
व्रतञ्चातिरात्रश्चाङ्गिरसां पुरस्तात् पृष्ठ्यम् ॥ १ ॥ पुरस्तात्पृष्ठ्येन
वा अङ्गिरसः स्वर्गं लोकमाक्रमन्त यत्पुरस्तात्पृष्ठान्युपयन्ति स्वर्गस्य
लोकस्याक्रान्त्यै ॥ २ ॥ अन्नं वै पृष्ठान्यन्नमेव तन्मुखतो धीयते
तस्मान्मुखे सदनं धिनोति पशवः पृष्ठानि पशुष्वेव
प्रतितिष्ठन्ति ॥ ३ ॥ यदन्यच्चक्राभ्यांसाकं बृहद्भ्यां तत्समानमा—
छन्दोमदशाहात् ॥ ४ ॥ अथैष छन्दोमदशाहश्छन्दसां दोह
ऊर्ध्वानि छन्दांस्युपयन्त्यनपभ्रंशा यैष वाव देवयानः पन्थाः प्रदेवयानं
पन्थानमाप्नुवन्ति य एतदुपयन्त्यथैतद्व्रतम् ॥ ५ ॥ अथैतौ
प्रायणीयोदयनीयावतिरात्रौ येनैव प्राणेन प्रयन्ति तमभ्युद्यन्ति ॥ ६ ॥

तृतीयः खण्डः

अतिरात्रस्त्रिवृता मासं पञ्चदशेन मासस्सप्तदशेन
मासमेकविंशेन मासं त्रिणवेन मासं त्रयस्त्रिंशेन मासम्महाव्रतं
त्रयस्त्रिंशेन मासं त्रिणवेन मासमेकविंशेन मासस्सप्तदशेन मासं
पञ्चदशेन मासं त्रिवृता मास मतिरात्रः ॥ १ ॥ ऋतवो न प्रत्यतिष्ठन्ति
एतेन प्रत्यतिष्ठन् प्रतिष्ठाकामा उपेयुः प्रत्येव तिष्ठन्ति षड्वा
ऋतव ऋतुष्वेवैतेन प्रतितिष्ठन्ति ॥ २ ॥ यद्व्रतं मध्यत उपयन्ति
मध्यत एव तदन्नाद्यं धीयते तस्मान्मध्ये सदन्नन्धिनोति ॥ ३ ॥ पक्षि-
वा एतत्सत्रायणं यं कामं कामयन्ते तमेतेनाभ्यश्नुवते यत्र यत्र हि
पक्षी कामयते तत्तदभ्यश्नुते ॥ ४ ॥ त्रिवृता प्रयन्ति त्रिवृतोद्यन्ति
प्राणा वै त्रिवृत् स्तोमानां प्राणैरेव प्रयन्ति प्राणेषु प्रतितिष्ठन्ति ॥ ५ ॥

एतद्वै दृतिवातवन्तौ खाण्डव उपेतोविषुवति वातवानुत्तिष्ठति
समापयति दृतिस्तस्मात्तनीयाऽसोवातवता भूयाऽशोदार्तेयाः ॥ ६ ॥

चतुर्थः खण्डः

मासं दीक्षिता भवन्ति ते मासि सोमं क्रीणन्ति तेषां द्वादशोपसद
उपसद्भिश्चरित्वा सोममुपनह्य मासमग्निहोत्रं जुहति मासं
दर्शपूर्णमासाभ्यां यजन्ते मासं वैश्वदेवेन मासं वरुण—
प्रधासैर्मासऽसाकमेधैर्मासऽशुनाशीर्य्येण त्रिवृता मासऽपञ्चदशेन
मासऽसप्तदशेन मासमेकविंशेन मासं त्रिणवेन
मासमष्टादशस्त्रयस्त्रिंशान्यहानि द्वादशाहस्य दशाहानि
महाव्रतञ्चातिरात्रश्च ॥ १ ॥ अग्निहोत्रं दशहोता दर्शपूर्णमासौ चतुर्होता
चातुर्मास्यानि पञ्चहोता साम्योऽध्वरः सप्तहोता ॥ २ ॥ एते वाव
सर्वेण यज्ञेन यजन्ते य एतदुपयन्ति सर्वे एव भवन्ति ॥ ३ ॥ ते
सर्वे कुण्डपायिनोऽत्सरुकैश्चमसैर्भक्षयन्ति ॥ ४ ॥ यो होता
सोऽध्वर्युः स पीता य उद्गाता स नेष्टा सोऽच्छावाकोयो मैत्रावरुणः
स ब्रह्मा स प्रतिहर्ता यः प्रस्तोता स ब्राह्मणाच्छःसी स ग्रावस्तुघ्नः
प्रतिप्रस्थाता सोऽग्नीत्स उन्नेता गृहपतिर्गृहपतिः सुब्रह्मण्यः
सुब्रह्मण्यः ॥ ५ ॥

पञ्चमः खण्डः

संवत्सरं दीक्षिता भवन्ति संवत्सरमुपसद्भिश्चरन्ति संवत्सरं
प्रसुतो भवति ॥ १ ॥ तत्संवत्सरं दीक्षिता भवन्ति तप एव तेन
तप्यन्ते यत्संवत्सरमुपसद्भिश्चरन्ति पुनत एव तेन यत्संवत्सरं
प्रसुतो भवति देवलोकमेव तेनापियन्ति ॥ २ ॥ एतेन वै तपश्चितो
देवाः सर्वा मृद्धिमाध्वन् सर्वा मृद्धिमृध्नुवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ३ ॥

षष्ठः खण्डः

त्रयस्त्रिवृतः संवत्सरास्त्रयः पञ्चदशास्त्रयः सप्तदशास्त्रय
एकविंशः प्रजापतेर्द्वादशसंवत्सरम् ॥१॥ एतेन वै प्रजापतिः
सर्वस्य प्रसवमगच्छत्सर्वस्य प्रसवं गच्छन्ति य एतदुपयन्ति ॥२॥
यत् त्रयस्त्रिवृतः संवत्सरा भवन्ति तेजो ब्रह्मवर्चसं त्रिवृत्तेज एव
ब्रह्मवर्चसमवरुन्धते यत् त्रयः पञ्चदशा ओजो वीर्यं पञ्चदश
ओजएव वीर्यमवरुन्धते यत् त्रयः सप्तदशा अन्नं वै
सप्तदशोऽन्नाद्यमेवावरुन्धते यत् त्रय एकविंशः प्रतिष्ठा वा
एकविंशोऽन्तत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठन्ति ॥३॥ एतेन वै नैमिशीयाः
सर्वामृद्धिमार्ध्वन् सर्वामृद्धिमृध्वन्ति य एतदुपयन्ति ॥४॥ ते
ह सप्तदशेभ्य एवाध्युत्तस्थुस्त उ होचुर्योनः प्रजायामृध्यातै स
एतत्सत्रं समापयादिति तदेतत्समीप्सन्तो ब्राह्मणाः सत्रमासते ॥५॥

सप्तमः खण्डः

नव त्रिवृतः संवत्सरा नव पञ्चदशा नव सप्तदशा नवैकविंशः
शाक्त्यानां षष्टिंशत्संवत्सरम् ॥१॥ एतेन वै गौरीवितिः
शाक्त्यस्तरसपुरोडाशोयव्यावत्याः सर्वामृद्धिमार्ध्वन् सर्वामृद्धि—
मृध्वन्ति य एतदुपयन्ति ॥२॥ बृहती वा एतत्सत्रायणं स्वाराज्यं
छन्दसां बृहती प्रस्वाराज्यमाप्नुवन्ति य एतदुपयन्ति ॥३॥
तदेतच्छाक्त्यानां दशवीरमेषां दशवीरा जायन्ते य एतदुपयन्ति ॥४॥

अष्टमः खण्डः

पञ्चविंशतिस्त्रिवृतः संवत्सराः पञ्चविंशतिः पञ्चदशाः
पञ्चविंशतिः सप्तदशाः पञ्चविंशतिरेकविंशः साध्यानां—
शतसंवत्सरम् ॥१॥ साध्या वै नाम देवेभ्यो देवाः पूर्वं आसंस्त

एतत्सत्रायणमुपायश्स्तेनार्ध्वश्स्ते सगवः सपुरुषाः सर्व्वे एव सह
स्वर्गं लोकमायन्नेवं वाव ते सह स्वर्गलोकं यन्ति य
एतदुपयन्ति ॥ २ ॥ आयुर्व्वं एतत्सत्रायणश्शतायुः पुरुषोयावदेवा—
युस्तदवरुन्धते न ह्यत्यायुषश्सत्रमस्ति ॥ ३ ॥ तदभ्यनूक्ता तानीदहानि
बहुलान्यासन्त्या प्राचीनमुदिता सूर्य्यस्य यतः परिजार इवाचरन्त्युषा
ददृशे न पुनर्य्यतीवेति ॥ ४ ॥ ज्योतिष्टोमस्यायनेन यन्ति ज्योतिरेव
भवन्ति ॥ ५ ॥ एकविंशोऽन्ततः स्तोमानां भवति प्रतिष्ठा वा
एकविंशोऽन्तत एव यज्ञस्य प्रतितिष्ठन्ति ॥ ६ ॥

नवमः खण्डः

अतिरात्रः सहस्रमहान्यतिरात्रोऽग्नेः सहस्रसाव्यम् ॥ १ ॥ एतेन
वा अग्निः सर्व्वस्य प्रसवमगच्छत् सर्व्वस्य प्रसवं गच्छन्ति य
एतदुपयन्ति ॥ २ ॥ अग्नेर्वै सर्व्वमाद्यश्च सर्व्वमेषामाद्यं भवति य
एतदुपयन्ति ॥ ३ ॥ अथ यत् सहस्रसाव्यं भवति सहस्राक्षरा वै
परमा विराट् परमायामेव विराजि प्रतितिष्ठन्ति ॥ ४ ॥

दशमः खण्डः

सरस्वत्या विनशने दीक्षन्ते ॥ १ ॥ तेषां द्वादश दीक्षा
द्वादशोपसदः ॥ २ ॥ यदहरतिरात्रो भवति तदहर्व्वत्सानपा कुर्वन्ति
सश्च स्थितेऽतिरात्रे सान्नाय्येन यजन्ते ॥ ३ ॥ सान्नाय्येनेष्ट्वाध्वर्य्युः
शम्यां परास्यति सा यत्र निपतति तद्गार्हपत्यस्ततः षट्त्रिंशतं
प्रक्रमान् प्रक्रमति तदाहवनीयः ॥ ४ ॥ चक्रीवत् सदश्चक्रीवद्धविद्धानं
चक्रीवदाग्नीध्रमुलूखलबुध्नोयूपः प्रकृष्य उपोत्त एव नोपरवान्
खनन्ति ॥ ५ ॥ ते तमापूर्य्यमाणमामावास्ये नयन्ति ॥ ६ ॥ तेषां
पौर्णमास्यां गोष्टोमस्तोमो भवत्युक्थ्यो बृहत्सामा ॥ ७ ॥

संस्थिते गोष्ठोमे पौर्णमासं निर्व्वपन्ते ते तमपक्षीयमाणं
 पौर्णमासेन यन्ति तेषाममावास्यायामायुष्टोमः स्तोमो भवत्युक्थ्यो
 रथन्तरसामा ॥ ८ ॥ मित्रावरुणयोरनयनम् ॥ ९ ॥ एतेन वै
 मित्रावरुणाविमान् लोकानाजयतामहोरात्रौ वै मित्रावरुणावहर्भि—
 त्त्रोरात्रिर्व्वरुणोऽर्द्धमासौ वै मित्रावरुणौ य आपूर्य्यते स मित्रो
 योऽपक्षीयते स वरुणः स एष मित्रो वरुणोरेतः सिञ्चति ॥ १० ॥
 सरस्वत्या वै देवा आदित्यमस्तभ्नुवन् सा नायच्छत् साभ्यत्वीयत
 तस्मात् सा नुब्जिीमतीव तं बृहत्यास्तभ्नुवन् सायच्छत्तस्माद्बृहती
 छन्दसां वीर्य्यवत्तमादित्यं हि तयास्तभ्नुवन् ॥ ११ ॥ प्रतीपं यन्ति
 नहन्वीपमष्ट वै पूर्व्वेण पक्षसा यन्ति ॥ १२ ॥ तद्धि
 प्रत्येकाप्येति ॥ १३ ॥ दृषद्वत्येव ॥ १४ ॥ दृषद्वत्या अप्ययेऽपोनप्त्रीयं
 चरुं निरूप्याथातियन्ति ॥ १५ ॥ चतुश्चत्वारिंशदास्त्रीनानि सरस्वत्या
 विनशनात् प्लक्षः प्रास्रवणस्तावदितः स्वर्गोलोकः सरस्वती सम्मिते—
 नाध्वनाः स्वर्गलोकं यन्ति ॥ १६ ॥ एतेन वै नमी साप्यो वैदेही
 राजाऽञ्जसा स्वर्गं लोकमैदञ्जसागामेति तदञ्जस्कीयानामञ्ज—
 स्कीयत्वम् ॥ १७ ॥ स एतदवभृथमभ्यवैद्य एष उत्तरेणस्थलार्म्मः—
 हृदस्तद्धास्य शतं गावः सहस्रं सम्पेदुः ॥ १८ ॥ शते गोष्वृषभ—
 मप्यृजन्ति ता यदा सहस्रं सम्पद्यन्तेऽथोत्थानम् ॥ १९ ॥ यदा
 सर्व्वज्यानि जीयन्तेऽथोत्थानं यदा गृहपतिर्भ्रियतेऽथोत्थानम् ॥ २० ॥
 यदा प्लक्षं प्रास्रवणमागच्छन्त्योत्थानम् ॥ २१ ॥ प्लक्षं प्रास्रवण—
 मागम्याऽग्नये कामायेष्टिं निर्व्वपन्ते तस्यामक्षां च पुरुषीं च घेनुके
 दत्त्वा ॥ २२ ॥ कारपचवं प्रति यमुनामवभृथमभ्यवयन्ति ॥ २३ ॥

एकादशः खण्डः

अतिरात्रस्त्रिवृत्पञ्चदशमिन्द्राग्न्योरयनं गोआयुषी इन्द्रकुक्षी
 अतिरात्रः ॥ १ ॥

एतेन वा इन्द्राग्नी अत्यन्यादेवता अभवतामत्यन्याः प्रजा भवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ २ ॥ इन्द्राग्नी वै देवानामोजिष्ठा ओजिष्ठा भवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ३ ॥ अथ यत् त्रिवृत्पंचदशमिन्द्राग्न्योरयनं गोआयुषी इन्द्रकुक्षी भवतीसंव्याथाय ॥ ४ ॥

द्वादशः खण्डः

अतिरात्रोज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहो विश्वजिदभिजिताविन्द्रकुक्षी अतिरात्रः ॥ १ ॥ एतेन वार्य्यमैतं लोकमजयत् ॥ २ ॥ यमाहुर्य्यग्मः पन्था इत्येष वाव देवयानः पन्थाः ॥ ३ ॥ प्रदेवयानं पन्थानमाप्नुवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ४ ॥ तस्मादेषोऽरुणतम इव दिव उपदृशोऽरुणतम इव हि पन्थाः ॥ ५ ॥ अथ यत् ज्योतिर्गौरायुस्त्र्यहो विश्वदभिजिता—विन्द्रकुक्षी भवतोऽसंव्याथाय ॥ ६ ॥

त्रयोदशः खण्डः

संवत्सरं ब्राह्मणस्य गारक्षेत् संवत्सरं व्यर्णेनैतन्धवेऽग्नि—मिन्धीत् संवत्सरे परीणह्यग्नीनादधीत ॥ १ ॥ स दक्षिणेन तोरेण दृषद्वत्या आग्नेयेनाष्टाकपालेन शम्यापरासीयात् ॥ २ ॥ इन्द्रश्च रुशमा चाऽशं प्रास्येतां यतरो नौ पूर्वं भूमिं पर्य्येति स जयतीति भूमिमिन्द्रः पर्य्येत् कुरुक्षेत्रं रुशमा साब्रवीदजैषं त्वेत्यहमेवं त्वामजैषमितीन्द्रोऽब्रवीत्तौ देवेष्वपृच्छेतां ते देवा अब्रुवन्नेतावती वाव प्रजापतेर्व्वेदिर्यावत् कुरुक्षेत्रमिति तौ न व्यजयेताम् ॥ ३ ॥ स य आग्नेयेनाष्टाकपालेन दक्षिणेन तीरेण दृषद्वत्याः शम्यापरास्येति त्रिप्लक्षान् प्रति यमुनामवभृथमभ्यवैति तदेव मनुष्येभ्यस्तिरो भवति ॥ ४ ॥

चतुर्दशः खण्डः

आग्नेयोऽष्टाकपाल ऐन्द्र एकादशकपालो वैश्वदेवश्चरुः ॥१॥
 अदीक्षितः कृष्णाजिनं प्रतिमुञ्चते यददीक्षितः कृष्णाजिनं प्रतिमुञ्चते
 या मानुष्यृद्धिस्तां तेनर्धोति ॥२॥ अथ यत्तपस्तप्यते या दैवी
 तां तेन ॥३॥ यदाग्नेयोऽष्टाकपालो भवत्यग्निमुखा वै देवता
 मुखतएव तद्देवता ऋद्ध्यत्यथो प्रातः सवनमेवं तेनाप्नोत्यथ
 यदैन्द्र एकादशकपालो भवत्यैन्द्रं वै माध्यन्दिनः सवनं माध्यन्दिन—
 मेव सवनं तेनाप्नोत्यथ यद्वैश्वदेवश्चरुर्भवति वैश्वदेवं वै तृतीय
 सवनं तृतीयसवनमेव तेनाप्नोति ॥४॥ एतेन वै तुरोदेवमुनिः
 सर्वाभृद्धिमाध्नोत्सर्वाभृद्धिमृध्नोति य एतदुपैति ॥५॥

पञ्चदशः खण्डः

अतिरात्रावभितोऽग्निष्टोमा मध्ये सर्वो दशदशी संवत्सरो
 द्वादशो विषुवान् सर्पसामानि विषुवति क्रियन्ते ॥१॥ एतेन वै
 सर्पा एषु लोकेषु प्रत्यतिष्ठन्नेषु लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति य
 एतदुपयन्ति ॥२॥ जर्व्वरो गृहपतिर्धृतराष्ट्र ऐरावतो ब्रह्मा
 पृथुश्रवा दौरेश्रवस उद्गाता ग्लावश्चाजगावश्च प्रस्तोतृप्रतिहर्तारौ
 दत्तस्तापसोहोता शितिपृष्ठो मैत्रावरुणस्तक्षको वैशालेयो
 ब्राह्मणाच्छसी शिखानुशिखौ नेष्टापोतारावरुण आटोऽच्छावाक—
 स्तिमिर्धोदौरेश्रुतोऽग्नीत् कौतस्तावध्वर्यु अरिमेजयश्च जनमेजयश्चाबुदो
 ग्रावस्तुदजिरः सुब्रह्मण्यश्च कपिशङ्गावुन्नेतारौ षण्डकुषण्डावभि—
 गरापगरो ॥३॥ एतेन वै सर्पा अपमृत्युमजयन्नपमृत्युं जयन्ति य
 एतदुपयन्ति तस्मात्ते हित्वा जीर्णां त्वचमतिसर्पन्त्यपहिते मृत्युमजयन्
 सर्पा वा आदित्या आदित्यानामिवैषां प्रकाशो भवति य
 एतदुपयन्ति ॥४॥

षोडशः खण्डः

गवामयनं प्रथमः संवत्सरोऽथादित्यानामथाङ्गिरसाम् ॥ १ ॥ एतेन वै गावः प्रजातिं भूमानमगच्छन्प्रजायन्ते बहवो भवन्ति य एतदुपयन्त्येतेन वा आदित्या एषु लोकेषु प्रत्यतिष्ठन्नेषु लोकेषु प्रतितिष्ठन्ति य एतदुपयन्त्येतेन वा अङ्गिरसः स्वर्गं लोकमायन् स्वर्गं लोकं यन्ति य एतदुपयन्ति ॥ २ ॥ परआह्णारस्त्रसदस्युः पौरुकुत्सोवीतहव्यः श्रायसः कक्षीवानौशिजस्त एतत्प्रजातिकामाः सत्रायणमुपायस्ते सहस्रसहस्रं पुत्रानपुष्यन्नेवं वाव ते सहस्रसहस्रं पुत्रान् पुष्यन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ३ ॥

सप्तदशः खण्डः

अतिरात्रः सहस्रं त्रिवृतः संवत्सरा अतिरात्रः प्रजापतेः सहस्रसंवत्सरम् ॥ १ ॥ एतेन वै प्रजापतिः सर्वस्य प्रसवमगच्छत्सर्वस्य प्रसवं गच्छन्ति य एतदुपयन्ति ॥ २ ॥ एतद्वै प्रजापतिर्जीव्यामूरुपैतेन जरामपाहतापजरां घ्नते य एतदुपयन्ति ॥ ३ ॥ तदेतत्प्रजापतेः सहस्रसंवत्सरमेतेन वै प्रजापतिः सर्वामृद्धिमाध्नोत् सर्वामृद्धिमृध्नवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ४ ॥

अष्टादशः खण्डः

पञ्चपञ्चाशतस्त्रिवृतः संवत्सराः पञ्चपञ्चाशतः पञ्चदशाः पञ्चपञ्चाशतः सप्तदशाः पञ्चपञ्चाशत एकविंशा विश्वसृजासहस्रसंवत्सरम् ॥ १ ॥ एतेन वै विश्वसृजइदं विश्वमसृजन्त यद्विश्वमसृजन्त तस्माद्विश्वसृजः ॥ २ ॥ विश्वमेनाननु प्रजायते य एतदुपयन्ति ॥ ३ ॥ तपो गृहपतिर्ब्रह्म ब्रह्मोरापत्यमृतमुद्राता भूतं प्रस्तोता भविष्यत्प्रतिहर्तृत्वं उपगातार आर्तवाः सदस्याः सत्यः—

होतर्त्तं मैत्रावरुण ओजो ब्राह्मणाच्छसीत्विषिश्चापचितिश्च नेष्टापीतारौ
यशोऽच्छावाकोऽग्निरेवाग्नीन्द्रगो ग्रावस्तुदूर्गुनेता वाक्सुब्रह्मण्यः
प्राणोऽध्वर्युरपानः प्रतिप्रस्थाता दिष्टिर्विशास्ताबलं ध्रुवगोपमाशाह—
विष्येव्यहोरात्राविध्मवाहौ मृत्युः शमितैतेदीक्षन्ते ॥ ४ ॥ तदेषश्लोकी
'विश्वसृजः प्रथमे सत्रमासत सहस्रसमं प्रस्तुतेन यन्तस्ते ह जज्ञे
भुवनस्य गोपा हिरण्मयः शकुनो ब्रह्मनामे'ति ॥ ५ ॥ ब्रह्मणः
सलोकताऽसार्ष्टिताऽसायुज्यं गच्छन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ६ ॥ तदेत
द्विश्वसृजाऽसहस्रसंवत्सरमेतेन वै विश्वसृजः सर्व्वामृद्धि—
मार्ध्ववन्त्सर्व्वामृद्धिमृध्नुवन्ति य एतदुपयन्ति ॥ ७ ॥

॥ इति पञ्चविंशोऽध्यायः ॥

॥ इति ताण्ड्यमहाब्राह्मणम् समाप्तम् ॥



॥ श्रीः॥

ॐ नमः सामवेदाय

अष्टब्राह्मणेषु पञ्चमम्

देवताध्यायब्राह्मणम्

प्रथमः खण्डः

अग्निरिन्द्रः प्रजापतिः सोमो वरुणस्त्वष्टाङ्गिरसः पूषा
सरस्वतीन्द्राग्नी ॥१॥ इडानिधनानि पदनिधनानीकारणिधनानीत्याग्ने—
यानि ॥२॥ सर्वाणि निधनवन्त्यैन्द्राण्यन्यान्यादिष्टेभ्यः ॥३॥
सर्वाणि स्वाराणि प्राजापत्यानि ॥४॥ यथा वामदेव्यम् ॥५॥
ऋक्सामानि सौमानि ॥६॥ यथौशनकावे ॥७॥ वाङ्निधनानि
वारुणानि ॥८॥ यथा यज्ञायज्ञीयम् ॥९॥ अक्षरानुस्वराणि
त्वष्ट्राणि ॥१०॥ यथा वारवन्तीयञ्चाभिवर्तश्च ॥११॥
स्वःपृष्ठान्याङ्गिरसानि ॥१२॥ स्वर्णिधनानि पौषाणि ॥१३॥ कया
नश्चित्र आ भुवद् आ पवस्व सहस्रिणमिति वाङ्निधने
सारस्वते ॥१४॥ य आनयत्परावत इत्यैन्द्राग्ने ॥१५॥ सुतश्चरयिष्ठाः
सहो रयिष्ठा इत्याग्नेयैन्द्रे ॥१६॥ वसवो रुद्रा आदित्या
विश्वेदेवाः ॥१७॥ वसूनां स्वाराणि रुद्राणां निधनवन्ति
आदित्यानामैडानि विश्वेषां देवानां वाङ्निधनानि ॥१८॥ यथा
भूयस्त्वेन प्रदेशा वर्तन्त इत्यन्तराणि ॥१९॥ अथान्तरतराणि
सर्वाण्याग्नेयानि सर्वाण्यैन्द्राणि सर्वाणि स्वाराणि प्राजापत्यानि
सामानीत्यन्तरतराणि ॥२०॥ अथान्तरतमानि सर्वाणि ब्राह्मणि
सामानीति सर्वान्तरतमानि ॥२१॥ अथोपनिषत् ॥२२॥

ऋग्वै माता साम पिता प्रजापतिः स्वरः ॥ २३ ॥ तद्यान्युक्त
आख्यायन्ते मातृतस्तान्याख्यायन्ते अथ यानि सामत आख्यायन्ते
पितृतस्तान्याख्यायन्ते अथ यानि स्वरत आख्यायन्ते प्रजापतित—
स्तान्याख्यायन्ते ॥ २४ ॥ स वा एष उद्गीथो बन्धुमान् बन्धु—
मत्यः ॥ २५ ॥ बन्धुमान् बन्धुमत्यो भवति जानन्ति ह वा एनं
पितृतश्च मातृतश्च य एवं वेद ॥ २६ ॥

द्वितीयः खण्डः

अथातश्छन्दसां वर्णाः ॥ १ ॥ शुक्ला गायत्र्यो रूपेण सारङ्गं
रूपमुष्णिहाम्, पिशङ्गं ककुभां रूपं कृष्णमानुष्टुभं ततः, रोहितं
बृहतीनां तु नीलं पाङ्क्तं ततः पुनः, सुवर्णं त्रिष्टुभां रूपं गौरं
जागतमुच्यते ॥ २ ॥ अतोयान्यन्यानिच्छन्दाश्सि श्यावं तेषां ततः
पुनः नकुलं त्वेकपदानां द्विपदा बभ्रुरुच्यते, सारङ्गशुक्लकृष्णरूपाणि
ऋग्यजुःसामब्राह्मणान्वितानि ॥ ३ ॥ ये यज्ञेषु प्रयोक्तव्यास्तेषां
दैवतमुच्यते ॥ ४ ॥ विराजः पृश्नयो विद्यात् ॥ ५ ॥ दैवतं तत
उत्तरम् ॥ ६ ॥ अग्नेर्गायत्र्यभवत्सयुग्वोष्णिहया सविता
संबभूवानुष्टुभासोमउक्थैर्महस्वान् बृहस्पतेर्बृहती वाचमावत् ॥ ७ ॥
विराणिमत्रावरुणयोरभिश्चीरिन्द्रस्य त्रिष्टुबिह भागोऽहः विश्वान् देवान्
जगत्याविवेश तेन चाकलृप्तऋषयोमनुष्याः ॥ ८ ॥ प्राजापत्या
अतिच्छन्दसो विच्छन्दसो वायुदेवताः, पुरुषो द्विपदानां दैवतं
ब्राह्मण्य एकपदाः स्मृताः ॥ ९ ॥ वासवी पङ्क्तिः ॥ १० ॥ सतुलं
मन्येतैतद्दैवत्या एवैतेषु छन्दः स्वृचो भवन्तीति ॥ ११ ॥
छन्दसामुहैतद्दैवतम् ॥ १२ ॥

तृतीयः खण्डः

अथातो निर्वचनम् ॥ १ ॥ गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः ॥ २ ॥

गायतो मुखादुदपतदिति हि ब्राह्मणम् ॥ ३ ॥ उष्णिगुत्सनात्
 स्निह्यतेर्वा कान्तिकर्मणोऽपि वोष्णीषिणीत्यौपमिकम् ॥ ४ ॥ ककुप्
 ककुदरूपिणीत्यौपमिकम् ॥ ५ ॥ ककुप् च कुब्जश्च
 कुजतेर्वोब्जतेर्वा ॥ ६ ॥ अनुष्टुबनुस्तोभनात् ॥ ७ ॥ अन्वस्तौदिति
 हि ब्राह्मणम् ॥ ८ ॥ पिपीलिका पेलतेर्गतिकर्मणः ॥ ९ ॥ पिपीलिक-
 मध्येत्यौपमिकम् ॥ १० ॥ बृहती बृहतेर्वृद्धिकर्मणः ॥ ११ ॥
 विराड्विरमणाद्विराजनाद्विराधनाद्वा ॥ १२ ॥ पङ्क्तिः पञ्चिनी
 पञ्चपदा ॥ १३ ॥ त्रिष्टुभ् स्तोभत्युत्तरपदा ॥ १४ ॥ का तु
 त्रितास्यात्तीर्णतमं छन्दो भवतीति ॥ १५ ॥ त्रिवृद्धजस्तस्य
 स्तोभिनीवेत्यौपमिकम् ॥ १६ ॥ जगती गततमं छन्दो जज्जगतिर्भवति
 क्षिप्रगतिर्जज्जलाकुर्वन्नसृजतेति हि ब्राह्मणम् ॥ १७ ॥
 अतिच्छन्दाश्छदेरर्थे ॥ १८ ॥ छन्दांसि छन्दयतीति वा ॥ १९ ॥
 निचृन्निपूर्वस्यचृतेः भरणान्दुरिगुच्यते ॥ २० ॥ अथातो गायत्रमाग्नेयं
 भक्त्या भवति, देवानां वर्षीणां वा परमेष्ठिनो वा प्राजापत्यस्य
 साम ॥ २१ ॥ सावित्री गेयं यत्रागीतम् ॥ २२ ॥

तत्सवितुर्वरेणियोम् । भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोऽ१२१२ ।

हिम् आऽ२ । दायो । आऽ३४५ ॥

ऋषीणां विषयज्ञो यः स शरीराद्विमुच्यते ।

अतीत्य तमसः पारं स्वर्गे लोके महीयते ॥

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्ब्राह्मं यदुच्यते,

नाकस्य पृष्ठे तं कालं दिवि सूर्य इव रोचते ।

ततः कृतयुगस्यादौ ब्रह्मपूतो महायशाः,

सर्वज्ञो धृतिमानृषिः पुनराजायते स्मरन्निति स्मरन्निति ॥ २३ ॥

चतुर्थः खण्डः

अथ सावित्र्यङ्गानि व्याख्यास्यामः। शिरो ब्रह्मा, ललाटं द्यौः,
चन्द्रादित्यौ चक्षूषी, मुखमग्निः, जिह्वा सरस्वती, त्वष्टा ग्रीवा,
वसवश्च रुद्राश्च बाहू, उरो वायुः, रोमाणि वा यवः, पृष्ठमिन्द्रः,
विष्णुर्नाभिः, प्रजापतिर्जघनम्, ऊरू मरुतो वेदाःपादौ, स्मितं
विद्युत्, शसितं वायु, अस्थीनि पर्वताः, समुद्रा वासांसि,
नक्षत्राण्यलंकारः, य एवं वेद। दुष्टतादुरूपयुक्तान्यूनाधिक्याच्च
सर्वस्मात् स्वस्ति देवऋषिभ्यश्च ब्रह्म सत्यं च पातु मामिति ब्रह्म
सत्यं च पातु मामिति।

॥ इति देवताध्यायब्राह्मणम् ॥



॥ श्रीः ॥

ॐ नमः सामवेदाय

अष्टब्राह्मणेषु षष्ठम्

छान्दोग्यमन्त्रब्राह्मणम्

प्रथमः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

अदितेऽनुमन्यस्व। अनुमतेऽनुमन्यस्व। सरस्वत्यनुमन्यस्व।
देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः
केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥१॥ काम वेद ते
नाम मदो नामासि समानयामुं सुरा ते अभवत्। परमत्र जन्माग्ने
तपसो निर्मितोऽसि स्वाहा॥२॥ इमं त उपस्थं मधुना संसृजामि
प्रजापतेर्मुखमेतद्वितीयम्। तेन पुंसोऽभि भवासि सर्वान वशान्
वशिन्यसि राज्ञी स्वाहा॥३॥ अग्निं क्रव्यादमकृण्वन् गुहानाः
स्त्रीणामुपस्थमृषयः पुराणाः। तेनाज्यमकृण्वन्स्त्रैश्चृङ्गं त्वाष्ट्रं त्वयि
तदधातु स्वाहा॥४॥ या अकृन्तन्नवयन् या अतन्वत याश्च देव्यो
अन्तानभितो ततन्थ। तास्त्वा देव्यो जरसा संव्ययन्त्वायुष्मतीदं
परिधत्स्व वासः॥५॥ परिधत्त धत्त वाससैनां शतायुषी कृणुत
दीर्घमायुः। शतञ्च जीव शरदः सुवर्चा वसूनि चार्ये विभृजासि
जीवन्॥६॥ सोमोऽददद्गन्धर्वाय गन्धर्वोऽदददग्रये। रथिं च
पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्॥७॥ प्र मे पतिर्या नः पन्थाः
कल्पताम्। शिवा अरिष्टा पतिलोकं गमेयम्॥८॥ प्रास्याः पतिर्या
नः पन्थाः कल्पताम्। शिवा अरिष्टा पतिलोकं गम्याः॥९॥

अग्निरेतु प्रथमो देवताभ्यः सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदयं राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयं स्त्री पौत्रमघं न रोदात् स्वाहा॥१०॥ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै जरदष्टिं कृणोतु। अशून्योपस्था जीवतामस्तु माता पौत्रमानन्दमभि विबुध्यतामियं स्वाहा॥११॥ द्यौस्ते पृष्ठं रक्षतु वायुरूरू अश्विनौ च स्तनन्धयांस्ते पुत्रान् सविताऽभिरक्षतु। आ वाससः परिधानाद्बृहस्पतिर्विश्वे देवा अभिरक्षन्तु पश्चात् स्वाहा॥१२॥ मा ते गृहेषु निशि घोष उत्थादन्यत्र त्वद्बुदत्यः संविशन्तु। मा त्वं रुदत्युर आ वधिष्ठा जीवपत्नी पतिलोके विराज पश्यन्ती प्रजां सुमनस्यमानाम् स्वाहा॥१३॥ अप्रजस्यं पौत्रमर्त्यं पाप्मानमुत वा अधम्। शीर्ष्णः स्रजमिवोन्मुच्य द्विषद्भ्यःप्रतिमुञ्चामि पाशम् स्वाहा॥१४॥ परेतु मृत्युरमृतं म अगाद् वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यत्र नो अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा॥१५॥

द्वितीयः खण्डः

इममश्मानमारोहाश्मेव त्वं स्थिरा भव। द्विषन्तमप बाधस्व मा च त्वं द्विषतामधः॥१॥ इयं नार्युपब्रूतेऽग्नौ लाजानावपन्ती। दीर्घायुरस्तु मे पतिः शतं वर्षाणि जीवतु। एधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा॥२॥ अर्यमणं नु देवं कन्या अग्निमयक्षत। स इमां देवो अर्यमा प्रेतो मुञ्चातु माऽमुतः स्वाहा॥३॥ पूषणं नु देवं कन्या अग्निमयक्षत। स इमां देवः पूषा प्रेतो मुञ्चातु माऽमुतः स्वाहा॥४॥ कन्यला पितृभ्यः पतिलोकं यतीयमप दीक्षामयष्ट। कन्या उत त्वया वयं धारा उदन्या इवाति गाहेमहि द्विषः॥५॥ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु॥६॥ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु॥७॥ त्रीणि व्रताय विष्णुस्त्वा नयतु॥८॥ चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु॥९॥

पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु॥१०॥ षड् रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा
 नयतु॥११॥ सप्त सप्तभ्यो होत्राभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु॥१२॥
 सखा सप्तपदी भव सख्यं ते गमेयम्। सख्यं ते मा योषाः सख्यं ते
 मायोष्ठ्याः॥१३॥ सुमङ्गलीरियं वधूरिमां समेत पश्यत।
 सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं विपरेतन॥१४॥ समञ्जन्तु विश्वे देवाः
 समापो हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सं धाता समु देष्ट्री दधातु
 नौ॥१५॥ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तं, मया पत्या
 जरदष्टिर्यथाऽसः। भगो अर्यमा सविता पुरश्चि मंह्यं
 त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवाः॥१६॥ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवा
 पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः। वीरसूर्जीवसूदेवकामा स्थोना शं नो
 भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥१७॥ आ नः प्रजां जनयतु प्रजापति
 राजरसाय समनक्तुर्वर्यमा। अदुर्मङ्गलीः पतिलोकमा विश शं नो
 भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥१८॥ इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभगां
 कृधि। दशास्यां पुत्रानाधेहि पतिमेकादशं कुरु॥१९॥ सम्राज्ञी
 श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वां भव। ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी
 अधि देवृषु॥२०॥ मम व्रते ते हृदयं दधातु मम चित्तमनु चित्तं ते
 अस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व बृहस्पतिस्त्वा नियुनक्तु
 मह्यम्॥२१॥

तृतीयः खण्डः

लेखासन्धिषु पक्षमस्वावर्तेषु च यानि ते। तानि ते पूर्णाहुत्या
 सर्वाणि शमयाम्यहम्॥१॥ केशेषु यच्च पापकमीक्षिते रुदिते च
 यत्। तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥२॥ शीलेषु यच्च
 पापकं भाषिते हसिते च यत्। तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि
 शमयाम्यहम्॥३॥ आरोकेषु च दन्तेषु हस्तयोः पादयोश्च यत्।
 तानि ते पूर्णाहुत्या सर्वाणि शमयाम्यहम्॥४॥

ऊर्वोरुपस्थे जङ्घयोः सन्धानेषु च यानि ते। तानि ते पूर्णाहुत्या
 सर्वाणि शमयास्यहम्॥५॥ यानि कानि च घोराणि सर्वाङ्गेषु
 तवाभवन्। पूर्णाहुतिभिराज्यस्य सर्वाणि तान्यशीशमम्
 स्वाहा॥६॥ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवं विश्वमिदं जगत्। ध्रुवासः
 पर्वता इमे ध्रुवा स्त्री पतिकुले इयम्॥७॥ अन्नपाशेन मणिना
 प्राणसूत्रेण पृश्निना। बध्नामि सत्यग्रन्थिना मनश्च हृदयं च ते॥८॥
 यदेतद्बृहदयं तव तदस्तु हृदयं मम। यदिदं हृदयं मम तदस्तु हृदयं
 तव॥९॥ अन्नं प्राणस्य षड्विंशस्तेन बध्नामि त्वासौ॥१०॥
 सुकिंशुकं शल्मलिं विश्वरूपं, सुवर्णवर्णं सुकृतं सुचक्रम्। आरोह
 सूर्ये अमृतस्य नाभिं, स्योनं पत्ये वहतुं कृणुष्व॥११॥ मा विदन्
 परिपन्थिनो य असीदन्ति दम्पती। सुगेभिर्दुर्गमतीतामप
 द्रान्त्वरतयः॥१२॥ इह गावः प्रजायध्वमिहाश्वा इह पुरुषाः। इहो
 सहस्रदक्षिणोऽपि पूषा निषीदतु॥१३॥ इह धृतिरिह स्वधृतिरिह
 रन्तिरिह रमस्व। मयि धृतिर्मयि स्वधृतिर्मयि रमो मयि
 रमस्व॥१४॥

चतुर्थः खण्डः

अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि। ब्राह्मणस्त्वा
 नाथकाम उपधावामि याऽस्याः पापी लक्ष्मीस्तामस्या
 अपजहि॥१॥ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि।
 ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्याः पतिघ्नी तनूस्तामस्या
 अपजहि॥२॥ चन्द्र प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि।
 ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्या अपुत्र्या तनूस्तामस्या
 अपजहि॥३॥ सूर्य प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि।
 ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्या अपशव्या तनूस्तामस्या
 अपजहि॥४॥

अग्निवायुचन्द्रसूर्याः प्रायश्चित्तयो यूयं देवानां प्रायश्चित्तयः
 स्थ। ब्राह्मणो वो नाथकाम उपधावामि याऽस्याः पापी लक्ष्मीर्या
 पतिघ्नी याऽपुत्र्या याऽपशव्या तनूस्तामस्या अपहता॥५॥
 विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु। आ सिञ्चतु
 प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते॥६॥ गर्भं धेहि सिनीवाली गर्भं धेहि
 सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावा धत्तां पुष्करस्त्रजौ॥७॥ पुमांसौ
 मित्रावरुणौ पुमांसावश्विनावुभौ। पुमानग्निश्च वायुश्च पुमान्
 गर्भस्तवोदरे॥८॥ पुमानग्निः पुमानिन्द्रः पुमान् देवो बृहस्पतिः।
 पुमांसं पुत्रं विन्दस्व तं पुमाननु जायताम्॥९॥

पञ्चमः खण्डः

अयमूर्जावतो वृक्ष ऊर्जीव फलिनी भव। पर्णं वनस्पते नुत्वा
 नुत्वा सूयतां रयिः॥१॥ येनादितेःसीमानं नयति प्रजापतिर्महते
 सौभगाय। तेनाहमस्यै सीमानं नयामि प्रजामस्यै जरदष्टिं
 कृणोमि॥२॥ राकामहं सुहवां सुष्टुती हुवे शृणोतु नः सुभगा
 बोधतुत्मना। सीव्यत्वपः सूच्याऽछिद्यमानया ददातु वीरं
 शतदायुमुख्यम्॥३॥ यास्ते राके सुमतयः सुपेशसो याभिर्ददासि
 दाशुषे वसूनि। ताभिर्नो अद्य सुमना उपागहि सहस्रपोषं सुभगे
 रराणा॥४॥ किं पश्यसि प्रजां पशून् सौभाग्यं मह्यं दीर्घायुष्ट्वं
 पत्युः॥५॥ या तिरश्ची निपद्यते अहं विधरणी इति। तां त्वा घृतस्य
 धारया यजे संराधनीमहम्। संराधन्यै देव्यै देष्ट्र्यै स्वाहा॥६॥
 विपश्चित् पुच्छमभरत्तद्धाता पुनराहरत्। परेहि त्वं विपश्चित्
 पुमानयं जनिष्यतेऽसौ नाम॥७॥ इयमाज्ञे दमन्नमिदमायुरिदम-
 मृतम्॥८॥ मेधां ते मित्रावरुणौ मेधामग्निर्दधातु ते। मेधां ते अश्विनौ
 देवावा धत्तां पुष्करस्त्रजौ॥९॥ यत्ते सुसीमे हृदयं हितमन्तः
 प्रजापतौ। वेदाहं मन्ये तद्ब्रह्म माहं पौत्रमयं निगाम्॥१०॥

यत् पृथिव्या अनामृतं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदामृतस्याहं
 नाम माहं पौत्रमघं रिषम्॥११॥ इन्द्राग्नी शर्म यच्छतं प्रजायै मे
 प्रजापती। यथायं न प्रमीयेत पुत्रो जनित्र्या अधि॥१२॥
 यददश्चन्द्रमसि कृष्णं पृथिव्या हृदयं श्रितम्। तदहं विद्वांस्तत् पश्यन्
 माहं पौत्रमघं रुदम्॥१३॥ कोऽसि कतमोऽस्येषोऽस्यमृतोऽसि।
 आहस्पत्यं मासं प्रविशासौ॥१४॥ स त्वाह्ने परिददात्वहस्त्वा रात्र्यै
 परिददातु, रात्रिस्त्वाहोरात्राभ्यां परिददात्वहोरात्रौ त्वार्धमासेभ्यः
 परिदत्तामर्धमासास्त्वा मासेभ्यः परिददतु मासास्त्वर्तुभ्यः
 परिददत्वृतवस्त्वा संवत्सराय परिददतु संवत्सरस्त्वायुषे जरायै
 परिददात्वसौ॥१५॥ अङ्गादङ्गात् संस्रवसि हृदयादधि जायसे।
 प्राणन्ते प्राणेन सन्दधामि जीव मे यावदायुषम्॥१६॥ अङ्गादङ्गात्
 सम्भवसि हृदयादधि जायसे। वेदो वै पुत्रनामासि स जीव शरदः
 शतम्॥१७॥ अश्माभव परशुर्भव हिरण्यमस्तृतं भव। आत्मासि
 पुत्र मा मृथाः स जीव शरदः शतम्॥१८॥ पशूनां त्वा
 हिङ्कारेणाभिजिघ्राम्यसौ॥१९॥

षष्ठः खण्डः

आयमगात् सविता क्षुरेण॥१॥ उष्णेन वाय उदकेनैधि॥२॥
 आप उन्दन्तु जीवसे॥३॥ विष्णोर्दध्नोऽसि॥४॥ ओषधे
 त्रायस्वैनम्॥५॥ स्वधिते मैत्रं हिंसीः॥६॥ येन पूषा बृहस्पते-
 र्वायोऽरिन्द्रस्य चावपत्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय
 दीर्घायुष्ट्वाय वर्चसे॥७॥ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषं
 मगस्त्यस्य त्र्यायुषं यदेवानां त्र्यायुषं तत्ते (तन्मे) अस्तु
 त्र्यायुषम्॥८॥ अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि
 तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा॥९॥ वायो
 व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
 तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा॥१०॥

सूर्य व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्।
 तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि स्वाहा॥११॥ चन्द्र व्रतपते व्रतं
 चरिष्यामि तत्ते प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात्
 सत्यमुपैमि स्वाहा॥१२॥ व्रतानां व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तत्ते
 प्रब्रवीमि तच्छकेयम्। तेनर्ध्यासमिदमहमनृतात् सत्यमुपैमि
 स्वाहा॥१३॥ आगन्त्रा समगन्महि प्र सुमर्त्यं युयोतन। अरिष्टाः
 सञ्चरेमहि स्वस्ति चरतादयम्॥१४॥ अग्निष्टे हस्तमग्रहीत् सविता
 हस्तमग्रहीदर्यमा। हस्तमग्रहीन्मित्रस्त्वमसि कर्मणाग्निराचार्य-
 स्तव॥१५॥ ब्रह्मचर्यमागामुप मा नयस्व॥१६॥ को
 नामासि॥१७॥ असौ नामास्मि॥१८॥ देवस्य ते सवितुः
 प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां हस्तं गृह्णाम्यसौ॥१९॥
 सूर्यस्यावृतमन्वावर्तस्वासौ॥२०॥ प्राणानां ग्रन्थिरसि मा
 विस्त्रसोन्तक इदं ते परिददाम्यमुम्॥२१॥ अहुर इदन्ते
 परिददाम्यमुम्॥२२॥ कृशन् इदन्ते परिददाम्यमुम्॥२३॥
 प्रजापतये त्वा परिददाम्यसौ॥२४॥ देवाय त्वा सवित्रे
 परिददाम्यसौ॥२५॥ ब्रह्मचार्यस्यसौ॥२६॥ समिधमाधेह्यपोऽशान
 कर्म कुरु मा दिवा स्वाप्सीः॥२७॥ इयं दुरुक्तात् परिबाधमाना
 वर्णं पवित्रं पुनती न आगात्। प्राणापानाभ्यां बलमाहरन्ती स्वसा
 देवी सुभगा मेखलेयम्॥२८॥ ऋतस्य गोप्त्री तपसः परस्वी घन्ती
 रक्षः सहमाना अरातीः। सा मा समन्तमभि पर्येहि भद्रे धर्तारस्ते
 मेखले मा रिषाम॥२९॥ तत् सवितुर्वरिण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
 धियो यो नः प्रचोदयात्॥३०॥ भूर्भुवः स्वरोम् ॥३१॥ सुश्रवः
 सुश्रवसं मा कुरु यथा त्वं सुश्रवः सुश्रवाः। देवेष्वेवमहं सुश्रवः
 सुश्रवा ब्राह्मणेषु भूयासम्॥३२॥ अग्रये समिधमाहार्षं बृहते
 जातवेदसे। यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया
 वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन धनेनान्नाद्येन समेधिषीय

स्वाहा॥३३॥ पुनर्ममैत्विन्द्रियं पुनरायुः पुनर्भगः पुनर्द्रविणमैतु मा
पुनर्ब्राह्मणमैतु मा॥३४॥ पुनर्मनः पुनरात्मा म आगात् पुनश्चक्षुः
पुनः श्रोत्रं म आगात् वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा अन्तस्तिष्ठतु मे
मनोऽमृतस्य केतुः स्वाहा॥३५॥

सप्तमः खण्डः

ये अप्सवन्तरग्रयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मरुको मनोहाः ।
खलो विरुजस्तनूदूषिरिन्द्रियहा अति तान्सृजामि॥१॥ यदपां घोरं
यदपां क्रूरं यदपामशान्तमति तत् सृजामि॥२॥ यो रोचनस्तमिह
गृह्णामि तेनाहं मामभिषिञ्चामि॥३॥ यशसे तेजसे ब्रह्मवर्चसाय
बलायेन्द्रियाय वीर्यायान्नाद्याय रायस्पोषाय त्विष्या अपर्चित्यै॥४॥
येन स्त्रियमकृणुतं येनापामृशतं सुराम् । येनाक्षानभ्यषिञ्चतं येनेमा
पृथिवीं महीम् । यद्वां तदश्विना यशस्तेन मामभिषिञ्चतम्॥५॥
उद्यन्भ्राजभृष्टिभिरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्याविभिरस्थात् ।
दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वा त्वा विशाम्या मा विशा॥६॥
उद्यन्भ्राजभृष्टिभिरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् सान्तपनेभिरस्थात् ।
शतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वा त्वा विशाम्या मा विशा॥७॥
उद्यन्भ्राजभृष्टिभिरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् सायंयावभिरस्थात् ।
सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वा त्वा विशाम्या मा विशा॥८॥
चक्षुरसि चक्षुष्ट्वमस्यव मे पाप्मानं जहि । सोमस्त्वा राजाऽवतु
नमस्तेऽस्तु मा मा हिंसीः॥९॥ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि
मध्यमं श्रथाय । अथादित्यव्रते वयं तवानागसो अदितये
स्याम॥१०॥ श्रीरसि मयि रमस्व॥११॥ नेत्र्यौ स्थो नयतं
माम्॥१२॥ गन्धर्वोऽस्युपाव उप मामव॥१३॥ यक्षमिव चक्षुषः
प्रियो वो भूयासम्॥१४॥ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तपरिमितः
पविः । जिह्वे मा विह्वलो वाचं चारु माऽद्येह वादय॥१५॥ वनस्पते

वीड्वङ्गो हि भूया अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धो
असि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि॥१६॥

अष्टमः खण्डः

इमा मे विश्वतोवीर्यो भव इन्द्रश्च रक्षतम्। पूषंस्त्वं
पर्यावर्तयानष्टा आयन्तु नौ गृहान्॥१॥ इमा मधुमतीर्मह्यमनष्टाः
पयसा सह। गाव आज्यस्य मातर इहेमाः सन्तु भूयसीः॥२॥ गवां
श्लेष्मासि गावो मयि श्लिष्यन्तु॥३॥ संग्रहण संगृहाण ये जाताः
पशवो मम। पूषेषां शर्म यच्छतु यथा जीवन्तो अप्ययात्॥४॥
भुवनमसि साहस्रमिन्द्राय त्वा सुमोऽददादक्षतमरिष्टमिलान्दम्।
गोपोषणमसि गोपोषस्येशिषे गोपोषाय त्वा सहस्रपोषणमसि
सहस्रपोषस्येशिषे सहस्रपोषाय त्वा॥५॥ लोहितेन स्वधितिना
मिथुनं कर्णयोः कृतम्। यावतीनां यावतीनां व ऐषमो
लक्षणमकारिषम्। भूयसीनां भूयसीनां व उत्तरामुत्तरां समां
क्रियासम्॥६॥ इयं तन्ती गवां माता सवत्सानां निवेशनी। सा नः
पयस्वती दुहा उत्तरामुत्तरां समाम्॥७॥

॥ इति प्रथमः प्रपाठकः ॥



द्वितीयः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

यः प्राच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः॥१॥ यो दक्षिणस्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः॥२॥ यः प्रतीच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः॥३॥ य उदीच्यां दिशि सर्पराज एष ते बलिः॥४॥ नमः पृथिव्यै दैष्ट्याय विश्वभृन्मा ते अन्ते रिषामा। संहतं मा वि वधीर्विहतं माऽभि सं वधीः॥५॥ सोमो राजा सोमस्तम्बो राजा सोमोऽस्माकं राजा सोमस्य वयं स्मः। अहिजम्भनमसि सौमस्तम्बं सौमस्तम्बमहिजम्भनमसि॥६॥ यां सन्यां समधत्त यूयं सप्तऋषिभिः सह। तां सर्पा माऽत्यक्रामिष्ट नमो वो अस्तु मानोर्हिंसिष्ट॥७॥ मानस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मानो अश्वेषु रीरिषः। वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥८॥ शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेऽभिमातिषाहे। शतं यो नः शरदो अजीजादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा स्वाहा॥९॥ ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति। तेषां यो अज्यानिमजीजिमावहास्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वे स्वाहा॥१०॥ ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितं नो अस्तु। तेषामृतूनां शतशारदानां निवात एषामभये स्यामा॥११॥ इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः। तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानां ज्योर्गजीता अहताः स्यामा॥१२॥ भद्रान्नः श्रेयः समनैष्ट देवास्त्वयावसेन समशीमहि त्वा। स नो मयोभूः पितेवा विशस्व शं तोकाय तन्वै स्योनः स्वाहा॥१३॥ अमोऽसि प्राण तदृतं ब्रवीम्यमा ह्यसि सर्वमनुप्रविष्टः। स मे जरां रोगमपमृज्य शरीरादपाम एधि मा मृथा

न इन्द्र॥१४॥ अग्निः प्राशनातु प्रथमः स हि वेद यथा हविः। शिवा
अस्मभ्यमोषधीः कृणोतु विश्वचर्षणिः स्वाहा॥१५॥ एतमुत्पं
मधुना संयुतं यवं सरस्वत्या अधिवनाव चर्कृधि। इन्द्र आसीत्
सीरपतिः शतक्रतुः कीनाशा आसन्मरुतः सुदानवः स्वाहा॥१६॥

द्वितीयः खण्डः

प्रथमा हव्युवास सा धेनुरभवद्यमे। सा नः पयस्वती दुहा
उत्तरामुत्तरां समाम्॥१॥ प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति
तिष्ठामि गोषु। प्रति प्राणे प्रति तिष्ठामि पुष्टौ प्रत्यङ्गेषु प्रति
तिष्ठाम्यात्मनि॥२॥ प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे॥३॥
स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथो
दैवान् मा भयादिति॥४॥ यत् पशवः प्रध्यायत मनसा हृदयेन च।
वाचा सहस्रपाशया मयि बध्नामि वो मनः॥५॥ अनु त्वा माता
मन्यतामनु पिताऽनु भ्राताऽनु सगर्भ्योऽनु सखा सयूथ्यः॥६॥ आत्तं
देवेभ्यो हविः॥७॥ यत् पशुर्मायुमकृतोरो वा पद्भिराहता। अग्निर्मा
तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वहसः॥८॥ अग्नावग्नश्चरति प्रविष्ट
ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः। स नः स्योनः सुयजा यजा च यथा
देवानां जनिमानि वेद॥९॥ औलूखलाः सं प्रवदन्ति ग्रावाणो
हविष्कृण्वन्तः परिवत्सरीणाम्। एकाष्टके सुप्रजसः सुवीरा
ज्योग्जीवेम बलिहृतो वयं ते॥१०॥ इडायास्पदं घृतवत्सरीसृपं
जातवेदः प्रतिहव्या गृभाया ये ग्राम्याः पशवो विश्वरूपास्तेषां
सप्तानां मयि रन्तिरस्तु स्वाहा॥११॥ एषैव सा या पूर्वा व्यौच्छत्
सेयमप्स्वन्तश्चरति प्रविष्टा। वसूर्जिगाय प्रथमा जनित्री विश्वे ह्यस्यां
महिमानो अन्तः॥१२॥ एषैव सा या प्रथमा व्यौच्छत्सा
धेनुरभवद्विश्वरूपा। संवत्सरस्य या पत्नी सा नो अस्तु
सुमङ्गली॥१३॥ यां देवाः प्रतिपश्यन्ति रात्रीं धेनुमिवायतीम्। सा

नः पयस्वती दुहा उत्तरामुत्तरां समाम्॥१४॥ संवत्सरस्य प्रतिमां यां
त्वा रात्रि यजामहे। प्रजामजर्यां नः कुरु रायस्पोषेण संसृज॥१५॥
अन्विमं नो अनुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम्। अग्निश्च हव्यवाहनः स नो
दादाशुषे मयः॥१६॥

तृतीयः खण्डः

स्वाहा सोमाय पितृमते॥१॥ स्वाहाऽग्नये कव्यवाहनाय॥२॥
अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः॥३॥ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना
असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परा पुरो नि पुरो ये
भरन्त्यग्निष्टौल्लोकात् प्रणुदत्वस्मात्॥४॥ एत पितरः सोम्यासो
गम्भीरेभिः पथिभिः पूर्विणेभिः। दत्तास्मभ्यं द्रविणेह भद्रं रयिञ्च
नः सर्ववीरं नियच्छत॥५॥ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमा-
वृषायध्वम्॥६॥ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत॥७॥
नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः शूषाय॥८॥ नमो वः
पितरो घोराय नमो वः पितरो रसाय॥९॥ नमो वः पितरः स्वधायै
नमो वः पितरो मन्यवे॥१०॥ नमो वः पितरः पितरो नमो
वः॥११॥ गृहान्नः पितरो दत्त॥१२॥ सदो वः पितरो देष्म॥१३॥
एतद्वः पितरो वासः॥१४॥ उर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं
परिस्तुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन्॥१५॥ आधत्त पितरो गर्भं
कुमारं पुष्करस्त्रजम्। यथेह पुरुषः स्यात्॥१६॥ अभून्नो दूतो
हविषो जातवेदा अवाङ्मुव्यानि सुरभीणि कृत्वा। प्रादात् पितृभ्यः
स्वधया ते अक्षन् प्रजानन्नग्ने पुनरेहि योनिम्॥१७॥ वह वपां
जातवेदः पितृभ्यो यत्रैतान् वेत्थः निहितान् पराचः। मेदसः कुल्या
अभि तान्स्त्रवन्तु सत्या एषामाशिषः सन्तु कामात् स्वाहा॥१८॥
जातवेदो वपया गच्छ देवांस्त्वं हि होता प्रथमो बभूव। सत्या वपा
प्रगृहीता मे अस्तु समृध्यतां मे यदिदं करोमि॥१९॥

यत्कुसीदमप्रदत्तं मयेह येन यमस्य निधिना चराणि। इदं तदग्रे
अनृणो भवामि जीवन्नेव प्रति तत्ते ददामि॥२०॥ एकाष्टका तपसा
तप्यमाना जजान गर्भं महिमानमिन्द्रम्। तेन देवा असहन्त
शत्रून्हन्तासुराणामभवच्छचीभिः॥२१॥

चतुर्थः खण्डः

इदं भूमेर्भजामह इदं भद्रं सुमङ्गलम्। परा सपत्नान्
बाधस्वान्येषां विन्दते वस्वन्येषां विन्दते धनम्॥१॥ इमं स्तोममर्हते
जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया। भद्रं हि नः प्रमतिरस्य
संसद्यग्रे सख्ये मा रिषामा वयन्तव॥२॥ भरामेघं कृणवामा
हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम्। जीवातवे प्रतरां साधया
धियोऽग्रे सख्ये मा रिषामा वयन्तव॥३॥ शक्रेम त्वा समिधं
साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम्। त्वमादित्याँ आवह तान्
ह्युश्मस्यग्रे सख्ये मा रिषामा वयन्तव॥४॥ 'पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ।
विष्णोर्मनसा पूते स्थः। देवस्त्वा सवितोत्पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण
वसोः सूर्यस्य रश्मिभिः'। तपश्च तेजश्च श्रद्धा च ह्रीश्च
सत्यञ्चाक्रोधश्च त्यागश्च धृतिश्च धर्मश्च सत्त्वश्च वाक् च मनश्चात्मा
च ब्रह्म च तानि प्रपद्ये तानि मामवन्तु भूर्भुवः स्वरो महान्तमात्मानं
प्रपद्ये॥५॥ विरूपाक्षोऽसि दन्ताञ्जिस्तस्य ते शय्या पर्णे गृहा
अन्तरिक्षे विमितं हिरण्मयम्। तद्देवानां हृदयान्ययस्मये कुम्भेऽन्तः
सन्निहितानि। तानि बलभृच्च बलसाच्च रक्षतोऽप्रमणी अनिमिषतः
सत्यम्। यत्ते द्वादश पुत्रास्ते त्वा संवत्सरे संवत्सरे कामप्रेण यज्ञेन
याजयित्वा पुनर्ब्रह्मचर्यमुपयन्ति। त्वं देवेषु ब्राह्मणोऽस्यहं मनुष्येषु।
ब्राह्मणो वै ब्राह्मणमुप धावत्युप त्वा धावामि। जपन्तं मा मा प्रति
जापीर्जुह्वन्तं मा मा प्रति हौषीः कुर्वन्तं मा मा प्रति कार्षीः। त्वां
प्रपद्ये। त्वया प्रसूत इदं कर्म करिष्यामि। तन्मे राध्यतां तन्मे

समृध्यतां तन्म उप पद्यताम्। समुद्रो मा विश्वव्यचा ब्रह्माऽनु जानातु
तुथो मा विश्ववेदा ब्रह्मणः पुत्रोऽनु जानातु श्वात्रो मा प्रचेता
मैत्रावरुणोऽनु जानातु। तस्मै विरूपाक्षाय दन्ताञ्जये समुद्राय
विश्वव्यचसे तुथाय विश्ववेदसे श्वात्राय प्रचेतसे सहस्राक्षाय ब्रह्मणः
पुत्राय नमः॥६॥ 'अक्तं रिहाणा व्यन्तु वयः। यः पशूनामधिपती
रुद्रस्तन्तिचरो वृषा। पशूनस्माकं मा हिंसीरेतदस्तु हुतं तव स्वाहा'।
सहस्रबाहुर्गोपत्यः स पशूनभि रक्षतु। मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु
मयि प्रजां प्रजापतिः स्वाहा॥७॥ कौतोमतं संवननं सुभागंकरणं
मम। नाकुली नाम ते माताऽथाहं पुरुषानयः। यन्नौ कामस्य
विच्छिन्नं तन्नौ सं धेह्योषधे॥८॥ वृक्ष इव पक्वस्तिष्ठसि सर्वान्
कामान् भुवस्पते। यस्तैव वेद तस्मै मे भोगान् धुक्ष्वाक्षतान्
बृहन्॥९॥ ऋतं सत्ये प्रतिष्ठितं भूतं भविष्यता सह। आकाश उप
निरज्जतु मह्यमन्नमथो श्रियम्॥१०॥ अभिभागोऽसि सर्वस्मिंस्तदु
सर्वं त्वयि श्रितम्। तेन सर्वेण सर्वो मा विवासन वि वासय॥११॥
कोश इव पूर्णो वसुना त्वं प्रीतो ददसे धनम्। अदृष्टो दृष्टमा भर
सर्वान् कामान् प्र यच्छ मे॥१२॥ आकाशस्यैष आकाशो
यदेतद्भाति मण्डलम्। एवं त्वा वेद यो वेदेशानेशान् प्र यच्छ
मे॥१३॥ भूर्भुवः स्वरों सूर्य इव दृशे भूयासमग्निरिव तेजसा
वायुरिव प्राणेन सोम इव गन्धेन बृहस्पतिरिव बुद्धयाऽश्विनाविव
रूपेणेन्द्राग्नी इव बलेन ब्रह्मभाग एवाहं भूयासं पाप्मभागा मे
द्विषन्तः॥१४॥

पञ्चमः खण्डः

मूर्ध्नोऽधि मे वैश्रवणाञ्छिरसोऽनुप्रवेशिनः। ललाटान्दस्वरान्
घोरान् विघनान् वि बृहामि वः स्वाहा॥१॥ ग्रीवाभ्यो मे
स्कन्धाभ्यां मे नस्तो मेऽनुप्रवेशिनः। मुखान्मे बद्धान् घोरान्

विघनान् वि बृहामि वः स्वाहा॥२॥ बाहुभ्यां मे यतो यतः
 पार्श्वयोरुत्तु तानधि। उरस्तो बद्धदान् घोरान् विघनान् वि बृहामि वः
 स्वाहा॥३॥ वङ्क्षणाभ्यां मे लोहितादान् योनिहान् पञ्जिहानधि।
 ऊरुभ्यो निश्लिषो घोरान् विघनान् वि बृहामि वः स्वाहा॥४॥
 जङ्घाभ्यां मे यतो यतः पाण्योरुत्तु तानधि। पादयोर्विकिरान् घोरान्
 विघनान् वि बृहामि वः स्वाहा॥५॥ परिबाधं यजामहेऽणुजङ्घं
 शबलोदरम्। यो नोऽयं परिबाधते दानाय भगाय च स्वाहा॥६॥
 अपेहि त्वं परिबाध मा विबाध वि बाधथाः। सुगं पन्थानं मे कुरु
 येन मा धनमेष्यति स्वाहा॥७॥ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा
 जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम
 पतयो रयीणाम् स्वाहा॥८॥ यशोऽहं भवामि ब्राह्मणानां यशो
 राज्ञां यशो विशाम्। यशः सत्यस्य भवामि भवामि यशसां
 यशः॥९॥ पुनर्मा यन्तु देवता या मदपचक्रमुः। महस्वन्तो महान्तो
 भवाम्यस्मिन् पात्रे हरिते सोमपृष्ठे॥१०॥ रूप रूपं मे दिश
 प्रातरहस्य तेजसः। अन्नमुग्रस्य प्राशिषमस्तु वै मयि त्वयीदमस्तु
 त्वयि मयीदम्॥११॥ यदिदं पश्यामि चक्षुषा त्वया दत्तं प्रभासया।
 तेन मा भुञ्ज तेन भुक्षिषीय तेन मा विशा॥१२॥ अहर्नो
 अत्यपीपरद्रात्रिर्नो अति पारयत्। रात्रिर्नो अत्यपीपरदहर्नो अति
 पारयत्॥१३॥ आदित्यनावमारोक्षं पूर्णमिपरिवादिनीम्। अच्छिद्रां
 पारयिष्णवीं शतारित्रां स्वस्तये॥१४॥ ओं नम आदित्याय नम
 आदित्याय नम आदित्याय॥१५॥ उद्यन्तं त्वादित्यानुदियासं
 प्रतितिष्ठन्तं त्वादित्यानुप्रति तिष्ठासम्॥१६॥ भल्लाय
 स्वाहा॥१७॥ भल्लाय स्वाहा॥१८॥

षष्ठः खण्डः

वास्तोष्पते प्रतिजानि ह्यस्मान्त्स्वावेशोऽनमीवो भवा नः। यत्ते
 महे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥१॥ हये राके

सिनीवालि सिनीवालि पृथुष्टुके। सुभद्रे पथ्ये रेवति पथा नो यश
 आवह स्वाहा॥२॥ ये यन्ति प्राञ्च पन्थानो य उ चोत्तरत आययुः।
 ये चेमे सर्वे पन्थानस्तेभिर्नो यश आवह स्वाहा॥३॥ यथा यन्ति
 प्रपदो यथा मासा अहर्जरम्। एवं मा श्रीधातारः समव यन्तु सर्वतः
 स्वाहा॥४॥ यथा समुद्रं स्रवन्तीः समवयन्ति दिशो दिशः। एवं मा
 सखायो ब्रह्मचारिणः समव यन्तु दिशो दिशः स्वाहा॥५॥ वसुवन
 एधि वसुवन एधि वसुवन एधि॥६॥ वशङ्गमौ देवयानौ युवं स्थो
 यथा युवयोः। सर्वाणि भूतानि वशमायन्त्येवं ममासौ वशमेतु
 स्वाहा॥७॥ शङ्खश्च मन आयुश्च देवयानौ युवं स्थो यथा युवयोः।
 सर्वाणि भूतानि वशमायन्त्येवं ममासौ वशमेतु स्वाहा॥८॥
 आकूतीं देवीं मनसा प्रपद्ये यज्ञस्य मातरं सुहवा मे अस्तु। यस्यास्त
 एकमक्षरं परं सहस्रा अयुतं च शाखास्तस्यै वाचे निहवे जुहोभ्या
 मा वरो गच्छतु श्रीर्यशश्च स्वाहा॥९॥ इदमहमिमं विश्वकर्माणं
 श्रीवत्समभि जुहोमि स्वाहा॥१०॥ पूर्णहोमं यशसे जुहोमि योऽस्मै
 जुहोति वरमस्मै ददाति। वरं वृणे यशसा भामि लोके
 स्वाहा॥११॥ इन्द्रामवदात्तमो वः परस्तादहं वो ज्योतिर्ममिभ्येत
 सर्वे स्वाहा॥१२॥ अन्नं वा एकच्छन्दस्यमन्नं होके भूतेभ्यश्छन्दयति
 स्वाहा॥१३॥ श्रीर्वा एषा यत्सत्वानो विरोचनो मयि सत्त्वमवदधातु
 स्वाहा॥१४॥ अन्नस्य धृतमेव रसस्तेजःसम्पत्कामो जुहोमि
 स्वाहा॥१५॥ क्षुधे स्वाहा॥१६॥ क्षुत्पिपासाभ्यां स्वाहा॥१७॥ मा
 भैषीर्न मरिष्यसि जरदष्टिर्भविष्यसि॥१८॥ रसं विषस्य
 नाविदमुग्रम्फेनमिवास्यम्॥१९॥ तुर गोपाय मा नाथ गोपाय मा।
 अशस्तिभ्यो अरातिभ्यः स्वस्त्ययनमसि॥२०॥

सप्तमः खण्डः

हतस्ते अत्रिणा क्रिमिर्हतस्ते जमदग्निना। गोतमेन
 तिनीकृतोऽत्रैव त्वा क्रिमे ब्रह्मवद्यमवद्यम्॥१॥ भरद्वाजस्य मन्त्रेण

सं तिनोमि क्रिमे त्वा॥२॥ क्रिमिं ह वक्त्रतोदिनं क्रिमिमान्त्रानु-
चारिणम्। क्रिमिं द्विशीर्षमर्जुनं द्विशीर्षं ह चतुर्हनुम्॥३॥ हतः
क्रिमीणां क्षुद्रको हता माता हतः पिता। अथैषां भिन्नकः कुम्भो य
एषां विषधानकः॥४॥ क्रिमिमिन्द्रस्य बाहुभ्यामवाञ्चं
पातयामसि॥५॥ हताः क्रिमयः साशातिकाः सनील-
मक्षिकाः॥६॥

अष्टमः खण्डः

अर्हणा पुत्रवाससा धेनुरभवद्यमे। सा नः पयस्वती दुहा
उत्तरामुत्तरां समाम्॥१॥ इदमहमिमां पद्यां विराजमन्नाद्यायाधि-
तिष्ठामि॥२॥ या ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः। ता
मह्यमस्मिन्नासनेऽच्छिद्राः शर्म यच्छत॥३॥ या ओषधीः
सोमराज्ञीर्विष्टिताः पृथिवीमनु। ता मह्यमस्मिन् पादयोरच्छिद्राः शर्म
यच्छत॥४॥ यतो देवीः प्रतिपश्याम्यापस्ततो मा राद्धिरा-
गच्छतु॥५॥ सव्यं पादमव नेनिजेऽस्मिन् राष्ट्रे श्रियं दधे॥६॥
दक्षिणं पादमव नेनिजेऽस्मिन् राष्ट्रे श्रियमा वेशयामि॥७॥
पूर्वमन्यमपरमन्यमुभौ पादावव नेनिजे राष्ट्रस्यर्ध्या अभयस्याव-
रुद्धयै॥८॥ अन्नस्य राष्ट्ररसि राष्ट्रेस्ते भूयासम्॥९॥ यशोऽसि यशो
मयि धेहि॥१०॥ यशसो यशोऽसि॥११॥ यशसो भक्षोऽसि
महसो भक्षोऽसि। श्रीभक्षोऽसि श्रियं मयि धेहि स्वाहा॥१२॥ मुञ्च
गां वरुण पाशाद्विषन्तं मेऽभि धेहि। तं जह्यमुष्य चोभयोरुत्सृज
गामत्तु तृणानि पिबतूदकम्॥१३॥ माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा
गामनागामदितिं वधिष्ट॥१४॥

॥ इति द्वितीयः प्रपाठकः ॥

॥ इति छान्दोग्यमन्त्रब्राह्मणम् ॥



तृतीयः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्मनिराकुर्या मा मा ब्रह्मनिराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत ओमिति ह्युद्गायति तस्योपव्याख्यानम्॥१॥ एषां भूतानां पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसोऽपामोषधयो रस ओषधीनां पुरुषो रसः पुरुषस्य वाग्रसो वाच ऋग्रस ऋचः साम रसः साम्न उद्गीथो रसः॥२॥ स एष रसानां रसतमः परमः परार्थोऽष्टमो यदुद्गीथः॥३॥ कतमा कतमर्कतमत्कतमत्साम कतमः कतम उद्गीथ इति विमृष्टं भवति॥४॥ वागेवर्क् प्राणः सामोमित्येतदक्षरमुद्गीथस्तद्वा एतन्मिथुनं यद्वाक् च प्राणश्चर्क् च साम च॥५॥ तदेतन्मिथुनमोमित्येत स्मिन्नक्षरे सं सृज्यते यदा वै मिथुनौ समागच्छत आपयतो वै तावन्योन्यस्य कामम्॥६॥ आपयिता ह वै कामानां भवति य एतदेवं विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ते॥७॥ तद्वा एतदनुज्ञाक्षरं यद्धि किं चानुजानात्योमित्येव तदाहैषा एव समृद्धिर्यदनुज्ञा। समर्द्धयिता ह वै कामानां भवति य एतदेवं विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्ते॥८॥ तेनेयं त्रयी विद्या वर्तत ओमित्याश्रावयत्योमिति शः सत्योमित्युद्गायत्येतस्यैवाक्षरस्यापचित्यै महिम्ना रसेन॥९॥ तेनोभौ कुरुतो यश्चैतदेवं वेद यश्च न वेद। नाना तु विद्या चाविद्या च यदेव विद्यया करोति श्रद्धयोपनिषदा

तदेव वीर्यवत्तरं भवतीति खल्वेतस्यैवाक्षरस्योपव्याख्यानं
भवति॥१०॥

द्वितीयः खण्डः

देवासुरा ह वै यत्र संयेतिर उभये प्राजापत्यास्तद्ध देवा।
उद्गीथमाजहुरनेनैनानभिभविष्याम इति॥१॥ ते ह नासिक्वयं
प्राणमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे। तःहासुराः पाप्मना विविधुस्तस्मात्ते-
नोभयं जिघ्रति सुरभि च दुर्गन्धि च पाप्मना ह्येष विद्धः॥२॥ अथ
ह वाचमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे। ताःहासुराः पाप्मना
विविधुस्तस्मात्तेनोभयं वदति सत्यं चानृतं च पाप्मना ह्येषा
विद्धा॥३॥ अथ ह चक्षुरुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे। तद्धासुराः पाप्मना
विविधुस्तस्मात्तेनोभयं पश्यति दर्शनीयं चादर्शनीयं च पाप्मना
ह्येतद्विद्धम्॥४॥ अथ ह श्रोत्रमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे। तद्धासुराः
पाप्मना विविधुस्तस्मात्तेनोभयःशृणोति श्रवणीयं चाश्रवणीयं च
पाप्मना ह्येतद्विद्धम्॥५॥ अथ ह मन उद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे।
तद्धासुराः पाप्मना विविधुस्तस्मात्तेनोभयं सङ्कल्पते
सङ्कल्पनीयञ्चासङ्कल्पनीयञ्च पाप्मना ह्येतद्विद्धम्॥६॥ अथ ह य
एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथमुपासाञ्चक्रिरे। तःहासुरा ऋत्वा
विदध्वःसुर्यथाऽश्मानमाखणमृत्वा विध्वंसत एव॥७॥ यथा
ऽश्मानमाखणमृत्वा विध्वंसत एवःहैव स विध्वंसते य एवंविदि
पापं कामयते यश्चैनमभिदासति स एषोऽश्माखणः॥८॥ नैवैतेन
सुरभि न दुर्गन्धि विजानात्यपहतपाप्मा ह्येष तेन यदश्नाति
यत्पिबति तेनेतरान् प्राणानवत्येतमु एवान्ततोऽवित्त्वोत्क्रामति
व्याददात्येवान्तत इति॥९॥ तःहाङ्गिरा उद्गीथमुपासाञ्चक्र एतमु
एवाङ्गिरसं मन्यन्तेऽङ्गानां यद्रसः॥१०॥ तेन तःह
बृहस्पतिरुद्गीथमुपासाञ्चक्र एतमु एव बृहस्पतिं मन्यन्ते वाग्धि

बृहती तस्या एष पतिः॥११॥ तेन तश्चायास्यमुद्गीथ मुपासाञ्चक्र
एतमु एवायास्यं मन्यन्त आस्याद्यदयते॥१२॥ तेन तश्च बको
दाल्भ्यो विदाञ्चकार। स ह नैमिषीयानामुद्गाता बभूव स ह स्मैभ्यः
कामानागायति॥१३॥ आगाता ह वै कामानां भवति य एतदेवं
विद्वानक्षरमुद्गीथमुपास्त इत्यध्यात्मम्॥१४॥

तृतीयः खण्डः

अथाधिदैवतं य एवासौ तपति तमुद्गीथमुपासीतोद्यन्वा एष
प्रजाभ्य उद्गायति। उद्यश्स्तमोभयमपहन्यपहन्ता ह वै भयस्य तमसो
भवति य एवं वेद॥१॥ समान उ एवायञ्चासौ चोष्णोऽयमुष्णोऽसौ
स्वर इतीममाचक्षते स्वर इति प्रत्यास्वरित्यमुं तस्माद्वा
एतमिमममुद्गोद्गीथमुपासीत॥२॥ अथ खलु व्यानमेवोद्गीथमुपासीत
यद्वै प्राणिति स प्राणो यदपानिति सोऽपानः। अथ यः
प्राणापानयोः सन्धिः स व्यानो यो व्यानः सावाक्।
तस्मादप्राणन्नपानन्वाचमभिव्याहरति॥३॥ यावाक्सर्क्तस्माद-
प्राणन्नपानन्नृचमभिव्याहरति यर्क्तत्साम तस्मादप्राणन्नपानन्-
सामगायति यत्साम स उद्गीथस्तस्मादप्राणन्नपानन्नृद्गायति॥४॥
अतो यान्यन्यानि वीर्यवन्ति कर्माणि यथाग्नेर्मन्थनमाजेः सरणं
दृढस्य धनुष आयमनमप्राणन्नपानन्स्तानि करोत्येतस्य
हेतोर्व्यानमेवोद्गीथमुपासीत॥५॥ अथ खलूद्गीथाक्षराण्युपा-
सीतोद्गीथ इति प्राण एवोत्प्राणेन ह्युत्तिष्ठति वाग्गीर्वाचो ह गिर
इत्याचक्षतेऽन्नं थमन्ने हीदश्सर्वश्स्थितम्॥६॥ द्यौरेवोदन्तरीक्षं गीः
पृथिवी थमादित्य एवोद्वायुर्गिरग्निस्थश्सामवेद एवोद्यजुर्वेदो
गीर्ऋग्वेदस्थं दुग्धेऽस्मै वाग्दोहं यो वाचो दोहोऽन्नवानन्नादो भवति
य एतान्येवं विद्वानुद्गीथाक्षराण्युपास्त उद्गीथ इति॥७॥ अथ
खल्वाशीः समृद्धिरूपसरणानीत्युपासीत येन साम्ना-
स्तोष्यन्त्यात्तत्सामोपधावेत्॥८॥ यस्मामृचि तामृचं यदार्षेयं तमृचिं

यां देवतामभिष्टोष्यन्स्यात्तां देवतामुपधावेत्॥९॥ येन-
 छन्दसास्तोष्यन्स्यात्तच्छन्द उपधावेद्येन स्तोमेन स्तोष्यमाणः स्यात्त-
 स्तोममुपधावेत्॥१०॥ यां दिशमभिष्टोष्यन्स्यात्तां दिशमुप-
 धावेत्॥११॥ आत्मानमन्तत उपसृत्य स्तुवीत कामं
 ध्यायन्नप्रमत्तोऽभ्याशो ह यदस्मै स कामः समृद्धयेत यत्कामः
 स्तुवीतेति यत्कामः स्तुवीतेति॥१२॥

चतुर्थः खण्डः

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीतोमिति ह्युद्गायति तस्योप
 व्याख्यानम्॥१॥ देवा वै मृत्योर्बिभ्यतस्त्रयीं विद्यां प्राविशस्ते
 छन्दोभिरच्छादयन्त्यदेभिरच्छादयस्स्तच्छन्दसां छन्दस्त्वम्॥२॥ तानु
 तत्र मृत्युर्यथा मत्स्यमुदके परिपश्येदेवं पर्यपश्यदृचि साम्नि यजुषि।
 ते नु विदित्वोर्ध्वा ऋचः साम्नो यजुषः स्वरमेव प्राविशन्॥३॥
 यदा वा ऋचमाप्रोत्योमित्येवातिस्वरत्येवसामैवं यजुरेष उ स्वरो
 यदेतक्षरमेतदमृतमभयं तत्प्रविश्य देवा अमृता अभया
 अभवन्॥४॥ स य एतदेवं विद्वानक्षरं प्रणौत्येतदेवाक्षर-
 स्वरममृतमभयं प्रविशति तत्प्रविश्य यदमृता देवास्तद-
 मृतोभवति॥५॥

पञ्चमः खण्डः

अथ खलु य उद्गीथः स प्रणवो यः प्रणवः स उद्गीथ इत्यसौ
 वा आदित्य उद्गीथ एष प्रणव ओमिति ह्येष स्वरन्नेति॥१॥ एतमु
 एवाहमभ्यगासिषं तस्मान्मम त्वमेकोऽसीति ह कौषीतकिः
 पुत्रमुवाच रस्मीस्त्वं पर्यावर्तयाद् बहवो वै ते भविष्यन्तीत्यधि-
 दैवतम्॥२॥ अथाध्यात्मं य एवायं मुख्यः प्राणस्तमुद्गीथ-
 मुपासीतोमिति ह्येष स्वरन्नेति॥३॥ एतमु एवाहमभ्यगासिषं
 तस्मान्मम त्वमेकोऽसीति ह कौषीतकिः पुत्रमुवाच प्राणास्त्वं

भूमानभिगायताद्ब्रह्मवो वै मे भविष्यन्तीति॥४॥ अथ खलु य उद्गीथः स प्रणवो यः प्रणवः स उद्गीथ इति होतृषदनाद्बैवापि दुरुद्गीतमनुसमाहरतीत्यनु समाहरतीति॥५॥

षष्ठः खण्डः

इयमेवर्गग्निः साम तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम
तस्मादृच्यध्यूढःसाम गीयत इयमेव साऽग्निरमस्तत्साम॥१॥
अन्तरिक्षमेवर्वायुः साम तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम।
तस्मादृच्यध्यूढःसाम गीयतेऽन्तरिक्षमेव सा वायुरमस्तत्साम॥२॥
द्यौरेवर्गादित्यः साम तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम। तस्मादृच्यध्यूढः
साम गीयते। द्यौरेव साऽऽदित्योऽमस्तत्साम॥३॥ नक्षत्राण्येवर्क्
चन्द्रमाः साम तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम। तस्मादृच्यध्यूढःसाम
गीयते। नक्षत्राण्येव सा चन्द्रमा अमस्तत्साम॥४॥ अथ
यदेतदादित्यस्य शुक्लं भाः सैवर्गथ यन्नीलं परः कृष्णं तत्साम
तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम। तस्मादृच्यध्यूढःसाम गीयते॥५॥ अथ
यदेवैतदादित्यस्य शुक्लं भाः सैव साऽथ यन्नीलं परः कृष्णं
तदमस्तत्सामाथ य एषोऽन्तरादित्ये हिरण्यमयः पुरुषो दृश्यते
हिरण्यश्मश्रुर्हिरण्यकेश आप्रणखात्सर्व एव सुवर्णः॥६॥ तस्य
यथा कप्यासं पुण्डरीकमेवमक्षिणी तस्योदिति नाम स एष सर्वेभ्यः
पाप्मभ्य उदित उदेति ह वै सर्वेभ्यः पाप्मभ्यो य एवं वेद॥७॥
तस्यर्क् च साम च गेष्णौ तस्मादुद्गीथस्तस्मात्त्वैवोद्गीतैतस्य हि गाता।
स एष ये चामुष्मात्पराञ्चो लोकास्तेषां चेष्टे देवकामानां
चेत्यधिदैवतम्॥८॥

सप्तमः खण्डः

अथाध्यात्मं वागेवर्क् प्राणः साम तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम
तस्मादृच्यध्यूढःसाम गीयते। वागेव सा प्राणोऽमस्तत्साम॥१॥

चक्षुरेवर्गात्मा साम तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम तस्मादृच्यध्यूढः
 साम गीयते। चक्षुरेव सात्तामस्तत्साम॥२॥ श्रोत्रमेवर्द्धमनः साम
 तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम तस्मादृच्यध्यूढःसाम गीयते। श्रोत्रमेव
 सा मनोऽमस्तत्साम॥३॥ अथ यदेतदक्ष्णः शुक्लं भाः सैवर्गथ
 यन्नीलं परः कृष्णं तत्साम। तदेतदेतस्यामृच्यध्यूढःसाम।
 तस्मादृच्यध्यूढःसाम गीयते। अथ यदेवैतदक्ष्णः शुक्लं भाः सैव
 साऽथ यन्नीलं परः कृष्णं तदमस्तत्साम॥४॥ अथ य
 एषोऽन्तरक्षिणि पुरुषो दृश्यते सैवर्क्तत्साम तदुक्थं तद्यजुस्तद्ब्रह्म।
 तस्यैतस्य तदेव रूपं यदमुष्य रूपं यावमुष्य गेष्णौ तौ गेष्णौ यन्नाम
 तन्नाम॥५॥ स एष ये चैतस्मादर्वाञ्चो लोकास्तेषां चेष्टे
 मनुष्यकामानां चेति। तद्य इमे वीणायां गायन्त्येतं ते गायन्ति
 तस्मात्ते धनसनयः॥६॥ अथ य एतदेवं विद्वान् साम गायत्युभौ स
 गायति सोऽमुनैव स एष ये चामुष्मात्पराञ्चो लोकास्ताःश्चाप्नोति
 देवकामाःश्च॥७॥ अथानेनैव ये चैतस्मादर्वाञ्चो
 लोकास्ताःश्चाप्नोति मनुष्यकामाःश्च तस्मादु हैवं विदुर्नाता
 ब्रूयात्॥८॥ कं ते काममागायानीत्येष होव कामांगानस्येष्टे य एवं
 विद्वान्साम गायति साम गायति॥९॥

अष्टमः खण्डः

त्रयो होद्गीथे कुशला बभूवुः शिलकः शालावत्यश्चैकितायनो
 दाल्भ्यः प्रवाहणो जैवलिरिति ते होचुरुद्गीथे वै कुशलाः स्मो
 हन्तोद्गीथे कथां वदाम इति॥१॥ तथेति ह समुपविविशुः स ह
 प्रवाहणो जैवलिरुवाच भगवन्तावग्रे वदतां ब्राह्मणयोर्वदतोर्वाचः-
 श्रोष्यामीति॥२॥ स ह शिलकः शालावत्यश्चैकितायनं
 दाल्भ्यमुवाच हन्त त्वा पृच्छानीति पृच्छेति होवाच॥३॥ का साम्नो
 गतिरिति स्वर इति होवाच। स्वरस्य का गतिरिति प्राण इति

होवाच। प्राणस्य का गतिरित्यन्नमिति होवाचान्नस्य का गतिरित्याप
इति होवाच॥४॥ अपां का गतिरित्यसौ लोक इति होवाचामुष्य
लोकस्य का गतिरिति न स्वर्गं लोकमतिनयेदिति होवाच स्वर्गं वयं
लोकःसामाभिसःस्थापयामः स्वर्गसःस्तावःहि सामेति॥५॥ तःह
शिलकः शालावत्यश्चैकितायनं दाल्भ्यमुवाचाप्रतिष्ठितं वै किल ते
दाल्भ्यः साम यस्त्वेतर्हि ब्रूयान्मूर्धा ते विपतिष्यतीति मूर्धा ते
विपतेदिति॥६॥ हन्ताहमेतद्भगवतो वेदानीति विन्दीति होवाचामुष्य
लोकस्य का गतिरित्ययं लोक इति होवाचास्य लोकस्य का
गतिरिति न प्रतिष्ठां लोकमतिनयेदिति होवाच प्रतिष्ठां वयं लोक
ःसामाभिसःस्थापयामः प्रतिष्ठासःस्तावःहि सामेति॥७॥ तःह
प्रवाहणो जैवलिरुवाचान्तवद्वै किल ते शालावत्य साम यस्त्वेतर्हि
ब्रूयान्मूर्धा ते विपतिष्यतीति मूर्धा ते विपतेदिति हन्ताहमेतद्भगवतो
वेदानीति विन्दीति होवाच॥८॥

नवमः खण्डः

अस्य लोकस्य का गतिरित्याकाश इति होवाच सर्वाणि ह वा
इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यन्त आकाशं प्रत्यस्तं
यन्त्याकाशो ह्येवैभ्यो ज्यायानाकाशः परायणम्॥१॥ स एष
परोवरीयानुद्गीथः स एषोऽनन्तः परोवरीयो हास्य भवति
परोवरीयसो ह लोकाञ्जयति य एतदेवं विद्वान्परोवरीयाः
समुद्गीथमुपास्ते॥२॥ तःहैतमतिधन्वा शौनक उदरशाण्डिल्या-
योत्ववोवाच यावत्त एनं प्रजायामुद्गीथं वेदिष्यन्ते परोवरीयो
हैभ्यस्तावदस्मिँल्लोके जीवनं भविष्यति॥३॥ तथामुष्मँल्लोके
लोक इति। स य एतमेवं विद्वानुपास्ते परोवरीय एव
हास्यास्मिँल्लोके जीवनं भवति तथामुष्मँल्लोके लोक इति लोके
लोक इति॥४॥

दशमः खण्डः

मटचीहतेषु कुरुष्वाटिक्या सह जाययोषस्तिर्ह चाक्रायण
 इभ्यग्रामे प्रद्राणक उवास॥१॥ स हेभ्यं कुल्माषान्खादन्तं बिभिक्षे
 तश्होवाच। नेतोऽन्ये विद्यन्ते यच्च ये म इम उपनिहिता इति॥२॥
 एतेषां मे देहीति होवाच तानस्मै प्रददौ हन्तानुपानमित्युच्छिष्टं वै मे
 पीतस्यादिति होवाच॥३॥ न स्विदेतेऽप्युच्छिष्टा इति न वा
 अजीविष्यमिमान्खादन्निति होवाच कामो म उदकपानमिति॥४॥
 स ह खादित्वातिशेषाञ्जायाया आजहार साग्र एव सुभिक्षा बभूव
 तान्प्रतिगृह्य निदधौ॥५॥ स ह प्रातः सञ्जिहान उवाच यद्वतान्नस्य
 लभेमहि लभेमहि धनमात्रश्राजासौ यक्ष्यते स मा
 सर्वैरात्विज्यैर्वृणीतेति॥६॥ तं जायोवाच हन्त पत इम एव
 कुल्माषा इति तान्खादित्वा मुं यज्ञं विततमेयाय॥७॥
 तत्रोद्गातृनास्तावे स्तोष्यमाणानुपोपविवेश स ह प्रस्तोतार-
 मुवाच॥८॥ प्रस्तोतार्या देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां
 चेदविद्वान्प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति॥९॥
 एवमेवोद्गातारमुवाचोद्गातार्या देवतोद्गीथमन्वायत्ता तां
 चेदविद्वानुद्गास्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति॥१०॥ एवमेव
 प्रतिहर्तारमुवाच प्रतिहर्तार्या देवता प्रतिहारमन्वायत्ता तां
 चेदविद्वान्प्रतिहरिष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति ते ह
 समारतास्तूष्णीमासाञ्चक्रिरे॥११॥

एकादशः खण्डः

अथ हैनं यजमान उवाच भगवन्तं वा अहं
 विविदिषाणीत्युषस्तिरस्मि चाक्रायण इति होवाच॥१॥ स होवाच
 भगवन्तं वा अहमेभिः सर्वैरात्विज्यैः पर्येषिषं भगवतो वा
 अहमवित्यन्यानवृषि॥२॥ भगवाःस्त्वेव मे सर्वैरात्विज्यैरिति

तथेत्यथ तर्ह्येत एव समतिसृष्टाः स्तुवतां यावत्त्वेभ्यो धनं दद्यास्तावन्मम दद्या इति तथेति ह यजमान उवाच॥३॥ अथ हैनं प्रस्तोतोपससाद प्रस्तोतर्या देवता प्रस्तावमन्वायत्ता तां चेदविद्वान्प्रस्तोष्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति मा भगवानवोचत्कतमा सा देवतेति॥४॥ प्राण इति होवाच सर्वाणि ह वा इमानि भूतानि प्राणमेवाभिसं विशन्ति प्राणमभ्युज्जिहते। सैषा देवता प्रस्तावमन्वायत्ता। तां चेदविद्वान्प्रस्तोष्यो मूर्धा ते व्यपतिष्यत्तथोक्तस्य मयेति॥५॥ अथ हैनमुद्गातोपससादोद्गातर्या देवतोद्गीथमन्वायत्ता तां चेदविद्वानुद्गास्यसि मूर्धा ते विपतिष्यतीति मा भगवानवोचत्कतमा सा देवतेति॥६॥ आदित्य इति होवाच सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यादित्यमुच्चैः सन्तं गायन्ति सैषा देवतोद्गीथमन्वायत्ता तां चेदविद्वानुद्गास्यो मूर्धा ते व्यपतिष्यत्तथोक्तस्य मयेति॥७॥ अथ हैनं प्रतिहर्तोपससाद प्रतिहर्तर्या देवता प्रतिहारमन्वायत्ता तां चेदविद्वान्प्रतिहरिष्यसि मूर्धा मे विपतिष्यतीति मा भगवानवोचत्कतमा सा देवतेति॥८॥ अन्नमिति होवाच सर्वाणि ह वा इमानि भूतान्यन्नमेव प्रतिहरमाणानि जीवन्ति सैषा देवता प्रतिहारमन्वायत्ता तां चेदविद्वान्प्रत्यहरिष्यो मूर्धा ते व्यपतिष्यत्तथोक्तस्य मयेति तथोक्तस्य मयेति॥९॥

द्वादशः खण्डः

अथातः शौव उद्गीथस्तद्ध बको दाल्भ्यो ग्लावो वा मैत्रेयः स्वाध्यायमुद्वव्राज॥१॥ तस्मै श्वा श्वेतः प्रादुर्बभूव तमन्ये श्वान उपसमेत्योचुरन्नं नो भगवानागायत्वशनायाम वा इति॥२॥ तान्होवाचे हैव मा प्रातरुपसमीयातेति तद्ध बको दाल्भ्यो ग्लावो वा मैत्रेयः प्रतिपालयाञ्चकार॥३॥ ते ह यथैवेह बहिष्यवमानेन

स्तोष्यमाणाः सःरब्धाः सर्पन्तीत्येवमाससृपुस्ते ह समुपविश्य हिं
चक्रुः॥४॥ ओ३मदा३मों३पिबा३ मों३ देवो वरुणः प्रजापतिः
सविता२ न्नमिहा२हरदन्नपते३ऽन्नमिहा२हरा२हरो२मिति॥५॥

त्रयोदशः खण्डः

अयं वाव लोको हाउकारो वायुर्हाङ्कारश्चन्द्रमा अथकारः।
आत्मेहकारोऽग्निरिकारः॥१॥ आदित्य ऊकारो निहव एकारो
विश्वे देवा औहोयिकारः प्रजापतिर्हिङ्कारः प्राणः स्वरोऽन्नं या
वाग्विराद्॥२॥ अनिरुक्तस्त्रयोदशः स्तोभः सञ्चरो हुङ्कारः॥३॥
दुग्धेऽस्मै वाग्दोहं यो वाचो दोहोऽन्नवानन्नादो भवति य एतामेव
ऽसाम्नामुपनिषदं वेदोपनिषदं वेदे॥४॥

॥ इति तृतीयः प्रपाठकः ॥



चतुर्थः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

समस्तस्य खलु साम्न उपासनः साधु यत्खलु साधु
तत्सामेत्याचक्षते यदसाधु तदसामेति॥१॥ तदुताप्याहुः
साम्नैनमुपागादिति साधुनैनमुपागादित्येव तदाहुरसाम्नैनमुपागादि-
त्यसाधुनैनमुपागादित्येव तदाहुः॥२॥ अथोताप्याहुः साम नो बतेति
यत्साधु भवति साधु बतेत्येव तदाहुरसाम नो बतेति यदसाधु
भवत्यसाधु बतेत्येव तदाहुः॥३॥ स य एतदेवं विद्वान्साधु
सामेत्युपास्तेऽभ्याशो ह यदेनः साधवो धर्मा आ च गच्छेयुरुप च
नमेयुः॥४॥

द्वितीयः खण्डः

लोकेषु पञ्चविधः सामोपासीत पृथिवी हिङ्गारः। अग्निः
प्रस्तावोऽन्तरिक्षमुद्गीथ आदित्यः प्रतिहारो द्यौर्निधनमित्यूध्वेषु॥१॥
अथावृत्तेषु द्यौर्हिङ्गार आदित्यः प्रस्तावोऽन्तरिक्षमुद्गीथोऽग्निः
प्रतिहारः पृथिवी निधनम्॥२॥ कल्पन्ते हास्मै लोका
ऊर्ध्वाश्चावृत्ताश्च य एतदेवं विद्वाँल्लोकेषु पञ्चविधं
सामोपास्ते॥३॥

तृतीयः खण्डः

वृष्टौ पञ्चविधः सामोपासीत पुरावातो हिङ्गारो मेघो जायते स
प्रस्तावो वर्षति स उद्गीथो विद्योतते स्तनयति स प्रतिहारः॥१॥
उद्गृह्णाति तन्निधनं वर्षति हास्मै वर्षयति ह य एतदेवं विद्वान्वृष्टौ
पञ्चविधः सामोपास्ते॥२॥

चतुर्थः खण्डः

सर्वास्वप्सु पञ्चविधःसामोपासीत मेघो यत्संप्लवते स हिङ्गारो यद्वर्षति स प्रस्तावो याः प्राच्यः स्यन्दन्ते स उद्गीथो याः प्रतीच्यः स प्रतिहारः समुद्रो निधनम्॥१॥ न हाप्सु प्रैत्यप्सुमान्भवति य एतदेवं विद्वान्सर्वास्वप्सु पञ्चविधःसामोपास्ते॥२॥

पञ्चमः खण्डः

ऋतुषु पञ्चविधःसामोपासीत वसन्तो हिङ्गारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा उद्गीथः शरत्प्रतिहारो हेमन्तो निधनम्॥१॥ कल्पन्ते हास्मा ऋतव ऋतुमान्भवति य एतदेवं विद्वानृतुषु पञ्चविधःसामोपास्ते॥२॥

षष्ठः खण्डः

पशुषु पञ्चविधःसामोपसीताजा हिङ्गारोऽवयः प्रस्तावो गाव उद्गीथोऽश्वाः प्रतिहारः पुरुषो निधनम्॥१॥ भवन्ति हास्य पशवः पशुमान्भवति य एतदेवं विद्वान्पशुषु पञ्चविधःसामोपास्ते॥२॥

सप्तमः खण्डः

प्राणेषु पञ्चविधं परोवरीयः सामोपासीत प्राणो हिङ्गारो वाक्प्रस्तावश्चक्षुरुद्गीथः श्रोत्रं प्रतिहारो मनो निधनं परोवरीयाऽसि वा एतानि॥१॥ परोवरीयो हास्य भवति परोवरीयसो ह लोकाञ्जयति य एतदेवं विद्वान् प्राणेषु पञ्चविधं परोवरीयः सामोपास्त इति तु पञ्चविधस्य॥२॥

अष्टमः खण्डः

अथ सप्तविधस्य वाचि सप्तविधःसामोपासीत यत्किं च वाचो हुमिति स हिङ्गारो यत्प्रेति स प्रस्तावो यदेति स आदिः॥१॥ यदुदिति स उद्गीथो यत्प्रतीति स प्रतिहारो यदुपेति स उपद्रवो

यन्नीति तन्निधनम्॥२॥ दुग्धेऽस्मै वाग्दोहं यो वाचो
दोहोऽन्नवानन्नादो भवति य एतदेवं विद्वान्वाचि सप्तविधः-
सामोपास्ते॥३॥

नवमः खण्डः

अथ खल्वमुमादित्यःसप्तविधःसामोपासीत सर्वदा समस्तेन
साम मां प्रति मां प्रतीति सर्वेण समस्तेन साम॥१॥ तस्मिन्निमानि
सर्वाणि भूतान्यन्वायत्तानीति विद्यात्तस्य यत्पुरोदयात्स
हिङ्गारस्तदस्य पशवोऽन्वायत्तास्तस्मात्ते हिं कुर्वन्ति हिङ्गारभाजिनो
ह्येतस्य साम्नः॥२॥ अथ यत्प्रथमोदिते स प्रस्तावस्तदस्य मनुष्या
अन्वायत्तास्तस्मात्ते प्रस्तुतिकामाः प्रशःसाकामाः प्रस्तावभाजिनो
ह्येतस्य साम्नः॥३॥ अथ यत्सङ्गववेलायाःस आदिस्तदस्य वयाः-
स्यन्वायत्तानि तस्मात्तान्यन्तरिक्षेऽनारम्बणान्यादायात्मानं
परिपतन्त्यादि भाजीनि ह्येतस्य साम्नः॥४॥ अथ यत्सम्प्रति
मध्यन्दिने स उद्गीथस्तदस्य देवा अन्वायत्तास्तस्मात्ते सत्तमाः
प्राजापत्यानामुद्गीथभाजिनो ह्येतस्य साम्नः॥५॥ अथ यदूर्ध्वं
मध्यन्दिनात्प्रागपराह्णात्स प्रतिहारस्तदस्य गर्भा अन्वायत्तास्तस्मात्ते
प्रतिहृता नावपद्यन्ते प्रतिहारभाजिनो ह्येतस्य साम्नः॥६॥ अथ
यदूर्ध्वमपराह्णात्प्रागस्तमयात्स उपद्रवस्तदस्यारण्या अन्वायत्ता-
स्तस्मात्ते पुरुषं दृष्ट्वा कक्षःश्चभ्रमित्युपद्रवन्त्युपद्रवभाजिनो ह्येतस्य
साम्नः॥७॥ अथ यत्प्रथमास्तमिते तन्निधनं तदस्य
पितरोऽन्वायत्तास्तस्मात्तान्निदधति निधनभाजिनो ह्येतस्य साम्न एवं
खल्वमुमादित्यःसप्तविधःसामोपास्ते॥८॥

दशमः खण्डः

अथ खल्व्वात्मसंमितमतिमृत्यु सप्तविधःसामोपासीत हिङ्गार
इति त्र्यक्षरं प्रस्ताव इति त्र्यक्षरं तत्समम्॥१॥ आदिरिति द्व्यक्षरं

प्रतिहार इति चतुरक्षरं तत इहैकं तत्समम्॥२॥ उद्गीथ इति
 त्र्यक्षरमुपद्रव इति चतुरक्षरं त्रिभिस्त्रिभिः समं
 भवत्यक्षरमतिशिष्यते त्र्यक्षरं तत्समम्॥३॥ निधनमिति त्र्यक्षरं
 तत्सममेव भवति तानि ह वा एतानि द्वाविंशतिरक्षराणि॥४॥
 एकविंशत्यादित्यमाप्रोत्येकविंशो वा इतोऽसावादित्यो द्वावि
 ंशेन परमादित्याज्जयति तन्नाकं तद्विशोकम्॥५॥ आप्रोति
 हादित्यस्य जयं परो हास्यादित्यजयाज्जयो भवति य एतदेवं
 विद्वानात्मसंमितमतिमृत्यु सप्तविधःसामोपास्ते सामोपास्ते॥६॥

एकादशः खण्डः

मनो हिङ्कारो वाक्प्रस्तावश्चक्षुरुद्गीथः श्रोत्रं प्रतिहारः प्राणो
 निधनमेतद्वायत्रं प्राणेषु प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतद्वायत्रं प्राणेषु प्रोतं
 वेद प्राणी भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया
 पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या महामनाः स्यात्तद्व्रतम्॥२॥

द्वादशः खण्डः

अभिमन्यति स हिङ्कारो धूमो जायते स प्रस्तावो ज्वलति स
 उद्गीथोऽङ्गारा भवन्ति स प्रतिहार उपशाम्यति तन्निधनःसःशाम्यति
 तन्निधनमेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतद्रथन्तरमग्नौ प्रोतं
 वेद ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया
 पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या न प्रत्यङ्ङग्निमाचामेन्न
 निष्ठीवेत्तद्व्रतम्॥२॥

त्रयोदशः खण्डः

उपमन्त्रयते स हिङ्कारो जपयते स प्रस्तावः स्त्रिया सह शेते स
 उद्गीथः प्रति स्त्रीं सह शेते स प्रतिहारः कालं गच्छति तन्निधनं पारं
 गच्छति तन्निधनमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतम्॥१॥ स य
 एवमेतद्वामदेव्यं मिथुने प्रोतं वेद मिथुनी भवति

मिथुनान्मिथुनात्प्रजायते सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या न काञ्चन परिहरेत्तद्व्रतम्॥२॥

चतुर्दशः खण्डः

उद्यन्हिङ्कार उदितः प्रस्तावो मध्यन्दिन उद्गीथोऽपराह्लः प्रतिहारोऽस्तं यन्निधनमेतद्बृहदादित्ये प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतद्बृहदादित्ये प्रोतं वेद तेजस्व्यन्नादो भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या तपन्तं न निन्देत्तद्व्रतम्॥२॥

पञ्चदशः खण्डः

अध्राणि संप्लवन्ते स हिङ्कारो मेघो जायते स प्रस्तावो वर्षति स उद्गीथो विद्योतते स्तनयति स प्रतिहार उद्गृह्णाति तन्निधनमेतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतद्वैरूपं पर्जन्ये प्रोतं वेद विरूपाश्च सुरूपाश्च पशूनवरुन्धे सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान् प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या वर्षन्तं न निन्देत्तद्व्रतम्॥२॥

षोडशः खण्डः

वसन्तो हिङ्कारो ग्रीष्मः प्रस्तावो वर्षा उद्गीथः शरत्प्रतिहारो हेमन्तो निधनमेतद्वैराजमृतुषु प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतद्वैराजमृतुषु प्रोतं वेद विराजति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्यैतून्न निन्देत्तद्व्रतम्॥२॥

सप्तदशः खण्डः

पृथिवी हिङ्कारोऽन्तरिक्षं प्रस्तावो द्यौरुद्गीथो दिशः प्रतिहारः समुद्रो निधनमेताः शक्वोर्यो लोकेषु प्रोताः॥१॥ स य एवमेताः

शक्वर्यो लोकेषु प्रोता वेद लोकी भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति
महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या लोकान्न निन्देत्तद्व्रतम्॥२॥

अष्टादशः खण्डः

अजा हिङ्गारोऽवयः प्रस्तावो गाव उद्गीथोऽश्वाः प्रतिहारः
पुरुषो निधनमेता रेवत्यः पशुषु प्रोताः॥१॥ स य एवमेता रेवत्यः
पशुषु प्रोता वेद पशुमान् भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति
महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या पशून् निन्देत्तद्व्रतम्॥२॥

एकोनविंशः खण्डः

लोम हिङ्गारस्त्वक्प्रस्तावो मांसमुद्गीथोऽस्थि प्रतिहारो मज्जा
निधनमेतद्यज्ञायज्ञीयमङ्गेषु प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतद्यज्ञा-
यज्ञीयमङ्गेषु प्रोतं वेदाङ्गी भवति नाङ्गेन विहूर्छसि सर्वमायुरेति
ज्योग्जीवति महान्प्रजया पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या संवत्सरं मज्जो
नाशनीयात्तद्व्रतं मज्जो नाशनीयादिति वा॥२॥

विंशः खण्डः

अग्निर्हिङ्गारो वायुः प्रस्ताव आदित्य उद्गीथो नक्षत्राणि
प्रतिहारश्चन्द्रमा निधनमेतद्राजनं देवतासु प्रोतम्॥१॥ स य
एवमेतद्राजनं देवतासु प्रोतं वेदेतासामेव देवतानांसलोकतांस
सार्ष्टितांसायुज्यं गच्छति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति महान्प्रजया
पशुभिर्भवति महान्कीर्त्या ब्राह्मणान्न निन्देत्तद्व्रतम्॥२॥

एकविंशः खण्डः

त्रयी विद्या हिङ्गारस्रय इमे लोकाः स
प्रस्तावोऽग्निर्वायुरादित्यः स उद्गीथो नक्षत्राणि वयांसि मरीचयः स
प्रतिहारः सर्पा गन्धर्वाः पितरस्तन्निधनमेतत्साम
सर्वस्मिन्प्रोतम्॥१॥ स य एवमेतत्साम सर्वस्मिन्प्रोतं वेद सर्वः

भवति॥२॥ तदेष श्लोको यानि पञ्चधा त्रीणि त्रीणि तेभ्यो न
ज्यायः परमन्यदस्ति॥३॥ यस्तद्वेद स वेद सर्वःसर्वा दिशो
बलिमस्मै हरन्ति सर्वमस्मीत्युपासीत तद्ब्रतं तद्ब्रतम्॥४॥

द्वाविंशः खण्डः

विनर्दि साम्नो वृणे पशव्यमित्यग्रेरुह्रीथोऽनिरुक्तः
प्रजापतेर्निरुक्तः सोमस्य मृदु श्लक्ष्णं वायोः श्लक्ष्णं बलवदिन्द्रस्य
क्रौञ्चं बृहस्पतेरपध्वान्तं वरुणस्य तान्सवनिवोपसेवेत वारुणं त्वेव
वर्जयेत्॥१॥ अमृतत्वं देवेभ्य आगायानीत्यागायेत्स्वधां पितृभ्य
आशां मनुष्येभ्यस्तृणोदकं पशुभ्यः स्वर्गं लोकं
यजमानायान्नमात्मन आगायनीत्येतानि मनसा ध्यायन्नप्रमत्तः
स्तुवीत॥२॥ सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मनः सर्व ऊष्माणः
प्रजापतेरात्मानः सर्वे स्पर्शा मृत्योरात्मानस्तं यदि
स्वरेषूपालभेतेन्द्रःशरणं प्रपन्नोऽभूवं स त्वा प्रति वक्ष्यतीत्येनं
ब्रूयात्॥३॥ अथ यद्येनमूष्मसूपालभेत प्रजापतिःशरणं प्रपन्नोऽभूवं
स त्वा प्रति पेक्ष्यतीत्येनं ब्रूयादथ यद्येनःस्पर्शेषूपालभेत
मृत्युःशरणं प्रपन्नोऽभूवं स त्वा प्रति धक्ष्यतीत्येनं ब्रूयात्॥४॥ सर्वे
स्वरा घोषवन्तो बलवन्तो वक्तव्या इन्द्रे बलं ददानीति सर्व
ऊष्माणोऽग्रस्ता अनिरस्ता विवृता वक्तव्याः प्रजापतेरात्मानं
परिददानीति सर्वे स्पर्शा लेशेनानभिनिहिता वक्तव्या मृत्योरात्मानं
परिहराणीति॥५॥

त्रयोविंशः खण्डः

त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमस्तप एव
द्वितीयो ब्रह्मचार्यचार्यकुलवासी तृतीयोऽत्यन्तमात्मानमाचार्य-
कुलेऽवसादयन्सर्व एते पुण्यलोका भवन्ति ब्रह्मसः
स्थोऽमृतत्वमेति॥१॥ प्रजापतिलोकानभ्यतपतेभ्योऽभितपते-

भ्यस्त्रयी विद्या संप्रास्त्रवत्तामभ्यतपत्तस्या अभितप्ताया
 एतान्यक्षराणि संप्रास्त्रवन्त भूर्भुवः स्वरिति॥२॥ तान्यभ्यत-
 पत्तेभ्योऽभितप्तेभ्य उँकारः संप्रास्त्रवत्तद्यथा शङ्कुना सर्वाणि
 पर्णानि संतृण्णान्येवमोँकारेण सर्वा वाक्संतृण्णोङ्कार
 एवेदःसर्वमोङ्कार एवेदःसर्वम्॥३॥

चतुर्विंशः खण्डः

ब्रह्मवादिनो वदन्ति यद्वसूनां प्रातः सवनःरुद्राणां
 माध्यन्दिनःसवनमादित्यानां च विश्वेषां च देवानां तृतीय-
 सवनम्॥१॥ क्व तर्हि यजमानस्य लोक इति स यस्तं न विद्यात्कथं
 कुर्यादथ विद्वान्कुर्यात्॥२॥ पुरा प्रातरनुवाकस्योपाकरणाज्जघनेन
 गार्हपत्यस्योदङ्मुख उपविश्य स वासवःसामाभिगायति॥३॥
 लोकद्वारमपावारूँऽ २ पश्येमत्वावयःराऽ १ २ १ २ हिम् आऽ २
 जायो आऽ ३ ४ ५ इति॥४॥ अथ जुहोति नमोऽग्नये पृथिवीक्षिते
 लोकक्षिते लोकं मे यजमानाय विन्दैष वै यजमानस्य लोक
 एतास्मि॥५॥ अत्र यजमानः परस्तादायुषः स्वाहापजहि
 परिधमित्युक्त्वोत्तिष्ठति तस्मै। वसवः प्रातः सवनः-
 सम्प्रयच्छन्ति॥६॥ पुरा माध्यन्दिनस्य सवनस्योपाकरणाज्जघने-
 नाग्नीध्रीयस्योदङ्मुख उपविश्य स रौद्रः सामाभिगायति॥७॥
 लोकद्वारमपावारूँऽ २ पश्येमत्वावयःवैराऽ १ २ १ २ हिम् आऽ २-
 जायो आऽ ३ ४ ५ इति॥८॥ अथ जुहोति नमो वायवेऽन्तरिक्षक्षिते
 लोकक्षिते लोकं मे यजमानाय विन्दैष वै यजमानस्य लोक
 एतास्मि॥९॥ अत्र यजमानः परस्तादायुषः स्वाहापजहि
 परिधमित्युक्त्वोत्तिष्ठति तस्मै रुद्रा माध्यन्दिनःसवनः
 सम्प्रयच्छन्ति॥१०॥ पुरा तृतीयसवनस्योपाकरणाज्जघनेना-
 हवनीयस्योदङ्मुख उपविश्य स आदित्यःस वैश्वदेवःसामाभि-

गायति॥११॥ लोकद्वारमपावार्णुऽ २ पश्येमत्वा वयःस्वाराऽ
 १ २ १ २। हिम् आऽ २। जायो। आऽ ३ ४ ५। इति॥१२॥ आर्त्तिमथ
 वैश्वदेवं लोकद्वारमपावार्णुऽ २। पश्येमत्वा वयःसांम्राऽ १ २ १ २
 हिम् आऽ २। जायो। आऽ ३ ४ ५। इति॥१३॥ अथ जुहोति नम
 आदित्येभ्यश्च विश्वेभ्यश्च देवेभ्यो दिविक्षिद्भ्यो लोकक्षिद्भ्यो लोकं
 मे यजमानाय विन्दत॥१४॥ एष वै यजमानस्य लोक एतास्म्यत्र
 यजमानः परस्तादायुषः स्वाहापहत परिघमित्युक्त्वो-
 त्तिष्ठति॥१५॥ तस्मा आदित्याश्च विश्वे च देवास्तृतीयसवन-
 सम्प्रयच्छन्त्येष ह वै यज्ञस्य मात्रां वेद य एवं वेद य एवं
 वेद॥१६॥

॥ इति चतुर्थः प्रपाठकः ॥



पञ्चमः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

असौ वा आदित्यो देवमधु तस्य द्यौरेव तिरश्चीनव
ऽशोऽन्तरिक्षमपूपो मरीचयः पुत्राः॥१॥ तस्य ये प्राञ्चो रश्मयस्ता
एवास्य प्राच्यो मधुनाड्यः। ऋच एव मधुकृत ऋग्वेद एव पुष्पं ता
अमृता आपस्ता वा एता ऋचः॥२॥ एतमृग्वेदमभ्यतपः-
स्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यश्रसोऽजायत॥३॥
तद्व्यक्षरत्तदादित्यमभितोऽश्रयत्तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य रोहितं
रूपम्॥४॥

द्वितीयः खण्डः

अथ येऽस्य दक्षिणा रश्मयस्ता एवास्य दक्षिणा मधुनाड्यो
यजूऽध्येव मधुकृतो यजुर्वेद एव पुष्पं ता अमृता आपः॥१॥ तानि
वा एतानि यजूऽध्येतं यजुर्वेदमभ्यतपःस्त स्याभितप्तस्य यशस्तेज
इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यश्रसोऽजायत॥२॥ तद्व्यक्षरत्तदादित्यमभितोऽ-
श्रयत्तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य शुक्लः रूपम्॥३॥

तृतीयः खण्डः

अथ येऽस्य प्रत्यञ्चो रश्मयस्ता एवास्य प्रतीच्यो मधुनाड्यः
सामान्येव मधुकृतः सामवेद एव पुष्पं ता अमृता आपः॥१॥ तानि
वा एतानि सामान्येतः सामवेदमभ्यतपःस्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज
इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यश्रसोऽजायत॥२॥ तद्व्यक्षरत्तदादित्यमभितोऽ-
श्रयत्तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्य कृष्णः रूपम्॥३॥

चतुर्थः खण्डः

अथ येऽस्योदञ्चो रश्मयस्ता एवास्योदीच्यो मधुनाङ्ग्योऽथ-
र्वाङ्गिरस एव मधुकृत इतिहासपुराणं पुष्पं ता अमृता आपः॥१॥ ते
वा एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदितिहासपुराणमभ्यतपस्तस्याभितप्तस्य
यशस्तेज इन्द्रियं वीर्यमन्नाद्यश्रसोऽजायत॥२॥ तद्व्यक्षरत्तदादि-
त्यमभितोऽश्रयत्तद्वा एतद्वदेतदादित्यस्य परं कृष्णारूपम्॥३॥

पञ्चमः खण्डः

अथ येऽस्योर्ध्वा रश्मयस्ता एवास्योर्ध्वा मधुनाङ्ग्यो गुह्या
एवादेशा मधुकृतो ब्रह्मैव पुष्पं ता अमृता आपः॥१॥ ते वा एते
गुह्या आदेशा एतद्ब्रह्माभ्यतपस्तस्याभितप्तस्य यशस्तेज इन्द्रियं
वीर्यमन्नाद्यश्रसोऽजायत॥२॥ तद्व्यक्षरत्तदादित्यमभितोऽश्रयत्तद्वा
एतद्वदेतदादित्यस्य मध्ये क्षोभत इवा॥३॥ ते वा एते रसानाश्रसा
वेदा हि रसास्तेषामेते रसास्तानि वा एतान्यमृतानाममृतानि वेदा
ह्यमृतास्तेषामेतान्यमृतानि॥४॥

षष्ठः खण्डः

तद्यत्प्रथमममृतं तद्वसव उपजीवन्त्यग्निना मुखेन न वै देवा
अश्नन्ति न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति॥१॥ त एतदेव
रूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्गुपादुद्यन्ति॥२॥ स य एतदेवममृतं वेद
वसूनामेवैको भूत्वाग्निनैवमुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति स एतदेव
रूपमभिसंविशत्येतस्माद्गुपादुदेति॥३॥ स यावदादित्यः पुरस्तादुदेता
पश्चादस्तमेता वसूनामेव तावदाधिपत्यस्वाराज्यं पर्येता॥४॥

सप्तमः खण्डः

अथ यद्वितीयममृतं तद्बुधो उपजीवन्तीद्रेण मुखेन न वै देवा
अश्नन्ति न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति॥१॥ त एतदेव

रूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्रूपादुद्यन्ति॥२॥ स य एवदेवममृतं वेद रुद्राणामेवैको भूत्वेन्द्रेणैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति स एवदेव रूपमभिसंविशत्येतस्माद्रूपादुदेति॥३॥ स यावदादित्यः पुरस्तादुदेता पश्चादस्तमेता द्विस्तावदक्षिणत उदेतोत्तरतोऽस्तमेता रुद्राणामेव तावदाधिपत्यःस्वाराज्यं पर्येता॥४॥

अष्टमः खण्डः

अथ यत्तृतीयममृतं तदादित्या उपजीवन्ति वरुणेन मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति॥१॥ त एतदेव रूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्रूपादुद्यन्ति॥२॥ स य एतदेवममृतं वेदादित्यानामेवैको भूत्वा वरुणेनैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति स एतदेव रूपमभिसंविशत्येतस्माद्रूपादुदेति॥३॥ स यावदादित्यो दक्षिणत उदेतोत्तरतोऽस्तमेता द्विस्तावत्पश्चादुदेता पुरस्तादस्तमेतादित्यानामेव तावदाधिपत्यःस्वाराज्यं पर्येता॥४॥

नवमः खण्डः

अथ यच्चतुर्थममृतं तन्मरुत उपजीवन्ति सोमेन मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति॥१॥ त एतदेव रूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्रूपादुद्यन्ति॥२॥ स य एतदेवममृतं वेद मरुतामेवैको भूत्वा सोमेनैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति स एतदेव रूपमभिसंविशत्येतस्माद्रूपादुदेति॥३॥ स यावदादित्यः पश्चादुदेता पुरस्तादस्तमेता द्विस्तावदुत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्तमेता मरुतामेव तावदाधिपत्यःस्वाराज्यं पर्येता॥४॥

दशमः खण्डः

अथ यत्पञ्चमममृतं तत्साध्या उपजीवन्ति ब्रह्मणा मुखेन न वै देवा अश्नन्ति न पिबन्त्येतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यन्ति॥१॥ त एतदेव

रूपमभिसंविशन्त्येतस्माद्रूपादुद्यन्ति॥२॥ स य एतदेवममृतं वेद
साध्यानामेवैको भूत्वा ब्रह्मणैव मुखेनैतदेवामृतं दृष्ट्वा तृप्यति स
एतदेव रूपमभिसंविशत्येतस्माद्रूपादुदेति॥३॥ स यावदादित्य
उत्तरत उदेता दक्षिणतोऽस्तमेता द्विस्तावदूर्ध्व उदेतार्वाङ्स्तमेता
साध्यानामेव तावदाधिपत्यस्स्वाराज्यं पर्येता॥४॥

एकादशः खण्डः

अथ तत ऊर्ध्व उदेत्य नैवोदेता नास्तमेतैकल एव मध्ये स्थाता
तदेष श्लोकः॥१॥ न वै तत्र न निम्लोच नोदियाय कदाचन।
देवास्तेनाहसत्येन मा विराधिषि ब्रह्मणेति॥२॥ न ह वा अस्मा
उदेति न निम्लोचति सकृद्दिवा हैवास्मै भवति य एतामेवं
ब्रह्मोपनिषदं वेद॥३॥ तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच प्रजापतिर्मनवे
मनुः प्रजाभ्यस्तद्धैतदुद्दालकायारुणये ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म
प्रोवाच॥४॥ इदं वाव तज्ज्येष्ठाय पुत्राय पिता ब्रह्म प्रब्रूयात्
प्राणाय्याय वान्तेवासिने॥५॥ नान्यस्मै कस्मैचन यद्यप्यस्मा
इमामब्धिः परिगृहीतां धनस्य पूर्णा दद्यादेतदेव ततो भूय इत्येतदेव
ततो भूय इति॥६॥

द्वादशः खण्डः

गायत्री वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किं च वाग्वै गायत्री वाग्वा
इदं सर्वं भूतं गायति च त्रायते च॥१॥ या वै सा गायत्रीयं वाव सा
येयं पृथिव्यस्याह्नीदं सर्वं भूतं प्रतिष्ठितमेतामेव नातिशीयते॥२॥
या वै सा पृथिवी इयं वाव सा यदिदमस्मिन्युरुषे शरीरमस्मिन्हीमे
प्राणाः प्रतिष्ठिता एतदेव नातिशीयन्ते॥३॥ यद्वै तत्पुरुषे शरीरमिदं
वाव तद्यदिदमस्मिन्नतः पुरुषे हृदयमस्मिन्हीमे प्राणाः प्रतिष्ठिता
एतदेव नातिशीयन्ते॥४॥ सैषा चतुष्पदा षड्विधा गायत्री
तदेतदृचाभ्यनूक्तम्॥५॥ तावानस्य महिमा ततो ज्यायौश्च पुरुषः।

पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवीति॥६॥ यद्वै तद्ब्रह्मेतीदं
वाव तद्योऽयं बहिर्धा पुरुषादाकाशो यो वै स बहिर्धा
पुरुषादाकाशः॥७॥ अयं वाव स योऽयमन्त पुरुष आकाशो यो वै
सोऽन्तः पुरुष आकाशः॥८॥ अयं वाव स योऽयमन्तर्हृदय
आकाशस्तदेतत्पूर्णमप्रवर्ति पूर्णमप्रवर्तिनीऽश्रियं लभते य एवं
वेद॥९॥

त्रयोदशः खण्डः

तस्य ह वा एतस्य हृदयस्य पञ्च देवसुषयः स योऽस्य प्राङ्
सुषिः स प्राणस्तच्चक्षुः स आदित्यस्तदेतत्तेजोऽन्नाद्यमित्युपासीत
तेजस्व्यन्नादो भवति य एवं वेद॥१॥ अथ योऽस्य दक्षिणः सुषिः
स व्यानस्तच्छ्रोत्रं स चन्द्रमास्तदेतच्छ्रीश्च यशश्चेत्युपासीत
श्रीमान्यशस्वी भवति य एवं वेद॥२॥ अथ योऽस्य प्रत्यङ् सुषिः
सोऽपानः सा वाक्सोऽग्निस्तदेतद्ब्रह्मवर्चसन्नाद्यमित्युपासीत
ब्रह्मवर्चस्यन्नादो भवति य एवं वेद॥३॥ अथ योऽस्योदङ् सुषिः स
समानस्तन्मनः स पर्जन्यस्तदेतत्कीर्तिश्च व्युष्टिश्चेत्युपासीत
कीर्तिमान्व्युष्टिमान्भवति य एवं वेद॥४॥ अथ योऽस्योर्ध्वः सुषिः
स उदानः स वायुः स आकाशस्तदेतदोजश्च महश्चेत्युपासीतौजस्वी
महस्वान्भवति य एवं वेद॥५॥ ते वा एते पञ्च ब्रह्मपुरुषाः स्वर्गस्य
लोकस्य द्वारपाः स य एतानेवं पञ्च ब्रह्मपुरुषान्स्वर्गस्य लोकस्य
द्वारपान्वेदास्य कुले वीरो जायते प्रतिपद्यते स्वर्गं लोकं य एतानेवं
पञ्च ब्रह्मपुरुषान्स्वर्गस्य लोकस्य द्वारपान्वेद॥६॥ अथ यदतः परो
दिवो ज्योतिर्दीप्यते विश्वतः पृष्ठेषु सर्वतः पृष्ठेष्वनुत्तमेषूत्तमेषु
लोकेष्विदं वाव तद्यदिदमस्मिन्नतः पुरुषे ज्योतिः॥७॥
तस्यैषादृष्टिर्यत्रैतदस्मिञ्छरीरे सःस्पर्शेनोष्णिमानं विजानाति
तस्यैषा श्रुतिर्यत्रैतत्कर्णावपिगृह्य निनदमिव नदथुरिवाग्नेरिव ज्वलत

उपशृणोति तदेतद्दृष्टं च श्रुतं चेत्युपासीत चक्षुष्यः श्रुतो भवति य एवं वेद य एवं वेद॥८॥

चतुर्दशः खण्डः

सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलानिति शान्त उपासीत। अथ खलु क्रतुमयः पुरुषो यथाक्रतुरस्मिंल्लोके पुरुषो भवति तथेतः प्रेत्य भवति स क्रतुं कुर्वीत॥१॥ मनोमयः प्राणशरीरो भारूपः सत्यसंकल्प आकाशात्मा सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादरः॥२॥ एष म आत्मान्तर्हृदयेऽणी-यान्त्रीहेर्वा यवाद्वा सर्षपाद्वा श्यामाकाद्वा श्यामाकतण्डुलाद्वैष म आत्मान्तर्हृदये ज्यायान्पृथिव्या ज्यायानन्तरिक्षाज्ज्यान्दिवो ज्यायानेभ्यो लोकेभ्यः॥३॥ सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः सर्वरसः सर्वमिदमभ्यात्तोऽवाक्यनादर एष म आत्मान्तर्हृदय एतद्ब्रह्मैतमितः प्रेत्याभिसंभवितास्मीति यस्य स्यादद्वा न विचिकित्सास्तीति ह स्माह शाण्डिल्यः शाण्डिल्यः॥४॥

पञ्चदशः खण्डः

अन्तरिक्षोदरः कोशो भूमिबुध्नो न जीर्यति दिशो ह्यस्य स्रक्तयो द्यौरस्योत्तरं बिलः स एष कोशो वसुधानस्तस्मिन्विश्वमिदंश्रितम्॥१॥ तस्य प्राची दिग्जुहूर्नाम सहमाना नाम दक्षिणा राजीनाम प्रतीची सुभूता नामोदीची तासां वायुर्वत्सः स य एतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद न पुत्ररोदःरोदिति सोऽहमेतमेवं वायुं दिशां वत्सं वेद मा पुत्ररोदःरुदम्॥२॥ अरिष्टं कोशं प्रपद्येऽमुनामुनामुना प्राणं प्रपद्येऽमुनामुनामुना भूः प्रपद्येऽमुनामुनामुना भुवः प्रपद्येऽमुनामुनामुना स्वः प्रपद्येऽमुनामुनाऽमुना॥३॥ स यदवोचं प्राणं प्रपद्य इति प्राणो वा इदं सर्वं भूतं यदिदं किं च तमेव तत्प्रापत्तिः॥४॥ अथ यदवोचं भूः

प्रपद्य इति पृथिवीं प्रपद्येऽन्तरिक्षं प्रपद्ये दिवं प्रपद्य इत्येव तदवोचम्॥५॥ अथ यदवोचं भुवः प्रपद्य इत्यग्निं प्रपद्ये वायुं प्रपद्य आदित्यं प्रपद्य इत्येव तदवोचम्॥६॥ अथ यदवोचस्वः प्रपद्य इत्यृग्वेदं प्रपद्ये यजुर्वेदं प्रपद्ये सामवेदं प्रपद्य इत्येव तदवोचं तदवोचम्॥७॥

षोडशः खण्डः

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातः सवनं चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री गायत्रं प्रातः सवनं तदस्य वसवोऽन्वायताः प्राणा वाव वसव एते हीदस्सर्वं वासयन्ति॥१॥ तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात्प्राणा वसव इदं मे प्रातः सवनं माध्यदिनस्सवनमनुसंतनुतेति माहं प्राणानां वसूनां मध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तत एत्यगदो ह भवति॥२॥ अथ यानि चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यन्दिनस्सवनं चतुश्चत्वारिंशदक्षरा त्रिष्टुप्त्रैष्टुभं माध्यन्दिनस्सवनं तदस्य रुद्रा अन्वायताः प्राणा वाव रुद्रा एते हीदस्सर्वं रोदयन्ति॥३॥ तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात्प्राणा रुद्रा इदं मे माध्यन्दिनस्सवनं तृतीयसवनमनुसंतनुतेति माहं प्राणानां रुद्राणां मध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तत एत्यगदो ह भवति॥४॥ अथ यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तत्तृतीयसवनमष्टाचत्वारिंशदक्षरा जगती जागतं तृतीयसवनं तदस्यादित्या अन्वायताः प्राणा वावादित्या एते हीदस्सर्वमाददते॥५॥ तं चेदेतस्मिन्वयसि किञ्चिदुपतपेत्स ब्रूयात् प्राणा आदित्या इदं मे तृतीयसवनमायुरनुसंतनुतेति माहं प्राणानामादित्यानां मध्ये यज्ञो विलोप्सीयेत्युद्धैव तत एत्यगदो ह वै भवति॥६॥ एतद्ध स्म वै तद्विद्वानाह महिदास ऐतरेयः स किं म एतदुपतपसि योऽहमनेन न

प्रेष्यामीति स ह षोडशं वर्षशतमजीवत्प्र ह षोडशं वर्षशतं जीवति
य एवं वेद॥७॥

सप्तदशः खण्डः

स यदशिशिषति यत्पिपासति यन्न रमते ता अस्य दीक्षाः॥१॥
अथ यदशनाति यत्पिबति यद्रमते तदुपसदैरेति॥२॥ अथ यद्धसति
यज्जक्षति यन्मैथुनं चरति स्तुतशस्त्रैरेव तदेति॥३॥ अथ यत्तपो
दानमार्जवमहिंसा संत्यवचनमिति ता अस्य दक्षिणाः॥४॥
तस्मादाहुः सोष्यत्यसोष्टेति पुनरुत्पादनमेवास्य तन्मरणमेवा-
स्यावभृथः॥५॥ तद्धैतद्घोर आङ्गिरसः कृष्णाय देवकी-
पुत्रायोक्तवोवाचापिपास एव स बभूव सोऽन्तवेलायामेतत्त्रयं
प्रतिपद्ये ताक्षितमस्यच्युतमसि प्राणसंशितमसीति तत्रैते द्वे ऋचौ
भवतः॥६॥ आदित्प्रत्नस्य रेतसः। उद्वयं तमसस्परि ज्योतिः
पश्यन्त उत्तरस्वः पश्यन्त उत्तरं देवं देवत्रा सूर्य
मगन्मज्योतिरुत्तममिति ज्योतिरुत्तममिति॥७॥

अष्टादशः खण्डः

मनो ब्रह्मेत्युपासीतेत्यध्यात्ममथाधिदैवतमाकाशो
ब्रह्मेत्युभयमादिष्टं भवत्यध्यात्मं चाधिदैवतं च॥१॥
तदेतच्चतुष्पादब्रह्म। वाक्पादः प्राणः पादश्चक्षुः पादः श्रोत्रं पाद
इत्यध्यात्मम्। अथाधिदैवतमग्निः पादो वायुः पाद आदित्यः पादो
दिशः पाद इत्युभयमेवादिष्टं भवत्यध्यात्मं चैवाधिदैवतं च॥२॥
वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः। सोऽग्निना ज्योतिषा भाति च तपति
च। भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद॥३॥
प्राण एव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः। स वायुना ज्योतिषा भाति च तपति
च। भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद॥४॥
चक्षुरेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः। स आदित्येन ज्योतिषा भाति च तपति

च। भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद॥५॥
 श्रोत्रमेव ब्रह्मणश्चतुर्थः पादः। स दिग्भिर्ज्योतिषा भाति च तपति च।
 भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एवं वेद य एवं
 वेद॥६॥

एकोनविंशः खण्डः

आदित्यो ब्रह्मेत्यादेशस्तस्योपव्याख्यानमसदेवेदमग्र आसीत्।
 तत्सदासीत्तत्समभवत्तदाण्डं निरवर्तत तत्संवत्सरस्य मात्रामशयत
 तन्निरभिद्यत ते आण्डकपाले रजतं च सुवर्णं चाभवताम्॥१॥
 तद्यद्रजतश्सेयं पृथिवी यत्सुवर्णश्सा द्यौर्यज्जरायु ते पर्वता
 यदुल्बश्समेधो नीहारो या धमनयस्ता नद्यो यद्वास्तेयमुदकश्स
 समुद्रः॥२॥ अथ यत्तदजायत सोऽसावादित्यस्तं जायमानं घोषा
 उलूलवोऽनूदतिष्ठन्त्सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामास्त-
 स्मात्तस्योदयं प्रति प्रत्यायनं प्रति घोषा उलूलवोऽनूत्तिष्ठन्ति
 सर्वाणि च भूतानि सर्वे चैव कामाः॥३॥ स य एतमेवं
 विद्वानादित्यं ब्रह्मेत्युपास्तेऽभ्याशो ह यदेनश्साधवो घोषा आ च
 गच्छेयुरप च निग्रेडेरन्निग्रेडेरन्॥४॥

॥ इति पञ्चमः प्रपाठकः ॥



षष्ठः प्रपाठकः

प्रथम खण्डः

जानश्रुतिर्ह पौत्रायणः श्रद्धादेयो बहुदायी बहुपाक्य आस। स
ह सर्वत आवसथान्मापयाञ्चक्रे सर्वत एव मेऽन्नमत्स्यन्तीति॥१॥
अथ ह हःसा निशायामतिपेतुस्तद्धैवःहःसो हःसमभ्युवाद हो
होऽयि भल्लाक्ष भल्लाक्ष जानश्रुतेः पौत्रायणस्य समं दिवा
ज्योतिराततं तन्मा प्रसाङ्क्षी स्तत्त्वा मा प्रधाक्षीरिति॥२॥ तमु ह
परः प्रत्युवाच कम्बर एनमेतत्सन्तःसयुग्वानमिव रैकमात्येति यो
नु कथःसयुग्वा रैक इति॥३॥ यथा कृतायविजितायाधरेयाः
संयन्त्येवमेनःसर्वं तदभिसमेति यत्किञ्च प्रजाः साधु कुर्वन्ति
यस्तद्वेद यत्स वेद स मयैतदुक्त इति॥४॥ तदु ह जानश्रुतिः
पौत्रायण उपशुश्राव। स ह संजिहान एव क्षत्तारमुवाचाङ्गारे ह
सयुग्वानमिव रैकमात्येति यो नु कथःसयुग्वा रैक इति॥५॥ यथा
कृतायविजितायाधरेयाः संयन्त्येवमेनःसर्वं तदभिसमेति यत्किञ्च
प्रजाः साधु कुर्वन्ति यस्तद्वेद यत्स वेद स मयैतदुक्त इति॥६॥ स ह
क्षत्तान्विष्य नाविदमिति प्रत्येयाय तःहोवाच यत्रारे
ब्राह्मणस्यान्वेषणा तदेनमर्च्छेति॥७॥ सोऽधस्ताच्छकटस्य पामानं
कषमाणमुपोपविवेश तःहाभ्युवाद त्वं नु भगवः सयुग्वा रैक
इत्यहःह्वरा ३ इति ह प्रतिजज्ञे स ह क्षत्ताविदमिति प्रत्येयाय॥८॥

द्वितीयः खण्डः

तदु ह जानश्रुतिः पौत्रायणः षट्शतानि गवां निष्कमश्चतरीरथं
तदादाय प्रतिचक्रमे तःहाभ्युवाद॥१॥ रैक्रेमानि षट्शतानि
गवामयं निष्कोऽयमश्चतरीरथोऽनु म एतां भगवो देवताःशाधि यां

देवतामुपास्स इति॥२॥ तमु ह परः प्रत्युवाचाह हारेत्वा शूद्र तवैव सह गोभिरस्त्विति। तदु ह पुनरेव जानश्रुतिः पौत्रायणः सहस्रं गवां निष्कमश्चतरीरथं दुहितरं तदादाय प्रतिचक्रमे॥३॥ तश्चाभ्युवाद रैक्वेदः सहस्रं गवामयं निष्कोऽयमश्चतरीरथ इयं जायायं ग्रामो यस्मिन्नास्सेऽन्वेव मा भगवः शाधीति॥४॥ तस्या ह मुखमुपोदगृह्णन्नुवाचाजहारेमाः शूद्रानेनैव मुखेनालापयिष्यथा इति ते हैते रैक्वपर्णा नाम महावृषेषु यत्रास्मा उवास स तस्मै होवाच॥५॥

तृतीयः खण्डः

वायुर्वाव संवर्गो यदा वा अग्निरुद्धायति वायुमेवाप्येति यदा सूर्योऽस्तमेति वायुमेवाप्येति यदा चन्द्रोऽस्तमेति वायुमेवाप्येति॥१॥ यदाप उच्छुष्यन्ति वायुमेवापियन्ति वायुर्हो वैतान् सर्वान्संवृङ्क्त इत्यधिदैवतम्॥२॥ अथाध्यात्मं प्राणो वाव संवर्गः स यदा स्वपिति प्राणमेव वागप्येति प्राणं चक्षुः प्राणं श्रोत्रं प्राणं मनः प्राणो होवैतान् सर्वान्संवृङ्क्त इति॥३॥ तौ वा एतौ द्वौ संवर्गौ वायुरेव देवेषु प्राणः प्राणेषु॥४॥ अथ ह शौनकं च कापेयमभिप्रतारिणं च काक्षसेनिं परिविष्यमाणौ ब्रह्मचारी बिभिक्षे तस्मा उ ह न ददतुः॥५॥ स होवाच महात्मनश्चतुरो देव एकः कः स जगार भुवनस्य गोपास्तं कापेय नाभिपश्यन्ति मर्त्या अभिप्रतारिन्बहुधा वसन्तं यस्मै वा एतदन्नं तस्मा एतन्न दत्तमिति॥६॥ तदु ह शौनकः कापेयः प्रतिमन्वानः प्रत्येयायात्मा देवानां जनिता प्रजानां हिरण्यदंष्ट्रो बभसोऽनसूरिर्महान्तमस्य महिमानमाहुरनद्यमानो यदनन्नमत्तीति वै वयं ब्रह्मचारिन्नेदमुपास्महे दत्तास्मै भिक्षामिति॥७॥ तस्मा उ ह ददुस्ते वा एते पञ्चान्ये पञ्चान्ये दश सन्तस्तत्कृतं तस्मात्सर्वासु दिक्ष्वन्नमेव दश कृतः सैषा

विराडन्नादि तयेदःसर्वं दृष्टःसर्वमस्येदं दृष्टं भवत्यन्नादो भवति य एवं वेद य एवं वेद॥८॥

चतुर्थः खण्डः

सत्यकामो ह जाबालो जबालां मातरमामन्त्रयाञ्चक्रे ब्रह्मचर्यं भवति विवत्स्यामि किं गोत्रोऽन्वहमस्मीति॥१॥ सा हैनमुवाच नाहमेतद्वेद तात यद्गोत्रस्त्वमसि बह्वं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वमलभे साहमेतन्न वेद यद्गोत्रस्त्वमसि जबाला तु नामाहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसि स सत्यकाम एव जाबालो ब्रुवीथा इति॥२॥ स ह हारिद्रुमतं गौतममेत्योवाच ब्रह्मचर्यं भगवति वत्स्याम्युपेयां भगवन्तमिति॥३॥ तःहोवाच किं गोत्रो नु सोम्यासीति स होवाच नाहमेतद्वेद भो यद्गोत्रोऽहमस्म्यपृच्छं मातरःसा मा प्रत्यब्रवीद्बह्वं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वामलभे साहमेतन्न वेद यद्गोत्रस्त्वमसि जबाला तु नामाहमस्मि सत्यकामो नाम त्वमसीति सोऽहःसत्यकामो जाबालोऽस्मि भो इति॥४॥ तःहोवाच नैतदब्राह्मणो विवक्तुमर्हति समिधःसोम्याहरोप त्वा नेष्ये न सत्यादगा इति तमुपनीय कृशानामबलानां चतुःशता गा निराकृत्योवाचेमाः सोम्यानुसंभ्रजेति ता अभिप्रस्थापयन्नुवाच नासहस्रेणावर्तेयेति स ह वर्षगणं प्रोवास ता यदा सहस्रःसंपेदुः॥५॥

पञ्चमः खण्डः

अथ हैनमृषभोऽभ्युवाद सत्यकाम ३ इति भगव इति ह प्रतिशुश्राव प्राप्ताः सोम्य सहस्रःस्मः प्रापय न आचार्यकुलम्॥१॥ ब्रह्मणश्च ते पादं ब्रवाणीति ब्रवीतु मे भगवानिति तस्मै होवाच प्राची दिक्कला प्रतीची दिक्कला दक्षिणा दिक्कलोदीची दिक्कलैष वै सोम्य चतुष्कलः पादो ब्रह्मणः प्रकाशवान्नाम॥२॥ स य एतमेवं

विद्वाँश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणः प्रकाशवानित्युपास्ते प्रकाशवान-
स्मिल्लोके भवति प्रकाशवतो ह लोकाञ्जयति य एतमेवं
विद्वाँश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणः प्रकाशवानित्युपास्ते॥३॥

षष्ठः खण्डः

अग्निष्टे पादं वक्तेति स ह श्रोभूते गा अभिप्रस्थाप्रयाञ्चकार।
ता यत्राभि सायं बभूवुस्तत्राग्निमुपसमाधाय गा उपरुध्य
समिधमाधाय पश्चादग्नेः प्राङ्मुपोपविवेश॥१॥ तमग्निरभ्युवाद
सत्यकाम ३ इति भगव इति ह प्रतिशुश्राव॥२॥ ब्रह्मणः सोम्य ते
पादं ब्रवाणीति ब्रवीतु मे भगवानिति तस्मै होवाच पृथिवी
कलाऽन्तरिक्षं कला द्यौः कला समुद्रः कलैष वै सोम्य चतुष्कलः
पादो ब्रह्मणोऽनन्तवान्नाम॥३॥ स य एतमेवं विद्वाँश्चतुष्कलं पादं
ब्रह्मणोऽनन्तवानित्युपास्ते अनन्तवानस्मिल्लोके भवत्यनन्तवतो ह
लोकाञ्जयति य एतमेवं विद्वाँश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणोऽनन्त-
वानित्युपास्ते॥४॥

सप्तमः खण्डः

हःसस्ते पादं वक्तेति स ह श्रोभूते गा अभिप्रस्थापयाञ्चकार
ता यत्राभि सायं बभूवुस्तत्राग्निमुपसमाधाय गा उपरुध्य
समिधमाधाय पश्चादग्नेः प्राङ्मुपोपविवेश॥१॥ तःहःस
उपनिपत्याभ्युवाद सत्यकाम ३ इति भगव इति ह प्रतिशुश्राव॥२॥
ब्रह्मणः सोम्य ते पादं ब्रवाणीति ब्रवीतु मे भगवानिति तस्मै
होवाचाग्निः कला सूर्यः कला चन्द्रः कला विद्युत्कलैष वै सोम्य
चतुष्कलः पादो ब्रह्मणो ज्योतिष्मान्नाम॥३॥ स च एतमेवं
विद्वाँश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणो ज्योतिष्मानित्युपास्ते
ज्योतिष्मानस्मिल्लोके भवति ज्योतिष्मतो ह लोकाञ्जयति य
एतमेवं विद्वाँश्चतुष्कलं पादं ब्रह्मणो ज्योतिष्मानित्युपास्ते॥४॥

अष्टमः खण्डः

महुष्टे पादं वक्तेति स ह श्रोभूते गा अभिप्रस्थापयाञ्चकार ता यत्राभि सायं बभूवुस्तत्राग्निमुपसमाधाय गा उपरुध्य समिधमाधाय पश्चादग्नेः प्राङ्मुपोपविवेश॥१॥ तं महुरुपनिपत्याभ्युवाद सत्यकाम ३ इति भगव इति ह प्रतिशुश्राव॥२॥ ब्रह्मणः सोम्य ते पादं ब्रवाणीति ब्रवीतु मे भगवानिति तस्मै होवाच प्राणः कला चक्षुः कला श्रोत्रं कला मनः कलैष वै सोम्य चतुष्कलाः पादो ब्रह्मण आयतनवान्नाम॥३॥ स य एतमेवं विद्वान्श्चतुष्कलं पादं ब्रह्मण आयतनवानित्युपास्त आयतनवानस्मिल्लोके भवत्यायतनवतो ह लोकाञ्जयति य एतमेवं विद्वान्श्चतुष्कलं पादं ब्रह्मण आयतनवानित्युपास्ते॥४॥

नवमः खण्डः

प्राप हाचार्यकुलं तमाचार्योऽभ्युवाद सत्यकाम ३ इति भगव इति ह प्रतिशुश्राव॥१॥ ब्रह्मविदिव वै सोम्य भासि को नु त्वानुशशासेत्यन्ये मनुष्येभ्य इति ह प्रतिजज्ञे भगवाँस्त्वेव मे कामे ब्रूयात्॥२॥ श्रुतश्चोव मे भगवद्दृशेभ्य आचार्याद्वैव विद्या विदिता साधिष्ठं प्रापतीति तस्मै हैतदेवोवाचात्र ह न किञ्चन वीयायेति वीयायेति॥३॥

दशमः खण्डः

उपकोसलो ह वै कामलायनः सत्यकामे जाबाले ब्रह्मचर्यमुवास तस्य ह द्वादशवर्षाण्यग्नीन्यरिचचार स ह स्मान्यानन्तेवासिनः समावर्तयस्तस्मै न समावर्तयति॥१॥ तं जायोवाच तप्तो ब्रह्मचारी कुशल मग्नीन्यरिचचारीन्मा त्वाग्रयः परिप्रवोचन्ब्रूह्यस्मा इति तस्मै हा प्रोच्यैव प्रवासाञ्चक्रे॥२॥ स ह

व्याधिनानशितुं दध्ने तमाचार्यजायोवाच ब्रह्मचारिन्नशान किं नु
नाशनासीति। स होवाच बहव इमेऽस्मिन्पुरुषे कामा नानात्यया
व्याधिभिः प्रतिपूर्णेऽस्मि नाशिष्यामीति॥३॥ अथ हाग्रयः
समूदिरे तप्तो ब्रह्मचारी कुशलं नः पर्यचारीद्धन्तास्मै प्रब्रवामेति
तस्मै होचुः प्राणो ब्रह्म कं ब्रह्म खं ब्रह्मेति॥४॥ स होवाच
विजानाम्यहं यत्प्राणे ब्रह्म कं च तु खं च न विजानामीति ते
होचुर्यद्वाव कं तदेव खं यदेव खं तदेव कमिति प्राणं च हास्मै
तदाकाशं चोचुः॥५॥

एकादशः खण्डः

अथ हैनं गार्हपत्योऽनुशशास पृथिव्यग्निरन्नमादित्य इति। य
एष आदित्ये पुरुषो दृश्यते सोऽहमस्मि स एवाहमस्मीति॥१॥ स य
एतमेवं विद्वानुपास्तेऽपहते पापकृत्यां लोकी भवति सर्वमायुरेति
ज्योग्जीवति नास्यावरपुरुषाः क्षीयन्त उप वयं तं भुञ्जामोऽस्मिँश्च
लोकेऽमुष्मिँश्च य एतमेवं विद्वानुपास्ते॥२॥

द्वादशः खण्डः

अथ हैनमन्वाहार्यपचनोऽशशासापो दिशो नक्षत्राणि चन्द्रमा
इति। य एष चन्द्रमसि पुरुषो दृश्यते सोऽहमस्मि स
एवाहमस्मीति॥१॥ स य एतमेवं विद्वानुपास्तेऽपहते पापकृत्यां
लोकी भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति नास्यावरपुरुषाः क्षीयन्त
उप वयं तं भुञ्जामोऽस्मिँश्च लोकेऽमुष्मिँश्च य एतमेवं
विद्वानुपास्ते॥२॥

त्रयोदशः खण्डः

अथ हैनमाहवनीयोऽनुशशास प्राण आकाशो द्यौर्विद्युदिति।

य एष विद्युति पुरुषो दृश्यते सोऽहमस्मि स एवाहमस्मीति॥१॥ स य एतमेवं विद्वानुपास्तेऽपहते पापकृत्यां लोकी भवति सर्वमायुरेति ज्योग्जीवति नास्यावरपुरुषाःक्षीयन्त उप वयं तं भुञ्जामोऽस्मिँश्च लोकेऽमुष्मिँश्च य एतमेवं विद्वानुपास्ते॥२॥

चतुर्दशः खण्डः

ते होचुरुपकोसलैषा सोम्य तेऽस्माद्विद्यात्मविद्याचाचार्यस्तु ते गतिं वक्तेत्याजगाम हास्याचार्यस्तमाचार्योऽभ्युवादोपकोसल ३ इति॥१॥ भगव इति ह प्रतिशुश्राव ब्रह्मविद इव सोम्य ते मुखं भाति को नु त्वानुशशासेति को नु माऽनुशिष्याब्धो इतीहापेव निहृत इमे नूनमीदृशा अन्यादृशा इतीहाग्नीनभ्यूदे किं नु सोम्य किल तेऽवोचन्निति॥२॥ इदमिति ह प्रतिजज्ञे लोकान्वाव किल सोम्य तेऽवोचन्नहं तु ते तद्वक्ष्यामि यथा पुष्कर पलाश आपो न श्लिष्यन्त एवमेवंविदि पापं कर्म न श्लिष्यत इति ब्रवीतु मे भगवानिति तस्मै होवाच॥३॥

पञ्चदशः खण्डः

य एषोऽक्षिणि पुरुषो दृश्यत एष आत्मेति होवाचैतदमृत-मभयमेतद्ब्रह्मेति। तद्यद्यप्यस्मिन्सर्पिर्वोदकं वा सिञ्चति वर्त्मनी एव गच्छति॥१॥ एतःसंयद्वाम इत्याचक्षत एतःहि सर्वाणि वामान्यभिसंयन्ति सर्वाण्येनं वामान्यभिसंयन्ति य एवं वेद॥२॥ एष उ एव वामनीरेष हि सर्वाणि वामानि नयति सर्वाणि वामानि नयति य एवं वेद॥३॥ एष उ एव भामनीरेष हि सर्वेषु लोकेषु भाति सर्वेषु लोकेषु भाति य एवं वेद॥४॥ अथ यदु चैवास्मिञ्छव्यं कुर्वन्ति यदि च नार्चिषमेवाभिसंभवन्त्यर्चिषोऽहरह आपूर्यमाण-पक्षमापूर्यमाणपक्षाद्यान्बुददङ्गेति मासाःस्तान्मासेभ्यः

संवत्सरः संवत्सरादादित्यमादित्याच्चन्द्रमसं चन्द्रमसो विद्युतं
तत्पुरुषोऽमानवः स एनान्ब्रह्म गमयत्येष देवपथो ब्रह्मपथ एतेन
प्रतिपद्यमाना इमं मानवमावर्तं नावर्तन्ते नावर्तन्ते॥५॥

षोडशः खण्डः

एष ह वै यज्ञो योऽयं पवत एष ह यन्निदः सर्वं पुनाति। यदेष
यन्निदः सर्वं पुनाति तस्मादेष एव यज्ञस्तस्य मनश्च वाक्च
वर्तनी॥१॥ तयोरन्यतरां मनसा सःस्करोति ब्रह्मा वाचा
होताध्वर्युरुद्गातान्यतराः स यत्रोपाकृते प्रातरनुवाके पुरा
परिधानीयाया ब्रह्मा व्यववदति॥२॥ अन्यतरामेव वर्तनीं
सँस्करोति हीयतेऽन्यतरा स यथैकपादव्रजव्रथो वैकेन चक्रेण
वर्तमानो रिष्यत्येवमस्य यज्ञो रिष्यति यज्ञः रिष्यन्तं
यजमानोऽनुरिष्यति स इष्ट्वा पापीयान् भवति॥३॥ अथ
यत्रोपाकृते प्रातरनुवाके न पुरा परिधानीयाया ब्रह्मा व्यववदत्युभे
एव वर्तनी सँस्कुर्वन्ति न हीयतेऽन्यतरा॥४॥ स यथोभयपाद
व्रजव्रथो वोभाभ्यां चक्राभ्यां वर्तमानः प्रतितिष्ठत्येवमस्य यज्ञः
प्रतितिष्ठति यज्ञं प्रतितिष्ठन्तं यजमानोऽनुप्रतितिष्ठति स इष्ट्वा
श्रेयान् भवति॥५॥

सप्तदशः खण्डः

प्रजापतिलोकानभ्यतपत्तेषां तप्यमानानां रसान् प्रावृहदग्निं
पृथिव्या वायुमन्तरिक्षादादित्यं दिवः॥१॥ स एतास्तिस्त्रो देवता
अभ्यतपत्तासां तप्यमानानां रसान् प्रावृहदग्नेर्ऋचो वायोर्यजूंषि
सामान्यादित्यात्॥२॥ स एतां त्रयीं विद्यामभ्यतपत्तस्या
स्तप्यमानाया रसान् प्रावृहद्भूरित्यृग्भ्यो भुवरिति यजुर्भ्यः स्वरिति
सामभ्यः॥३॥ तद्यद्युक्तोरिष्येद्भूः स्वाहेति गार्हपत्ये जुहुयादृचामेव
तद्रसेनर्चा वीर्येणर्चा यज्ञस्य विरिष्टः संदधाति॥४॥ अथ यदि

यजुष्टोरिष्येद्भुवः स्वाहेति दक्षिणाग्नौ जुहुयाद् यजुषामेव तद्रसेन
यजुषां वीर्येण यजुषां यज्ञस्य विरिष्टः संदधाति॥५॥ अथ यदि
सामतो रिष्येत्स्वः स्वाहेत्याहवनीये जुहुयात्साम्नामेव तद्रसेन साम्नां
विर्येण साम्नां यज्ञस्य विरिष्टः संदधाति॥६॥ तद्यथा लवणेन
सुवर्णं संदध्यात् सुवर्णेन रजतं रजतेन त्रपु त्रपुणा सीसः सीसेन
लोहं लोहेन दारु दारु चर्मणा॥७॥ एवमेषां लोकानामासां देवतानां
मस्यास्त्रय्या विद्याया वीर्येण यज्ञस्य विरिष्टः संदधाति भेषजकृतो ह
वा एष यज्ञो यत्रैवं विद्ब्रह्मा भवति॥८॥ एष ह वा उदक्प्रवणो
यज्ञो यत्रैवं विद् ब्रह्मा भवत्येवं विदः ह वा एषा ब्रह्माणमनुगाथा यतो
यत आवर्तते तत्तद्गच्छति॥९॥ मानवो ब्रह्मैवैक ऋत्विक्कुरु
नश्चाभिरक्षत्येवं विद्ध वै ब्रह्मा यज्ञं यजमानः सर्वांश्चर्त्विजोऽभिरक्षति
तस्मादेवं विदमेव ब्रह्माणं कुर्वीत नानेवं विदं नानेवं विदम्॥१०॥

॥ इति षष्ठः प्रपाठकः ॥



सप्तमः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

यो ह वै ज्येष्ठं च श्रेष्ठं च वेद ज्येष्ठश्च ह वै श्रेष्ठश्च भवति प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च॥१॥ यो ह वै वसिष्ठं वेद वसिष्ठो ह स्वानां भवति वाग्वाव वसिष्ठः॥२॥ यो ह वै प्रतिष्ठां वेद प्रति ह तिष्ठत्यस्मिँश्च लोकेऽमुष्मिँश्च चक्षुर्वाव प्रतिष्ठा॥३॥ यो ह वै संपदं वेद सःहास्मै कामाः पद्यन्ते दैवाश्च मानुषाश्च श्रोत्रं वाव संपत्॥४॥ यो ह वा आयतनं वेदायतनं ह स्वानां भवति मनो ह वा आयतनम्॥५॥ अथ ह प्राणा अहःश्रेयसि व्यूदिरेऽहःश्रेयानस्म्यहःश्रेयानस्मीति॥६॥ ते ह प्राणाः प्रजापतिं पितरमेत्योचुर्भगवन्को नः श्रेष्ठ इति तान्होवाच यस्मिन्व उत्क्रान्ते शरीरं पापिष्ठतरमिव दृश्येत स वः श्रेष्ठ इति॥७॥ सा ह वागुच्चक्राम सा संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्योवाच कथमशकतर्ते मज्जीवितुमिति? यथा कला अवदन्तः प्राणन्तः प्राणेन पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेण ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविवेश ह वाक्॥८॥ चक्षुर्होच्चक्राम तत्संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्योवाच कथमशकतर्ते मज्जीवितुमिति? यथान्धा अपश्यन्तः प्राणन्तः प्राणेन वदन्तो वाचा शृण्वन्तः श्रोत्रेण ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविवेश ह चक्षुः॥९॥ श्रोत्रं होच्चक्राम तत्संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्योवाच कथमशकतर्ते मज्जीवितुमिति? यथा बधिरा अशृण्वन्तः प्राणन्तः प्राणेन वदन्तो वाचा पश्यन्तश्चक्षुषा ध्यायन्तो मनसैवमिति प्रविवेश ह श्रोत्रम्॥१०॥ मनो होच्चक्राम तत्संवत्सरं प्रोष्य पर्येत्योवाच कथमशकतर्ते मज्जीवितुमिति? यथा बाला अमनसः प्राणन्तः प्राणेन वदन्तो वाचा पश्यन्तश्चक्षुषा शृण्वन्तः श्रोत्रेणैवमिति प्रविवेश ह

मनः॥११॥ अथ ह प्राण उच्चिक्रमिषन्स यथा सुहयः
षड्वींशशङ्कून् सङ्घिदेदेवमितरान् प्राणान् समखिदत्तः हाभि-
समेत्यौचुर्भगवन्नेधि त्वं नः श्रेष्ठोऽसि मोत्क्रमीरिति॥१२॥ अथ
हैनं वागुवाच यदहं वसिष्ठोऽस्मि त्वं तद्वसिष्ठोऽसीत्यथ हैनं
चक्षुरुवाच यदहं प्रतिष्ठास्मि त्वं तत्प्रतिष्ठासीति॥१३॥ अथ
हैनं श्रोत्रमुवाच यदहं सम्पदस्मि त्वं तत्सम्पदसीत्यथ हैनं मन
उवाच यदहमायतनमस्मि त्वं तदायतनमसीति॥१४॥ न वै वाचो न
चक्षूःषि न श्रोत्राणि न मनाःसीत्याचक्षते प्राणा इत्येवाचक्षते प्राणो
होवैतानि सर्वाणि भवति॥१५॥

द्वितीयः खण्डः

स होवाच किं मेऽन्नं भविष्यतीति यत्किञ्चिदिदमाश्वभ्य आ
शकुनिभ्य इति होचुस्तद्वा एतदनस्यान्नमनो ह वै नाम प्रत्यक्षं न ह
वा एवंविदि किञ्चनानन्नं भवतीति॥१॥ स होवाच किं मे वासो
भविष्यतीत्याप इति होचुस्तस्माद्वा एतदशिष्यन्तः
पुरस्ताच्चोपरिष्ठाच्चाद्भिः परिदधति लम्भुको ह वासो भवत्यनग्नो
ह भवति॥२॥ तद्वैतत्सत्यकामो जाबालो गोश्रुतये वैयाघ्र
पद्यायोक्तुवाच यद्यप्येनच्छुष्काय स्थाणवे ब्रूयाज्जायेरन्नेवास्मिन्
शाखाः प्ररोहेयुः पलाशानीति॥३॥ अथ यदि महज्जिगमिषेद-
मावास्यायां दीक्षित्वा पौर्णमास्याःरात्रौ सर्वौषधस्य मन्थं
दधिमधुनोरुपमथ्य ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे
संपातमवनयेत्॥४॥ वसिष्ठाय स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे
संपातमवनयेत्प्रतिष्ठायै स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे संपात-
मवनयेत्संपदे स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे संपात-
मवनयेदायतनाय स्वाहेत्यग्नावाज्यस्य हुत्वा मन्थे
संपातमवनयेत्॥५॥ अथ प्रतिसृप्याञ्जलौ मन्थमाधाय जपत्यमो
नामास्यमा हि ते सर्वमिदं स हि ज्येष्ठः श्रेष्ठो राजाधिपतिः स मा

ज्येष्ठ्यः श्रेष्ठ्यः राज्यमाधिपत्यं गमयत्वहमेवेदः सर्वमसानीति॥६॥
 अथ खल्वेतयर्चा पच्छ आचामति। तत्सवितुर्वृणीमह इत्याचामति।
 वयं देवस्य भोजन मित्याचामति। श्रेष्ठः सर्वधातमित्याचामति। तुरं
 भर्गस्य धीमहीति सर्वं पिबति। निर्णिज्य कश्चं चमसं वा पश्चादग्नेः
 संविशति चर्मणि वा स्थण्डिले वा वाचंयमोऽप्रसाहः। स यदि स्त्रियं
 पश्येत्समृद्धं कर्मेति विद्यात्॥७॥ तदेषश्लोको यदा कर्मसु काम्येषु
 स्त्रियः स्वप्नेषु पश्यति समृद्धिं तत्र जानीयात्तस्मिन् स्वप्ननिदर्शने
 तस्मिन् स्वप्ननिदर्शने॥८॥

तृतीयः खण्डः

श्वेतकेतुर्हारुणेयः पञ्चालानाः समितिमेयाय तश्च प्रवाहणो
 जैवलिरुवाच कुमारानु त्वाशिषत्पितेत्यनु हि भगव इति॥१॥ वेत्थ
 यदितोऽधि प्रजाः प्रयन्तीति न भगव इति वेत्थ यथा पुनरावर्तन्तः
 इति न भगव इति वेत्थ पथोर्देवयानस्य पितृयाणस्य च व्यावर्तनाः
 इति न भगव इति॥२॥ वेत्थ यथासौ लोको न संपूर्यतः इति न
 भगव इति वेत्थ यथा पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्तीति
 नैव भगव इति॥३॥ अथानु किमनुशिष्टोऽवोचथा यो हीमानि न
 विद्यात् कथं सोऽनुशिष्टो ब्रुवीतेति स हायस्तः पितुरर्धमेयाय
 तश्चोवाचाननुशिष्य वाव किल मा भगवान्ब्रवीदनु
 त्वाशिषमिति॥४॥ पञ्च मा राजन्यबन्धुः प्रश्नानप्राक्षीत्तेषां
 नैकञ्चनाशकं विवक्तुमिति स होवाच यथा मा त्वं तदैतानवदो
 यथाहमेषां नैकञ्चन वेद यद्यहमिमानवेदिष्यं कथं ते
 नावक्ष्यमिति॥५॥ स ह गौतमो राज्ञोऽर्धमेयाय तस्मै ह प्राप्तायार्हा
 चकार स ह प्रातः सभाग उदेयाय तश्चोवाच मानुषस्य भगवन्
 गौतम वित्तस्य वरं वृणीथा इति स होवाच तवैव राजन्मानुषं वित्तं
 यामेव कुमारस्यान्ते वाचमभाषथास्तामेव मे ब्रूहीति स ह कृच्छ्री
 बभूव॥६॥ तश्च चिरं वसेत्याज्ञापयाञ्चकार तश्चोवाच यथा मा त्वं

गौतमावदो यथेयं न प्राक्त्वत्तः पुरा विद्या ब्राह्मणानाच्छति तस्मादु
सर्वेषु लोकेषु क्षत्रस्यैव प्रशासनमभूदिति तस्मै होवाच॥७॥

चतुर्थः खण्डः

असौ वाव लोको गौतमाग्निस्तस्यादित्य एव समिद्रश्मयो
धूमोऽहरर्चिश्चन्द्रमा अङ्गारा नक्षत्राणि विस्फुलिङ्गाः॥१॥
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवाः श्रद्धां जुह्वति तस्या आहुतेः सोमो राजा
संभवति॥२॥

पञ्चमः खण्डः

पर्जन्यो वाव गौतमाग्निस्तस्य वायुरेव समिदध्रं धूमो
विद्युदर्चिरशनिरङ्गारा ह्लादनयो विस्फुलिङ्गाः॥१॥ तस्मिन्नेत-
स्मिन्नग्नौ देवाः सोमश्चाजानं जुह्वति तस्या आहुतेर्वर्षं संभवति॥२॥

षष्ठः खण्डः

पृथिवी वाव गौतमाग्निस्तस्या संवत्सर एव समिदाकाशो धूमो
रात्रिर्चिर्दिशोऽङ्गारा अवान्तरदिशो विस्फुलिङ्गाः॥३॥
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा वर्षं जुह्वति तस्या आहुतेरन्नसंभवति॥४॥

सप्तमः खण्डः

पुरुषो वाव गौतमाग्निस्तस्य वागेव समित्प्राणो धूमो
जिह्वार्चिश्चक्षुरङ्गाराः श्रोत्रं विस्फुलिङ्गाः॥१॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ
देवा अन्नं जुह्वति तस्या आहुतेरेतः संभवति॥२॥

अष्टमः खण्डः

योषा वाव गौतमाग्निस्तस्या उपस्थ एव समिद्यदुपमन्त्रयते स
धूमो योनिरर्चिर्यदन्तः करोति तेऽङ्गारा अभिनन्दा
विस्फुलिङ्गाः॥१॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ देवा रेतो जुह्वति तस्या
आहुतेर्गर्भः संभवति॥२॥

नवमः खण्डः

इति तु पञ्चम्यामाहुतावापः पुरुषवचसो भवन्तीति स
उल्बावृतो गर्भो दश वा नव वा मासानन्तः शयित्वा यावद्वाऽथ
जायते॥१॥ स जातो यावदायुषं जीवति तं प्रेतं दिष्टमितोऽग्नय एव
हरन्ति यत एवेतो यतः संभूतो भवति॥२॥

दशमः खण्डः

तद्य इत्थं विदुः। ये चे मेऽरण्ये श्रद्धा तप इत्युपासते
तेऽर्चिषमभिसंभवन्त्यर्चिषोऽहरह आपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षा-
द्यान्बुदुड्ङेति मासांस्तान्॥१॥ मासेभ्यः संवत्सरश्च-
संवत्सरादादित्यमादित्याच्चन्द्रमसं चन्द्रमसो विद्युतं
तत्पुरुषोऽमानवः स एनान्ब्रह्म गमयत्येषदेवयानः पन्था इति॥२॥
अथ य इमे ग्राम इष्टापूर्ते दत्तमित्युपासते ते धूममभिसंभवन्ति
धूमाद्रात्रिःरात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्बुदुक्षिणैति मासास्तान्नैते
संवत्सरमभिप्राप्नुवन्ति॥३॥ मासेभ्यः पितृलोकं
पितृलोकादाकाशमाकाशाच्चन्द्रमसमेष सोमो राजा तद्देवानामन्नं
तं देवा भक्षयन्ति॥४॥ तस्मिन्यावत्संपातमुषित्वाथैतमेवाध्वानं
पुनर्निवर्तन्ते यथैतमाकाशमाकाशाद्वायुं वायुर्भूत्वा धूमो भवति
धूमो भूत्वाभ्रं भवति॥५॥ अभ्रं भूत्वा मेघो भवति मेघो भूत्वा
प्रवर्षति त इह व्रीहियवा ओषधिवनस्पतयस्तिलमाषा इति
जायन्तेऽतो वै खलु दुर्निष्पतरं यो यो ह्यन्नमत्ति यो रेतः सिञ्चति
तद्भूय एव भवति॥६॥ तद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशो ह यत्ते
रमणीयां योनिमापद्येरन्ब्राह्ममयोनिं वा क्षत्रिययोनिं वा वैश्ययोनिं
वाथ य इह कपूयचरणा अभ्याशो ह यत्ते कपूयां योनिमापद्येरन्
श्वयोनिं वा सूकरयोनिं वा चण्डालयोनिं वा॥७॥ अथैतयोः पथोर्न
कतरेण च न तानीमानि क्षुद्राण्यसकृदावर्तीनि भूतानि भवन्ति

जायस्व प्रियस्वेत्येतत्तृतीयःस्थानं तेनासौ लोको न संपूर्यते
तस्माज्जुगुप्सेत तदेष श्लोकः॥८॥ स्तेनो हिरण्यस्य सुरां पिबैश्च
गुरोस्तल्पमावसन् ब्रह्महा चैते पतन्ति चत्वारः पञ्चमश्चाचरै
स्तैरिति॥९॥ अथ ह य एतानेवं पञ्चाग्नीन्वेद न सह
तैरप्याचरन्याप्मना लिप्यते शुद्धः पूतः पुण्यलोको भवति य एवं
वेद य एवं वेद॥१०॥

एकादशः खण्डः

प्राचीनशाल औपमन्यवः सत्ययज्ञः पौलुषिरिन्द्रद्युम्नो
भाल्लवेयो जनः शार्कराक्ष्यो बुडिल आश्वतराश्विस्ते हैते महाशाला
महाश्रोत्रियाः समेत्य मीमांसाञ्चक्रुः को न आत्मा किं ब्रह्मेति॥१॥
ते ह संपादयाञ्चक्रुरुद्दालको वै भगवन्तोऽयमारुणिः
संप्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति तश्हन्ताभ्यागच्छमेति
तश्हाभ्याजग्मुः॥२॥ स ह संपादयाञ्चकार प्रक्षयन्ति मामिमे
महाशाला महाश्रोत्रियास्तेभ्यो न सर्वमिव प्रतिपत्स्ये
हन्ताहमन्यमभ्यनुशासानीति॥३॥ तान्होवाचाश्वपतिर्वै भगवन्तोऽयं
कैकेयः संप्रतीममात्मानं वैश्वानरमध्येति तश्हन्ताभ्यागच्छमेति
तश्हाभ्याजग्मुः॥४॥ तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः पृथगर्हाणि कारयाञ्चकार
स ह प्रातः सञ्जिहान उवाच न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो
नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न स्वैरी स्वैरिणी कुतो यक्ष्यमाणो वै
भगवन्तोऽहमस्मि यावदेकैकस्मा ऋत्विजे धनं दास्यामि
तावद्भगवद्भ्यो दास्यामि वसन्तु भगवन्त इति॥५॥ ते होचुर्येन
हैवार्थेन पुरुषश्चरेत्तश्हैव वदेदात्मानमेवेमं वैश्वानरं संप्रत्यध्येषि
तमेव नो ब्रूहीति॥६॥ तान्होवाच प्रातर्वः प्रतिवक्तास्मीति ते ह
समित्याणयः पूर्वाह्ने प्रतिचक्रमिरे तान्हानुपनीयैवैतदुवाच॥७॥

द्वादशः खण्डः

औपमन्यव कं त्वमात्मानमुपास्स इति दिवमेव भगवो राजन्निति होवाचैष वै सुतेजा आत्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्तव सुतं प्रसुतमासुतं कुले दृश्यते॥१॥ अत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्स्यन्नं पश्यति प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते मूर्धा त्वेष आत्मन इति होवाच मूर्धा ते व्यपतिष्यद्यन्मां नागमिष्य इति॥२॥

त्रयोदशः खण्डः

अथ होवाच सत्ययज्ञं पौलुषिं प्राचीनयोग्यं कं त्वमात्मानमुपास्स इत्यादित्यमेव भगवो राजन्निति होवाचैष वै विश्वरूप आत्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्तव बहु विश्वरूपं कुले दृश्यते॥१॥ प्रवृत्तोऽश्वतरीरथो दासीनिष्कोऽत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्स्यन्नं पश्यति प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते चक्षुष्ट्वे तदात्मान इति होवाचान्योऽभविष्यो यन्मां नागमिष्य इति॥२॥

चतुर्दशः खण्डः

अथ होवाचेन्द्रद्युम्नं भाल्लवेयं वैयाघ्रपद्यं कं त्वमात्मानमुपास्स इति वायुमेव भगवो राजन्निति होवाचैष वै पृथग्वर्त्मात्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वां पृथग्बलय आयन्ति पृथग्रथश्रेणयोऽनुयन्ति॥१॥ अत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्स्यन्नं पश्यति प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते प्राणस्त्वेष आत्मन इति होवाच प्राणस्त उदकमिष्यद्यन्मां नागमिष्य इति॥२॥

पञ्चदशः खण्डः

अथ होवाच जनः शार्कराक्ष्यं कं त्वमात्मानमुपास्स इत्याकाशमेव भगवो राजन्निति होवाचैष वै बहुल आत्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं बहुलोऽसि प्रजया च धनेन च॥१॥ अत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्स्यन्नं पश्यति प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते संदेहस्त्वेष आत्मन इति होवाच संदेहस्ते व्यशीर्यद्यन्मां नागमिष्य इति॥२॥

षोडशः खण्डः

अथ होवाच बुडिलमाश्वतरश्चिं वैयाघ्रपद्यं कं त्वमात्मानमुपास्स इत्यप एव भगवो राजन्निति होवाचैष वै रयिरात्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं रयिमान्मुष्टिमानसि॥१॥ अत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्स्यन्नं पश्यति प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते बस्तिस्त्वेष आत्मन इति होवाच बस्तिस्ते व्यभेत्स्यद्यन्मां नागमिष्य इति॥२॥

सप्तदशः खण्डः

अथ होवाचोद्दालकमारुणिं गौतमं कं त्वमात्मानमुपास्स इति पृथिवीमेव भगवो राजन्निति होवाचैष वै प्रतिष्ठात्मा वैश्वानरो यं त्वमात्मानमुपास्से तस्मात्त्वं प्रतिष्ठितोऽसि प्रजया च पशुभिश्च॥१॥ अत्स्यन्नं पश्यसि प्रियमत्स्यन्नं पश्यति प्रियं भवत्यस्य ब्रह्मवर्चसं कुले य एतमेवमात्मानं वैश्वानरमुपास्ते पादौ त्वेतावात्मन इति होवाच पादौ ते व्यम्लास्येतां यन्मां नागमिष्य इति॥२॥

अष्टादशः खण्डः

तान्होवाचैते वै खलु यूयं पृथगिवेममात्मानं वैश्वानरं विद्वांसोऽन्नमत्थ यस्त्वेतमेवं प्रादेशमात्रमभिविमानमात्मानं

वैश्वानरमुपास्ते स सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु भूतेषु
सर्वेष्व्वात्मस्वन्नमति॥१॥ तस्य ह वा एतस्यात्मनो वैश्वानरस्य मूर्धैव
सुतेजाश्चक्षुर्विश्चरूपः प्राणः पृथग्वर्त्मात्मा संदेहो बहुलो बस्तिरेव
रयिः पृथिव्येव पादावुर एव वेदिलोमानि बहिर्हृदयं गार्हपत्यो
मनोऽन्वाहार्यपचन आस्यमाहवनीयः॥२॥

एकोनविंशः खण्डः

तद्यद्भक्तं प्रथममागच्छेत्तद्धोमीयः स यां प्रथमामाहुतिं जुहुयात्तां
जुहुयात्प्राणाय स्वाहेति प्राणस्तृप्यति॥१॥ प्राणो तृप्यति
चक्षुस्तृप्यति चक्षुषि तृप्यत्यादित्यस्तृप्यत्यादित्ये तृप्यति द्यौस्तृप्यति
दिवि तृप्यन्त्यां यत्किं च द्यौश्चादित्यश्चाधि तिष्ठतस्तृप्यति
तस्यानुतृप्तिं तृप्यति प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा
ब्रह्मवर्चसेनेति॥२॥

विंशः खण्डः

अथ यां द्वितीयां जुहुयात्तां जुहुयाद्व्यानाय स्वाहेति
व्यानस्तृप्यति॥१॥ व्याने तृप्यति श्रोत्रं तृप्यति श्रोत्रे तृप्यति
चन्द्रमास्तृप्यति चन्द्रमसि तृप्यति दिशस्तृप्यन्ति दिक्षु तृप्यन्तीषु
यत्किं च दिशश्च चन्द्रमाश्चाधितिष्ठन्ति तत्तृप्यति तस्यानु तृप्तिं
तृप्यति प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेनेति॥२॥

एकविंशः खण्डः

अथ यां तृतीयां जुहुयात्तां जुहुयादपानाय
स्वाहेत्यपानस्तृप्यति॥१॥ अपाने तृप्यति वाक्स्तृप्यति वाचि
तृप्यन्त्यामग्निस्तृप्यत्यग्नौ तृप्यति पृथिवी तृप्यति पृथिव्यां तृप्यन्त्यां
यत्किं च पृथिवी चाग्निश्चाधितिष्ठतस्तृप्यति तस्यानु तृप्तिं तृप्यति
प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेनेति॥२॥

द्वाविंशः खण्डः

अथ यां चतुर्थीं जुहुयात्तां जुहुयात्समानाय स्वाहेति समानस्तृप्यति॥१॥ समाने तृप्यति मनस्तृप्यति मनसि तृप्यति पर्जन्यस्तृप्यति पर्जन्ये तृप्यति विद्युत्तृप्यति विद्युति तृप्यन्त्यां यत्किं च विद्युच्च पर्जन्यश्चाधितिष्ठतस्तृप्यति तस्यानु तृप्तिं तृप्यति प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेनेति॥२॥

त्रयोविंशः खण्डः

अथ यां पञ्चमीं जुहुयात्तां जुहुयादुदानाय स्वाहेत्युदानस्तृप्यति॥१॥ उदाने तृप्यति त्वक्तृप्यति त्वचि तृप्यन्त्यां वायुस्तृप्यति वायौ तृप्यत्याकाशस्तृप्यत्याकाशे तृप्यति यत्किं च वायुश्चाकाशश्चाधितिष्ठतस्तृप्यति तस्यानु तृप्तिं तृप्यति प्रजया पशुभिरन्नाद्येन तेजसा ब्रह्मवर्चसेनेति॥२॥

चतुर्विंशः खण्डः

स य इदमविद्वानग्निहोत्रं जुहोति यथाङ्गारानपोह्य भस्मनि जुहुयात्तादृक्तत्स्यात्॥१॥ अथ य एतदेवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति तस्य सर्वेषु लोकेषु सर्वेषु भूतेषु सर्वेष्वारत्मसु हुतं भवति॥२॥ तद्यथेषीकातूलमग्नौ प्रोतं प्रदूयेतैवन्हास्य सर्वे पाप्मानः प्रदूयन्ते य एतदेवं विद्वानग्निहोत्रं जुहोति॥३॥ तस्मादु हैवं विद्यद्यपि चण्डालायोच्छिष्टं प्रयच्छेदात्मनि हैवास्य तद्वैश्वानरे हुतःस्यादिति तदेषःश्लोकः॥४॥ यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासत एवःसर्वाणि भूतान्यग्निहोत्रमुपासत इत्यग्निहोत्रमुपासत इति॥५॥

॥ इति सप्तमः प्रपाठकः ॥



अष्टमः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

श्वेतकेतुर्हारुणेय आस तःह पितोवाच श्वेतकेतो वस
ब्रह्मचर्यम्। न वै सोम्यास्मत्कुलीनोऽननूच्य ब्रह्मबन्धुरिव
भवतीति॥१॥ स ह द्वादशवर्षं उपेत्य चतुर्विंशतिवर्षः सर्वान्
वेदानधीत्य महामना अनूचानमानी स्तब्ध एयाय। तःह पितोवाच
श्वेतकेतो यन्नु सोम्येदं महामना अनूचानमानी स्तब्धोऽस्युत-
तमादेशमप्राक्ष्यः॥२॥ येनाश्रुतःश्रुतं भवत्यमतं मतमविज्ञातं
विज्ञातमिति। कथं नु भगवः स आदेशो भवतीति॥३॥ यथा
सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातःस्याद्वाचारम्भणं विकारो
नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम्॥४॥ यथा सोम्यैकेन लोहमणिना सर्वं
लोहमयं विज्ञातःस्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं लोहमित्येव
सत्यम्॥५॥ यथा सोम्यैकेन नखनिकृन्तनेन सर्वं काष्णायसं
विज्ञातःस्याद् वाचारम्भणं विकारो नामधेयं कृष्णायसमित्येव
सत्यमेवःसोम्य स आदेशो भवतीति॥६॥ न वै नूनं भगवन्तस्त
एतदवेदिषुर्यद्वेदवेदिष्यन् कथं मे नावक्ष्यन्निति भगवाःस्त्वेव मे
तद्ब्रवीत्विति तथा सोम्येति होवाच॥७॥

द्वितीयः खण्डः

सदेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्। तद्वैक
आहुरसदेवेदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयं तस्मादसतः सज्जायत॥१॥
कुतस्तु खलु सोम्यैवःस्यादिति होवाच कथमसतः सज्जायेतेति।
सत्त्वेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्॥२॥ तदैक्षत बहु स्यां
प्रजायेयेति तत्तेजोऽसृजत। तत्तेज ऐक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति

तदपोऽसृजत। तस्माद्यत्र क्व च शोचति स्वेदते वा पुरुषस्तेजस एव तदध्यापो जायन्ते॥३॥ ता आप ऐक्षन्त बह्व्यः स्याम प्रजायेमहीति ता अन्नमसृजन्त। तस्माद्यत्र क्व वर्षति तदेव भूयिष्ठमन्नं भवत्यन्नं एव तदध्यन्नाद्यं जायते॥४॥

तृतीयः खण्डः

तेषां खल्वेषां भूतानां त्रीण्येव बीजानि भवन्त्याण्डजं जीवजमुद्भिज्जमिति॥१॥ सेयं देवतैक्षत हन्ताहमिमास्तिस्त्रो देवता अनेन जीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरवाणीति॥२॥ तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकां करवाणीति सेयं देवतेमास्तिस्त्रो देवता अनेनैव जीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरोत्॥३॥ तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकामकरोद्यथा तु खलु सोम्येमास्तिस्त्रो देवतास्त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे विजानीहीति॥४॥

चतुर्थः खण्डः

यदग्ने रोहितश्रूपं तेजसस्तद्रूपं यच्छुक्लं तदपां यत्कृष्णं तदन्नस्यापागादग्नेरग्नित्वं वाचारम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि रूपाणीत्येव सत्यम्॥१॥ यदादित्यस्य रोहितश्रूपं तेजसस्तद्रूपं यच्छुक्लं तदपां यत्कृष्णं तदन्नस्यापागादादित्यादादित्यत्वं वाचारम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि रूपाणीत्येव सत्यम्॥२॥ यच्चन्द्रमसो रोहितश्रूपं तेजसस्तद्रूपं यच्छुक्लं तदपां यत्कृष्णं तदन्नस्यापागाच्चन्द्राच्चन्द्रत्वं वाचारम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि रूपाणीत्येव सत्यम्॥३॥ यद्विद्युते रोहितश्रूपं तेजसस्तद्रूपं यच्छुक्लं तदपां यत्कृष्णं तदन्नस्यापागाद्विद्युतो विद्युत्त्वं वाचारम्भणं विकारो नामधेयं त्रीणि रूपाणीत्येव सत्यम्॥४॥ एतद्ध स्म वै तद्विद्वांस आहुः पूर्वे महाशाला महाश्रोत्रिया न नोऽद्य कश्चनाश्रुतममतम-विज्ञातमुदाहरिष्यतीति ह्येभ्यो विदाञ्जकः॥५॥

यद् रोहितमिवाभूदिति तेजसस्तद्रूपमिति तद्विदाञ्चक्रुर्यदु
शुक्लमिवाभूदित्यपाःरूपमिति तद्विदाञ्चक्रुर्यदु कृष्णमिवाभूदि-
त्यन्नस्य रूपमिति तद्विदाञ्चक्रुः॥६॥ यद् विज्ञातमिवाभूदि-
त्येतासामेव देवतानाःसमास इति तद्विदाञ्चक्रुर्यथा नु खलु
सोम्येमास्तिस्त्रो देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तन्मे
विजानीहीति॥७॥

पञ्चमः खण्डः

अन्नमशितं त्रेधा विधीयते तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत्पुरीषं
भवति यो मध्यमस्तन्मांसं योऽणिष्ठस्तन्मनः॥१॥ आपः
पीतास्त्रेधा विधीयन्ते तासां यः स्थविष्ठो धातुस्तन्मूत्रं भवति यो
मध्यमस्तल्लोहितं योऽणिष्ठः स प्राणः॥२॥ तेजोऽशितं त्रेधा
विधीयते तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तदस्थि भवति यो मध्यमः स
मज्जा योऽणिष्ठः सा वाक्॥३॥ अन्नमयःहि सोम्य मन आपोमयः
प्राणस्तेजोमयी वागिति भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत्विति तथा
सोम्येति होवाच॥४॥

षष्ठः खण्डः

दध्नः सोम्य मध्यमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति
तत्सर्पिर्भवति॥१॥ एवमेव खलु सोम्यान्नस्याश्रयमानस्य योऽणिमा
स ऊर्ध्वः समुदीषति तन्मनो भवति॥२॥ अपाःसोम्य पीयमानानां
योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति सा प्राणो भवति॥३॥ तेजसः
सोम्याश्रयमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति सा
वाग्भवति॥४॥ अन्नमयःहि सोम्य मन आपोमयः प्राणस्तेजोमयी
वागिति भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति
होवाच॥५॥

सप्तमः खण्डः

षोडशकलः सोम्यः पुरुषः पञ्चदशाहानि माशीः काममपः
 पिबापोमयः प्राणो न पिबतो विच्छेत्स्यत इति॥१॥ स ह
 पञ्चदशाहानि नाशाथ हैनमुपससाद किं ब्रवीमि भो इत्यृचः सोम्य
 यजूंषि सामानीति स होवाच न वै मा प्रतिभान्ति भो इति॥२॥
 तश्होवाच यथा सोम्य महतोऽभ्याहितस्यैकोऽङ्गारः खद्योतमात्रः
 परिशिष्टः स्यात्तेन ततोऽपि न बहु दहेदेवऽसोम्य ते षोडशानां
 कलानामेका कलातिशिष्टा स्यात्तयैतर्हि वेदान्नानुभवस्यशानाथ मे
 विज्ञास्यसीति॥३॥ स हाशाथ हैनमुपससाद तश्ह यत्किं च पप्रच्छ
 सर्वऽह प्रतिपेदे॥४॥ तश्होवाच यथा सोम्य महतोऽभ्याहि-
 तस्यैकमङ्गारं खद्योतमात्रं परिशिष्टं तं तृणैरुपसमाधाय
 प्राज्वलयेत्तेन ततोऽपि बहु दहेत्॥५॥ एवऽसोम्य ते षोडशानां
 कलानामेका कलातिशिष्टाऽभूत्सान्नेनोपसमाहिता प्राज्वाली
 तयैतर्हि वेदाननुभवस्यन्नमयऽहि सोम्य मन आपोमयः
 प्राणस्तेजोमयी वागिति तद्धास्य विजज्ञाविति विजज्ञाविति॥६॥

अष्टमः खण्डः

उद्दालको हारुणिः श्वेतकेतुं पुत्रमुवाच स्वप्नान्तं मे सोम्य
 विजानीहीति यत्रैतत्पुरुषः स्वपिति नाम सता सोम्य तदा सम्पन्नो
 भवति स्वमपीतो भवति तस्मादेनऽस्वपितीत्याचक्षते स्वऽह्यपीतो
 भवति॥१॥ स यथा शकुनिः सूत्रेण प्रबद्धो दिशं दिशं
 पतित्वान्यत्रायतनमलब्ध्वा बन्धनमेवोपश्रयत एवमेव खलु सोम्य
 तन्मनो दिशं दिशं पतित्वान्यत्रायतनमलब्ध्वा प्राणमेवोपश्रयते
 प्राणबन्धनऽहि सोम्य मन इति॥२॥ अशनापिपासे मे सोम्य
 विजानीहीति यत्रैतत्पुरुषोऽंशिशिषति नामाप एव तदंशितं नयन्ते
 तद्यथा गोनाथोऽश्वनाथः पुरुषनाथ इत्येवं तदप आचक्षतेऽशनायेति

तत्रैतच्छुद्धमुत्पतितः सोम्य विजानीहि नेदममूलं भविष्यतीति॥३॥
 तस्य क्व मूलः स्यादन्यत्रान्नादेवमेव खलु सोम्यान्नेव शुङ्गेनापो
 मूलमन्विच्छाद्भिः सोम्य शुङ्गेन तेजो मूलमन्विच्छ तेजसा सोम्य
 शुङ्गेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सदायतनाः
 सत्यप्रतिष्ठाः॥४॥ अथ यत्रैतत्पुरुषः पिपासति नाम तेज एव
 तत्पीतं नयते तद्यथा गोनायोऽश्वनायः पुरुषनाय इत्येवं तत्तेज
 आचष्ट उदन्येति तत्रैतदेव शुद्धमुत्पतितः सोम्य विजानीहि नेदममूलं
 भविष्यतीति॥५॥ तस्य क्व मूलः स्यादन्यत्राद्भ्योऽद्भिः सोम्य शुङ्गेन
 तेजो मूलमन्विच्छ तेजसा सोम्य शुङ्गेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूलाः
 सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत्यप्रतिष्ठा यथा नु खलु
 सोम्येमास्तिस्त्रो देवताः पुरुषं प्राप्य त्रिवृत्त्रिवृदेकैका भवति तदुक्तं
 पुरस्तादेव भवत्यस्य सोम्य पुरुषस्य प्रयतो वाङ्मनसि सम्पद्यते
 मनः प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां देवतायाम्॥६॥ स य
 एषोऽणिमैतदात्म्यमिदः सर्वं तत्सत्यः स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो
 इति भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥७॥

नवमः खण्डः

यथा सोम्य मधु मधुकृतो निस्तिष्ठन्ति नानात्ययानां
 वृक्षाणां रसान्समवहारमेकतां रसं गमयन्ति॥१॥ ते तथा तत्र न
 विवेकं लभन्तेऽमुष्याहं वृक्षस्य रसोऽस्म्यमुष्याहं वृक्षस्य
 रसोऽस्मीत्येव खलु सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सति सम्पद्य न विदुः
 सति सम्पद्यामहं इति॥२॥ त इह व्याघ्रो वा सिंहो वा वृको वा
 वराहो वा कीटो वा पतङ्गो वा दंशो वा मशको वा यद्यद्भवन्ति
 तदा भवन्ति॥३॥ स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदः सर्वं तत्सत्यः स
 आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत्विति
 तथा सोम्येति होवाच॥४॥

दशमः खण्डः

इमाः सोम्य नद्यः पुरस्तात्प्राच्यः स्यन्दन्ते पश्चात्पृथीच्यस्ताः समुद्रात्समुद्रमेवापियन्ति स समुद्र एव भवति ता यथा तत्र न विदुरियमहमस्मीयमहमस्मीति॥१॥ एवमेव खलु सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः सत आगम्य न विदुः सत आगच्छामह इति त इह व्याघ्रो वा सिंहो वा वृको वा वराहो वा कीटो वा पतङ्गो वा दंशो वा मशको वा यद्यद्भवन्ति तदाभवन्ति॥२॥ स य एषोऽणिमै- तदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥३॥

एकादशः खण्डः

अस्य सोम्य महतो वृक्षस्य यो मूलेऽभ्याहन्याज्जीवन्त्रवेद्यो मध्येऽभ्याहन्याज्जीवन्त्रवेद्याऽग्रेऽभ्याहन्याज्जीवन्त्रवेत्स एष जीवेनात्मनानुप्रभूतः पेपीयमानो मोदमानस्तिष्ठति॥१॥ अस्य यदेकांशाखां जीवो जहात्यथ सा शुष्यति द्वितीयां जहात्यथ सा शुष्यति तृतीयां जहात्यथ सा शुष्यति सर्वं जहाति सर्वः शुष्यति॥२॥ एवमेव खलु सोम्य विन्दीति होवाच जीवापेतं वाव किलेदं म्रियते न जीवो म्रियत इति स य एषोऽणिमै- तदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान्विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥३॥

द्वादशः खण्डः

न्यग्रोधफलमत आहरेतीदं भगव इति भिन्द्वीति भिन्नं भगव इति किमत्र पश्यसीत्यण्व्य इवेमा धाना भगव इत्यासामङ्गैकां भिन्द्वीति भिन्ना भगव इति किमत्र पश्यसीति न किञ्चन भगव इति॥१॥ तं होवाच यं वै सोम्यैतमणिमानं न निभालयस एतस्य वै

सोम्यैषोऽणिम्न एवं महान्यग्रोधस्तिष्ठति श्रद्धत्स्व सोम्येति॥२॥ स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान् विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥३॥

त्रयोदशः खण्डः

लवणमेतदुदकेऽवधायाथ मा प्रातरुपसीदथा इति स ह तथा चकार तं होवाच यद्दोषा लवणमुदकेऽवधा अङ्ग तदाहरेति तद्भावमृश्य न विवेद॥१॥ यथा विलीनमेवाङ्गास्यान्तादाचामेति कथमिति लवणमिति मध्यादाचामेति कथमिति लवणमित्यन्तादाचामेति कथमिति लवणमित्यभिप्रास्यैतदथ-
मोपसीदथा इति तद्ध तथा चकार तच्छ्रुत्संवर्तते तं होवाचात्र वाव किल सत्सोम्य न निभालयसेऽत्रैव किलेति॥२॥ स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान् विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥३॥

चतुर्दशः खण्डः

यथा सोम्य पुरुषं गन्धारेभ्योऽभिनद्धाक्षमानीय तं ततोऽतिजने विसृजेत्स यथा तत्र प्राङ् वोदङ् वाधराङ् वा प्रत्यङ् वा प्रध्मायीताभिनद्धाक्ष आनीतोऽभिनद्धाक्षो विसृष्टः॥१॥ तस्य यथाभिनहनं प्रमुच्य प्रब्रूयादेतां दिशं गन्धारा एतां दिशं व्रजेति स ग्रामाद्ग्रामं पृच्छन् पण्डितो मेधावी गन्धारानेवोपसंपद्ये तैवमेवेहाचार्यवान् पुरुषो वेद तस्य तावदेव चिरं यावन्न विमोक्ष्येऽथ सम्पत्स्य इति॥२॥ स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान् विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥३॥

पञ्चदशः खण्डः

पुरुषः सोम्यो तोपतापिनं ज्ञातयः पर्युपासते जानासि मां जानासि मामिति। तस्य यावन्न वाङ्मनसि संपद्यते मनः प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां देवतायां तावज्जानाति॥१॥ अथ यदास्य वाङ्मनसि संपद्यते मनः प्राणे प्राणस्तेजसि तेजः परस्यां देवतायामथ न जानाति॥२॥ स य एषोऽणिमैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यः स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति भूय एव मा भगवान् विज्ञापयत्विति तथा सोम्येति होवाच॥३॥

षोडशः खण्डः

पुरुषः सोम्यो त हस्तगृहीतमानन्त्यपहार्षीत्स्तेयमकार्षीत्परशुमस्मै तपतेति स यदि तस्य कर्ता भवति तत एवानृतामात्मानं कुरुते सोऽनृताभिसन्धोऽनृतेनात्मानमन्तर्धाय परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति स दह्यतेऽथ हन्यते॥१॥ अथ यदि तस्याकर्ता भवति तत एव सत्यमात्मानं कुरुते स सत्याभिसन्धः सत्येनात्मानमन्तर्धाय परशुं तप्तं प्रतिगृह्णाति स न दह्यतेऽथ मुच्यते॥२॥ स यथा तत्र नादाह्येतैतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यः स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति तद्धास्य विजज्ञाविति विजज्ञाविति॥३॥

॥ इति अष्टमः प्रपाठकः ॥



नवमः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

ॐ अधीहि भगव इति होपससाद सनत्कुमारं
नारदस्तः होवाच यद्वेत्य तेन नोपसीद ततस्त ऊर्ध्वं वक्ष्यामीति स
होवाच॥१॥ ऋग्वेदं भगवोऽध्येमि यजुर्वेदः सामवेदमाथर्वणं
चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यः राशिं दैवं निधिं
वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां क्षत्रविद्यां
नक्षत्रविद्यां सर्पदेवजनविद्यामेतद्भगवोऽध्येमि॥२॥ सोऽहं भगवो
मन्त्रं विदेवास्मि नात्मविच्छ्रुतः होव मे भगवद्दुःशेभ्यस्तरति
शोकमात्मविदिति सोऽहं भगवः शोचामि तं मा भगवाञ्छोकस्य
पारं तारयत्विति तः होवाच यद्वै किञ्चैतदध्यगीष्ठा नामैवैतत्॥३॥
नाम वा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेद आथर्वणश्चतुर्थ इतिहासपुराणः
पञ्चमो वेदानां वेदः पित्र्यो राशिर्देवो निधिर्वाकोवाक्यमेकायनं
देवविद्या ब्रह्मविद्या भूतविद्या क्षत्रविद्या नक्षत्रविद्याया
सर्पदेवजनविद्याया नामैवैतन्नामोपास्स्वेति॥४॥ स यो नाम
ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्नाम्नो गतं तत्रास्य यथा कामचारो भवति यो
नाम ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो नाम्नो भूय इति नाम्नो वाव
भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्ब्रवीत्विति॥५॥

द्वितीयः खण्डः

वाग्वाव नाम्नो भूयसी वाग्वा ऋग्वेदं विज्ञापयति यजुर्वेदः-
सामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं पित्र्यः
राशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां भूतविद्यां
क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याः सर्पदेवजनविद्यां दिवं च पृथिवीं च वायुं
चाकाशं चापश्च तेजश्च देवाँश्च मनुष्याँश्च पशूँश्च वयांसि च

तृणवनस्पतीञ्चापदान्याकीटपतङ्गपिपीलिकं धर्मं चाधर्मं च सत्यं
चानृतं च साधु चासाधु च हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं च यद्वै वाङ्-
नाभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो व्यज्ञापयिष्यन्न सत्यं नानृतं न साधु
नासाधु न हृदयज्ञो नाहृदयज्ञो वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति
वाचमुपास्वेति॥१॥ स यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वाचो गतं
तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो वाचं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो
वाचो भूय इति वाचो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

तृतीयः खण्डः

मनो वाव वाचो भूयो यथा वै द्वे वामलके द्वे वा कोले द्वौ
वाऽक्षौ मुष्टिरनुभवत्येवं वाचं च नाम च मनोऽनुभवति स यदा
मनसा मनस्यति मन्त्रानधीयीयेत्यथाधीते कर्माणि कुर्वीयेत्यथ
कुरुते पुत्राँश्च पशूँश्चेच्छेयेत्यथेच्छत इमं च लोकममुं
चेच्छेयेत्यथेच्छते मनो ह्यात्मा मनो हि लोको मनो हि ब्रह्म मन
उपास्वेति॥१॥ स यो मनो ब्रह्मेत्युपास्ते यावन्मनसो गतं तत्रास्य
यथाकामचारो भवति यो मनो ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो मनसो
भूय इति मनसो वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

चतुर्थः खण्डः

सङ्कल्पो वाव मनसो भूयान्यदा वै सङ्कल्पयतेऽथ मनस्यत्यथ
वाचमीरयति तामु नाम्नीरयति नाम्नि मन्त्रा एकं भवन्ति मन्त्रेषु
कर्माणि॥१॥ तानि ह वा एतानि सङ्कल्पैकायनानि
सङ्कल्पात्मकानि सङ्कल्पे प्रतिष्ठितानि समक्लृपतां द्यावापृथिवी
समक्लृपेतां वायुश्चाकाशं च समक्लृपन्तापश्च तेजश्च तेषां-
संक्लृप्त्यै वर्ष सङ्कल्पते वर्षस्य संक्लृप्त्या अन्नः सङ्कल्पतेऽन्नस्य
संक्लृप्त्यै प्राणाः सङ्कल्पन्ते प्राणानां संक्लृप्त्यै मन्त्राः सङ्कल्पन्ते

मन्त्राणां संवत्सृज्यै कर्माणि सङ्कल्पन्ते कर्मणां संवत्सृज्यै लोकः
 सङ्कल्पते लोकस्य संवत्सृज्यै सर्वं सङ्कल्पते स एष सङ्कल्पः
 सङ्कल्पमुपास्वेति॥२॥ स यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्ते संवत्सृज्यान् वै
 स लोकान् ध्रुवान्ध्रुवः प्रतिष्ठितान् प्रतिष्ठितोऽव्यथमाना-
 नव्यथमानोऽभिसिध्यति। यावत्सङ्कल्पस्य गतं तत्रास्य
 यथाकामचारो भवति यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवः
 सङ्कल्पाद्भूय इति सङ्कल्पाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्
 ब्रवीत्विति॥३॥

पञ्चमः खण्डः

चित्तं वाव सङ्कल्पाद्भूयो यदा वै चेतयतेऽथ सङ्कल्पयतेऽथ
 मनस्यत्यथ वाचमीरयति तामु नाम्मीरयति नाम्नि मन्त्रा एकं
 भवन्ति मन्त्रेषु कर्माणि॥१॥ तानि ह वा एतानि चित्तैकायनानि
 चित्तात्मानि चित्ते प्रतिष्ठितानि तस्माद्यद्यपि बहुविदचित्तो भवति
 नायमस्तीत्येवैनमाहुर्दयं वेद यद्वा अयं विद्वान्नेत्यमचित्तः
 स्यादित्यथ यद्यल्पविच्चित्तवान्भवति तस्मा एवोत शुश्रूषन्ते चित्त-
 ह्येवैषामेकायनं चित्तमात्मा चित्तं प्रतिष्ठा चित्तमुपास्वेति॥२॥ स
 यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते चित्तान् वै स लोकान् ध्रुवान्ध्रुवः
 प्रतिष्ठितान्प्रतिष्ठितोऽव्यथमानानव्यथमानोऽभिसिध्यति। याव-
 च्चित्तस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यश्चित्तं
 ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवश्चित्ताद्भूय इति चित्ताद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे
 भगवान् ब्रवीत्विति॥३॥

षष्ठः खण्डः

ध्यानं वाव चित्ताद्भूयो ध्यायतीव पृथिवी ध्यायतीवान्तरिक्षं
 ध्यायतीव द्यौर्ध्यायन्तीवापो ध्यायन्तीव पर्वता देवमनुष्यास्तस्माद्य
 इह मनुष्याणां महतां प्राप्नुवन्ति ध्यानापादांशा इवैव ते भवन्त्यथ

येऽल्पाः कलहिनः पिशुना उपवादिनस्तेऽथ ये प्रभवो
ध्यानापादाःशा इवैव ते भवन्ति ध्यानमुपास्वेति॥१॥ स यो ध्यानं
ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्ध्यानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो
ध्यानं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो ध्यानाद्भूय इति ध्यानाद्वाव
भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

सप्तमः खण्डः

विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयो विज्ञानेन वा ऋग्वेदं विजानाति
यजुर्वेदःसामवेदमाथर्वणं चतुर्थमितिहासपुराणं पञ्चमं वेदानां वेदं
पित्र्यःराशिं दैवं निधिं वाकोवाक्यमेकायनं देवविद्यां ब्रह्मविद्यां
भूतविद्यां क्षत्रविद्यां नक्षत्रविद्याःसर्पदेवजनविद्यां दिवं च पृथिवीं च
वायुं चाकाशं चापश्च तेजश्च देवाँश्च मनुष्याँश्च पशूँश्च वयाँसि च
तृणवनस्पतीञ्छ्वापदान्या कीटपतङ्गपिपीलिकं धर्मं चाधर्मं च सत्यं
चानृतं च साधु चासाधु च हृदयज्ञं चाहृदयज्ञं चान्नं च रसं चेमं च
लोकममुं च विज्ञानेनैव विजानाति विज्ञानमुपास्वेति॥१॥ स यो
विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्ते विज्ञानवतो वै स लोकान् ज्ञानवतोऽभि-
सिध्यति यावद्विज्ञानस्य गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यो
विज्ञानं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो विज्ञानाद्भूय इति विज्ञानाद्वाव
भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

अष्टमः खण्डः

बलं वाव विज्ञानाद्भूयोऽपि ह शतं विज्ञानवतामेको
बलवानाकम्पयते। स यदा बली भवत्यथोत्थाता भवत्युत्तिष्ठन्
परिचरिता भवति परिचरन्नुपसत्ता भवत्युपसीदन् द्रष्टा भवति श्रोता
भवन्ति मन्ता भवति बोद्धा भवति कर्ता भवति विज्ञाता भवति।
बलेन वै पृथिवी तिष्ठति बलेनान्तरिक्षं बलेन द्यौर्बलेन पर्वता बलेन
देवमनुष्या बलेन पशवश्च वयाँसि च तृणवनस्पतयः

श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलिकं बलेन लोकस्तिष्ठति बलमुपा-
स्स्वेति॥१॥ स यो बले ब्रह्मेत्युपास्ते यावद्वलस्य गतं तत्रास्य
यथाकामचारो भवति यो बलं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवो बलाद्भूय
इति बलाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

नवमः खण्डः

अन्नं वाव बलाद्भूयस्तस्माद्यद्यपि दशरात्रीर्नाशनीयाद्यद्युह
जीवेदथवाद्रष्टाश्रोतामन्ताबोद्धाकर्ताविज्ञाता भवत्यथान्नस्यायै द्रष्टा
भवति श्रोता भवति मन्ता भवति बोद्धा भवति कर्ता भवति
विज्ञाता भवत्यन्नमुपास्स्वेति॥१॥ स योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽन्नवतो वै
स लोकान् पानवतोऽभिसिध्यति यावदन्नस्य गतं तत्रास्य
यथाकामचारो भवति योऽन्नं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवोऽन्नाद्भूय
इत्यन्नाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

दशमः खण्डः

आपो वावान्नाद्भूयस्तस्माद्यदा सुवृष्टिर्न भवति व्याधीयन्ते
प्राणा अन्नं कनीयो भविष्यतीत्यथ यदा सुवृष्टिर्भवत्यानन्दिनः
प्राणा भवन्त्यन्नं बहु भविष्यतीत्याप एवेमा मूर्ता येयं पृथिवी
यदन्तरिक्षं यद्द्यूरीर्यत्पर्वता यद्देवमनुष्या यत्पशवश्च वयांसि च
तृणवनस्पतयः श्वापदान्याकीटपतङ्गपिपीलिकमाप एवेमा मूर्ता
अप उपास्स्वेति॥१॥ स योऽपो ब्रह्मेत्युपास्त आप्नोति सर्वान्कामान्
स्तृप्तिमान् भवति यावदपां गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति
योऽपो ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवोऽद्भ्यो भूय इत्यद्भ्यो वाव
भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

एकादशः खण्डः

तेजो वावाद्भ्यो भूयस्तद्वा एतद्वायुमागृह्याकाशमभितपति
तदाहुर्निशोचति नितपति वर्षिष्यति वा इति तेज एव तत्पूर्वं

दर्शयित्वाथापः सृजते तदेतदूर्ध्वाभिश्च तिरश्चीभिश्च विद्युद्भिरा-
ह्लादाश्चरन्ति तस्मादाहुर्विद्योतते स्तनयति वर्षिष्यति वा इति तेज
एव तत्पूर्वं दर्शयित्वाथापः सृजते तेज उपास्स्वेति॥१॥ स यस्तेजो
ब्रह्मेत्युपास्ते तेजस्वी वै स तेजस्वतो लोकान् भास्वतोऽ-
पहततमस्कानभिसिध्यति यावत्तेजसो गतं तत्रास्य यथाकामचारो
भवति। यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगवस्तेजसो भूय इति तेजसो
वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

द्वादशः खण्डः

आकाशो वाव तेजसो भूयानाकाशे वै सुर्याचन्द्रमसाबुधौ
विद्युन्नक्षत्राण्यग्निराकाशेनाह्वयत्याकाशेन शृणोत्याकाशेन
प्रतिशृणोत्याकाशे रमत आकाशे न रमत आकाशे जायत
आकाशमभिजायत आकाशमुपास्स्वेति॥१॥ स य आकाशं
ब्रह्मेत्युपास्त आकाशवतो वै स लोकान् प्रकाशवतोऽ-
सम्बाधानुरुगायवतोऽभिसिध्यति यावदाकाशस्य गतं तत्रास्य
यथाकामचारो भवति य आकाशं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगव
आकाशाद्भूय इत्याकाशाद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्
ब्रवीत्विति॥२॥

त्रयोदशः खण्डः

स्मरो वावाकाशाद्भूयस्तस्माद्यद्यपि बहव आसीरन्न स्मरन्तो
नैव ते कञ्चन शृणुयुर्न मन्वीरन्न विजानीरन्यदा वाव ते स्मरेयुरथ
शृणुयुरथ मन्वीरन्नथ विजानीरन्स्मरेण वै पुत्रान्विजानाति स्मरेण
पशून् स्मरमुपास्स्वेति॥१॥ सः य स्मरं ब्रह्मेत्युपास्ते यावत्स्मरस्य
गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति यः स्मरं ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति
भगवः स्मराद्भूयः इति स्मराद्वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान्
ब्रवीत्विति॥२॥

चतुर्दशः खण्डः

आशा वाव स्मराद्भूयस्याशेद्धो वै स्मरो मन्त्रानधीते कर्माणि कुरुते पुत्राँश्च पशूँश्चैच्छत इमं च लोकममुं चेच्छत आशामुपास्वेति॥१॥ स य आशां ब्रह्मेत्युपास्त आशयास्य सर्वे कामाः समृध्यन्त्यमोघा हास्याशिषो भवन्ति यावदाशाया गतं तत्रास्य यथाकामचारो भवति य आशां ब्रह्मेत्युपास्तेऽस्ति भगव आशाया भूय इत्याशाया वाव भूयोऽस्तीति तन्मे भगवान् ब्रवीत्विति॥२॥

पञ्चदशः खण्डः

प्राणो वा आशाया भूयान्यथा वा अरा नाभौ समर्पिता एवमस्मिन्प्राणे सर्वं समर्पितम्। प्राणः प्राणेन याति प्राणः प्राणं ददाति प्राणाय ददाति। प्राणो ह पिता प्राणो माता प्राणो भ्राता प्राणः स्वसा प्राण आचार्यः प्राणो ब्राह्मणः॥१॥ स यदि पितरं वा मातरं वा भ्रातरं वा स्वसारं वाचार्यं वा ब्राह्मणं वा किञ्चिद्भूशमिव प्रत्याह धिक्त्वास्त्वित्येवैनमाहुः पितृहा वै त्वमसि मातृहा वै त्वमसि भ्रातृहा वै त्वमसि स्वसृहा वै त्वमस्याचार्यहा वै त्वमसि ब्राह्मणहा वै त्वमसीति॥२॥ अथ यद्यप्येनानुत्क्रान्तप्राणाञ्छूलेन समासं व्यतिषं दहेन्नैवैनं ब्रूयुः पितृहासीति न मातृहासीति न भ्रातृहासीति न स्वसृहासीति नाचार्यहासीति न ब्राह्मणहासीति॥३॥ प्राणो होवैतानि सर्वाणि भवति स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नतिवादी भवति तं चेद्ब्रूयुरतिवाद्यसीत्यतिवाद्यस्मीति ब्रूयान्नापहुवीत॥४॥

षोडशः खण्डः

एष तु वा अतिवदति यः सत्येनातिवदति सोऽहं भगवः सत्येनातिवदानीति सत्यं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति सत्यं भगवो विजिज्ञास इति॥१॥

सप्तदशः खण्डः

यदा वै विजानात्यथ सत्यं वदति नाविजानन्सत्यं वदति
विजानन्नेव सत्यं वदति विज्ञानं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति विज्ञानं
भगवो विजिज्ञास इति॥१॥

अष्टादशः खण्डः

यदा वै मनुतेऽथे विजानाति नामत्वा विजानाति मत्त्वैव
विजानाति मतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति। मतिं भगवो विजिज्ञास
इति॥१॥

एकोनविंशः खण्डः

यदा वै श्रद्धात्यथ मनुते नाश्रद्धन्मनुते श्रद्धदेव मनुते श्रद्धा
त्वेव विजिज्ञासितव्येति। श्रद्धां भगवो विजिज्ञास इति॥१॥

विंशः खण्डः

यदा वै निस्तिष्ठत्यथ श्रद्धधाति नानिस्तिष्ठञ्छ्रद्धधाति
निस्तिष्ठन्नेव श्रद्धधाति निष्ठा त्वेव विजिज्ञासितव्येति। निष्ठां भगवो
विजिज्ञास इति॥१॥

एकविंशः खण्डः

यदा वै करोत्यथ निस्तिष्ठति नाकृत्वा निस्तिष्ठति कृत्वैव
निस्तिष्ठति कृतिस्त्वेव विजिज्ञासितव्येति। कृतिं भगवो विजिज्ञास
इति॥१॥

द्वाविंशः खण्डः

यदा वै सुखं लभतेऽथ करोति नासुखं लब्ध्वा करोति
सुखमेव लब्ध्वा करोति सुखं त्वेव विजिज्ञासितव्यमिति। सुखं
भगवो विजिज्ञास इति॥१॥

त्रयोविंशः खण्डः

यो वै भूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति भूमैव सुखं भूमा त्वेव विजिज्ञासितव्य इति। भूमानं भगवो विजिज्ञास इति॥१॥

चतुर्विंशः खण्डः

यत्र नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति स भूमाथ यत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोत्यन्यद्विजानाति तदल्पं यो वै भूमा तदमृतमथ यदल्पं तन्मर्त्यम्। स भगवः कस्मिन् प्रतिष्ठित इति। स्वे महिम्नि यदि वा न महिम्नीति॥१॥ गो-अश्वमिह महिमेत्याचक्षते हस्तिहिरण्यं दासभार्यं क्षेत्राण्यायतनानीति नाहमेवं ब्रवीमि ब्रवीमीति होवाचान्यो ह्यन्यस्मिन् प्रतिष्ठित इति॥२॥

पञ्चविंशः खण्डः

स एवाधस्तात्स उपरिष्ठात्स पश्चात्स पुरस्तात्स दक्षिणतः स उत्तरतः स एवेदःसर्वमित्यथातोऽहङ्कारादेश एवाहमेवाधस्तादहमुपरिष्ठादहं पश्चादहं पुरस्तादहं दक्षिणतोऽहमुत्तरतोऽहमेवेदःसर्वमिति॥१॥ अथात आत्मादेश एव आत्मैवाधस्तादात्मोपरिष्ठादात्मा पश्चादात्मा पुरस्तादात्मा दक्षिणत आत्मोत्तरत आत्मैवेदःसर्वमिति। स वा एष एवं पश्यन्नेवं मन्वान एवं विजानन्नात्मरतिरात्मक्रीड आत्ममिथुन आत्मानन्दः स स्वराड्भवति तस्य सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति अथ येऽन्यथातो विदुरन्यराजानस्ते क्षय्यलोका भवन्ति तेषां सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवति॥२॥

षड्विंशः खण्डः

तस्य ह वा एतस्यैवं पश्यत एवं मन्वानस्यैवं विजानत आत्मतः प्राण आत्मत आशात्मतः स्मर आत्मत आकाश

आत्मतस्तेज आत्मत आप आत्मत आविर्भवतिरोभावा-
वात्मतोऽन्नमात्मतो बलमात्मतो विज्ञानमात्मतो ध्यानमात्म-
तश्चित्तमात्मतः सङ्कल्प आत्मतो मन आत्मतो वागात्मतो नामात्मतो
मन्त्रा आत्मतः कर्माण्यात्मत एवेदः सर्वमिति॥१॥ तदेष श्लोको न
पश्यो मृत्युं पश्यति न रोगं नोत दुःखः ताः सर्वं ह पश्यः पश्यति
सर्वमाप्नोति सर्वं श इति। स एकधा भवति त्रिधा भवति पञ्चधा
सप्तधा नवधा चैव पुनश्चैकादशः स्मृतः शतं च दश चैकश्च
सहस्राणि च विंशतिराहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा
स्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्वग्रन्थीनां विप्रमोक्षस्तस्मै मृदितकषायाय
तमसस्पारं दर्शयति भगवान्सनत्कुमारस्तः स्कन्द इत्याचक्षते तं
स्कन्द इत्याचक्षते॥२॥

॥ इति नवमः प्रपाठकः ॥



दशमः प्रपाठकः

प्रथमः खण्डः

ॐ अथ यदिदमस्मिन्नब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म
दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशस्तस्मिन्यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं तद्वाव
विजिज्ञासितव्यमिति॥१॥ तं चेद्ब्रूयुर्यदिदमस्मिन्नब्रह्मपुरे दहरं
पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशः किं तदत्र विद्यते
यदन्वेष्टव्यं यद्वाव विजिज्ञासितव्यमिति स ब्रूयात्॥२॥ यावान्वा
अयमाकाशस्तावानेषोऽन्तर्हृदय आकाश उभे अस्मिन्द्वावापृथिवी
अन्तरेव समाहिते उभावग्निश्च वायुश्च सूर्याचन्द्रमसावुभौ
विद्युन्नक्षत्राणि यच्चस्येहास्ति यच्च नास्ति सर्वं
तदस्मिन्समाहितमिति॥३॥ तं चेद्ब्रूयुरस्मिन्श्चेदिदं ब्रह्मपुरे
सर्वं समाहितं सर्वाणि च भूतानि सर्वे च कामा यदैतज्जरा
वाप्नोति प्रध्वंसते वा किं ततोऽतिशिष्यत इति॥४॥ स ब्रूयान्नास्य
जरयैतज्जीर्यति न वधेनास्य हन्यत एतत्सत्यं ब्रह्मपुरमस्मिन्कामाः
समाहिता एष आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको
विजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसङ्कल्पो यथा ह्येवेह प्रजा
अन्वाविशन्ति यथानुशासनं यं यमन्तमभिकामा भवन्ति यं जनपदं
यं क्षेत्रभागं तं तमेवोपजीवन्ति॥५॥ तद्यथेह कर्मजितो लोकः
क्षीयत एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः क्षीयते तद्य इहात्मानमनुविद्य
व्रजन्त्येताँश्च सत्यान्कामाँस्तेषां सर्वेषु लोकेष्वकामचारो भवत्यथ
य इहात्मानमनुविद्य व्रजन्त्येताँश्च सत्यान् कामाँस्तेषां सर्वेषु लोकेषु
कामचारो भवति॥६॥

द्वितीयः खण्डः

स यदि पितृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य पितरः
समुत्तिष्ठन्ति तेन पितृलोकेन संपन्नो महीयते॥१॥

अथ यदि मातृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य मातरः समुत्तिष्ठन्ति तेन मातृलोकेन संपन्नो महीयते॥२॥ अथ यदि भ्रातृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य भ्रातरः समुत्तिष्ठन्ति तेन भ्रातृलोकेन संपन्नो महीयते॥३॥ अथ यदि स्वसृलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य स्वसारः समुत्तिष्ठन्ति तेन स्वसृलोकेन संपन्नो महीयते॥४॥ अथ यदि सखिलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य सखायः समुत्तिष्ठन्ति तेन सखिलोकेन संपन्नो महीयते॥५॥ अथ यदि गन्धमाल्यलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य गन्धमाल्ये समुत्तिष्ठतस्तेन गन्धमाल्यलोकेन संपन्नो महीयते॥६॥ अथ यद्यन्नपानलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्यान्नपाने समुत्तिष्ठतस्तेनान्नपानलोकेन संपन्नो महीयते॥७॥ अथ यदि गीतवादित्रलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य गीतवादित्रे समुत्तिष्ठतस्तेन गीतवादित्रलोकेन संपन्नो महीयते॥८॥ अथ यदि स्त्रीलोककामो भवति सङ्कल्पादेवास्य स्त्रियः समुत्तिष्ठन्ति तेन स्त्रीलोकेन संपन्नो महीयते॥९॥ यं यमन्तमभिकामो भवति यं कामं कामयते सोऽस्य सङ्कल्पादेव समुत्तिष्ठति तेन संपन्नो महीयते॥१०॥

तृतीयः खण्डः

त इमे सत्याः कामा अनृतापिधानास्तेषाः सत्यानाः सतामनृतमपिधानं यो यो ह्यस्येतः प्रैति न तमिह दर्शनाय लभते॥१॥ अथ ये चास्येह जीवा ये च प्रेता यच्चान्यदिच्छन्न लभते सर्वं तदत्र गत्वा विन्दतेऽत्र ह्यस्यैते सत्याः कामा अनृतापिधानास्तद्यथापि हिरण्यनिधिं निहितमक्षेत्रज्ञा उपर्युपरि सञ्चरन्तो न विन्देयुरेवमेवेमाः सर्वाः प्रजा अहरहर्गच्छन्त्य एतं ब्रह्मलोकं न विन्दन्त्यनृतेन हि प्रत्यूढाः॥२॥

स वा एष आत्मा हृदि तस्यैतदेव निरुक्तः हृद्यमिति तस्माद्बृहदयमहरहर्वा एवं वित्स्वर्गं लोकमेति॥३॥ अथ य एष संप्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थाय परं ज्योतिरुपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यत एष आत्मेति होवाचैतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति तस्य ह वा एतस्य ब्रह्मणो नाम सत्यमिति॥४॥ तानि ह वा एतानि त्रीण्यक्षराणि सतीयमिति तद्यत्सत्तदमृतमथ यत्ति तन्मर्त्यमथ यद्यं तेनोभे यच्छति यदनेनोभे यच्छति तस्माद्यमहरहर्वा एवं वित्स्वर्गं लोकमेति॥५॥

चतुर्थः खण्डः

अथ य आत्मा स सेतुर्विधृतिरेषां लोकानामसम्भेदाय नैतस्सेतुमहोरात्रे तरतो न जरा न मृत्युर्न शोको न सुकृतं न दुष्कृतस्सर्वे पाप्मानोऽतो निवर्तन्तेऽपहतपाप्मा ह्येष ब्रह्मलोकः॥१॥ तस्माद्वा एतस्सेतुं तीर्त्वाऽन्यः सन्ननन्यो भवति विद्भः सन्नविद्भो भवत्युपतापी सन्ननुपतापी भवति तस्माद्वा एतस्सेतुं तीर्त्वापि नक्तमहरेवाभिनिष्पद्यते सकृद्विभातो ह्येवैष ब्रह्मलोकः॥२॥ तद्य एवैतं ब्रह्मलोकं ब्रह्मचर्येणानुविन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकस्तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति॥३॥

पञ्चमः खण्डः

अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद् ब्रह्मचर्येण ह्येव यो ज्ञाता तं विन्दतेऽथ यदिष्टमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद् ब्रह्मचर्येण ह्येवेष्ट्वात्मानमनुविन्दते॥१॥ अथ यत्सन्नायणमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्येव सत आत्मनस्त्राणं विन्दतेऽथ यन्मौनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तद्ब्रह्मचर्येण ह्येवात्मानमनुविद्य मनुते॥२॥

अथ यदनाशकायनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तदेष ह्यात्मा न नश्यति यं ब्रह्मचर्येणानुविन्दतेऽथ यदरणयायनमित्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत्तदरश्च ह वै ण्यश्चार्णवौ ब्रह्मलोके तृतीयस्या-मितोदिवि तेदैरं मदीयं सरस्तदश्चत्थः सोमसवनस्तदपराजिता पूर्ब्रह्मणः प्रभुविमितश्चिरण्मयम्॥३॥ तद्य एवैतावरं च ण्यं चार्णवौ ब्रह्मलोके ब्रह्मचर्येणानुविन्दन्ति तेषामेवैष ब्रह्मलोकस्तेषां सर्वेषु लोकेषु कामचारो भवति॥४॥

षष्ठः खण्डः

अथ या एता हृदयस्य नाड्यस्ताः पिङ्गलस्याणिम्नस्तिष्ठन्ति शुक्लस्य नीलस्य पीतस्य लोहितस्येत्यसौ वा आदित्यः पिङ्गल एष शुक्ल एष नील एष पीत एष लोहितः॥१॥ तद्यथा महापथ आतत उभौ ग्रामौ गच्छतीमं चामुं चैवमेवैता आदित्यस्य रश्मय उभौ लोकौ गच्छन्तीमं चामुं चामुष्मादादित्यात्प्रतायन्ते ता आसु नाडीषु सृप्ता आभ्यो नाडीभ्यः प्रतायन्ते तेऽमुष्मिन्नादित्ये सृप्ताः॥२॥ तद्यत्रैतत्सुप्तः समस्तः संप्रसन्नः स्वप्नं न विजानात्यासु तदा नाडीषु सृप्तो भवति तं न कश्चन पाप्मा स्पृशति तेजसा हि तदा संपन्नो भवति॥३॥ अथ यत्रैतदबलिमानं नीतो भवति तमभित आसीना आहुर्जानासि मां जानासि मामिति स यावदस्माच्छरीरादनुत्क्रान्तो भवति तावज्जानाति॥४॥ अथ यत्रैतदस्माच्छरीरादुत्क्रामत्यथैतैरेव रश्मिभिरूर्ध्वमाक्रमते स ओमिति वा होद्वा मीयते स यावत्क्षिप्येन्मनस्तावदादित्यं गच्छत्येतद्वै खलु लोकद्वारं विदुषां प्रपदनं निरोधोऽविदुषाम्॥५॥ शतं चैका च हृदयस्य नाड्यस्तासां मूर्धानमभिनिःसृतैका। तयोर्ध्वमायन्नमृतत्वमेति विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्त्युत्क्रमणे भवन्ति॥६॥

सप्तमः खण्डः

य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको विजिघत्सोऽ-
 पिपासः सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः
 स सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान्यस्तमात्मानमनुविद्य
 विजानातीति ह प्रजापतिरुवाच॥१॥ तद्धोभये देवासुरा
 अनुबुबुधिरे ते होचुर्हन्त तमात्मानमन्विच्छामो यमात्मानमन्विष्य
 सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामानितीन्द्रो हैव
 देवानामभिप्रवव्राज विरोचनोऽसुराणां तौ हासं विदानावेव
 समित्पाणी प्रजापति सकाशमाजग्मतुः॥२॥ तौ ह द्वात्रिंशत्
 वर्षाणि ब्रह्मचर्यमूषतुस्तौ ह प्रजापतिरुवाच किमिच्छन्ताव-
 वास्तमिति तौ होचतुर्य आत्मापहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको
 विजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसङ्कल्पः सोऽन्वेष्टव्यः स
 विजिज्ञासितव्यः स सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान्
 यस्तमात्मानमनुविद्य विजानातीति भगवतो वचो वेदयन्ते
 तमिच्छन्ताववास्तमिति॥३॥ तौ ह प्रजापतिरुवाच य एषोऽक्षिणि
 पुरुषो दृश्यत एष आत्मेति होवाचैतदमृतभयमेतद् ब्रह्मेत्यथ योऽयं
 भगवोऽप्सु परिख्यायते यश्चायमादर्शं कतम एष इत्येष उ एवैषु
 सर्वेष्वन्तेषु परिख्यायत इति होवाच॥४॥

अष्टमः खण्डः

उदशराव आत्मानमवेक्ष्य यदात्मनो न विजानीथस्तन्मे
 प्रब्रूतमिति तौ होदशरावेऽक्षाञ्चक्राते तौ ह प्रजापतिरुवाच किं
 पश्यथ इति तौ होचतुः सर्वमेवेदमावां भगव आत्मानं पश्याव आ
 लोमभ्य आ नखेभ्यः प्रतिरूपमिति॥१॥ तौ ह प्रजापतिरुवाच
 साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ भूत्वोदशरावेऽवेक्षेथामिति तौ
 ह साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ भूत्वोदशरावेऽवेक्षाञ्चक्राते

तौ ह प्रजापतिरुवाच किं पश्यथ इति॥२॥ तौ होचतुर्यथैवेदमावां
 भगवः साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतौ वितिस्व एवमेवेमौ
 भगवः साध्वलङ्कृतौ सुवसनौ परिष्कृतावित्येष आत्मेति
 होवाचैतदमृतमभयमेतद् ब्रह्मेति तौ ह शान्तहृदयौ प्रवव्रजतुः॥३॥
 तौ हान्वीक्ष्य प्रजापतिरुवाचानुपलभ्यात्मानमनुविद्य व्रजतो यतर
 एतदुपनिषदो भविष्यन्ति देवा वाऽसुरा वा ते पराभविष्यन्तीति स
 ह शान्तहृदय एव विरोचनोऽसुराञ्जगाम तेभ्यो हैतामुपनिषदं
 प्रोवाचात्मैवेह मह्य्य आत्मा परिचर्य आत्मानमेवेह महयन्नात्मानं
 परिचरन्नुभौ लोकाववाप्नोतीमं चामुं चेति॥४॥ तस्मादप्यद्येहाददा-
 नमश्रद्धानमयजमानमाहुरासुरो ब्रतेत्यसुराणां ह्येषोपनिषत्प्रेतस्य
 शरीरं भिक्षया वसनेनालङ्कारेणेति सःस्कुर्वन्त्येतेन ह्यमुं लोकं
 जेष्यन्तो मन्यन्ते॥५॥

नवमः खण्डः

अथ हेन्द्रोऽप्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श यथैव
 खल्वयमस्मिञ्छरीरे साध्वलङ्कृते साध्वलङ्कृतो भवति सुवसने
 सुवसनः परिष्कृते परिष्कृत एवमेवायमस्मिन्नन्येऽन्यो भवति स्नामे
 स्नामः परिवृक्णो परिवृक्णोऽस्यैव शरीरस्य नाशमन्वेष
 नश्यति॥१॥ नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति स समित्याणिः पुनरेयाय
 तःह प्रजापतिरुवाच मधवन्यच्छान्तहृदयः प्राब्राजीः सार्धं
 विरोचनेन किमिच्छन् पुनरागम इति स होवाच यथैव खल्वयं
 भगवोऽस्मिञ्छरीरे साध्वलङ्कृते साध्वलङ्कृतो भवति सुवसने
 सुवसनः परिष्कृते परिष्कृत एवमेवायमस्मिन्नन्येऽन्यो भवति स्नामे
 स्नामः परिवृक्णो परिवृक्णोऽस्यैव शरीरस्य नाशमन्वेष नश्यति
 नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति॥२॥ एवमेवैष मधवन्निति होवाचैतं त्वेव
 ते भूयोऽनुव्याख्यास्यामि वसापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाणीति स
 हापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाण्युवास तस्मै होवाच॥३॥

दशमः खण्डः

य एष स्वप्ने महीयमानश्चरत्येष आत्मेति होवाचै-
तदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति स ह शान्तहृदयः प्रवव्राज स हाप्राप्यैव
देवानेतद्भयं ददर्श तद्यद्यपीदं शरीरमन्यं भवत्यनन्यः स भवति
यदि स्नाममस्नामो नैवैषोऽस्य दोषेण दुष्यति॥१॥ न वधेनास्य हन्यते
नास्य स्नाम्येण स्नामो घ्नन्ति त्वेवैनं विच्छादयन्तीवाप्रियवेत्तेव
भवत्यपि रोदितीव नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति॥२॥ स समित्पाणिः
पुनरेयाय तःह प्रजापतिरुवाच मधवन्त्यच्छान्तहृदयः प्राब्राजीः
किमिच्छन् पुनरागम इति स होवाच तद्यद्यपीदं भगवः शरीरमन्यं
भवत्यनन्यः स भवति यदि स्नाममस्नामो नैवैषोऽस्य दोषेण
दुष्यति॥३॥ न वधेनास्य हन्यते नास्य स्नाम्येण स्नामो घ्नन्ति त्वेवैनं
विच्छादयन्तीवाप्रियवेत्तेव भवत्यपि रोदितीव नाहमत्र भोग्यं
पश्यामीत्येवमेवैष मधवन्निति होवाचैतं त्वेव ते
भूयोऽनुव्याख्यास्यामि वसापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाणीति स
हापराणि द्वात्रिंशतं वर्षाण्युवास तस्मै होवाच॥४॥

एकादशः खण्डः

तद्यत्रैतत् सुप्तः समस्तः संप्रसन्नः स्वप्नं न विजानात्येष
आत्मेति होवाचैतदमृतमभयमेतद्ब्रह्मेति स ह शान्तहृदयः प्रवव्राज
स हाप्राप्यैव देवानेतद्भयं ददर्श नाह खल्वयमेवः संप्रत्यात्मानं
जानात्ययमहमस्मीति नो एवेमानि भूतानि विनाशमेवापीतो भवति
नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति॥१॥ स समित्पाणिः पुनरेयाय तःह
प्रजापतिरुवाच मधवन्त्यच्छान्तहृदयः प्राब्राजीः किमिच्छन्
पुनरागम इति स होवाच नाह खल्वयं भगव एवः संप्रत्यात्मानं
जानात्ययमहमस्मीति नो एवेमानि भूतानि विनाशमेवापीतो भवति
नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति॥२॥

एवमेवैष मघवन्निति होवाचैतं त्वेव ते भूयोऽनुव्याख्यास्यामि
नो एवान्यत्रैतस्माद्वसापराणि पञ्च वर्षाणीति स हापराणि पञ्च
वर्षाण्युवास तान्येकशतःसंपेदुरेतत्तद्यदाहुरेकशतःह वै वर्षाणि
मघवान् प्रजापतौ ब्रह्मचर्यमुवास तस्मै होवाच॥३॥

द्वादशः खण्डः

मघवन्मर्त्यं वा इदं शरीरमात्तं मृत्युना तदस्यामृतस्या-
शरीरस्यात्मनोऽधिष्ठानमात्तो वै सशरीरः प्रियाप्रियाभ्यां न ह वै
सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरपहतिरस्त्यशरीरं वाव सन्तं न
प्रियाप्रिये स्मृशतः॥१॥ अशरीरो वायुरभ्रं विद्युत्
स्तनयितुरशरीराण्येतानि तद्यथैतान्यमुष्मादाकाशात्समुत्थाय परं
ज्योतिरुपसंपद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यन्ते॥२॥ एवमेवैष
संप्रसादोऽस्माच्छरीरात्समुत्थाय परं ज्योतिरुपसंपद्य स्वेन
रूपेणाभिनिष्पद्यते स उत्तमपुरुषः स तत्र पर्येति जक्षत्कीडज्रममाणः
स्त्रीभिर्वा यानैर्वा ज्ञातिभिर्वा नोपजनःस्मरन्निदःशरीरःस यथा
प्रयोग्य आचरणे युक्त एवमेवायमस्मिञ्छरीरे प्राणो युक्तः॥३॥
अथ यत्रैतदाकाशमनुविषण्णं चक्षुः स चाक्षुषः पुरुषो दर्शनाय
चक्षुरथ यो वेदेदं जिघ्राणीति स आत्मा गन्धाय घ्राणमथ यो
वेदेदमभिव्याहराणीति स आत्माभिव्याहाराय वागथ यो वेदेदः
शृण्वानीति स आत्मा श्रवणाय श्रोत्रम्॥४॥ अथ यो वेदेदं
मन्वानीति स आत्मा मनोऽस्य दैवं चक्षुः सवा एष एतेन दैवेन
चक्षुषा मनसैतान्कामान्यश्यत्रमते॥५॥ य एते ब्रह्मलोके तं वा एतं
देवा आत्मानमुपासते तस्मात्तेषाःसर्वे च लोका आत्ताः सर्वे च
कामाः स सर्वाश्च लोकानाप्नोति सर्वाश्च कामान्यस्तमात्मान-
मनुविद्य विजानातीति ह प्रजापतिरुवाच प्रजापतिरुवाच॥६॥

त्रयोदशः खण्डः

श्यामाच्छबलं प्रपद्ये शबलाच्छ्यामं प्रपद्येऽथ इव रोमाणि विधूय पापं चन्द्र इव राहोर्मुखात्प्रमुच्य धूत्वा शरीरमकृतं कृतात्मा ब्रह्मलोकमभिसंभवामीत्यभिसंभवामीति॥१॥

चतुर्दशः खण्डः

आकाशे वै नाम नामरूपयोर्निर्वहिता ते यदन्तरा तद्ब्रह्म तदमृतः स आत्मा प्रजापतेः सभां वेश्म प्रपद्ये यशोऽहं भवामि ब्राह्मणानां यशो राज्ञां यशो विशां यशोऽहमनुप्रापत्सि स हाहं यशसां यशः श्येतमदत्कमदत्कः श्येतं लिन्दु माभिगां लिन्दु माभिगाम्॥१॥ तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतय उवाच प्रजापतिर्मनवे मनुः प्रजाभ्य आचार्यकुलाद्वेदमधीत्य यथाविधानं गुरोः कर्मातिशेषेणाभिसमावृत्य कुटुम्बे शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानो धार्मिकान्विदधदात्मनि सर्वेन्द्रियाणि सम्प्रतिष्ठायाहिः सन्सर्वभूतान्यन्यत्र तीर्थेभ्यः स खल्वेवं वर्तयन्यावदायुषं ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते॥३॥

॥ इति दशमः प्रपाठकः ॥

आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्या मा मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणम-
स्त्वनिराकरणं मेऽस्तु। तदात्मनि निरते य उपनिषत्सु
धर्मास्ते मायि सन्तु ते मायि सन्तु।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥



ब्राह्मणश्रुत्यनुक्रमणिका

प्रथमं परिशिष्टम्

ताण्ड्यमहाब्राह्मणश्रुत्यनुक्रमणिका

अक्षरं त्र्यक्षरम्—	१०.५.१०	९३	अग्निर्वै रुरस्तस्य	७.५.१०	६०
अक्षरपङ्क्तिषु	८.१०.९	७७	अग्निर्वै रूरो	१२.४.२४	१०८
अक्रान् त्समुद्रः परमे	१५.१.१	१४५	अग्निर्वै सर्वा देवता	१८.१.८	१७७
अकृतं वा एते कुर्वन्ति	२१.१५.४	२११	अग्निः संवत्सरः सूर्यः	१७.१३.१७	१७५
अकिलासो भवति	२३.१६.१२	२३१	अग्निःसृष्टो नोद	१३.३.२२	१२१
अकूपाराऽऽङ्गिरस्यासीत्	९.२.१४	८०	अग्निष्टोमः प्रथमम्	२१.९.६	२१३
अकूपारो वा एतेन	१५.५.३०	१५०	अग्निष्टोमं प्रथमम्	१८.८.१	१८३
अग्न आयाहि वीतय	११.२.३	९८	अग्निष्टोमः पूर्वमह	१८.११.७	१८७
अग्न आयूक्षि पवस	६.१०.१	५४	अग्निष्टोमेन वै देवा	२२.१४.५	२२४
अग्न आयूक्षि पवस	९.८.१२	८६	अग्निष्टोमेन वै देवा	९.२.९	८०
अग्नइति प्रथमस्याऽहः	१०.७.१	९४	अग्निष्टोमा एव सर्वे	४.५.२०	२८
अग्न इति षष्ठस्य	१०.७.४	९४	अग्निहोत्रं दशहोता	२५.४.२	२४८
अग्नये हिरण्यम्	१.८.५	०६	अग्नीषोमाभ्याम्	१.८.६	६
अग्निं दूतं वृणीमहे	११.७.३	१०१	अग्नेक्षिकित् उपसा	१३.२.३	११९
अग्निं वै पूर्वं	१५.५.९	१४९	अग्नेस्तेजसेन्द्रस्येन्द्रियेण	१.३.५	२
अग्निभिरित्येव	१४.८.२	१३८	अग्ने युङ्क्वा हि ये	४.२.१९	२५
अगन्म महा नमसा	१५.२.१	१४५	अग्नेर्वा एत	१३.११.२३	१३०
अग्निरकामयत	१४.११.३८	१४३	अग्नेर्वा एतानि वैश्वानरस्य	२१.२.९	२०९
अग्निरकामयता	१४.३.१९	१३४	अग्नेर्वै सर्वमाद्यम्	२५.९.३	२५०
अग्निरुषसश्चते	२०.१५.३	२०५	अग्ने वेहोत्रम्	२१.१०.११	२१४
अग्निरेवैनं निष्टपतिः	१६.५.१०	१६०	अग्ने विवस्वदुपस	९.३.४	८१
अग्निं वो देवमग्निभिः	१४.८.१	१३८	अग्नौ स्तोत्रमग्नौ शस्त्रम्	६.३.५	४५
अग्निं वो वृधन्तम्	१२.१.२१	११५	अग्रश्चोर्तर्हि	१२.११.४	११४
अग्निना पृथिव्यौपधिभिः	१०.१.१	८९	अग्रादग्रश्चेहत्यूर्ध्वाः	१७.४.२	१७१
अग्निनाग्निः समिध्यते	१२.२.१	१०५	अग्रादग्रश्चेहत्यभिक्त्रामन्ती	२.१.३	९
अग्निर्वा इदं वैश्वानरः	५.३.९	३६	अङ्गन्यङ्कूअभितो	१.७.५	६
अग्निर्वा एतस्य	१२.४.२५	१०८	अङ्गिरसो वै सत्रम्	१२.११.१०	११४
अग्निर्वा एतस्य हव्य	१७.८.३	१७२	अङ्गिरस स्तपस्तेपानाः	१५.९.९	१५३
अग्निर्वै देवानाम्	२४.१३.५	२४०	अङ्गिरसः स्वर्गं लोकम्	२०.११.३	२०२

अङ्गिरसः स्वर्गल्लोकम्	८.९.५	७६	अतिरात्रः पृष्ठचः	२३.३.१	२२६
अङ्गिरसः स्वर्गल्लोकम्	१२.६.१२	११०	अतिरात्रः पृष्ठचः	२३.६.१	२२७
अङ्गिरसां गोष्ठो	१३.९.२४	१२८	अतिरात्रो भवत्यहो रात्रे	२०.४.८	१९९
अङ्गिरसाश्चक्रोशः	१२.३.२२	१०७	अतिरात्रोऽभिप्लवः	२४.२.१	२३६
अगस्त्यो वै मरुद्भ्यः	२१.१४.५	२१७	अतिरात्रोऽभिप्लवः	२३.१२.१	२२९
अच्छिन्नं पावयन्ति	६.६.१९	५०	अतिरात्रोऽभिप्लवः	२३.१४.१	२३०
अच्छिन्नं भवति	१४.९.३५	१४०	अतिरात्रोऽभिप्लवः	२३.१५.१	२३०
अजः सुब्रह्मण्यायै	१८.९.१९	१८५	अतिरात्रश्चत्वारः	२४.६.१	२३८
अजोऽनीषोमीयः	२१.१४.११	२१७	अतिरात्रश्चत्वारोऽभिप्लवाः	२४.१६.१	२४२
अजोऽस्येकपात्	१.४.१२	३	अतिरात्रश्चत्वारोऽभिप्लवाः	२४.१३.१	२४०
अञ्जसाऽय्यो माल्यः	१३.४.११	१२२	अतिरात्रश्चतुर्विंशम्	२४.२०.१	२४४
अतिछन्दःसु पञ्चनिधनम्	५.२.१०	३५	अतिरात्रश्चतुर्विंशम्	२५.२.१	२४६
अति जगतीषु	१२.१०.२१	११३	अतिरात्रश्चतुर्विंशम्	२५.१.१	२४५
अतिरात्रो गौक्षायुश्च	२३.२२.१	२३३	अतिरात्रश्चतुर्विंशम्	२४.१४.१	२४०
अतिरात्रो गौक्षायुश्च	२३.५.१	२२७	अतिरात्रश्चतुर्विंशम्	२४.१८.१	२४२
अतिरात्रो गौक्षायुश्च	२४.८.१	२३८	अतिरात्रः सहस्रमहा	२५.९.१	२५०
अतिरात्रो गौक्षायुश्च	२३.२८.१	२३५	अतिरात्रः षडभिप्लवाः	२४.१७.१	२४२
अतिरात्रो ज्योति	२४.४.१	२३७	अतिरात्रः स्त्रिवृता	२५.३.१	२४७
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.२३.१	२३३	अतिरात्रस्त्रिवृदग्निष्पृष्टोमः	२३.७.१	२२८
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.१८.१	२३१	अतिरात्रस्त्रयः	२४.१.१	२३६
अतिरात्रो ज्योतिः	२५.१.२.१	२५२	अतिरात्रस्त्रयोऽभिप्लवा	२३.२६.१	२३४
अतिरात्रो ज्योतिः	२४.१९.१	२४३	अतिरात्रस्त्रयः	२४.३.१	२३७
अतिरात्रो ज्योतिः	२४.५.१	२३७	अतिरात्रस्त्रीणि	२४.११.१	२३९
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.४.१	२२७	अतिरात्रस्त्रिवृत्	२५.११.१	२५१
अतिरात्रो ज्योतिः	२४.९.१	२३८	अतिरात्रः सहस्रम्	२५.१७.१	२५४
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.२५.१	२३४	अतिरात्रावभितोऽग्निष्ठोमा	२५.१५.१	२५३
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.१७.१	२३१	अतिरात्रौ द्वावभिप्लवौ	२४.१२.१	२३९
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.९.१	२२८	अतिरिक्तं गौरीवितम्	९.२.४	८०
अतिरात्रो ज्योतिः	२३.११.१	२२९	अतिरिक्तं गौरीवितम्	१८.६.१९	१८२
अतिरात्रो द्वादशाहस्य	२३.२.१	२२६	अतिरिक्तं वा	११.५.१५	१००
अतिरात्रो द्वावभिप्लवौ	२३.२०.१	२३२	अति वा एषाऽन्यानि	५.२.११	३५
अतिरात्रो नव त्रिवृन्ति	२४.१५.१	२४१	अतिविश्वानि दुरिता	१४.५.१८	१३६
अतिरात्रः पृष्ठचः	२३.१.१	२३३	अतिविश्वानि दुरिता	५.८.६	४०
अतिरात्रः पृष्ठचः	२३.१९.१	२३२	अतिश्रिया भ्रातृव्य	१२.१३.२	११६
अतिरात्रः पृष्ठचः	२३.१६.१	२३१	अतिह्या यञ्छकुना	१२.९.४	१११

अतो वै प्रजाः प्रजायन्ते	२३.१९.६	२३२	अथाभिजिदभिजिता	२२.८.४	२२१
अथ पञ्चदशौ वीर्यं	१९.१०.६	१९२	अथेन्द्रो यौधाजयम्	७.५.१२	६०
अथ यत् ज्योतिः	२२.२.४	२१९	अथैकविंशौ प्रतिष्ठा	१९.१०.८	१९२
अथ यत् ज्योतिष्मोमः	२२.९.६	२२२	अथैतच्छतम्	७.१०.१२	६५
अथ यत् ज्योतिः	२५.१२.६	२५२	अथैतत्त्रयस्त्रिंशम्	२२.७.४	२२१
अथ यत् ज्योतिष्मोमः	२२.११.५	२२२	अथैतदाधीगवमन्धीगुर्वा	८.५.१२	७१
अथ यत् द्वचक्षर	२१.५.५	२११	अथैतद्व्रतमनम्	२४.१६.४	२४२
अथ यत्पञ्चनिधनम्	१२.४.८	१०७	अथैतद्व्रतमनम्	२४.१४.७	२४१
अथ यत्तपस्तप्यते	२५.१४.३	२५३	अथैतद्व्रतमनम्	२५.१.१४	२४६
अथ यदध्यासंग्य	२२.१३.३	२२३	अथैतन्नाम्नेधम्	८.८.२१	७५
अथ यत् त्रिवृत्पंचदश	२५.११.४	२५२	अथैते स्वरसामानः	२५.१.८	२४६
अथ यत् पृष्ठः	२३.४.५	२२७	अथैते स्वरसामानः	२४.१४.४	२४१
अथ यदायुरति	२०.१३.३	२०३	अथैतानि द्वादशाहस्य	२५.१.१०	२४६
अथ यदेषाद्विपदा	१९.३.५	१८९	अथैतानि द्वादशाहस्य	२४.१६.६	२४२
अथ यस्य चत्वारि	१९.६.१	१९०	अथैतानि द्वादशाहस्य	२४.१४.६	२४१
अथ यस्य ज्योतिरुक्थ्यः	२०.१२.१	२०२	अथैतावुद्भिः	२५.१.११	२४६
अथ यस्य त्रिवृत्पञ्चदश	२०.१३.१	२०३	अथैते गो आयुषी	२५.१.१२	२४६
अथ यत् सहस्रसाव्यम्	२५.९.४	२५०	अथैतौ प्रायणीयोदयनीय	२४.१४.८	२४१
अथ ह वै तर्हि	२४.१८.३	२४३	अथैतौ प्रायणीयोदयनीय	२५.२.६	२४७
अथ त्रयस्त्रिंशौ	१९.१०.१०	१९२	अथैतौ प्रायणीयोदयनीय	२५.१.१५	२४६
अथ त्रिणवाविमे वै	१९.१०.९	१९२	अथैष आयुः	१६.३.१	१५८
अथ यदायुर्गौज्योतिः	२३.४.७	२२७	अथैष ऋषभः	१९.१२.१	१९३
अथ या द्वादशी	१९.४.४	१८९	अथैष एकत्रिकः प्रजापतेः	१६.१६.१	१६८
अथ या दशैषा वा	१६.१.९	१५६	अथैष औपशदः	१९.३.१	१८८
अथ यानि द्वादशाहस्य	२३.५.३	२२७	अथैष इन्द्राग्न्योः कुलायः	१९.१५.१	१९५
अथ यानि द्वादशाहस्य	२३.११.४	२२९	अथैष इन्द्राग्न्योः स्तोम	१९.१७.१	१९५
अथ यानि द्वादशाहस्य	२४.१.५	२३६	अथैष गौः	१६.२.१	१५८
अथ यानि द्वादशाहस्य	२३.२२.६	२३३	अथैष चतुष्टोमः	१९.५.१	१९०
अथ यानि द्वादशाहस्य	२३.९.४	२२९	अथैष छन्दोमदशाहः	२५.२.५	२४७
अथ यानि द्वादशाहस्य	२३.२०.३	२३३	अथैष छन्दोमदशाहः	२५.१.१३	२४६
अथ यावन्त्यौ प्राणौ	२४.१४.५	२४१	अथैष ज्योतिः	१९.११.१	१९३
अथर्वाणो वा एतल्लोक	८.२.६	६८	अथैष ज्योतिः	१६.८.१	१६२
अथ वा एता एक	१२.१३.२२	११७	अथैष द्विषोडशी	१७.३.१	१७०
अथ वायुरौशनम्	७.५.१६	६०	अथैष त्रिवृद्	२५.१.७	२४५
अथ सप्तदशौ पशवो	१९.१०.७	१९२	अथैष पञ्चदश	१९.१६.१	१९५

अथैष पुनस्तोमः	१९.४.१	१८९	अथो परोक्षमनुष्टुभम्	१५.९.१५	१५३
अथैष मरुस्तोमः	१९.१४.१	१९४	अथो रेत एव	८.७.९	७३
अथैषराट्	१९.१.१	१८८	अथो शमयन्त्येवैनमेतया	४.६.९	२९
अथैष विघ्नः	१९.१८.१	१९६	अथो श्वस्तनमेवाभि	४.९.१८	३२
अथैष पञ्चदश	२५.१.९	२४६	अद्याद्याश्वः श्वस्त्वामिदा	४.७.७	३०
अथैष विराडन्नाद्य	१९.२.१	१८८	अद्यमानस्य भूयः	२१.२.२	२०८
अथैष विश्वज्योतिः	१६.१०.१	१६३	आदित्या अस्मिंल्लोक	२४.१.७	२४०
अथैष विश्वजिच्छिलपः	१६.१५.१	१६७	आदित्यानां मध्ये	२५.१.२	२४५
अथैष सर्वस्तोमः	१९.९.१	१९२	अदीक्षितः कृष्णाजिनम्	२५.१४.२	२५३
अथैष सर्वज्योतिः	१६.९.१	१६३	अद्य क्षपा परिष्कृत	१८.८.१६	१८४
अथैष शमनीचा	१७.४.१	१७१	अध्यर्द्धेडं तथा	१३.३.८	१२०
अथैष षट्षोडशी	१७.२.१	१७०	अध्यर्द्धेडं तथा	१३.३.२०	१२१
अथैषा द्विदेवत्या	२०.१५.१४	२०५	अध्यर्द्धेडं तथा	१३.३.१३	१२०
अथैषोऽङ्गिरसा मनुक्त्रीः	१६.१४.१	१६७	अध्वनामध्वपते स्वस्ति	१.४.१	३
अथैषोऽपचिति रपचिति	१९.८.१	१९१	अध्वर्युः प्रस्तारम्	६.७.१६	५१
अथैषोऽभिषेचनीयः	१८.८.२	१८३	अध्वर्युः शिरसोद्गयेत्	५.६.२	३८
अथो एतमे वै	१४.५.७	१३५	अध्वर्योऽग्निभिः	१४.९.१	१३९
अथो खल्वाहुः अदर्शि	१७.१.११	१७०	अधरोत्तरमपावगता	२.३.७	१०
अथो खल्वाहुर्गमिण्योम	४.२.११	२४	अथा हीन्द्र गिर्वण	१७.१.५	१६९
अथो खल्वाहुस्त्वमेव	४.२.१३	२५	अधिपतिरसि प्राणाय	१.१०.५	८
अथो खल्वाहुरेकत्रिकम्	५.१०.६	४२	अधिपतिः समानानाम्	६.२.९	४४
अथो खल्वाहुः कथमध्वर्युः	५.६.६	३८	अधिपतिः समानानाम्	१९.१२.४	१९३
अथो तदुभयमनादति	६.६.४	४९	अधोऽधोऽक्षं द्रोणकलशम्	६.५.१४	४८
अथो खल्वाहुः पवस्व	४.२.१७	२५	अनङ्वाहौ वा एतौ	१२.४.१४	१०७
अथो खल्वाहुर्यज्ञायज्ञा	१८.१.७	१७७	अन्तरिक्षं देवत्यमेत	१२.३.१९	१०६
अथो खल्वाहुः सवनम्	९.४.४	८२	अन्तरिक्षं देवत्य	१२.१.८	१०५
अथो खल्वाहुः	९.४.१६	८३	अन्तरिक्षं भवति	१२.३.१८	१०६
अथो खल्वाहुः	२४.१४.३	२४१	अन्तरिक्षं वै वामदेव्यम्	१५.१२.५	१५५
अथो खल्वाहुः	९.९.३	८६	अन्तरिक्षं वै वामदेव्यम्	७.९.९	६४
अथो खल्वाहुर्यज्ञायज्ञीयम्	४.२.२०	२५	अन्तरोत्सेध निषेधौ	१५.९.१२	१५३
अथो खल्वाहुरिन्द्रक्रतुञ्ज	४.७.८	३०	अन्तो वा अश्वः	२१.४.६	२१०
अथो खल्वाहुरुत्तरतः	५.१.१४	३४	अन्तो वै तृतीय	१२.५.४	१०८
अथो खल्वाहुरतिशयं वै	५.१.१९	३४	अन्तो वै त्रयस्त्रिंशः परमम्	३.३.२	१८
अथो गवामेवानुरूपा	४.९.२३	३२	अन्तो वै त्रयस्त्रिंशो यथा	३.४.२	१८
अथोत्तरस्याह्मन्तुर्विश्वम्	२१.१०.२	२१३	अन्तो वै सूर्योऽन्त	१३.८.३	१२६

अन्तो वा अष्टाचत्वारि	३१२.२	२१	अन्नाद्यं वाव तदेभ्यः	११.८.१२	१०२
अन्तो वा अष्टाचत्वारि	३१३.२	२२	अन्नादो भवति	१४.५.२९	१३६
अनन्ता वा एता	२३.२५.३	२३४	अन्नादो भवति	१७.९.३	१७३
अन्धस्वती भवत्यह	१२.३.३	१०६	अन्नादो भवति	१६.७.६	१६२
अन्यदन्यद्वा एता	२१.४.९	२१०	अनाकृतमेषां प्रजायते	२३.१३.५	२३०
अन्यस्मै वै कामाय	२२.१०.२	२२२	अनायतनं वा एतत्	५.२.५	३५
अन्यस्मै वै कामाय	२३.८.२	२२८	अनिधनमन्ततो भवति	७.३.२३	५८
अन्यस्मै वै कामाय	२२.३.२	२१९	अनिरुक्तज्ञेयमेतद्वै	७.१.८	५६
अनति वाघेनम्	११.३.७	९८	अनिरुक्तज्ञेयम्	७.९.१७	६४
अनभिजिता वा	६.५.२०	४८	अनिरुक्तं प्रातःसवनम्	१८.६.७	१८१
अनङ्गवानग्नीषो	१८.९.१८	१८५	अनीकवती प्रतिपदानेयः	१७.१३.१३	१७४
अनवपादायानतिपादाय	४.५.१२	२८	अनु तुनं गायति	१२.९.१७	११२
अनवर्तिः पशुतो भवति	७.९.२१	६५	अनु तुनं गायति	१२.१०.११	११३
अन्वितिरसि दिवे त्वा	१.९.३	७	अनुतोदो वैपजस्यान्	८.९.१३	७६
अन्वासि रात्र्यै त्वा	१.९.८	७	अनुद्धते दक्षिणत	१९.१३.९	१९४
अन्नं करिष्याम्यन्नं	१.३.६	२	अनुरूप एनं पुत्रः	११.६.५	१०१
अन्नं पशवः पृष्ठानि	१६.१५.८	१६७	अनुष्टुप् च वै सप्तदशाक्ष	१०.२.४	९०
अन्नं पृष्ठान्यन्नाद्यम्	२२.३.४	२१९	अनुष्टुप्छन्दसो भवन्ति	४.५.७	२७
अन्नं वै पृष्ठान्यन्नम्	२५.१.४	२४५	अनुष्टुभि छन्दसाम्	११.५.१७	१००
अन्नमकरमन्नम्	१.३.७	२	अनुष्टुभि बृहन्नवति	१९.१२.८	१९४
अन्नमत्यन्नादो भवति	१९.११.६	१९३	अनुष्टुभमुत्तमां सम्पादयत	८.७.२	७३
अन्नवत्यो गणवत्यः	१८.७.४	१८२	अनुष्टुभं वा एता	१०.५.८	९३
अन्नं वा अर्कः	१४.११.९	१४२	अनुष्टुभ्याथर्वणं भवति	१६.१०.९	१६४
अन्नं वा अर्को ब्रह्म—	५.१.९	३४	अनुष्टुब्बा एता रात्रयः	२३.२८.२	२३५
अन्नं विराडन्नं व्रतम्	२३.२७.२	२३४	अनुष्टुभ्यसम्पद्यते	१६.११.१७	१६५
अन्नं विराडन्नाद्यम्	८.१०.८	७७	अनुष्टुप्षु षोडशिनो	१२.१३.१५	११७
अन्नं वै जराबोधीयम्	१४.५.२८	१३६	अपक्रान्ता नो वा एतस्य	६.१०.५	५५
अन्नं वै देवाःपृश्नीति	१२.१०.२४	११३	अपध्न्यवते मृषोपसोमः	६.१०.६	५५
अन्नं वै देवा अर्क	१५.३.२३	१४७	अपच्छिदिव वा	११.११.२	१०४
अन्नं वै पृष्ठान्यन्नम्	२५.२.३	२४७	अपच्छिदिव वा	१८.६.२३	१८२
अन्नं वै वाजो	१३.९.१३	१२७	अपच्छिदिव वा	१३.६.२	१२४
अन्नं वै वाजो	१३.९.२१	१२७	अपतमोभन्ते य एता	२३.१६.३	२३१
अन्नं वै सप्तदशोजनिः	१७.९.२	१७२	अपः पश्चात् पत्यः	८.७.८	७३
अन्नं वै सप्तदशो	२.७.७	१२	अप्रतिवाघेनं प्रातृव्यः	१०.७.३	९४
अन्नस्यान्नपतिः प्रादाद—	१.८.७	६	अप्रतिष्ठितो वा एष	१८.११.५	१८७

अप पाप्मानश्हते	१४.५.२३	१३६	अभिक्रामन्ती विष्टुतिः	२.७.३	११
अपघ्नश्श इव	१४.४.३	१३४	अभिगरा पगौ भवतः	५.५.१३	३७
अपघ्नश्श इव वा	१४.१०.२	१४१	अभिचार्यमाणं याजयेत्	२२.१७.३	२२५
अपघ्नश्श इव वा	१४.६.३	१३७	अभिजिदसि युक्ता—	१.१०.४	८
अपघ्नश्श इव वा	१२.१०.३	११२	अभि जुहोति शान्त्यै	१२.१०.१८	११३
अपघ्नश्श इव वा	१४.५.३	१३५	अभि त्वा वृषभा	२१.९.१६	२१३
अपरिश्रिते स्तुवन्ति	६.८.१०	५२	अभि त्वा वृषभा	९.२.१५	८०
अपरुद्ध यज्ञ इव	१२.१३.३१	११८	अभि त्वा शूर नो नुमः	११.४.१	९८
अप्सु धीतस्य ते देव	१.६.११	५	अभिद्युम्नं बृहद्यश	१३.५.२	१२३
अपशव्यं वा एतत्	२४.३.२	२३७	अभिद्युम्नं बृहद्यश	१४.११.२	१४१
अपशव्यं वा एतत्	२३.१९.८	२३२	अभिनिघनम्	१४.४.४	१३४
अपशव्यं वा एतत्	२४.११.६	२३९	अभि निघनेन वा	१४.४.५	१३४
अपशव्यो द्विरात्र इत्या	१८.११.९	१८७	अभिप्रयायमभिषुण्वन्ति	२४.१९.३	२४३
अपशव्येव तु वा ईश्वरा	२.१७.३	१६	अभिप्रवः सुराघस	११.९.२	९८
अपशुचश्हते हारिवर्णस्य	१२.६.१०	११०	अभिप्रियाणि पवते	८.५.१४	७
अपानेन पश्चात्पुच्छम्	५.४.२	३६	अभिपूर्वमेवै ताभिः	२३.२७.३	२३४
अपां पुष्पमस्योषधीनाम्	१.६.८	५	अभिपूर्वेण वा एते	१७.२.२	१७०
अपां वा एष रसो	१३.१०.५	१२८	अभिवत्यः प्रवत्यो	१७.१२.४	१७४
अपाप्सीलां वाचम्	१७.५.२	१७१	अभि वा एते देवा	१५.७.६	१५२
अपि वा एतस्य यज्ञे	९.८.३	८६	अभि शस्यमानम्	१८.१.१०	१७७
अपूता इव वा येषाम्	६.१०.२	५४	अभि सोमास आयव	१२.३.४	१०६
अपो वा ऋत्व्यामर्च्छत	७.८.१	६३	अभीति रथन्तरस्य	१२.३.५	१०६
अबलिष्ठ इव वा	७.३.१८	५८	अभी नो वाजसा तम	१४.११.४	१४१
अभ्यतृणत्पवित्रं विगृह्णन्ति	६.६.१२	५९	अभीवर्तो ब्रह्मसाम	४.३.१	२५
अभ्यभ्येवाऽस्य पशवः	१२.४.२६	१०८	अभीवर्तो ब्रह्मसाम	१८.६.१४	१८१
अभ्यभिषोमानुन्नयन्ति	१८.५.१४	१८०	अभीवर्तो ब्रह्मसाम	१५.१०.१२	१५४
अभ्याघात्यं भव	१४.९.३०	१४०	अभीवर्तं भ्रातृव्यवते	८.२.७	६८
अभ्यासंग्यः पञ्चाहः	२१.१३.९	२१७	अभीवर्तेन वै देवाः—	४.३.२	२५
अभ्यासंग्यः पञ्चाहः	२२.३.१	२१९	अभीवर्तेन वै देवा	८.२.८	६८
अभ्यासंग्यः पञ्चाहः	२२.३.६	२१९	अभीशवं यदाभीशव	१५.३.२७	१४७
अभ्यासंग्यः पञ्चाहोऽथ	२२.७.१	२२०	अमावास्यायां पूर्वं	१८.११.८	१८७
अभ्यासंग्यः पञ्चाहः	२२.१६.१	२२४	अमुष्मै वा एतल्लोकाय	६.८.१५	५२
अभ्यासंग्यः षडहः	२२.१८.१	२२५	अमुं वा एष लोकम्	९.७.१२	८५
अभिक्रान्तापक्रान्तानि	५.८.३	४०	अयं त इन्द्र सोम	९.२.८	८०
अभिक्रामन्ती विष्टुति	२.६.३	१	अयं पूषा रथिर्भग	११.१०.५	१०३

अयं वा मित्रावरुणे	१२.८.३	१११	अश्वोस्यत्योसि मयोसि	१.७.१	५
अयं वै लोको मध्यमः	७.९.५	६४	अष्टर्चो भवति	१५.१.७	१४५
अयश्हविष्मानित्येव	११.१०.१०	१०३	अष्टमेन वै देवा	१४.८.६	१३८
अया पवस्व धारया	६.१०.१९	५५	अष्टत्रेण वै देवाः	२२.११.६	२२२
अया पवा पवस्वैना	१३.११.७	१२९	अष्टाक्षरा गायत्री हिङ्गारः	६.३.१३	४५
अयारुचा हरिण्या	१६.१६.८	१६८	अष्टाक्षरेण प्रथमाया	१५.१०.७	१५४
अयास्यो वा आङ्गिरसः	११.८.१०	१०२	अष्टाचत्वारिंश एव	१५.१.१३	१४५
अयुतं दक्षिणास्ताद्धि	१९.१३.६	१९४	अष्टाचत्वारिंश एव	१५.६.७	१५१
अरण्ये तिस्रो वस	१६.६.३	१६१	अष्टादशष्टो वैरूपः	८.९.२१	७६
अरतिं पृथिव्या इत्य-	४.६.१९	५५	अष्टाप्यो हिङ्गरोति	३.८.१	१९
अर्कपुष्पं भवति	१५.३.२२	१४७	अष्टाभिर्वा अक्षरैः	१०.५.९	९३
अर्क्यं शस्यते	१६.७.४	१६२	अष्टावेकविंशः सस्तुतो	१९.१.४	१८८
अर्कवतीषु गायत्रीषु	५.१.८	३४	अष्टाशफाः पशवः	१५.१.८	१४५
अर्द्धमास एव पञ्चदशः	१०.१.४	८९	अष्टेऽः पद स्तोभो	१३.५.२१	१२४
अर्द्धेडया वै देवा असुरान्	८.९.१५	७६	अष्टौ पुत्रासो अदिते	२४.१२.६	२४०
अर्द्धेडया वै पूर्वम्	८.९.१७	७६	अष्टौ वा एताः	११.५.८	९९
अर्द्धेडामतिस्वरति	१३.१२.११	१३१	अष्टौवतोपस्पृशतः	६.७.२३	५
अर्द्धेडा शक्वरीणाम्	८.९.१४	७६	अस्तवि वा अयं लोकः	३.१०.२	२०
अर्ब्बुदः सर्प एताभिः	९.८.८	८६	अस्तीव वा अयम्	२१.७.३	२११
अर्ब्बुदः सर्प एताभिः	४.९.५	३१	अस्तीव त्रिरात्रस्य	२१.७.४	२११
अर्षा सोम द्युमत्तम	१३.३.१	१२०	अस्तोमा वा एते	३.९.३	२०
अरावाणो वा एते	६.१०.७	५५	असम्मितश्स्तोत्रस्याद्	९.८.१४	८६
अरिष्टं भवति	१२.५.२२	१०९	अस्मै वा एतल्लोकाय	६.८.१६	५२
अरूपेण वा एताः	२४.१.३	२३६	अस्थूरिर्वा एष	१६.१.६	१५७
अरुक्षो भवति	२०.१३.५	२०३	अस्थूरिर्वा एष	१६.१०.४	१६४
अवभृथादुदेत्य	९.५.१२	८३	अस्थूरिर्वा एष	२१.१३.७	२१६
अवमैस्त ऊर्वैस्ते	१.५.९	३	अस्या अमुष्याः अद्यक्षान्	९.४.१८	८३
अवर्द्धन्त ह्येतर्हि	१२.१२.२	११५	अस्याश्हि सोऽध्यभि	१८.६.१३	१८१
अवषट्कृतो वा एतस्य	९.६.२	८४	असृक्षत प्रवाजिन	१३.७.५	१२५
अत्रयन्वाव श्रायन्तीयेन	१८.११.४	१८७	असम्मितं स्तोत्रं स्याद्	९.८.१४	८६
अश्वः कृष्ण उपतिष्ठति	१२.१३.२६	११७	असश्हाय्यं प्रातृव्यम्	९.१.२२	७९
अश्वः प्रस्तोतुः प्राजाप-	१८.९.११	१८५	असश्शिलघ्या गायति	१३.४.६	१२२
अश्ववद्धवति प्रजात्यू	१२.४.१५	१०७	असाव्यश्शुर्मदाये	१३.५.१	१२३
अश्वः श्यावो दक्षिणा	१८.१.२०	१७७	असावि सोम इन्द्र ते	१३.६.५	१२४
अश्वो वै भूत्वा	११.३.५	९८	असावि सोम इन्द्र ते	१२.१३.१७	११७

असावि सोमो अरुषो	१५.३.४	१४६	आ जागृविर्विप्र	१५.९.३	१५२
असिति वै राधन्तरम्	१२.३.२१	१०६	आजिं धावन्ति यजमान	१८.७.९	१८२
असितो वा एतेन	१४.११.१९	१४२	आजिर्वा एष	१५.९.७	१५३
असुर्यं वा एतस्माद्धर्मम्	९.१०.२	८८	आजिर्वा एष	१४.३.१४	१३४
असुरा वा एषु लोकेषु	८.९.२	७६	आत्मदक्षिणं वा	४.९.१९	३२
असुरा वा एषु लोकेषु	९.२.११	८०	आत्मन्येव तदङ्गानि	५.६.५	३८
असुरा वै देवान्	७.५.११	६०	आत्तमस्याप्रतिगृहीतम्	१३.७.१३	१२६
असुराणां वै बल	१९.७.१	१९१	आत्मा वा एष—	४.७.१	३०
असुरेषु वै सर्वः	८.६.५	७२	आतमितोर्निधनमुपयन्ति	५.४.९	३६
असौ वाव त्रिरात्रो	२०.१६.९	२०६	आतमितोर्निधन	१२.११.१७	११५
अहतं वसानोऽवभृथाद्	१७.१३.१४	१७५	आत्मा वै यज्ञस्य	७.३.७	५७
अहतं वसानोऽवभृथाद्	१७.१३.६	१७४	आतृतीयायाः संख्या—	८.७.१४	७४
अहर्निर्वै त्रिरात्र	१६.१०.३	१६३	आत्मा वा एष	१४.९.२०	१३९
अहर्वा एत	१२.३.१०	१०६	आत्मना वा अग्निष्टोमेन	१८.८.६	१८३
अहर्वा एत	१५.३.२९	१४७	आत्मा वा अग्निष्टोमः	१९.५.११	१९०
अहर्वा एत	१२.३.१३	१०६	आ त्वेता निषीदतेति	९.२.१८	७९
अहर्वा एत	१४.९.१०	१३९	आतीषादीयं भवति	१२.११.१५	११५
अहर्वा एत	१४.९.२६	१४०	आ तून इन्द्र क्षुमन्त	९.२.१३	७८
अहर्वं पान्तमन्त्रो	९.१.७	७८	आते अग्न इषी मही	१३.६.१	१२४
अहिरसि बुध्यः	१.४.११	३	आ ते वत्सो मनो यमत्	१४.६.१	१३७
अत्रिकामयत चत्वारो	२१.९.२	२१२	आथर्वणं लोक	८.२.५	६८
आकूपारं भवति	१५.५.२९	१५०	आदित्या अस्मिंल्लोक	२३.१५.५	२३०
आक्षारं भवति	११.५.७	९९	आदित्यएवैकविंशस्या	१०.१.१०	८९
आग्निपावमानी	१६.५.१९	१६०	आदित्य देवत्यश्चेत	१५.४.२	१४८
आग्निपावमानो	१६.५.९	१६०	आदित्यानां यमातिरात्राः	२४.१२.२	२३९
आग्नेय एककपाल	२१.१०.२३	२१५	आदिर्बृहत् ऊर्ध्वमिव	८.९.११	७६
आग्नेयी प्रतिपद्	१७.१३.२	१७४	आन्धीगवं भवति	१२.११.२१	११५
आग्नेयी पृथिव्याग्नेयो	१५.४.८	१४८	आनुजावरस्तुवीतालोकः	२.१०.२	१३
आग्नेयीषु पूर्वेषा	१५.६.१	१५१	आदित्याश्चाङ्गिरसश्चैतत्	२४.२.२	२३७
आग्नेयैन्द्रीषु	१५.६.३	१५१	आदित्याश्चाङ्गिरसः	१६.१२.१	१६५
आक्रमोस्याक्रमाय त्वा	१.१०.१२	८	आनृणं भवति	१३.३.१६	१२१
आग्नेयोऽष्टकपाल	२५.१४.१	२५३	आनो मित्रावरुणेति	६.१०.४	५४
आज्यानां प्रथमा पृष्ठानाम्	३.११.२	२१	आप्ते त्रिरात्रे	१२.७.२	११०
आज्येनाभिषिच्यते	१७.११.९	१७३	आप्तेन व्रतेन स्तुते	२१.१५.६	२१८
आजिगं भवति	१५.९.६	१५३	आप्ते षडहे छन्दाश्चि	१४.१.२	१३२

आप्यन्ते वा एतत्	१४.१.१	१३२	आष्कारिणधनं काण्वम्	८.२.१	६८
आप्यायस्व समेतु ते	१.५.८	३	आष्कारिणधनं काण्वम्	१२.३.२०	१०६
आपो वै रेवत्य स्ता	१३.९.१६	१२७	आषादश्छे भवति	१२.९.१३	११२
आपो वै क्षीर रसा	१३.४.८	१२२	आषादश्छे भवतः	१२.१२.११	१०४
आपो वै रेवत्यः	७.९.२०	६५	आषादश्छे ऋद्धि—	८.९.२०	७६
आभीकं भवति	१५.९.८	१५३	आषां भवति	११.३.४	९८
आभीषवं भवत्यहो	१२.९.१५	११२	आषासूक्तं भवति	१५.५.८	१४९
आमहीयवं भवति	११.११.७	१०४	आश्विनश्छेतानुशंसति	९.१.३४	७९
आमहीयवं भवति	१५.९.५	१५२	आशिषमेवास्मा	१३.१२.७	१३१
आमयाविनं याजयेत्	१८.५.११	१८०	आशिषमेवास्मा	१५.५.१३	१४९
आयतनवान् बन्धुमान्	१०.१.५	८९	आशुभार्गवं भवति	१४.९.९	१३९
आयतनवान् बन्धुवान्	१०.१.८	८९	आसितं भवति	१४.११.१८	१४२
आयतनवान् बन्धुवान्	१०.१.११	८९	आसितं भवति	१५.५.२७	१५०
आयतनवान् बन्धुमान्	१०.१.१४	८९	आ सोता परि विञ्जत	१२.५.३	१०८
आयतनवान् बन्धुमान्	१०.१.१७	८९	आहवनीये प्रहरन्त्ये	१२.१०.१६	११३
आयतनवान् बन्धुमान्	१०.१.२०	९०	इष्टयजुषस्ते देव	१.६.४	५
आयतनवान् बन्धुवान्	१०.१.२	८९	इडां पशुकामाय	७.१.११	५६
आयास्यं भवति	१४.३.२१	१३४	इडान्ताः पावमाना	१४.५.३१	१३७
आयास्ये भवतः	११.८.९	१०२	इडान्ताः पवमाना	१४.११.४०	१४३
आयास्यो वा आङ्गिरस	१४.३.२२	१३४	इडानाश्चक्षारो	१५.३.१४	१४७
आयाहि सोमपीतय इति	४.६.१०	२९	इडाभिरैदं तथा	१२.१०.२५	११३
आयुर्नवस्तोमाभ्याश्चसद	५.४.१२	३६	इडे अभितोऽथकारम्	१३.४.४	१२१
आयुर्मे प्राणो मनसि मे	१.५.१७	४	इहन्वा एतेन काव्यो	१४.९.१६	१३९
आयुर्वा आतीषादीय	१२.११.१६	११५	इतो वा इमे लोका	७.१०.५	६५
आयुर्वा एतत्सत्रायणम्	२५.८.३	२५०	इतो वै प्रातरुद्धर्वाणि	८.७.१	७३
आयुषा वै देवा	१६.३.२	१५८	इदमहमयं यजमानम्	१.२.६	२
आयुषास्तिमतिजीवति	६.५.२	४७	इदं वसो सुतमन्त्र	९.२.१६	८०
आयुषे मे पवस्व	६.६.१७	५०	इदं वाव प्रथमेनाह्म	२०.१६.१	२०५
आरण्येभ्यो वा एतत्	६.८.८	५२	इदंश्चन्वोजसेति	९.२.१७	८०
आर्तं वा एते संवत्सरस्य	५.९.५	४१	इन्दुर्वाजी पवते	१३.५.६	१२३
आर्ध्व पवमाने स्तूयमान	१७.१२.५	१७४	इन्द्रक्रतुर्वा आपरेति	४.७.२	३०
आ वा एते संवत्सरम्	५.१०.१	४१	इन्द्रं गीर्हिवामहे	११.४.४	९८
आसन्नः पात्रञ्जनयन्त देवा	४.६.२२	२९	इन्द्रः प्रजापति मुपा—	१२.१३.४	११६
आसन्दीमारुह्योद्गायति	५.५.१	३७	इन्द्रः प्रजापति मुपा—	१३.४.१	१२१
आष्कारिणधनं काण्वम्	८.१.१	६७	इन्द्रमदेभ्यो माया	१९.१९.१	१९६

इन्द्रमच्छ सुता इमे	११.१०.४	१०३	इन्द्रो यतीन् साला	१९.४.७	१८९
इन्द्रवत्यो गायत्र्यो	१३.९.२९	१२८	इन्द्रो यतीन् सालावृकोभ्यः	१८.१.९	१७७
इन्द्र वा अक्ष्या	१२.५.१९	१०९	इन्द्रो यतीन् सालावृकोभ्यः	८.१.४	६७
इन्द्र विन्द्रपीतस्यत	१.५.४	३	इन्द्रो यतीन् सालावृकोभ्यः	१३.४.१७	१२२
इन्द्र विन्द्रपीतस्यत	१.५.१३	४	इन्द्रो यतीन् साला	१४.११.२८	१४२
इन्द्र विन्द्रपीतस्य	१.५.१६	४	इन्द्रो वृत्र महन्	१८.५.२	१७९
इन्द्र विन्द्रपीतस्यत	१.६.२	४	इन्द्रो वृत्रं हत्वा	१५.११.९	१५५
इन्द्रं विक्षा अवी	११.११.४	१०४	इन्द्रो वृत्राय वज्रम्	१३.५.२२	१२५
इन्द्रश्सर्वाणि भूतानि	५.४.१४	३७	इन्द्रो वृत्राय वज्रम्	२०.१५.६	२०५
इन्द्रश्सर्वाणि भूतानि	१४.५.१५	१३६	इन्द्रो वै युधाजितस्य	७.५.१४	६०
इन्द्रश्च वै नमुचिष्ठाऽसुरः	१२.६.८	११०	इन्द्रो वृत्रमहं स्तस्येयम्	१८.९.६	१८४
इन्द्रश्च बृहच्च समभवताम्	१२.१३.१	११६	इन्द्रो वृत्र महन् स	१८.११.१	१८६
इन्द्रश्चरामाचाक्षाम्	२५.१३.३	२५२	इन्द्रो वृत्रमहस्तस्य	९.५.७	८३
इन्द्रस्तृतीयसवनाद्वा	८.४.५	७०	इन्द्रो वृत्राद्विभ्यद्वा	१२.५.२१	१०९
इन्द्रस्तृतीय सवनाद्	८.५.११	७१	इन्द्रो वै त्रिशिरसम्	१७.५.१	१७१
इन्द्र सुतेषु सोमेष्विति	९.२.२१	८१	इमश्स्तोममर्हते	१३.८.१	१२६
इन्द्रस्तेजस्कामो	१४.९.३४	१४०	इममिन्द्र सुतं पिब	१२.१२.४	११५
इन्द्राग्नी आगतं सुतम्	१५.८.४	१५२	इमं वाव देवा लोकम्	१०.१२.३	९६
इन्द्राग्नी पूर्वं	१२.८.८	१११	इमं वाव देवा लोकम्	१०.१२.४	९६
इन्द्राग्नी युवामिम	१३.२.७	१२०	इमानेव लोकानेष्वेव	२३.४.४	२२७
इन्द्राग्नी वै देवानाम्	२५.११.३	२५२	इमे वै लोका अतिछन्दा	४.९.२	३१
इन्द्राग्नी वै देवानाम्	२४.१७.३	२४२	इमे वै लोका एतानि	७.३.९	५७
इन्द्राय मद्मने सुतमिति	९.२.७	८०	इमे वै लोका गायत्रम्	७.१.१	५६
इन्द्राय साम गायते	१३.६.३	१२४	इमे वै लोकाः	८.१.९	६७
इन्द्रायाहि चित्रभान	१४.२.५	१३३	इमे वै लोकास्त्रिणव	६.२.३	४४
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते	१३.९.१	१२६	इमौ वै लोकौ	७.१०.१	६५
इन्दुरिन्द्रमवागा दित्यव	९.९.१०	८७	इमे वै लोका एतानि	२१.२.७	२०८
इन्द्रे अग्ना नमो	१४.८.७	१३९	इमे लोकास्त्रिरावः	२१.७.२	२११
इन्द्रेण संधि दक्षु	१२.२.६	१०५	इयं वा अन्तरिक्षम्	२४.१.७	२३६
इन्द्रेति प्रथमस्याऽहः	१०.८.१	९४	इयं वामस्य मन्मन	१२.८.७	१११
इन्द्रोऽकामयत पाप्मानम्	१९.१८.२	१९६	इयं वै गायत्र्यस्याम्	१४.१.४	१३२
इन्द्रोऽसुरान् हत्वाऽकार्यञ्च	२२.१४.२	२२३	इयं वै रथन्तरमस्याम्	१८.५.१८	१८०
इन्द्रो दधीचो अस्थभिः	१२.८.५	१११	इयं वै रथन्तरमस्याम्	९.१.२९	७९
इन्द्रो मदाय वावृध	१३.४.१४	१२२	इयं वै रथन्तरम्	११.४.७	९८
इन्द्रो मरुतः सहस्रम्	२१.१.१	२०७	इयं वै रथन्तरम्	१६.११.४	१६४

इयं वै रथन्तरम्	१६.१०.८	१६४	उदलो वा एतेन	१४.११.३३	१४३
इयं वै रथन्तरम्	१८.६.११	१८१	उदुत्ये मधुमत्तमा	१५.१०.३	१५३
इयं वै सार्षपगजवस्याम्	४.९.६	३२	उदुम्बरे वसत्युः	१६.६.४	१६१
इलान्दमग्निष्टोम साम	५.३.१	३५	उद्धत्तिवद्विगद्गोम	१०.६.३	९४
इषोवृधीयं भवति	१३.९.८	१२७	उद्धद्वा एत दहर्ष्य	१२.३.२	१०६
इहवद्दामदेव्यं भवति	१३.९.२६	१२८	उद्धद्वा एतत् त्रिव	१२.५.२	१०८
इहेहेति गायेत्	१३.१०.९	१२८	उद्धन्द्गार्गवं भवति	१४.९.३९	१४०
ई निधनं तथा ह्येतस्य	१२.११.२६	१२५	उद्धश्शपुत्रो भवति	१३.३.२.९	१३१
ईश्वरं वै रथन्तरम्	७.७.१५	६२	उद्धश्शीयमुक्थाना	१८.६.१७	१८१
ईश्वर वा एषोऽयतोभृतः	२१.४.११	२१०	उद्धश्शीयमुक्थाना	१८.५.२३	१८१
इष ऊर्ज्ज आयुषे	१.१.९	१	उद्धश्शीयमुक्थानाम्	१६.१०.११	१६४
उक्ष्णोरन्त्रो वा एताभ्याम्	१३.९.१९	१२७	उद्धश्शीयं भवति	१५.६.६	१५१
उक्थश्शस्यते वषट्कारः	१८.६.२२	१८२	उपक्षुद्धा गायति	१३.४.५	१२१
उक्थो भवति पशवः	१६.१०.१२	१६४	उपगुर्वै सौम्रवसः	१४.६.८	१३७
उक्थ्यो भवति पशवो	१८.५.२४	१८१	उप त्वा जामयो गिरः	१६.५.१	१६०
उक्थ्यो भवति	१९.१६.६	१९५	उप नो हरिभिः सुत	१२.१३.३	११६
उक्थो भवति पशवः	१७.२.४	१७०	उपवत्यो भवन्ति	१५.११.१५	१५५
उक्थः षोडशमान्	१९.६.३	१९०	उपवती प्रतिपद्वायव्यः	१७.१३.१६	१७५
उग्रगाधमिव वा	१४.८.४	१३८	उपवती प्रतिपद्भवति	१६.५.१४	१६०
उग्रगाधमिव वा	१४.८.८	१३९	उप वा अन्नमन्नम्	६.९.३	५३
उग्रगाधमिव वा	१५.२.६	१४६	उप वै प्रजाताम्	६.९.५	५३
उग्रगाधमिव वा	१५.२.९	१४६	उपसदि सहस्रम्	१६.८.३	१६२
उच्चा ते जातमन्धसः	१२.३.१	१०६	उपाकृतेऽहिङ्कृते मन्थन्ति	१२.१०.१३	११३
उच्चा ते जातमन्धसः	१५.९.१	१५२	उपास्मै गायता नरः	१६.११.२	१६४
उत्तमानि पदानि	९.१.१९	७९	उपास्मै गायता नरः	६.९.१	५३
उत्तरेणोत्तरेण काण्डेन	१८.२.७	१७८	उपैनं पशव आवर्तन्ते	६.७.२०	५१
उत्तरो दशर्चो	१३.७.९	१२५	उपैनं पशव आवर्तन्ते	७.९.८	६४
उत्सेधो भवति	१५.९.१०	१५३	उपैनं पशव	१५.५.३६	१५१
उत्सेध निषेधौ ब्रह्म	१९.७.४	१९१	उपैनमुत्तरो यज्ञः	८.९.१८	७६
उत्सेधेन वै देवाः	१५.९.११	१५३	उपोषु जातमप्सुरम्	६.९.४	५३
उत्तिष्ठन्नोजसा सहे	१३.२.५	१२०	उपोषु जातमप्सुरम्	१५.५.६	१४९
उत्ते शुष्मास ईरत	१८.८.१४	१८४	उभयश्शृण्वच्च न	१४.१०.६	१४१
उद्गात्रा पत्नीः	८.७.१२	७४	उभयतः श्णु दग्धिः	१६.६.६	१६१
उदङ्ङासीन उद्गायत्युदीची	६.४.१४	४६	उभयतः स्तोत्रं तथा	१२.३.१७	१०६
उदयनत एव कार्याः	१३.१.२.२	१३०	उभयेस्तोमा	१६.१४.६	१६७

उभयेस्तोमा युग्मन्तश्च	२०.११.१०	२०२	ऊर्ध्वाः स्तोमा	१६.३.४	१५८
उभयेस्तोमा युग्मन्तश्च	१९.८.५	१९१	ऊर्ध्वस्सप्तऋषीनुप-	१.५.५	३
उभयेस्तोमा युग्मन्तः	१९.११.७	१९३	ऊर्ध्वीव वा एतर्हि	१३.१२.१४	१३१
उभयेस्तोमा युग्मन्तश्च	२१.६.४	२११	ऋक्था वा अन्यत्	१६.८.४	१६३
उभयेस्तोमा युग्मन्तश्च	२१.९.५	२१३	ऋतधामासि स्वर्ज्योतिः	१.४.९	३
उभयेस्तोमा युग्मन्तश्च	२२.६.५	२२०	ऋतपात्रमसि	१.२.३	१
उभयेस्तोमा युग्मन्तश्च	२२.७.७	२२१	ऋतमुक्त्वा प्रसर्पन्ति	१८.२.९	१७८
उभयोरनयोलोकयोः	२३.१५.७	२३०	ऋतवो न प्रत्यतिष्ठश्स्त	२५.३.२	२४७
उभा जिग्यथुर्न	२०.१५.७	२०५	ऋतवो न प्रत्यतिष्ठन्	२२.१.२	२१९
उभाभ्यां बृहद्रथन्तराभ्याम्	७.१०.९	६५	ऋतवो न प्रत्यतिष्ठश्स्त	२३.२२.२	२३३
उभा देवैताभिः	२३.८.४	२२८	ऋतवो न प्रत्यतिष्ठश्स्त	२४.१६.२	२४२
उभाभ्यां वै रूपाभ्याम्	११.२.१	९७	ऋतस्य द्वारौस्थो मा	१.५.१	३
उभाभ्यां वै रूपाभ्याम्	११.७.१	१०१	ऋतस्य त्वा देवस्तोमपदे	१.६.५	५
उभे यदिन्द्र रोदसी	१३.१०.३	१२८	ऋतस्य सदनं सीदामि	१.२.२	१
उभे बृहद्रथन्तरे	१६.१०.७	१६४	ऋतुभिश्च वा इमे	१२.४.९	१०७
उभे बृहद्रथन्तरे	१९.८.३	१९१	ऋषभो ब्राह्मणाच्छसिनो	१८.९.१४	१८५
उभे बृहद्रथन्तरे	१९.१२.७	१९४	ऋषभो रैवतो	१३.१०.१०	१२८
उभे बृहद्रथन्तरे भवतः	२२.१८.६	२२५	ऋषभः पावमानो	१५.३.१६	१४७
उभे बृहद्रथन्तरं भवतः	१९.१३.५	१९४	ऋषभः शक्वरो	१३.५.१७	१२३
उभे बृहद्रथन्तरे	१९.९.३	१९२	ऋषभो वा एष	१९.१२.२	१९३
उर्वरा वेदिर्भवति	१६.१३.६	१६६	ऋषयो वा इन्द्रम्	१५.५.२४	१५०
उष्णिक्कुम्भावेते	८.५.१	७०	ऋषेर्वा एतत्प्राशोद्धूतम्	८.९.२२	७७
उष्णिक्कुम्भ्यां वा	८.५.२	७०	षड्वा ऋतव ऋतुष्वेव	२२.१.३	२१९
उष्णीषञ्च प्रतोदश्च	१७.१.१४	१७०	ऋश्यस्य साम्ना	५.४.१३	३६
उष्णीषं बिभर्ति	१६.६.१३	१६२	एकयूपो वैकादशिनी	२१.४.१३	२१०
उशाना वै काव्यः	७.५.२०	६०	एकं वा अन्येन	१२.९.१२	११२
उशाना वै काव्यः	१४.१२.५	१४३	एकस्तोममुत्सृज्यैकम्	२१.९.३	२१२
उशिगसि वसुभ्यस्त्वा	१.९.९	७	एकविंशश्स्तोमा	२२.१५.९	२२४
ऊर्गस्यूर्जम्भयि धेहि	१.६.१५	५	एकविंशायतनो वा	१२.१३.८	११६
ऊर्ध्वसन्नमपि	९.२.१०	८०	एकविंशोऽग्निष्टोमः	१६.९.६	१६३
ऊर्ध्वेडं तथा	११.९.७	१०२	एकविंशोऽग्निष्टोमः	१९.८.७	१९१
ऊनातिरिक्ता भवतः	४.८.३	३०	एकविंशोऽग्निष्टोमः	१९.९.६	१९२
ऊष वा अन्तरिक्षम्	२४.१.६	२३६	एकविंशोऽग्निष्टोमः	१६.१३.४	१६६
ऊषर्वं मध्यमोजतिरात्रः	२४.१.१०	२३६	एकविंशोऽग्निष्टोमः	१६.१४.८	१६७
ऊर्ध्वानि छन्दांसि	२४.११.८	२३९	एकविंशोऽग्निष्टोमः	१७.३.४	१७१

एकविंशं पुच्छम्	२२.५.९	२२०	एतत्तद्यदाहुरेको	१६.१.५	१५७
एकविंशं पुच्छं भवति	५.१.१६	३४	एतदन्यत् कुर्युक्थान्यत्	९.७.११	८५
एकविंशो भवति	४.६.३	२८	एतदन्यत् कुर्युरभि-	९.८.२	८५
एकविंशोऽतिरात्रो भवति	२२.१५.५	२२४	एतद्वा अभ्याम्	२०.१५.८	२०५
एकविंशोऽन्ततः स्तोमा	२५.८.६	२५०	एतद्वाव मनुष्यस्यामृतत्वम्	२२.१२.२	२२३
एकविंशोऽभिषेचनीयस्यो	१८.१०.९	१८६	एतद्वाव मनुष्यस्या	२३.१२.३	२२९
एकविंश महर्भवति	२१.४.७	२१०	एतद्वै दृति वातवन्तौ	२५.३.६	२४८
एकविंशश्होतुः	१६.१५.१०	१६७	एतद्वै देवानाश्चक्रम्	२३.६.३	२२७
एकविंशस्तोमा नातियन्ति	२१.१२.८	२१६	एतद्वै प्रत्यक्षं महाव्रतम्	१६.११.११	१६५
एकविंशो वै स्तोमानाम्	५.१.१७	३४	एतद्वै प्रजापतिः	२५.१७.३	२५४
एकविंश एव स्तोमो	१२.१३.३४	११८	एतद्वै परोक्षं व्रतम्	२२.१०.४	२२२
एकस्मा अन्यो यज्ञः	६.३.२	४५	एतद्वै पुरुषमक स्तस्या	२२.९.५	२२२
एकस्याश्स्तोत्रीयायाम्	५.५.७	५७	एतद्वै यज्ञस्य श्वस्तनम्	५.७.५	३९
एकश्चाम बहूनि	१९.५.१०	१९०	एतद् वै यज्ञस्य	७.४.१	५८
एकाक्षरणिधनो भवत्ये-	४.३.३	२५	एतद्वै यज्ञस्य श्व	१५.९.१७	१५३
एकाङ्गायत्रीमेकाहमुपेयुः	४.४.७	२६	एतद्वै व्रतमाप्तम्	२२.११.४	२२२
एकाक्षरं निधनमुपयन्ति	११.३.६	९८	एतद्वै व्रतमाप्तम्	२१.१५.५	२१८
एकाक्षरं वै देवानाम्	१२.१३.२७	११७	एतद् वै व्रात्यधनम्	१७.१.१६	१७०
एकाक्षरा वै वाग्वा-	१५.१०.१३	१५४	एतद्वै साक्षादन्नम्	५.२.७	३५
एकादश राजसामानि	१८.१०.७	१८६	एतद्वै साक्षादन्नम्	५.३.२	३५
एकादशभ्यो हिङ्करोति	३.३.१	१७	एतद्वै वैश्यस्य समूहम्	१८.४.६	१७९
एकादशभ्यो हिङ्करोति	३.४.१	१८	एतद्वै स्म वा आह	८.६.८	७२
एकादशाक्षरणिधनो	१४.५.१९	१३६	एतमुत्पन्दश क्षिप	१३.९.५	१२७
एकादशेन च वै	६.१.२	४२	एतमुत्पं दश क्षिप	१८.८.१२	१८३
एकाष्टकायां दीक्षेरन्	५.९.१	४१	एतया वै देवाः स्वर्गम्	२.६.२	११
एको दीक्षेतैको हि	१०.३.३	९०	एतया वै देवा असुयन्	२.७.२	११
एका सञ्स्तुतानाम्	१६.२.८	१५८	एतया वै देवाः स्वर्गम्	२.१२.२	१४
एका सञ्स्तुतानाम्	१९.११.१०	१९३	एतया वै देवाः स्वर्गम्	२.१५.२	१५
एका सञ्स्तुतानाम्	२०.१२.४	२०३	एतया वै देवाः स्वर्गम्	३.५.२	१८
एकैका स्तोत्रीयोपजायते	१९.३.३	१८९	एतया वै देवाः स्वर्गम्	३.२.२	१७
ऐडेन बृहतीम्	७.३.१४	५८	एतस्माद्वा एतानि	७.९.२	६४
एते असुग्रमिन्दव इति	६.९.१३	५३	एतस्मिन्वै वैराजम्	१२.११.२४	११५
एत इति वै प्रजापति	१२.१.४	१०५	एतस्यैवैकविंशमग्निष्टोम	१६.१३.१	१६६
एत इति वै प्रजापतिः	६.९.१५	५३	एतस्यैव रेवतीषु	१७.७.१	१७२
एत इति सवनिवैनानृक्षै	६.९.१४	५३	एतर्हि तु वै पृष्ठानि	१६.५.२४	१६१

एतानि वाव सामानि	१८.१०.३	१८५	एतामेवाभिर्य्यमाणाय	२.१०.५	१३
एता एव समहान्नताः	२३.१३.१	२३०	एतामेव पुरोधकामाय	२.१६.४	१५
एता एव समहान्नताः	२३.१०.१	२२९	एतामेवाभिशस्यमानाय	२.१७.४	१६
एता एव समहान्नताः	२३.२४.१	२३४	एतावन्ति वाव	७.३.४	५७
एता एव समहान्नताः	२३.२१.१	२३३	एतावद्वाव संवत्सर	१०.३.११	९१
एता एव समहान्नताः	२४.७.१	२३८	एता वा अर्य्यलगृहपतय	२३.१.५	२२६
एता एव समहान्नताः	२३.२७.१	२३४	एता वा उप्रदेवो	२३.१६.११	२३१
एता एव समहान्नताः	२४.११.१	२३९	एतावान्वाव त्रिरात्रो	२०.१६.५	२०६
एतानेव लोकानान्पोति	१७.१४.३	१७६	एता वाव ब्रध्नस्य	२३.१९.३	२३२
एताभी रात्रीभिः	२३.२८.७	२३५	एता वाव ब्रध्नस्य	२३.३.५	२२६
एताभिर्वा आदित्या	२४.१.२.४	२४०	एतावता वाव	७.३.१	५७
एताभिर्वा आदित्याः	२३.१५.२	२३०	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.९.५	२२९
एताभिर्वा आरण्याः	२३.१३.४	२३०	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.११.५	२२९
एताभिर्वा इन्द्रः	२३.१०.२	२२९	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.१४.७	२३०
एताभिर्वा इन्द्रः	१२.१३.२.३	११७	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.२२.७	२३३
एताभिर्वा इन्द्राग्नी	२४.१७.२	२४२	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.१८.४	२३२
एताभिर्वै देवा देवत्वम्	२३.६.२	२२७	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.२०.४	२३३
एताभिर्वै देवाः	२३.१९.२	२३३	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.२.४	२२६
एताभिर्वै देवाः	२४.६.२	२३८	एता वै प्रतिष्ठिताः	२३.५.४	२२७
एताभिर्वै नक्षत्राणि	२३.२३.२	२३३	एति प्रेत्याशुमद्वीतिम	१०.६.१	९३
एताभिर्वै प्रजापतिः	२३.१८.२	२३१	एते असुप्रमिन्दवः	१२.१.३	१०५
एताभिर्वै प्रजापतिः	२३.९.२	२२९	एते वा एषां लोकानाम्	६.७.३	५०
एताभिर्वै प्रजापतिः	२३.११.२	२२९	एते वाव छन्दसाम्	२०.१६.८	२०६
एताभिर्वै प्रजापतिः	२३.२१.२	२३३	एते वाव सर्वेण	२५.४.३	२४८
एताभिर्वै प्रजापतिः	२३.२५.२	२३४	एते वै गायत्रस्य	७.१.१२	५६
एताभिर्वै प्रजापतिः	२४.४.२	२३६	एते वै छन्दसी	४.४.९	२७
एताभिर्वै प्रजापतिः	२४.९.२	२३८	एते वै त्रिकहुकाः	१६.३.८	१५९
एताभिर्वै प्रजापतिः	२४.७.२	२३८	एते वै पूर्णात्	१५.१२.४	१५५
एताभिर्वै वायुरारण्यानाम्	२३.१३.२	२३०	एतेन वा अङ्गिरसः	१२.३.२३	१०७
एताभिर्वै सविता	२४.१५.२	२४१	एतेन वा अङ्गिरसः	१६.१४.२	१६७
एतामेवानुजावराय	२.३.३	१०	एतेन वा अग्निः	२५.९.२	२५०
एतामेव बहुभ्यो	२.३.४	१०	एतेन वा इन्द्राग्नी	२५.११.२	२५२
एतामेव बहुभ्यो	२.९.३	१२	एतेन वा इन्द्र क्रोशे	१३.५.१५	१२३
एतामेव प्रजाकामाय	२.१०.३	१३	एतेन वा इन्द्रोऽत्यन्या	१९.१६.२	१९५
एतामेवापद्धराजन्याय	२.१०.४	१३	एतेन वा इन्द्रोऽत्यन्या	२२.८.२	२२१

एतेन वा एकया	२१.१४.२०	२१८	एतेन वै विश्वामित्रो	१४.३.१२	१३३
एतेन वार्यमैतम्	२५.१२.२	२५२	एतेन वै विश्वसृज	२५.१८.२	२५४
एतेन वै कण्व इन्द्रस्य	९.२.६	८०	एतेन वै शकलः	१३.३.१०	१२०
एतेन वै कपिवनो	२०.१३.४	२०२	एतेन वै शमनीचा	१७.४.३	१७१
एतेन वै क्षेम धृत्वा	२२.१८.७	२२५	एतेन वै सर्पा अपमृत्युम्	२५.१५.४	२५३
एतेन वै कुत्सोऽन्धसो	१४.११.२६	१४२	एतेन वै सर्पा एषु	२५.१५.२	२५३
एतेन वै कुसुखिन्द	२२.१५.१०	२२४	एतेन ह्य प्र उक्था-	११.११.६	१०४
एतेन वै गावः प्रजातिम्	२५.१६.२	२५४	एतेनैव द्वौ याजयेत्	१९.१५.२	१९५
एतेन वै गोतमो	१३.१२.८	१३१	एतेनैव त्रीन्	१९.१४.३	१९४
एतेन वै गौराङ्गिरसः	१६.७.७	१६२	एतेनैव प्रतिष्ठाकामो	१९.२.६	१८८
एतेन वै गौरीवितिः	२५.७.२	२४९	एतेनैवामयाविनम्	१६.३.५	१५८
एतेन वै चित्ररथम्	२०.१२.५	२०३	एतेनैवाज्ञाद्य कामो	१६.१३.५	१६६
एतेन वै जमदग्निः	२२.७.२	२२१	एतैर्वा एतानि	७.८.१४	६४
एतेन वै देवा	२२.११.२	२२२	एतैर्वै सामभिः	२१.२.५	२०८
एतेन वै देवा एषु	२०.१५.१	२०४	एन्द्र नो गर्धि प्रिय	१४.१२.२	१४३
एतेन वै देवा जैत्वानि	२०.३.४	१३९	एभ्यो वै लोकेभ्यः	८.३.२	६९
एतेन वै तपश्चितः	२५.५.३	२४८	एभ्यो वै लोकेभ्यः	११.५.१०	९९
एतेन वै तुरो देवमुनिः	२५.१४.५	२५३	एभ्यो वै लोकेभ्यः	११.८.११	१०२
एतेन वै नमी	२५.१०.१७	२५१	एभ्यो वै लोकेभ्यो	१३.५.१३	१२३
एतेन वै नैमिशीयाः	२५.६.४	२४९	एवमेव भ्रातृव्याद्	१२.१३.३०	११८
एतेन वै प्रजापतिः	१६.१६.२	१६८	एवं वै विद्वांस माहुः	१०.२.७	९०
एतेन वै प्रजापतिः	२५.१७.२	२५४	एवा ह्यसि वीरयुः	११.११.३	१०४
एतेन वै प्रजापतिः	२५.६.२	२४९	एष एव व्यूहः	२.८.१	१२
एतेन वै प्रजापतिः	२२.९.२	२२२	एष एव व्यूह उभयः	२.१०.१	१३
एतेन वै प्रजापतिः	२२.५.३	२२०	एष मेऽमुष्मिन् लोके	१८.७.७	१८२
एतेन वै पृथु वैन्य	१३.५.२०	१२४	एष वा अनहुहो लोक	१८.३.३	१७९
एतेन वै मनुः	१३.३.१५	१२०	एष वा आतो ह्यदशाहः	२३.१.२	२२६
एतेन वै मित्रावरुणाविमान्	२५.१०.१०	२५१	एष वा उदेति न वा	२०.५.४	२००
एतेन वै मेषातिथिः	१५.१०.११	१५४	एष वाव यज्ञः	६.३.१	४५
एतेन वै यमोऽनप	११.१०.२१	१०३	एष वाव प्रथमो	१६.१.२	१५७
एतेन वै यमो यमम्	११.१०.२३	१०३	एष वाव ब्रध्नस्य	१९.१०.१२	१९२
एतेन वै वज्रराक्ष	१३.३.१७	१२१	एष वाव सशरीरः	२१.४.३	२०९
एतेन वै वरुणो	१३.९.२३	१२७	एष वै ज्योतिष्मन्तम्	१८.३.४	१७९
एतेन वै वसिष्ठम्	१२.१.२१०	१२५	एष वै समृद्धः	१५.१२.६	१५५
एतेन वै वामदेवो	१३.९.२७	१२८	एषा वै प्रतिष्ठिता	२.१.५	९

एष वै यजमानस्य	७.१०.१६	६६	ओजस्येव तद्वीर्यं प्रति	११.६.११	१०१
एष वै विशालम्	१२.१३.१२	११६	ओजसा वा एतद्वीर्येण	६.१०.१८	५५
एष वै साम्नाश्रस	६.८.७	५२	ओजो वीर्यं त्रिष्टुब	१४.१.६	१३२
एष वै स्तोमस्य योग	६.८.६	५२	ओजोसि पितृभ्यस्त्वा	१.९.१२	७
एषस्य धारया सुत	१४.५.२	१३५	औक्षणोरन्मे भवतः	१३.९.१८	१२७
एष हि बहूनाश्समने	९.६.४	८४	ओकोनिधनम्	५.८.७	४०
एष ह्येव पृष्ठैः	८.९.८	७६	और्णायवं भवति	१२.११.९	११४
एषा वा अग्निष्टोमस्य	९.१.२३	७९	औदलं भवति	१४.११.३२	१४३
एषा वा उक्थस्य	९.१.२५	७९	औदुम्बरी भवति	१८.२.११	१७८
एषा वाव प्रत्यक्षम्	२०.१४.३	२०४	औदुम्बरो भवत्यू	५.५.२	३७
एषा वै प्रजापतेः	१८.६.२६	१८२	औशनं भवति	१४.१२.४	१४३
एषा वै प्रतिष्ठिता	१७.१.१३	१७०	औशनं यदौशनस्य	११.३.११	९८
एषा वै प्रतिष्ठिता	२.७.९	१२	कक्षीवान्वा एतेन	१४.११.१७	१४२
एषा वै प्रतिष्ठिता	३.९.४	२०	क इदं कस्मा अदात्कामः	१.८.१७	७
एषा वै प्रतिष्ठितैक-	२.१४.३	१४	क ई वेद सुते सच	१४.१०.१	१४१
एषा वै संवत्सरस्य	५.९.२	४१	ककुपु प्रथमायः	८.८.२६	७५
एषु लोकेषु प्रतिष्ठिति	६.२.४	४४	ककुपुं प्राचीमुदूहति	१६.११.५	१६४
एषोऽग्निष्टोम एष	२०.१.३	१९७	ककुपुं प्राचीम्	१६.११.१६	१६५
एषो सहस्रस्य	१६.११.१४	१६५	ककुपुं प्राचीम्	१७.१.४	१६९
एषा वै शिशुमारी	८.६.९	७२	ककुपुं प्राचीम्	१९.३.४	१८९
एषाषु ब्रवाणितेन	११.११.१	१०३	ककुपुं प्राचीम्	२०.४.३	१९९
ऐदतं भवति	१४.९.१५	१३९	ककुपुः समानानाम्	२४.१५.५	२४१
ऐध्मवाहं भवति	१५.६.२	१५१	कण्वरथन्तरं भवति	१४.३.१५	१३४
ऐन्द्रा मारुता उक्षाणो	२१.१४.१२	२१७	कण्वो वा एतत्सामर्ते	८.२.२	६८
ऐन्द्रश्सहोऽसर्जि	१.६.१	४	कथमिव यज्ञायज्ञीयम्	८.७.४	७३
ऐन्द्रावैष्णवं होता	९.७.४	८५	कथमिव वामदेव्यम्	७.९.१०	६४
ऐन्दीषु भवन्ती	१९.१६.५	१९५	कया नश्चित्र आपुवत्	११.४.२	९८
ऐयाहा इति वा	११.११.१२	१०४	कया नश्चित्र आपुवत्	१५.१०.१	१५३
ऐरङ्कृत्योद्रेयमिरायाम्	८.६.१०	७२	कल्पतेऽस्मै य	१०.५.१८	९३
ऐरं वै बृहदैदंश्चयन्तरम्	७.६.१७	६१	कर्णम्रवा वा एत	१३.११.१४	१३०
ऐषिरं भवति	१४.११.२०	१४२	करोति बाहुभ्यां वीर्यम्	६.१.९	४४
ओकोनिधनश्चडहमुखे	५.८.७	४०	करोति मुखेन वीर्यम्	६.१.७	४३
ओको वै देवानां द्वादशाहः	१०.५.१५	९३	करोति वाचा वीर्यत्र	६.७.४	५०
ओज एवैताभ्याम्	११.११.१३	१०४	कव्योसि कव्यवाहनः	१.४.१४	३
ओजस्येव तद्वीर्यं	१५.६.५	१५१	कवतीभ्यो ह्येति	७.९.२२	६५

कवती प्रतिपद्धारुणः	१७.१३.९	१७४	कलृप्ताद्वै योनेः प्रजाः	२३.२०.२	२३३
कविः सप्राजमतिथिम्	४.६.२१	२९	कलृप्तानिर्मल्लोकान्	७.१०.७	६५
कृशानो सव्यानायच्छ	१.७.८	७	कृत स्तोमो वा	१६.९.४	१६३
क्षत्रं वा एत दहरभि	११.११.८	१०४	कृतस्तोमो वा एष	१६.१६.३	१६८
क्षत्रं वा एकविंशः	१९.१.५	१८८	कृष्णाजिनेऽप्यभिविच्यत	१७.११.८	१७३
क्षत्रं वा एता रात्रयोऽभि	२३.७.२	२२८	कृषी नो वशसो जने	६.१०.१३	५५
क्षत्रस्ये वास्य	१५.३.३१	१४८	क्रुडेऽप्यमहरविन्द	१३.९.११	१२७
क्षिप्रज्ञेयं स्वर्गस्य	७.७.१२	६२	क्रुडेऽप्यमह	१३.११.१९	१३०
क्षिप्रः शशस्यमाजिमिव	९.१.३८	७९	क्रौञ्चं भवति	११.१०.१८	१०३
काक्षीवतं भवति	१४.११.१६	१४२	क्रौञ्चं भवति	१३.९.१०	१२७
काम कामं म आवर्तस्य	१.६.१४	५	क्रौञ्चं भवति	१४.११.२९	१४३
कामदुषा एन	७.५.२१	६०	खनित्रेण जीवति	१६.६.५	१६१
कामसनयो वा	२३.३.२	२२६	खल उत्तरवेदिः	१६.१३.७	१६८
कामसनि साम	१२.५.२०	१०९	खलेवाली यूपो	१६.१३.८	१६८
काम्यासि प्रियासि	२०.१.५.१५	२०५	गच्छति ज्यैष्ठ्यम्	२१.२.४	२०८
कार्णश्रवसं भवति	१३.११.१३	१३०	गच्छति पशूनाम्	२०.१४.६	२०४
कार्तयशं भवति	१४.५.२१	१३६	गच्छति पुरोधाम्	१७.११.५	१७३
कारपचवं प्रति यमुनाम्	२५.१०.२३	२५१	गच्छति स्थपत्यम्	१७.११.७	१७३
कालेयं प्रथमस्याह्नः	२१.९.१५	२१३	गच्छन्तीव वा एते	१५.२.२	१४५
कालेयं पुरस्ताद्भवति	८.४.१०	७०	गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतमिति	६.१०.८	५५
कालेयं भवति	११.४.१०	९९	गत निघनम्	१५.३.१२	१४७
कालेयमच्छ वाक	१५.१०.१४	१५४	गन्धर्वाप्सरसाश्स्तोमः	१९.३.२	१८८
कावं भवति	११.५.२४	१००	गरगिरो वा एते	१७.१.९	१६९
किं ज्योतिष्टोमस्य	६.३.६	४५	गर्भिणी विष्टुतिः	२.७.४	१२
किमकर्तेति यत्पुत्रान्	२४.१८.५	२४३	गवामयनं प्रथमः	२५.१६.१	२५४
किलासत्वात् भयम्	२३.१६.११	२३१	गवा वै देवान्	१६.२.२	१५८
कुत्सश्च लुशश्चेन्द्रम्	९.२.२२	८१	गनास्त्वाकृन्तन्नपसोऽतन्वत	१.८.९	६
कुले कुलेऽन्नं क्रियते	५.६.९	३९	गातुविद्वा एतत्साम	८.८.२३	७५
कुर्चानितरेऽप्यासत	५.५.१२	३७	गायत्रपार्वं भवति	१४.९.२५	२५
कोशिनो वा एत	१३.१०.८	११८	गायत्रं पुरस्ताद्भवति	७.३.२७	५८
क्रोशं भवति	१३.५.१४	१२३	गायत्र्यः सत्यं स्निष्टुभो	१२.९.६	१२२
कौत्मलबर्हिषं भवति	१५.३.२०	१४७	गायत्र्यः सत्यः	१३.९.६	१२७
कौत्मल बर्हिर्वा	१५.३.२१	१४७	गायत्र्यः सत्यो जगत्यः	१४.५.१०	१३५
कौत्सं भवति	१४.११.२५	१४२	गायत्र्यः सत्यं स्निष्टुभो	१४.९.२	१३९
कलृप्त उपरिष्ट	१३.१२.१३	१३१	गायत्रमयनं भवति	१३.४.१०	१२२

गायत्रं वै प्रथमम्	२१.९.८	२१३	गायत्रीषु स्तुवन्ति	१५.५.३७	१५१
गायत्रं वै रथन्तरम्	१५.१०.९	१५४	गायत्री सोममाहरतस्या	९.५.४	८३
गायत्रं वै सप्तम	१५.७.१	१५१	गायत्री वा एतां ज्योतिः	१०.४.५	९२
गायत्रं भवति	१५.९.४	१५२	गायत्रेण स्तुत्वा	७.३.११	५७
गायत्रं भवति	१५.११.२	१५४	गायन्ति त्वा गायत्रिण	८.९.१०	७६
गायत्रं भवति	११.३.२	९८	गावो वा एतत्	४१.१	२३
गायत्रं भवति	११.५.३	९९	ग्रामकामो यजेत्	१७.१०.३	१७३
गायत्रं भवति	११.८.६	१०१	ग्रामकामो यजेत्	१८.१.१३	१७७
गायत्रं भवति	११.१०.७	१०३	ग्रामकामो यजेत्	१८.५.७	१८०
गायत्रं भवति	१२.३.८	१०६	ग्राम्येभ्यो वा एतत्	६.८.१२	५२
गायत्रं भवति	१२.११.८	११४	ग्राम्येभ्यो वा एतत्पशुभ्यः	७.२.६	५७
गायत्रं भवति	१२.५.९	१०८	ग्राव्यः सैसाध द्रोण—	६.६.१	४८
गायत्रं भवति	१२.९.७	११२	ग्रामो वा एत मति	१८.५.८	१८०
गायत्रं भवति	१३.३.५	१२०	गिदैष ते रथ एष	१.७.७	६
गायत्रं भवति	१३.५.८	१२३	गिरिक्षि दौच्चामन्यवेति	१०.५.७	९३
गायत्रं भवति	१३.९.७	१२७	गूर्धो भवति	१३.१२.४	१३०
गायत्रं भवति	१३.११.८	१२९	गौतमस्य भद्रम्	१३.१२.६	१३०
गायत्रं भवति	१४.३.६	१३३	गौरिति निधनं भवति	४.९.३	३१
गायत्रं भवति	१४.९.६	१३९	गोवयति पाप्मानम्	१६.२.४	१५८
गायत्रं भवति	१४.११.७	१४२	गोवित् पवस्व	१३.१.१	११९
गायत्रं भवति	१५.५.७	१४९	गोविद्धा एतद्वसु	१३.१.२	११९
गायत्रं भवति	१४.५.११	१३५	गौगुलवेन प्रातःसवने	२४.१३.४	२४०
गायत्रन्निधनव	७.३.५	५७	गौङ्गवं भवति	१४.३.१८	१३४
गायत्रीञ्च जगतीञ्च	१९.१७.५	१९६	गौतमं भवति	१२.३.१५	१०६
गायत्रीश्सम्पद्यते तेजो	१६.१६.६	१६८	गौतमं भवति	११.५.२१	१००
गायत्रीश्सम्पद्यते	१९.७.७	१९१	गौपायनानां वै सत्र	१३.१२.५	१३०
गायत्रीषु जराबोधीयम्	२४.११.७	२३९	गौरीवितं भवति	११.५.१३	१००
गायत्रीषु पशुकामाय	८.१०.३	७७	गौरीवितं भवति	११.१०.१७	१०३
गायत्रीषु पुरुषकामाय	८.१०.५	७७	गौरीवितं भवति	१२.५.१७	१०९
गायत्रीषु ब्रह्मवर्चस	८.१०.१	७७	गौरीवितं भवति	१२.३.९	११६
गायत्रीषु स्तुवन्ति	१२.९.२३	११२	गौरीवितं भवति	१३.५.१६	१२३
गायत्रीषु स्तुवन्ति	१३.३.२५	१२१	गौरीवितं भवति	१३.११.१५	१३०
गायत्रीषु स्तुवन्ति	१३.९.२८	१२८	गौरीवितं भवति	१४.५.२०	१३६
गायत्रीषु स्तुवन्ति	१४.५.३०	१३७	गौरीवितं भवति	१४.११.२४	१४२
गायत्रीषु स्तुवन्ति	१४.११.३८	१४३	गौरीवितं भवति	१५.५.२१	१५०

गौरीवितं भवति	१५.९.१६	१५३	चतुर्विंशं भवति	४.२.४	२४
गौरीवितिर्वा	११.५.१४	१००	चतुर्विंशं भवति	४.१०.५	३३
गौरीवितिर्वा एत	१२.१३.१०	११६	चतुर्विंशं भवति	४.२.६	२४
गौरीवितश्श्यावास्त्रिहंव	५.८.२	४०	चतुर्विंशत्यक्षरा गायत्री	४.२.५	२४
गौरीवितश्षोडशि	१८.६.१८	१८१	चतुर्विंशति भवन्ति	१४.१.११	१३२
गौश्चास्त्राक्षतरश्च	१६.१.१०	१५७	चतुर्विंशतिः संवत्सरः	१६.७.५	१६२
गौश्चायुश्च स्तोमौ भवतः	४.८.१	३०	चतुर्विंशत्यक्षरा	१६.१४.४	१६७
गौषूक्तश्चाक्षसूक्तश्च	१९.४.९	१८९	चतुर्विंशः पवमानाः	२१.९.१	२१२
गौषूक्तिश्चाक्षसूक्तिश्च	१९.४.१०	१८९	चतुर्विंशः पवमानाः	२१.९.४	२१३
गृहपतिरौदुम्बरी धारयति	४.९.१५	३२	चतुर्विंशः पवमानाः	२१.६.१	२११
गृहपतेस्तु वागुपदासुक्ता	२३.१.४	२२६	चतुर्विंशं बहिष्पवमानम्	२०.११.९	२०२
गृहा वै देवानाम्	१०.५.१६	९३	चतुर्विंशं बहिष्पवमानम्	२२.७.६	२२१
धृतव्रतो भवति	१८.२.५	१७८	चतुर्विंशतिः संवत्सर	२३.२१.३	२३३
चक्षुर्वा एतत्संवत्सरस्य	५.९.११	४१	तुल्यत्वारिंशदाक्षीनानि	२५.१०.१६	२५१
चक्षुषी अतिरात्रौ	१०.४.२	९१	चतुश्चत्वारिंश एव	१४.७.१०	१३८
चक्रीवान्वा एष	१६.१.५.४	१६७	चतुश्चत्वारिंश एव	१४.१२.१०	१४४
चक्रीवत् सद सञ्जक्री	२५.१०.५	२५०	चतुर्होतारश्चेतो व्याचष्टे	४.९.१३	३२
चक्रे वा एते साकम्	२५.१.६	२४५	चतुष्पादाः पशवः	२३.२८.५	२३५
चतुर्ऋचो भवति	१३.१.११	११९	चतुष्टोमोज्जिष्ठोम	२१.४.१	२०९
चतुर्ऋचो भवति	१३.७.११	१२६	चतुष्टोमो भवति प्रतिष्ठा	६.३.१६	४५
चतुर्णिधनमाङ्गित्सम्	१२.९.१८	११२	चतुष्टोमो वा एष	२१.१२.७	२१६
चतुर्णिधनमाथर्वणम्	१२.९.८	११२	चतुष्टोमो वा एष	२२.१५.८	२२४
चतुर्थेऽहनि षोडशी	२१.९.१०	२१३	चतुष्पदानुष्ठुभ	१२.९.९	११२
चतुर्थस्याह्नश्चतुर्विंशः	२१.१०.४	२१४	चतुस्त्रिंशदक्षराः	१२.१३.२४	११७
चतुर्दशभ्यो हिङ्करोति	३.१०.१	२०	चतुस्त्रिंशा भवन्ति	४.५.१०	२८
चतुरक्षरणिधनं भवति	५.४.८	३६	चतसृभिर्विहितैका परिचरा	३.८.३	२०
चतुरक्षरेण बृहतः	७.७.४	६२	चत्वारः षड्वा	१५.१.१०	१४५
चतुरहे पुरस्तात्	५.९.१२	४१	चत्वारि त्रिवृन्त्यहा	२२.९.१	२२१
चतुरस्तोमान् प्रतिविहिता	२.११.२	१३	चत्वारि सन्ति	७.२.३	५७
चतुरुत्तरैरेव छन्दोभिरेतव्यम्	४.४.५	२६	च्यवन्ते वा एतदेवत्यः	१६.५.२७	१६१
चतुरस्त्रिवृद्धिजितः	१६.४.१३	१५९	च्यवन्तो वै दाषीचो	१४.६.१०	१३८
चतुर्विंश एव	१४.१.१४	१३२	ध्यावनं भवति	१३.५.११	१२३
चतुर्विंश एव	१४.६.११	१३८	ध्यावनं भवति	१९.३.६	१८९
चतुर्विंश एव	१५.७.८	१५२	चात्वालमवेक्ष्य	६.७.२४	५१
चतुर्विंश एव	१५.११.१६	१५५	चित्रापूर्णमासे दीक्षेरन्	५.९.१०	४१

चित्रवच्छिशुमत् पङ्क्ति	१०.६.५	९४	ज्योतिष्ठोम एव	१७.५.५	१७१
छन्दसां वा अन्व	६.३.१२	४५	ज्योतिष्ठोमस्यायनेन	२५.८.५	२५०
छन्दोसि वा अन्योन्यस्य	१०.५.१३	९३	ज्योतिष्ठोमेनानिष्टुता	१७.८.१	१७२
छन्दोसि वा अभिभूतय	९.४.७	८२	ज्योतिष्ठोमेनातिरात्रेण	२०.१.२	१९७
छन्दोसि वै सोममाहरम्	६.९.२२	५४	ज्योतिष्ठोमोऽग्निष्ठोमो	२१.१५.१	२१८
छन्दोस्येव छन्दोमाना	१०.१.१९	८९	ज्योतिष्ठोमोऽग्निष्ठोमो	२२.८.१	२२१
छन्दोस्येवाऽस्याः	१०.५.११	९३	ज्योतिष्ठोमोऽग्निष्ठोमः	२२.१३.१	२२३
छन्दोभिरारोहति	५.५.४	३७	ज्योतिष्ठोमोऽग्निष्ठोमः	२०.११.१	२०२
छन्दोभिरुपावरोहति	५.५.५	३७	ज्योतिष्मान् ब्रह्मवर्चसी	१२.१०.१७	११३
छन्दोभिर्यज्ञं भ्रातृव्यस्य	८.६.७	७२	ज्योतिष्मानस्य षोडशी	१२.१३.३३	११८
छन्दोभिर्वै देवा	१२.१०.६	११३	ज्योतिः समानानां भवति	६.३.७	४५
छन्दोऽन्ये यज्ञाःसम्पद्यन्ते	१९.१.३	१८८	ज्योतिर्यज्ञस्य पवते	१३.७.१	१२५
छन्दोभि रहानि	२१.९.११	२१३	ज्योतिर्वा एषाऽग्निष्ठोमः	१९.११.११	१९३
छन्दोमा मध्यतो भवन्ति	२२.१६.३	२२४	ज्योतिर्वा एष विह्वतः	२१.१२.५	२१६
छिद्रइव वा एष	१८.५.४	१८०	ज्योतिर्वै गायत्री	१३.७.२	१२५
छिद्रो वा एतेषां संवत्सरः	५.१०.७	४२	ज्योतिर्वै हिरण्यम्	१८.७.८	१८२
छिन्नमिव वा एतद्यदेक	१८.८.१७	१८४	ज्योतिःप्रजानाम्	२१.१२.६	२१६
जगती प्रतिपद्भवति	१२.७.३	११०	ज्योतिर्वा एष	२२.१५.६	२२४
जगत्यः सत्यस्त्रिष्टुभः	१४.३.५	१३३	ज्योतिः प्रजानां भवति	२२.१५.७	२२५
जगत्यः सत्यस्त्रिष्टुभः	१४.९.५	१३९	जामि द्वादशाहस्या	१४.३.१७	१३४
जनद्वद्वा एत	१२.८.२	१११	जामि वा एतद्यज्ञे	१०.४.७	९२
जनद्वद्वा एत दहर्ष	१२.७.६	११०	जामि वा एतद्यज्ञे	१६.५.२५	१६१
जनस्य गोपा अजनिष्ट	१२.८.१	१११	जामि वा एतद्यज्ञे	८.८.१०	७४
जनुषैकच्यौ भवतोऽह्नः	११.५.१२	१००	जीवा ज्योतिरशीमहीति	४.७.४	३०
जने तिस्रो वसति	१६.६.८	१६१	त उत्तमं पर्यायिम—	९.१.१७	७८
जमदग्नेश्च वा ऋषीणाञ्च	९.४.१४	८२	तत एनयोर्निधने	७.१०.३	६५
जरत्कक्षो वा एष	१७.७.२	१७२	ततः पशुपुरोडाशेन	५.१०.१०	४२
जराबोधीयं भवति	१४.५.२७	१३६	तत्सर्वनिवैतेन पोषान्	२१.१०.७	२१४
जह्नुवृचीवन्तो यष्ट	२१.१२.२	२१६	तत्ता उ एव दक्षिणा	१८.५.१३	१८०
ज्यायोऽभ्यारम्भमतिहाय	१२.११.१९	११५	ततो देवा अभवन्	१८.१.५	१७७
ज्येष्ठ ब्राह्मणं वा	७.६.७	६१	ततो बृहदनु प्राजायत	७.६.५	६१
ज्येष्ठयज्ञो वा एष	६.३.८	४५	ततो वा इदमिन्द्रो	१६.४.५	१५९
ज्येष्ठ सामानि वा	२१.२.३	२०८	तद्य एतदेकषष्टिरनुपेयुः	२४.१८.८	२४३
ज्येष्ठो ज्यैष्ठिनेयः	२.१.२	९	तद्य एवं वेद तस्मा	२१.३.२	२०९
ज्यैष्ठ्यं वा अनुष्टुब्	८.१०.१०	७७	तद्यद्येवं कुर्युरिकैकया	५.६.३	३८

तद्य एवं वेदैभ्यः	८.९.३	७६	तदाहुः पयोऽवनयेदिति	९.९.२	८६
तद्य एवं वेदैभ्यः	९.२.१२	८०	तदाहुः शिथिल मित्र	१४.१०.३	१४१
तद्य एवं वेदान्द्वैभ्यः	८.९.१६	७६	तदाहुः शिथिलमित्र	१७.१.१२	१७०
तद्यत् सवनानि	१८.५.१६	१८०	तदाहुः सशर इव	१८.८.४	१८३
तद्यदेवा चतुर्थेऽहनि	२१.९.१४	२१३	तदाहुः सशर इव वा	४.४.४	२६
तदप्तोर्य्याम्नोऽप्तो	२०.३.५	१९९	तदु दीर्घं मित्याहु	१३.११.१२	१३०
तदभक्षयन्त ऋत्विज	१८.५.१५	१८०	तदु पुराक्षसाभेत्याहुः	१४.९.१८	१३९
तदभ्यनूक्ता—तानीदहानि	२५.८.४	२५०	तदु व्यववद्यम्	१५.७.४	१५१
तदभ्यनूक्ता	२४.१.२.५	२४०	तदु समानं वदन्तीषु	११.११.१०	१०४
तदभ्यनूक्ता	२४.१.८	२३६	तदु सीदन्तीय	११.१०.१२	१०३
तदाहुर्जामि वा	१८.६.२०	१८२	तदु संवदित्याहुः	१५.३.३६	१४८
तदाहुर्न वा आर्या	९.६.५	८४	तदेत द्विषसृजाः सहस्र	२५.१८.७	२५५
तदाहुर्नानालोकाः	१९.९.५	१९२	तदेतच्छाकत्यानाम्	२५.७.४	२४९
तदाहुर्नानालोकानि	१६.१.५.९	१६७	तदेतत्प्रजापतेः सहस्र	२५.१७.४	२५४
तदाहुर्ब्रह्मवादिनोऽक्षरस्था	२०.१४.८	२०४	तदेव श्लोकोऽभ्यनूच्यत	२४.१८.४	२४३
तदाहुर्ब्रह्मवादिनो महान्नतम्	२०.१६.२	२०६	तदेव श्लोको विश्वसृजः	२५.१८.५	२५५
तदाहुर्ब्रह्मवादिनो न वा	२१.१.९	२०८	तद्वाहुर्व्यत्समौ भवत	५.१.१२	३४
तदाहुर्ब्रह्मवादिनः	२०.१६.६	२०६	तद्भवेष्ट प्रति तेजिष्ठम्	२३.१६.९	२३४
तदाहुर्मध्यतः संवत्सरस्य	४.१०.३	३३	तद्भि प्रत्येकाप्येति	२५.१०.१३	२५१
तदाहुर्मध्यत उपयन्ति	४.१०.४	३३	तन्तुरसि प्रजाप्यस्त्वा	१.१०.१	८
तदाहुर्य्यच्चतुर्विंशमहः	२४.१४.२	२४१	तम इव वा एते	९.१.१०	७८
तदाहुर्य्यत् तृतीयेहनि	२१.९.९	२१३	तम इव वा एता	१४.११.१५	१४२
तदाहुर्य्यत्त्रिवृद्धवत्ये	१७.५.४	१७१	तमिन्द्रं वाजयामसी	१४.८.५	१३८
तदाहुर्य्यदनुष्टुभस्तोम्याम्	१५.७.२	१५१	तमीडिष्ठ यो अचिषे	१४.२.६	१३३
तदाहुर्विवीवधमिव वा	४.५.१९	२८	तमु देवतल्प इत्याहुः	१०.१.१२	८९
तदाहुर्विलोमान स्तोमा	१९.८.६	१९१	तमु नाक इत्याहुः	१०.१.१८	८९
तदाहुरनव कल्पानि	४.४.८	२७	तमु प्रजापतिरित्याहुः	१०.१.९	८९
तदाहुरपप्रश्श	२१.९.१३	२१३	तमु प्रतिष्ठेत्याहुः	१०.१.३	८९
तदाहुरपृष्ठं वै	५.२.४	३५	तमु पुष्टिरित्याहुः	१०.१.१५	८९
तदाहुरीर्म इव वा एषा	४.२.१०	२४	तमुल्लिखेतप्राणाय	५.६.१४	३९
तदाहरुदरं वा एषः	४.५.१५	२८	तत्र तद्द्याद्यद्वास्यम्	९.५.१३	८३
तदाहरुत्सृज्याः	५.१०.४	४२	तत्रिष्टुब् जगतीषु भवति	४.६.२३	२९
तदाहुरेषा यज्ञस्य वाव	२०.११.८	२०२	तं चौजो बलमित्याहुः	१०.१.६	८९
तदाहुः कर्तप्रस्कन्द इव	४.५.१३	२८	तं ते मदं गृणीमसी	१२.६.३	१०९
तदाहुः कोऽस्वप्नुमर्हति	१०.४.४	९२	तं पत्योऽपघाटिलाभिः	५.६.८	३९

तं पुनरुपाधावत्तस्मै	१२.१३.५	११६	तस्माच्छरदमोषधयः	२१.१५.३	२१८
तपो गृहपतिर्ब्रह्म ब्रह्मे	२५.१८.४	२५४	तस्माच्छिरोऽङ्गानि	५.१.६	३४
तं प्रोहे 'द्वानस्पत्योऽसि	६.५.३	४७	तस्माच्छुक्लं पवित्रम्	६.६.९	४९
तं ब्रूयाद्वेपमानः प्रमेध्यस	६.६.१५	५०	तस्माज्जातं पुत्रम्	१२.१०.१४	११३
तं वो दस्म मृतीषह	११.४.३	९८	तस्मात्साकमन्त्रेणोक्थानि	८.८.५	७४
तं वः सखायो मदाय	१३.११.३	१२९	तस्मात्तर्हि मनुष्याणाम्	२३.६.५	२२८
त्वं न इन्द्राभर	१४.६.२	१३७	तस्मात्ते वाचा सिद्धा	२३.२८.८	२३५
त्वं वरुण उत	१५.२.४	१४६	तस्मात्तेषान्नाशैतव्या	८.१.११	६७
त्वश्सोमासि धारयुः	१५.५.१	१४८	तस्मादतिरात्रः कार्यम्	२४.१.१२	२३६
त्वश्ङ्ग दैव्ये ति	१२.११.२	११४	तस्मादाग्नेयोषूक्थानि	८.८.२	७४
त्वश्ङ्ग दैव्ये ति	१५.५.२	१४८	तस्मादात्रेयं चन्द्रेणेच्छन्ति	६.६.११	४९
त्वया वयं प्रवतः	४.७.६	३०	तस्मादाहुर्गायत्री वाव	८.४.४	७०
त्वामिद्धि हवामहे	११.९.१	१०२	तस्मादिषुवतो वा	२२.१४.३	२२३
त्वामिदाहो नर	११.९.३	१०२	तस्मादुषर्द्धारा अति	१३.१२.१२	१३१
त्वाष्टं पशुं बहुरूपम्	९.१०.३	८८	तस्मादेकाष्टकायात्रम्	५.९.६	४९
त्वाष्टी साम	१२.५.१८	१०९	तस्मादेषोऽरुणतम	२५.१२.५	२५२
त्वश् सुवीरो असि	१३.१.४	११९	तस्माद्वा एतेन पुरा	८.६.४	७२
तत्रापि त्रिणिघनम्	७.३.१७	५८	तस्माद्वदक्षिणीयाऽति	६.१.५	४३
तत्परिगृह्णन्तावब्रूताम्	७.८.२	६३	तस्माद्वरणोभिषज्य	५.३.१०	३६
तन्नं वा एत द्वितायते	१०.५.६	९३	तस्माद्वज्रपेय	१८.६.१२	१८१
तद्देवा यशः	७.५.७	६०	तस्माद्वज्रैषा यातयामा	६.४.१२	४६
तद्यथाऽदः पूवैद्युः	११.५.२०	१००	तस्माद्यो विराजश्स्तोमः	१०.२.१	९०
तद्भारिवर्णस्यैव	१२.६.९	११०	तस्माद्यः पुत्राणाम्	१६.४.३	१५९
तद्वै स पशुवीर्यम्	७.५.८	६०	तस्माद्यः पुरा पुण्यः	११.५.११	९९
तद्वै स प्राण वीर्यम्	७.५.१७	६०	तस्माद्धरीवतीषु स्तुवन्ति	१२.१३.७	११६
तया वा इदश्सहसम्	२१.१.२	२०७	तस्मात् पृथानां स्तोत्रम्	७.९.३	६४
तर्णिरित्तिषासति	१२.४.४	१०७	तस्मात्प्रजा दशमासः	६.१.३	४३
तरोर्भिर्वो विदद्वसु	११.४.५	९८	तस्मात्प्रायणीयस्याहः	४.२.३	२४
तरोर्भिर्वो विद द्रसु	१५.१०.४	१५३	तस्मादेतासु कार्यम्	५.३.४	३५
तयोरयममुषै शयैतम्	७.१०.२	६५	तस्माद्ब्राह्मणो वाणेन	५.३.११	३६
तयोः समानन्निघनम्	७.६.११	६१	तस्मान्यञ्जोऽन्ये पशवः	६.२.८	४४
तस्य पराचीनातिपादात्	४.५.११	२८	तस्मादु गायत्रीषु	८.८.३	७४
तस्य प्राची दिक्	५.२.३	३५	तस्मै जातायामीमांसन्त	१२.१०.१५	११३
तस्य यत्सप्तदशम्	४.५.१४	२८	ततश्चतुर्थ मासेषु	१७.१३.७	१७४
तस्मा अमुमादित्यम्	१६.१२.४	१६५	ततश्चतुर्थ मासेषु	१७.१३.१२	१७४

ततश्चतुर्षु मासेषु	१७.१३.१५	१७५	ततः संवत्सरे नवनीत	२१.१४.८	२१३
तस्य कण्वरथन्तरम्	१८.४.७	१७९	ततः संवत्सरे सोमा	२१.१४.९	२१३
तस्य चतुर्विंशौ	१९.८.२	१९१	तत्संवत्सरं दीक्षिता	२५.५.२	२४८
तस्य चतुर्विंशौ	१६.१४.३	१६७	तव त्रियो वर्षस्येव	१३.२.१	१०५
तस्य चतुर्विंशाम्	२०.११.२	२०२	तवाहं सोमं यरण	१२.९.३	१११
तस्य चतुस्त्रिंशः	२२.७.५	२२१	ता अद्भुतन्भुतन्	८.८.१६	७५
तस्य छन्दोमाः पृष्ठानि	१९.९.४	१९२	ता अस्मात्पृष्ठ	७.५.२	५९
तस्य त इन्द्र विन्द्रपीत	९.९.११	८७	ता उ चतस्रः सम्पद्यन्ते	१६.१६.५	१६८
तस्य त्रिवृच्छिरः	२२.५.२	२२०	ता उ पञ्च पञ्च	१९.२.५	१८८
तस्य त्रिवृद् बहिष्वमान	१९.११.२	१९३	ताः ऋचोऽनुब्रुवन्त	९.८.९	८६
तस्य दीक्षणीयाया	१८.३.२	१७८	तान् सन्धिनाभि	९.१.२०	७९
तस्य द्वादशःशतम्	१६.१.११	१५७	तान् समन्तं पर्यायम्	९.१.३	७८
तस्य द्वात्रिंशः	१८.८.३	१८३	तानाधिनेनाऽसम्	९.१.२१	७९
तस्यद्वादश दीक्षोपसदः	१८.२.२	१७८	तां त्रिष्टुप् त्रिभिरक्षरैः	८.४.३	७०
तस्य द्विशताः	१६.९.३	१६३	तामन्वारभत 'आयोष्वा	६.४.३	४६
तस्य नवति शतम्	१६.१.८	१५७	तामुच्छ्रयति ह्युतानस्तुवा	६.४.२	४६
तस्य नाना वीर्याणि	१८.६.६	१८१	तामेताङ्कुरद्विष उपासते	३.६.४	१९
तस्य पञ्चदशम्	१६.२.५	१५८	तामेताङ्कुरद्विष उपासते	२.१५.४	१५
तस्य पूतस्य स्वदितस्य	१८.१.१२	१७७	तामेतान्निखर्वा उपासते	२.८.३	१२
तस्य प्रातःसवने	१७.११.२	१७३	तामेतां प्रावाहण्य उपासते	२.१६.५	१६
तस्य प्रातः सवनीयान्	१८.४.२	१७९	तामेताम्पाल्लवय उपासते	२.२.४	९
तस्य बृहत्पृष्ठम्	१६.११.१२	१६५	तामेतामाभिप्रतारिण	२.९.४	१३
तस्य महानाम्यः	२१.४.८	२१०	तासान्त्वेवाबुत्रासामहा	४.१.२	२३
तस्य महाव्रतम्	१६.७.३	१६२	ता वा एता गायत्र्यो	१६.११.१०	१६५
तस्य वशिष्ठ	७.७.१८	६३	तां वा एतामन्नाद्याय	१०.३.९	९१
तस्य सदोविशीयम्	१९.१२.५	१९४	तां वा एतां प्रतीचीम्	१०.५.१२	९३
तस्य सानिर्व्या यत्सम्मेधे	५.९.९	४१	तावत्यः संवत्सरस्य	९.३.६	८१
तस्य सानिर्व्या एदपः	५.९.३	४१	तां वनस्पतयश्चतुर्धा	६.५.१३	४८
तस्यां गायत्रपार्श्वम्	१६.१६.१०	१६८	ता वा एताश्चतस्रः	१०.१२.६	९६
तस्यामिडानाश्चक्षारः	१६.११.७	१६४	तावाहुः समौ काव्यौ	५.१.११	३४
तस्याष्टादशौ पवमानौ	१६.१५.३	१६७	तासु देवासुरा	११.५.९	९९
तस्याश्चाकमश्चम्	२०.४.४	१९९	तासु द्यौतानम्	१७.१.६	१६९
तस्यै जुहुयाद् बेकुरा-	६.७.६	५०	तासु नैपातिथम्	१४.१०.४	१४१
तस्यैवा भक्तिर्यः	२०.१५.९	२०५	तासु बार्हद्विरम्	१३.४.१५	१२२
तया समुद्यतया रात्र्या	२०.२.५	१९८	तासु वैतहव्यम्	९.१.८	७८

तासु वैयश्वम्	१४.१०.८	१४१	तेजो ब्रह्मवर्चसम्	१९.१७.६	१९६
तासां परिगृहीतानाम्	६.१.४	४३	तेजो वा एतद्रथन्तरस्य	१४.३.१६	१३४
तासु श्यावाश्वम्	८.५.८	७१	तेजो वै गायत्री	१५.१०.६	१५४
तासु संहितम्	८.४.८	७०	तेजो वै त्रिवृद्	१७.६.३	१७२
तासु सफं विफमिव	८.५.६	७१	ते तमापूर्वमाणम्	२५.१०.६	२५०
तास्ते क्षरन्तु मधुमद्	१३.१.५	११९	ते त्रिष्टुब्जगत्यौ	८.४.२	७०
ता हुवे ययोरिदम्	१२.२.८	१०६	ते देवा असुराणा	१२.१३.२९	११७
ता हुवे ययोरिदम्	१५.२.८	१४६	तेन मासान् संवत्सरम्	४.१.१७	२४
तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः	६.३.१०	४५	तेनाहरुक्थाः कार्या	४.५.१७	२८
तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः	७.५.३	६०	ते मध्यमं पर्यायमश्रयन्त	९.१.१२	७८
तिष्ठन्तेऽस्मै समानाः	१६.४.२	१५९	तेष्वापेण छन्दसी	४.४.२	२६
तिस्र उष्णिहः स्युरेका	४.४.३	२६	तेषां द्वादश दीक्षा	२५.१०.२	२५०
तिस्रः पूर्वस्याहो विराज	२०.१.२.२	२०३	तेषां पूर्वपक्षे सुत्या	५.९.१४	४१
तिस्रो वाच ईरयति	१२.३.६	१०६	तेषां पौर्णमास्याम्	२५.१०.७	२५०
तिस्रो वाच उदीरत	१२.५.१	१०८	तेषामेकाष्टकायाम्	५.९.१३	४१
तिसृभ्यो हिङ्करोति	२.१.१	९	तेषामश्विनौ प्रथमा	९.१.३६	७९
तिसृभ्यो हिङ्करोति	२.२.१	९	ते सर्वाग्निमार्धुवन्	२४.१८.९	२४३
तिसृभ्यो हिङ्करोति	२.३.१	१०	ते सर्वे कुण्डपायिनो	२५.४.४	२४८
तिसृभ्यो हिङ्करोति	२.६.१	११	ते ह सप्तदशेभ्यः	२५.६.५	२४९
तिसृभ्यो हिङ्करोति	२.१.२.१	१४	तैरक्ष्यं भवति	१२.६.११	११०
तिसृभिः स्तुवन्ति त्रय	४.९.७	३२	तौरश्रवसे कार्ये	९.४.९	७८
तिसृभिर्गताऽऽत्मन	५.६.४	३८	तौ वा एता विन्द्र	१६.४.८	१५९
तिसृभिः स्तुवन्ति	९.८.५	८६	तृच उत्तमो भवति	१२.७.१०	१११
तुथोसि जनधाया	१.४.३	३	तृच उत्तमो भवति	११.६.८	१०१
तुथोसि विश्ववेदा	१.४.७	३	तृच उत्तमो भवति	१२.१.१०	१०५
तुश्रवसश्च वै पारावत	९.४.१०	८२	तृच उत्तमो भवति	१५.१.१२	१४५
तेऽग्निमुखं कृत्वा	८.८.४	७४	तृच उत्तमो भवति	१३.७.१५	१२६
तेऽब्रुवन्निन्द्रायो देहि	२१.१.५	२०७	तृतीयस्याह एकविंशम्	२१.१०.३	२१४
तेऽब्रुवन् सोमाय यज्ञः	२१.१.३	२०७	तृतीयेन चास्य तस्या	२१.१.६	२०७
तेऽब्रुवन्सोमायोदेहि तृतीयेन	२१.१.७	२०७	तृतीयेन चास्य तस्या	२१.१.८	२०८
तेजसा वा एते प्रयन्ति	१०.५.५	९२	तृतीयेन चास्य तस्या	२१.१.४	२०७
तेजसा वै गायत्री	१०.५.३	९२	तृप्यति प्रजया	१६.३.९	१५९
तेजो ब्रह्मवर्चसम्	८.१०.२	७७	तृतीयसवनं वा एष	९.७.७	८५
तेजो ब्रह्मवर्चसम्	१६.१४.५	१६७	त्रयोदशभ्यो हिङ्करोति	३.६.१	१९
तेजो ब्रह्मवर्चसम्	१६.१५.७	१६७	त्रयस्त्रिंशता प्रगाथैरतव्यम्	४.४.११	२७

त्रयः पुरस्तात् त्रयः	४.५.८	२७	त्रिंशत्कृत्वो विष्टम्भोति	१२.१०.९	११३
त्रयस्त्रिंशदादेव सप्तदश	४.५.१६	१६	त्रिष्टुभः सत्यो जगत्प्यो	१२.११.७	११४
त्रयस्त्रिंशदक्षराणु भवति	४.८.१४	३१	त्रिणिधनमानेयम्	१३.३.२१	१२१
त्रयो वा एते त्रि रात्रा	१०.५.१	९२	त्रिष्टुभः सत्यो	१३.५.७	१२३
त्रयस्त्रिंशदक्षरा वा	१२.१३.२०	११७	त्रिणव एव स्तोमो	१३.६.१६	१२५
त्रयस्त्रिंश एव स्तोमो	१३.७.१६	१२६	त्रिष्टुप् प्रतिपद्भवति	१४.१.५	१३२
त्रयस्त्रिंश एव स्तोमो	१३.१२.१६	१३१	त्रिरात्रो यद्वचशीर्यत	१४.९.२७	१४०
त्रयस्तुचा भवन्ति	१४.७.९	१३८	त्रिवृत्पञ्चदशौ प्रातःसवनम्	१४.१०.५	१६४
त्रयस्त्रिंश एव	१५.१२.८	१५६	त्रिवृतस्तोमम्	१६.८.८	१६३
त्रयस्त्रिंशद्देवता	१७.११.३	१७३	त्रिवत्सः साण्डः	१६.१३.९	१६६
त्रयस्त्रिंशता त्रय	१७.१.१७	१७०	त्रिवृदग्निष्टोम स्तस्या	१७.६.१	१७२
त्रयस्त्रिंशच्च त्रीणि	२०.१.५.१३	२०५	त्रिवृदग्निष्टोम स्तस्या	१७.१०.१	१७३
त्रयस्त्रिवृतोऽतिरात्राः	२१.५.१	२१०	त्रिवृदग्निष्टोमः	१७.११.१	१७३
त्रयस्त्रिवृतोऽग्निष्टोमाः	२२.१.५.१	२२४	त्रिवृदग्निष्टोमः स सर्व	१७.१२.१	१७४
त्रयस्त्रिंश स्त्रयस्त्रिंशम्	२३.१.९.९	२३२	त्रिवृद् वै स्तोमानाम्	१७.१२.३	१७४
त्रयस्त्रिंशद्देवता	२४.१.१३	२३६	त्रिवृदग्निष्टोमो वैश्वदेवस्य	१७.१३.१	१७४
त्रिवीर्यं वा एतत्साम	८.१.७	६७	त्रिवृतावधितो भवतः	१९.१०.५	१९२
त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा	१.१०.९	८	त्रिवृता प्रैति त्रिवृतोदेति	१९.१०.१४	१९३
त्रिवृता प्रैति त्रिवृतोदेति	३.६.३	१९	त्रिवृता प्रैति त्रिवृतो	२०.१.६	१९७
त्रिवृच्छिरो भवति	५.१.२	३४	त्रिवृद् बहिष्यमानम्	२०.४.१	१९९
त्रिवृद्भवेव शिरोलोम	५.१.३	३४	त्रिवृद् बहिष्यमानम्	२०.२.१	१९७
त्रिभिच्छन्दोभिः	७.३.२	५७	त्रिवृद् बहिष्यमान	२०.१.१	१९७
त्रिणिधनं भवति	७.३.१९	५८	त्रिवृत् पञ्चदशो भवति	१९.१७.२	१९५
त्रिणिधनं भवति	७.३.२०	५८	त्रिवृद् बहिष्यमानम्	२०.३.१	१९८
त्रिणिधनं भवति	७.३.२१	५८	त्रिवृद् बहिष्यमानम्	२०.५.१	१९९
त्रिणिधनं भवति	९.१.१४	७८	त्रिवृत् बहिष्यमानम्	२०.८.१	२००
त्रिवृच्च त्रिणवच्च	१०.२.५	९०	त्रिवृत् बहिष्यमानम्	२०.७.१	२००
त्रिवृदेव त्रिणवस्या	१०.१.१३	८९	त्रिवृत् बहिष्यमानम्	२०.९.१	२०१
त्रिंशदक्षरा वा एषा	१०.३.१२	९१	त्रिवृतातिरात्रेण ब्रह्मवर्चस	२०.१०.१	२०१
त्रिभुरस्ताद्रथन्तरमुपयन्ति	१०.४.६	९२	त्रिवृत्प्रातः सवनम्	२०.१४.१	२०३
त्रिवे वोपरिष्टाद्रथन्तरम्	१०.४.९	९२	त्रिवृत्पञ्चदशोऽग्निष्टोमः	२१.१०.१	२१३
त्रिवृद्वै गायत्र्यास्तेजः	१०.५.४	९२	त्रिवृत्प्रातः सवनम्	२१.७.१	२११
त्रिवृदेव स्तोमो भवति	११.१.७	९७	त्रिवृत् प्रातः सवनम्	२१.८.१	२१५
त्रिवृदेव स्तोमो भवति	११.५.२९	१००	त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदश	२१.१२.१	२१५
त्रिष्टुभः सत्यो जगत्प्यः	१२.३.७	१०६	त्रिवृत् प्रातः सवनम्	२१.११.१	२१५

त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदशः	२१.१४.१	२१७	दविद्युततया रुचेति	६.९.२५	५४
त्रिवृदग्निष्टोमः	२२.१४.१	२२३	दविद्युततया रुचेति	१२.१.१	१०५
त्रिककुब्जा एष यज्ञः	२२.१४.६	२२४	दविद्युततयी वै गायत्री	१२.१.२	१०५
त्रिककुप् समानानाञ्च	२२.१४.७	२२४	दध्यङ्वा आङ्गिरसो	१२.८.६	१११
त्रिष्टोमोऽग्निष्टोमो ज्योतिः	२२.१७.१	२२४	दशकृत्वो विष्टम्भोति	१२.१०.८	११३
त्रिवृदग्निष्टोमः पञ्चदशः	२२.२१	२१९	दश चमसा दश चमसा	१८.९.४	१८४
त्रिवृदग्निष्टुदग्निष्टोमः	२३.८.१	२२८	दश दशिनी वा एषा	२२.१४.४	२२३
त्रिवृता प्रयन्ति त्रिवृतोद्यन्ति	२३.३.९	२२७	दशभिर्विहिता तिस्रः	३.१३.३	२२
त्रिवै सप्ता सप्तादित्याः	२३.१५.३	२३०	दशमी भवति	१८.९.३	१८४
त्रिंशति त्रयः परः	२४.१.९	२३६	दशर्च्यो भवतो	१३.७.८	१२५
त्रिवृता प्रयन्ति त्रिवृतः	२४.३.४	२३७	दशर्च्यो भवति	१५.१.५	१४५
त्रिवृता प्रयन्ति त्रिवृतः	२५.३.५	२४७	दशस्तोभं भवति	४.६.१६	२९
त्रयस्त्रिवृतः संवत्सरा	२५.६.१	२४९	दशाक्षरं निधनम्	१५.११.१३	१५५
त्रीडं भवति	१२.५.२४	१०९	दशाक्षरं मध्यतः	८.५.१३	७१
त्रीडं भवति त्रिरात्रस्य	१३.६.१४	१२५	दावसुनिधनं भवति	१५.५.१२	१४९
त्रीणि मिथुनानि	२०.१५.४	२०५	दावसुर्वा एत	१५.५.१४	१४९
त्रीण्युक्थानि त्रिदेवत्यः	९.१.२६	७९	दाशस्पत्यं भवति	१३.५.२६	१२४
त्रीन् प्रथमायाश्चोहति	७.७.७	६२	दासनो दक्षिणानवगृह्णाण	१.७.९	६
त्रीन् स्तोमान् प्रति	२.५.२	११	दिग्वद्भवति भ्रातृव्य—	१२.४.१०	१०७
त्रींस्त्रिवृदभिजितः	१६.४.१२	१५९	दिवाकीर्त्यं सामा भवति	४.६.१२	२९
त्रींस्त्रीनवहमालभन्ते	२१.१४.१०	२१७	दिवेति निधनमुपयन्ति	८.१.१३	६८
त्रैककुर्भं पशुकामाय	८.१.३	६७	दिवेति निधनम्	१२.१०.२२	११३
त्रैककुर्भं भवति	१५.६.४	१५१	दिवोदासं वै भरद्वाज	१५.३.७	१४६
त्रैतं भवति	१४.११.२१	१४२	दिश इति निधनम्	१२.३.११	१०६
त्रैशोकं ज्योगामयाविने	८.१.८	६७	दिश इति निधनम्	१२.४.२१	१०८
त्रैशोकं ब्रह्मसाम	१२.१०.२०	११३	दिशः पञ्चपदा	१३.४.२	१२१
दक्षिणधनं भवति	१४.५.१२	१३५	दिशं विशमिति	१२.४.११	१०७
दक्षिण ऊरुवुद्रातु	१२.१०.१२	११३	दिशां वा एतत्साम	१२.४.७	१०७
दक्षिणतो रथन्तरम्	५.१.१५	३४	दीक्षायै वर्णेन तपसा	१.५.१०	४
दक्षिणानूरूनभिषिञ्चन्ति	८.७.१०	७३	दीर्घजिह्वी वा	१३.६.९	१२४
दक्षिणतो बृहत्कार्यं	५.१.१३	३४	दीर्घं तमसोऽर्को	१५.३.३४	१४८
दक्षिणव्यो अकारिषम्	१.६.१७	५	दीर्घश्रवा वै राजन्य	१५.३.२५	१४७
दरिद्रा आसन् पशवः	२४.१८.७	२४३	दुग्ध इव वा एष	९.६.८	८४
दविद्युततया रुचेति	६.९.२४	५४	दुग्धानीव वै तर्हि	४.९.१७	३२
दविद्युततया रुचेति	१८.८.११	१८३	दुष्करं वा एष	१६.५.६	१६०

देवक्षेत्रं वा एतेऽभ्यः	५.७.८	४०	देवाश्च वा असुराश्च	१३.६.७	१२४
देवकृतस्यैनसोऽवयजन-	१.६.१०	५	देवाश्च वा असुराश्च	८.३.१	६८
देव व्रतं वै धृतम्	१८.२.६	१७८	देवाश्च वा असुराश्च	१८.१.२	१७७
देवता एव त्रयस्त्रिंशस्या	१०.१.१६	९०	देवाश्च वा असुराश्च	२१.१३.२	२१६
देवता वाव त्रयस्त्रिंशः	६.२.५	४४	देवा वै छन्दोसि	७.४.२	५९
देवत्वं गच्छति	२२.११.३	२२२	देवा वै मृत्यो रविभयुस्ते	२३.१२.२	२२९
देव त्वष्टा सुरतोषा	२१.१०.२२	२१५	देवा वै मृत्योरविभयुः	२४.१९.२	२४३
देवता वा एतं परिवृजन्ति	१८.१.११	१७७	देवा वै स्वर्गं लोकम्	१७.१.१	१६९
देव धातुः सुधाताद्यास्मिन्	२१.१०.१६	३१४	देवा वै स्वर्गल्लोकम्	५.७.११	४०
देवपात्री भवति	६.५.८	४७	देवानां वै यज्ञम्	१४.१२.७	१४४
देवं वा एतम्	१४.९.१२	१३२	देवानां वै स्वर्गम्	८.८.१३	७५
देवलोको वा एष	४.६.२	२८	देवेषुर्वा एषा यद्वषट्कारः	८.१.२	६७
देवरथो वै रथन्तरम्	७.७.१३	६२	देवो देवमेतु सोमः	१.१.२	१
देव विष्णो उर्वद्यास्मिन्	२१.१०.१३	२१४	देवो वो द्रविणोदा	१७.१.१०	१६९
देव सवितः सुसावित्रम्	२१.१०.१५	२१४	देव्यनुमतेऽन्वघेमम्	२१.१०.१८	२१४
देवस्थानं भवति	१५.३.२८	१४७	देव्यदिते स्वादित्यम्	२१.१०.१९	२१४
देवस्य त्वा सवितुः	१.८.१	६	देव्य आपो नन्नम्यध्वम्	२१.१०.२०	२१५
देव सोम रेतोषा	२१.१०.१४	२१४	दैर्घश्रवसं भवति	१५.३.२४	१४७
देवा ग्रावाणो मधुमती	२१.१०.१७	२१४	दैवा वै व्रात्याः	२४.१८.२	२४३
देवातिथिः सपुत्रः	९.२.१९	८१	द्युतानो मास्तस्तेषाम्	१७.१.७	१६९
देवाश्चानु प्रभूषत	६.१०.१७	५५	द्रवदिडं प्रथमस्याङ्कः	१०.११.१	९५
देवावक्षिनौ मधुक	२१.१०.१२	२१४	द्रवदिडं तथा	११.४.११	९९
देवा वा आदित्यस्य	४.५.९	२८	द्रवन्तीमिडामुत्तम	१२.५.२५	१०९
देवा वा अग्निष्टोमम्	८.८.१	७४	द्रवन्तीमिडामुत्तमा	१३.६.१५	१२५
देवा वा असुरैः	२२.१७.२	२२५	दृष द्रव्येष	२५.१०.१४	२५१
देवा वा उक्थान्यभिजित्य	९.१.१	७८	दृष द्रव्यत्या अप्ययेऽपोनप्	२५.१०.१५	२५१
देवा वै पशून्	७.९.१६	६४	दृत ऐन्द्रोत इति	१४.१.१२	१३२
देवा वै ब्रह्म व्यभजन्त	७.१०.१०	६५	द्वादश निषनो भवति	१३.५.२५	१२४
देवा वै ब्रह्म व्यभजन्त	८.६.१	७२	द्वादशभिर्विहितैका परिचरा	३.१२.३	२१
देवा वै यशस्कामाः	७.५.६	६०	द्वादशपञ्चोद्घो गर्भिण्यो	१८.९.२१	१८५
देवा वै वाचं व्यभजन्त	५.७.१	३९	द्वादश पुष्करा भवति	१८.९.७	१८४
देवा वै श्रियमैच्छन्	१०.७.२	९४	द्वाभ्यां लोमावद्यति	४.९.२१	३२
देवाश्च वा असुराश्चादित्ये	५.५.१५	३७	द्वादशमासाः पञ्चवर्त्तवः	४.६.४	२८
देवाश्च वाऽसुराश्च-	१२.३.१४	१०६	द्वादशमासाः पञ्चवर्त्तवः	१८.२.१४	१७८
देवाश्च वा असुराश्च	१२.५.२३	१०९	द्वादशमासाः पञ्चवर्त्तवः	१८.४.११	१७९

द्वादशाच्चो भवतः	१४.१.९	१३२	ध्वमे वै पुरुषन्ती	१३.७.१२	१२६
द्वादशवैरूपाणि	१२.४.१७	१०८	ध्रुव आसीनो वामदेव्येन	७.९.७	६४
द्वादशमासाः संवत्सरः	१८.२.४	१७८	नकिष्टं कर्मणानशात्	१४.४.२	१३४
द्वादशमासाः संवत्सरः	१४.१.१०	१३२	न चत्वारि षड्भ्यो	१६.५.२०	१६१
द्वादशस्तोत्राण्यग्निष्टोमः	४.२.१२	२५	न मृमयेन पिबेद	१६.६.१४	१६२
द्वादशस्तोत्राण्यग्निष्टोमः	९.१.२४	७९	न जाभ्यस्ति सवनम्	१८.६.२१	१८२
द्वादशस्तोत्राणि द्वादश	६.३.४	४५	नमो गन्धर्वाय विष्वग्वा-	१.३.१०	२
द्वादशस्तोत्राण्यग्निष्टोमः	६.३.३	४५	नमः सखिभ्यः पूर्वसन्ध्या	१.५.२	३
द्वादशाहस्य दशाहानि	४.८.५	३०	नमः समुद्राय नमः	६.४.७	४६
द्वादशैता रात्रयो	१६.६.१०	१६२	न यूपं भिन्वन्ति	१७.१३.३	१७४
द्वावेता वेकविंशौ	१६.१.५१	१६८	नरो वै देवानां ग्रामः	६.९.२	५३
द्व्यक्षराणि निधनानि	७.३.२२	५८	नव त्रिवृतः संवत्सरा	२५.७.१	२४९
द्व्यक्षरेणोत्तरयोर्ऋचः	७.७.२	६२	नव बृहती रोहान्	७.७.६	६२
द्व्यक्षरेणोत्तरयोर्ऋचः	१५.१०.८	१५४	न बृहतो न रथन्तरस्य	७.९.१५	६४
द्व्युदासम्भवति स्वर्गस्य	५.७.४	३९	नव भवन्ति नवाहस्य	११.१.६	९७
द्व्युदासं भवत्येतौ	११.५.१९	१००	नवभ्यो हिङ्करोति	२.१६.१	१५
द्व्योपशाः सञ्स्तुता	१३.४.३	१२१	नवभ्यो हिङ्करोति	२.१७.१	१६
द्वात्रिंश दक्षरानुष्टुप्	२३.२८.३	२३५	नवभ्यो हिङ्करोति	३.१.१	१७
द्विपाद्यजमानः प्रतिष्ठित्यै	४.८.२	३०	नवभ्यो हिङ्करोति	३.५.१	१८
द्वि गद्या एतेन	१४.९.३२	१४०	नवभिस्त्रिवृतं प्रतिष्ठ्यति	२.१६.२	१५
द्वितीयश्छेतद्रूपम्	१४.९.२३	१४०	नवभिः स्तुवन्ति नव-	६.८.३	५२
द्विपदां ककुभो लोके	२०.४.७	१९९	नवभिः स्तुवन्ति नव-	६.८.४	५२
द्विरवनर्देहिङ्कुर्यात्	७.१.२	५६	नवभिः स्तुवन्ति हिङ्कारः	६.८.२	५२
द्विर्वा एता नव नव	२३.१२.५	२२९	नवरात्रो वा एष	२२.१२.४	२२३
द्वि हिङ्कारं वामदेव्यम्	१४.९.२२	१४०	नवर्च्चा भवन्ति	१४.७.५	१३८
द्विः पृथान्युपयन्त्यभि	२३.३.६	२२७	नव सप्तदशेनातिरात्रेण	२०.४.२	१९९
द्वे द्वे अक्षरे विभजन्ति	१०.१२.८	९६	न वा अपक्षः पक्षिणम्	१९.१०.३	१९२
द्वे सञ्स्तुतानां विराजम्	१९.३.९	१८९	न वाक् संवत्सरम्	१०.१२.५	९६
द्वे सञ्स्तुतानां विराज	२०.१.५	१९७	न वै तत्र जग्मुषे	२१.८.४	२१२
द्वे त्रिवृतो सवने	२१.१३.१	२१६	नव वै प्राणाः पशव	१४.७.६	१३८
द्वैगतं भवति	१४.९.३१	१४०	न वै बृहन् रथन्तरम्	७.७.५	६२
धर्ता दिवः पवते	१४.९.४	१३९	न वै यमौ नाम	१६.४.१०	१५९
धर्म भवति	१४.११.३२	१४३	न ह तु वै पितरः	८.७.७	७३
धरुणोऽस्यप्राणाय त्वा	१.१०.६	८	न हस्तवेष्मन्निर्ऋच्छति	६.६.१३	४९
धेनुः प्रतिहर्तुः पयः	१८.९.१२	१८५	नृमण ऊर्ध्वभरसं	१.१.६	१

नृमेघसमाङ्गिरसम्	८.८.२२	७२	पक्षी वा एष स्तोमः	१९.१०.१	१९२
नाकश्रोहति स्वर्गम्	१८.७.१०	१८२	पक्षी ज्योतिष्मान्	१९.१०.४	१९२
नाथ विन्दु साम	१४.११.२३	१४२	पक्ष्येष निधीयते	१९.१०.२	१९२
नानदं भवति	१२.११.१८	११५	पञ्चदश एव स्तोमः	११.६.१०	१०१
नाना ब्रह्मसामान्युपय—	२४.१.१४	२३६	पञ्चदश एव स्तोमः	११.११.१४	१०४
नानारूपा गायति	१३.४.७	१२२	पञ्च दक्षिणादेयाः	९.५.१०	८३
नाना वीर्यार्ण्यहानि	२१.९.७	२१३	पञ्चदशशैकविंशशब्द	१०.२.६	९०
नावगतोपरुष्यते	२.७.६	१२	पञ्चदश सप्तदशौ	५.१.१०	३४
नासिके वा एते	८.५.४	७१	पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति	३.७.१	१९
नास्मा अकं भवति	२१.८.५	२१२	पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति	३.९.१	२०
निधनकामम्	१२.९.११	११२	पञ्चदशभ्यो हिङ्करोति	३.११.१	२१
निधनवता स्तुवन्ति	७.३.१३	५८	पञ्चनिधनं वैरूपम्	१२.४.५	१०७
निधनवद्धवति तेन	५.२.९	३५	पञ्चनिधनं भवति	५.२.१३	३५
निधनान्ताः पवमाना	१३.५.२८	१२४	पञ्चपञ्चाशत स्निवृतः	२५.१८.१	२५४
निधनान्ताः पवमाना	१३.११.२४	१३०	पञ्चपदा पङ्क्तिः	१२.४.६	१०७
निधनान्ताः पवमाना	१४.९.४१	१४०	पञ्चभिः पञ्चदशं तिसृभिः	२.५.३	११
निधनान्ताः पवमाना	१५.३.३७	१४८	पञ्चभिर्विहितैका परिचर—	३.१.३	१७
निधनान्ताः पवमाना	१४.३.२५	१३४	पञ्चभिर्विहितास्तिस्रः परि—	३.४.३	१८
नियुत्वती भवति	४.६.११	२९	पञ्चदशं बहिष्पवमानम्	२०.६.१	२००
निराहोपस्थिता	११.७.२	१०१	पञ्चदशस्तोत्राणि भवन्ति	४.२.८	२४
निराहा वन्त्याज्यानि	११.२.२	९७	पञ्चदशस्तोत्राणि भवन्ति	४.२.९	२४
निरोहोसि निरोहाय त्वा	१.१०.१०	८	पञ्चदशस्तोत्राणि	१९.१६.७	१९५
निष्किरीयाः सत्र	१२.५.१४	१०९	पञ्चदशस्तोत्राणि	१९.४.११	१८९
निषादेषु तिस्रो	१६.६.७	१६१	पञ्चदशो वै वज्रो न	२३.१०.३	२२९
निहवो भवति	१५.५.२२	१५०	पञ्चभ्यो हिङ्करोति	२.४.१	१०
नैदाधीय उपेयुः	२३.१६.८	२३१	पञ्चभ्यो हिङ्करोति	२.५.१	११
नैनमन्यः स्वेषु	२०.५.५	२००	पञ्चभ्यो हिङ्करोति	२.११.१	१३
नैव ह्येतदहो रूपम्	८.८.२४	७५	पञ्चभ्यो हिङ्करोति	२.१५.१	१५
नोदीय मानं प्रति	१६.६.१२	१६२	पञ्चभ्यो हिङ्करोति	२.७.१	११
नौघसं प्रथमस्याह्नः	२१.९.१२	२१३	पञ्चरात्रो वा एष	२१.१३.६	२१६
नौघसं भवति	११.४.९	९८	पञ्च वा ऋतव	१३.२.६	१२०
पक्षिण्यो वा एता	२३.३.७	२२७	पञ्चविंशति स्निवृतः	२५.८.१	२४९
पक्षिण्यो वा एता	२४.३.३	२३७	पञ्चविंशोऽग्निघ्नोमः	१६.७.१	१६२
पक्षि वा एतत्सत्रायणम्	२५.३.४	२४७	पञ्चसु माःसु बार्हताः	४.४.१	२६
पक्षि वा एतच्छन्दः	१९.११.९	१९३	पञ्चर्च्यो भवति	१२.१.९	१०६

पञ्चर्चो भवति	१४.७.७	१३८	परिवत्प्रति वत्सप्तपदा	१०.६.६	९४
पञ्चर्तवो द्वादश मासा	२३.१७.२	२३९	परिश्रिते स्तुवन्ति	६.८.१४	५२
पञ्चर्त्विजः सैरब्धाः	६.७.१२	५१	परिश्रिते स्तुवन्ति ब्रह्मणः	४.९.११	३२
पञ्चाक्षरेण रथन्तरस्य	७.७.३	६२	परिष्टुब्धेऽ तथा	१२.४.२७	१०८
पञ्चाशद्वक्षिणा	१७.१३.५	१७४	परिष्टोभो वैरूपस्य	८.९.१२	७६
पत्नी संयाज्य प्राञ्च	४.९.१	३९	परिस्वानो गिरिष्ठा	१३.११.१	१२९
पदनिधनं प्रथमस्याऽह्नः	१०.१०.१	९५	परीतो पिञ्चता सुत	१५.३.३	१४६
पदनिधनं राथन्तरम्	१४.११.१३	१४२	परोक्षमनुष्टुभमुपयन्ति	४.८.९	३९
पदनिधनं राथन्तरम्	१४.११.२२	१४२	परोक्षमन्ये यज्ञा	१९.२.२	१८८
पदोस्तममपश्य	१३.५.२४	१२४	परोक्षमन्यानि सत्राणि	२३.२६.२	२३४
पद्या वा अन्या विराड्	१२.११.२२	११५	प्लक्षं प्राप्तवणम्	२५.१०.२२	२५१
पन्था वै यज्ञायज्ञीयम्	४.२.२१	२१	प्लवोऽन्वहं भवति	५.८.४	४०
पन्नमिव वै चतुर्थमह	१२.१२.८	११५	प्लवो भवति	१४.५.१६	१३६
पर आह्णारस्वसदस्युः	२५.१६.३	२५४	प्लवौ वा एतावुपोहन्ते	११.१०.१६	१०३
परमं वा एत	१५.१.२	१४५	पवन्ते वाजसातये सोमाः	४.२.१५	२५
परमस्यान्नाद्यस्या	१३.११.१७	१३०	पवमाने रथन्तरम्	१६.११.३	१६४
परमायामेव विराजि	२४.१०.३	२३९	पवमानो अजीजन	१२.७.५	११०
परमेष्ठितां गच्छति	१९.१३.४	१९४	पवमानस्य जिघ्रत	१५.३.२	१४६
परमेष्ठितां गच्छति	२२.१८.५	२२५	पवमानस्य जिघ्रतो	१५.३.१	१४६
परमो या एष	१६.९.२	१६३	पवमानस्य ते कव	१८.८.१५	१८४
परवै देवा आदित्यम्	४.५.३	२७	पवमानस्य विश्व	१३.१.६	११९
परक्रेण वै देवाः	२१.८.२	२१२	पवस्व दक्षसाधन	१२.९.१	१११
पराङ्मै त्रिरात्रोर्वा	१६.८.२	१६२	पवस्व देव आयुष	१४.११.१	१४१
पराचीभिः स्तुवन्ति	६.८.९	५२	पवस्व देव वीतय	१५.५.३	१४९
पराचीभिः स्तुवन्ति	९.८.६	८८	पवस्व मधुमत्तम	११.१०.३	१०२
पराचीभि वा अन्याभि	१५.५.१६	१४९	पवस्व वाचो अग्रिय	६.९.१०	५३
पराच्यो वा अन्या	२०.१.४	१९७	पवस्व वाचो अग्रिय	११.६.१	१००
पराञ्चो वा एतेषां प्राणा	६.८.१७	५२	पवस्व वाचो अग्रिय	६.९.११	५३
परां वा एते परावतम्	५.८.८	४०	पवस्व वाजसातय	१३.५.४	१२३
परिकुम्भिन्यो माज्जालीयम्	५.६.१५	३९	पवस्व सोम महान्	१४.११.५	१४१
परित्यक्त्वर्यतश्हरिम्	१५.५.४	१४९	पवस्वेन्दो वृषा सुत	११.६.३	१०१
परिधौ पशुं नियुञ्जन्ति	१७.१३.४	१७४	पवस्वेन्दो वृषा सुत	६.१०.१२	५५
परि प्रिया दिवः	१२.११.१	११४	पवस्वेन्दो वृषा सुत	१८.८.१३	१८३
परिमण्डलश्चर्म भवति	५.५.१७	३७	पवस्वेति वै राथन्तरम्	११.६.२	१००
परिमाद्भिश्चरन्ति त्वक्च	५.६.११	३९	पवस्व सोम महे	१५.५.५	१४९

पवित्रन्ते विततं	१.२.८	२	पशवो वै सुरुपम्	१४.११.११	१४२
पवित्रं ते विततम्	१२.५.७	१०८	पशुकाम एतेन	७.१०.१४	६६
पशव आदित्याः	२३.१५.४	२३०	पशुकामो यजेत बृहती	१९.१८.४	१९६
पश्यते गृहे शिल्पम्	१६.४.९	१५९	पशुकामो यजेत	१९.१९.३	१९६
पशवः पृष्ठानि	२५.१.५	२४५	पशुकामो यजेत	१९.७.२	१९१
पशवः पृष्ठानि	२२.३.५	२१९	पशुकामो यजेत	१९.५.२	१९०
पशवः शक्वर्यः	१३.१.३	११९	पशुकामो यजेत	१८.५.१०	१८०
पशवो वा इडा	७.३.१५	५८	पशुकामो यजेत	२१.६.२	२११
पशवो वा इडा	१५.३.१५	१४७	पशुकामो यजेत	१८.४.३	१७९
पशवो वा इषो	१३.९.९	१२७	पशुकामो यजेत	२२.६.२	२२०
पशवो वा उक्थानि	१६.१०.२	१६३	पशुकामो यजेत	१८.१.१५	१७७
पशवो वा उक्थानि	४.५.१८	२८	पशुकामो यजेत	१६.१२.८	१६६
पशवो वा उष्णिक्	८.१०.४	७७	पशुना प्रचरन्ति	५.१०.११	४२
पशवो वा एतानि	९.१.३३	७९	पशुमान् भवति	७.५.९	६०
पशवो वै कण्वरथन्तरम्	१८.४.९	१७९	पशुमालभन्ते स्तोमम्	५.१०.८	४२
पशवो वै चतुस्ताराणि	४.४.६	२६	पशुस्तोमो वा एष	१६.२.६	१५८
पशवो वै छन्दोमाः	३.८.२	१९	पशुभिर्वा एष	१६.८.७	१६३
पशवो वै छन्दोमाः	२१.६.३	२११	पशुभिर्वा एष	१६.६.१	१६१
पशवो वै छन्दोमाः	२१.७.५	२१२	पशून् वा एष्य	८.८.८	७४
पशवो वै छन्दोमाः	२२.६.३	२२०	पशून् प्रातुव्यस्य	९.१.१८	७९
पशवो वै छन्दोमाः	१५.३.१७	१४७	पशून् प्रातुव्यस्य	८.४.७	७०
पशवो वै पूषा	१८.१.१६	१७७	पशून्वा अस्यान्तान्	७.४.४	५९
पशवो वै बृहती	१६.१२.९	१६६	पशवोऽस्मिन् ऋतवः	२३.१५.६	२३०
पशवो वै बृहद्रथन्तरे	७.७.१	६१	पशवोऽन्नाद्यं यज्ञायज्ञीयम्	१५.९.१३	१५३
पशवो वै रयिष्ठम्	१४.११.३१	१४३	पष्ठ वाङ्वा एतेन—	१२.५.११	१०८
पशवो वै रेवत्यः	१३.९.२५	१२८	पाङ्क्त इतर आत्मा	५.१.४	३४
पशवो वै रैवत्यः	१३.१०.११	१२८	पाङ्क्तः पुरुषः पाङ्क्ताः	२.४.२	१०
पशवो वै वामदेव्यम्	१४.९.२४	१४०	पाङ्क्तं वा एतत्क्षाम	८.९.१९	७६
पशवो वै वारवन्तीयम्	५.३.१२	३६	पाङ्क्तो यज्ञो यावान्यज्ञः	९.५.११	८३
पशवो वै वैरुपम्	१४.९.८	१३९	पातमाग्नयो रौद्रेणानीकेन	१.४.१५	३
पशवो वै श्रुष्यम्	१५.५.३४	१५०	पान्तमावो अन्यस	९.१.६	७८
पशवो वै शक्वर्यः	१३.५.१८	१२४	पान्तमा वो अन्यस	९.२.१	८०
पशवो वै शक्वर्यः	१३.४.१३	१२२	पापवसीयसन्तु भवति	२.३.६	१०
पशवो वै हरिश्चियः	१५.३.१०	१४७	पापवसीयसो विष्णुतिः	२.१.४	९
पशवो वै समीषन्ती	३.११.४	२१	पाप्मानश्हत्वा यद	१३.६.१२	१२५

पाप्मा वाव स	१३.५.२३	१२४	पूर्वमुच्चैव तद्रूपम्	१२.७.७	१११
पारयन्त्येनं पराणि	४.५.४	२७	पूर्वमुच्चैव तद्रूपम्	१३.१.९	११९
पार्थं भवति	१३.५.१९	१२४	पूर्वमुच्चैव तद्रूपम्	१३.७.७	१२५
पार्थुरश्मं ब्रह्मसाम	२१.४.१०	२१०	पूर्वं एव तदहनी	१२.२.२	१०५
पार्थुरश्मश्चाजन्त्याय	१३.४.१८	१२३	पूर्वेऽभिषुण्युः	९.४.१०	८२
पाष्टीहं भवति	१२.५.१०	१०८	पूर्वोवाच पूर्वश्छन्दोसि	९.४.२	८२
पितरो भूः पितरो भूः	१.१.५	१	पौरुमदगं भवति	१२.३.१२	१०६
पिता नोऽरात्सीदिति	१०.३.२	९०	पौरुहन्मनं भवति	१४.९.२८	१४०
पिता वै वामदेव्यम्	७.९.१	६४	पौर्णमास्य तिरात्रोऽथ	२३.६.४	२२८
पिपीलिक मध्यासु	१५.११.८	१५५	प्रकाव्यमुशनेव ब्रुवाण	१४.१.३	१३२
पिबा सोममिन्द्र	१२.१०.१	११२	प्रकेतोसि रुधेयस्त्वा	१.९.१०	७
पुनरभपवमान उत्तम	१६.५.१२	१६०	प्रक्वाणाइव सर्पन्ति	६.७.१०	५०
पुनरभ्यावर्त्तमितरेणात्मना	५.१.७	३४	प्रजननं वै रथन्तरम्	७.७.१६	६२
पुनरभ्यावर्त्तस्तुवन्ति	६.८.१३	५२	प्रजाकामो यजेत प्रजा	१८.५.९	१८०
पुनरभ्यावर्त्तस्तोमा	१६.४.११	१५९	प्रजाकामो यजेत	२०.११.५	२०२
पुनानः सोम धारय	१४.३.३	१३३	प्रजाकामो वा पशुकामः	२.३.२	१०
पुनानः सोम धारय	११.८.३	१०१	प्रजानाञ्च वा एषा	७.५.४	६०
पुनानः सोम धारय	१५.९.२	१५२	प्रजापतये स्वाहेत्य	९.९.९	८७
पुनानो अक्रमीदभीति	१२.९.५	११२	प्रजापतिरकामयन्त	१८.७.१	१८२
पुरस्तात्पृष्ठेन	२५.२.२	२४७	प्रजापतिरकामयत	७.५.१	५९
पुरां भिन्दुर्युवा	१४.१२.३	१४३	प्रजापतिरकामयत	६.५.१	४७
पुरुषकामा उपेयुः	२३.१४.२	२३०	प्रजापतिरकामयत	६.१.१	४८
पुरुषो वै ककुप्	८.१०.६	७७	प्रजापतिरकामयत	७.६.१	६०
पुरुषसत्रं वा एतत्	२३.१४.४	२३०	प्रजापतिः प्रजा असृजत	१६.५.२३	१६१
पुरुषो वै ककुप्	१३.६.४	१२४	प्रजापतिः प्रजा असृजत	९.६.७	८४
पुरुहन्मा वा एतेन	१४.९.२९	१४०	प्रजापतिः प्रजा असृजत	४.१०.१	३२
पुरुषाणां चिद्ध्यस्त्यवो	१३.२.४	१२०	प्रजापतिः प्रजा असृजत	७.१०.१५	६६
पुरोहोतया सत्या	१६.११.६	१६४	प्रजापतिः प्रजा असृजत	१४.५.१३	१३६
पुरोजिती वो अन्धस	८.५.७	७१	प्रजापतिः प्रजा असृजत	१०.२.१	९०
पुरोजितीवो अन्धस	१२.११.५	१२४	प्रजापतिः प्रजा	२१.२.१	२०८
पुरोजिती वो अन्धस	१४.५.५	१३५	प्रजापतिः प्रजा असृजत	२४.१.२	२३६
पुरोडाशिन्य उपसदो	२१.१०.१०	२१४	प्रजापतिः प्रजा असृजत	२४.११.२	२३९
पुरोधा कामो यजेत	१९.१७.७	१९६	प्रजापतिः प्रजा असृजत	२४.१३.२	२४०
पूर्वमुच्चैव तद्रूपमपरेण	११.६.४	१०१	प्रजापतिः प्रजा असृजत	१७.१०.२	१७३
पूर्वमुच्चैव तद्रूपम्	१२.१.५	१०५	प्रजापतिः प्रजा असृजत	८.८.१४	७५

प्रजापतिः प्रजा असृजत	१५.८.२	१५२	प्रजाया स्वत्वलृप्तः	२१.८.६	२१२
प्रजापतिः प्रजा	१६.४.१	१५९	प्रजा वै प्रियाणि	८.५.१५	७१
प्रजापतिः प्रजा असृजत	२०.४.५	१९९	प्रज्यैष्ठ्यमानोति	७.६.८	६१
प्रजापतिः प्रजा असृजत	६.३.९	४५	प्र त आशिनीः	१२.७.१	११०
प्रजापतिः पशूनसृजत	१५.५.३५	१५०	प्रतिपिच्छति य	१९.१४.८	१९५
प्रजापतिः पशूनसृजत	२०.३.२	१९९	प्रतिदुहाभिषिच्यते तद्धि	१९.१३.७	१९४
प्रजापतिः पशूनसृजत	६.७.१९	५१	प्रतिधिरसि पृथिव्यै त्वा	१.९.५	७
प्रजापतिः पशूनसृजत	७.१०.१३	६६	प्रतिधुक् च प्रातः	९.५.५	८३
प्रजापतिं परिवदन्त्या—	४.९.१४	३२	प्रतिनोदात भव्यमितर	२३.६.६	२२८
प्रजायते बहुर्भवति	११.५.१८	१००	प्रतिवाक्षसूर उदित	१३.८.२	१२६
प्रजापतिरकामयत	१०.३.१	९०	प्रतिष्ठाय प्रजायते	१२.१३.२१	११७
प्रजापतिरुषसमध्वैत्स्वाम्	८.२.१०	६८	प्रतीचिनेकां काशीतम्	१५.५.१५	१४९
प्रजापतिर्द्वैवेभ्य आत्मानम्	७.२.१	५६	प्रतीपं यन्ति न	२५.१०.१२	२५१
प्रजापतिर्द्वैवेभ्य ऊर्जम्	६.४.१	४६	प्र ते सर्गा असृजते	१३.१.८	११९
प्रजापतिं वा एतेनाह्वा	१५.७.३	१५१	प्रत्नवत्यः प्रायणीयस्याऽहः	१०.४.८	९२
प्रजापतिर्यद्वाचम्	२०.१४.७	२०४	प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यम्	१६.११.८	१६५
प्रजापतिर्वा इदमेक	२०.१४.२	२०३	प्रत्यक्षश्छेतेन सप्त	२२.४.७	२२०
प्रजापतिर्वा इदम्	२०.१४.५	२०४	प्रत्यक्षां छेतेनर्त्तव	२२.१.४	२१९
प्रजापतिर्वा इदमेक	४.१.४	२३	प्रत्यक्षमेताभिरन्नाद्यम्	२३.२६.३	२३४
प्रजापतिर्वा एतत्सहस्रम्	९.१.३५	७९	प्रत्येव तिष्ठन्ति	२४.१६.३	२४२
प्रजापतिर्वा एताम्	७.८.८	६३	प्रत्यवरोहीण्युत्तमस्याहः	२१.११.४	२१५
प्रजापतिर्वा महाश्स्तस्यै	४.१०.२	३३	प्रत्यवरोहीण्युत्तमस्याहः	२१.१३.१०	२१७
प्रजापति वै च्यावनम्	१३.५.१२	१२३	प्रत्यक्षमेतेनान्नाद्यम्	१९.२.३	१८८
प्रजापतिर्वै सप्तदशः	४.५.६	२७	प्रत्यङ्गः प्रपद्य सार्पराज्ञया	४.९.४	३१
प्रजापतिर्वै हिङ्गारस्त्रियः	६.८.५	५२	प्रत्यवरोहिणो मासा	४.७.९	३०
प्रजापतिर्हि स्वाराज्यम्	२२.१८.४	२२१	प्रथमानि पदानि	९.१.४	७८
प्रजापतिर्हि स्वाराज्यम्	१९.१३.३	१९४	प्रथमैर्हि पदैः	९.१.५	७८
प्रजापति ह्येनमिन्द्राय	१८.१.१९	१७७	प्र देवयानं पन्थानम्	२५.१२.४	२५२
प्रजापतेर्हृदयेनापिकक्षम्	५.४.४	३६	प्रपरीवर्त्तमानोति य	२.२.२	९
प्रजापतेर्वा अक्षयश्चय	२१.४.२	२०९	प्र प्रजया प्र पशुभिः	२३.१९.७	२३२
प्रजापतिर्वा इदमेक	१६.१.१	१५७	प्र प्रजया प्र पशुभिः	२२.५.४	२२०
प्रजापतेर्वा एतौ	१३.११.१८	१३०	प्र प्रजया प्र पशुभिः	२०.१२.३	२०३
प्रजायते बहुर्भवति	२०.४.६	१९९	प्रमश्हिष्ठाय गायते'ति	१२.६.१	१०९
प्रजायते बहुर्भवति	१९.३.७	१८९	प्रमश्हिष्ठीयं भवति	१२.६.५	११०

प्रमं हिष्ठीयेन वा इन्द्रो	१२.६.६	११०	प्राणैर्वा एष व्यृध्यत	१६.५.२	१६०
प्रयाज्य क्षा	१४.५.६	१३५	प्राणो गायत्री प्रजननम्	१९.५.९	१९०
प्र व इन्द्राय मादनम्	९.२.२	८०	प्राणो गायत्री प्रजननम्	१६.१६.७	१६८
प्रवन्द्रार्गवं भवति	१४.३.२३	१३४	प्राणो वै त्रिवृत्प्राणः	१७.१२.२	१७४
प्रवता वै देवाः	१४.३.२४	१३४	प्राणो वै त्रिवृदात्मा	१९.११.४	१९३
प्रवता वै देवाः	१४.९.४०	१४०	प्राणो वै त्रिवृदूर्द्धमासः	६.२.२	४४
प्रवसीयस स्तल्पम्	२३.४.६	२२७	प्राणो वै त्रिवृदन्नम्	१६.८.९	१६३
प्र वसीर्यांसं विवाहम्	७.१०.४	६५	प्राणो वै संवत्सरः	५.१०.३	४१
प्र वो महे महे	१२.१३.१९	११७	प्राणो वै स्वरो यत्	२४.११.९	२३९
प्र वो मित्राय गायत	१४.२.४	१३३	प्रास्य धारा अक्षरन्निति	६.१०.१५	५५
प्र शुक्रैतु देवी	१.२.९	२	प्रास्य धारा अक्षरन्निति	६.१०.१६	५५
प्र शुक्रैतु देवी	६.६.१६	५०	प्राण सोमपीथे मे	१.६.१६	५
प्र सोमासो मदच्युत	११.५.१	९९	प्रायणीयमेतदहर्भवति	४.२.१	२४
प्र सोमासो विपश्चित	११.३.१	९७	प्रायणीयेन वा अह्ना देवाः	४.२.२	२४
प्रस्तरमासद्योद्गायेत्	६.७.२१	५१	प्रायश्चित्यै वै ग्रहो	९.९.७	८७
प्रस्तावं प्रस्तुत्य	१२.१०.७	११३	प्रेङ्गुमारुह्य होता शशंसति	५.५.९	३७
प्राकाशा बध्वर्योर्यमा	१८.९.१०	१८५	प्रेतिरसि धर्मणे त्वा	१.९.२	७
प्राचोस्यहे त्वाहर्जिन्व	१.९.७	७	प्रेद्धो आने दीदिह	१२.१०.१९	११३
प्राजापत्यं वै वामदेव्य	४.८.१५	३१	प्रेष्ठं वो अतिथिम्	१४.१२.१	१४३
प्राजापत्या वा उद्गातारः	६.५.१८	४८	प्रो अयासीदिन्दु	१४.३.४	१३३
प्राञ्च उपसीदन्ति	६.५.१९	४८	पृतनाषाडसि पशुभ्यस्त्वा	१.१०.३	८
प्राञ्चं वै त्रयस्त्रिंशो	२०.२.४	१९८	पृषदाज्येन प्रचर्य	५.१०.१२	४२
प्रादेशमात्री भवति	५.५.३	३७	पृष्ठानि भवन्ति वीर्यम्	४.८.७	३१
प्राणो गायत्रन्	७.१.९	५६	पृष्ठानि वा असृज्यन्त	७.७.१७	६२
प्राणो वै गायत्रम्	७.३.२८	५८	पृष्ठानि वा असृज्यन्त	८.९.६	७६
प्राणा वा आपोऽमृतम्	९.९.४	८७	पृष्ठं वा एतदह्नाम्	१५.३.१९	१४७
प्राणा वा उष्णिक्कुभौ	८.५.५	७१	पृष्ठः षडहः	२२.१.१	२१९
प्राणापाना वा एतानि	७.३.८	५७	पृष्ठः षडहश्छन्दोम	२२.६.१	२२०
प्राणापानैर्वा एते	९.८.१६	८६	पृष्ठः षडहो भवति	२२.४.६	२२०
प्राणो बृहत्तस्माद्	७.६.१४	६१	पृष्ठः षडहः	२२.५.१	२२०
प्राणापानौ वै बृहदथन्तरे	७.६.१२	६१	पृष्ठः षडहो महाव्रतम्	२२.४.१	२१९
प्राणा शिशुर्महीनाम्	१४.११.३	१४१	पृष्ठः स्तोमः	२२.१०.१	२२२
प्राणा शिशुर्महीनाम्	१३.५.३	१२३	पृष्ठः षडहः	२२.११.१	२२२
प्राणेन पुरस्तादाहवनीयम्	५.४.१	३६	पृष्ठः षडहः	२२.१२.१	२२३

पृष्ठः षडहो भवति	२२.१२.५	२२३	ब्रह्मणः सलोकताम्	२५.१८.६	२५५
पृष्ठं भवति	१५.३.१८	१४७	ब्रह्म यशसं वा	१५.५.२६	१५०
फलकमारुह्याध्वर्युः	५.५.११	३७	ब्रह्म यदेवा व्यकुर्वत	९.२.३	८०
फाल्गुने दीक्षेरन्	५.९.७	४१	ब्रह्मवर्चसकाम एतेन	७.१०.११	६५
बद्धानामासि सृतिः	१.१.४	१	ब्रह्मवर्चसकामः स्तुवीत	२.१७.२	१६
बलवद्वेयं वज्रमेव	७.७.१०	६२	ब्रह्मवर्चसकामा उपेयुः	२३.७.३	२२८
बल्वला कुर्वता गेयम्	७.७.११	६२	ब्रह्मवर्चसकामो यजेत	१७.६.२	१७२
बहिष्भवमानेन वै	७.४.७	५९	ब्रह्मवर्चसी पशुमान्	७.१.१३	५६
बहिष्भवमानं सर्पन्ति	६.७.९	५०	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	६.४.१५	४६
बहिः स्तुवन्त्यन्तरु	६.८.११	५२	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	४.३.१३	२६
बभ्रुवा एतेन	१५.३.१३	१४७	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	४.८.११	३१
बृहदेव पूर्वं समभवद्रथ	७.६.१०	६१	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१३.१०.१५	१२९
बृहत्तत्पूर्वं रथन्तराद्युज्यते	११.१.४	९७	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१३.१२.१	१३०
बृहतः स्तोत्रं प्रत्यभि-	१९.१.३.८	१९४	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१४.५.८	१३५
बृहत् स्वर्गकामाय	९.१.३०	७९	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१४.५.२६	१३६
बृहत्सामा भवति	१८.१.१८	१७७	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१४.११.३५	१४३
बृहत् सामा भवति	१८.२.८	१७८	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१५.५.३२	१५०
बृहता वा इन्द्रो वृत्राय	८.८.९	७४	ब्रह्मवादिनो वदन्ति	१५.१२.३	१५५
बृहतां स्तुवन्ति	१८.६.२७	१८२	ब्रह्म वै गायत्री	१३.३.२	१२०
बृहतीमर्थ्या य	७.४.३	५९	ब्रह्म वै त्रिवृत्	१९.१७.३	१९६
बृहती वा एतत्सत्रायणम्	२५.७.३	२४९	ब्रह्म वै त्रिवृत्	२३.७.५	२२८
बृहती वा एता रात्रयः	२४.६.३	२३८	ब्रह्म वै पूर्वं महः	११.११.९	१०४
बृहतीऽसम्पद्यते	१६.१२.७	१६६	ब्रह्म वै ब्रह्मणस्पति	१६.५.८	१६०
बृहत्कं भवति	१२.११.१३	११४	ब्रह्मसामैव तदन्या	५.२.१२	३५
बृहत्यां भूयिष्ठानि	७.३.१६	५८	ब्रह्मा वा ऋत्विजा	१८.१.२३	१७८
बृहद्भवति वर्षा वै	११.९.४	१०२	ब्रह्मोर्धं वदन्ति ब्रह्म-	४.९.१२	३२
बृहदुक्थो वा एतेन	१४.९.३८	१४०	बार्हदुक्थं भवति	१४.९.३७	१४०
बृहदेतत्परोक्षं यद्वैरूपम्	१२.८.४	१११	ब्राह्मणं पात्रे न नमः	६.५.९	४७
बृहद्रथन्तरे वै श्यैतनीषसे	७.१०.८	६५	ब्राह्मणस्पत्या पञ्चमी	१६.५.१८	१६०
बृहस्पतिर कामयत	१९.१७.८	१९६	ब्राह्मणस्पत्या पञ्चमी	१६.५.७	१६०
बृहस्पतिर्वै देवाना	६.७.१	५०	भरद्वाजस्य पृथ्व्य	१२.१०.२३	११३
बेकुरानामासि जुष्ट	१.३.१	२	भरद्वाजस्य लोम	१३.११.११	१२९
ब्रह्मणो वा आयतनम्	२.८.२	१२	भरद्वाजस्यादारसृज्वति	१५.३.६	१४५
ब्रह्मणो वा आयतनम्	३.९.२	२०	भर्गएव भर्गेण	१५.३.३२	१४८

भर्गयशसी भवती	१९.८.४	१९१	मध्यतो वा आत्मनः	६.४.६	४६
भवत्यात्मना परास्य	२१.१२.४	२१६	मध्यतो वा अग्निः	१९.११.१९	१९३
भवत्यात्मना परास्य	२१.१३.३	२१६	मध्यतः पृष्ठान्युपयन्त्यन्नम्	२३.१९.४	२३२
भवत्यात्मना परास्य	१२.१३.२८	११७	मध्यमानि पदानि	९.१.१६	७८
भवत्यात्मना परास्य	१६.१२.३	१६५	मध्ये पृष्ठेन वा	२५.१.३	२४५
भवत्यात्मना परास्य	१८.१.६	१७७	महन्मे वोचो भर्गो	१.१.१	१
भारद्वाजायना वै	१०.१२.१	९५	मरुतो नपातोऽपाङ्क्षया	१.२.५	१
भासं भवति	१४.११.१२	१४२	मरुतो वै देवानाम्	२१.१४.३	२१७
भ्राजाभ्राजे पवमानमुखे	४.६.१४	२९	मरुत्वते च मत्सर इति	६.१०.१०	५५
भ्रातृव्ययाँस्तुवीत	२.९.२	१२	मरुत्वद्धि माध्यन्दिन	१३.९.२	१२६
भ्रातृव्यवान्यजेत	२१.१२.३	२१६	मरुत्स्तोमो वा एष	१७.१.३	१६९
भ्रातृव्यवान्यजेत	१६.१२.२	१६५	महादिव प्रत्युह्यम्मन	८.७.११	७३
भिन्वि विश्वा अप	१३.८.४	१२६	महादिवाकीर्त्यञ्च	४.६.१५	२९
भूतं पूर्वोऽतिरात्रः	१०.४.१	९१	महावृक्षौ वै बृहद्रथरे	७.६.१५	६१
भूमानमश्नुते य	२२.१५.११	२२४	महावैष्टमं ब्रह्मसाम	१२.४.१९	१०८
भूमिदुन्दुभिर्भवति	५.५.१९	३८	महावैष्णमित्रं भवति	१३.६.११	१२५
भेषजं वाऽऽध्वर्णानि	१२.९.१०	११२	महाश्चन्द्रो य ओजसे	१५.२.७	१४६
भेषजं वै देवानाम्	१६.१०.१०	१६४	महीं दीक्षाँ सौमायनः	२४.१८.६	२४३
मदव द्वै रसव	११.१०.२	१०२	मृगसत्रं वा एतत्	२३.१३.३	२३०
मदिन्तमो मत्सर	१३.७.४	१२५	मृज्यमानः सुहृस्त्ये	१३.९.३	१२६
मत्सि वायुमिष्ट्ये	१५.१.३	१४५	मृदा शिथिरा देवानां	१.१.७	१
मनइव	६.९.२०	५४	मा चिदन्य द्विशस्सत	१५.१०.२	१५३
मनसा हिङ्गरोति मनसा	४.९.९	३२	माधुच्छन्दसं भवति	११.९.६	१०२
मनसोपावर्त्तयति	४.९.८	३२	माध्यन्दिनं वा एष	९.७.२	८४
मनस्तत्पूर्वं वाचः	११.१.३	९७	माध्यन्दिनेन वै पवमानेन	१९.११.६	१९३
मनुर्वै यत् किञ्चावद	२३.१६.७	२३१	माध्यन्दिने वै पवमाने	१५.९.१४	१५३
मनोर्द्धचः सामिधेन्यः	२३.१६.६	२३१	मानवं भवति	१३.३.१४	१२०
मन्द्रमिवाग्र आददीत	७.१.७	५६	मानो अज्ञाता वृजना	४.७.५	३०
मधुप्रियमिति	१३.७.३	१२५	मामा यूनुर्वाहासीदि	६.४.८	४६
मधुमन्तं भक्षं करोमि	१.६.१२	५	मारुता वै ग्रावाणः	९.९.१४	८७
मधु वाशयेद् घृतम्	१३.१२.१५	१३१	मारुतं भवति	१४.१२.८	१४४
मधुश्छुन्निधनं भवति	१३.११.१६	१३०	मारुती भवति मरुतो	१८.१.१४	१७७
मध्यत एव यज्ञस्य	४.६.५	२९	मार्गीयवं भवति	१४.९.११	१३९
मध्यतो वा अग्निः	१९.१०.१३	१९३	मासा वै रश्मयो	१४.१२.९	१४४

मासं दीक्षिता भवन्ति	२५.४.१	२४८	यज्ज्योतिष्टोमो भवति	४.१.६	२३
मित्रश्नुवे पूत दक्ष	१२.२.३	१०५	यज्ज्योति र्वक्थ्यः	२०.११.६	२०२
मित्रश्नुवे पूतदक्षम्	१५.२.५	१४६	यज्ञ इन्द्र मवर्द्धय	१९.७.५	१९१
मित्रं वयश्हवामहे	१४.८.३	१३८	यज्ञारण्ये सन्तिष्ठत	१८.६.२४	१८२
मित्रावरुणयोरनयनम्	२५.१०.९	२५१	यज्ञस्य हिस्थ ऋत्विज	१३.८.५	१२६
मिथुनमिव वा एषा	४.२.१८	२५	यज्ञायज्ञीयनिघनम्	१५.११.१०	१५५
मिथुनाभ्यास्तोमाभ्याम्	२०.१३.२	२०३	यज्ञायज्ञीयं पुच्छं कार्यम्	५.१.१८	३४
मिथुनं वा एतद्यत्	१६.५.४	१६०	यज्ञायज्ञीयं भवति	११.५.२७	१००
मिथुनं द्वे सम्भवतो	२०.१५.५	२०५	यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि	९.५.९	८३
मुखं गायत्र्यन्नम्	१९.११.४	१९३	यज्ञायज्ञीयमग्निष्टोम	५.३.६	३६
मुखं वा एतत्संवत्सरस्य	५.९.८	४१	यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि	१८.५.२०	१८०
मूर्धनिन्दिव इति स्वर्गम्	४.६.१८	२९	यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि	१८.११.२	१८६
मूर्धनिं दिवो अरतिम्	१४.२.१	१३२	यज्ञायज्ञीयमनुष्टुभि	१८.६.१५	१८१
मूर्धा वा एष	१४.२.२	१३२	यज्ञा वो अग्नये	८.६.६	७२
मेथी वा इषोवृषीयम्	१३.९.१७	१२७	यज्ञायज्ञा वो अग्नये	११.५.२	९९
मैषातिथं भवति	१५.१०.१०	१५४	यज्ञो वा अवति तस्य	६.४.५	४६
मैत्रावरुणयनूबन्ध्या	१७.१३.१०	१७४	यज्ञो वा आयुस्तस्य	६.४.४	४६
य आत्मानं नेव जानीरन्	२४.१३.३	२४०	यज्ञो वै देवेभ्यो	१४.३.१०	१३३
य आस्तुतं कुर्वति यथा	४.३.११	२६	यज्ञो वै देवेभ्यः	६.७.१८	५१
य आर्वेयो विद्वांस्तस्मै	२०.१५.११	२०५	यज्ञो वै विष्णुः	९.७.१०	८५
य एनमनुव्याहरति	६.४.१०	४६	यज्ञो वै विष्णुर्यदत्र	१३.५.५	१२३
य एव स्तोमा यज्ञं	२१.६.३	१५	यण्वं भवति	१३.३.६	१२०
यः कामयेत सर्वम्	२२.२.२	२१९	यत इन्द्र भयामहे	१५.४.३	१४८
यः कामयेत विशा	६.६.५	४९	यत पवस्व वाचो अग्रिय	१८.८.१०	१८३
यः कामयेत बहुः	२१.१४.२	२१७	यत् कथा शुभीयम्	२१.१४.६	२१७
यः कामयेत बहुः	२२.१५.२	२२४	यत्कवतीषु तेन	७.८.३	६३
यः पशुकामः स्याद्यः	८.१.६	६७	यत् कामो व्यूढच्छन्दसा	१०.५.१४	९३
यच्च पृष्ठानि यानि	१४.१०.७	१४१	यत् कल्पान् पडहा	२४.१७.४	२४२
यच्चतुर्विंशोऽग्निष्टोमः	१९.५.८	१९०	यत् कल्पौ पडहा	२३.२२.५	२३३
यच्चतसृभिर्बाहिष्यमानम्	१९.५.३	१९०	यत् कल्पौ पडहा	२४.१६.५	२४२
यच्छन्दोमाः पवमाना	२२.६.४	२२०	यत् ज्योतिर्गौरयुः	२३.९.३	२२९
यच्छायन्तीयं ब्रह्मसाम	८.२.११	६८	यत् ज्योतिर्गौरयुः	२२.८.३	२२१
यजमानन्तु स्वर्गाल्लोकात्	६.७.२२	५१	यत् ज्योतिर्गौरयुः	२२.१३.२	२२३
यजमानो वै प्रस्तरः	६.७.१७	५१	यत् ज्योतिर्गौरयुः	२३.७.६	२२८

यत् ज्योतिर्गौरयुः	२३.४.३	२२७	यत् त्रीण्येकविंशानि	१९.१४.७	१९५
यत्तिस्त्रोऽनुष्ठुभञ्जतस्त्रो	२१.४.५	२१०	यत् त्रीणि पञ्चदशानि	१९.१४.५	१९५
यत् परोक्षं निधनम्	५.४.१५	३७	यत् त्रीणि त्रिवृन्ति	१९.१४.४	१९५
यत् पञ्चदशाम्	१६.२.७	१५८	यत् त्रीणि सप्तदशानि	१९.१४.६	१९५
यत्पञ्चदशौ पक्षौ	२२.५.७	२२०	यत्त्र्यहः पुरस्ताद्भवति	२२.२.३	२१९
यत् पञ्चाहोऽनन्तादेव	२३.११.३	२२९	यत् द्वादशो माध्यन्दिनः	१९.५.५	१९०
यत् पवस्वेति तद्	१२.९.२	१११	यत्र यत्र ह्यस्थूरिणा	२१.१३.८	२१७
यत् पृष्ठेषु न्यदधुः	७.८.५	६३	यत्र यत्र हि पक्षौ	२३.३.८	२१७
यत् पृष्ठचः स्तोमाः	२४.११.५	२३९	यत्र वा इन्द्रस्य हरी	९.४.८	८२
यत्प्रत्नवत्स्य उपवतीष्यः	११.१.२	९७	यत्र वै देवा इन्द्रियम्	१३.७.१०	१२५
यत् षट् त्रिवृन्ति	१९.१५.३	१९५	यथा क्षेत्रज्ञः क्षेत्राणि	२१.२.८	२०८
यत् षोडशानि पृष्ठानि	१९.५.६	१९०	यथाकुली पुत्रान्	७.९.११	६४
यत् संवत्सरमर्त्रं संभरन्ति	४.१०.७	३३	यथा मण्डूक आद्	१२.४.१६	१०७
यत् सप्तदश स्तोत्राणि	१८.६.५	१८१	यथा महावृक्षस्याग्रम्	३.६.२	१९
यत् संभार्य्या भवन्ति	१८.१०.४	१८५	यथा वा अहः	९.१.१५	७८
यत्समाः पवमाना	१८.८.५	१८३	यथा वा अह उक्थान्येव	९.१.२७	७८
यत् सर्वाणि सवना	१८.४.४	१७९	यथा वा इतो वृक्षश्चोहन्ति	४.७.१०	३०
यत्सामावसृजेयुरव	४.३.६	२६	यथा वा इदमग्ने	१६.१.३	१५७
यत्साम देवताः प्रशंसति	१४.३.२०	१३४	यथा वा इमा	११.३.९	९८
यत्सोम चित्रमुक्थ्या	१३.३.४	१२०	यथा वै व्योकसौ	१४.३.८	१३३
यत् सहस्राक्षरासु	१६.८.५	१६३	यथा वै दृतिराध्मातः	५.१०.२	५१
यत् स्तोमात् स्तोमम्	२१.११.३	२१५	यथा वै पुत्रो ज्येष्ठः	७.६.६	६१
यत्त्विहाहुः षड्भिरितः	४.६.१७	२९	यथा हिरण्यं निष्टपे	१७.६.४	१७२
यत्त्वित्याहुर्गायत्रं प्रातः	६.३.११	४५	यदतिरात्रा अन्तरा	२४.११.४	२३९
यत्तिरवनर्दत्यति	७.१.३	५६	यदतोऽन्या प्रतिपत्	१२.७.४	११०
यत् त्रिवृच्छिरो भवति	२२.५.६	२२०	यदध्याहुरति तद्रेचयन्ति	४.८.८	३१
यत् त्रिवृत् त्रिवृतम्	२३.१९.१०	२३२	यद्धि पुत्रोऽशान्तम्	७.९.४	६४
यत् त्रिवृदग्निष्टोमः	२३.७.४	२२८	यदनिधनेनाग्रेस्तुयुः	७.३.१२	५८
यत्त्रिवृद्बहिष्पवमानम्	२०.२.३	१९८	यदन्यच्चक्राध्याशसाकम्	२५.२.४	२४७
यत् त्रिवृतमभिषेचनीये	१८.१०.८	१८६	यदनिरुक्तं प्रातःसवनम्	१८.६.८	१८१
यत् त्रयस्त्रिवृतः	२५.६.३	२४९	यदन्यच्छोऽन्तरा	७.३.१०	५७
यत्त्रिवृतः पवमाना	१९.८.१५	८६	यदन्यतोऽतिरात्रा स्तेन	२३.८.३	२२८
यत्त्रिवृद्भवति यदेवास्य	१७.५.६	१७१	यदर्वाक् स्तुवन्ति	९.३.७	८१
यत् त्रिवृद्भवति प्राणान्	१९.१८.३	१९६	यद्बहुदेवत्यमुत्तमं पदम्	७.८.७	६३

यदभिजिन्द्रवत्पनभि	१६.४.७	१५९	यदाहा'त्यायुपात्रमि'त्यति	६.५.७	४७
यद्भार्गवो होता भवति	१८.९.२	१८४	यदार्थ्यं वर्णमुज्जापयन्ति	५.५.१६	३७
यदभ्यासंग्यः पञ्चाहः	२२.७.३	२२१	यदि कलशो दीर्येत	९.६.१	८४
यदभ्यासंग्यः पञ्चाहः	२२.१६.२	२२४	यदि क्रीतं योज्यः	९.५.२	८३
यदध्याभि राज्यान्यध्या-	१९.५.४	१९०	यदि प्रावाऽपि शीर्यति	९.९.३३	८७
यद्द्रोणकलशमुपसीदन्ति	६.५.१७	४८	यदि तृतीयं सवनाद्	९.७.९	८५
यदसृग्रमिति तस्मान्	६.९.१८	५४	यदिदमाहुर्नवा ऊर्वो	२१.१०.६	२१४
यदहरतिरात्रो भवति	२५.१०.३	२५०	यदि दीक्षितानां प्रमीयेत	९.८.१	८५
यद्गणशः स्तोमा	२२.१५.३	२२४	यदि न प्रतिवाश्येत	२१.३.६	२०९
यद्गणशः स्तोमा	२४.१५.४	२४१	यदिन्दव इतीन्दव	६.९.१९	५४
यद्गणशः स्तोमास्तेन	१९.१४.२	१९४	यदिदं बहुधाग्नि	१०.१२.१०	९६
यद्वायतेति महस	१२.६.२	१०९	यदिन्द्र चित्र म इह	१४.६.४	१३७
यद्वायत्रं पुरस्ताद्भवति	७.३.२९	५८	यदि पलायेत वायव्यम्	२१.१४.१७	२१८
यद्वायत्रीषु तेनाग्नेयम्	७.८.४	६३	यदि पर्यायैरस्तुतम्	९.३.३	८१
यद्वायत्रीषु तेनाग्नेयम्	५.७.२	३९	यदि पञ्चविंशशो	१०.३.४	९१
यद्वायुयुष्ट द्वे अहनी	२३.२२.४	२३३	यदि पीतापीतौ सोमौ	९.९.८	८७
यद्वायुयुष्ट द्वे अहनी	२३.५.२	२२७	यदि प्रतिहताऽवच्छिद्यते	६.७.१५	५१
यदाश्वाऽराणि प्रथमम्	२१.५.४	२११	यदि प्रस्तोताऽवच्छिद्यते	६.७.१३	५१
यदाग्निहोत्रं जुहोत्यथ	१७.१४.१	१७५	यदि प्रातःसवनात्सोम	९.७.१	८४
यदाग्नेयोऽष्टाकपालो	२५.१४.४	२५३	यदि प्रासहाजयेयुरिन्द्राय	२१.१४.१८	२१८
यदा प्लक्षं प्रासवणम्	२५.१०.२१	२५१	यदि बृहत्सामातिरात्रः	८.८.११	७५
यदायास्यानि भवन्ति	१६.१२.५	१६५	यदि महावीरो भिद्येत	९.१०.१	८७
यदा वा एषा हीनस्याह	१८.११.१०	१८७	यदि माघ्यन्दिनात्	९.७.६	६५
यदा वै पुरुषः	९.१.११	७८	यदि रथन्तरसाम्ना	८.८.१२	७५
यदा वै पुरुष आत्मनः	४.९.२०	३२	यदि रुद्रोऽभिमान्ये	२१.१४.१३	२१७
यदा वै पुरुषोऽन्न	१२.४.२०	१०८	यदि व्यवान्यान्मध्य	७.१.१०	१
यदा वै पुरुषः स्वमोकः	५.८.९	४०	यदि श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम	९.६.९	८४
यदा वै प्रजा मह	५.५.१०	३७	यदि श्लवणो वा कूटः	२१.१४.१६	२१८
यदाह प्राजापत्य इति	६.५.६	४७	यदि सत्राय दीक्षेरन्थ	९.३.१	८१
यदाह बार्हस्पत्य इति	६.५.५	४७	यदि सःशीर्येत भौमम्	२१.१४.१४	२१८
यदायूषीत्याह य एव	६.१०.३	५४	यदि सोमौ सःसतौ	९.४.१	८२
यदाह वानस्पत्य इति	६.५.४	४७	यदि सोममभिदहेद्	९.९.१५	८७
यदा सर्वज्यानि जीयन्ते	२५.१०.२०	२५१	यदि सोममक्रीतम्	९.५.१	८३
यदा संवत्सरस्य	१७.१४.२	१७६	यदि सोमं न विन्देयुः	९.५.३	८३

यदीतरोऽग्निष्टोमः	९.४.१५	८२	यदद्य सूर उदित	१५.८.३	१५२
यदु चैवाऽनुष्टुभस्य	११.५.२३	१००	यद्यन्येन मृत्युनाभियते	२१.१४.१९	२१८
यदुद्भिदा यजते बलम्	१९.७.३	२२६	यद्यतिष्ठयुर्यावतीभिः	९.३.९	८१
यदुपरिष्ठाद् व्रतमुपयन्ति	२३.२.३	२२६	यद्यतिष्ठयुः स्वारम्	९.३.११	८२
यदेकविंशोऽग्निष्टोमो	१७.२.३	१७०	यद्यर्वाक्स्तुयुर्यावतीभिः	९.३.८	८१
यदेकयास्तुवन्त्येको वै	१६.१६.४	१६८	यद्यर्वाक् स्तुयुः	९.३.१०	८२
यदेक एकविंशो भवति	२०.५.३	२००	यद्यवसीदे नैऋतं चरुम्	२१.१४.१५	२१८
यदेतत्साम भवति	९.२.२३	८१	यद्याव इन्द्र ते शतम्	१२.४.१	१०७
यदेत इति तस्माद्यावन्त	६.९.१६	५३	यद्युत्सृजेयुरुक्थानि	५.१०.५	४२
यदेता एकया न	२४.९.३	२३८	यद्यद्वातावच्छिद्यते	६.७.१४	५१
यदेता स्रयोविंशती	२३.१८.३	२३२	यद् व्रतं मध्यत	२५.३.३	२४७
यदेता अष्टात्रिंशद्वात्रयः	२४.८.२	२३८	यद्वा अधृतमभीशुना	१२.९.१६	११२
यदेता एकया न	२३.२५.४	२३४	यद्वा अन्या वाङ्नाति	५.३.७	३६
यदेतानि रूपाण्यन्वहम्	२०.१४.४	२०४	यद्वा असुराणाम्	१२.९.२१	११२
यदेताः पञ्चत्रिंशद्वात्रयः	२४.५.२	२३७	यद्वा अदह्यतुर्विंशम्	४.१०.६	३३
यदेता विंशती रात्रयो	२३.१४.६	२३०	यद्वा उद्वंशीयम्	१३.१२.१०	१३१
यदेताष्टतुविंशद्वात्रयः	२४.४.३	२३७	यद्वा एतस्याकन्तदस्य	२१.८.३	२१२
यदेताः सप्तविंशती	२३.२३.३	२३०	यद्वा एतस्याह	१४.९.३६	१४०
यदेते चत्वारः षड्हा	४.१.१४	२४	द्वाहिष्ठीयं भवति	१५.५.२५	१५०
यदेते स्तोमा भवन्ती	४.१.८	२३	यद्विंश आर्भवः	१९.५.७	१९०
यदेतौ द्वौ षड्हा भवतः	४.१.१२	२३	यद्वै तदेवा असुरान्	१६.२.३	१५८
यदेतौ बालखिल्यौ	१३.११.५	१२९	यद्वै मनुष्याणाम्	२२.१०.३	२२२
यदेव गायत्रस्य	११.३.३	९८	यद्वै महावृक्षौ समृच्छेते	७.६.१६	६१
यदेव गौतमस्य	१२.३.१६	१०६	यद्वै यज्ञस्य भवति	९.६.१०	८४
यदेव सौमित्रस्य	१४.९.१४	१३९	यद्वै यज्ञस्य भवत्यन्ततः	९.६.११	८४
यदेवाष्टादंष्ट्रस्य	१२.९.१४	११२	यद्वै युक्ते सन्तत	१६.१०.६	१६४
यदेवासावुदेति तन्मुखम्	२०.१६.३	२०६	यद्वै राजसूये नाभिषिच्यते	१८.१०.१०	१८६
यदेवासावुदेति तन्मुखम्	२०.१६.४	२०६	यद्वै राजानोऽध्वानम्	६.३.१५	४५
यदेवास्या पशव्यम्	१७.७.४	१७२	यद्वै वाचा न समाप्नुवन्ति	४.९.१०	३२
यदेष षड्हा भवति	४.१.१०	२३	यद्वै षोडशे स्तोत्रे	१७.३.३	१७१
यदेष पृष्ठ्यः षड्हा	४.१.१६	२४	यद्वै संशीर्यतिऽथान्य	१७.८.४	१७२
यदेषोऽतिरात्रो भवत्यहोरात्रे	४.१.५	२३	यद्वै त्रिरात्रस्य सलोम	२०.१६.७	२०६
यदेषोऽनतिरात्रः स्यादूधः	२४.१.११	२३६	यद्रथन्तरेण स्तुवन्ति	७.९.६	६४
यदेषोऽनुष्टुप्शिराः	९.१.२	७८	यद्रथन्तरेण स्तुवन्तीमम्	७.१०.६	६५

यद्वा प्रस्तौति	१०.९.१	९५	यस्मात् स्तोमादतिरिच्येत	९.७.३	८५
यन्ति वा एते पथ	९.८.११	८६	यस्मिन् वा यज्ञक्रतौ	१७.८.२	१७२
यन्ति वा एते पथ	१६.५.११	१६०	यस्य कलश उपदस्यति	९.९.१	८७
यन्ति वा एते प्राणा	४.६.८	२९	यस्य कामयेतासूर्यमस्य	६.५.१५	४८
यन्मे यमं वैवस्वतं	१.५.१८	४	यस्य नाराशंस	९.९.५	८७
यन्ति वा एते यज्ञमुखा	१८.८.९	१८३	यस्य पदेन प्रस्तौत्यथ	१०.१२.२	९६
यन्माध्यन्दिनेन पवमानेन	७.३.३	५७	यस्य वै यज्ञा वागन्ता	८.६.१३	७३
यन्माध्यन्दिनेन	७.३.६	५७	या इक्षिणा ददाति	९.३.२	८९
यन्मैत्रावरुणोऽनुशंसति	७.८.६	६३	याज्यानां सा होतुर्या	३.११.३	२१
यन्विद्याहुर्गायत्रम्	७.४.६	५९	यातयामन्यन्यानि	१३.१०.१	१२८
यन्विद्याहुरन्यानि	७.४.५	५९	यात्यस्यान्यो नियानेन	७.९.१४	६४
यन्विद्याहुरुभे बृहद्रथन्तरे	७.६.१३	६१	यान्ताः प्रजाः सृष्टा	६.९.२१	५४
यन्विद्याहुरन्तराष्ट्रः	६.५.२१	४८	यानि देवराज्ञांसामानि	१८.१०.५	१८५
यन्विद्याहुर्वाचान्यानुत्विजः	६.५.१६	४८	या द्वादशी स्यात्तस्या	२१.३.५	२०९
यन्निधनवत्स्याद्यजमानम्	७.३.२४	५८	यामस्मादपाहन् सा	८.१.१०	६७
यन्निरुक्तं विधनमुपेयुः	१७.१.८	१६९	यामित दक्षिणैव	१६.१.७	१५७
यन्विद्याहुर्बृहत्पूर्वम्	७.६.९	६१	यामेन स्तुवन्ति	९.८.४	८६
यन्निराह रुद्राय पशून्	७.९.१८	६५	यामेन मार्जालीयम्	५.४.११	३६
यमध्वर्युरन्ततो गृहम्	९.९.६	८७	यामं भवति	११.१०.२१	१०३
यमाहुरव्यम्घ्नः पन्थाः	२५.१२.३	२५२	यांसमं महादेवः	६.९.७	५३
यमेवैवाश्वश्रीर्भवति	२४.१२.३	२४०	यास्तल्पे वोदके वा	२३.४.२	२२७
यं द्विष्याद्विमुखान् प्राव्यः	६.६.२	४८	यावत्यश्वतुर्विंशस्योक्थस्य	४.२.७	२४
यं द्विष्यात्तस्यै तेषाम्	६.६.१०	४९	यावत्यनुष्टुप्तावतीम्	१५.७.५	१५१
यं द्विष्यात्तस्यैताम्	६.७.८	५०	यावद्वै सहस्रं गाव	१६.८.६	१६३
यं द्विष्यात्तस्य कुर्याद्यथा	२.१३.२	१४	यावद् वै कुमारे	१८.१.२४	१७८
यस्ते गोषु महिमा	७.७.१९	६३	यावन्त इमे लोका	१८.६.३	१८१
यस्ते मंदो वरेण्यः	११.१०.१	१०२	यावन्ति संवत्सरस्याहो	१८.११.६	१८७
यस्मादन्यो न परोऽस्ति	१२.१३.३२	११८	यावान् प्रजापति	१८.६.२	१८१
यस्ते मंदो वरेण्य	१४.५.१	१३५	यां वै गां प्रशंसन्ति	१३.५.२७	१३४
यस्माद्गायत्रमुखः प्रथमः	१०.५.२	९२	या वै पूर्वाः प्रस्नान्ति	९.४.१२	८२
यस्मादेषा समाना	१०.७.५	८४	युनज्मि ते पृथिवीमग्निना	१.२.१	१
यस्मादेषा समाना	१०.६.७	९४	युवश्हि स्थः स्वः	६.१०.१४	५५
यस्मात्प्रवेष्ट पशवो	२०.३.३	१९९	युधामर्या अजैष्य	७.५.१५	६०
यस्मात् स्तोमादतिरिच्येत	९.७.८	८५	युक्ताश्वो वा आङ्गिरसः	११.८.८	१०१

ये द्वे जगत्योः पदे	१३.१०.१६	१२९	यो वै गायत्रेणा प्रतिहृतेन	७.१.४	५६
ये नास्तुतं यं काम	४.३.१२	३१	यो वै छन्दसाँ स्वराजम्	१०.३.८	९१
येनैव प्राणेन प्रयन्ति	११.६.९	१०१	यो वै दीक्षितानाम्	५.६.१०	३९
येनाह्वाजि मजयद्विचक्ष्य	१.५.१९	४	यो वै देवरथम्	७.७.१४	६२
ये रथन्तरेण स्तुत्वोत्तिष्ठन्ति	४.८.१२	३१	यो वै देवानां गृहपतिम्	१०.३.५	९१
ये वा अघ्नानं पुनः	४.३.१०	२६	यो वै दैवानि पवित्राणि	६.६.६	४९
ये वामदेव्येन स्तुत्वो-	४.८.१३	३१	यो वै द्वादशाहमग्निष्टोमेन	१०.५.१७	९३
ये वै वाचमन्नमादयन्ति	५.८.१	४०	यो वै निह्नुवानम्	८.६.१२	७२
ये सोमासः परावती	१४.५.९	१३५	यो वै महाव्रते सहस्रम्	५.२.२	३५
यैकादशी यदेव	१९.४.३	१८९	यो वै विद्वाश्सस्ते	१४.१.१३	१३२
यैरुक्कैश्च छन्दोभिः	७.४.८	५९	यो वै वाजपेयः	१९.१.३.१	१९४
योऽद्य सौम्यो वधोषा-	१.३.३	२	यो वै सत्रस्य सद्देद-	४.८.१०	३१
योऽपि न विगृह्णाति	६.६.१४	४९	यो वै सवादेति	१८.१०.१	१८५
योऽपूत इव स्याद्	१७.५.३	१७१	यो वै स्तोमानुपदेशनवतः	६.२.१	४४
योऽलमन्नाद्याय सत्रयानम्	२१.३.३	२०९	यो वै स्वधूर्वाम	७.९.१३	६४
योऽस्य प्रियः स्यात्	६.६.३	४९	यो वृष्टिकामः स्याद्यः	८.८.१८	७५
योगे योगे तवस्तरम्	९.२.२०	८१	यौक्ताष्टं भवति	११.८.७	१०१
योजने चतुर्विहिणा	१६.१.३.१२	१६६	यौघाजयं भवति	११.३.१०	९८
यो वै त्रयस्त्रिंशमेक-	३.७.२	१९	रथन्तरं प्रतिष्ठाकामाय	९.१.२८	७९
यो दीदाय समिद्धःस्वे	१५.२.३	१४५	रथन्तरं भवति ब्रह्म	११.४.६	९८
योनार्धेयो विद्वाश्स्तस्मै	२०.१.५.१०	२०५	रथन्तरमसि वामदेव्यमसि	१.७.४	६
योनिर्वै यज्ञायज्ञीयम्	८.६.३	७२	रथन्तरमेतत्परोक्षं यद्वै	१२.२.५	१०५
यो बहु प्रतिगृह्य	१९.४.२	१८९	रथन्तरमेतत्परोक्षम्	१३.२.८	१२०
यो म आत्मा या मे	१.३.४	२	रथन्तरश्च साम भवति	१८.५.१७	१८०
यो राज्य आशश्समानो	१९.१.२	१८८	रथन्तरश्च साम भवति	१८.६.१०	१८१
यो राज्य आशश्सेत	२१.५.२	२१०	रथम्मर्याः क्षेप्लाताः	७.६.४	६१
यो राजा चर्षणीनाम्	१२.१०.४	११२	रमन्तेऽस्मिन् पशवो	१७.७.३	१७२
यो हि त्रिवृदन्यम्	१६.१.४	१५७	रयिष्ठं भवति	१४.११.३०	१४३
यो होता सोऽघ्वर्युः	२५.४.५	२४८	रश्मिरसि क्षयाय त्वा	१.९.१	७
यो वा अधिपतिम्	६.२.७	४४	रश्मी वा एतौ	८.५.१६	७९
यो वा अग्निष्टोमे	१६.११.१	१६४	रसवद्वाचा वदति	५.७.३	३९
यो वा अनुष्टुभम्	६.३.१४	४५	राजनम्महाव्रतं कार्यम्	५.२.६	३५
यो वा एम्यो लोकेभ्यः	७.१.६	५६	राजन्यं याजयेत्	१९.१६.३	१९५
यो वा एवं साम्ने	६.४.९	५६	राजन्यं याजये दूषभः	१९.१२.३	१९३

राजन्वज्जनद्वत्सूर्य	१०.६.४	९४	वर्यं यत्वा सुतावन्त	१४.४.१	१३४
राजा च पुरोहितश्च	१९.१७.४	१९६	वयोधा असि श्रोत्राय	१.१०.८	८
राथन्तरेऽहनि बृहती	४.४.१०	२७	वरासी नेष्टुस्तु	१८.९.१६	१८५
राजानमपरुद्धम्	१८.५.५	१८०	वरासीं परिधाय तप्तम्	२१.३.४	२०९
राजा मेधा भिरीयते	१२.१.७	१०६	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.२	६
राजा वा एष स्तोमानाम्	२१.५.३	२११	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.३	६
राज्यं ह्येतर्हि	१२.१०.५	११३	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.४	६
राथन्तरो वा अयम्	१२.४.१३	१०७	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.८	६
रुक्मो होतु राग्नेयो	१८.९.९	१८५	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.१०	६
रेतो हि नामा नेदिष्ठीयम्	२०.९.२	२०१	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.११	६
रेवतीषु वामदेव्येन	७.९.१९	६५	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.१२	७
रेवदस्योषधीभ्यस्त्वा	१.१०.२	८	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.१४	७
रेवतीषु वारवन्तीयम्	१३.१०.४	१२८	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.१५	७
रेवत्यो भवन्ति	१३.९.१४	१२७	वरुणस्त्वा नयतु देवि	१.८.१६	७
रेवद्वा एत द्रैवत्यम्	१३.१०.६	१२८	वरुणसाम भवति	१३.९.२२	१२७
रेवान् भवति	१३.१०.७	१२८	वरुणस्य वै सुषुवाणस्य	१८.९.१	१८४
रोहिणी छवी	१६.६.२	१६१	वरुणाय देवता	१५.३.३०	१४७
रोहितकूलीयम्	१४.३.११	१३३	वर्षुकः पर्जन्यो भवतीमे	२.३.५	१०
रोहितकूलीयं भवति	१५.११.६	१५४	वर्षस्वानां भवति	१९.१०.११	१९२
रौरवमच्छा वाक	१२.४.२३	१०८	वल्लूकान्तानि दाम	१७.१.१५	१७०
लुप्यते वा एतत्	२४.१.४	२३६	वशा मैत्रावरुणस्य	१८.९.१३	१८५
लोक बिन्दु साम	११.५.२५	१००	वसवस्त्वा गायत्रेण	१.२.७	२
वज्रं भ्रातृव्याय	७.५.१३	६०	वसवस्त्वा गायत्रेण	६.६.७	४९
वज्रं भ्रातृव्याय	८.५.३	७१	वसिष्ठस्य जनित्रम्	८.२.३	६८
वज्रेण वा एतत्प्रस्तोतः	७.७.९	६२	वसिष्ठस्य जनित्रे	१९.३.८	१८९
वज्रो वै त्रिणवो वज्रमेव	३.१.२	१७	वसिष्ठस्य निहवेन	५.४.५	३६
वज्रो वै षोडशी	१२.१३.१४	११६	वसिष्ठः पुत्रहतो हीन	२१.११.२	२१५
वज्रो वै षोडशी	१२.१३.१६	११७	वसिष्ठस्य प्रियम्	१२.१२.९	११५
वत्सतव्युन्नेतुः साण्ड	१८.९.२०	१८५	वसिष्ठो वा एतत्पुत्रहतः	८.२.४	६८
वत्सप्रीर्भालन्दनः	१२.११.२५	११५	वसिष्ठो वा एतं पुत्रहतः	४.७.३	३०
वत्सश्च वै मेधातिथिश्च	१४.६.६	१३७	वसिष्ठो वा एतेन	११.८.१४	१०२
वयमु त्वा तदिदर्था	९.२.५	८०	वसुकोजसि वस्यष्टिरसि	१.१०.११	८
वयमुत्वामपूर्य्ये	१२.१२.३	११५	वसुनिधनं भवति	७.१०.१७	६६
वर्यं यत्वा सुतावन्त	१२.४.३	१०७	वह्निरसि हव्यवाहनः	१.४.५	३

व्यत्यासमिडाह	१६.५.२६	१६१	वामदेव्यं महाव्रतम्	५.१.१	३४
व्यक्षो वा एतेन	१४.१०.९	१४१	वामदेव्यम्हाव्रतम्	५.२.१	३५
व्युष्टिर्वा एष द्विरात्रो	१८.११.११	१८७	वामदेव्यस्यर्धुं रथन्तरम्	१५.१०.५	१५४
वागनुष्टुप्	२३.२८.४	२३५	वाग्रं भवति	१३.३.१८	१२१
वागनुष्टुप् वाचो रसो	१८.५.२१	१८०	वायवे मृगं तेनामृतत्वम्	१८.१३	७
वाग्वा अनुष्टुब्वाच्येव	८.७.३	७३	वायुर्युनक्तु मनसा	१.५.११	४
वाग्वा एषा प्रतता	१३.५.१०	१२३	वायुर्वा एतन्देवतानाम्	४.६.७	२९
वाग्यज्ञायज्ञीयं वाचि	११.५.२८	१००	वायुर्वा उशनम्	७.५.१९	६०
वाग्वै क्रौञ्चम्	११.१०.१९	१०३	वायो शुक्रो अयामित	१८.८.७	१८३
वाग्वा एषा प्रतायते	२३.२.२	२२६	वायो शुक्रो अयामित	४.६.६	२९
वाग्वै देवेभ्योऽपक्रामत्सापः	६.५.१०	४७	वायोष्ट्वा तेजसा	१.७.३	५
वाग्वै देवेभ्योऽपाक्रामत्ताम्	६.७.५	५०	वारवन्तीयमग्निष्टोम	५.३.८	३६
वाग्वै द्वादशाहो	१२.५.१३	१०९	वारवन्तीयमग्निष्टोम	१८.११.३	१८६
वाग्वै त्रिरात्रो वाचो	२०.१५.२	२०४	वारवन्तीयमग्निष्टोम	१८.६.१६	१८१
वाग्वै शबली तस्या	२१.३.१	२०९	वारवन्तीयं वा वामदेव्यम्	९.१.३२	७९
वाग्वै सरस्वती	६.७.७	५०	वारुण्येका भवति	१५.७.७	१५२
वाचं भ्रातृव्यस्य	९.१.१३	७८	वारुणी प्रतिपन्मारुतः	१७.१३.८	१७४
वाचं यच्छन्ति	४.९.१६	३२	वार्शं भवति	१३.३.११	१२०
वाचं यच्छन्ति यज्ञम्	६.७.११	५१	वालखिल्यावेतौ	१३.११.४	१२९
वाचः साम भवति	१२.५.१२	१०९	वासः पोतुः पवित्रत्वाय	१८.९.१५	१८५
वाचा पशून्दाधार	२३.२८.६	२३५	वासिष्ठं भवति	१५.३.३३	१४८
वाचा वै सर्वं यज्ञम्	१३.१२.३	१३०	वासिष्ठं भवति	११.८.१३	१०२
वाजजिह्वति	१५.११.११	१५५	विच्छन्दस ऋचः	८.८.२४	७५
वाजजिह्वति	१३.९.२०	१२७	विच्छिन्नं वा एते	५.९.४	४१
वाजदावय्यो भवन्ति	१३.९.१२	१२७	विराजश्सम्पद्यते	१६.९.५	१६३
वाजपेययाजी वाव	१८.६.४	१८१	विराजश्सम्पद्यत एष	१९.९.२	१९२
वाजवत्यो मध्यन्दिने	१८.७.३	१८२	विराजश्सम्पद्यते	१६.१३.३	१६६
वाजिनाश्साम ब्रह्मा	१८.७.१२	१८३	विराजश्सम्पद्यतेऽन्नम्	१६.१४.७	१६७
वाणं वितन्वन्त्यन्तो	५.६.१२	३९	विडवा एत मति	१८.५.६	१८०
वाणवान् भवन्त्यन्तो	१४.७.८	१३८	विड्वै सप्तदशस्तस्या	२.७.५	१२
वात्सग्रं भवति	१२.११.२३	११५	विततमिव वा	१२.५.८	१०८
वात्सं भवति	१४.६.५	१३७	विदद्भुसु वै तृतीय	८.३.६	६९
वानस्पत्योसि बार्हस्प-	१.२.४	१	विषर्म भवति	१५.५.३१	१५०
वामदेव्यं भवति	११.४.८	९८	विधृतिः पापवसीयसः	६.१.१३	४४

विधृतिः पापवसीयसः	७.५.५	६०	विश्रो वै पुरुषो दश	२३.१४.५	२३०
विधृतिः पापवसीयसो	१३.४.९	१२२	विष्टम्भोसि वृष्ट्यै त्वा	१.९.६	७
विधुं दद्राणश्च समने	९.६.३	८४	विष्णुमत्यो गायत्र्यो	१३.३.२६	१२१
विनाराशश्चो भवत्युभय	१३.७.१४	१२६	विष्णोः शिरोसि यशोधा	१.१.८	१
विन्दते गातुं प्रति	८.५.१०	७१	विष्णोः शिपिविष्ट	१८.६.२५	१८२
विदन्वानै भार्गव	१३.११.१०	१२९	विष्णोः शिपिविष्ट	१८.७.१३	१८३
वि पाप्मना वर्तन्ते	२४.११.३	२३९	विपुतातिरात्रेण	२०.५.२	१९९
विभुरसि प्रवाहणः	१.४.४	३	विषुवानेष भवति	४.६.१	२८
विराजो वा एतद्रूप	८.६.१४	७३	विषेण व तां समोषधयः	६.९.९	५३
विराट्सु वामदेव्यम्	१५.१२.१	१५५	वीङ्गं भवति	१४.६.९	१३७
वियोनिर्वाजपेय	१८.६.९	१८१	वीतहव्यः श्रायसः	९.१.९	७८
विराट्स्वन्नाद्यकामाय	८.१०.७	७७	वीरहा वा एष	१६.१.१२	१५७
विराट्स्वन्नाद्यकामः	१२.१३.१८	११७	वीर्यं वा अग्निष्टोमो	४.५.२१	२८
विराड्वा एषा समृद्धा	४.८.६	३०	वीर्यं वै स्तोमा	२.५.४	११
विराड्द्वि दशात्मैकादशी	२३.३.३	२२६	वैखानसं भवति	१४.४.६	१३५
विरूपमेनमनुप्रजायते	१०.६.८	९४	वैखानसा वा ऋषय	१४.४.७	१३५
विरूपः संवत्सरो	१२.४.१८	१०८	वैराजो वै पुरुषः	१९.४.५	१८९
वीर्यं वा इन्द्रो यज्ञः	९.७.५	८५	वैराजो भवतोऽन्नम्	४.८.४	३०
विलम्बसौपर्णं भवति	१४.९.१९	१३९	वैराजस्साम भवति	१२.१०.१०	११३
विलोमानो वा एता	२३.१९.११	२३२	वैराजो वै पुरुषः सप्त	२.७.८	१२
विहव्यं शस्यम्	९.४.१२	८२	वैदन्वतानि भवन्ति	१३.११.९	१२९
विहाय दौष्कृत्यम्	१.१.३	१	वैरूपं भवति	१४.९.७	१३९
विश्वजिदतिरात्रः	२२.१३.४	२२३	वैश्वदेव्यामृचि भवति	५.४.६	३६
विश्वजिदतिरात्रो भवति	२२.१६.४	२२४	वैश्वदेवी भवति	१८.१.१७	१७७
विश्वजिदतिरात्रो	२२.३.७	२१९	वैश्वमनसं भवति	१५.५.१९	१४९
विश्वमनसं वा ऋषि	१५.५.२०	१४९	वैयसं भवति	१५.३.२६	१४७
विश्वमेना ननु प्रजायते	२५.१८.३	२५४	वैश्वानरः प्रत्यथा नाकमारुह	१.७.६	६
विश्वमेवतद्विजमभि	१३.१.७	११९	वैश्वानरमृतआजातमग्निमिति	४.६.२०	२९
विश्वा दधान ओजसेति	६.१०.११	५५	वैश्वानरे वा एतदुद्रता	८.६.११	७२
विश्वाभिन्नो भरतानाम्	१४.३.१३	१३३	वैश्वानरे वा एतदुद्रतः	८.७.६	७३
विश्वाः पृतना अभि	१२.१०.२	११२	वैश्वानरं वा एतदुद्रता	८.७.५	७३
विशालं लिबुजया	१२.१३.११	११६	वैश्वानरमृत आजात	१४.२.३	१३२
विशोविशीयमग्निष्टोम	१८.५.२२	१८१	वैश्वानरं वा एष	१७.५.७	१७१
विशोविशीयं भवति	१४.११.३६	१४३	वैश्यं याजयेत्	१८.४.५	१७९

वैष्टम्भं भवति	१२.३.९	१०६	शते गोष्वृषभमप्युजन्ति	२५.१०.१९	२५१
व्रत पक्षाभ्यां पक्षः	५.४.३	३६	शतं दक्षिणा अहतम्	१७.१३.११	१७४
व्रतमिति निधनं भवति	५.३.५	३५	शबलि समुद्रोऽसि	२१.३.७	२०९
व्रतश्च सप्तमस्याहः	२२.४.५	२२०	शमद्भ्य ओषधीभ्यः	१.६.१३	५
वृद्धा वा एत इन्द्रियेण	६.९.२६	५४	शम्मद्वा एतेन	१५.५.११	१४९
वृशो वैजानस्यरुणस्य	१३.३.१२	१२०	शाकलं भवति	१३.३.९	१२०
वृषकोऽसि त्रिष्टुण्दा	१.५.१२	४	शाम्पदं भवति	१५.५.१०	१४९
वृषण्वतीं प्रतिपदम्	९.४.३	८२	श्च उत्पुष्ट्याः स्म इति	५.१०.९	४२
वृषण्वत्यस्त्रिष्टुभः	११.८.२	१०१	श्चात्रोसि प्रचेताः	१.४.६	३
वृषण्वत्यस्त्रिष्टुभः	११.८.५	१०१	शार्करं भवति	१४.५.१४	१३६
वृषण्वत्यस्त्रिष्टुभ	१४.३.२	१३३	शिखा अनुप्रवपन्ते	४.९.२२	३२
वृषण्वन्तस्तृषा भवन्ती	११.६.७	१०१	शिरो वा अग्रे सम्भवतः	२२.९.४	२२२
वृषण्वत्यो गायत्र्यो	१२.९.२४	११२	शिशुर्वा आङ्गिरसो	१३.३.२४	१२१
वृषवद्भनहवद्रयिमद्विष	१०.६.२	९४	शिशुं ज्ञानम्	१४.७.१	१३८
वृषा वा एष रेतोषा	४.३.८	२६	शिशुरिव वा एष	१४.७.२	१३८
व्यूढं वा एतदपशव्यम्	६.९.२३	५४	शिल्पं वा एष	१६.१५.२	१६७
वृषा पवस्व धारयेति	६.१०.९	५५	श्रायन्त इव सूर्यम्	१५.४.१	१४८
वृषा पवस्व धारय	११.८.१	१०१	श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम	९.५.८	८३
वृषा पवस्व धारय	१४.३.१	१३३	श्रायन्तीयमेव कार्यम्	९.६.६	८४
वृषामतीनां पवते	११.१०.६	१०३	श्रायन्तीयमेव कार्यम्	१६.११.१३	१६५
वृषा वा एतद्वाजि	११.५.१६	१००	श्रायन्तीयं भवति	१५.४.४	१४८
वृषा शोणो अभि	११.८.४	१०२	श्रायन्तीयं ब्रह्मसाम	१८.५.१९	१८०
वृष्टिं वा आभ्यस्ताम्	८.८.१७	७५	श्रायन्तीयं यज्ञविभ्रष्टाय	८.२.९	६८
श्लेष्म वा एतद्यज्ञस्य	१६.१.१३	१५८	श्रीर्वै पशवः श्रीः	१३.२.२	११९
श्लक्ष्णेव तु वा ईश्वरा	२.२.३	९	श्रीर्वै वाचोऽग्नश्श्रियम्	६.९.१२	५३
श्लोकानुश्लोकाभ्याम्	५.४.१०	३६	श्रीर्वै श्रायन्तीयश्च श्रीः	१५.४.५	१४८
शक्वरीषु षोडशिनो	१२.१३.१३	११६	श्रुषी हवं तिरष्ठ्या	१२.६.४	११०
शक्वरीभिः स्तुत्वा	१३.४.१२	१२२	श्रुष्यं भवति	१५.५.३३	१५०
शङ्कु भवत्यहः	११.१०.११	१०३	शुक्रवत्यो ज्योतिष्मत्यः	१८.७.२	१८२
शङ्गनायेति द्विपदे	६.९.८	५३	शुक्तिर्वा एतेना—	१२.५.१६	१०९
शततन्त्रीको भवति	५.६.१३	३९	शुचा वा एष विद्धो	८.१.१२	६८
शतमाशिरं दुहन्ति	१८.५.१२	१८०	शुद्धा अस्मा आपः	६.५.११	४९
शतवद्वै पशूना	१२.४.२	१०७	शुद्धाशुद्धीयं भवति	१४.११.२७	१४२
शतान्यन्वहं दीयन्त	२०.१५.१२	२०५	शुद्धाशुद्धीये भवतः	१९.४.६	१८९

शुन्युरसि मार्जालीयः	१.४.८	३	स ऐत्कल्याणः सोऽब्रवी	१२.११.११	११४
शूद्राभ्यो चर्मणि	५.५.१४	३७	स ऐक्षत यन्निरुक्त	१८.१.३	१७७
शैशवं भवति	१३.३.२३	१२१	संवत्सर एव सप्तदशस्या	१०.१.७	८९
शौक्तां भवति	१२.५.५	१०९	संवत्सरं न यावे	१६.६.११	१६२
षट्पदासु स्तुवन्ति	१३.१०.१७	१२९	संवत्सरं दीक्षिता	२५.५.१	२४८
षडहानि विभजन्ति	१०.१२.९	९६	संवत्सर ब्राह्मणम्	२४.२०.२	२४४
षडेता बृहत्यो भवन्ति	१९.१८.५	१९६	संवत्सरं ब्राह्मणस्य	२५.१३.१	२५२
षण्णिषणा षड्विंशस्य	१३.९.५	१२७	संवत्सरस्य रूपं सर्वान्	४.२.१६	२५
षड्धा विहितो यज्ञः	७.२.४	५७	संवत्सरस्य वा एतौ	१०.४.३	९१
षड्वा ऋतव	२३.२२.३	२३३	संवत्सरं वा एषान्त	२१.१३.४	२१६
षड्वा भवन्त्यृतूनाम्	१५.१.९	१४५	संवत्सरं वीर्यमनाद्यम्	२१.१३.५	२१६
षड्यौ भवतः	१२.७.९	१११	संवत्सरोऽस्थीनि याजयेयुः	९.८.१३	८६
षष्टिञ्च त्रीणि च	९.३.५	८१	संवत्सरोऽग्निर्वाक्	१०.१२.७	९६
षोडश कलाः पशवः	१९.६.२	१९०	संवत्सरो वै व्रतम्	२१.१५.२	२१८
षोडशाभ्यो हिङ्करोति	३.१२.१	२१	संवत्सरो वै देवानाम्	१०.३.६	९१
षोडशाभ्यो हिङ्करोति	३.१३.१	२२	सं वा अन्यो यज्ञस्तिष्ठत	५.७.६	३९
षोडशाक्षरेण प्रस्तौति	१२.११.२०	११५	सर्वेशायोपवेशाय	९.४.६	८२
स आदधीत गर्भः	७.६.२	६१	सक्षीर दायो रथा	१६.१३.१३	१६६
स आत्मानमेव पुनरुपा-	८.१.५	६७	सकृदिङ्कृतेन शिरसा	५.१.५	३४
स इन्द्रोऽब्रवीत्	८.८.६	७४	सखाय आ निषीदत	१४.५.४	१३५
स इदं भुवनं प्रजनयित्वा	४.१.१५	२४	सखाय आ निषीदत	१२.५.५	१०८
स इन्द्रोऽवेदग्निर्वा	७.२.२	५७	सगरा असि बुध्यः	१.४.१३	३
स उत्तमे स्तोत्रे	१८.१.४	१७७	स गायत्रीऽसम्पद्यते	१६.३.६	१५८
स ऊरस्त एव बाहुभ्याम्	६.१.८	४२	सगोत्राय ब्रह्मणे देयः	१८.२.१२	१७८
स एतदवभृथम्	२५.१०.१८	२५१	सजनीयश्च शस्यमगस्त्यस्य	९.४.१७	८३
स एतन्महं पुनः प्रायुङ्क्त	४.१.९	२३	सञ्जयं भवति	१३.६.६	१२४
स एतश्चण्डहं पुनः	४.१.११	२३	स तु वै यज्ञेन यजेतेति	६.८.१	५१
स एतान् स्तोमानपश्यत्	४.१.७	२३	स तु वै पृष्ठेः	१६.५.१३	१६०
स एतौ द्वौ षड्गौ पुनः	४.१.१३	२३	सतो बृहत्यो वै	१६.११.९	१६५
स एष प्रजापते	१७.१०.४	१७३	सत्रमिव वा एतद्यदनु	२२.३.३	२१९
स एष बृहस्पति	१७.११.४	१७३	सत्रस्यद्वर्धनीध्रम्	५.४.७	३६
स एष शुनस्कर्ण	१७.१२.६	१७४	सतो बृहतीषु स्तुवन्ति	१२.४.२२	१०८
स एष स्थपति सवो	१७.११.६	१७३	सत्रासाहीयं भवति	१२.९.२०	११२
स एवाब्रवीत्कशाहम्	८.८.७	७४	सत्रा भ्रातृव्यश्च सहते	१२.९.२२	११२

स दक्षिणेन तोरेण	२५.१३.२	२५२	सप्तम्यो हिङ्करोति	३.२.१	१७
स देवेन यज्ञेन यजते	६.२.६	४४	सप्त शिरसि प्राणाः	२२.४.३	२२०
सदो विशीर्यं ब्रह्मसाम	१८.४.८	१७९	सप्ताहा वा एते	२३.१९.५	२३२
सदस्सदः प्रजावानृभुः	२१.१०.१९	२१५	सप्ति सप्तदशौ भवतो	१९.७.६	१९१
सद्वै वामदेव्यम्	१५.१२.२	१५५	सप्तर्च्यौ भवतः	१३.१.१०	११९
सनः पवस्व शङ्खव' इति	६.९.६	५३	सर्फं भवति	११.५.५	९९
सन्नद्धाः कवचिनः	५.५.२१	३८	सर्फं भवति	१५.११.४	१५४
सन्ततं गायति	१३.३.७	१२०	सर्फेन वै देवा	१५.११.५	१५४
सन्तानि भवति	१४.३.७	१३३	सर्फेन वै देवा इमान्	११.५.६	९९
सन्तानि भवति	१३.५.९	१२३	स बृहदसृजत तत्	७.८.१०	६३
सन्धिरस्यन्तरिक्षाय त्वा	१.९.४	७	स ब्रह्मणे देयः	१८.१.२२	१७७
स पत एव प्रतिष्ठाया	६.१.११	४४	स मध्यत एव प्रजननात्	६.१.१०	४४
सप्रभृतयो भवन्ती	१५.१.६	१४५	स मनसा ध्येयः	७.१.५	५६
सप्तदश आत्मा भवति	२२.५.८	२२०	समन्तं भवति समन्ता	१९.१२.६	१९४
सप्तदश उक्थ्यः	१८.६.१	१८१	समन्तं भवति	१५.४.६	१४८
सप्तदश उक्थ्यः	१८.५.१	१७९	समन्तेन पशुकामः	१५.४.७	१४८
सप्त ऋषय एतेनार्धुवम्	२२.४.२	२२०	समान जने तिस्रः	१६.६.९	१६२
सप्तदश एव स्तोमः	१२.१.११	१०५	समान लोके वै	१५.१०.१५	१५४
सप्तदश एव स्तोमो	१२.६.१३	११०	समानं वै सिमानाञ्च	१३.९.४	१२७
सप्त ग्राम्याः पशवः	२.१४.२	१४	समानश्चसाम भवत्यन्योन्यः	४.३.७	२६
सप्त ग्राम्याः पशवः	२२.४.४	२२०	समिव वा इमे लोका	१२.२.७	१०५
सप्तदश पृश्नीनुक्ष्णः	२१.१४.७	२१७	समुद्रं वा एते प्रस्नान्ति	५.८.५	४०
सप्तदशा भवन्ति	४.५.५	२७	समुद्रो वा एतच्छन्दः	५.३.३	३५
सप्तदशेनाग्निधुता	१७.९.१	१७२	समुद्रं वा एते	१४.५.१७	१३६
सप्तदशोऽग्निष्टोमः	१८.२.१	१७८	समुद्रोऽसि विश्वव्यचाः	१.४.१०	३
सप्तदशोऽग्निष्टोमः	१८.१.१	१७७	समेधन्ते ताश्चसाम्	८.८.१५	७५
सप्तदशोऽग्निष्टोमः	१८.४.१	१७९	सम्प्राडसि कुशानुः	१.४.२	३
सप्तदशोऽग्निष्टोमः	१८.३.१	१७८	सम्प्राड्वतीषु भवति	४.६.२४	२९
सप्तदशो वै प्रजापतिः	२२.५.५	२२०	सम्भार्य्या भवन्ति	१८.१०.२	१८५
सप्त पदया यजति	१३.१०.१८	१२९	संभार्य्या स्तुवा	११.१.५	९७
सप्तदशश्च स्तोमा नाति	२१.१४.४	२१७	सम्भार्य्या भवन्ति	१८.८.८	१८३
सप्तम्यो हिङ्करोति	२.९.१	१२	स य आग्नेयेनाष्टकपालेन	२५.१३.४	२५२
सप्तम्यो हिङ्करोति	२.१३.१	१४	सरजसे रोहति मनुष्य	१८.७.११	१८२
सप्तम्यो हिङ्करोति	२.१४.१	१४	सरवा वा अश्वस्य	२१.४.४	२०९

स रथन्तरमसृजत	७.८.९	६३	सर्वाणि वै रूपाणि	८.९.९	७६
स रेवतीरसृजत	७.८.१३	६४	सर्वाणि स्वराणि	१६.५.२१	१६१
सरस्वतश्च सरस्वत्या	१६.५.३	१६०	सर्वाणि स्वाराण्याज्यानि	७.२.५	५७
सरस्वती द्वितीया	१६.५.१५	१६०	सर्वान् कामानवरुन्धे	७.७.८	६२
सरस्वत्या स्तुतीया	१६.५.१६	१६०	सर्वान्वृद्धिमाधुवक्षस्यितेव	६.९.१७	५३
सरस्वत्या विनशने	२५.१०.१	२५०	सर्वानिमान् लोकान्	२१.२.६	२०८
सरस्वत्या वै देवाः	२५.१०.११	२५१	सर्वनिवै ताभिः	२३.३.४	२२६
सर्पराज्ञ्या ऋग्भिः	९.८.७	८६	सर्वामृद्धिमादृज्जोत्	२२.१८.८	२२८
सर्वः षट्त्रिंशस्तेन	१९.१३.१०	१९४	सर्वामृषो विहते	१९.१९.२	१९६
सर्वः पञ्चदशो भवति	१९.१६.४	१९५	सर्वा वाचो वदन्ति	५.५.२०	३८
सर्वः सप्तदशो भवति	१८.७.५	१८२	सर्वासु क्वचित्तुषु	५.५.१८	३८
सर्वः सप्तदशो भवति	१८.९.५	१८४	सर्वेणात्मना समुद्धति	५.५.६	३७
सर्वः सप्तदशो भवति	१७.९.४	१७३	सर्वे वै कामाः	८.८.२०	७५
सर्वः सप्तदशो	१८.४.१०	१७९	सर्वे सप्तत्विजः	५.६.१	३८
सर्वः सप्तदशो भवति	१८.२.१३	१७८	सर्वेषां वा एतत्	८.९.७	७६
सर्वाः खलु देवताः	९.१.३७	७९	सर्वेऽस्मिन् घोषाः	७.८.१५	६४
सर्वजिता वै देवाः	१६.७.२	१६२	सर्वेषां वा एता	१५.१२.७	१५६
सर्वमन्नाद्यमानोति	४.१.३	२३	सर्वेषां वा एषा	१६.१६.९	१६८
सर्वमश्नुते य	२२.११.७	२२२	सर्वे षोडशिमन्तो	२१.५.६	२११
सर्वमायुरेति य	७.५.१८	६०	सर्वस्तोमोजितिरात्रो भवति	२०.११.११	२०२
सर्वमायुर्यन्ति	२३.१२.४	२२९	सर्वो दशदशी भवति	१९.२.४	१८८
सर्वमायुरेति वसीयान्	२२.१२.३	२२३	सृष्टानीव ह्येत—	१३.७.६	१२५
सर्वस्तोमोजितिरात्रो	२१.४.१२	२१०	स्रगुद्गातुस्सौर्य्य उद्गाता	१८.९.८	१८४
सर्वस्तोमोजितिरात्रो	२२.८.५	२२१	संवर्चसा पयसा	१.३.९	२
सर्वस्तोमेनातिरात्रेण	२०.२.२	१९७	स वाचं व्यसृजत	७.६.३	६१
सर्वस्य प्रसवं गच्छन्ति	२४.१५.३	२४१	स वानुत्तमः षड्चो	१५.१.११	१४५
सर्वस्यान्नाद्यस्या	२२.९.३	२२२	स वैराजमसृजत	७.८.११	६४
सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य	१५.११.१२	१५५	स शकवरीरसृजत	७.८.१२	६४
सर्वा दिशोऽष्टतरयाः	१६.१३.१०	१६६	स सर्वस्यान्नाद्यस्य	२३.१४.३	२३०
सर्वामृद्धिमृच्छोति	२१.१४.२१	२१८	संस्थिते गोष्ठ्येमे	२५.१०.८	२५१
सर्वाभ्य एवास्मै	१६.१३.११	१६६	संस्थितं भवति	११.५.४	९९
सर्वाणि रूपाणि क्रियन्ते	४.२.१४	२५	संस्थितं भवति	१५.११.३	१५४
सर्वाणि वै रूपाणि	८.३.७	६९	स सुन्वे यो वसूनाम्	१३.११.२	१२९
सर्वाणि वै रूपाणि	८.४.११	७०	सह निघनेन प्रतिष्ठाम्	५.५.८	३७

सह त्रिवृतः सह	२२.१५.४	२२४	सुमित्रः सन् क्रू	१३.६.१०	१२५
संसर्पोसि चक्षुषे त्वा	१.१०.७	८	सुरूपकृतुमूतये	१३.१०.२	१२८
सहस्रमन्यमभि	१६.११.१५	१६५	सुरूपं भवति	१४.११.१०	१४२
सहस्रं यदसृजत	२१.१.९	२०८	सुरूपं भवति	१५.३.८	१४६
स ह्यनिरुक्तः	१८.१.२१	१७७	सुषमिद्धो न आवह	१५.८.१	१५२
साकमश्वं भवति	१४.९.१७	१६०	सुषमिद्धो न आवह	१६.५.२२	१६१
साकमश्वं भवत्युक्था-	११.११.५	१०४	सुसमिद्धे होतव्यम्	९.४.५	८२
साध्या वै नाम देवा	८.४.१	६९	सुहविर्वा एतेन	१४.५.२५	१३६
साध्या वै नाम देवा	८.४.९	७०	सूर्यो मा दिव्याभ्यो	१.३.२	२
साध्या वै नाम	८.३.५	६९	सूर्यो मा दिव्याभ्यः	६.७.२	५०
साध्या वै नाम देवेभ्यः	२५.८.२	२४९	सूर्यो युनक्तु वाचा	१.५.१४	४
साग्रं भवति	१५.५.२८	१५०	सूर्यं वतीषु स्तुवन्ति	१५.११.१४	१५५
साम त्रिष्टुभ्यध्याभि	१८.१०.६	१८६	सैन्धुक्षितं भवति	१५.३.११	१४७
सान्नाय्येनेष्ट्वाध्वर्युः	२५.१०.४	२५०	सैन्धुक्षितं भवति	१२.१२.५	११५
सा पुनर्तात्यक्रामत् सा	६.५.१२	४७	सैषा त्रिवृत्प्रायणा	२.१५.३	१५
साम देवानामन्नं सामन्येव	६.४.१३	४६	सोऽकामयतेन्द्रो मे	१६.४.३	१५९
साम्नेतो यन्त्यृचा	४.३.४	२५	सोऽकामयत यन्मे	१६.४.६	१५९
साम्नेतः प्रगाथां दुग्धे	४.३.९	२६	सोऽकामयत यज्ञम्	६.१.६	४३
सामराजं भवति	१५.३.३५	१४८	सोम उष्वाण	१३.३.३	१२०
साम वा असौ लोकः	४.३.५	२५	सोम गोर्षिष्ट्वा वयं	१.५.७	३
सामाऽऽर्ज्येयवत् स्वर्गाय	११.५.२२	१००	सोम चमसो दक्षिणा	१८.२.१०	१७८
सामाऽऽर्ज्येयेण प्रशस्तम्	१२.११.१४	११४	सोमपीथो वा एतस्माद्	९.५.६	८३
सामार्धेयेण प्रशस्तम्	१३.३.१९	१२१	सोमराश्वि नो हृदि	१.५.६	३
सामार्धेयवत् स्वर्गाय	१४.१०.५	१४१	सोम साम भवति	११.३.८	९८
सांवर्तं भवति	१४.१२.६	१४४	सोमः पवते जनिता	१२.११.६	११४
सावित्री चतुर्थी	१६.५.१७	१६०	सोमः पुनान ऊर्मिणा	१२.११.३	११४
सावित्री चतुर्थी	१६.५.५	१६०	सोमाति पवितम्	१८.५.३	१८०
सिन्धु क्षिद्धे राजन्यर्षि	१२.१२.६	११५	सोमाः पवन्त इन्द्रव	१३.११.६	१२९
सुज्ञानं भवति	५.७.१०	४०	सोमो वै ब्राह्मणः	२३.१६.५	२३१
सुज्ञानं भवति	११.१०.१३	१०३	सोमेह्यनुमेहि सोम	१.६.६	५
सुतासो मधुमत्तमा	१२.५.६	१०८	सौपर्णं भवति	१५.५.१८	१४९
सुदीतीरस्यादित्येस्त्वा	१.९.११	७	सौभरं भवति	१२.१२.७	११५
सुभूरसि श्रेष्ठो	१.६.७	५	सौमपौषं पशुमुपालभ्यम्	२३.१६.४	२३१
शुभो वा एता	१६.१.१४	१५८	सौमित्रं भवति	१३.६.८	१२४

सौपर्णं भवति	१४.३.९	१३३	स्वर्भानुर्वा आसुरः	४.६.१३	२९
सौमित्रं भवति	१४.९.१३	१३९	स्वर्भानुर्वा आसुरः	४.५.२	२७
सौव्यानुष्टुभुतमा	१८.८.१८	१८४	स्वर्भानुर्वा आसुरः	६.६.८	४९
सौश्रवसं भवति	१४.६.७	१३७	स्वर्वं द्वै रायन्तरम्	११.१०.१५	१०३
सौहविषं भवति	१४.५.२४	१३६	स्वरसामान एते भवन्ति	४.५.१	२७
स्तुणुते तं यम्	१२.१३.६	११६	स्वराणां यस्मादेष्टा	१०.९.२	९५
स्तुतमनु शंसत्यम्	९.८.१०	८६	स्वरेण वै देवेभ्यः	७.३.२६	५८
स्तुतस्य स्तुतमस्यूर्जस्वत्	१.६.३	४	स्वरोसि गयोसि जगच्छन्दा	१.५.१५	४
स्तोमेन यज्ञम्	८.३.४	६९	स्वादिष्ठया मदिष्ठया	१५.११.१	१५४
स्तोमो युज्यते	११.१.१	९७	स्वादिष्ठा वै देवेषु	८.४.६	७०
स्तोमो वै देवेषु	८.३.३	६९	स्वादोरित्था विभूवत	१३.४.१६	१२२
स्तोत्रीयस्तृचो	१४.१.७	१३२	स्वात्सुस्वरेण स्वरेण	११.५.२६	१००
स्तोत्रीयस्तृचो भवति	१४.७.३	१३८	स्वारं भवति	७.३.२५	५८
स्तोत्रीयस्तृचो भवति	१५.१.४	१४५	स्वाराज्यो वा एष यज्ञः	२२.१८.२	२२५
स्तोत्रीयानुरूपौ तृचौ	११.६.६	१०२	स्वाराज्यं गच्छति	२२.१८.३	२२५
स्तोत्रीयानुरूपौ तृचौ	१२.१.६	१०५	स्वाराज्यं गच्छति	१९.१३.२	१९४
स्तोत्रीयानुरूपौ	१२.७.८	१११	स्वाशिरामको भवति	१४.११.८	१४२
स्थूरिय वाचितमच्छा	१८.९.१७	१८५	स्वःपृष्ठं तथा	१२.९.१९	११२
समानो ह्येष यत्	२३.१.३	२२६	हयाइहया ओहहे	१३.६.१३	१२५
स्वर्गकामो यजेत	१६.३.३	१५८	हरिवत्यो भवन्ति	१४.७.४	१३८
स्वर्गकामो यजेत	१६.१२.६	१६६	हरिवत्यो भवन्ति	१४.१.८	१३२
स्वर्गकामो यजेत	२०.११.५	२०२	हरिवर्णो वा एतत्पशुकामः	८.९.४	७६
स्वर्गकामो यजेत	१८.२.३	१७८	हरित्री निधनम्	१५.३.९	१४७
स्वर्गकामो यजेत	१६.१५.६	१६७	हविर्द्धनि शिरसा	५.६.७	३८
स्वर्गस्य लोकस्य	१४.९.२१	१४०	हविर्यज्ञैर्वै देवा	१७.१३.१८	१७५
स्वर्गो लोकः पृष्ठानि	१६.१५.६	१६७	हविष्मांश्च वै हविष्कृज्य-	११.१०.९	१०३
स्वर्गो लोको बृहत्स्वर्ग	९.१.३१	७९	हसित्युपरिष्ठादिशाम्	१२.४.१२	१०७
स्वर्ग्यं वा एतत्साम	१२.११.१२	११४	हारायणं भवति	१४.९.३३	१४०
स्वर्ग्या वा एते	१६.३.७	१५८	हारियोजनस्य ते देव	१.६.९	५
स्वर्णिधनं भवति	११.१०.१६	१०३	हारिवर्णं भवति	८.९.१	७५
स्वर्णिधनसन्वहम्	५.७.७	३९	हारिवर्णं भवति	१२.६.७	११०
स्वधूर्वाभदेव्यङ्गेयम्	७.९.१२	६४	हाविष्मत् भवति	११.१०.९	१०३
स्वर्भानुर्वा आसुरः	१४.११.१५	१४२	हाविष्कृतं भवति	१५.५.१७	१४९
स्वर्भानुर्वा आसुरः	२३.१६.२	२३१	हिङ्गास्वद्भवति तेन	५.२.८	३५

हिङ्कारं प्रति संख्या—	८.७.१३	७४	हीति वा अन्नम्	१५.५.२३	१५०
हिन्वन्ति सूर मुस्य	१४.११.६	१४२	हीना वा एते हीयन्ते	१७.३.२	१७०
हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्र	९.९.१२	८७	हीना वा एते हीयन्ते	१७.१.२	१६९
हिरण्यश्सप्रदायश्चोडशिना	१२.१३.२५	११७	हीषिति वृष्टिकामाय	८.८.१९	७५
हिरण्यस्रज ऋत्विजो	१८.७.६	१८२	हुव इति वै	१२.२.४	१०५
हीति निधनमुपयन्ति	१४.५.२२	१३६	हुव इति वै रायन्तरम्	१२.२.९	१०६

॥ इति प्रथमं परिशिष्टम् ॥

द्वितीयं परिशिष्टम् देवताध्यायब्राह्मणश्रुत्यनुक्रमणिका

अक्षरानुस्वराणि	१.१०	२५६	दैवतं तत उत्तरम्	२.६	२५७
अग्निरिन्द्रः प्रजापतिः	१.१	२५६	नवृत्तिपूर्वस्य घृतेः	३.२०	२५८
अग्नेर्गायत्र्यभवत्स	२.७	२५७	पङ्क्तिः पञ्चिनी	३.१३	२५८
अतिच्छन्दश्छन्दैर्यै	३.१८	२५८	पिपीलिका पेलते	३.९	२५८
अतोयान्यन्यानि	२.३	२५७	पिपीलिकमध्ये	३.१०	२५८
अथ यान्युक्त आख्यायन्ते	१.२४	२५७	प्राजापत्या अतिच्छन्दसो	२.९	२५७
अथ सावित्र्यङ्गानि	४.१	२५९	बन्धुमान् बन्धुमत्यो	१.२६	२५७
अथातश्छन्दसां वर्णाः	२.१	२५७	बृहती बृहते	३.११	२५८
अथातो गायत्रमाग्नेयम्	३.२१	२५८	य आनयत् परावत	१.१५	२५६
अथातो निर्वचनम्	३.१	२५७	यथा भूयस्त्वेन	१.१९	२५६
अथान्तरतराणि	१.२०	२५६	यथा यज्ञायज्ञीयम्	१.९	२५६
अथान्तरतमानि	१.२१	२५६	यथा वामदेव्यम्	१.५	२५६
अधोपनिषत्	१.२२	२५६	यथा वारवन्तीय	१.११	२५६
अनुष्टुबनुस्तोभनात्	३.७	२५८	यथौशनकावे	१.७	२५६
अन्वस्तौदिति हि	३.८	२५८	ये यज्ञेषु प्रयोक्तव्या	२.४	२५७
इडानिधनानि	१.२	२५६	वाङ्निधनानि	१.८	२५६
उष्णिगुत्सनानात्	३.४	२५८	वसवो रुद्रा आदित्या	१.१७	२५६
ऋक्सामानि सौमानि	१.६	२५६	वसूनां स्वाराणि	१.१८	२५६
ऋग्वै माता साम	१.२३	२५७	वासवी पङ्क्तिः	२.१०	२५७
ऋषीणां विषयज्ञो यः	३.२३	२५८	विराजः पृश्नयो	२.५	२५७
ककुप् ककुद	३.५	२५८	विराणिमत्रावरुणयो	२.८	२५७
ककुप् च कुब्जश्च	३.६	२५८	विराड्विरमणा	३.१२	२५८
कया नश्चित्र आ भुवद्	१.१४	२५६	शुक्ला गायत्र्यो रूपेण	२.२	२५७
का तु त्रितास्यातीर्ण	३.१५	२५८	सतुलं मन्येतैत	२.११	२५७
गायत्री गायतेः	३.२	२५७	स वा एष उद्गीथो	१.२५	२५७
गायतो मुखदुद	३.३	२५८	सर्वाणि निधनवन्त्यै	१.३	२५६
जगती गततमम्	३.१७	२५८	सर्वाणि स्वाराणि	१.४	२५६
छन्दसामुहैत	२.१२	२५७	सावित्रीगेयं यत्र	३.२२	२५८
छन्दोसि छन्दयती	३.१९	२५८	सुतं रयिष्ठाः	१.१६	२५६
त्रिवृद्ब्रह्मस्तस्य	३.१६	२५८	स्वःपृष्ठान्याङ्गिरसानि	१.१२	२५६
त्रिष्टुप् स्तोमत्युत्तर	३.१४	२५८	स्वर्णिधनानि	१.१३	२५६

तृतीयं परिशिष्टम्

छान्दोग्यमन्त्रब्राह्मणश्रुत्यनुक्रमणिका

अक्तं रिहाणा	२.४.७	२७३	अर्यमणं नु देवं	१.२.३	२६१
अग्नये समिधमाहार्ष	१.६.३३	२६६	अर्हणा पुत्रवाससा	२.८.१	२७५
अग्नावग्निश्चरति	२.२.९	२७०	अश्मा भव परशुर्भव	१.५.१८	२६५
अग्निः प्राप्नातु	२.१.१५	२७०	असौ नामास्मि	१.६.१८	२६६
अग्निं क्रव्यादमकृण्वन्	१.१.४	२६०	अहर्नो अत्यपीपरत्	२.५.१३	२७४
अग्निरेतु प्रथमो	१.१.१०	२६१	अहुर इदन्ते	१.६.२२	२६६
अग्निवायुचन्द्रसूर्याः	१.४.५	२६४	आकाशस्यैषा	२.४.१०	२७३
अग्निष्टे हस्तमग्रहीत्	१.६.१५	२६६	आकूर्ती देवीं मनसा	२.६.९	२७५
अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं	१.४.१	२६३	आगन्वा समगन्महि	१.६.१४	२६६
अग्ने व्रतपते व्रतं	१.६.९	२६५	आतं देवेभ्यो हविः	२.२.७	२७०
अघोरचक्षुरपतिष्येधि	१.२.१७	२६२	आदित्यानावमारोक्षं	२.५.१४	२७४
अङ्गादङ्गात् संश्रवसि	१.५.१६	२६५	आधत् पितरो	२.३.१६	२७१
अङ्गादङ्गात् सम्भवसि	१.५.१७	२६५	आ नः प्रजां जनयतु	१.२.१८	२६२
अत्र पितरो	२.३.६	२७१	आप उन्दन्तु जीवसे	१.६.३	२६५
अदितेऽनुमन्यस्व	१.१.क	२६०	आयमगात् सविता	१.६.१	२६५
अनु त्वा माता	२.२.६	२७०	आरोकेषु च दन्तेषु	१.३.४	२६२
अनुमतेऽनुमन्यस्व	१.१.ख	२६०	इडायास्पदम्	२.२.११	२७०
अन्नं वा एकच्छन्द-	२.६.१३	२७५	इदमिं विश्वकर्माणम्	२.६.१०	२७५
अन्नप्राशेन मणिना	१.३.८	२६३	इदमहमिमां पद्याम्	२.८.२	२७६
अन्नं प्राणस्य	१.३.१०	२६३	इदं भूमेर्भजामहे	२.४.१	२७२
अन्नस्य घृतमेव	२.६.१५	२७५	इद्वत्सराय परिवत्सराय	२.१.१२	२६९
अन्नस्य राष्ट्रिरसि	२.८.९	२७६	इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम्	१.५.१२	२६५
अन्विमं नो	२.२.१६	२७१	इन्द्रामवदात्तमो वः	२.६.१२	२७५
अपहता असुरा	२.३.३	२७१	इमं स्तोममर्हते	२.४.२	२७२
अपेहि त्वं परिबाध	२.५.७	२७४	इमं त उपस्थं	१.१.३	२६०
अप्रजस्यं पौत्रमर्त्यं	१.१.१४	२६१	इममश्मानमारोहाश्मेव	१.२.१	२६१
अभिषागोऽसि	२.४.८	२७३	इमां त्वमिन्द्र मीद्वः	१.२.१९	२६२
अभून्नो दूतो	२.३.१७	२७१	इमामग्निस्त्रायताम्	१.१.११	२६१
अमीमदन्त पितरो	२.३.७	२७१	इमा मधुमतीर्महामन-	१.८.२	२६८
अमोऽसि प्राण	२.१.१४	२६९	इमा मे विश्वतोवीर्यः	१.८.१	२६८
अयमूर्जावतो वृक्ष	१.५.१	२६४	इयं तन्ती गवां माता	१.८.७	२६८

इयं दुरुक्तात् परिबाध—	१.६.२८	२६६	क्रिमिं ह वक्त्रतोदिनम्	२.७.३	२७६
इयं नार्युपबृतेऽनी	१.२.२	२६९	क्रिमिमिन्द्रस्य बाहु	२.७.५	२७६
इयमाज्ञे दमन्त्रम्	१.५.८	२६४	क्षुत्तिपासाभ्याम्	२.६.१७	२७५
इह गावः प्रजायध्वम्	१.३.१३	२६३	क्षुधे स्वाहा	२.६.१६	२७५
इह धृतिरिह स्वधृति—	१.३.१४	२६३	गन्धर्वोऽस्युपाव उप	१.७.१३	२६७
उदुत्तमं वरुण पाश—	१.७.१०	२६३	गर्ष धेहि सिनीवालि	१.४.७	२६४
उद्यन्तं त्वादित्यान्—	२.५.१६	२७४	गवां श्लेष्मासि	१.८.३	२६८
उद्यन् प्राजभृष्टिभि—	१.७.६	२६७	गृष्णामि ते सौभग—	१.२.१६	२६२
उद्यन् प्राजभृष्टिभि—	१.७.७	२६७	गृहान्नः पितरो दत्त	२.३.१२	२७१
उद्यन् प्राजभृष्टिभि—	१.७.८	२६७	ग्रीवाभ्यो मे	२.५.२	२७३
उष्णेन वाय उदके	१.६.२	२६५	ग्रीवो हेमन्त	२.१.११	२६९
ऊर्जं वहन्तीरमृतम्	२.३.१५	२७१	चक्षुरसि चक्षुष्व—	१.७.९	२६७
ऊर्वोरुपस्थे जङ्घयोः	१.३.५	२६३	चत्वारि मायोभवाय	१.२.९	२७१
ऋतं सत्ये प्रतिष्ठितम्	२.४.१०	२७३	चन्द्र प्रायश्चित्त्वम्	१.४.३	२६३
ऋतस्य गोषी तपसः	१.६.२९	२६६	चन्द्र व्रतपते व्रतम्	१.६.१२	२६६
एकमिषे विष्णुस्त्वा	१.२.६	२६१	जङ्घाभ्यां मे	२.५.५	२७४
एकाष्टका तपसा	२.३.२१	२७२	जातवेदो वपया	२.३.१९	२७१
एतद्गः पितरो	२.३.१४	२७१	तत्सवितुर्वीर्यं भर्गो	१.६.३०	२६६
एत पितरः सोम्यासो	२.३.५	२७१	तपश्च तेजश्च श्रद्धाच	२.४.५	२७२
एतमु त्वं मधुना	२.१.१६	२७०	तुर गोपाय मा नाथ	२.६.२०	२७५
एषैव सा या पूर्वा	२.२.१२	२७०	त्रीणि व्रताय विष्णु—	१.२.८	२६१
एषैव सा या प्रथमा	२.२.१३	२७०	त्र्यायुषं तत्ते अस्तु	१.६.८	२६५
ओं नम आदित्याय	२.५.१५	२७४	दक्षिणं पादमव	२.८.७	२७६
ओषधे त्रायस्वैनम्	१.६.५	२६५	देव सवितः प्रसुव	१.१.१	२६०
ओष्ठापिधाना नकुली	१.७.१५	२६७	देवस्त्वा सवितोत्पुना	२.४.१७	२७२
औलूखलाः सं प्रव—	२.२.१०	२७०	देवस्य ते सवितुः	१.६.१९	२६६
कन्यला पितृभ्यः	१.२.५	२६१	देवाय त्वा सवित्रे	१.६.२५	२६६
काम वेद ते नाममदो	१.१.२	२६०	द्यौस्ते पृष्ठं रश्मि	१.१.१२	२६१
किं पश्यसि प्रजाम्	१.५.५	२६४	द्वे उर्जे विष्णुस्त्वा	१.२.७	२६१
कुशन् इदन्ते परि—	१.६.२३	२६६	ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी	१.३.७	२६३
केशेषु यच्च पाप—	१.३.२	३६२	नमः पृथिव्यै दंष्ट्राय	२.१.५	२६९
को नामासि	१.६.१७	२६६	नमो वः पितरः	२.३.११	२७१
कोश इव पूर्णो वसुना	२.४.१२	२७३	नमो वः पितरः	२.३.१०	२७१
कोऽसि कतमोऽस्य	१.५.१४	२६५	नमो वः पितरो घोराय	२.३.९	२७१
कौतौमतं संवननम्	२.४.८	२७३	नमो वः पितरो	२.३.८	२७१

नेत्र्यौ स्थो नयतं माम्	१.७.१२	२६७	माता रुद्राणां दुहिता	२.८.१४	२७६
पञ्च पशुभ्यो	१.२.१०	२६२	मा ते गृहेषु निशि	१.१.१३	२६१
परिषत्त वत्त वाससैनां	१.१.६	२६०	मा नस्तोके	२.१.८	२६९
परिबार्धं यजामहे	२.५.६	२७४	मा भैषीर्न मरिष्यसि	२.६.१८	२७५
परैतु मृत्युस्मृतं म	१.१.१५	२६१	मा विदन् परिपन्थिनो	१.३.१२	२६३
पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ	२.४	२७२	मुञ्च गां वरुण पाशात्	२.८.१३	२७६
पशूनां त्वा हिङ्गारेण	१.५.१९	२६५	मूर्ध्नोऽधि मे	२.५.१	२७३
पुनर्मनः पुनरत्मा म	१.६.३५	२६७	मेघां ते मित्रावरुणौ	१.५.९	२६४
पुनर्मामैत्विन्द्रियं	१.६.३४	२६७	य उदीच्याम्	२.१.४	२६९
पुनर्मा यन्तु	२.५.१०	२७४	यः पशूनामधिपती	२.४.७	२७३
पुमांसौ मित्रावरुणौ	१.४.८	२६४	यः प्रतीच्याम्	२.१.३	२६९
पुमानग्निः पुमानिन्द्रः	१.४.९	२६४	यः प्राच्यां दिशि	२.१.१	२६९
पूर्णहोमं यशसे जुहोमि	२.६.११	२७५	यक्षमिव चक्षुषः प्रियो	१.७.१४	२६७
पूर्वमन्यमपरमन्यमुभौ	२.८.८	२७६	यतो देवीः प्रति	२.८.५	२७६
पूषणं नु देवं कन्या	१.२.४	२६१	यत् कुसीदमप्रदत्तम्	२.३.२०	२७२
प्रजापतये त्वा	१.६.२४	२६६	यत्ते सुसीमे हृदयम्	१.५.१०	२६४
प्रजापते न त्वदेता	२.५.८	२७४	यत् पशवः	२.२.५	२७०
प्रति क्षत्रे प्रति	२.२.२	२७०	यत् पशुर्मायुमकृत	२.२.८	२७०
प्रति द्यावापृथिव्यो	२.२.३	२७०	यत् पृथिव्या अनामृतं	१.५.११	२६५
प्रथमा हव्युवास	२.२.१	२७०	यथा यन्ति प्रपदो	२.६.४	२७५
प्र मे पतिर्यानः	१.१.८	२६०	यथा समुद्रं स्रवन्तीः	२.६.५	२७५
प्राणानां ग्रन्थिरसि मा	१.६.२१	२६६	यददश्चन्द्रमसि कृष्णं	१.५.१३	२६५
प्रास्याः पतिर्यानः	१.१.९	२६०	यदपां घोरं यदपां क्रूरं	१.७.२	२६७
बाहुभ्यां मे	२.५.३	२६६	यदिदं पश्यामि	२.५.१२	२७४
ब्रह्मचार्यमागामुप	१.६.१६	२६६	यदेतद्दुदयं तव तदस्तु	१.३.९	२६३
ब्रह्मचार्यस्यसौ	१.६.२६	२६६	यशसे तेजसे ब्रह्म	१.७.४	२६७
भद्रान्नः श्रेयः	२.१.१३	२६९	यशसो भक्षोऽसि	२.८.१२	२७६
भरद्वाजस्य मन्त्रेण	२.७.२	२७५	यशशो यशोऽसि	२.८.११	२७६
भरामेधं कृणवामा	२.४.३	२७२	यशोऽसि यशो	२.८.१०	२७६
भलाय स्वाहा	२.५.१७	२७४	यशोऽहं भवामि	२.५.९	२७४
भल्लाय स्वाहा	२.५.१८	२७४	या अकृन्तन्नवयन्	१.१.५	२६०
भुवनमसि साहस्र	१.८.५	२६८	या ओषधीः सोमराज्ञीः	२.८.३	२७६
भूपूर्वः स्वरो सूर्य	२.४.१४	२७३	या ओषधीः सोम	२.८.४	२७६
भूर्धुवः स्वरोम्	१.६.३१	२६६	यां सन्ध्याम्	२.१.७	२६९
मम व्रते ते हृदयं	१.२.२१	२६२	या तिरस्त्री निपद्यते	१.५.६	२६४

यानि कानि च घोरानि १.३.६	२६३	शतायुधाय २.१.९	२६९
यां देवाः प्रति २.२.१४	२७०	शालेषु यच्च पापकम् १.३.३	२६२
यास्ते राके सुमतयः १.५.४	२६४	श्रीरसि मयि रमस्व १.७.११	२६७
ये अप्सन्तरग्नयः १.७.१	२६७	श्रीर्वा एषा यत् २.६.१४	२७५
ये चत्वारः २.१.१०	२६९	षड्गयस्मोषाय १.२.११	२६२
येन पूषा बृहस्पते १.६.७	२६५	संवत्सरस्य २.२.१५	२७१
येन स्त्रियमकृणुतम् १.७.५	२६७	सखा सप्तपदी भव १.२.१३	२६२
येनादितेः सीमानम् १.५.२	२६४	संग्रहण संगृहाण ये १.८.४	२६८
ये यन्ति प्राञ्चः २.६.३	२७५	स त्वाह्ने परिददा १.५.१५	२६५
ये रूपाणि २.३.४	२७१	सद्यो वः पितरो २.३.१३	२७१
यो दक्षिणस्यां २.१.२	२६९	सप्त सप्तम्यो १.२.१२	२६२
यो रोचनस्तमिह १.७.३	२६७	समञ्जन्तु विज्ञे देवाः १.२.१५	२६२
राकामहं सुहवाम् १.५.३	२६४	समिधमाधेह्यपोऽज्ञान १.६.२७	२६६
रूपं रूपं मे दिश २.५.११	२६४	सम्राज्ञी शशुरे भव १.२.२०	२६२
लेखासंधिषु पक्ष्म १.३.१	२६२	सरस्वत्यनुमन्यस्व १.१.१	२६०
लोहितेन स्वधितिना १.८.६	२६८	सर्व्यं पादमव २.८.६	२७६
वङ्गणाभ्यां मे २.५.४	२७४	सहस्रबाहुर्गौपत्यः २.४.७	२७३
वनस्पते वीड्वङ्गो हि १.७.१६	२६७	सुकिंशुकं शल्मलिं १.३.११	२६३
वशङ्गमी देवयानी २.६.७	२७५	सुमङ्गलीरियं वधूरिमां १.२.१४	२६२
वसुवन एधि २.६.६	२७५	सुश्रवः सुश्रवसं मा १.६.३२	२६६
वह वपां जातवेदः २.३.१८	२७१	सूर्यं प्रायश्चित्ते त्वं १.४.४	२६३
वायो प्रायश्चित्ते त्वं १.४.२	२६३	सूर्यं व्रतपते व्रतं १.६.११	२६६
वायो व्रतपते व्रतं १.६.१०	२६५	सूर्यस्यावृतमन्वा १.६.२०	२६६
वास्तोस्पते प्रतिजानीह्य २.६.१	२७४	सोमोऽददद्गन्धर्वाय १.१.७	२६०
विपश्चित् पुच्छमभ १.५.७	२६४	सोमो राजा २.१.६	२६९
विरूपाक्षोऽसि दन्ता २.४.६	२७२	स्योना पृथिवि नो २.२.४	२७०
विष्णुर्योनिं कल्पयतु १.४.६	२६४	स्वधिते मेनं हिंसीः १.६.६	२६०
विष्णोर्दष्टोऽसि १.६.४	२६५	स्वाहाग्नये कव्य २.३.२	२७१
विष्णोर्मनसा २.४.५	२७२	स्वाहा सोमाय २.३.१	२७१
वृक्ष इव पक्वस्ति २.४.९	२७३	हतः क्रिमीणां २.७.४	२७६
व्रतानां व्रतपते व्रतम् १.६.१३	२६६	हतस्ते अत्रिणा २.७.१	२७५
शकेम त्वा समिधम् २.४.४	२७२	हताः क्रिमयः २.७.६	२७६
शङ्खश्च मन आयुश्च २.६.८	२७५	हये राके सिनीवाली २.६.२	२७४

चतुर्थं परिशिष्टम् छान्दोग्योपनिषच्छ्रुत्यनुक्रमणिका

अग्निर्हिङ्गारो वायुः	४.२०.१	२९२	अथ यत्तदजायत	५.१९.३	३०४
अग्निष्टे पादं वक्तैति	६.६.१	३०८	अथ यत्तपो दानम्	५.१७.४	३०३
अजा हिङ्गारोऽवयः	४.१८.१	२९२	अथ यत्तृतीयममृतम्	५.८.१	२९८
अतो यान्यन्यानि	३.३.५	२७९	अथ यत्पञ्चमममृतम्	५.१०.१	२९८
अत्र यजमानः	४.२४.६	२९४	अथ यत्प्रथमास्तमिते	४.९.८	२८९
अत्र यजमानः	४.२४.१०	२९४	अथ यत्प्रथमोदिते	४.९.३	२८९
अत्त्यन्नं पश्यसि प्रियम्	७.१२.२	३२०	अथ यन्नैतत्पुरुषः	८.८.५	३२८
अत्त्यन्नं पश्यसि प्रियम्	७.१४.२	३२०	अथ यन्नैतदबलिमानम्	१०.६.४	३४५
अत्त्यन्नं पश्यसि प्रियम्	७.१५.२	३२१	अथ यन्नैतदस्माच्छरीराद्	१०.६.५	३४५
अत्त्यन्नं पश्यसि प्रियम्	७.१६.२	३२१	अथ यन्नैतदाकाशम्	१०.१२.४	३४९
अत्त्यन्नं पश्यसि प्रियम्	७.१७.२	३२१	अथ यन्नोपाकृते	६.१६.४	३१२
अथ खलु य उद्गीथः	३.५.१	२८०	अथ यत्सङ्गवेलायाम्	४.९.४	२८९
अथ खलु य उद्गीथः	३.५.५	२८१	अथ यत्सम्प्रतिमध्यन्दिने	४.९.५	२८९
अथ खलु व्यानमेवोद्गीथ	३.३.३	२७९	अथ यत्सत्रायणं	८.५.२	३२६
अथ खलुद्गीथाक्षराणि	३.३.६	२७९	अथ यदतः परो दिवः	५.१३.७	३००
अथ खल्वमुमादित्यम्	४.९.१	२८९	अथ यदनाशकाय-	१०.५.३	३४५
अथ खल्व्वात्मसंमितमति	४.१०.१	२८९	अथ यदवोचं भुवः	५.१५.६	३०२
अथ खल्व्वाशीः	३.३.८	२७९	अथ यदवोचं भूः	५.१५.५	३०१
अथ खल्वेतयर्चा पच्छः	७.२.७	३१६	अथ यदवोचंःस्वः	५.१५.७	३०२
अथ जुहोति नमः	४.२४.१४	२९५	अथ यदशनाति	५.१७.२	३०३
अथ जुहोति नमो वायवे	४.२४.९	२९४	अथ यदास्य वाङ्मनसि	८.१५.२	३३१
अथ जुहोति नमोऽग्नये	४.२४.५	२९४	अथ यदि गन्धमाल्यलोक	१०.२.६	३४३
अथ तत ऊर्ध्वः	५.११.१	२९९	अथ यदि गीतवादित्रलोक	१०.२.८	३४३
अथ प्रतिसृप्याञ्जलौ	७.२.६	३१५	अथ यदि तस्याकर्ता	८.१६.२	३३१
अथ य आत्मा स सेतुः	१०.४.१	३४४	अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे	१०.१.१	३४२
अथ य इमे ग्रामे	७.१०.३	३१८	अथ यदि भ्रातृलोककामः	१०.२.३	३४३
अथ य एतदेवम्	७.२४.२	३२३	अथ यदि महज्जिगमिवेद्	७.२.४	३१५
अथ य एतदेवं विद्वान्	३.७.७	२८२	अथ यदि मातृलोककामः	१०.२.२	३४२
अथ य एष संप्रसादः	१०.३.४	३४४	अथ यदि यजुष्टो रिष्येत्	६.१७.५	३१२
अथ य एषोऽन्तरक्षिणि	३.७.५	२८२	अथ यदि सखिलोककामः	१०.२.५	३४३
अथ यच्चतुर्थममृतम्	५.९.१	२९८	अथ यदि सामतो रिष्येत्	६.१७.६	३१३

अथ यदि स्त्रीलोककामः	१०.२.९	३४३	अथ ह मन उद्रीथम्	३.२.६	२७८
अथ यदि स्वसुलोककामः	१०.२.४	३४३	अथ ह य एतानेवम्	७.१०.१०	३१९
अथ यदु चैवास्मिन्ञ्जव्यम	६.१५.५	३११	अथ ह य एवायं मुख्यः	३.२.७	२७८
अथ यदूर्ध्वं मध्यन्दिनात्	४.९.६	२८९	अथ ह वाचमुद्रीथम्	३.२.३	२७८
अथ यदूर्ध्वमपराह्णात्	४.९.७	२८९	अथ ह शौनकं च	६.३.५	३०६
अथ यदेतदक्ष्णः	३.७.४	२८२	अथ ह श्रोत्रमुद्रीथम्	३.२.५	२७८
अथ यदेतदादित्यस्य	३.६.५	२८१	अथ हाग्नयः समूदिरे	६.१०.४	३१०
अथ यदेवैतदादित्यस्य	३.६.६	२८१	अथ हेन्नेऽप्राप्यैव	१०.९.१	३४३
अथ यद्वितीयममृतम्	५.७.१	२९७	अथ हैनं गार्हपत्यः	६.११.१	३१०
अथ यद्वसति	५.१७.३	३०३	अथ हैनं प्रतिहर्तोपससाद	३.११.८	२८५
अथ यद्यज्ञ इत्याचक्षते	१०.५.१	३४४	अथ हैनं प्रस्तोतोपससाद	३.११.४	२८५
अथ यद्यन्नपानलोककामः	१०.२.७	३४३	अथ हैनं यजमान उवाच	३.११.१	२८४
अथ यद्यप्येनानुत्क्रान्त	९.१५.३	३३८	अथ हैनं वागुवाच	७.१.१३	३१५
अथ यद्येनमूष्मसूपालभेत	४.२२.४	२९३	अथ हैनं श्रोत्रमुवाच	७.१.१४	३१५
अथ या एता हृदयस्य	१०.६.१	३४५	अथ हैन मन्वा हार्यपचनः	६.१२.१	३१०
अथ यां चतुर्थीम्	७.२२.१	३२३	अथ हैन माहवनीयः	६.१३.१	३१०
अथ यां तृतीयाम्	७.२१.१	३२२	अथ हैनमुद्रातोपससाद	३.११.६	२८५
अथ यां द्वितीयाम्	७.२०.१	३२२	अथ हैनमृषभोऽभ्युवाद	६.५.१	३०७
अथ यां पञ्चमीम्	७.२३.१	३२३	अथ होवाच जनश्लार्क-	७.१५.१	३२१
अथ यानि चतुश्चत्वारि-	५.१६.३	३०२	अथ होवाच बुडिल-	७.१६.१	३२१
अथ यान्यष्टाचत्वारिंशत्	५.१६.५	३०२	अथ होवाच सत्ययज्ञम्	७.१३.१	३२०
अथ ये चास्येह	१०.३.२	३४३	अथ होवाचेन्द्रद्युम्नम्	७.१४.१	३२०
अथ येऽस्य दक्षिणा	५.२.१	२९६	अथ होवाचोद्दालकम्	७.१७.१	३२१
अथ येऽस्य प्रत्यञ्चः	५.३.१	२९६	अथात आत्मादेश एव	९.२५.२	३४०
अथ येऽस्योदञ्चः	५.४.१	२९७	अथातः शौव उद्रीथः	३.१२.१	२८५
अथ येऽस्योर्ध्वा रश्मयः	५.५.१	२९७	अथाधिदैवतं य एवासौ	३.३.१	२७९
अथ यो वेदेदम्	१०.१२.५	३४९	अथाध्यात्मं प्राणो वाव	६.३.३	३०६
अथ योऽस्य दक्षिणः	५.१३.२	३००	अथाध्यात्मं य एवायम्	३.५.३	२८०
अथ योऽस्य प्रत्यङ्	५.१३.३	३००	अथाध्यात्मं वागेवर्क् प्राणः	३.७.१	२८१
अथ योऽस्योदङ्	५.१३.४	३००	अथानु किनुमशिष्ट-	७.३.४	३१६
अथ योऽस्योर्ध्वः	५.१३.५	३००	अथानेनैव ये चैतस्मात्	३.७.८	२८२
अथ सप्तविधस्य वाचि	४.८.१	२८८	अथावृतेषु घौर्हिङ्कार	४.२.२	२८७
अथ ह ह्रसा निशायाम्	६.१.२	३०५	अथैतयोः पथोर्न कतरेण	७.१०.८	३१८
अथ ह चक्षुरुद्रीथम्	३.२.४	२७८	अथोताप्याहुः साम	४.१.३	२८७
अथ ह प्राण उच्चिक्क-	७.१.१२	३०५	अधीहि भगव इति	९.१.१	३३२
अथ ह प्राणा अह-	७.१.६	३१४	अनिरुक्तस्त्रयोदशः	३.१३.३	२८६

अन्तरिक्षमेवर्वायुः	३.६.२	२८१	आपः पीताब्जेधा	८.५.२	३२६
अन्तरिक्षोदरः कोशः	५.१५.१	३०१	आपयिता ह वै	३.१.७	२७७
अन्नं वाव बलाद्भूयः	९.९.१	३३६	आपो वावान्नाद्भू-	९.१०.१	३३६
अन्नमयश्हि सोम्य	८.५.४	३२६	आप्नोति हादित्यस्य	४.१०.६	२९०
अन्नमयश्हि सोम्य	८.६.५	३२६	आशा वाव स्मरद्भू-	९.१४.१	३३८
अन्नमशितं त्रेधा	८.५.१	३२६	इति तु पञ्चम्यामाहुतः	७.९.१	३१८
अन्नमिति होवाच	३.११.९	२८५	इदं वाव तज्ज्येष्ठाय	५.११.५	२९९
अन्यतरामेव वर्तनीम्	६.१६.३	३१२	इदमिति ह प्रतिजज्ञे	६.१४.३	३११
अपां का गतिरित्यसौ	३.८.५	२८३	इमाः सोम्य नद्यः	८.१०.१	३२९
अपाश्सोम्य पीयमानानाम्	८.६.३	३२६	इयमेवर्वाग्निः साम	३.६.१	२८१
अपाने तृप्यति वाक्तृप्यति	७.२१.२	३२२	उदशराव आत्मानमवेक्ष्य	१०.८.१	३४६
अभिमन्यति स हिङ्गारः	४.१२.१	२९०	उदाने तृप्यति	७.२३.२	३२३
अन्नं भूत्वा मेघो भवति	७.१०.६	३१८	उद्गीथ इति त्र्यक्षरम्	४.१०.३	२९०
अग्राणि संप्लवन्ते	४.१५.१	२९१	उद्गृह्णाति तन्निधनम्	४.३.२	२८७
अमृतत्वं देवेभ्यः	४.२२.२	२९३	उद्दालको हारुणिः	८.८.१	३२७
अयं वाव लोकः	३.१३.१	२८६	उद्यन्धिङ्गार उदितः	४.१४.१	२९१
अयं वाव स योऽयमन्तः	५.१२.८	३००	उपकोसलो ह वै	६.१०.१	३०९
अयं वाव स योऽयमन्तः	५.१२.९	३००	उपमन्ययते स	४.१३.१	२९०
अरिष्टं कोशम्	५.१५.३	३०१	ऋग्वेदं भगवः	९.१.२	३३२
अशनानपिपासे मे सोम्य	८.८.३	३२७	ऋतुषु पञ्चविधम्	४.५.१	२८८
अशरीरो वायुरग्रम्	१०.१२.२	३४९	एकविंशत्यादित्यम्	४.१०.५	२९०
असौ वा आदित्यः	५.१.१	२९६	एतश्संयद्द्वाम इत्याचक्षते	६.१५.२	३११
असौ वाव लोकः	७.४.१	३१७	एतद्ध स्म वै	८.४.५	३२५
अस्य यदेकौ शाखाम्	८.११.२	३२९	एतद्ध स्म वै	५.१६.७	३०२
अस्य लोकस्य का गतिः	३.९.१	२८३	एतमु एवाहमभ्यगासिषम्	३.५.२	२८०
अस्य सोम्य महतः	८.११.१	३२९	एतमु एवाहमभ्यगासिषम्	३.५.४	२८०
आकाशो वाव तेजसः	९.१२.१	३३७	एतमृग्वेदमभ्यतपम्	५.१.३	२९६
आकाशो वै नाम	१०.१४.१	३५०	एतेषां मे देहीति	३.१०.३	२८४
आगाता ह वै कामानाम्	३.२.१४	२७९	एवं यथा उश्मानमाखण-	३.२.८	२७८
आत्मानमन्तत उपसृत्य	३.३.१२	२८०	एवश्सोम्य ते षोडशानाम्	८.७.६	३२७
आदित्त्रन्तस्य रेतसः	५.१७.७	३०३	एवमेव खलु सोम्य	८.६.२	३२६
आदित्य इति होवाच	३.११.७	२८५	एवमेव खलु सोम्य	८.११.३	३२९
आदित्य ऊकारः	३.१३.२	२८६	एवमेव खलु सोम्येमाः	८.१०.२	३२९
आदित्यमथ वैश्वदेवम्	४.२४.१३	२९५	एवमेव प्रतिहर्तारमुवाच	३.१०.११	२८४
आदित्यो ब्रह्मेत्यादेशः	५.१९.१	३०४	एवमेवैष मघवन्निति	१०.९.३	३४७
आदिरिति द्व्यक्षरम्	४.१०.२	२८९	एवमेवैष मघवन्निति	१०.११.३	३४९

एवमेवैष संप्रसादः	१०.१२.३	३४९	तश्हस उपनिपत्याभ्युवाद	६.७.२	३०८
एवमेवोद्गातरमुवाच	३.१०.१०	२८४	तश्ह चिरं वसेत्याज्ञा-	७.३.७	३१६
एवमेषां लोकानामासाम्	६.१७.८	३१३	तश्ह प्रवाहण	३.८.८	२८३
एष उ एव भामनी	६.१५.४	३११	तश्ह शिलकः	३.८.६	२८३
एष उ एव वामनी	६.१५.३	३११	तश्हाङ्गिरा उद्गीथम्	३.२.१०	२७८
एष म आत्मान्तर्हृदये	५.१४.३	३०१	तश्हाभ्युवाद रैक्वेदम्	६.२.४	३०६
एष वै यजमानस्य	४.२४.१५	२९५	तश्हैतमतिधन्वा	३.९.३	२८३
एष ह वा उदकप्रवणः	६.१७.९	३१३	तश्होवाच किं गोत्र	६.४.४	३०७
एष ह वै यज्ञो योऽयम्	६.१६.१	३१२	तश्होवाच नैतद्ब्राह्मण	६.४.५	३०७
एषां भूतानां पृथिवी रसः	३.१.२	२७७	तश्होवाच यं वै	८.१२.२	३२९
ओ३मदा३मो३पिबा	३.१२.५	२८६	तश्होवाच यथा सोम्य	८.७.५	३२७
ओमित्येतदक्षरमुद्गीथ	३.४.१	२८०	तश्होवाच यथा सोम्य	८.७.३	३२७
ओमित्येतदक्षरमुद्गीथ	३.१.१	२७७	त इमे सत्याः कामा	१०.३.१	३४३
औपमन्यव कं त्वम्	७.१२.१	३२०	त इह व्याघ्रो वा	८.९.३	३२८
कं ते काममागायानीत्येष	३.७.९	२८२	त एतदेव रूपमभि-	५.६.२	२९७
कतमा कतमर्कतमत्	३.१.४	२७७	त एतदेव रूपमभि	५.७.२	२९७
कल्पन्ते हास्मा ऋतवः	४.५.२	२८८	त एतदेव रूपमभि	५.८.२	२९८
कल्पन्ते हास्मै लोका	४.२.३	२८७	त एतदेव रूपमभि	५.९.२	२९८
का साम्नो गतिरिति	३.८.४	२८२	त एतदेव रूपमभि	५.१०.२	२९८
कुतस्तु खलु	८.२.२	३२४	तत्रोद्गातुनास्तावे	३.१०.८	२८४
क्व तर्हि यजमानस्य	४.२४.२	२९४	तथामुष्मिल्लोके	३.९.४	२८२
गायत्री वा इदं सर्वम्	५.१२.१	२९९	तथेति ह समुपविविशुः	३.८.२	२८२
गो अश्वमिह महि	९.२४.२	३४०	तदुताप्याहुः साम्नै	४.१.२	२८७
चक्षुरेव ब्रह्मणश्चतुर्थः	५.१८.५	३०३	तदु ह जानश्रुतिः	६.१.५	३०५
चक्षुरेवर्गात्मा साम	३.७.२	२८२	तदु ह जानश्रुतिः	६.२.१	३०५
चक्षुर्होच्चक्राम	७.१.९	३१४	तदु ह शौनकः कापेयः	६.३.७	३०६
चित्तं वाव सङ्कल्पाद्भूयः	९.५.१	३३४	तदेतच्चतुष्पाद्ब्रह्म	५.१८.२	३०३
जानश्रुतिर्ह पौत्रायणः	६.१.१	३०४	तदेतन्मिथुनमोमिति	३.१.६	२७७
तं चेदेतस्मिन्वयसि	५.१६.२	३०२	तदेव श्लोको न पश्यः	९.२६.२	३४१
तं चेदेतस्मिन्वयसि	५.१६.४	३०२	तदेव श्लोको यदा	७.२.८	३१६
तं चेदेतस्मिन्वयसि	५.१६.६	३०२	तदेव श्लोको यानि	४.२१.३	२९३
तं चेद्ब्रूयुरस्मिंश्चेदिदम्	१०.१.४	३४२	तदैक्षत बहु स्याम्	८.२.३	३२४
तं चेद्ब्रूयुर्यदिदमस्मिन्	१०.१.२	३४२	तद्धैतत्सत्यकामः	७.२.३	३१५
तं जायोवाच तप्तः	६.१०.२	३०९	तद्धैतद्दधोर आङ्गिरसः	५.१७.६	३०३
तं जायोवाच हन्त	३.१०.७	२८४	तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतये	५.११.४	२९९
तं मधुरुपनिपत्याभ्युवाद	६.८.२	३०९	तद्धैतद्ब्रह्मा प्रजापतये	१०.१४.२	३५०

तद्धोभये देवासुरा	१०.७.२	३४६	तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ	७.८.२	३१७
तद्य इत्थं विदुः	७.१०.१	३१८	तस्मिन्वावत्संपातम्	७.१०.५	३१८
तद्य इह रमणीयचरणाः	७.१०.७	३१८	तस्मै श्वा श्वेतः	३.१२.२	२८५
तद्य एवैतं ब्रह्मलोकम्	१०.४.३	३४४	तस्य क मूलःस्याद्	८.८.४	३२७
तद्य एवैतावरं च	१०.५.४	३४५	तस्य क मूलःस्याद्	८.८.६	३२७
तद्यत्प्रथमममृतम्	५.६.१	२९७	तस्य प्राची दिग्जुहूर्नाम	५.१५.२	३०१
तद्यत्रैतत्सुप्तः	१०.६.३	३४५	तस्य यथा कप्यासम्	३.६.७	२८१
तद्यत्रैतत्सुप्तः	१०.११.१	३४८	तस्य यथाभिनहनम्	८.१४.२	३३०
तद्यथा महापथः	१०.६.२	३४५	तस्य ये प्राश्नो रश्मय	५.१.२	२९६
तद्यथा लवणेन	६.१७.७	३१३	तस्यर्क् च साम च गेष्णौ	३.६.८	२८१
तद्यथेषीकातुलमग्नौ	७.२४.३	३२३	तस्य ह वा एतस्य	५.१३.१	३००
तद्यथेह कर्मजितो लोकः	१०.१.६	३४२	तस्य ह वा एतस्यात्मन	७.१८.२	३२२
तद्यद्यत्तो रिष्येद्भूः	६.१७.४	३१२	तस्य ह वा एतस्यैवम्	९.२६.१	३४०
तद्यद्भक्तं प्रथममागच्छेत्	७.१९.१	३२२	तस्या ह मुखदुपोदगृह्णन्	६.२.५	३०६
तद्यद्रजतःसेयं पृथिवी	५.१९.२	३०४	तस्यैषादृष्टिर्यत्रैतत्	५.१३.८	३००
तद्वा एतदनुज्ञाक्षरम्	३.१.८	२७७	त्रयी विद्या हिङ्कारस्त्रयः	४.२१.१	२९२
तद्व्यक्षरत्तदादित्यम्	५.१.४	२९६	त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञः	४.२३.१	२९३
तद्व्यक्षरत्तदादित्यम्	५.२.३	२९६	त्रयो होद्ग्रीथे	३.८.१	२८२
तद्व्यक्षरत्तदादित्यम्	५.३.३	२९६	ता आप ऐक्षन्त	८.२.४	३२५
तद्व्यक्षरत्तदादित्यम्	५.४.३	२९७	तानि वा एतानि यजू-	५.२.२	२९६
तद्व्यक्षरत्तदादित्यम्	५.५.३	२९७	तानि वा एतानि	५.३.२	२९६
तमग्निरभ्युवाद सत्यकाम	६.६.२	३०८	तानि ह वा एतानि	९.४.२	३३३
तमु ह परः प्रत्युवाच	६.१.३	३०५	तानि ह वा एतानि	९.५.२	३३४
तमु ह परः प्रत्युवाचाह	६.२.३	३०६	तानि ह वा एतानि	१०.३.५	३४४
तयोरन्यतरां मनसा	६.१६.२	३१२	तानु तत्र मृत्युर्यथा	३.४.३	२८०
तस्मा आदित्याश्च	४.२४.१६	२९५	तान्यभ्यतपतेभ्यः	४.२३.३	२९४
तस्मा उ ह ददुस्ते	६.३.८	३०६	तान्होवाच प्रातर्वः	७.११.७	३१९
तस्मादप्यग्रेहाददान-	१०.८.५	३४३	तान्होवाचाक्षपतिर्वै	७.११.४	३१९
तस्मादाहुः सोष्यति	५.१७.५	३०३	तान्होवाचे हैव	३.१२.३	२८५
तस्मादु हैवं विद्यद्यपि	७.२४.४	३२३	तान्होवाचैते वै खलु	७.१८.१	३२१
तस्माद्वा एतःसेतुम्	१०.४.२	३४४	तावानस्य महिमा	५.१२.६	२९९
तस्मिन्निमानि सर्वाणि	४.९.२	२८९	तासां त्रिवृतं त्रिवृतमे-	८.३.३	३२५
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ	७.४.२	३१७	तासां त्रिवृतं त्रिवृतमे-	८.३.४	३२५
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ	७.५.२	३१७	तेजसः सोम्याशयमानस्य	८.६.४	३२६
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ	७.६.२	३१७	तेजो वावान्द्रयो भूयः	९.११.१	३३६
तस्मिन्नेतस्मिन्नग्नौ	७.७.२	३१७	तेजोऽशितं त्रेधा	८.५.३	३२६

तेभ्यो ह प्राप्तेभ्यः	७.११.५	३१९	न वै नूनं भगवन्तस्ते	८.१.७	३२४
तेन तश्च बकः	३.२.१३	२७९	न वै वाचो न चक्षुषि	७.१.१५	३१५
तेन तश्च बृहस्पतिः	३.२.११	२७८	न स्विदेतेऽप्युच्छिष्टा	३.१०.४	२८४
तेन तश्चायास्यमुद्गीथम्	३.२.१२	२७९	न ह वा अस्मा उदेति	५.११.३	२९९
तेनेयं त्रयी विद्या	३.१.९	२७७	न हाप्सु प्रैत्यप्सुमान्	४.४.२	२८८
तेनोभौ कुरुतो यश्चैत	३.१.१०	२७७	नान्यस्मै कस्मैचन	५.११.६	२९९
ते तथा तत्र न विवेकम्	८.९.२	३२८	नाम वा ऋग्वेदो	९.१.४	३३२
ते वा एते गुह्याः	५.५.२	२९७	नाहमत्र भोग्यं पश्यामीति	१०.९.२	३४७
ते वा एतेऽथर्वाङ्गिरसः	५.४.२	२९७	निधनमिति त्र्यक्षरम्	४.१०.४	२९०
ते वा एते पञ्च	५.१३.६	३००	नैवैतेन सुरभि न	३.२.९	२७८
ते वा एते रसानाहसाः	५.५.४	२९७	न्यग्रोधफलमत आहरे-	८.१२.१	३२९
तेषां खल्वेषां भूतानाम्	८.३.१	३२५	पञ्च मा राजन्यबन्धुः	७.३.५	३१६
ते ह प्राणाः प्रजापतिम्	७.१.७	३१४	परोवरीयो हास्य भवति	४.७.२	२८८
ते ह नासिक्यम्	३.२.२	२७८	पर्जन्यो वाव गौतमाग्निः	७.५.१	३१७
ते ह यथैवेह	३.१२.४	२८५	पशुषु पञ्चविधम्	४.६.१	२८८
ते ह संपादयाञ्चक्रुः-	७.११.२	३१९	पुरा तृतीयसवनस्यो-	४.२४.११	२९४
ते होचुरुपकोसलैषा	६.१४.१	३११	पुरा प्रातरनुवाकस्यो-	४.२४.३	२९४
ते होचुर्येन हैवार्येन	७.११.६	३१९	पुरा माध्यन्दिनस्य	४.२४.७	२९४
तौ वा एतौ द्वौ	६.३.४	३०६	पुरुषश्च सोम्योत	८.१६.१	३३१
तौ ह द्वात्रिंशत् वर्षाणि	१०.७.३	३४६	पुरुषश्चसोम्योतोपतापिनम्	८.१५.१	३३१
तौ ह प्रजापतिरुवाच	१०.७.४	३४६	पुरुषो वाव गौतमाग्निः	७.७.१	३१७
तौ ह प्रजापतिरुवाच	१०.८.२	३४६	पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य	५.१६.१	३०२
तौ हान्वीक्ष्य प्रजापतिः	१०.८.४	३४७	पृथिवी वाव गौतमाग्नि	७.६.१	३१७
तौ होचतुर्यथैवेद-	१०.८.३	३४७	पृथिवी हिङ्गारोऽन्तरिक्षम्	४.१७.१	२९१
दध्नः सोम्य मध्यमानस्य	८.६.१	३२६	प्रजापतिलोकानभ्यतपत्	४.२३.२	२९३
दुग्धेऽस्मै वाग्दोहम्	३.१३.४	२८६	प्रजापतिलोकानभ्यतपत्	६.१७.१	३१२
दुग्धेऽस्मै वाग्दोह	४.८.३	२८९	प्रवृत्तोऽश्नतरीरथः	७.१३.२	३२०
देवा वै मृत्योर्बिभ्यतः	३.४.२	२८०	प्रस्तोतर्था देवता	३.१०.९	२८४
देवासुरा ह वै यत्र	३.२.१	२७८	प्राचीनशाल औपमन्यवः	७.११.१	३१९
द्यौरिवर्गादित्यः	३.६.३	२८१	प्राण इति होवाच	३.११.५	२८५
द्यौरिवोदन्तरिक्षं गीः	३.३.७	२७९	प्राण एव ब्रह्मणश्चतुर्थः	५.१८.४	३०३
ध्यानं वाव चित्तान्द्वयः	९.६.१	३३४	प्राणे तृप्यति चक्षुः	७.१९.२	३२२
नक्षत्राण्येवर्क् चन्द्रमाः	३.६.४	२८१	प्राणेषु पञ्चविधं परो-	४.७.१	२८८
न वधेनास्य हन्यते	१०.१०.२	३४८	प्राणो वा आशायाः	९.१५.१	३३८
न वधेनास्य हन्यते	१०.१०.४	३४८	प्राणो ह्येवैतानि सर्वाणि	९.१५.४	३३८
न वै तत्र न निम्लोच	५.११.२	२९९	प्राप हाचार्यकुलम्	६.९.१	३०९

बलं वाव विज्ञानाद्भूयः	९.८.१	३३५	यथेह क्षुधिता बाला	७.२४.५	३२३
ब्रह्मणः सोम्य ते पादम्	६.६.३	३०८	यदग्रे रोहितरूपम्	८.४.१	३२५
ब्रह्मणः सोम्य ते पादम्	६.७.३	३०८	यदादित्यस्य रोहितम्	८.४.२	३२५
ब्रह्मणः सोम्य ते पादम्	६.८.३	३०९	यदाप उच्छुष्यन्ति	६.३.२	३०६
ब्रह्मणश्च ते पादम्	६.५.२	३०७	यदा वा ऋचमाप्रोति	३.४.४	२८०
ब्रह्मवादिनो वदन्ति	४.२४.१	२९४	यदा वै करोत्यथ	९.२१.१	३३९
ब्रह्मविदिव वै सोम्य	६.९.२	३०९	यदा वै निस्तिष्ठत्यथ	९.२०.१	३३९
भगव इति ह प्रति-	६.१४.२	३११	यदा वै मनुतेऽथ	९.१८.१	३३९
भगवाःस्तेव मे	३.११.३	२८४	यदा वै विज्ञानात्यथ	९.१७.१	३३९
भवन्ति हास्य पशवः	४.६.२	२८८	यदा वै श्रद्धात्यथ	९.१९.१	३३९
मधवन्मर्त्यं वा इदम्	१०.१२.१	३४९	यदा वै सुखं लभतेऽथ	९.२२.१	३३९
मटचीहतेषु कुरुष्वाटिक्या	३.१०.१	२८४	यदुदिति स उद्गीथः	४.८.२	२८८
मद्गृहे पादं वक्तेति	६.८.१	३०९	यदु रोहितमिवाभूदिति	८.४.६	३२६
मनो ब्रह्मेत्युपासीत	५.१८.१	३०३	यद विज्ञातमिवाभूत्	८.४.७	३२६
मनोमयः प्राणशरीरः	५.१४.२	३०१	यद्विद्युते रोहितरूपम्	८.४.४	३२५
मनो वाव वाचो भूयः	९.३.१	३३३	यद्वै तत्पुरुषे शरीरमिदम्	५.१२.४	२९९
मनो हिङ्गारः	४.११.१	२९०	यद्वै तद्ब्रह्मेतीदम्	५.१२.७	३००
मनोहोच्चक्राम	७.१.११	३१४	यस्तद्वेद स वेद	४.२१.४	२९३
मानवो ब्रह्मैवैक	६.१७.१०	३१३	यस्यामृचि तामृचम्	३.३.९	२७९
मासेभ्यः पितृलोकम्	७.१०.४	३१८	यां दिशमभिष्टोष्यन्	३.३.११	२८०
मासेभ्यः संवत्सरम्	७.१०.२	३१८	यावावसर्त्तस्मात्	३.३.४	२७९
यं यमन्तमभिकामः	१०.२.१०	३४३	यावान्वा अयमाकाशः	१०.१.३	३४२
य आत्मापहतपाप्मा	१०.७.१	३४६	या वै सा गायत्रीयम्	५.१२.२	२९९
य एते ब्रह्मलोके	१०.१२.६	३४९	या वै सा पृथिवीयम्	५.१२.३	२९९
य एष स्वप्ने महीयमानः	१०.१०.१	३४८	येनच्छन्दसा स्तोष्यन्	३.३.१०	२८०
य एषोऽक्षिणि पुरुषः	६.१५.१	३११	येनाश्रुतःश्रुतम्	८.१.३	३२४
यच्चन्द्रमसो रोहितरूपम्	८.४.३	३२५	यो वै भूमा तत्सुखम्	९.२३.१	३४०
यत्र नान्यत्पश्यति	९.२४.१	३४०	योषा वाव गौतमाग्निः	७.८.१	३१७
यथा कृतायविजिता-	६.१.४	३०५	यो ह वा आयतनम्	७.१.५	३१४
यथा कृतायविजिता-	६.१.६	३०५	यो ह वै ज्येष्ठं च	७.१.१	३१४
यथा विलीनमेवाङ्ग	८.१३.२	३३०	यो ह वै प्रतिष्ठां वेद	७.१.३	३१४
यथा सोम्य पुरुषम्	८.१४.१	३३०	यो ह वै वसिष्ठं वेद	७.१.२	३१४
यथा सोम्य मधु	८.९.१	३२८	यो ह वै संपदं वेद	७.१.४	३१४
यथा सोम्यैकेन	८.१.४	३२४	रैक्रेमानि षट्शतानि	६.२.२	३०५
यथा सोम्यैकेन	८.१.६	३२४	लवणमेतदुदकेऽवधायाथ	८.१३.१	३३०
यथा सोम्यैकेन लोह-	८.१.५	३२४	लोकद्वारमपावाणू	४.२४.४	२९४

लोकद्वारमपावाणू	४.२४.८	२९४	समस्तस्य खलु	४.१.१	२८७
लोकद्वारमपावाणू	४.२४.१२	२९५	समान उ एवायञ्चासौ	३.३.२	२८०
लोकेषु पञ्चविधः	४.२.१	२८७	समाने तृप्यति मन-	७.२२.२	३२३
लोम हिङ्कारस्त्वक्प्रस्तावः	४.१९.१	२९२	स य आकाशं ब्रह्मेत्यु-	९.१२.२	३३७
वसन्तो हिङ्कारः	४.१६.१	२९१	स य आशां ब्रह्मेत्यु-	९.१४.२	३३८
वसिष्ठाय स्वाहेत्य-	७.२.५	३१५	स य इदमविद्वान्	७.२४.१	३२३
वागेव ब्रह्मणश्चतुर्थः	५.१८.३	३०३	स य एतदेवं विद्वान्	३.४.५	२८०
वागेवर्क् प्राणः	३.१.५	२७७	स य एतदेवं विद्वान्	४.१.४	२८७
वाग्वाव नाम्नो भूयसी	९.२.१	३३२	स य एतदेवममृतं वेद	५.६.३	२९८
वायुर्विव संवर्गो यदा	६.३.१	३०६	स य एतदेवममृतं वेद	५.७.३	२९८
विज्ञानं वाव ध्यानाद्भूयः	९.७.१	३३५	स य एतदेवममृतं वेद	५.८.३	२९८
विनिर्दि साम्नो वृणे	४.२२.१	२९३	स य एतदेवममृतं वेद	५.९.३	२९८
वृष्टौ पञ्चविधः	४.३.१	२८७	स य एतदेवममृतं वेद	५.१०.३	२९९
वेत्थ यथासौ लोको न	७.३.३	३१६	स य एतमेवं विद्वान्श्च-	६.५.३	३०७
वेत्थ यदितोऽधि प्रजाः	७.३.२	३१६	स य एतमेवं विद्वान्श्च-	६.६.४	३०८
व्याने तृप्यति श्रोत्रं	७.२०.२	३२२	स य एतमेवं विद्वान्श्च-	६.७.४	३०८
शतं चैका च हृदयस्य	१०.६.६	३४५	स य एतमेवं विद्वान्श्च-	६.८.४	३०८
श्यामाच्छबलं प्रपद्ये	१०.१३.१	३५०	स य एतमेवं विद्वान्	५.१९.४	३०४
श्रुतश्चेव मे भगवद्	६.९.३	३०९	स य एतमेवं विद्वान्	६.११.२	३१०
श्रोत्रश्चेच्चक्राम	७.१.१०	३१४	स य एतमेवं विद्वान्	६.१२.२	३१०
श्रोत्रमेव ब्रह्मणश्चतुर्थः	५.१८.६	३०४	स य एतमेवं विद्वान्	६.१३.२	३११
श्रोत्रमेवर्द्धमनः साम	३.७.३	२८२	स य एवमेतत्साम	४.२१.२	२९२
श्वेतकेतुर्हारीण्यः	७.३.१	३१६	स य एवमेतद्ब्रह्मादित्ये	४.१४.२	२९१
श्वेतकेतुर्हारीण्यः	८.१.१	३२४	स य एवमेतद्गङ्गायज्ञीय-	४.१९.२	२९२
षोडशकलः सोम्यः	८.७.१	३२७	स य एवमेतद्ब्रथन्तरमग्नौ	४.१२.२	२९०
सङ्कल्पो वाव मनसः	९.४.१	३३३	स य एवमेतद्गायत्रम्	४.११.२	२९०
स एतां त्रयीं विद्याम्	६.१७.३	३१२	स य एवमेतद्वाजिनम्	४.२०.२	२९२
स एतास्तिस्रो देवताः	६.१७.२	३१२	स य एवमेतद्द्वामदेव्यम्	४.१३.२	२९०
स एवाधस्तात्स उपरि-	९.२५.१	३४०	स य एवमेतद्द्वैराजमृतुषु	४.१६.२	२९१
स एष परोवरीयानुद्रीथः	३.९.२	२८३	स य एवमेतद्द्वैरूपम्	४.१५.२	२९१
स एष ये चैतस्मात्	३.७.६	२८२	स य एवमेताः शक्वर्वयः	४.१७.२	२९१
स एष रसानां रसतमः	३.१.३	२७७	स य एवमेता रेवत्यः	४.१८.२	२९२
स जातो यावदायुषम्	७.९.२	३१८	स य एषोऽणिमैतदा-	८.८.७	३२८
सत्यकामो ह जाबालः	६.४.१	३०७	स य एषोऽणिमैतदा-	८.९.४	३२८
सदेव सोम्येदमग्र	८.२.१	३२४	स य एषोऽणिमैतदा-	८.१०.३	३२९
स ब्रूयान्नास्य जरयैतत्	१०.१.५	३४२	स य एषोऽणिमैतदा-	८.१२.३	३३०

स य एषोऽणिमैतदा-	८.१३.३	३३०	सर्वे स्वरा घोषवन्तः	४.२२.५	२९३
स य एषोऽणिमैतदा-	८.१४.३	३३०	स वा एष आत्मा हृदि	१०.३.३	३४४
स य एषोऽणिमैतदा-	८.१५.३	३३१	स समित्पाणिः पुनरेयाय	१०.१०.३	३४८
स यः सङ्कल्पं ब्रह्मेत्यु-	९.४.३	३३४	स समित्पाणिः पुनरेयाय	१०.११.२	३४८
स यः स्मरं ब्रह्मेत्यु-	९.१३.२	३३७	स ह क्षतान्विष्य	६.१.७	३०५
स यथा तत्र	८.१६.३	३३१	स ह खादित्वातिशेषान्	३.१०.५	२८४
स यथा शकुनिः सूत्रेण	८.८.२	३२७	स ह गौतमो राज्ञ	७.३.६	३१६
स यथोभयपादं व्रजत्रयः	६.१६.५	३१२	स ह द्वादशवर्षं उपेत्य	८.१.२	३२४
स यदवोचं प्राणम्	५.१५.४	३०१	स ह पञ्चदशाहानि	८.७.२	३२७
स यदशिशिषति	५.१७.१	३०३	स ह प्रातः सञ्जिहानः	३.१०.६	२८४
स यदि पितरं वा	९.१५.२	३३८	स ह व्याधिनानशितुम्	६.१०.३	३०९
स यदि पितृलोककामः	१०.२.१	३४३	स ह शिलकः	३.८.३	२८२
स यश्चित्तं ब्रह्मेत्युपास्ते	९.५.३	३३४	स ह संपादयाञ्चकार	७.११.३	३१९
स यस्तेजो ब्रह्मेत्युपास्ते	९.११.२	३३७	स ह हारिद्रुमतं गौतमम्	६.४.३	३०७
स यावदादित्य उत्तरतः	५.१०.५	२९९	स हाशाय हैनमुपससाद	८.७.४	३२७
स यावदादित्यः	५.६.४	२९७	स हेभ्यं कुल्माषान्खाद-	३.१०.२	२८४
स यावदादित्यः पश्चात्	५.९.४	२९८	स होवाच किं मेऽन्नम्	७.२.१	३१५
स यावदादित्यः	५.७.४	२९८	स होवाच किं मे वासः	७.२.२	३१५
स यावदादित्यो	५.८.४	२९८	स होवाच भगवन्तं वा	३.११.२	२८४
स यो ध्यानं ब्रह्मेत्यु-	९.६.२	३३५	स होवाच महात्मनः	६.३.६	३०६
स यो नाम ब्रह्मेत्यु-	९.१.५	३३२	स होवाच विजानाम्यहम्	६.१०.५	३१०
स योऽन्नं ब्रह्मेत्यु-	९.९.२	३३६	सा ह वागुच्चक्राम	७.१.८	३१४
स योऽपो ब्रह्मेत्यु-	९.१०.२	३३६	सा हैनमुवाच नाहम्	६.४.२	३०७
स यो बलं ब्रह्मेत्यु-	९.८.२	३३६	सेयं देवतैक्षत	८.३.२	३२५
स यो मनो ब्रह्मेत्यु-	९.३.२	३३३	सैषा चतुष्पदा षड्विधा	५.१२.५	२९९
स यो वाचं ब्रह्मेत्यु-	९.२.२	३३३	सोऽधस्ताच्छकटस्य	६.१.८	३०५
स यो विज्ञानं ब्रह्मेत्यु-	९.७.२	३३५	सोऽहं भगवो मन्त्र	९.१.३	३३२
सर्वं खल्विदं ब्रह्म	५.१४.१	३०१	स्तेनो हिरण्यस्य सुराम्	७.१०.९	३१९
सर्वकर्मा सर्वकामः	५.१४.४	३०१	स्मरो वावाकाशाद्भूयः	९.१३.१	३३७
सर्वास्वप्नु पञ्चविधम्	४.४.१	२८८	हंसस्ते पादं वक्तेति	६.७.१	३०८
सर्वे स्वरा इन्द्रस्यात्मनः	४.२२.३	२९३	हन्ताहमेतद्भगवतो वेदा-	३.८.७	२८३

॥ इति चतुर्थं परिशिष्टम् ॥



